3.3.3

Number of books and chapters in edited volumes/ books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during the year

Advances in Material Technology
ISBN: 978-81-962299-9-3
DOI: 10.5281/zenodo.10464484

Production & Stabilization of Silver Nanoparticles on Polyamide Nylon and its Antibacterial activity

Dr. Anshu Srivastava[1], Dr. Shakun Srivastava[2]
[1]Kanpur Institute of Technology, Kanpur, India
[2]Pranveer Singh Institute of Technology, Kanpur, India
Corresponding Author's Email: anshusrivastava2010@gmail.com

Abstract: Incredibly significant events occurred in 1930 that have affected people's lives ever since. The invention of nylon was a significant event that altered how people dress and go about their daily lives. Even more job prospects and advancements at work were made possible by it throughout time. The first synthetic material, nylon, was created in 1934 by a group of DuPont researchers under the direction of Dr. Wallace Hume Carothers (Adams 21). When they pulled an elastic string from plastic and created nylon, they were looking for a synthetic alternative to silk. Compared to other materials currently in use, this new creation offered many more superior features and/or capabilities. Nylons are the most recognized for their ability to be dyed, for not being damaged by most house hold cleaners or greases and oils, for drying quickly, and most importantly, for having a silk like appearance (The world Book).

Nylon has a higher tensile strength than cotton, rayon, silk, and wool (En carta). Additionally, they include qualities like flexibility, cleaning ease, The controlled reduction of Ag+ ions with sodium borohydride at room te mperature produced silver nanoparticles (NPs). Ag nanoparticles were added to Nylon 6,6 by trapping Ag+ ions in the polymer network and then reducing them. Scanning microelectronic microscopy (SEM) was used to characterize the nanocomposite. Bacillus coli communis (Escherichia) was usedin vitro antibacterial experiments to ascertain the substance's antibact erial capacity. The present work studies the effect of silver nanoparticles in the range of 1–100 nm on Gram-negative bacteria using high angle annular dark field (HAADF) scanning transmission electron microscopy (STEM).

ISBN : 978-81-962380-3-2

चतुर्थ संस्करण : 2023

टाईप सेटिंग, मुद्रक व प्रकाशक :
राशि प्रिन्ट-ओ-पैक
ऑफिस : 457/1, कम्बल वाला बाग, निकट पी.एन.बी.
जानसठ रोड, मुजफ्फरनगर-251002 उ.प्र.
यूनिट : बुढाना-दिल्ली रोड, निकट मिल्क प्लांट, मुजफ्फरनगर-251002 उ.प्र.
चलभाष : +91-9897261508, 9897654802
ई-मेल : raashiprintopack@gmail.com
वेबसाईट : www.gautamgraphicsonline.com

मूल्य : 1100.00

Developed the sustainable jewelry in the form of Indian Art as well as women empowerment

- Geetika Paul
Assistant Professor
Applied Arts & Craft Department
Kanpur Institute of Technology

Abstract:

Sustainability means "Reusing, Recycling and reducing the waste". Sustainability can interrelationships among the environmental, culture, social as well as an economically. Sustainability can fulfill the need of the contemporary generation without the meet each other halfway the need of the future generation balance.

Indian Art, traditional art form of the Indian which contains the various Painting, sculpture, textile and other art form. Indian art can be a traditional income source of the historical craftsmen, and also a great impact on the women which can helps in **the women empowerment**.

Sustainability and Indian art have been going hand in hand since time immemorial as in an Indian art we use natural material like fabrics, clay, natural dyes or pigment and colors which have a great impact on the story of the sustainability fashion.

Since beginning women are always craving on the jewelry, because jewelry is the most important ornamentation of the Indian women's life. Jewelry can involve on the social and cultural in past, present and future.

As a Designer and Jewelry maker I am influenced by the Indian art and Culture. As similarly I give a preference on the sustainability. As I am working women i want to complete my look with ornamented with the jewelers. In my jewelry contains the morality of sustainability, ethnicity of Indian Culture and at the same time as trendy as contemporary style.

Key Words-

Sustainability, Indian Art, Mandala art, Warli Art, Madhubani painting, Calligraphy, mythological and cultural inspirations, abstract art and women Empowerment.

Introduction–

1.1 Sustainability -

Firstly we discuses about the sustainability. Sustainability are the blend of the 3R "Reusing, Recycling and reducing the waste."

Reusing, Reusing something means putting it to use again, whether for what it was intended for in the first place (traditional reuse) or for a different reason.

ISBN : 978-81-962380-3-2

चतुर्थ संस्करण : 2023

टाइप सेटिंग, मुद्रक व प्रकाशक :
राशि प्रिन्ट-ओ-पैक
ऑफिस : 457/1, कम्बल वाला बाग, निकट पी.एन.बी.
जानसठ रोड, मुजफ्फरनगर-251002 उ.प्र.
यूनिट : बुढाना-दिल्ली रोड, निकट मिल्क प्लांट, मुजफ्फरनगर-251002 उ.प्र.
चलभाष : +91-9897261508, 9897654802
ई-मेल : raashiprintopack@gmail.com
वेबसाईट : www.gautamgraphicsonline.com

मूल्य : 1100.00

पद्म विभूषण सैयद हैदर रज़ा की कला शैली- एक अध्ययन

- डॉ0 साक्षी गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर,
कानपुर इन्सटीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी, कानपुर

सारांश:

कला ने आरम्भ से मानव के भावों को व्यक्त करने में उसका सहयोग किया है, उसे एक अलग पहचान दी है। मुलकालीन, राजस्थानी शैली व पहाड़ी शैली के अनेक चित्रकार अपनी कलम के अलग तरीके के प्रयोग व शैली के माध्यम से जाने जाते हैं। इसी प्रकार आज भी अनेक समकालीन कलाकार हैं जो अपनी अनोखी कला शैली के द्वारा जाने जाते हैं। इनमें से एक सैयद हैदर रज़ा, जिन्होंने अपनी कलाकृति में बिन्दु का प्रयोग कर अपनी एक अलग ही कला शैली का निर्माण किया है। रज़ा साहब कला जगत में बिन्दु मैन (*Bindu Man*) के नाम से विख्यात हैं। कलाकृतियों में कला के आधारभूत तत्वों का प्रयोग किया। जैसे :-बिन्दु, रेखाओं, ज्यामितीय आकार आदि का प्रयोग किया जिससे उन्हें एक नवीन आयाम प्राप्त हुआ। वें स्वयं कहते हैं '*बिन्दु ने उनके अन्दर एक नए कलाकार को जन्म दिया है।*' आज उनकी कलाकृतियों को किसी नाम की आवशकता नहीं है। वे स्वयं में ही रज़ा की पहचान व कला जगत में अपना अलग स्थान रखती हैं। कला के आधारभूत तत्वों को अपना कर रज़ा साहब ने भारत में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व में अपना एक भिन्न स्थान बनाया है।

Fig. 1- Artist Sayed Haider Raza

अपने इस लेख के माध्यम से रज़ा की कलाकृतियों का सविस्तार अध्ययन कर उनकी भूमिका पर चर्चा करूँगी।

कुंजी शब्द: मॉडर्न आर्ट, आर्ट स्टाईल, आर्टिस्ट एस.एच. रजा, आर्ट ग्रुप व सिम्बोलिज़्म

भूमिका:

अपने शोध-पत्र विषय के चयन हेतु मैंने विभिन्न समकालीन एवं आधुनिक कला के अन्तर्गत अनेक कलाकारों, मूर्तिकारों, शिल्पकारों व कला समूहों व उनकी विशिष्ट कला शैली का अध्ययन किया जैसे-बंगाल स्कूल, कलकत्ता ग्रुप, दिल्ली शिल्पी चक्र, प्रोगेसिव आर्टिस्ट ग्रुप, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट एसोसिएशन आदि जिसमें से प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप ने मुझे अत्यधिक प्रभावित व आकर्षित किया। कला समूह व कलाकारों से सम्बन्धित और अधिक

18

मध्यप्रदेश की धरोहर (सन्दर्भ- धातु शिल्प)

Dr. Sakshi Gupta
Assistant Professor, Kanpur Institute of Technology, Kanpur, India
gupta.sakshi2087@gmail.com

शोधसारांश

भारतवर्ष का सत्व मध्य प्रदेश विभिन्न कलाओं व प्रवीणताओं का ऐसा अनन्य कोष है, जिसको देखकर दर्शक विस्मयाकुल हो किसी इन्द्रजाल में प्रवाहित होता चला जाता है। यह प्रदेश विविध लालित्यमयी कलात्मकता से परिपूर्ण स्वयं को चित्ताकर्षक व मनोहर बनाये हुए, अपनी अद्वितीय कला-परम्परा के विभिन्न रूपों से समस्त भूलोक को स्तम्भित किये हुए है। सम्पूर्ण विश्व के आकर्षण का केन्द्र स्थल मध्य प्रदेश प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान काल तक कला के विभिन्न रूपों का आख्यान प्रस्तुत करता है। मध्य प्रदेश की विभिन्न जनजातीय व लोक कलायें जैसे- कपड़ों पर बान्धनी व ज़री का काम, साड़ी, दरी व कालीन की बुनाई, काष्ठ, प्रस्तर व धातु शिल्प, गोदना कला, विभिन्न अवसरों पर चित्रण, लोक गीत व नृत्य जैसे- सैला, मूरिया, गौड आदि कलाओं ने विश्वस्तर पर कला प्रेमियों व रसिकों के मन में एक विशिष्ट स्थान बनाया हुआ है।

अपने इस शोध पत्र के माध्यम से मैं मध्य प्रदेश की कलात्मक धरोहर व विरासत धातु शिल्प की चर्चा व वर्णन प्रस्तुत करूँगी।

मुख्य शब्द: लोक कला, हस्तशिल्प, धातु कार्य, Folk Art, Handicraft, Metal Work

1. प्रस्तावना

1.1. साहित्यिक समीक्षा

अपने शोधपत्र विषय के चयन हेतु मैंने विभिन्न हस्त करघा एवं हस्त कला के अन्तर्गत अनेक लोक कलाओं व शिल्प कलाओं का अध्ययन किया जैसे- जूट शिल्प, काष्ठ शिल्प, मृण शिल्प, भित्ति चित्रण, छापा कला, गोदना कला आदि, जिसमें से धातु शिल्पाकृतियों ने मुझे अत्यधिक प्रभावित व आकर्षित किया। हस्त कलाओं व धातु शिल्प कला से सम्बन्धित और अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु धातु शिल्प से सम्बन्धित अनेक पुस्तकों जैसे- "प्रेम चन्द्र विश्वकर्मा की "काष्ठ एवं धातु मूर्तिकला", जे० स्वामीनाथन की " **The Perceiving Fingers**" व "कपिल तिवारी की "सम्पदा तथा प्रतिरूप" आदि का अध्ययन किया। जिसके पश्चात् मैंने अपने शोधपत्र के विषय रूप में "**मध्य प्रदेश की धरोहर (सन्दर्भ- धातु शिल्प)**" का चयन किया।

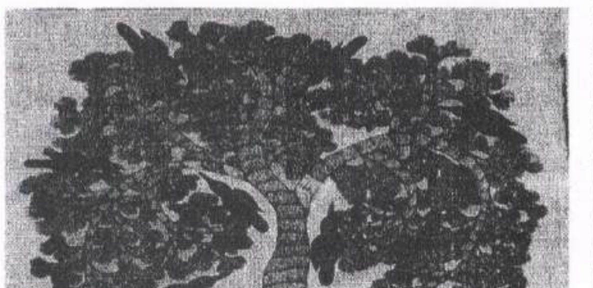

चित्र 1 Gond Art, Circle of life, Poster on Paper, Madhya Pradesh

कला किसी भी समुदाय, समाज या क्षेत्र का दर्पण होती है। कला के माध्यम से कलाकार अपने इर्द-गिर्द के वातावरण, समुदाय व समाज के रीति-रिवाज आदि को व्यक्त करता है व दूसरों तक पहुँचाता है।अनेक जातियों व जनजातियों में पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही पारंपरिक कलायें लोककला कहलाती हैं।

ISBN : 978-81-962380-3-2

चतुर्थ संस्करण : 2023

इस पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों, लेखों में व्यक्त विचार एवं तथ्य लेखकों के है, उससे प्रकाशक या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है और उसके लिए प्रकाशक या सम्पादक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।

टाईप सेटिंग, मुद्रक व प्रकाशक :
राशि प्रिन्ट-ओ-पैक
ऑफिस : 457/1, कम्बल वाला बाग, निकट पी.एन.बी.
जानसठ रोड, मुजफ्फरनगर-251002 उ.प्र.
यूनिट : बुढाना-दिल्ली रोड, निकट मिल्क प्लांट, मुजफ्फरनगर-251002 उ.प्र.
चलभाष : +91-9897261508, 9897654802
ई-मेल : raashiprintopack@gmail.com
वेबसाईट : www.gautamgraphicsonline.com

मूल्य : 1100.00

समाज को प्रभावित करती धार्मिक कला

- शिवेन्द्र सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
कानपुर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी, कानपुर

सारांश :

धार्मिक कला धर्म की प्रेरणा और रूपांकनों का उपयोग करते हुए कलात्मक रूपांकन है और इसका उद्देश्य अन्त:करण की आध्यात्मिकता का प्रत्यक्षीकरण करना है। धार्मिक कला के माध्यम से कलाकार समाज में निहित धार्मिक परंपराओं के गर्भित रूप में व्याप्त आध्यात्मिक अनुभूति के मार्ग में अन्तर्निहित अनुष्ठान और प्रथाओंको सम्मलित करता है।

मैं अपने इस शोधपत्र के माध्यम से यह बताना चाहता हूँ किधार्मिक कला ने हमारे समाज पर कैसे प्रभाव बनाए रखा है और ऐतिहासिक महत्व,सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंडों को आकार देने में इसकी क्या भूमिका रही है।विभिन्न कालों, कला आंदोलनों और कलाकृतियों का समुदायों व समाज पर धार्मिक कला के गहन प्रभाव को प्रकट करता है।यह धार्मिक कला के भीतर प्रतीकवाद, भावनात्मक संबद्धीकरण और धार्मिक प्रचार के साथ-साथ सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों से इसके संबंध की सिंहावलनोकन करता है।इसके अतिरिक्त, यह शोधपत्र समकालीन ष्टिकोणों पर विचार करता है, इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे पारंपरिक व्याख्याओं को चुनौती देते हुए कलाकार धार्मिक विषयों के साथ सम्बन्धन स्थापित करते हैं। व्यापकरूप से यह अध्ययन समाज पर धार्मिक कला के स्थायी और परिवर्तनकारी प्रभाव की अंर्तदृष्टि प्रदान करता है।

KEYWORDS: *Religious Art, Religious Art & Society, Influence of Religious Art*

प्रस्तावना :

मानव सभ्यता की विविध चित्रवयनिका में कला ने हमेशा ही समाज को नया आकार देने और लोगो को अपने आस-पास की दुनिया को देखने के तरीके को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। कलात्मक अभिव्यक्ति भिन्न-भिन्न रूपों में धार्मिक या आध्यात्मिक विषयों को एक सशक्त शक्ति के रूप में सामने लाई है, जिसने पूरे विश्व के इतिहास की संस्कृतियों पर एक अमिट छाप छोड़ी है। धार्मिक कला और समाज के बीच घनिष्ठ संबंधों का उल्लेखनीय विवरण कलाकार चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं और यह दर्शाने का प्रयत्न करते हैं कि कलात्मक रचनाओं ने न केवल विभिन्न धर्मों की मान्यताओं, मूल्यों की मान्यताओं और मूल्यों को प्रतिबिंबित किया है बल्कि सामाजिक निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जटिल मूर्तियों से सजे राजसी मंदिरों से लेकर दिव्य प्राणियों और दैवीय कथाओं को दर्शाने वाली विस्मयकारी पेंटिंग्स तक धार्मिक कला एक माध्यम रही है जिसके माध्यम से लोगों ने परमात्मा के साथ संवाद करने, प्रतिकूल परिस्थितियों में सांत्वना पाने और अपनी सांप्रदायिकता को मजबूत करने की कोशिश की है। एक कलाकार

ISBN : 978-81-962380-3-2

चतुर्थ संस्करण : 2023

टाईप सेटिंग, मुद्रक व प्रकाशक :
राशि प्रिन्ट-ओ-पैक
ऑफिस : 457/1, कम्बल वाला बाग, निकट पी.एन.बी.
जानसठ रोड, मुजफ्फरनगर-251002 उ.प्र.
यूनिट : बुढाना-दिल्ली रोड, निकट मिल्क प्लांट, मुजफ्फरनगर-251002 उ.प्र.
चलभाष : +91-9897261508, 9897654802
ई-मेल : raashiprintopack@gmail.com
वेबसाईट : www.gautamgraphicsonline.com

मूल्य : 1100.00

The development of blend jute for environmentally responsible craft

Jute Blend with sustainable and eco friendly Craft

-**Pratya singh**
Assistant Professor
Kanpur Institute of Technology, Kanpur

ABSTRACT:

Threads from certain jute plants, the second cheapest cloth thread are widely used for making into a parcel to do with industry and farming products. Apart from its common character and weighty material feeling, looks, the natural colour increases its nothing like it ornament. threads from certain jute plants has the attraction of being a thread both naturally strong and good colour. It does not get smaller or get feeble, is ready (to be used) easily and is strong. In the threads from certain plants products, there is no joiner work. Smaller products like doormats and telephone covers are made out of the left over's of the larger ones. Threads from jute plants thread is 100% biodegradable and able to be used again and thus with conditions friendly threads from certain plants has low pesticide and fertilizer needs. It is the second most important plants have low pesticide and fertilizer needs. It is the second most important plant used for food thread after cotton, in words of use. Global using up, producing and able tom use more chances of threads from certain plants cover good making separate and against noise in back properties, as well as having low thermal conductivity and a middle wet get back. Other more chances of threads from jute plants cover with sound making separate properties and make with no skin thing making trouble. Threads from jute plants have the power to be mixing with other threads, both produced by uniting and natural. Says yes to substance to make another color parts such as natural, basic, vat, sulfur, reactive and coloring substance Dyes. Threads from certain plants can also be mixed with wool.

ORIGIN:

Threads from certain plants have been in use for a long time. The present time is not mapped science it is a natural thread, more than enough and easily put to use. Several based on history documents. History states that Indians, especially used strong cords and twines made of white threads from certain plants for house hold items and other uses. From 17th to 20th hundred years, the British to East India company gave power of the threads form certain plants industry in India, which was the first yarn from certain plants trader. During 20th hundred years, Margaret I, a building housing machines landowner in first put up the threads

ISBN : 978-81-962380-3-2

चतुर्थ संस्करण : 2023

टाईप सेटिंग, मुद्रक व प्रकाशक :
राशि प्रिन्ट-ओ-पैक
ऑफिस : 457/1, कम्बल वाला बाग, निकट पी.एन.बी.
जानसठ रोड, मुजफ्फरनगर-251002 उ.प्र.
यूनिट : बुढाना-दिल्ली रोड, निकट मिल्क प्लांट, मुजफ्फरनगर-251002 उ.प्र.
चलभाष : +91-9897261508, 9897654802
ई-मेल : raashiprintopack@gmail.com
वेबसाईट : www.gautamgraphicsonline.com

मूल्य : 1100.00

विषय-सूची

CONTRIBUTION OF INDIAN CULTURE ON GLOBAL ART & FASHION

- **Shalini Sharma**
Head of Department,
Applied Arts & Craft Department
Kanpur Institute of Technology

Abstract

India the land of "Vasudhaiva Kutumbakam" philosophy, has contributed so much to the world, from zero to advance metallurgy, from sophisticated drainage systems at Indus Valley to the most modern discovery of Lunar water on moon and, Art. Textiles & Fashion are no exception. The diffusion of Indian cultural has resulted in an evident impression of Indian art & fashion over the International level. This paper will review the contributions of Indian culture on the global art & fashion. The paper will discuss the rich heritage and culture of India and underlines its influence across the world.

One of the most important characteristics of culture is that it can be learned and world has learned so much from Indian heritage and culture. It traces the journey of Indian culture in context to its traditional costumes, textiles & arts and how it becomes source of inspiration for the rest of the world.

Furthermore, the paper concludes the contribution of Indian culture not only as the major contributor and inspiration but also as the foundation stone of Global art & design. The paper also signifies the importance of Indian cultural diffusion and marks them out through suitable examples. The paper highlights the pinnacle of Indian Art, Textiles & Fashion and its rich legacy. This paper will also discuss the need to preserve and promote the diminishing shine of Indian Culture, so that India can continue to be the world leader in the field of art and design.

Keywords : Cultural Diffusion, Cotton, Indigo, Zardozi, Chintz.

Introduction

The definition of culture states that culture is regarded as collective manifestations of human intellectual achievements including ideas, customs & social behavior. Art can be defined as the expression or application of Human creative skill and imagination & Fashion is a popular or latest style of clothing etc. So, it can be said that this creative imagination, skill, & style are extensions of culture so is art & fashion.

From ancient days India has been famous for her beautiful textiles, designs, dyes and prints. The Purans tell us that spinning and weaving were important handicrafts and that Vedic Indians were found of Suvasas or beautiful garments. Not only this, from Arthashastra

National Conference Proceedings
on
Computing, Communication, Control, Informatics and Bio-Sciences

NC^4IB-2024

- Dr. Brajesh Varshney
- Dr. Neeraj Mishra
- Dr. Rahul Umrao
- Dr. Vivek Srivastava

Estd. 2004
ISO 9001:2015 CERTIFIED
KANPUR INSTITUTE OF TECHNOLOGY KANPUR
ACCREDITED WITH GRADE A NAAC
Iterative International Publishers IIP

National Conference Proceedings on Computing, Communication, Control, Informatics and Bio-Sciences (NC^{4}IB-2024)

First Volume

Editors

Prof. (Dr.) Brajesh Varshney

Dr. Neeraj Mishra

Dr. Rahul Umrao

Dr. Vivek Srivastava

Title of the Book: National Conference Proceedings on Computing, Communication, Control, Informatics and Bio-Sciences (NC^{4}IB-2024)

First Volume: 2024

Prof. (Dr.) Brajesh Varshney, Director, Kanpur Institute of Technology, Kanpur.

Dr. Neeraj Mishra, Dean Academics, Kanpur Institute of Technology, Kanpur.

Dr. Rahul Umrao, Professor & Head, Department of EC/EN, Kanpur Institute of Technology, Kanpur.

Dr. Vivek Srivastava, Professor & Head, Department of Mechanical Engineering, Kanpur Institute of Technology, Kanpur.

ISBN: 978-93-5747-649-2

E-ISBN: 978-93-5747-361-3

MRP: 580/-

Publisher, Printer at & Distributer:
Selfypage Developers Pvt Ltd.,
Pushpagiri Complex,
Beside SBI Housing Board,
K.M. Road Chikkamagaluru, Karnataka.
Tel.: +91-8861518868
E-mail:info@iipbooks.com

IMPRINT: I I P Iterative International Publishers

For Sales Enquiries:
Contact: +91- 8861511583
E-mail: sales@iipbooks.com

Preface

The ***National Conference on Computing, Communication, Control, Informatics, and Bio-sciences (NC4IB-2024),***held on **3rd February2024** organized by **Kanpur Institute of Technology,** Kanpur, provided an exciting and dynamic platform for researchers, academicians, industry experts, and students to come together and explore the cutting-edge advancements across a diverse range of multidisciplinary fields. This conference served not only as a forum for the exchange of knowledge and ideas but also as an occasion to foster collaboration and innovation in the areas of computing, communication, control systems, informatics, and bio-sciences.

The overwhelming response to **NC4IB-2024**, with a remarkable **137 paper** submissions from renowned institutions and universities, is a testament to the growing significance of these fields in addressing global challenges and shaping the future.

After rigorous peer review by a distinguished panel of experts, 7**5 full-length papers** were selected for publication, contributing to the academic and scientific discourse in these areas. In addition, **49 abstracts** were presented, providing a glimpse into the broad spectrum of research topics that continue to advance these dynamic fields.

The conference was inaugurated by our esteemed **Director, Prof. (Dr.) Brajesh Varshney**, who highlighted the importance of interdisciplinary research and innovation. His inaugural address set the tone for the event, emphasizing the role of technology in shaping the future of various sectors. The morning session featured a keynote address by **Prof. A. R. Harish from IIT Kanpur**, who shared his expertise on the latest developments in electronics, offering valuable insights into the emerging technologies in this ever-evolving field.

In the afternoon, **Sri Vipul Jain**, a distinguished member of the **Institute's management**, delivered an inspiring speech, emphasizing the importance of nurturing talent and promoting scientific research at all levels.

Prof. Kantesh Balani, from IIT Kanpur, followed with an engaging keynote on the **future of bio-sensors and materials**, shedding light on how these technologies are **revolutionizing healthcare, environmental monitoring, and other critical areas**.

This conference proceedings is a reflection of the **collective intellectual effort** that made NC4IB-2024 an exceptional event. We are confident that the **research presented here** will continue to **inspire** and **inform** the ongoing developments in **computing, communication, control, informatics, and bio-sciences**. We extend our **sincere thanks** to all **keynote speakers, authors, and participants,** whose contributions have been invaluable in making this conference a success. It is our hope that these proceedings will serve as a **significant resource** for researchers, educators, and practitioners striving to advance **knowledge** and **innovation** in these critical fields.

The event concluded with a certificate distribution ceremony and the felicitation of our esteemed guests. **Prof. Brajesh Varshney** delivered the vote of thanks, expressing heartfelt gratitude to all contributors, participants, and sponsors for their role in making the conference a success. The occasion was further enhanced by a vibrant cultural program, which highlighted the talents of our students and added a personal, memorable touch to the event.

We trust that this study will serve as a catalyst for future research and inspire novel contributions from the academic community.

Prof. (Dr.) Brajesh Varshney
Dr. Neeraj Mishra
Dr. Rahul Umrao
Dr. Vivek Srivastva
***Editors of* NC4IB-2024**

Contents

A Comparability Study of the Reversible Contraceptive affects of *Withania somnifera* Compounds Withaferin-A and Withanolide-A in Male Albino Rats

Ashish Ranjan Singh*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Neeraj Mishra
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Ritu Kumari
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Anshul Nigam
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Aman Pratap
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Ashish Ranjan Singh
Email Id: ashishranjan.singh@kit.ac.in

ABSTRACT

The rapid population growth has negatively impacted sustainable development, leading to increased economic growth and poverty in developing nations like India. As of April 2023, India surpasses China as the world's most populous country, housing 1.43 billion people. Projections indicate a further increase, with expectations of a population of 1.7 billion by 2050. The primary and urgent need is to regulate human fertility in terms of limitations.India is actively promoting family planning through various contraception methods, demonstrating its commitment to managing population growth and promoting reproductive health and well-being. However due to the adverse effects of synthetic steroidal contraceptives, indigenous plants are being investigated for potential contraceptive effects.Thus, there is an urgent need for increased research on indigenous plants for contraceptive effects is driven by the need to replace synthetic agents with sustainable and safer alternatives. This study focuses on the

research on plant drugs and their bioactive extracts related to male anti-fertility mechanisms, revealing that *Withaniasomnifera* alkaloids have antifertility effects on male rat reproduction and sperm concentration.

Keywords: *Withania somnifera*, Withaferin-A and Withanolide-A, albino rats, Antifertility, sperm motility, sperm density.

1. Introduction

The current global population is around 7.9 billion, with India's specific population at around 1.38 billion.As a result, the regulation of fertility has become a major worldwide issue[1, 2].Many negative effects have been observed in oral contraceptive users, including headaches, nausea, breast tenderness, weight gain, irritability, monthly irregularity, and depression [3,4].The need for new fertility-regulating medications derived from medicinal plants is urgent, as plant products have been used historically and are now used in ethnic medicine systems like Ayurveda due to their low toxicity and extensive exposure experience[5].Around 80% of the global population relies on traditional medicines, primarily plant-derived, according to the World Health Organization, which has seen a significant rise in popularity as an alternative to modern medicine. [6,7]. India, the first to implement a family planning program in 1950, has not halted its population from reaching one billion in fifty years[8]. Despite efforts to control the population, our efforts have been insufficient. Women, who primarily supervised pregnancy, childbirth, and child-rearing, developed methods for fertility regulation and termination. This knowledge, transmitted through oral tradition, remains globally, indicating that there is no universally ideal contraception method[9-11].

Therefore, this study investigates the impact of Withaferin-A and Withanolide-A on male sexual hormone levels in male rats, and the effects of *Withaniasomnifera* alkaloids on changes in luteinizing and follicular stimulating hormones and testosterone in serum. It evaluates andrological parameters like sperm motility, sperm counts, fertility rate, and morphology.

2. Method

The alkaloids were isolated and purified using column chromatography, crystallization, and NMR. Withaferin-A, and Withanolide-Aadministered at doses of 10, 20, and 40 mg/kg body weight per day, was orally administered to male albino rats for 60 days. A randomized controlled study showed a significant decrease in sperm count and motility in treated rats compared to controls, followed by a 30-day recovery period.

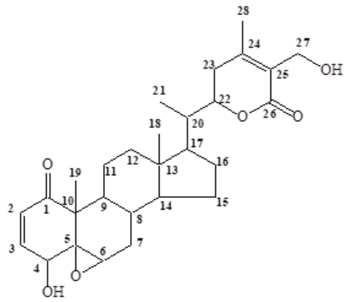

Withaferin-A

[4β, 27-dihydroxy-1-oxo-5β, 6β, epoxy witha-2, 24-dienolide] (M.P: 245 to 252ºC)

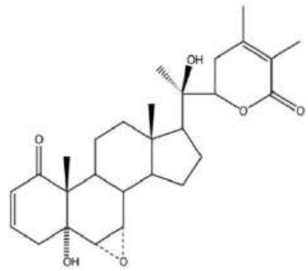

Withanolide-A

[5α, 20α(R)-dihydroxy-6α, 7α-epoxy-1- oxowitha-2, 24-dienolide] (M.P.: 282–283°C).

3. Treatment Protocol

The study investigated the antifertility effects and androgenicity of Withaferin-A/Withanolide-A, an alkaloid. The medication was orally administered for 60 days, followed by a 30-day withdrawal period for recovery testing, and daily suspensions were prepared.

4. Results

4.1. Fertility Test

The administration of Withaferin-A at various dosage levels significantly reduced the fertility of rats.In a dose-dependent way, withaferin-A therapy lowered rat fertility by 64%, 51%, and 35%, respectively, whereas fertility of recovering rats demonstrated that after 30 days of medication removal, the proportion of pregnancies rose to 72% (Table-1).The administration of Withanolide-A at different doses (10, 20, and 40 mg/kg b. wt.) for 60 days in control intact rats significantly reduced fertility ($P \leq 0.001$).The reproductive rate of control rats (Group-A) was determined to be 100%. At dosage levels of 10 mg/kg b. wt., 20 mg/kg b. wt., and 40 mg/kg b. wt. (Group B-D), Withanolide-A exhibited antifertility effects of 29.85%, 23.33%, and 20%, respectively. The data indicates that the fertility of the recovery-treated rats rebounded up to 88% after discontinuation of therapy for 30 days.(Table-1 &2).

Table 1: Impact on sperm motility, density, and fertility following a 60-day treatment with Withaferin-A in male rats.

Treatment	**Sperm motility (Cauda) (%)**	**Sperm density**		**Fertility (%)**	**Number of pups delivered**
		Cauda (million/mm^3)	**Testes (million/mm^3)**		
Group A Control Intact	74.57 ± 0.97	15.15 ± 0.19	3.42 ± 0.17	100 % (+ve)	70
Group B 10mg/kg. b. wt	73.89 ± 0.75^{ns}	14.90 ± 0.11^{ns}	3.11 ± 0.10^{ns}	64% (-36%)	45

Group C 20mg/kg. b. wt	73.17 ± 1.02^{ns}	14.88 ± 0.22^{ns}	2.98 ± 0.05*	51% (-49%)	36
Group D 40mg/kg. b. wt.	68.14 ± 0.87**	14.10 ± 0.14**	1.97 ± 0.08*	35% (-65%)	24
Group E Recovery 20mg/kg. b. wt.	73.31 ± 0.71^{ns}	14.90 ± 0.11^{ns}	3.08 ± 1.98^{ns}	72%(-28%)	50

Data are expressed as Mean ±S.E, ns = non-Significant,* Significant ($P \leq 0.01$), ** Highly Significant ($P \leq 0.001$).

Table 2: Influence on sperm motility, density, and fertility after a 60-day treatment with Withanolide-A in male rats.

Treatment	**Sperm motility (Cauda) (%)**	**Sperm density**		**Fertility (%)**	**Number of pups delivered**
		Cauda (million/mm$^{3)}$	**Testes (million/mm$^{3)}$**		
Group A Control Intact	80.37 ± 0.93	15.448 ± 0.33	3.28 ± 0.11	100 % (+ve)	73
Group B 10mg/kg. b. wt.	74.98 ± 1.44*	12.769 ± 0.40**	2.9 ± 0.09*	29.85 % (-70.15)	21
Group C 20mg/kg. b. wt.	58.80 ± 2.22**	11.30 ± 0.24**	2.83 ± 0.15*	23.33 % (-76.67)	17
Group D 40mg/kg. b. wt.	49.19 ± 2.75**	9.40 ± 0.18**	2.78 ± 0.18**	20 % (-80)	14
Group E Recovery 20mg/kg. b. wt.	77.70 ± 0.97^{ns}	15.03 ± 0.14^{ns}	3.09 ± 0.15^{ns}	88 % (-12%)	64

Data are expressed as Mean ±S.E, ns = non-Significant,* Significant ($P \leq 0.01$), ** Highly Significant ($P \leq 0.001$).

4.2. Hormone Assay

4.2.1. Luteinizing and Follicle-Stimulating Hormones (LH and FSH)

At a 40 mg/kg b. wt. dosage, Withaferin-A/Withanolide-A treated rats showed significantly lower levels of luteinizing and follicle-stimulating hormones compared to control rats, while

LH and FSH levels remained unaffected. After discontinuation, hormone levels returned to their usual levels, as shown in Figures 1 and 2.

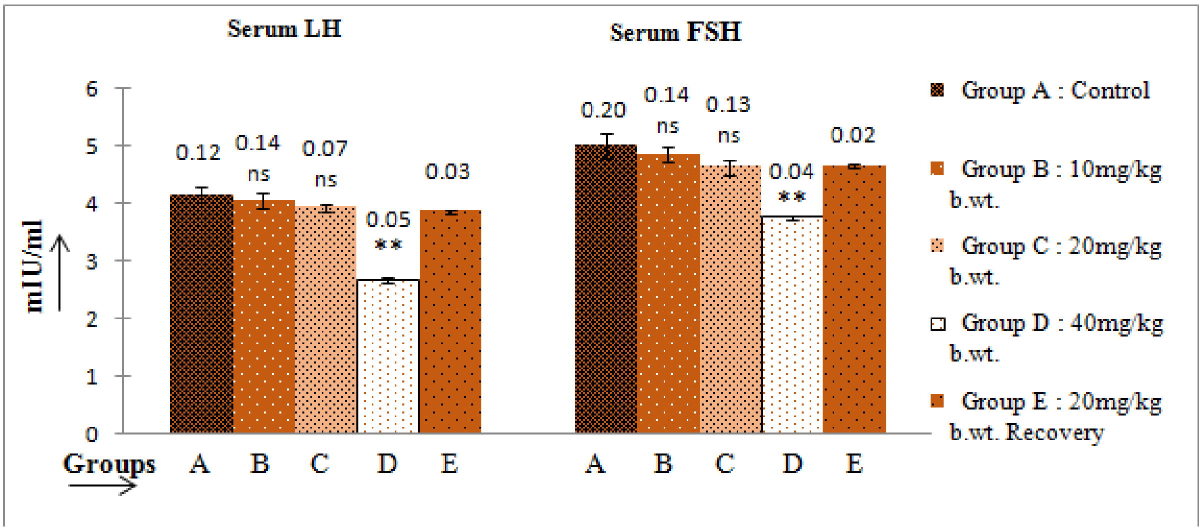

Figure 1: Alterations in the serum levels of LH and FSH in rats following a 60-day treatment with Withaferin-A.

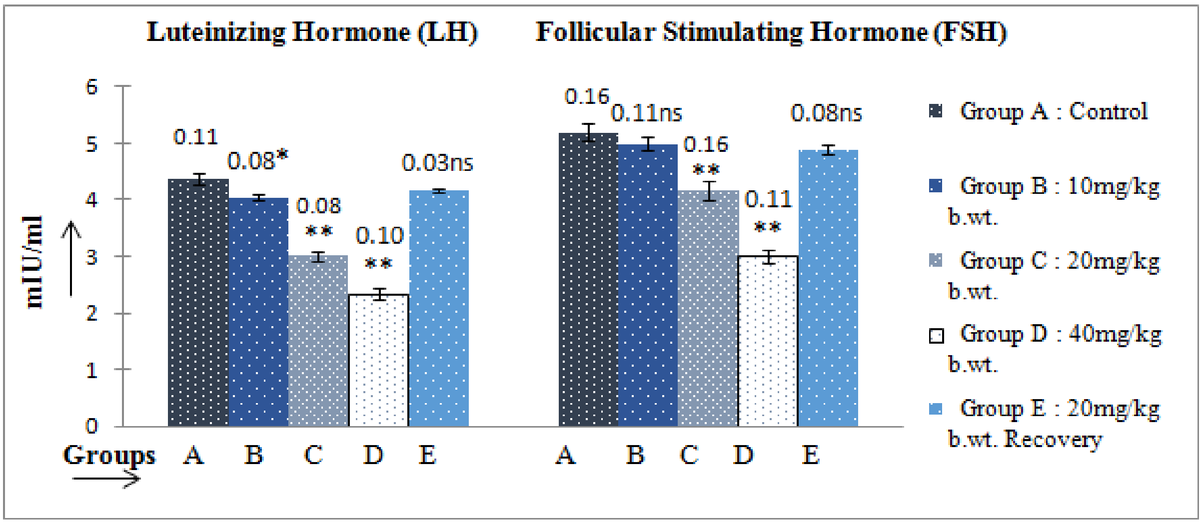

Figure 2: Effects of Withanolide-A treatment on the serum levels of LH and FSH in rats after 60 days.

4.2.2. Testosterone

After 60 days of treatment with Withaferin-A/Withanolide-A, serum testosterone levels did not decrease significantly. However, at 40 mg/kg. b. wt., a significant decrease was observed, and the recovery group showed normal changes compared to control intact rats. Figures 3 and 4 depict the outcomes of the treatment.

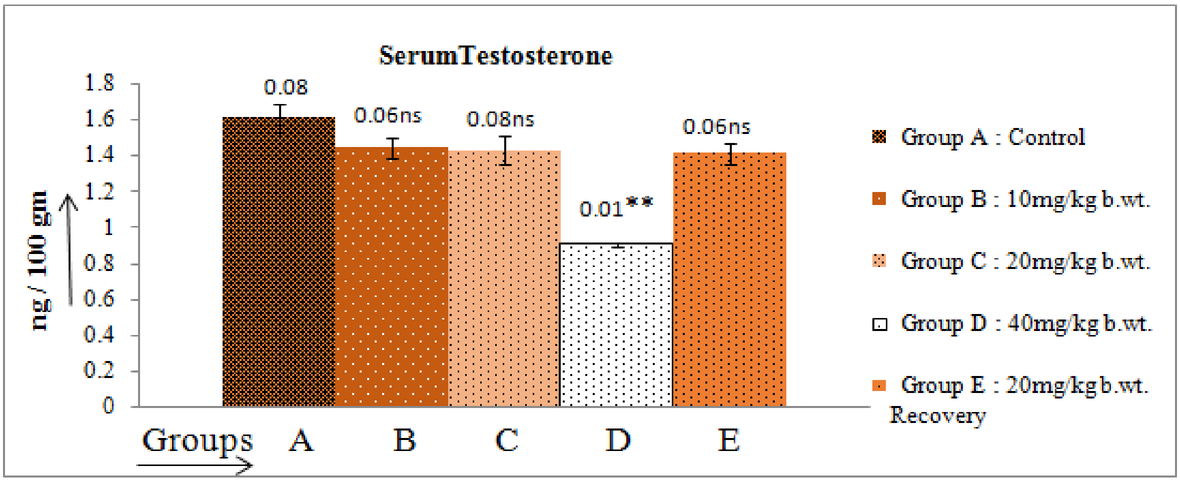

Figure 3: Changes in serum Testosterone level of rats after 60 days treatment of Withaferin-A

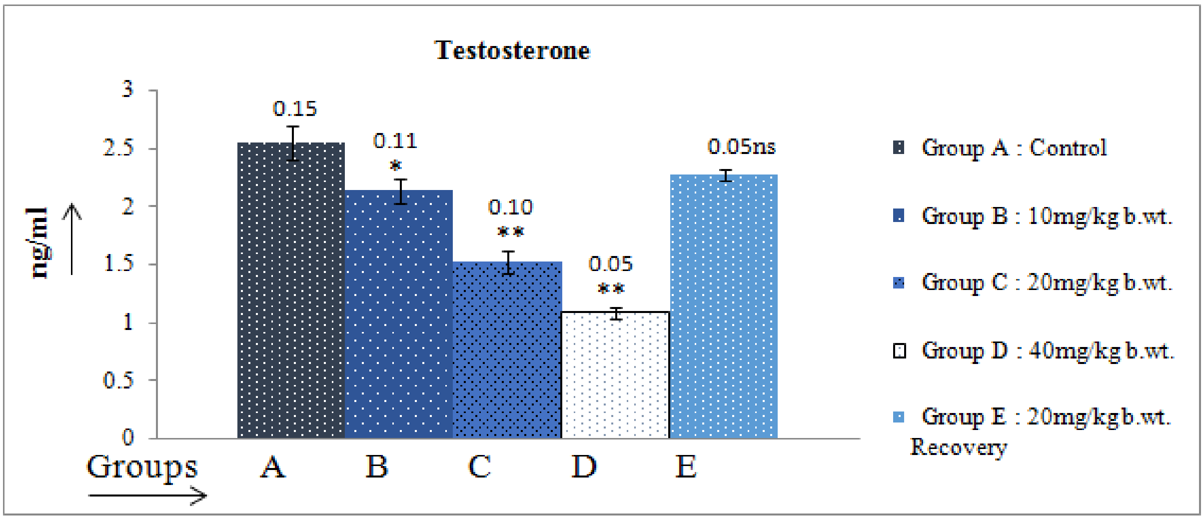

Figure 4: Changes in serum Testosterone level of rats after 60 days treatment of Withanolide-A.

5. Discussion

The development of a safe, effective, and reversible male contraceptive is slowing down, but it is crucial for expanding family planning options. The goal of male contraceptives is to inhibit spermatogenesis by suppressing hormones, particularly androgens. An ideal method would gain widespread acceptance and control population growth. [11-13].

The findings of the study are adequate to prove that Withaferin-A and Withanolide-A lower male rat fertility through a contraceptive-like effect. Reduced testicular weight and spermatogenesis arrest at the spermatocyte or spermatogonial stages may also be caused by protein deprivation in the reproductive tract of treated rats [14,15]. The decrease in weight of the epididymis following treatment with alkaloids might be due to a decrease in the protein content of epididymis sperm [16].

Both steroidal and non-steroidal medications reduce pituitary gonadotropins through direct action or hypothalamus-hypophyseal axis [17-18]. In rats treated with Withaferin-A, androgen production by Leydig cells in the testes led to weight loss in testes and sex accessories. [19, 20]

Sperm motility is an important component that determines the result of fertilization, pregnancy, and other reproductive processes. Spermatogenesis, which includes mitosis, meiosis, and spermatogenesis, is required for mammalian male fertility[21].Testosterone is crucial for spermatogenesis, with lower concentrations linked to reduced fertility. The oral administration of Withaferin-A/Withanolide-A may cause structural abnormalities in sperm motility, potentially altering membrane permeability, which could lead to reduced fertility. [22-24]. These research findings point to a robust connection between the sperm cell's plasma membrane and alkaloids.

The study found that alkaloid treatment led to a decrease in sperm count in rats due to reduced proteins in the epididymis, suggesting that androgen suppression might impact androgen binding protein by Sertoli cells.To keep rat spermatogenesis functioning normally, rats need to produce both FSH and testosterone. Testosterone alone can restore qualitative sperm production, but not quantity, and the optimal level of FSH is needed for sperm quantity production[25].

6. Conclusion

The study found that 65% of male rats treated with Withaferin-A showed adverse fertility, while after a 30-day withdrawal, the percentage of pregnancies increased to 72% in the recovery group (Group-E), whereas the same dose level of Withanolide-A caused 80% negative fertility and remarkable recovery (88%) was obtained by withdrawal of the treatment. The findings show that Withanolide-A has a stronger antifertility impact than Withaferin-A. Based on the scientific data and debate shown above, Withanolide-A may be used as an antifertility medication, but further research is needed to produce an optimum male contraception.

Acknowledgement

The University of Rajasthan and Kanpur Institute of Higher Education in Rooma, Uttar Pradesh, are commended for generously providing laboratory facilities.

References

[1] Speidel, J.J:Environment and health: 1. Population consumption and human health. Canadian Medical Association Journal163 (5): 551-556 (2000).

[2] Singh, K.K., Parmar. S, and Tatke. PA:Contraceptive efficacy and safety of Herb Oshield TM Vaginal gel in rat. Contraception 85 (1): 122-127 (2012).

[3] Tuuli, S., Ritva. H, Seija. G, Johanna. M, Jorma. P, and Eero. P: Cancer risk in women using the levonorgestrel-releasing intrauterine systemin Finland.ObstetGyne124, (2pt1): 292-299 (2014).

[4] Deshpande, V.Y., Mendulkar, K.N, Sadre, N.L: Male antifertility activity of Azadirachtaindica in mice. J Postgrad Med.26,167-70 (1980).
[5] Anawalt, B.D., Amory, J.K.: Advances in male hormonal contraception.Ann Med, 33,587-595 (2001).
[6] Ahmad, S., Jamal, Y. and Mannan, A: Review of some medicinal plants with antifertility Activities. *Unani Research* 1(2): 24-28(2011).
[7] Qian, S.Z., Xu, Y.E. and Wei, Z.J. Recent progress in research on *Tripterygium*: A male antifertility plant. *Contraception* 51 (2):121-129(1995).
[8] Moudgal, N.R., and Rao, A.J.: Contraception through immunization and regulation of luteal function David Puett: Publication of United Nations Fund for Population Activities, New York, 73-79 (1984).
[9] Joshi, J., Virkar, K.D. and Devi, P.K: Effect of an Ayurvedic preparation on peripheral parameters of the menstrual cycle. *Indian J. Med. Res* 66 (1): 39-42 (1977).
[10] Jensen, J.T: Male contraception. Current Women's Health Reports 2 (5): 338-345(2002).
[11] Nieschlag E, Behre HM (3rdeds.): Male reproductive health and dysfunction. Heidelberg, springer.Andrology 36(1): 399 – 418(2009).
[12] Anawalt, B.D., and Amory, J.K: Male hormonal contraception. Expert. Opin. Pharmacother 2 (9): 1389-98 (2001).
[13] Okamura, M., Watanabe, T. Kasuida, Y. Machida, N. and Mitsumori, K: Possible mechanisms underlying the testicular toxicity of Oxfendazole in rats. Toxicol. Pathol 32 (1): 1-8(2004).
[14] Bajaj, V. K., and Gupta, R. S: Fertility suppression in male albino rats by administration of methanolic extract of Opuntia dillenii. Andrologia. (44 Sup) 1:530-7 (2012).
[15] Paulsen, C.A. 1978. Male contraceptive development: re-examination of testosterone enanthate as an effective single entity agent. In: *Hormonal Control of Male Fertility*. Patanelli, D.J. (ed.). Department of Health Education and Welfare, Washington. pp. 17-40.
[16] Morse, H.C., Leach, D.R. Rowley, M.J. and Heller, C.G :Effect of cyprotesone acetate on sperm concentration, seminal fluid volume, testicular cytology and levels of plasma and urinary ICSH, FSH and testosterone in normal men. *J. Reprod Fertil* 32 (3):365-378 (1973).
[17] Nair, I. N., and Bhiwgade, D.A: Effect of gossypol on pituitary reproductive axis: Ultrastructural and biochemical studies. *Ind. J. Ex. Biol* 28(8): 724-732 (1990).
[18] Narayana, K. D., Souza, V.J.A. Sanyal, A.K. and Rao, K.P.S: 5-Fluorouracil (5-FU) induces the formation of giant cell and slouging of seminiferous epithelium in rat testes. Ind. J. Physiol. Pharmacol 44(3): 317-322 (2000).
[19] Wang, Z.P., Gu, Z.P. Cao, L. Xu, Y. You, G.D. Mao, B.Y. and Qian, S.Z: Effects of tripchlorolide on the epididymides and testes of rats. Asian J.Androl 1 (3): 121-125 (1999).
[20] Amory, J.K., and Bremner, W: Endocrine regulation of testicular function in men: implications for contraceptive development. Mol Cell Endocrinol182(2):175-9 (2001)
[21] Craft, I., Bennett, V. and Nicholson, N: Fertilization ability of testicular spermatozoa. *Lancet* 342 (8875): 864-870 (1993).
[22] Rao, V.S.N., Dasaradhan, P. Krishanaiah, K.S: Antifertility effect of some indigenous plants. Indian J Med Res70: 517-519 (1979).
[23] Kumar, D., Kumar, A. and Prakash, O: Potential antifertility agents from plants: a comprehensive review. 140(1):1-32(2012).
[24] Moudgal, N.R., Murthy, G.S. Prasanna Kumar, K.M. Martin, F. Suresh, R. and Medhamurthy R: Responsiveness of human male volunteers to immunization with ovine follicle stimulating hormone vaccine: results of a pilot study. *Hum. Reprod* 12 (3): 457-463 (1997).
[25] Almenara, A., Escalante, G. Gazzo, E. and Gonzales, G.F: Transillumination to evaluate spermatogenesis: effect of testosterone enanthate in adult male rats. *Arch. Androl*46 (1): 21-27 (2000).

Renewable Revolution: A Comprehensive Review of analyzing India's Path to Green Energy and its Dual Impact on Environment and Economy

Ayush Anand Srivastava
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Higher Education
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Nitish Kumar Roy
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Higher Education
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Ashish Ranjan Singh*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Uma Gupta
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Ashish Ranjan Singh
Email Id: ashishranjan.singh@kit.ac.in

ABSTRACT

India's rapid economic development and high living standards have led to a doubled energy consumption since 2000, making it the third largest global energy consumer. As of February 28, 2023, India's total power generation capacity is 412.21 GW, highlighting the importance of consistent power supply for well-being, economic advancement, and empowering industries. India's thermal power plants, which generate 75.66-80% of its electricity, have significant impacts on human health and the environment. China, the USA, and the EU are the top contributors to global carbon emissions, accounting for 6.65% of total emissions. Coal-based thermal power plants cause air pollution, respiratory issues, cardiovascular diseases, and increased cancer risk.India achieved a renewable energy capacity of 168.96 GW in February 2023, with a goal to reach 500 GW by 2030.Transitioning to renewable energy is crucial for mitigating climate impacts, reducing emissions, ensuring energy security, creating jobs, fostering innovation, improving air quality, and promoting sustainable development. Supportive policies, technological advancements, and global cooperation are needed for a cleaner, more sustainable energy future.India's renewable energy growth boosts jobs, rural

E-ISBN: 978-93-5747-361-3

development, innovation, foreign investment, and reduces energy imports, while addressing challenges like energy security, environmental degradation, and socioeconomic development.

Keywords: Renewable Energy, Sustainable development, Health, Environmental and economic.

1. Introduction

The World Energy Council predicts that global electricity demand will reach its peak in 2030[1]. India, which consumes 74% of total energy, primarily uses coal and oil. In all over world the largest consumption of coal occurs in India and import costly fossil fuel from all over the world to fulfil our energy need the main production is done by coal, oil and natural gas which contribute to production of global greenhouse gas emissions [2].

India ranks third-largest greenhouse gas emitter and fourth-largest electricity consumer in the 2023 World Resource Institute report.[3]. Green energy industries will increase job opportunities and lower unemployment rates by reducing harmful impacts on ecosystems caused by fossil fuels like coal and petroleum. Higher usage of coal and oil will lead to rapid global warming, affecting human health and economic impact [4].

In this paper we discuss about the various factors for sustainable development of green energy. This paper is considering some important the possibilities of sustainable development in the field of Renewable Energy such as wind, solar, geothermal and hydrothermal power plants etc, regarding their ethical and, problems towards need of resources, consumption of energy i.e. energy requirements, impact on our environment, sustainable development of green energy policy in India and economic impact due to green energy.

In this review paper will also discuss about how to enhance production of green energy, their resources with effect on them, barriers regarding sustainable development, impact on human health also we discuss here how green energy will affect the economically to a particular nation, increasing employment.

2. Green Energy Production in India

Renewable energy sources, primarily hydroelectric, solar, and wind technologies, have accounted for 28% of the world's electricity demand, with 96% coming from these technologies. The leading five renewable energy technologies are as follows:

2.1. Solar Energy

India has commissioned 56 GW of utility-scale solar capacity as of March 2023, with Rajasthan leading with 16.1 GW. In FY2024, 14.2 GW of new projects and 2.8 GW of rooftop/onsite projects are anticipated, with solar energy generation experiencing a 20.8% year-over-year increase in Q2 2023[5].

E-ISBN: 978-93-5747-361-3

2.2. Solar Off Grid

The National Solar Mission, 2010 aimed to build 2000 MW of solar off-grid and decentralized PV systems by 2022, divided into three phases: 2010-13, 2014-17, and 2018-21. The first phase focused on 200 MWp, the second expanded to 500 MWp, and the third phase aimed for 118 MWp [6].

2.3. Potential of Wind Energy in India

Wind energy contributes 4% of global electricity generation, with India ranking 5th globally with 24 GW of capacity [7]. The country plans to increase its capacity in the 12th five-year plan, requiring substantial investments in wind power and energy production sectors[8]. The government has installed over 900 wind-monitoring stations and issued wind potential maps, indicating a gross wind power potential of 695.50 at 120 meters and 1163.9 GW at 150 meters [6].

2.4. Hydroelectric Power

Hydropower, a commercially developed renewable energy resource, can be economically feasible in specific situations. Tidal energy, a renewable hydropower source, converts ocean tide energy into electricity. India has 8000 MW of tidal energy potential and significant hydropower reserves, ranking fifth globally in terms of usable hydropower potential. This makes hydropower more commercially viable in certain situations[9].

2.5. GreenHydrogen Power

India aims for energy independence by 2047 and net-zero by 2070, with Green Hydrogen playing a crucial role through electrolysis and biomass gasification. The National Green Hydrogen Mission, launched in 2023, aims for a 5MMT annual production capacity, utilizing renewable energy sources like solar, wind, and hydropower[6].

2.6. Geothermal Energy

India has a theoretical potential of 10 GW from geothermal energy, similar to countries like the USA, Indonesia, Philippines, Turkey, and New Zealand. Currently, no functional geothermal power facilities exist in India, but initiatives like the 10 MW Puga Valley, Ladakh geothermal power plant by ONGC are advancing sustainable power generation [6].

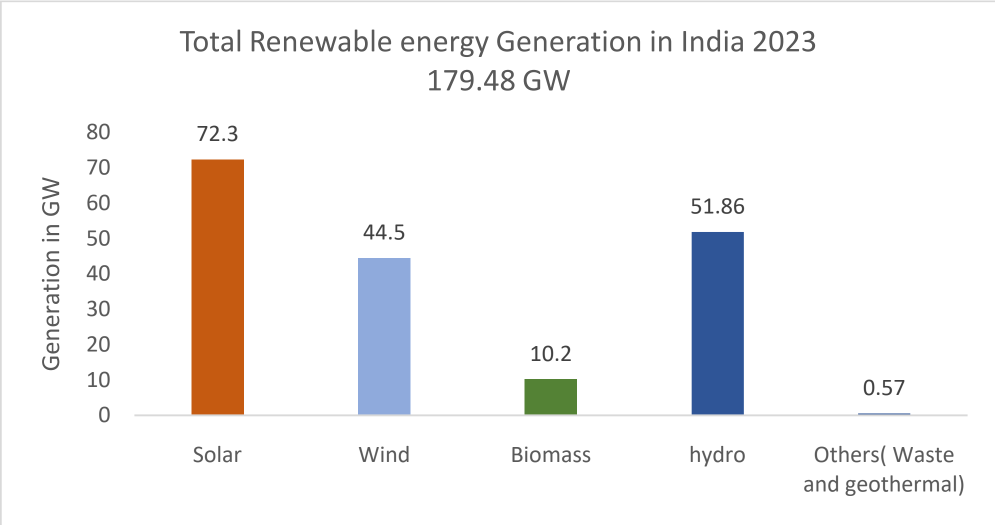

Figure 1: Renewable energy Generation in India 2023

2.7. Effect of Fossil Fuel on Environment and Health

Coal-based thermal power plants (TPPs) contribute significantly to air pollution, accounting for 60% of PM, 45% of NO2, and 80% of mercury emissions. Adherence to emission standards can mitigate their impact. Implementing 2015 standards could lead to 48% reduction in NO2 and SO2, 40% decrease in PM, and 60% reduction in mercury, crucial given TPPs generate 75% of India's electricity[10].

Between 1990 and 2019, India experienced a 64.2% reduction in crude death rate per 100,000 population due to household air pollution, while ambient particulate matter and ozone pollution increased by 115.3% and 139.2%, respectively. The age-standardized death rate declined by 72.3%, while ambient ozone increased by 23.2%.

2.8. Employment Surge in India with the Rise of Renewable Energy

Renewable energy in India offers agglomeration jobs, promoting power evulsions and attracting Indian youth to the energy sector. Energy is essential for all industries, and the government has taken initiatives to develop renewable energy through the "MAKE IN INDIA" project. Tata Power Solar Systems, Waaree Solar, Vestas India, Inox Wind, and Institutional & Domestic Biogas Plant are leading advancements in solar, wind, and biogas sectors.[11].In 2022, India created 988,000 jobs in the renewable energy sector, with hydropower leading with 466,000 jobs. Solar photovoltaic (PV) followed, employing 282,000 individuals in both on-grid and off-grid systems. India's solar capacity also experienced significant growth **[12].**

2.9. Policies and Guidelines for Renewable Energy in India

India's state government implements diverse renewable energy policies, driving multiple industries to generate substantial power through green energy resources. Some policies are given in the below [6]:

a. **Andhra Pradesh-Green Hydrogen & Green Ammonia Policy – 2023:** The Andhra Pradesh Government has announced a policy on June 20th, 2023, aiming to increase Green Hydrogen and Green Ammonia production to 0.5 MTPA or 2.0 MTPA within the next five years.
b. **Government of Gujarat Energy and Petrochemicals Department:** The Renewable Energy Policy 2023 aims to attract INR 5 lakh crore in investment in the renewable energy sector by leveraging Gujarat's 36 GW solar capacity and 143 GW wind capacity.
c. **Government of Rajasthan Energy Department:** Rajasthan plans to establish 90 GW of renewable energy projects by FY 2029-30, including solar, wind, hydropower, pumped storage, and battery energy storage systems.
d. **Rajasthan Green Hydrogen Policy, 2023**- Rajasthan's government approved the draft Green Hydrogen Policy 2023 on September 16, 2023, with the Energy Department expected to release the official notification soon. The policy aims to generate 2000 kilo-tonnes per annum by 2030.
e. **Odisha Renewable Energy Policy, 2022**- The state of Odisha has prepared a pre-feasibility report for over 5,000 MW floating solar potential, with the aim of facilitating its development through a policy.

3. Discussion

Coal-based thermal power plants (TPPs) are the primary source of air pollution in India, accounting for 60% of PM, 45% of NO2, and 80% of mercury. Delhi's thermal power plants and industries contribute to 35% and 41% of PM 2.5 emissions in winter and summer, often blown into the NCR by north-westerly winds [10]

Human activities have significantly increased natural CO2 concentration, contributing to global warming. The pre-industrial CO2 level reached 280 ppm in 2018, with the global average reaching 400 ppm in 2018. A regression model predicts CO2 concentrations from 2003 to 2025, with a low standard deviation, overshooting the 1.5-degree global temperature rise goal and requiring no mitigation measures. [13].Human activities also release sulfur dioxide, a major contributor to climate change and acid rain. Secondary aerosol particles form haze with varying concentrations. A forecast model predicts a maximum concentration of 0.23 DU and a minimum of 0.13 DU in 2025, despite high uncertainty in data from 2005 to 2020.[13].

CH4 is a significant climate pollutant, causing nearly 60% of methane emissions from human activities. It also contributes to the formation of ozone and smog. The study reveals an increasing trend of methane emissions, with a forecast model predicting a maximum concentration of 1901.35 ppbv and a minimum concentration of 1859.81 ppbv in 2025. [13].
India needs 3-4 times more energy than currently consumed to meet its fast-growing economy's energy requirements. Renewable energy is a potential solution to long-standing

energy problems faced by developing countries, making it a promising option.India's renewable energy sector experienced a 9.83% year-on-year growth in 2022, utilizing various sources like wind, solar, geothermal, ocean, biomass, and fuel cell technology to address energy shortages.The installed solar energy capacity has tripled in the past 9 years, reaching 72.31 GW as of November 2023, driven by global energy security, economic growth, and environmental protection [14].

4. Conclusion

India's rapidly growing population demands increased energy demand, necessitating a shift towards green energy and sustainable development. This approach reduces harmful gas emissions and pollution, while increasing employment and promoting a cleaner society. The Indian government is taking steps to meet these demands, promoting a greener, more sustainable economy and reducing the import of conventional energy resources.

References

[1] World Energy Scenarios Composing energy futures to 2050, World energy Council. https://www.worldenergy.org/wp-content/uploads/2013/ 09/World-Energy-Scenarios_Composing-energy-futures-to-2050_Full-report. pdf .Accessed 01 Jan 2017(2013).
[2] Blondeel M, Van de Graaf T Toward a global coal mining moratorium? A comparative analysis of coal mining policies in the USA, China, India and Australia. Climatic Change 150(1-2):89–101(2018)
[3] Pappas D Energy and Industrial Growth in India: The Next Emissions Superpower? Energy procedia 105:3656–366 (2017)
[4] J.M. Box-Steffensmeier, J. Burgess, M. Corbetta, K. Crawford, E. Duflo, L. Fogarty, . . . C. Wagner, The future of human behaviour research, Nat. Human Behav. 6 (1) 15–24(2022).
[5] Mercom clean energy Insights, https://www.mercomindia.com/indias-solar-generation-up-21-yoy-q2-2023
[6] Ministry of new renewable energy, https://mnre.gov.in/
[7] Wwindea—New Record in Worldwide Wind Installations, http://www.wwindea.org/the-world-sets-new-wind-installations-record-637-gw-new-capacity-in-2015/
[8] Twelfth five year plan 2012–2017, II-Economic sectors, Planning Commission (Government of India), Sage (2013)
[9] "India overtakes Japan with fifth-largest References hydropower capacity in the world" (https://energy.economictimes.indiatimes.com/news/power/india-overtakes-japan-with-fifth largest-hydropower-capacity-in-the-world/76095023). Retrieved 30 May 2020
[10] Central pollution Control Board. https://cpcb.nic.in/
[11] Aditya Ranjan Srivastava: Role of Renewable Energy in Indian Economy (5). 2018
[12] The Economics Times. https://economictimes.indiatimes.com/industry/renewables/renewables-created-nearly-1-million-jobs-in-2022-in-india-report/articleshow/104188637.cms
[13] National Library of Medicine. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC9517391/.
[14] Invest India. https://www.investindia.gov.in/sector/renewable-energy#:~:text=The%20installed%20solar%20energy%20capacity,GW%20as%20of%20November%202023

Systematic Exploration of Stem cell-based Strategies in Oncology: A Comprehensive Review on Cancer Therapeutics

Insha Fatima
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Abhilasha Gautam*
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Abhilasha Gautam
Email Id: abhilasha.gautam@kit.ac.in

ABSTRACT

Stem cell therapy is an innovative approach to treating cancer that targets and minimizes tumors by utilizing stem cells' capacity for regeneration. The many types of stem cells used, the complex mechanisms underlying their anti-cancer effects, and the outcomes of preclinical and clinical research are all covered in this thorough examination of the state of stem cell therapy as it relates to the treatment of cancer today. We also look at the difficulties and limitations impacting scientists and medical practitioners, emphasising how important it is to get beyond these obstacles in order to finally include stem cell therapy into widely accepted cancer treatment procedures.

Keywords: Stem cells, Cancer therapy, Regenerative cells.

1. Introduction

Cancer is still a global health concern that requires novel methods of therapy [2]. In this sense, stem cell treatment seems particularly promising since it may directly target cancer cells and alter the tumour microenvironment by taking advantage of stem cells' distinctive features [3]. This section lays the basis for a thorough analysis of recent research and clinical applications while offering a summary of the justification for using stem cells in cancer treatment. Stem cell therapy is a medical approach that utilizes stem cells to treat or prevent diseases and injuries. Stem cells are unique cells with the ability to differentiate into various cell types in the body. They can self-renew, meaning they can replicate and create more stem cells, as well as differentiate into specialized cells with specific functions. In stem cell therapy, these versatile cells are often harnessed to replace or repair damaged tissues and organs, promote regeneration, and enhance the body's natural healing processes. Stem cells can be sourced from various places, including embryos, adult tissues, neural stem cells (NSCs), mesenchymal stem cells (MSCs) and, more recently, induced pluripotent stem cells (iPSCs), in cancer therapy. It discusses the benefits and drawbacks of these cell types as well as their potential for differentiation, immune modulating qualities, and tumor-targeting abilities [1]. Every kind of stem cell has special qualities and uses in the treatment of cancer.

Hematopoietic Stem Cells (HSCs), Mesenchymal Stem Cells (MSCs) and Neural Stem Cells (NSCs). There is hope for the therapy of cancer through stem cells, including induced pluripotent and embryonic stem cells. However, for better therapeutic performance and usefulness in cancer treatment, issues such treatment durability, tumorigenesis, and immunorejection must be addressed.

Table 1: Types of Stem Cells

Hematopoietic Stem Cells (HSCs)	**Mesenchymal Stem Cells (MSCs)**	**Neural Stem Cells (NSCs)**
Leukaemia, lymphoma, and myelodysplastic syndromes are among the haematological malignancies that are treated by stem cell transplants mostly using these cells. HSCs have the ability to produce red, white, and platelet blood as well as regenerate the bone marrow.	MSCs can be obtained from bone marrow, adipose tissue, muscle, and other tissues and have the capacity to differentiate into several lineage. Their immune-modulating qualities as well as their capacity to develop into diverse cell types, such as muscle, neuron, and endothelial cells, have been examined. To treat cancer, MSCs can be genetically modified to express therapeutic compounds or cytotoxic agents. [2]	NSCs have the ability to differentiate into a variety of cell types, such as oligodendrocytes, astrocytes, and neurons. Their potential application in the treatment of neurological malignancies and other illnesses affecting the central nervous system has been studied.[1] It is possible to restore damaged brain tissue and encourage functional recovery in the brain by transplanting NSCs.[4]

2. Mechanisms of Action

This section explains the various ways that stem cells work as treatments to cure cancer. A thorough study is done on immune system modulation, direct tumour cell death, and therapeutic drug delivery. Understanding these pathways is necessary in order to improve therapeutic approaches and modify therapy for various kinds of cancer.

2.1 Cancer stem cells (CSCs), which are in charge of carcinogenesis, tumour recurrence, and medication resistance, are the main goal of stem cell therapy in the treatment of cancer. Targeted therapy development requires the identification of signalling routes and processes regulating CSCs, such as mTOR, SHH, NOTCH, and Wnt/β-catenin, which have been identified recently [5].

2.2 Blood cell-related diseases such as multiple myeloma, lymphoma, and leukaemia are treated by stem cell transplantation. They function by regaining the body's capacity to create new blood cells and, in certain situations, by attacking cancer cells that are still present in the body through a process known as graft-versus-tumor[6][7].

2.3 The unique biological activities of stem cells, such as self-renewal, directed migration, differentiation, and modulatory effects on other cells, can be applied in the therapy of cancer. Numerous stem cell types, including adult, cancer, and pluripotent stem cells, have been researched for their potential uses in cancer treatment[8][9].Whilst more research and clinical trials are required to address any potential issues and side effects, stem cell therapy shows promise in enhancing the therapeutic efficacy of existing cancer treatments and lowering off-target events[10]

3. Clinical Trials and Preclinical Studies

Considering emphasis on different cancer types, patient groups, and stem cell sources, this overview of clinical trials and preclinical studies on stem cell therapy in cancer treatment critically examines important findings. It talks about translation difficulties, safety characteristics, and effectiveness.

3.1 Breast Cancer Stem Cell-Targeted Therapies

Only a small percentage of the almost 150 clinical studies linked to breast cancer stem cells that were found through a search on ClinicalTrials.gov were really treatments aimed at CSCs. Most were peripheral stem cell transplants used to treat breast cancer patients.[11]

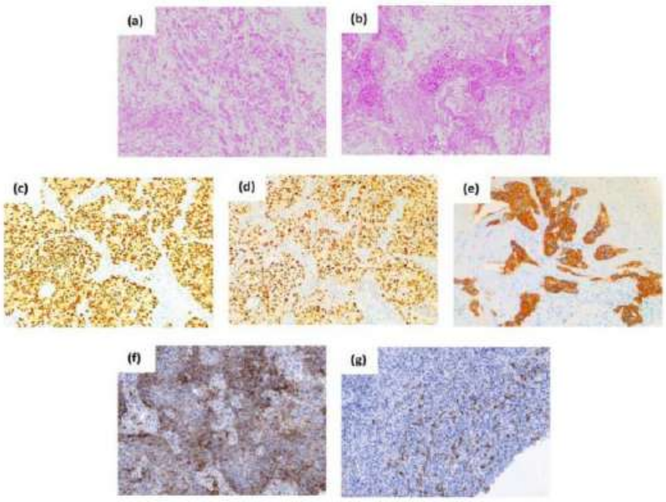

Figure 2[11]: The histological subtypes, common and stem cell-associated markers of breast cancer. The top panel shows representative histological micrographs stained with hematoxylin-eosin of lobular-type (**a**) and ductal-type breast carcinoma (**b**). Representative images of the expression of the first immunohistochemical biomarkers that have laid the foundations for the classification of the BC subtypes, the estrogen receptor (**c**), the progesterone receptor (**d**), and the human epidermal growth factor receptor 2 or HER2 (**e**). The bottom panel shows the expression of the breast cancer stem cell-associated biomarkers CD44 (**f**), and CD133 (**g**). Original magnification 100×.

3.2 Two Cancer Stem Cell-Targeted Therapies

Two methods have been addressed in relation to clinical trials, and an analysis is being done on their initial results to see if they correlate with the model's predictions.[12]

3.3 Stem Cell Therapy

In order to provide the best possible therapy alternatives and scientific proof for later clinical examinations, preclinical research is necessary. However, there are issues with treating patients with stem-cell-based products when preclinical research is translated into clinical trials.[13]

3.4 Designing Preclinical Studies for First in Human Trials

A therapy must first be studied in animals for safety and efficacy before being used in human trials. Pre-clinical research for stem cell-based products is more difficult to perform because it is not as simple as translational medication development.[14]

3.5 Clinical Trials for Stem Cell Therapies

Early findings from stem cell-related clinical trials have demonstrated the ability of stem cells to replace damaged tissue and supply extracellular components. But the experiments have In conclusion, research on cancer stem cells in preclinical and clinical settings has been done to create new therapy approaches for a range of cancer types. Despite certain advancements, there are still difficulties in converting preclinical research into clinical trials and getting reliable research outcomes. To enhance the effectiveness of stem cell therapies in the treatment of cancer, more investigation and treatment option modification are required.

4. Challenges and Limitations

The difficulties associated with stem cell therapy for cancer are examined in this part, along with its limitations. These problems include tumorigenicity, moral issues, and the requirement for standardised protocols. It is important to solve these problems in order to ensure clinical safety. Immune rejection and disease relapse: Targeting cancer stem cells may result in immunological rejection and a return of the disorder. Furthermore, the ability to accidently sthese cells in order to guarantee the effectiveness of cell-based treatments [15]. Treatment durability and tumorigenesis: Despite the use of stem cells to treat human diseases seems technically possible, many therapy alternatives' effectiveness are limited by issues including treatment duration and the possibility of tumour growth[2]. Tumor resistance to CAR-T cell therapy: Tumour resistance to single antigen-targeting CAR designs is one of the most challenging limitations of CAR-T cell treatment [16]. Patient eligibility and limited applications: The majority of CAR-T therapy's applications have been in blood and haematological malignancies; however, additional research is required to determine how well it works in solid tumours. Limited patient eligibility therefore creates an additional obstacle to care [17]. Despite these obstacles, ongoing technological developments in stem cell therapy hold the potential to yield fresh perspectives and refine signal in a new phase of positivity and innovation in the battle against cancer [15].

5. Future Directions and Innovations

The future of stem cell therapy in the treatment of cancer is covered in this section, with particular emphasis on how it may work in conjunction with other medicines like immunotherapy and targeted therapies. The physiological functions of stem cells are unique and include self-renewal, migration, differentiation, and modulatory effects [18]. Through the targeting of tumours and the reduction of off-target events, they can enhance therapeutic efficacy. Recent research has identified a molecule for blood recovery during chemotherapy or radiation therapy as well as proteins expressed by blood stem cells for therapeutic purposes [10].

6. Discussion

This review concludes by summarising the present state of stem cell therapy in the treatment of cancer, highlighting its immense potential while also recognising some of the challenges that still need to be overcome. In order to fully realise the transformational potential of stem cell therapy on the landscape of cancer treatment, it is important that we maintain our commitment to solving ethical and safety concerns while conducting thorough clinical testing and interdisciplinary research.

References

[1] Chu, Dinh-Toi, et al. "Recent progress of stem cell therapy in cancer treatment: molecular mechanisms and potential applications." Cells 9.3 (2020): 563.

[2] Zhang, Cheng-Liang, et al. 'Stem Cells in Cancer Therapy: Opportunities and Challenges'. *Oncotarget*, vol. 8, no. 43, Impact Journals, LLC, Sept. 2017, pp. 75756–75766,

[3] Sagar, Jayesh, et al. 'Role of Stem Cells in Cancer Therapy and Cancer Stem Cells: A Review'. *Cancer Cell International*, vol. 7, no. 1, Springer Nature, June 2007, p. 9,

[4] Shi, Yuxiu. 'Transplantation of Neural Stem Cells Enhances Expression of Synaptic Protein and Promotes Functional Recovery in a Rat Model of Traumatic Brain Injury'. *Molecular Medicine Reports*, Spandidos Publications, June 2011,

[5] Akbar Samadani, Ali, et al. 'Mechanisms of Cancer Stem Cell Therapy'. Clinica Chimica Acta; International Journal of Clinical Chemistry, vol. 510, Elsevier BV, Nov. 2020, pp. 581–592,

[6] Ganguly, Subha, et al. 'Stem Cell Transplantation for the Treatment of Cancer: A Review'. International Research Journal of Pharmacy, vol. 6, no. 9, Pan Health Care Research Society, Sept. 2015, pp. 600–601,

[7] Bao, Bin, et al. 'Overview of Cancer Stem Cells (CSCs) and Mechanisms of Their Regulation: Implications for Cancer Therapy'. Et al [Current Protocols in Pharmacology], vol. Chapter 14, no. 1, Wiley, June 2013, p. Unit 14.25,

[8] Anderson, I. C., et al. 'Elimination of Malignant Clonogenic Breast Cancer Cells from Human Bone Marrow'. *Cancer Research*, vol. 49, no. 16, Aug. 1989, pp. 4659–4664,

[9] Batlle, Eduard, and Hans Clevers. 'Cancer Stem Cells Revisited'. *Nature Medicine*, vol. 23, no. 10, Springer Science and Business Media LLC, Oct. 2017, pp. 1124–1134,

[10] Chu, Dinh-Toi, et al. "Recent progress of stem cell therapy in cancer treatment: molecular mechanisms and potential applications." Cells 9.3 (2020): 563.

[11] Landeros, Natalia, et al. 'Preclinical and Clinical Trials of New Treatment Strategies Targeting Cancer Stem Cells in Subtypes of Breast Cancer'. *Cells (Basel, Switzerland)*, vol. 12, no. 5, Feb. 2023,

[12] Caras, Ingrid W. 'Two Cancer Stem Cell-Targeted Therapies in Clinical Trials as Viewed from the Standpoint of the Cancer Stem Cell Model'. *Stem Cells Translational Medicine*, vol. 9, no. 8, Oxford University Press (OUP), Aug. 2020, pp. 821–826,

[13] Mousaei Ghasroldasht, Mohammad, et al. 'Stem Cell Therapy: From Idea to Clinical Practice'. International Journal of Molecular Sciences, vol. 23, no. 5, MDPI AG, Mar. 2022, p. 2850

[14] Trounson, Alan, et al. 'Clinical Trials for Stem Cell Therapies'. BMC Medicine, vol. 9, no. 1, Springer Science and Business Media LLC, May 2011, p. 52,

[15] Alnasser, Sulaiman Mohammed. 'Advances and Challenges in Cancer Stem Cells for Onco-Therapeutics'. Stem Cells International, vol. 2023, Hindawi Limited, Dec. 2023, pp. 1–17

[16] Sterner, Robert C., and Rosalie M. Sterner. 'CAR-T Cell Therapy: Current Limitations and Potential Strategies'. Blood Cancer Journal, vol. 11, no. 4, Springer Science and Business Media LLC, Apr. 2021, p. 69,

[17] Jaggers, Jordon L., et al. 'Characterizing Inclusion and Exclusion Criteria in Clinical Trials for Chimeric Antigen Receptor (CAR) T-Cell Therapy among Adults with Hematologic Malignancies'. Journal of Geriatric Oncology, vol. 12, no. 2, Elsevier BV, Mar. 2021, pp. 235–238

[18] Vahid Mansouri,et al 'Recent advances in regenerative medicine strategies for cancer treatment,Biomedicine & Pharmacotherapy',Volume 141,2021,111875,ISSN 0753-3322,

Comparative Studies between Antiseptics Available in the Local Market

Deepika Mishra
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, UttarPradesh, India.

Durgesh Kumar
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, UttarPradesh, India.

Shikha Singh
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, UttarPradesh, India.

Dipika
Department of Biotechnology
KanpurInstitute of Technology
Kanpur, UttarPradesh, India.

Ritik Patel
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, UttarPradesh, India.

Dr. Anshul Nigam*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, UttarPradesh, India.

***Corresponding Author**
Dr. Anshul Nigam
Email Id: anshul.nigam@kit.ac.in

ABSTRACT

Disinfectant is the chemical compound that eliminate microorganism by various mechanism and prevent infections. Hence find application in hospital and health care industry.Various disinfectants were tested for their efficacy against microbial consortium and at various dilutions. Our investigation reveals that most of the disinfectants are ineffective in the range of 1:1000 dilution. Thisinformation is mostly not present on the packaging and users aren't aware of usage protocol. This possesses risk of infections in health care sector, food industry and fermentation industry etc. In this investigation we have tested four disinfectant and we found X is most effective.

Keywords: Disinfectant, Microorganism, Health care industry, microbial consortium.

1. Introduction

Many types of microorganisms are present in the environment. some microorganisms also prove to be harmful for living organisms. antiseptic and disinfection are used exclusively in hospital and other health care seating for a variety of topical and hard surface application. Microorganisms usually spoil the products in food industries (Food spoilage).Therefore, microorganisms'removal is necessary in the hospital, food and pharmaceutical company. The presence of microorganisms affects the clinical process of the hospital, due to which sometimes the patient also infected. To prevent contaminated microorganisms, many chemical composition compounds (Dettol, Savlon) are generally used as they can be applied to irregular surfaces and places where other sterilization not possible. The chemical compounds present reduce the growth of microorganisms and protect from contamination. Active compound present in Dettol is (chloroxylenal), active compound present in Savlon. (Chlorhexidine gluconate) solution damages the cells of contaminated microorganisms and inhibit their growth.

2. Material and Method

Generally, any microorganisms require proper ingredients to grow, similarly in this research work we are telling the ingredients used for the microorganisms present in them to grow.

- **Nutrient Broth (NB):** Nutrient broth is a liquid medium used for the cultivation of a wide variety of organisms from clinical specimens and other material. Generally, nutrient broth is a kind of mass media which is made up of many ingredients. The nutrient broth used in this research work is made by central drug house (p) ltd. Gujarat.

Table 1: Nutrient broth ingredient.

Ingredients	**g/l**
Peptic digest of animal tissue	5.000
Sodium chloride	5.000
Beef extract	1.500
Yeast extract	1.500
Final pH (at 25°c)	7.4+ - 0.2

Suspended 13 gm of powder media in 1000 ml Distilledwater. shake well and heat. I'll necessary to dissolve the medium completely. Dispense as desired and sterilize by autoclaving at 15 bar pressure (121°c) for 15 minutes.

- **Distilled Water:** Distillation involves boiling water and collecting the steam which return to water upon cooling.
  This process is very effective at removing contamination like bacteria, viruses and protozoa like giordia and chemical like lead and sulfate. [1];

- **Dettol Antiseptic:** In Dettol main active ingredients is chlonoxylenal and other ingredients in Dettol disinfection are pine oil, soap, isopropanol,castor oil and water.[2];
- **Savlon Antiseptic:** Savlon is made up of Chlorhexidine Gluconate solution I.P 1.5% v/v, strong cetrimide B.P. equivalent to cetrimide I.P 3.0% w/v[3];

Soil Sample: In present investigation we used soil sample for bacterial consortium.

Instrument Used.

- Autoclave, Weighing balance,
- Hot Oven & Hot plate.
- Laminar air flow
- Rotatory Shake
- Spectrophotometer
- Conical flask, measuring cylinder, test tube,micropipette.

Methodology

First of all, autoclave the conical flask, measuring calendar, test tube and then start the media preparation process. In this research work, 200ml of distilled water was taken and then 2.068 grams of nutrient broth was added. Then the solution was mixed l ml. After mixing, the solution was divided equally into 4 flasks. After pouring 50ml solution in both (4) conical flasks, autoclave the entire flask again at 15bar pressure (121° C) for 15 minutes. After this the entire process was divided into 3 parts based on the dilution ratio of antiseptic.

Step -1: This dilution was made as follows: Add 9ml boil water and 1 ml antiseptic Dettol. Similarly, add 9 ml boil water and 1 ml antiseptic Savlon in 2 test tubes. 10 ml boil water and 1 gm soil sample in 3 test tubes. Put in.

Then put the prepared dilute solution in the prepared autoclave media, the process of which is as follows.

Table 2:

S.R.	Composition	Flask no.	Denoted name
1	50ml prepared media + 1ml antiseptic Dettol 1:10 dilution + 1 ml soil Sample	1st	ASD
2	50 ml prepared media + 1ml antiseptic savlon 1:10 dilution + 1ml soil Sample	2nd	ASS
3	50 ml prepared media + 1 ml boil water +1 ml soil Sample	3rd	Experimental
4	50 ml prepared media	4th	Blank

This entire process took place in laminar air flow. Then 4 flasks were removed from laminar air flow and kept in rotary shake for 48 to 72 hours, after which we got the result. Similarly, the process of step-2 and step-3 was completed. Only in step 2&3 both types antiseptic dilution ratio was changed.

Step-2: In this step the dilution ratio of both antiseptic is 1:15 (14 ml boil water &1ml antiseptic) and the quantity of nutrient broth is 2.02 gm, and Distilled water quantity 200ml.

Step -3: In this step the dilution ratio of both antiseptic is 1:20 (19 ml boil water and 1 ml antiseptic) and quantity of nutrient broth is 2.140gm and Distilled water 200ml.

3. Result

Antibacterial activity of Dettol, Savlon against organism i.e.soil sample present microbe.[4] In Dettol the active ingredient is chloroxylenal.

The result obtained from all the steps are showing in the table below –.

Table 3: Observation table

S.R.	ASD	ASS	Experimental (Control)	BLANK
Step -1	-	-	+	-
Step -2	-	-	+	-
Step -3	++	+ -	+	-

(–)sign shows that no microorganisms are present in it and similarly (+)sign shows that maximum number of microorganisms are present in it and symbol(++)shows that less microorganisms are present in it as compared to(+)sign, The(+-) sign indicates that fewer microorganisms are present than(++).
Now we will discuss the entire result step wise which is as follows –

Step -1: In this step, by keeping antiseptic dilution 1:10, we got the result that no microorganisms were present in ASD, ASS, BLANK, present microorganism experimental (Control), fig.1

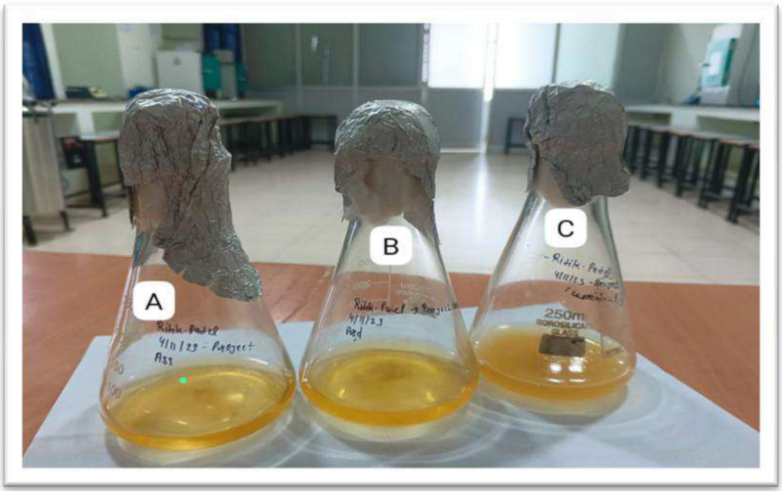

Figure 1: Microbial growth at 1:10 dilution.

AB= NO growth (m/o**), C=** Growth present (m/o)**.**

Step -2: By keeping antiseptic dilution 1:15 in this step, we observed that there was no growth in ASD, ASS, BLANK whereas in experimental (Control) in microorganisms present, Fig.2.

Figure 2: Microbial growth at 1:15 dilution.

A= Growth present,BCD= No growth present.

Step -3: By keeping antiseptic dilution 1:20 in this step, we got results like this, there was no growth in BLANK whereas this time microorganisms were present in ASD, ASS, Experimental (Control), Fig.2.

Figure 3: Microbial growth at 1:20 dilution.

A=No growth, B=Large amount microorganism present, C= Medium amount of microorganism present, D= Low amount microorganism present

Table 4: Final result

Sample	Dilution	Optical Density
Blank	1	0
ASD	1	0.111
ASS	1	0.077
Experimental	1	2.188
Experimental	3	1.088

From this entire it was revealed that microorganisms are growing at 1:20 dilution and at this Dettol is more effective in comparison than Savlon.

4. Discussion

In this work we are seeing how much amount of antiseptic inhibit the growth of contaminated microorganisms. Mainly it is a process based on 3 types of antiseptic dilution s which are mentioned in Table 1. When we add chemical compound of 1:10 antiseptic dilution (fig.1) then we get to see that there are no microorganisms in blank, ASD, ASS, the media appears completely clear whereas experimental Media growth is visible in the flask because no antiseptic is present in it, similarly if we add chemical compound of 1:15 antiseptic dilution (fig.2) then the result is compared to 1:10. Then when we add the chemical compound of 1:20 antiseptic dilution (fig.3), we see that there is no growth in the blank, the media remains completely clean whereas in ASD, ASS, Experimental growth is seen (table-3) and the media becomes clouded. From this it is concluded that at 1:10, 1:15 antiseptic works properly whereas at 1:20 dilution the antiseptic does not work completely.

5. Conclusions

On basis of our observation, we conclude that antiseptic work at seven fifty times dilution. We recommend that antiseptic manufacture should provide dilution protocol as end user mostly don’t care that lead to ineffective usage.

References

[1] https://www.healthline.com/nutrition/purified-vs-distilled-vs-regular-water#TOC_TITLE_HDR_5.
[2] https://pharmeasy.in/health-care/products/dettol-antiseptic-liquid-bottle-of-1-l-214381.
[3] https://www.bigbasket.com/pd/208012/savlon-antiseptic-disinfectant-liquid-100-ml/.
[4] Hindawi Publishing Corporation Scientific World Journal Volume 2015, Article ID 751791, 7 pages http://dx.doi.org/10.1155/2015/751791 Antimicrobial Analysis of an Antiseptic Made from Ethanol Crude Extracts of *P. granatum* and *E. uniflora* in Wistar Rats against Staphylococcus aureus and Staphylococcus epidermidis**.**
[5] Research Journal of Microbiology 3: 262-268, 2008 ISSN 1816-4935, Academic Journals Inc. Comparative Antimicrobial Activity of Commercial Disinfectants with Naphtholics
[6] GI. Olasehinde, J.A. Akinyanju aNNA A Ajayi.Department of Biological Sciences, College of Science and Technology. Covenant University, P.M.B. 1023, Ota, Nigeria Department of Biological Sciences, Faculty of Science, University of Iloin, Ilorin, Nigeria.
[7] Clinical microbiology reviews 12, 0893-8512/99/$04.0010 Jan. 1999, p. 147–179, 1999, American Society for Microbiology. All Rights Reserved. Antiseptics and Disinfectants: Activity, Action, and Resistance Gerald McDonnelland A. DenverRussellSteris Corporation, St. Louis Operations, St. Louis, Missouri 63166,1 and Welsh School of Pharmacy, Cardiff University, Cardiff CF1 3XF, United Kingdom.

Micropollutants and its Impact on Marine and Aquatic Life and Ecosystem

Prachi Upadhyay
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Riya Yadav
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Mahak Dixit*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Mahak Dixit
Email Id: 221854@kit.ac.in

ABSTRACT

As 71% of earth surface is covered with water and as a part of this our body is also covered with 70% of water. So, water is an essential need of all components for survival and for this it is also mandatory to keep water clean as it is equally important for aquatic animals. As a large number of dirt and waste are majorly decomposed in water which effect the aquatic animals more because water is the only source of living for aquatic or marine ecosystem and mainly the sewage (municipal wastewater), suspended solids, biodegradable organic matter, nutrients and pathogenic (disease causing) organisms, fertilizers, pesticides, and other organic contaminants that are – dead sea animals and plants which flow with the water[1] and many other things and all these substances combinedly known as micropollutants [MP's] as they are majorly found in trace quantities and smaller size which is only visible under microscopes , which effect the marine ecosystem as well as human life. In many countries people directly through waste [MP's] into the water without monitoring the harmful and hazardous impact of these in natural ecosystem it suspects a major effect on aquatic animals and plants, as humans know how to filter wastewater and use it but fishes and other organisms living in water only consume the oxygen present in water but if that water will get polluted moreover a glut of species will get extinct in some days because of toxic substances consumption [2]. So, in this review a brief of how micropollutants are harmful and degrading ecosystem and control over these [MP's] is important will be enlightened.

Keywords: Micropollutants, aquatic ecosystem, water.

1. Introduction

MP's (Micropollutants) are potentially hazardous contaminants or particles that are found in water or in any substance in trace quantities. They are said to be micro because they have miniature size (less than one microgram per litre) and they appear in a large amount in water as every day 2 million tone of sewage and other effluents drain into the world's water (Richardson. S.D. Ternes, T.A., & Water, W. (2018)) Industrial discharge an estimated 300-400 mega tonnes of waste into water bodies every year (Microbial contaminants, lead, nitrates and nitrites, arsenic, disinfection byproducts, pesticides, and solvents are among the major contaminants discarded by industries) [3] micropollutants originate daily from personal care products, pharmaceuticals, cosmetic products, pesticides and hormones as these MP's mostly contain harmful and toxic chemicals. So are not useable by aquatic fisheries and for humans also, as an estimate of across fishes and other water animals die daily in India So, based on this a very common question arises that why should we have to be aware of these pollutants and their marine habitats as because water has been a crucial part of the culture of any civilisation and people are intertwined with these water bodies in material and spiritual ways [1] and the aquatic animals living in water bodies also get oxygen that is dissolved in water and if most of the area will be taken by the contaminants and other toxic substances the oxygen level in the water get reduced and a lot of deaths in marine ecosystem will take place as the gases which are released by the harmful contaminants are (carbon dioxide, hydrogen sulphide, methane and radon) these gases are not consumable for humans as well as for fishes and other living organism living in water[2] . The sewage water is directly discarded in water without any treatment which makes water body more sophisticated for their ecosystem [3].

The personal care products which contain chemicals that are not drinkable, the trace metals discarded in water bodies which stays in water for years and years, the microplastics which do not decompose for millions of years and the organic compounds and hormonal and endocrine disrupts which should not be consumed by aquatic animals but are indulging it because of their presence in water which make it quite dangerous. Us humans know how to clean and filter water but the aquatic animals don't know how to clean water and are consuming it unknowingly so if we are consuming safe water they should also and it's our responsibility to make it clean [4].

2. Harmful Effects of Micropollutants in Marine Ecosystem (Global Data)

As the micropollutants cause a various type of side effects in aquatic organisms as the oxygen level in the water bodies get disrupted and the fish species feminisation (The signs of feminisation in male fish are the production of a female yolk protein which is known only to be produced as a response to an oestrogen exposure, and the occurrence of intersex – an abnormal form of hermaphroditism) [4].

The genotypes, hormones and physiological conditions of the individual are also equally important endogenous regulators of growth [3]. Overfeeding or poor feed utilization by the fishes could also leads to nutrient enrichment of the fish pond with concomitant water quality changes, these might increase algal production and degraded habitat which could affect fish abundances and the culture system shown in fig.1. These micropollutants also effect the immunological health of the aquatic organisms when the pollutants enter in fish's gills (gills are heavily congested and contain a considerable amount of mucus; fish exposed to high ammonia concentrations may have slight to severe bleeding of gills) and stomach it makes difficult for them to oxygenate and digest food [1]. These {MP's} also increase the carbon dioxide in water due to the decrement of oxygen and increment of carbon dioxide the population of fishes, crabs, whales, sharks, dolphins and penguins die.

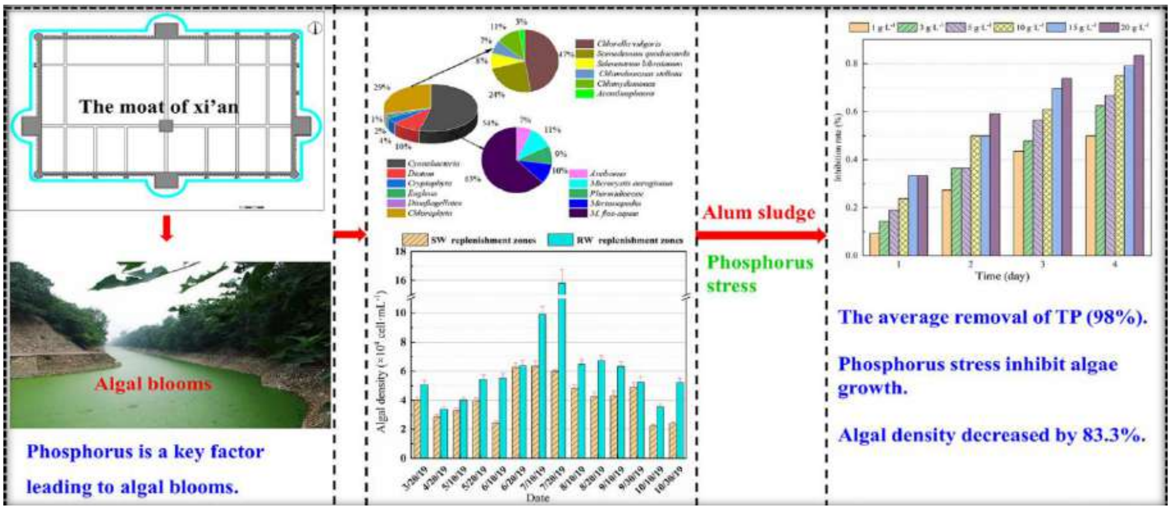

Figure 1: Shows how the concentration level of phosphorus and other compounds lead to the formation of algal sludge in water, making a layer above the water and blocking the oxygen for aquatic organisms [4].

Acquisting from the above-mentioned fig.1.sludge and contaminants shown in the table and graph it can also be stated that how the contamination of all other metals is also disturbing the marine ecosystem; the trace metals generally anthropogenic in nature are making various types of injuries in marine animals and their ecosystem too. The level of concentration of these metals can be shown from fig.2.

2.1 Concentration Table of Trace Metals Found in Water (Indian Data)

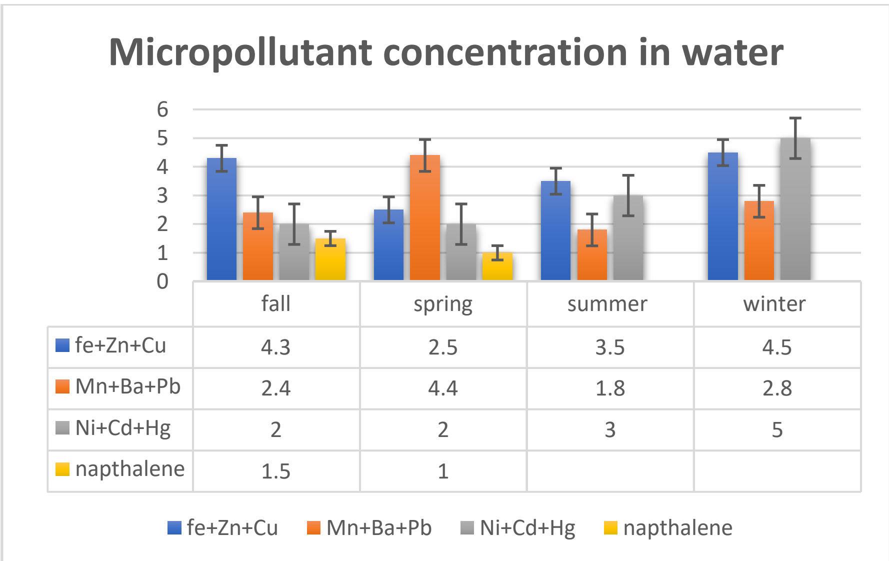

	fall	spring	summer	winter
fe+Zn+Cu	4.3	2.5	3.5	4.5
Mn+Ba+Pb	2.4	4.4	1.8	2.8
Ni+Cd+Hg	2	2	3	5
napthalene	1.5	1		

Figure 2: Shows the concentration of various metals (like iron, zinc, copper, manganese, lead, nickel, barium, mercury, and naphthalene, caladium) found in water which establish various pollutants involve in degrading water and making them useless for aquatic animals and organisms in India.

3. Conclusion

Removal of micropollutants from the contaminated wastewater is required to avoid its hazardous effects on marine ecosystem as well as for the animals that are totally dependent on surface water for their survival. A small initiation in treating wastewater before discarding it in water is important for making the aquatic ecosystem healthy for animals in water bodies. For micropollutants degradation and removal, a variety of biological and physiochemical processes have been employed and are needed to be used and progressed well.

The wastewater composition can reflect the different consumer patterns. Potential drugs of abuse, anti-psychotic and anti-depressant drugs were predominant in the capital region, whereas antiepileptic drugs and agricultural pesticides were predominant in the rural areas.

The data obtained can be screened to get retrospective analysis for the treatment and preservation of water from the components which harm water this study shows miserable amount of micropollutants involved in making toxicities in water. This approach can be prioritized to achieve a knowledge that how micropollutants from water can be removed and use in various other ways. The qualitative (compound presence or absence) and quantitative (volume flows) amount of sub divided micropollutants can be used to simply detect and trace flow paths than classic other traces.

Acknowledgement

We would like to express our special thanks for gratitude to the kit management and Director Prof. (Dr.) Brajesh Varshney sir, Dr. Abhilasha ma’am & Dr. Neeraj Mishra sir for giving us opportunity to broadcast our knowledge in this field.

References

[1] 1.Diana JS, Lin CK, Yi Y. Timing of supplement feeding for tilapia production. J. world aquaculture. Soc.; 27(4):410-419 (1996).
[2] S.A. Abo-Farha et.al Removal of some heavy metals cations by synthetic resin purolite C100 J. Hazard. Mater. (2009)
[3] Navratil T. and Minarik L. (Academy of sciences, Prague, Czech Republic)
[4] Harada, M.. Minamata disease: methylmercury poisoning in Japan caused by environmental pollution. Critical reviews in toxicology, 25(1), pp.1-24 (1995).

Exploring the Potential of Biofuels: An In-depth Analysis of Bioethanol, Biodiesel, Biogas and Bio-oil

Sushant Shekhar
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Jay Vishnoi
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Abhilasha Gautam*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Abhilasha Gautam
Email Id: abhilasha.gautam@kit.ac.in

ABSTRACT

Biofuels, energy-rich chemicals from biomass, are a promising renewable energy source.Biomass energy is part of one of the biggest programs for alternative energy in the worldwhich India has started as the 4th largest energy consumer.Primary and secondary are two types of biofuels. Burning animal waste and plant material produces primary biofuels. Secondary biofuels have three generations and are made from different sources. 1st generation biofuels are ethanol from crops with a lot of starch and biodiesel from animal fat that is not used. 2nd generation biofuels are bioethanol from biomass that is not edible and biodiesel from seeds with a lot of oil. The 3rd generation biofuels, which have the most potential, are made from microbes like cyanobacteria and microalgae.This review discusses the progress, challenges, and opportunities in biofuel production, focusing on bioethanol, biodiesel, bio-oil, and biogas. The analysis indicates that most of these technologies are still in the early stages of development. The main obstacles for using biofuel on a large scale are either the cost or the technical problems.

Keywords: Bioethanol, Biodiesel, Biofuel, Biogas, Bio-Oil, Renewable Energy

1. Introduction

Using fossil fuels as the main source of energy adds more CO2 to the air and leads to global warming.Increase in level of CO_2 is one of the major causes of climate change, but other greenhouse gases (GHGs) also contribute to it. Fossil fuels account for 73% of our CO_2 emissions. We must discover solutions to reduce our GHG emissions if we are to protect the environment. Some of the things we can work on include consuming less energy, making energy use more effective, switching to cleaner fuels, assisting nature in absorbing more CO_2, and capturing and storing CO_2. We can lower both CO_2 and pollution by diminishing our use of fossil fuels. As we confront the concerns of climate change and fossil fuel dependence, we must explore for renewable energy sources that produce less CO_2. Biofuel is one of the possibilities that can replace fossil fuels and reduce our GHGsemissions[1]. Biofuels encompass energy-dense chemicals that are either produced directly via biological processes or obtained from the chemical transformation of biomass from previously living organisms[2].Biofuels can be categorized into three distinct generations, all of which are indirectly produced from plant and animal matter. The first generation includes ethanol extracted from starch-rich food crops or biodiesel derived from waste animal fats like cooking oil. The second generation involves bioethanol produced from cellulosic biomass and biodiesel sourced from oil-rich plant seeds such as jatropha or soybean. The third and most promising generation of biofuels is produced from cyanobacteria, microalgae, and other microbes, offering a potential solution to meet global energy needs [2].

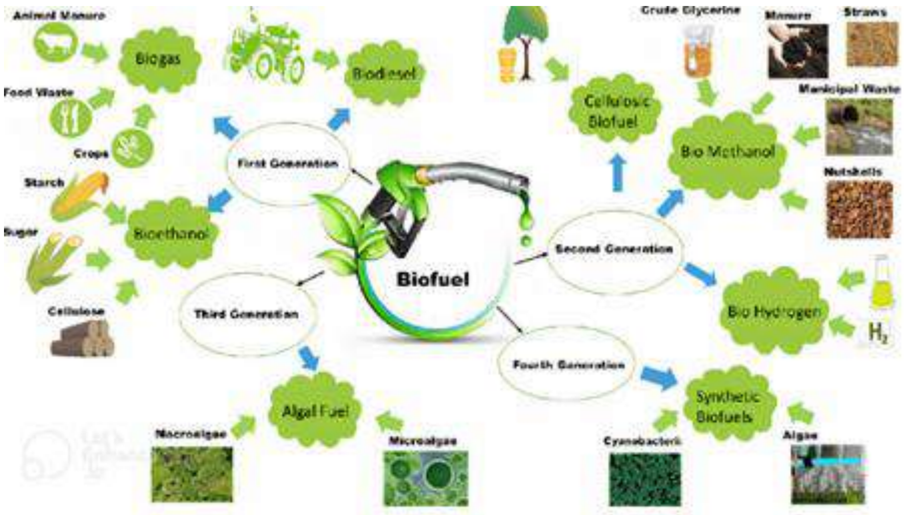

Figure 1: *Generation and types of biofuels* [3]

2. Biofuel

Biomass energy technologies, in particular, utilize plants or waste materials for energy production, resulting in a lower greenhouse effect compared to fossil fuels [4].Bioethanol, which is the most commonly used biofuel worldwide for transportation, is derived from starchy and cereal crops such as wheat, corn, sugarcane, beet, and sorghum. Furthermore, seeds from oil or trees like soy, coconut, sunflower, palm, jatropha and rapeseed are also utilized in the production of bioethanol.Around 60% of the world's bioethanolyield is derived from sugarcane, with the remaining 40% coming from other crops[5]. Bioethanol production, which began with corn in the 1970s, has seen a steady increase in use [6]. Roughly 80-85% of the biofuel production in the European Union is derived from rapeseed oil, which corresponds to 20% of the total rapeseed production in the European Union.In 2011, the global production of bioethanol was close to 10 billion litres, which saw a significant increase to 281.5 billion litres by the year 2020[7].

2.1 Bioethanol

Bioethanol, also referred to as ethyl alcohol or grain alcohol, is a chemical substance with the formulaCH3–CH2–OH or ETOH. Bioethanol is often utilized as a supplement in petrol. Its function is to boost the octane ratings and assist in decreasing detrimental emissions[1].Bioethanol is typically made by fermenting glucose(generally from corn, sugarcane, or wheat) using genetically modified organisms like *Saccharomyces cerevisiae*. Corn is a key source for bioethanol production [8]. Nonetheless, the cultivation of corn for ethanol production presents both ethical and financial issues, such as the expenses associated with its production.For example, the cost of manufacturing ethanol from corn and molasses is approximately $0.75 and $0.74 per litre respectively in various nations[9].Genetically modified organisms like *Saccharomyces cerevisiae* are utilized to transform lignocellulosic sugars into ethanol.Nonetheless, due to the robust structure of lignocellulose, it requires decomposition prior to fermentation[3]. Bioethanol has several advantages and disadvantages. On the plus side, it's a form of renewable energy, signifying that it can be naturally renewed over a certain duration. It also aids in diminishing the emission of greenhouse gases, thereby playing a role incombating climate change. Furthermore, it enhances energy reliability by offering a substitute for fossil fuels.

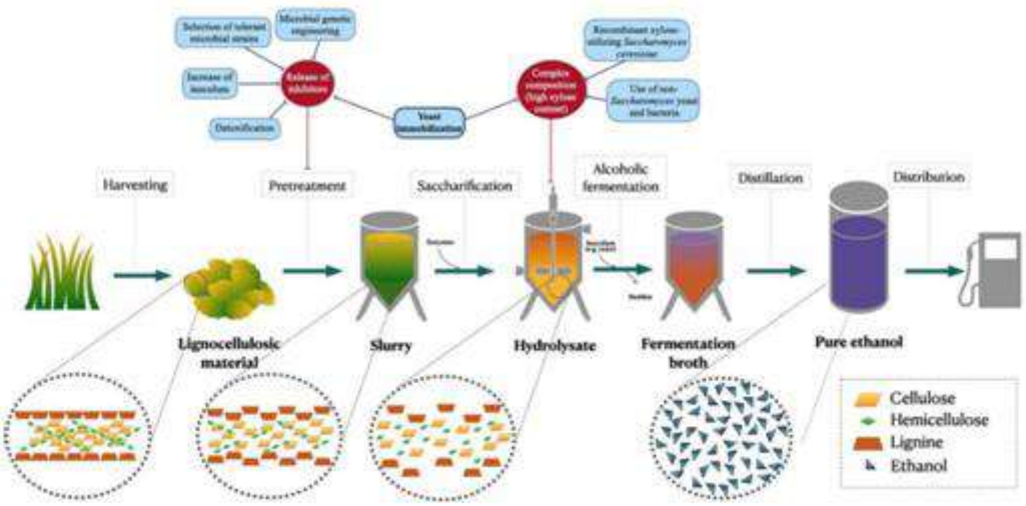

Figure 2: *Production of second-generation bioethanol, challenges, and potential approaches to mitigate their impact* [10]

2.2 Biodiesel

Biodieselis a renewable fuel made from animal fats or vegetable oils. Different substances such as waste greases, animal fats, and vegetable oils can be utilized for the production of biodiesel.A significant advantage of biodiesel is its impact on the environment.: it doesn't emit sulphur during combustion, doesn't produce polycyclic aromatic hydrocarbons, and the CO2 it emits can be recycled as it's derived from biomass [11].Production process involves several steps including trans-esterification, settling, glycerine washing, methanol recovery, and hexane extraction. These steps help to transform the waste oil into a usable fuel, reducing both waste and the cost of biodiesel production [3].

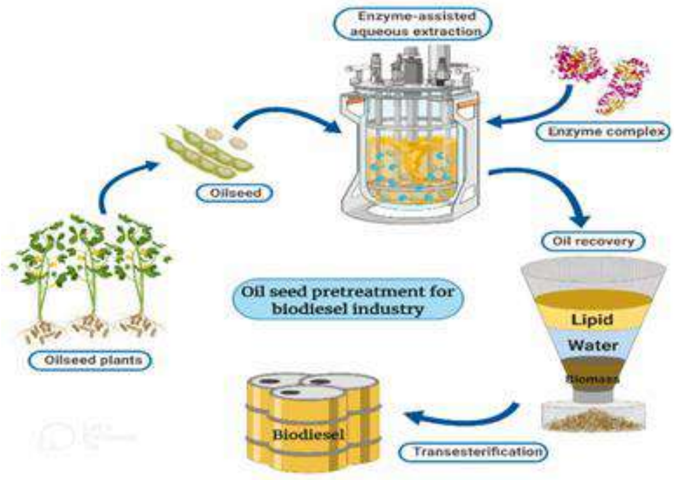

Figure 3: *Pretreatment and production of biodiesel[16]*

2.*3 Bio-Oil*

Bio-oil, also termed as pyrolysis oil, is a kind of biofuel that is derived from biomass materials like sawdust, agricultural wastes and wood chips. It is generated via a procedure known as pyrolysis, which entails the process of heating the biomass in oxygen free environment to yield a liquid oil[12].Bio-oil, a primary output of pyrolysis, is a liquid concoction made up of diverse organic compounds. These encompassphenolics, sugar derivatives,pyrolytic lignin, sugar oligomers, andsugar monomers[13].Bio-oil has potential applications in various areas. It can serve as a low-quality fuel for boilers, be refined into high-quality fuels for automobile engines, or act as a source of beneficial chemicals. Additionally, it can function as a binder and be utilized to manufacture functional carbon materials. The primary objective of biomass pyrolysis was to generate a sustainable fuel that could serve as a substitute for fossil fuels like diesel and petrol.To achieve this, various pyrolysis processes and pyrolizers with different configurations have been developed. Some research groups and companies have even achieved large-scale bio-oil production, marking a significant milestone in the field of renewable energy.

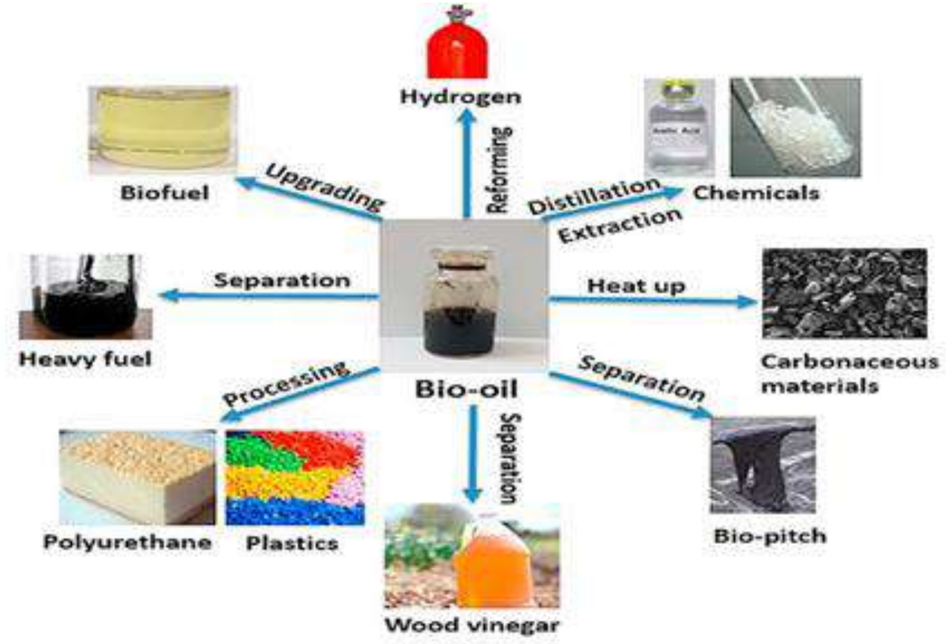

Figure 4: *Application of Bio-oil [17]*

2.4 Biogas

Biogas, a form of biofuel, is obtained from the breakdown of organic substances like food scraps, sewage, and agricultural waste. It is poised to have a significant impact on our future energy scenarios.The process of generating biogas via anaerobic digestion holds considerable benefits compared to other methods of bioenergy production.However, the process is influenced by several factors.For instance, the temperature regime plays a role, thermophilic anaerobic digestion, which operates at 55-70 ºC, has a rate benefit compared to mesophilic digestion.But the microorganisms involved in anaerobic digestion are sensitive to temperature changes, which can impact biogas production.Another determinant is the pH level, with the optimal range for anaerobic digestion falling between 6.8 and 7.4.Despite these challenges, the potential of biogas as a sustainable energy source is undeniable [14].The uses of biogas are multifaceted. It can be used for heating, contributing to the thermal needs of households and industries. It also plays a significant role in electricity generation, providing a sustainable solution to power homes and businesses. Furthermore, biogas can serve as a fuel for vehicles, providing a more environmentally friendly substitute to conventional fossil fuels.

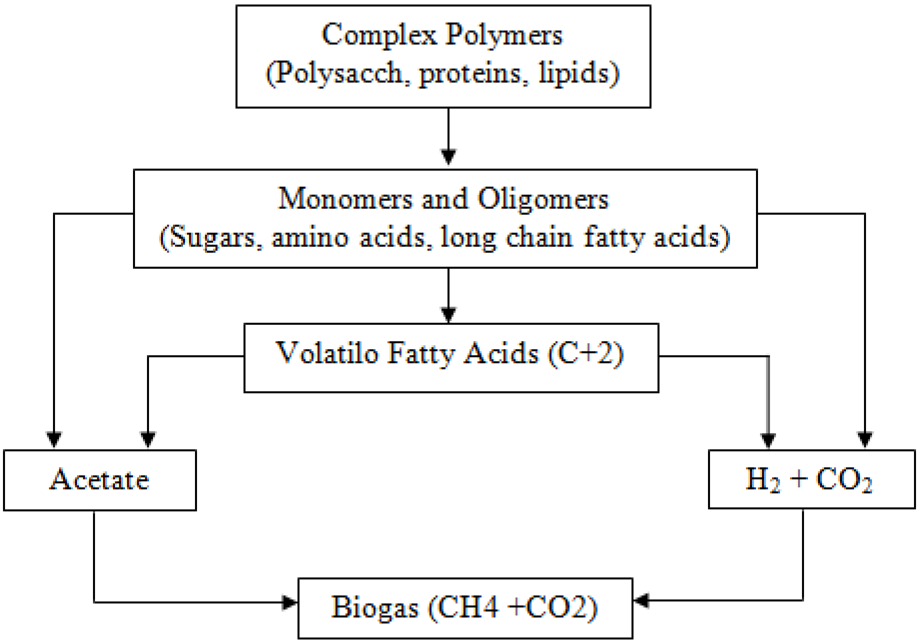

Figure 5: *The stages of the methane fermentation process [14]*

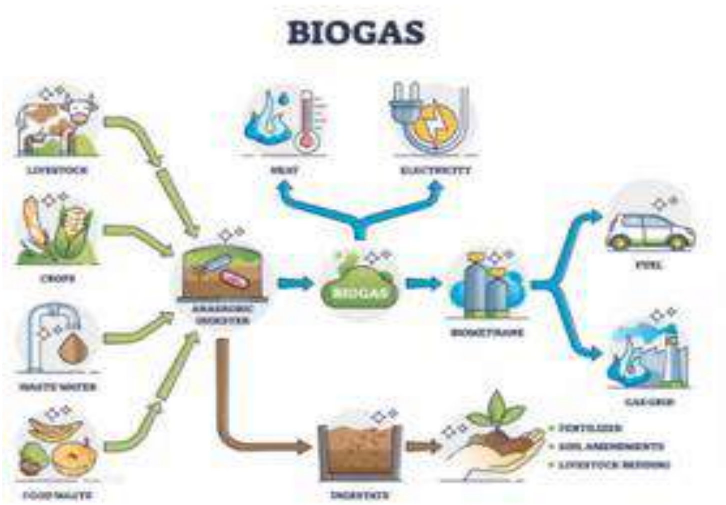

Figure 6: *Biogas - Production and application [15]*

3. Discussion

Biofuels are emerging as a promising solution for renewable energy, and the field is witnessing substantial advancements. They offer a diverse range of energy sources, from primary biofuels derived from plant material and animal waste, to secondary biofuels such as biodiesel, bioethanol,biogasand bio-oil. Every stage of biofuel production presents its own distinct benefits and obstacles.The potential of biofuels is particularly significant in countries like India, which is the 4th largest energy consumer and has launched one of the world's most extensive substitute energy initiatives. Nonetheless, the large-scale commercial utilization of biofuels is still in its infancy, with financial and technical challenges acting as substantial obstacles.In spite of these hurdles, ongoing research and development in this domain are laying the groundwork for more proficient and economically viable biofuel technologies.As these technologies progress, biofuels could play a key role in forging a sustainable energy future.

Acknowledgements

We would like to offer our heartfelt gratitude to the KIT management, director Prof. Brajesh Varshney for their support. We'd like to thank Dr. Neeraj Kumar Mishra, head of department, for his support and assistance in conducting this review.

References

[1] Balat M, Balat H, Öz C. Progress in bioethanol processing. *Prog Energy Combust Sci* 2008; 34: 551–573.
[2] Rodionova M V., Poudyal RS, Tiwari I, et al. Biofuel production: Challenges and opportunities. *International Journal of Hydrogen Energy* 2017; 42: 8450–8461.
[3] Rizwan Javed M, Junaid Bilal M, Umer Farooq Ashraf M, et al. *Microalgae as a Feedstock for Biofuel Production: Current Status and Future Prospects*, www.avidscience.com (2019).
[4] Demirbas A. Biofuels sources, biofuel policy, biofuel economy and global biofuel projections. *Energy Convers Manag* 2008; 49: 2106–2116.
[5] Petersen J-E. Energy production with agricultural biomass: environmental implications and analytical challenges. *European Review of Agricultural Economics* 2008; 35: 385–408.
[6] Taylor G. Biofuels and the biorefinery concept. *Energy Policy* 2008; 36: 4406–4409.
[7] Dufey A. *Biofuels production, trade and sustainable development: emerging issues*, www.iied.org (2006).
[8] Lee RA, Lavoie J-M. From first- to third-generation biofuels: Challenges of producing a commodity from a biomass of increasing complexity. *Animal Frontiers* 2013; 3: 6–11.
[9] Taghizadeh-Alisaraei A, Motevali A, Ghobadian B. Ethanol production from date wastes: Adapted technologies, challenges, and global potential. *Renew Energy* 2019; 143: 1094–1110.
[10] Chacón-Navarrete H, Martín C, Moreno-García J. Yeast immobilization systems for second-generation ethanol production: actual trends and future perspectives. *Biofuels, Bioproducts and Biorefining* 2021; 15: 1549–1565.
[11] José P, Cerveró M, Coca J, et al. Production of biodiesel from vegetable oils REVISIÓN REVISIÓN. 2008; 59: 76–83.
[12] Isahak WNRW, Hisham MWM, Yarmo MA, et al. A review on bio-oil production from biomass by using pyrolysis method. *Renewable and Sustainable Energy Reviews* 2012; 16: 5910–5923.
[13] Bertero M, de la Puente G, Sedran U. Fuels from bio-oils: Bio-oil production from different residual sources, characterization and thermal conditioning. *Fuel* 2012; 95: 263–271.
[14] Weiland P. Biogas production: Current state and perspectives. *Applied Microbiology and Biotechnology* 2010; 85: 849–860.
[15] Biogas or bio gas division for energy consumption and sources outline diagram – VectorMine, https://vectormine.com/item/biogas-or-bio-gas-division-for-energy-consumption-and-sources-outline-diagram/ (accessed 25 January 2024).
[16] Valladares-Diestra K, de Souza Vandenberghe LP, Soccol CR. Oilseed Enzymatic Pretreatment for Efficient Oil Recovery in Biodiesel Production Industry: a Review. *Bioenergy Res* 2020; 13: 1016–1030.
[17] Hu X, Gholizadeh M. Progress of the applications of bio-oil. *Renewable and Sustainable Energy Reviews* 2020; 134: 110124.

Air Quality Crisis in Indian Metropolises: A Comprehensive Review on Health Impacts and Mitigation Strategies for Sustainable Improvement

Anshika Devi
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Higher Education
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Shubhi Sharma
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Higher Education
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Ashish Ranjan Singh*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Uma Gupta
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Ashish Ranjan Singh
Email Id: ashishranjan.singh@kit.ac.in

ABSTRACT

A report reveals that 35 out of 50 cities globally have the most severe air pollution, indicating a pressing environmental issue. The World Health Organization's air quality standards are not met in Indian cities like Delhi, Mumbai, Hyderabad, and Kolkata, highlighting the urgent need for both governmental and non-governmental entities to address the root causes of air pollution, which poses significant risks to public health and the environment.

India and China are among the top ten countries with the highest pollution-related fatalities, with 2.3 million and 1.8 million deaths, respectively, among the world's largest and most affluent nations.Air pollution is becoming increasingly dangerous, with the potential for poisonous air by 2030, requiring oxygen kits for easy breathing, premature aging, and increased exposure to air toxins, highlighting the urgent need for effective control measures.

India has implemented regulations to standardize electronic waste management, focusing on e-waste recycling to reduce resource shortages, environmental stress. Technological advancements and a paradigm shift in recycling methodologies are needed for improved efficiency and reduced hazardous substance production. Collaborative efforts with policymakers, environmental agencies, and local communities are crucial for pollution mitigation and sustainable practices.

Keywords: Pollution, Environment, Health India,

1. Introduction

The confluence of air pollution and climate change poses significant challenges for burgeoning urban centres, particularly in transitioning nations like India. Evolving from predominantly rural to urban landscapes, these regions grapple with pivotal issues in climate action and sustainable development [1, 2]. Urbanization-induced alterations in land use land cover patterns further impact regional climate dynamics by modifying surface and boundary layer atmospheric properties [3,4 5]. The Indian subcontinent is experiencing heightened aerosol loading due to the simultaneous surge in urbanization, population expansion, and industrialization, which is a key factor contributing to elevated pollutants and aerosol emissions[6,7,8].

The World Health Organization reports that PM2.5 pollution causes over seven million global fatalities. India, with nine of the world's 10 most polluted cities, faces significant air pollution challenges due to its rapidly advancing population. The increasing air pollution in Indian megacities has significant health impacts, including asthma and cardio-respiratory illnesses.[10, 11, 12].

Mumbai's coastal areas experience an annual sea level rise of 2.5 to 3 mm [13]. A study in India's Nanda Devi region found that climate change-induced temperatures could trigger glacier melting, with a 10% reduction in glaciated area between 1980 and 2017. Extreme weather events like floods, storms, and droughts also contribute to significant human and environmental impacts [14,15, 16].Climate change forecasts for 57 Indian cities from 2036 to 2060 show 33 cities are predicted to experience high extreme rainfall, increasing flood risk, while 24 cities are predicted to experience reduced precipitation, increasing drought risk [17-19].

India's 2022 State of Global Air Report shows that air pollution caused over 1.6 million deaths in 2019, ranking it as the fifth most polluted country globally. The report also estimates economic losses of $29 billion and $8 billion from premature deaths and illnesses linked to air pollution [20].The Indo-Gangetic Plains, home to 40% of India's population, is a major air pollution hotspot, with Delhi, Punjab, Haryana, and Uttar Pradesh being particularly affected by rising pollution levels from both local and non-local sources [21, 22].

The assessment highlights high air pollution levels in major Indian cities, exceeding permissible limits, posing significant health risks from both anthropogenic and natural sources. It calls for continuous monitoring and satellite data for effective mitigation strategies.

2. Criteria Pollutant

The EPA regulates air quality standards for six common pollutants: carbon monoxide, ozone, nitrogen dioxide, sulphur dioxide, lead, and particulate matter, with primary standards aimed at human health and secondary standards at environmental protection.

Carbon Monoxide (CO), a colourless gas from incomplete combustion, is regulated by the EPA under the US Clean Air Act, primarily from vehicle and machinery burning, affecting indoor air quality.The IEA's 2021 analysis revealed a 6% increase in global CO_2 emissions from energy combustion and industrial processes, reaching an unprecedented 36.3 gigatonnes, a more than 2.0 gigatonne increase from 2020 levels.

Ground-Level Ozone (O_3) Ozone, a colourless gas, forms from sunlight, heat, NOx, and VOCs. Major sources include industrial emissions, vehicle exhaust, gasoline vapours, and solvents. Ozone concentrations can rise in urban and rural areas due to long-distance wind transport.

Nitrogen Dioxide (NO_2): Nitrogen dioxide, part of the "oxides of nitrogen" group, significantly contributes to smog and acid rain in the U.S., primarily generated by combustion engines, electrical utilities, industrial processes, and natural sources like lightning. Nitrous oxide is produced by bacteria, completing the nitrogen cycle.

Sulphur Dioxide (SO_2): Sulphur dioxide (SO_2) is a sulphur oxide released during fossil fuel combustion in power plants and industrial facilities, along with emissions from locomotives, ships, and non-road equipment. It is also influenced by volcanic activity and bacterial and marine organism oxidation.

Particulate Material (PM): Particulate matter (PM) is a mix of solid and liquid particles in the air, including acids, organic chemicals, metals, soil, dust, and allergens. The size of PM, particularly those under 10 micrometres, significantly impacts health, with the EPA classifying it into coarse and fine particles.[23-27].

2.1. Data of air Pollution in Metropolises

Between 1998 and 2020, India experienced a consistent increase in annual mean PM2.5 concentrations, with Delhi being the most polluted state. Other states like Telangana, Andhra Pradesh, Jharkhand, Maharashtra, Odisha, and West Bengal also experienced increases. Delhi experienced a 40% surge in PM2.5 levels, attributed to advancements in fuel and vehicle standards, piped liquified natural gas, and the freight corridor. On a national scale, average PM2.5 pollution levels rose by 28%, 53%, 32%, 46%, 79%, 64%, and 42%, respectively.[28-30].

2.2. Modelled Source Contribution

India's dominant PM2.5 pollution, constituting 81% of emissions, stems from fuel combustion, alongside contributions from agricultural activities, biomass burning, and wind-blown dust. Primary sources include residential cooking and heating. The COVID-19 pandemic induced transformative changes in Indian cities, fostering clean air and blue skies through lockdowns, work-from-home policies, and constrained transport [29].

3. Impact of Air Pollution on Human Health

Air pollution has both short-term and long-term health effects, especially on vulnerable populations like the elderly, children, and those with diabetes. The extent of these effects is still poorly understood, necessitating new models for accurate human exposure data assessment. Short-term consequences range from mild discomfort to severe conditions, while chronic effects can cause fatalities and psychological issues. [30-34].

3.1. Environmental Impact of Air Pollution

Acid rain, haze, ground-level ozone, greenhouse gases, and air pollution are harmful environmental impacts. Acid rain harms water, soil, trees, plantations, and structures. Haze reduces atmospheric transparency, ground-level ozone is harmful, and human activities disrupt greenhouse effect, leading to global warming. Air pollution affects soil, water, crop yield, food productivity, and aquatic life [35].

3.2. Death Caused by Air Pollution

India's 2011 census revealed 230 million people in towns and cities with populations under one million. Bulandsahar, Nainital, and Patiala were selected for study. In 2019, India experienced over 2.3 million premature deaths, mainly due to air and water pollution. Globally, air pollution caused 6.7 million deaths in 2019, while water pollution caused 1.4 million and lead pollution 900,000. Air pollution is linked to major causes of death, including heart disease, stroke, respiratory infections, lung cancer, and diabetes.[36].

3.3. Herbal Solution to Reduce Air Pollution

Phytoremediation is a cost-effective and eco-friendly method for mitigating air pollution. It involves plants absorbing and degrading pollutants through metabolic activities, primarily on above-ground surfaces like leaf stomata. Plant metabolites like enzymes facilitate this process, purifying hazardous compounds and greenhouse gases. Large-scale plantings enhance oxygen levels, balance CO2 and O2, reduce air pollutants, offer windbreaks, prevent soil erosion, and filter microbes. Plants also benefit indoor environments with benzene and formaldehyde pollution [37, 38].

4. Discussion

It has been reported that Singrauli, a polluted region, has seen rising annual averages in CO2, SO2, and CH4 concentrations from 2003 to 2020 due to increased air pollutants from thermal power plants, coal mining, and industries [38, 39]. In 2019, India had an average population-weighted PM2.5 concentration of 91.7 µg/m3, with northern states having higher levels. The eastern and northern states of India have high household PM2.5 and ozone concentrations, with a significant portion relying on solid fuels. Despite these issues, India experienced a

64.2% reduction in crude death rate between 1990 and 2019, despite increased ambient particulate matter and ozone pollution.[24, 25,40].

In 2019, 39.5% of fatalities in India were due to lung diseases, including COPD (22.7%), lower respiratory infections (15.5%), and lung cancer (1.3%). The remaining DALYs included ischemic heart disease (24.9%), stroke (13.7%), diabetes (5.5%), neonatal disorders (14.5%), and cataracts (1.5%)[12, 41].

India faces health and socio-economic issues due to air pollution, particularly PM2.5, causing eye irritation and coughing. The National Ambient Air Quality (NCAP) aims to reduce pollution in cities, but progress has been uneven. The Ministry of Environment, Forests, and Climate Change has set a nationwide goal to decrease annual PM2.5 levels by 20-30 percent by 2024[19].

Renewable energy emerges as a promising remedy for persistent air pollution challenges in developing nations. India's renewable sector exhibited a 9.83% year-on-year growth in 2022, harnessing wind, solar, geothermal, ocean, biomass, and fuel cell technologies to combat acid rain, haze, ground-level ozone, and greenhouse gas emissions, marking substantial progress towards a cleaner, sustainable energy future.The 2030 goal is to achieve a 20% ethanol in petrol and a 5% biodiesel in diesel blend, which is expected to reduce emissions, improve air quality, and promote healthier ecosystems, with the shift expected to have positive environmental effects.

5. Conclusion

Air pollution is a global issue, with efforts often failing. Renewable energy sources like solar, wind, hydro, and biomass can reduce emissions. Promoting public transportation, carpooling, cycling, and tree planting can improve air quality. Raising public awareness and educating the public is crucial for developing effective policies and mitigation strategies that play a crucial role in controlling pollution.

References

[1] Van Duijne, R. J. (2017). What is India’s urbanisation riddle. Econ. Politic. Weekly 52, 76–77.
[2] Singh, V., Singh, S., and Biswal, A. Exceedances and trends of particulate matter (PM2. 5) in five Indian megacities. Sci. Total Environ. 750:141461 (2021).
[3] Shepherd, J. M. A review of current investigations of urban-induced rainfall and recommendations for the future. Earth Interact. 9, 1–27 (2005).
[4] Ren, G., Zhou, Y., Chu, Z., Zhou, J., Zhang, A., Guo, J., et al. Urbanization effects on observed surface air temperature trends in North China. J. Climate 21, 1333–1348 (2008).
[5] Yang, B., Zhang, Y., and Qian, Y. Simulation of urban climate with highresolution WRF model: a case study in Nanjing, China. Asia-Pacific J. Atmosp. Sci. 48, 227–241 (2012).
[6] Kaskaoutis, D. G., Kharol, S. K., Sinha, P. R., Singh, R. P., Badarinath, K. V. S., Mehdi, W., et al.. Contrasting aerosol trends over South Asia during the last decade based on MODIS observations. Atmosp. Measure. Techniq. Discuss. 4, 5275–5323 (2011).
[7] Ramachandran, S., Kedia, S., and Srivastava, R. Aerosol optical depth trends over different regions of India. Atmos. Environ. 49, 338–347(2012).
[8] Krishna Moorthy, K., Suresh Babu, S., Manoj, M. R., and Satheesh, S. K.. Buildup of aerosols over the Indian Region. Geophys. Res. Lett. 40, 1011–1014 (2013).

[9] WHO (2015). Countries: China: Country Health Profile. World Health Organization. Available online at: http://www.who.int/countries/chn/en/
[10] Sarath, K. G., and Ramani, V. K. Source emissions and health impacts of urban air pollution in Hyderabad, India. Air Qual. Atmosp. Health 7, 195–207 (2014).
[11] Gautam, S., Talatiya, A., Patel, M., Chabhadiya, K., and Pathak, P. Personal exposure to air pollutants from winter season bonfires in rural areas of Gujarat, India. Exposure Health 12, 89–97 (2020).
[12] Gorai, A. K., Tuluri, F., and Tchounwou, P. B.. A GIS based approach for assessing the association between air pollution and asthma in New York State, USA. Int. J. Environ. Res. Public Health 11, 4845–4869(2014).
[13] Pramanik, M. K. Impacts of predicted sea level rise on land use/land cover categories of the adjacent coastal areas of Mumbai megacity, India. Environ. Dev. Sustain. 19, 1343–1366 (2017).
[14] Kumar, V., Shukla, T., Mehta, M., Dobhal, D. P., Bisht, M. P. S., and Nautiyal, S. Glacier changes and associated climate drivers for the last three decades, Nanda Devi region, Central Himalaya, India. Quaternary Int. 575, 213–226 (2021).
[15] Haines, A., Kovats, R. S., Campbell-Lendrum, D., and Corvalán, C. Climate change and human health: impacts, vulnerability and public health. Public Health 120, 585–596 (2006).
[16] Majra, J. P., and Gur, A. Climate change and health: why should India be concerned? Indian J. Occupat. Environ. Med. 13, 11–16 (2009).
[17] Ali, H., Mishra, V., and Pai, D. S. Observed and projected urban extreme rainfall events in India. J. Geophysical Res. 119, 12–621 (2014).
[18] Singh, V., Singh, S., and Biswal, A. Exceedances and trends of particulate matter (PM2. 5) in five Indian megacities. Sci. Total Environ. 750:141461 (2021).
[19] T. Ganguly, K. L. Selvaraj and S. K. Guttikunda, National Clean Air Programme (NCAP) for Indian cities: Review and outlook of clean air action plans, Atmos. Environ.: X, 2020
[20] Pandey, A., Brauer, M., Cropper, M.L., et al. (2021) Health and Economic Impact of Air Pollution in the States of India: The Global Burden of Disease Study 2019. The Lancet Planetary Health, 5, e25-e38.https://doi.org/10.1016/S2542-5196(20)30298-9https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S2542519620302989
[21] Singh, D.P., Gadi, R., Mandal, T.K., et al. Emissions Estimates of PAH from Biomass Fuels Used in Rural Sector of Indo-Gangetic Plains of India. Atmospheric Environment, 68, 120-126 (2013).
[22] Kaushik, C.P., Ravindra, K., Yadav, K., et al. Assessment of Ambient Air Quality in Urban Centres of Haryana (India) in Relation to Different Anthropogenic Activities and Health Risks. Environmental Monitoring and Assessment, 122, 27-40 (2006).
[23] Report /Global Energy Review:CO2 Emissions in 2021: IEA (2022)
[24] Barone-Adesi F, Chapman RS, Silverman DT, He X, Hu W, Vermeulen R, Ning B, Fraumeni JF, Rothman N, Lan Q. Risk of lung cancer associated with domestic use of coal in Xuanwei, China: Retrospective Cohort Study. BMJ (Online);345(7874):1–10 (2012).
[25] Guarnieri M, Balmes JR. Outdoor air pollution and asthma. The Lancet.;383(9928):1581–1592 (2014).
[26] Bernardini F, Attademo L, Trezzi R, Gobbicchi C, Balducci PM, Del Bello V, Menculini G, et al. Air pollutants and daily number of admissions to psychiatric emergency services: evidence for detrimental mental health effects of ozone. Epidemiology and Psychiatric Sciences.;29:1–7 (2019).
[27] Kravchenko J, Lyerly HK. The impact of coal-powered electrical plants and coal ash impoundments on the health of residential communities. North Carolina Medical Journal.;79(5):289–300 (2018).
[28] Van Donkelaar, M. S. Hammer, L. Bindle, M. Brauer, J. R. Brook, M. J. Garay, N. C. Hsu, O. V. Kalashnikova, R. A. Kahn and C. Lee, et al., Monthly Global Estimates of Fine Particulate Matter and Their Uncertainty, Environ. Sci. Technol., 2021 Nov 16;55(22):15287-15300 (2021).
[29] M. Cropper, R. Cui, S. Guttikunda, N. Hultman, P. Jawahar, Y. Park, X. Yao and X.-P. Song, The mortality impacts of current and planned coal-fired power plants in India, Proc. Natl. Acad. Sci., 2;118(5) (2021).
[30] E. E. McDuffie, R. V. Martin, J. V. Spadaro, R. Burnett, S. J. Smith, P. O'Rourke, M. S. Hammer, A. van Donkelaar, L. Bindle and V. Shah, et al., Source sector and fuel contributions to ambient PM2.5 and attributable mortality across multiple spatial scales, Nat. Commun., 14;12(1):3594(2021).
[31] S. Chowdhury , S. Dey , S. Guttikunda , A. Pillarisetti , K. R. Smith and L. Di Girolamo , Indian annual ambient air quality standard is achievable by completely mitigating emissions from household sources, Proc. Natl. Acad. Sci. U. S. A., 10.116 116 , 10711 —10716(2019).

[32] Nakano T, Otsuki T. [Environmental air pollutants and the risk of cancer]. (Japanese). Gan To Kagaku Ryoho. (2013).
[33] Kloog I, Ridgway B, Koutrakis P, Coull BA, Schwartz JD. Long- and short-term exposure to PM2.5 and mortality using novel exposure models, Epidemiology. 24(4):555-61 (2013)
[34] Nakano T, Otsuki T. Long- and short-term exposure to PM2.5 and mortality: using novel exposure models. Epidemiology;24(4):555-61 (2013).
[35] Ashfaq A, Sharma P. Environmental effects of air pollution and application of engineered methods to combat the problem. *J IndustPollut Control*. (2012)
[36] Census of India 2011: Provisional Population Totals-India Data Sheet. censusindia.gov.in
[37] Mathew, A., Khandelwal, S., Kaul, N., and Chauhan, S. Analyzing the diurnal variations of land surface temperatures for surface urban heat island studies.Energy and Buildings; 159: 271-295 (2018)
[38] Indian Council of Medical Research. Public Health Foundation of India. Institute for Health Metrics and Evaluation. ICMR, PHFI, and IHME; New Delhi: 2019. GBD India Compare Data Visulalization: https://vizhub.healthdata.org/gbd-compare/india
[39] Tiwari M., Pratap D., Kumar V., Shukla N.K. Seasonal variation of Ozone in Industrial area of Singrauli, India. Middle East J. Sci. Res.;24:11–14 (2016).
[40] Bhardwaj S., Soni R., Gupta S.K., Shukla D.P. Mercury, arsenic, lead and cadmium in waters of the Singrauli coal mining and power plants industrial zone, Central East India. Environ. Monit. Assess.;192:251 (2020).
[41] Ministry of Statistics and Programme Implementation Government of India State domestic product and other aggregates, 2011–2012series (2020) .http://mospi.nic.in/data.
[42] Gopi C Khilnani, Pawan Tiwari; Air pollution in India and related adverse respiratory health effects: past, present, and future directions. Curr OpinPulm Med. 24(2):108-116 (2018).

Development of a Novel Genetic Screening Technique for Identification of Growth Control Genes in Drosophila

Anshul Nigam*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
A-1, UPSIDC, Rooma, Kanpur.

Ritu Kumari Singh
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
A-1, UPSIDC, Rooma, Kanpur.

Aman Pratap Singh
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
A-1, UPSIDC, Rooma, Kanpur.

Ashish Ranjan Singh
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
A-1, UPSIDC, Rooma, Kanpur.

***Corresponding Author**
Anshul Nigam
Email Id: anshul.nigam@kit.ac.in

ABSTRACT

Negative growth regulators play a crucial role in development of metazoans. Loss of any gene(s) coding for them leads to tumor formation. Thus, such growth regulators are also termed as tumor suppressors. Mode of tumor formation in Drosophila parallels the mode of tumor formation in humans. The characteristic feature of tumor cells is that they lose capacity to differentiate but possess growth advantage. Tumor suppressor genes and biochemical pathways involving them are well conserved between Drosophila and humans. Identification of negative regulators of growth could uncover several, yet unidentified, tumor suppressor in fly model. Here we report a genetic screen based on FRT/FLP (Flippase Recombination Targets/Flippase) system to fish out gene(s) involved in negative regulation of growth located on 3L arm of Drosophila. The premise of this novel genetic screen was that loss of tumor suppressor gene(s) in vestigial mutants would lead to partial restoration of wild type phenotype. We screened 20,000 mutagenized chromosomes from which we could identify four potential lines carrying mutations in negative growth regulators.

Keywords: Growth Regulators; Tumor; Drosophila, Genetic Screen, FRT/FLP system.

1. Introduction

Cancers involve uncontrolled cell proliferation in tissues and organs due to modification of proto-oncogene to oncogenes or shutting oftumour suppressor genes[1].The proto-oncogenes participate in cell division but enhance its rate on being converted to oncogene while tumor suppressors switch off the cell cycle/division when not required.Cancers are also linked with apoptosis pathways. Irrespective of mechanism of the cancer are characterised by uncontrolled cell division and loss of differentiation. Interestingly, in *Drosophila*, the pathways involving cell division and differentiation are highly conserved in humans.Further, development of techniques to conveniently modify them genetically, made fruit fly model organism of choice to investigate cancer biology[2]. Furthermore, development of wide variety of genetic screening techniques along with recombination tools helped in identification and characterization of the oncogenes and tumour suppressor genes [3]. The gene conservation between fly and humans makes these findings useful. In present investigation, we have used FRT/FLP system to fish out gene(s) involved in negative regulation of growth located on 3L arm of *Drosophila.*

2. Materials and Methods

2.1 Ethyl Methanosulfonate

Ethyl methanosulfonate(EMS), an ethylating agent was supplied by Sigma Aldrich used as mutagen. It was fed to male flies in 1 % sucrose solution at the three days of for 12-24 h.The fly stocks were prepared with heat shock promoter adjacent toflp, vg and FRT in homozygous condition.

2.2 FRT/FLP System

The individuals with homozygous tumour suppressor mutations can't reach adulthood as these mutations are embryonic lethal while don't display any effect in heterozygous condition. Therefore, these mutations can be investigated only in a genetic mosaic of homozygous in heterozygous background. FRT/FLP[4] derived from yeast is help in resolving this issue as it can create above mentioned genetic mosaic with ease (Fig. 2 & Fig. 3).

2.3 Vestigial Background

Vestigial gene is responsible for proper development of wings fly while vg mutants lack proper wing development. Any mutation tumour suppressor led to overcome vg phenotype. The genetic mosaics containing tumour suppressor homozygous cells in somatic heterozygous background can be easily identified in vestigial background in comparison to wild type as shown for tumour suppressor *fat* mutations (Fig 1).

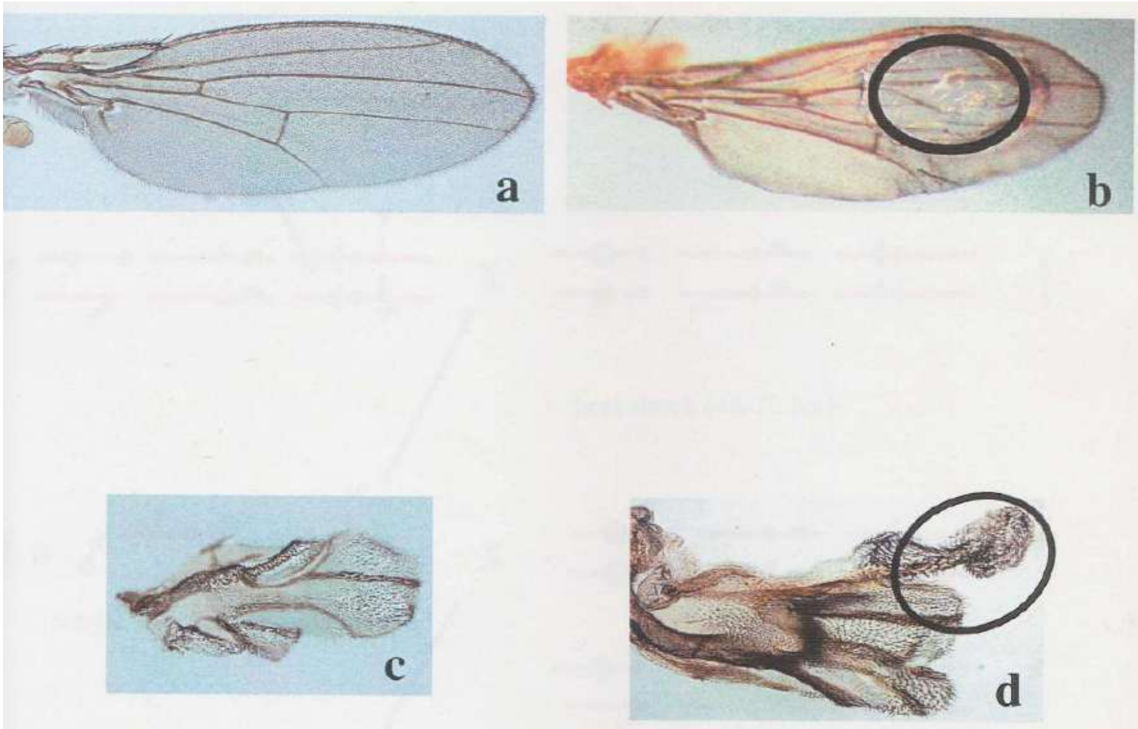

Figure 1: a. wild type wing; b. *fat* homozygous in wild type background; c. Vestigial wing and d. *fat* homozygous in *vg* background.

The mechanism of mosaic generation is shown below:

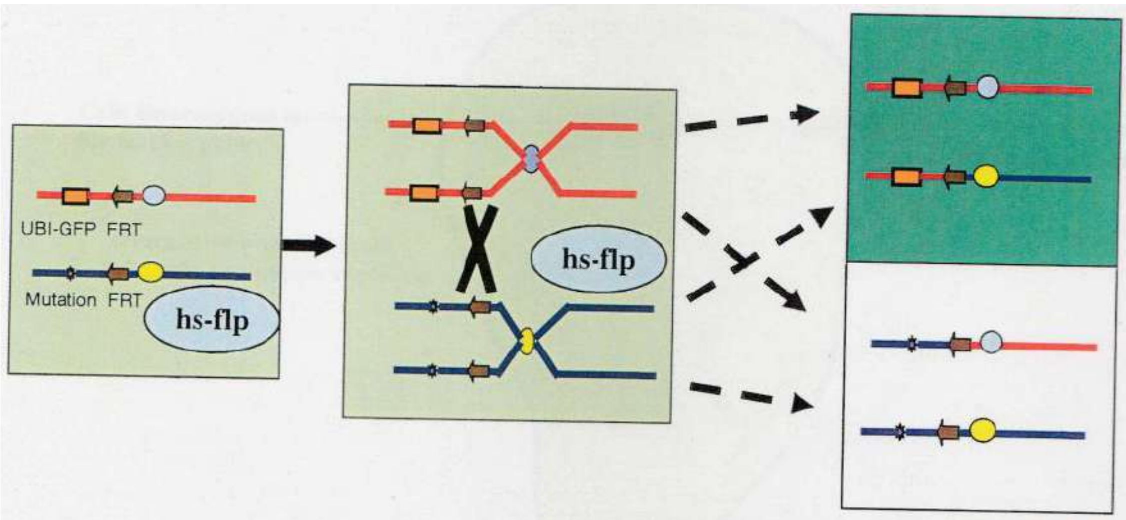

Figure 2: Mechanism of mosaic generation by FRT/FLP system.

3. Discussion

We prepared the flies with FRT/FLP homozygous background that was identified with variation in GFP (Green Fluorescent Protein) background in terms of intensity.

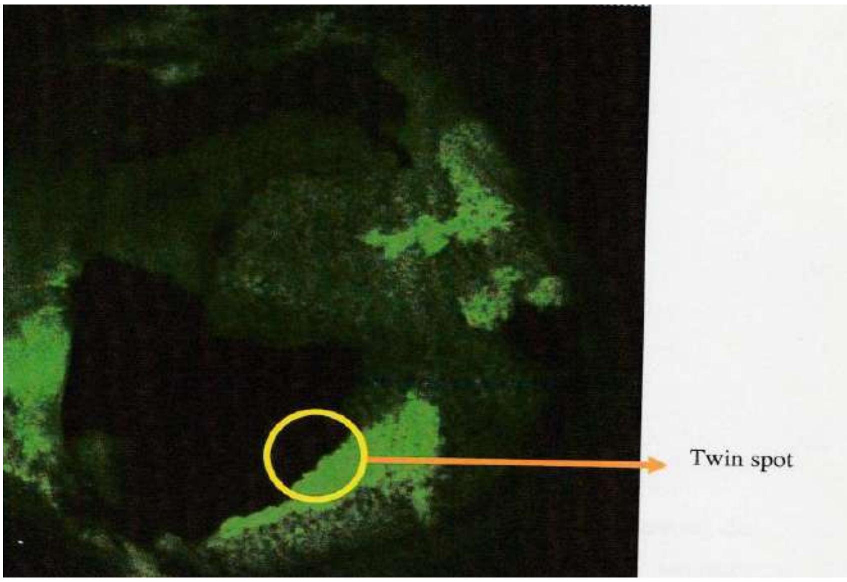

Figure 3: FRT/FLP system mosaic generation in action demonstrated by GFP homozygous (high fluorescence), GFP heterozygous (average fluorescence) and dark regions marking loss of GFP.

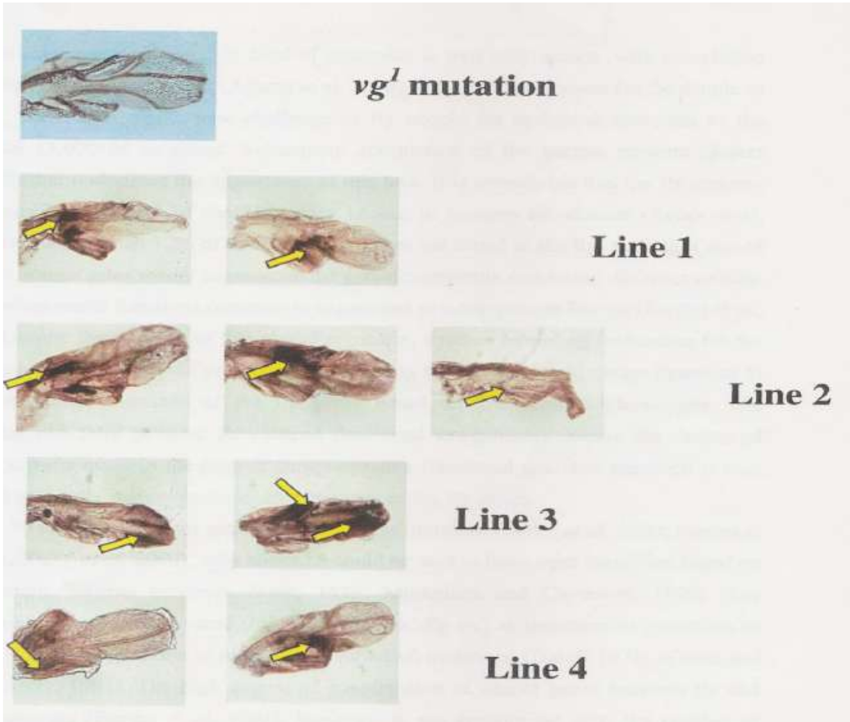

Figure 4: Phenotype of various mutant lines compared to vestigial wing. The areas of overgrowth are marked by arrows.

Future Perspective

The maintained lines will be mapped on the chromosome using classical techniques followed by precise molecular mapping. Apart from mapping the mutant lines will be assigned functional role in development using bioinformatics tools initially followed by gene knockout/over expression studies.

References

[1] Sarkar S, Horn G, Moulton K, Oza A, Byler S, Kokolus S, Longacre M. Cancer development, progression, and therapy: an epigenetic overview. Int J Mol Sci. 2013 Oct 21;14(10):21087-113. doi: 10.3390/ijms141021087. PMID: 24152442; PMCID: PMC3821660.].

[2] Mirzoyan Z, Sollazzo M, Allocca M, Valenza AM, Grifoni D, Bellosta P. *Drosophila melanogaster*: A Model Organism to Study Cancer. Front Genet. 2019 Mar 1;10:51. doi: 10.3389/fgene.2019.00051. PMID: 30881374; PMCID: PMC6405444.

[3] Sonoshita M., Cagan R. L. (2017). Modeling human cancers in *Drosophila*. *Curr. Top. Dev. Biol.* 121, 287–309. 10.1016/bs.ctdb.2016.07.008

[4] Theodosiou NA, Xu T. Use of FLP/FRT system to study Drosophila development. Methods. 1998 Apr;14(4):355-65. doi: 10.1006/meth.1998.0591. PMID: 9608507.

Navigating Medical Challenges: A Comprehensive Review of Current Trends in Harnessing Nanotechnology for Chronic Disease Management

Ritika Tripathi
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Higher Education
Kanpur, UttarPradesh, India.

Adarsh Maurya
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Higher Education
Kanpur, UttarPradesh, India.

Inderjeet Kour
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Higher Education
Kanpur, UttarPradesh, India.

Ashish Ranjan Singh*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, UttarPradesh, India.

Uma Gupta
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, UttarPradesh, India.

***Corresponding Author**
Ashish Ranjan Singh
Email Id: ashishranjan.singh@kit.ac.in

ABSTRACT

Nanotechnology has revolutionized various scientific fields, particularly in creating new pharmacological compounds. It is used in sectors like nanomedicine, biosensors, and molecular nanotechnology. The global nanomedicine market, valued at $198.9 billion in 2020, is expected to grow at a 12.6% CAGR to $964.15 billion by 2030. The Indian government is funding nanomedicine research to meet societal needs and become a leader in the field. The market is expected to grow at a 19.1% compound annual growth rate due to increasing demand and research.

The International Agency for Research on Cancer predicts a global cancer burden of 29.5 million new cases and 16.4 million deaths by 2040, up from 19.3 million in 2020. In an

India's chronic disease prevalence is 21%, with Kerala having the highest rate (54%), followed by Andhra Pradesh (43%), West Bengal (36%), and Goa (32%). Nanomedicine is a promising approach for treating chronic illnesses like cardiovascular disease, diabetes, cancer, and dementia. Its unique properties enable rapid drug metabolism, improved health, and reduced side effects. Nanocarrier technology improves medical imaging, personalized medicine, stem cell and gene therapy, and controls drug exposure and toxicity, potentially improving patient outcomes and quality of life.

Keywords: Nanomedicine, Chronic disease, Global demand.

1. Introduction

Researchers are utilizing nanotechnology to develop innovative tools and methodologies in areas such as transporters, drug formulations, toxicity mitigation, material enhancement, and targeting advancements, impacting regenerative medicine, nutraceutical development, and stem cell research. [1]. Nanotechnology, involving nanoscale manipulation and creation, is central to advancements in medicine. Nanomaterials have diverse applications and devices, including nanodevices. Integrating nanoparticles in medicine promises a paradigm shift, enhancing disease detection, diagnosis, and treatment, facilitating early identification and efficient clinical interventions [2].

Nanodevices, when interacting with biological elements in extracellular media and human cells, have the potential to enhance medical treatment by facilitating site-specific drug delivery, minimizing side effects, and improving therapeutic outcomes [3].Nanotechnology has revolutionized therapeutic and diagnostic delivery systems, enabling discreet disease diagnosis, selective treatment, and precise chemical delivery. Nano biomaterials, like lipid-based nanocarriers and polymer nanoparticles, are biodegradable, autonomous, and possess unique properties, improving stability, solubility, and reactivity. These properties are crucial in drug development, reducing side effects and immunotoxicity, as demonstrated by medications like Paclitaxel [4].

Gold nanoparticles and quantum dots are inorganic nanomaterials with unique magnetic, electrical, and optical properties, making them useful for clinical diagnosis, imaging, and photothermal therapy [5].Polymer nanoparticles, made from natural or synthetic materials, offer various drug delivery capabilities like emulsification, nanoprecipitation, and microfluidics. Their performance is influenced by drug interactions, making them suitable for co-delivery of hydrophobic compounds, biomolecules, and small particles. [6,7] Global healthcare systems' growing complexity and specialization have increased confusion and intricacies, forcing patients to navigate multiple organizations, identify entry points, and find optimal health solutions. [8-11].

The rise of nano-biotechnology has significantly impacted medicine, enhancing drug discovery, personalized disease recognition, cancer therapeutics, drug progression, and the development of advanced clinical tools, demonstrating their immense potential in the medical field. This study explores the role of nanoparticles in disease detection and treatment, focusing on chronic ailments, emphasizing their significant application in medical science and their potential to improve overall health outcomes.

2. Challenges and Innovations in the Treatment of Chronic Diseases

Chronic diseases like cancer, heart disease, stroke, depression, type 2 diabetes, arthritis, osteoporosis, and Parkinson's disease require ongoing medical attention and management strategies to improve their quality of life [12].Parkinson's disease is a neurodegenerative condition affecting the nervous system and body parts, impacting around 7 million people globally. Symptoms include tremors in one hand. Prevalence increases with age, rising from 1% in those aged 60 and above [13].The blood-brain barrier's protective role poses a significant challenge in Parkinson's Disease treatment, limiting therapeutic entry and causing high doses and adverse side effects. Overcoming this obstacle is crucial for developing targeted, efficient treatments [14].Recent research focuses on improving Parkinson's Disease treatment efficacy with reduced side effects by investigating L-DOPA encapsulation within polymeric and lipid-based nanoparticles to protect it from systemic decarboxylation, enhancing targeted L-DOPA delivery for effective PD management [15-17].

3. Deciphering Brain Targeting Mechanisms Employed by Nanoparticles

Polysorbate-80 (PS-80) coated nanoparticles (NPs) are used for brain-specific drug delivery. Post-administration, NPs accumulate in CNS blood capillaries, forming a concentration gradient. This gradient allows NPs to diffuse across the endothelial cell layer, facilitated by membrane dissolution. PS-80 opens tight junctions, enhancing drug permeation. Endocytosis aids drug absorption into the brain, while transcytosis facilitates NP-bound transport. PS-80 inhibits p-glycoprotein efflux systems and attaches to apolipoproteins, mimicking low-density lipoproteins [15,16].

4. Coronary Artery Disease (CAD): Diagnosis and Treatment by Nanotechnology

Coronary artery disease (CAD) is a major global cause of death and disability, with mortality exceeding 30% in individuals aged 35 and above. Projected mortality in developed nations could increase by 48% in men and 29% in women from 1990 to 2020. The lifetime risk of developing CAD is 49% for males and 32% for females [17-19]. Nanoparticles, with their unique properties in magnetic, optical, electrical, and thermal, aid in early CAD diagnosis through imaging and biosensing. They enhance imaging systems, improving tissue resolution, and can enhance CT, MRI, and PET scans [20-23].

5. Nanotechnology in Cancer Treatment:-Drug Delivery Process and Mechanism

Nanotechnology has potential applications in cancer treatment, including drug delivery, gene therapy, detection, diagnosis, biomarker mapping, targeted therapy, and molecular imaging. Nanomaterials like gold nanoparticles and quantum dots enable molecular-level cancer diagnosis, improved biomarker detection, and targeted therapy with minimal side effects [24-25] Nanotechnologies offer precise disease treatment by delivering drugs through nanoparticle loading, offering high cell uptake and reduced side effects. Bioavailability depends on factors like particle size and solubility, offering innovative solutions [26-27].

5.1. Active Cancer Targeting

Active cancer-targeting employs a designated system to enhance nanoparticle delivery to cancer sites. This method utilizes highly expressed surface receptors on cancer cells, engaging them with specific ligands. Previous studies have employed various ligands like proteins, nucleic acids, peptides, or carbohydrates, facilitating receptor-mediated endocytosis and enabling drug release for therapeutic effects within the tumor site [28-29]. Liposomes are nano/miniature colloidal transporters that typically range in size from 80 to 300 nm and are being studied as drug carriers. Liposomes are circular vesicles made of surfactants, phospholipids, or steroids that self-assemble in aqueous conditions. They may find use in the administration of drugs.[30-31].

6. Future Directions and Opportunities of Nanomedicine

The global nanomedicine market is expected to grow significantly, with a 9.2% CAGR from 2021 to 2030, with India's market experiencing a 19.1% CAGR over the next decade, driven by increasing healthcare and energy sector demands for nanotechnology-based products, indicating promising growth prospects [32-33].

Asia's nanotechnology-based healthcare industry is rapidly growing, with numerous nanotherapeutics approved for commercialization or undergoing clinical trials. Nanomedicine is categorized by nanomaterials like liposomes, polymeric nanomaterials, protein-based nanoparticles, drug nanocrystals, and inorganic nanoparticles [34].

7. Discussion

Nanotechnology offers precise, safe, and comfortable treatment for incurable diseases, bypassing the limitations of conventional large particles in specific locations.Nanotechnology holds significant potential in various scientific fields, including disease detection, energy generation, material development, and environmental remediation. Its multifaceted approach demonstrates its transformative potential in various scientific domains, enhancing efficiency, facilitating intelligent materials, and enhancing energy generation[35-36]. Nanoscale materials are essential biomarker and sensor components, displaying superior sensitivity, enabling simultaneous and accurate detection of a wider range of diseases in their early stages [37]. The advancement of nanotechnology in medical services raises ethical concerns about patient consent, privacy, and equitable distribution of advanced therapies, necessitating a comparative analysis between conventional treatments and nanotechnology-based therapies [38-39].

Nanoparticles in nanomedicine offer a promising shift in disease detection, diagnosis, and treatment by enhancing sensitivity, enabling targeted drug delivery, and minimizing adverse effects. Nanocarriers like polymeric micelles, nanoparticles, and nano emulsions can effectively store restorative specialists at affected areas, reducing patient discomfort, improving results, and streamlining treatment costs by crossing blood-mind obstruction for neurological issues with reduced side effects [40-41].

8. Conclusion

This review highlights the significant impact of nanotechnology in managing chronic diseases, particularly in addressing persistent conditions like Coronary Artery Disease, Cancer, and Parkinson's Disease. Nanotechnology offers personalized, patient-centric solutions, revolutionizing chronic disease treatment in various healthcare sectors.

References

[1] Fazal Ur Rehman. Journal of Basic and Applied Scientific Research www.textroad.com. February 15, (2018).
[2] Amr El-Sayed1 & Mohamed Kamel. Advanced applications of nanotechnology in veterinary medicine Environmental Science and Pollution Research https://doi.org/10.1007/s11356-018-3913-y. Accepted: 4 December (2018).
[3] Ricciardi, A. S. et al. In utero nanoparticle delivery for site-specific genome editing. Nat. Commun. 9, 1–11 (2018).
[4] Pandit A, Zeugolis DI. Twenty-five years of nano-bio-materials: have we revolutionized healthcare? Fut Med.;11(9):985–7 (2016).
[5] S. Link, M.A. El-Sayed Spectral properties and relaxation dynamics of surface plasmon electronic oscillations in gold and silver nanodots and nanorods J Phys Chem B, 103 (40) pp. 8410-8426 () (1999).
[6] Zhang Z, Zhang D, Wei L, Wang X, Xu YL, Li HW, Ma M, Chen B, Xiao LH. Temperature responsive fluorescent polymer nanoparticles (TRFNPs) for cellular imaging and controlled releasing of drug to living cells. Coll Surf B;159:905–12 (2017).
[7] Jianhua Yang1, Chengyou Jia2, Jianshe Yang2, Designing Nanoparticle-based Drug Delivery Systems for Precision Medicine.International Journal of Medical Sciences; 18(13): 2943-2949 (2021).
[8] Hofmarcher M.M., Rusticelli E., Oxley H. Improved Health System Performance through better Care Coordination. OECD Health Work. Pap. (2007).
[9] Institute of Medicine . Crossing the Quality Chasm: A New Health System for the 21st Century. National Academy Press; Washington, DC, USA: (2001).
[10] Plsek E.P., Greenhalgh T. Complexity science: The challenge of complexity in health care. BMJ.323:625–628 (2001).
[11] Schaeffer D., Gille S., Hurrelmann K. Implementation of the National Action Plan Health Literacy in Germany—Lessons Learned. Int. J. Environ. Res. Public Health.17:4403 (2020).
[12] Shiza Malik 1, Khalid Muhammad 2, * and Yasir Waheed 3,4, *. Emerging Applications of Nanotechnology in Healthcare and Medicine.14 September (2023).
[13] B. K. Pedersen1, B. Saltin2. Exercise as medicine–evidence for prescribing exercise as therapyin 26 different chronic diseases. Scand J Med Sci Sports 2015: (3) 25: 1 (2015).
[14] Jacob, Louis & Breuer, Jessica &Kostev, Karel. Prevalence of chronic diseases among older patients in German general practices. German medical science: GMS e-journal. 10.3205-230(2016).
[15] Jyotsna Shankar a, Geetha K.M a, * Barnabas Wilson. Potential applications of nanomedicine for treating Parkinson’s disease. Journal of Drug Delivery Science and Technology.66; (2021).
[16] C.D. Chapman, W.H. Frey 2nd, S. Craft, L. Danielyan, M. Hallschmid, H. B. Schioth, ¨ C. Benedict, Intranasal treatment of central nervous system dysfunction in humans, Pharm. Res. (N. Y.) 30 (10) 2475–2484(2013).
[17] K. Miyata, R.J. Christie, K. Kataoka, Polymeric micelles for nano-scale drug delivery, React. Funct. Polym. 71 (3) 227–234(2011).
[18] Paurush Ambesha, Umberto Campiab, Chukwudi Obiagwuc, Rashika Bansald, Vijay Shettyc, Gerald Hollanderc , Jacob Shanic. Nanomedicine in coronary artery disease. Indian Heart Journal. 24 February (2017).
[19] 20. M. Azzawi, A. Seifalian, W. Ahmed Nanotechnology for the diagnosis and treatment of diseases Nanomedicine, 11 (16)2025-2027(2016).
[20] 21. G. Chen, I. Roy, C. Yang, P.N. Prasad Nanochemistry and nanomedicine for nanoparticle-based diagnostics and therapy Chem. Rev., 116 (5) 2826-2885(2016).

[21] Fahy GM. Short-term and long term possibilities for interventive gerontology. Mt Sinai J Med;58:328–40 (1991).
[22] 24-B. Godin, J.H. Sakamoto, R.E. Serda, A. Grattoni, A. Bouamrani, M. FerrariEmerging applications of nanomedicine for the diagnosis and treatment of cardiovascular diseases Trends Pharmacol. Sci., 31 (5) 199-205(2010).
[23] 25- I.-H. Cho, J. Lee, J. Kim, M.-S. Kang, J.K. Paik, S. Ku, H.-M. Cho, J. Irudayaraj, D.-H. Kim Current technologies of electrochemical immunosensors: perspective on signal amplification Sensors., 18 (1) (2018).
[24] Hu J, Huang W, Huang S, ZhuGe Q, Jin K, Zhao Y. Magnetically active Fe3O4 nanorods loaded with tissue plasminogen activator for enhanced thrombolysis. Nano Research. 9:2652–61 (2016).
[25] 53- Huang L, Hu J, Huang S, Wang B, Siaw-Debrah F, Nyanzu M, Nanomaterial Applications for Neurological Diseases and Central Nervous System Injury. Prog Neurobiol. (2017).
[26] 54- Tran S, Degiovanni PJ, Piel B, Rai PJC, Medicine T. Cancer nanomedicine: a review of recent success in drug delivery. 6: 44 (2017).
[27] 55- Huang D, Wu K, Zhang Y, Ni Z, Zhu X, Zhu C, Recent Advances in Tissue plasminogen activator-based nano thrombolysis for ischemic stroke. 2019; 58: 159.
[28] J. S. Choi and J. S. Park, ‘Development of docetaxel nanocrystals surface modified with transferrin for tumor targeting’, Drug Des. Devel. Ther., 2017.
[29] Y. Zhou et al., ‘Impact of Single-chain Fv Antibody Fragment Affinity on Nanoparticle Targeting of Epidermal Growth Factor Receptor-expressing Tumor Cells’, J. Mol. Biol., 2007
[30] - Sunderland CJ, Steiert M, Talmadge JE, Derfus AM, Barry SE: Targeted nanoparticles for detecting and treating cancer. Drug Dev Res, 67, 70–9 (2006).
[31] 38- Silva R, Ferreira H, Cavaco-Paulo A: Sonoproduction of liposomes and protein particles as templates for delivery purposes. Biomacromolecules, 12, 3353–3368 (2011).
[32] Nanomedicine Market Size and Share | Growth Prediction- 2030: alliedmarketresearch:(2022). https://www.alliedmarketresearch.com/nanomedicine-market
[33] Owais Ali; Nanotechnology Market Report: India. Azonetworksite.(2023). https://www.azonano.com/article.aspx?ArticleID=6355#:~:text=The%20nanotechnology%20market%20in%20India%20is%20expected%20to%20see%20significant,the%20healthcare%20and%20energy%20industries.
[34] Chen Z.Y., Wang Y.X., Lin Y., Zhang J.S., Yang F., Zhou Q.L., Liao Y.Y. Advance of molecular imaging technology and targeted imaging agent in imaging and therapy. Biomed Res. Int. 2014:1–12 (2014).
[35] Huang L, Hu J, Huang S, Wang B, Siaw-Debrah F, Nyanzu M, Nanomaterial Applications for Neurological Diseases and Central Nervous System Injury. Prog Neurobiol. (2017).
[36] Tran S, Degiovanni PJ, Piel B, Rai PJC, Medicine T. Cancer nanomedicine: a review of recent success in drug delivery. 6: 44 (2017).
[37] Huang D, Wu K, Zhang Y, Ni Z, Zhu X, Zhu C, Recent Advances in Tissue plasminogen activator-based nano thrombolysis for ischemic stroke. 58: 159 (2019).
[38] Hu J, Huang S, Zhu L, Huang W, Zhao Y, Jin K. et al. Tissue Plasminogen Activator-Porous Magnetic Microrods for Targeted Thrombolytic Therapy after Ischemic Stroke. ACS Appl Mater Interfaces. 10:32988–97 (2018).
[39] Chaturvedi VK, Singh A, Singh VK, Singh MP. Cancer Nanotechnology: A New Revolution for Cancer Diagnosis and Therapy. Current drug metabolism. 20:416–29 (2019).
[40] Fernández-Urrusuno R, Fattal E, Porquet D, et al. Evaluation of liver toxicological effects induced by polyalkylcyanoacrylate nanoparticles. Toxicol Appl Pharmacol. 1995;130:272–9.
[41] Health Council of the Netherlands. The Hague: Health Council of the Netherlands; 2006. Health significance of nanotechnologies. publication no 2006 /06E http://www.healthcouncil.nl.

Herbal Solutions to Modern Challenges: Evaluating the Efficacy of Herbal Antibiotics in India's Battle against Drug-Resistant Pathogens

Surbhi Kumari
Department of Medical Microbiology
Kanpur Institute of Higher Education
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Trdiba Nanda Paul
Department of Medical Microbiology
Kanpur Institute of Higher Education
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Alok Kumar
Department of Medical Microbiology
Kanpur Institute of Higher Education
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Ashish Ranjan Singh*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Uma Gupta
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Ashish Ranjan Singh
Email Id: ashishranjan.singh@kit.ac.in

ABSTRACT

Antibiotic resistance is a significant global health threat, causing at least 700,000 deaths annually due to infections caused by antibiotic-resistant bacteria, according to the World Health Organization. Several bacterial strains, including Methicillin-resistant Staphylococcus aureus (MRSA), ESBL-producing Escherichia coli, and Vancomycin-resistant Enterococcus (VRE), have shown resistance against specific antibiotics, leading to a significant increase in treatment failures. MRSA has a 40% resistance rate to beta-lactam antibiotics, ESBL-producing Escherichia coli has a 50% resistance rate to extended-spectrum cephalosporins as well as 90% Ampicillin and Norfloxacin, and VRE has a 30% resistance rate to vancomycin, posing challenges in treating severe infections. Antibiotic resistance in India is primarily caused by self-medication and over-the-counter antibiotics without proper prescriptions. Unregulated use in agriculture, especially in livestock and crop production, also contributes to antibiotic-resistant infections. Limited diagnostic resources in rural areas make it easy to transfer to humans, leading to higher mortality rates and significant economic impacts on healthcare costs.

The India-wide antibiotic resistance crisis is a major public health concern, necessitating urgent efforts to ensure a sustainable healthcare system. Herbal antibiotics like garlic, turmeric, and manuka honey offer a side effect-free, potent alternative to conventional antibiotics. However, rigorous scientific exploration and collaboration are needed to fully unlock their potential and create a sustainable solution.

Keywords: Antibiotic resistance, Infection, Health, Herbal.

1. Introduction

Antimicrobial resistance (AMR) threatens health advancements in infectious and cancer treatments, organ transplantation, and critical care, claiming 700,000 lives annually and causing 10 million deaths and trillion-dollar economic loss by 2050 [1-3]. Antimicrobial resistance (AMR) is a growing threat, especially in developing nations, due to widespread misuse of antimicrobials. Unwarranted usage, availability without prescription, and unregulated supply chains further exacerbate the issue. Comprehensive interventions are urgently needed to curb this growing threat [4-5].

MRSA, ESBL-producing Escherichia coli, and VRE have developed antibiotic resistance, increasing treatment complexities. MRSA has 40% resistance to beta-lactam antibiotics, ESBL-producing Escherichia coli 50%, and 90% to Ampicillin, Haemophilus influenza, and Streptococcus pneumonia, posing significant challenges in managing severe infections [6-8].

Unregulated agricultural antibiotic use, particularly in livestock and crop production, worsens the antibiotic crisis also promoting soil bacteria resistance, leading to increased mortality rates and healthcare costs in rural areas [9-11]. India faces an antibiotic resistance crisis, requiring swift action for a sustainable healthcare system. Traditional medicines derived from medicinal plants, which make up 80% of healthcare in developing countries, are crucial, compared to 28,187 medicinal species used by humans [11-13].

The WHO lists over 20,000 medicinal plant species, with over 100 countries regulating them. 1340 plants exhibit antimicrobial activity, and over 30,000 compounds have been isolated. Ethnomedicinal knowledge drives the discovery of 74% of bioactive plant-derived compounds from 14-28% medicinal plant species [14-18]. This study evaluates the antimicrobial activity of medicinal plants used in Ayurveda and traditional systems, focusing on manifestations caused by antibiotic-resistant microorganisms. It emphasizes the need for extensive scientific research and collaboration to unlock the full potential of natural antibiotics and develop sustainable solutions.

2. Global threat on Antibiotic Resistance

Antimicrobial medicines are crucial in modern healthcare for treating infections and facilitating life-saving procedures. However, drug-resistant pathogens pose a threat to these interventions, with 1.2 million people dying in 2019 due to antibiotic-resistant bacterial infections, highlighting the need for comprehensive strategies.

The 2019 global antimicrobial resistance (AMR) impact analysis revealed that AMR caused 1.27 million deaths, surpassing HIV/AIDS and malaria. It was a significant health threat across 204 countries, with a significant impact in low- and middle-income countries. Higher-income nations also face high levels of AMR, requiring urgent global interventions. Rapid investment in new treatments, improved infection control, and judicious antibiotic use are crucial to protect health systems from antimicrobial resistance threats. The WHO Collaborating Centre at The University of Hong Kong has released a report predicting that antimicrobial resistance (AMR) for seven bacterial pathogens, including MRSA and E. coli, will cause over 80% of deaths and 4 million lives in the next decade [19-20].

Reasons behind Antimicrobial Resistance

Antimicrobial resistance (AMR) is a growing public health issue caused by overuse and misuse of antibiotics in healthcare, inadequate infection prevention and control measures, non-judicious use of antibiotics in livestock, and global factors like inadequate surveillance and research into new antimicrobial agents. Antimicrobial resistance (AMR) in India is exacerbated by widespread self-medication due to high healthcare costs, as many individuals lack economic resources to afford doctor consultations, leading to increased healthcare challenges [21-23].

Demand of Agriculture and Animal Husbandry

Antimicrobials are crucial in animal production to address health, welfare, and productivity concerns. However, their use can fuel resistance, promoting the transmission of resistant genes and bacteria across species. They are widely used in agriculture, livestock, and animal husbandry for treating illnesses and as growth promoters. The National Institute of Health states that nonessential antibiotics in animal feed are not adequately regulated, leading to a 65% global increase in consumption between 2000 and 2015, with developed nations like the USA, France, and Italy leading the way [24-25].

Advancing Antimicrobial Surveillance: Strategies to Expand Laboratory Testing Capabilities

Antimicrobial resistance requires a comprehensive strategy, including strengthening global surveillance systems, improving laboratory practices, investing in infrastructure, and implementing modern testing technologies. This requires a resilient and interconnected surveillance network to address data collection and testing inadequacies, thereby enhancing overall health [26].

Challenges in Antibiotic Innovation: The Slow Pace of New Drug Development

The slow pace of developing new antibiotics and alternative treatments, coupled with microbial adaptation, necessitates a multidisciplinary approach to combat antimicrobial resistance. This includes responsible antibiotic use, improved hygiene practices, robust regulatory frameworks, and global research and development efforts. Combining antibiotic stewardship with strategic innovation initiatives is crucial to break the stalemate in antibiotic drug development [27-29].

Antimicrobial Activity of Medicinal Plant Extracts

Isolates from medicinal plants have antimicrobial, anti-inflammatory, and antioxidant properties, potentially inhibiting bacterial growth and overcoming antibiotic resistance. Some compounds also display intrinsic antibacterial activity and antibiotic resistance-modifying properties. The chemical diversity of medicinal plants contains numerous compounds with in vitro-validated antimicrobial activities, but it's impossible to cover all plants and compounds with potent antimicrobial activity. This review aims to present some high-interest compounds from medicinal plants, although it is challenging to include all their potent antimicrobial activity compounds [30-33]. However, some compounds of high interest are being presented below.

Table 3: Promising plant compounds in the battle against antibiotic resistance in bacteria

Sl.N0.	Name of Bacteria	Resistance to Antibiotic	Infection Cause	Plant Sensitive	Specific plant Chemical compound that inhibits /kill bacteria
1.	Staphylococcus Aureus (MRSA)	99% resistant to penicillin	Skin & soft tissue (abscesses, furuncles & cellulitis)	Veronia Amygdalina Azadirachta indica	**Biological active compound** Alkaloids, terspenes, steroids, xanthones & anthraquinone. Nimbolide, azarirachtin&gedounin.
2.	E.Coli	Tetracyclines Sulphonamides Trimethoprim	UTI infection, abdominal &Pelvic infection, pneumonia & meningitis	Melaleuca	**Bioactive compound** Terpinen-4-ol
3.	Enterococcus faecalis	Vancomycin	UTI, Abdominal infection & wound infections	Propolic Triphala Aloevera	**Bioactive compound** **Poplar:** Different flavonones, flavones, phenolic acids & their esters **Bacharis:**Prenylated Pcoumaric acid.
4.	Haemophilus influenza	Ampicillin	Lung infection Bloodstream infection	Cinnamon Thyme Cloveoils	**Bioactive compound** Flavonoids, saponins &Cinnamaldehyde Eugenol

3. Discussion

Antibiotics like oxytetracycline, streptomycin, penicillin, and gentamycin are widely used in agriculture and animal husbandry for disease prevention, growth promotion, and overall health management in agricultural and livestock practices. Preventing antimicrobial resistance involves education on responsible antibiotic use, prescribing courses, and disabling self-medication. Stringent regulations on antibiotic sales and usage in agriculture can reduce exposure and mitigate resistance, thereby preserving the efficacy of antimicrobial agents and ensuring public health.

Molecular methods targeting DNA, RNA, proteins, and other cellular components in medical biotechnology have the potential to mitigate antibiotic resistance. As technology advances, these methods hold promise in controlling resistance. Non-antibacterials like phenothiazine, which enhance conventional antibiotic activity, offer an additional avenue for infection control and broadening therapeutic possibilities. Phytomedicine offers a natural solution to combat antimicrobial resistance by studying the antimicrobial properties of various herbs. However, a scientific approach is crucial for safety and efficacy, considering dosage, interactions, and administration.

Combining traditional wisdom with modern research helps formulate herbal solutions, contributing to a holistic plan for preventing antimicrobial resistance. Investigating medicinal plants' antimicrobial activity is crucial for combating antimicrobial resistance, and identifying novel bioactive compounds is essential for effective microbial threat management.

4. Conclusions

This review emphasizes the need for research on the modes of action, antibiotic interactions, and pharmacokinetic/pharmacodynamic characteristics of medicinal plant extracts to develop effective, successful, and simplified procedures for quick use of therapeutic medicinal plants against microorganisms.

References

[1] O'Neill, J.. Tackling drug-resistant infections globally: final report and recommendations (2016).
[2] Ayukekbong, J. A., M. Ntemgwa and A. N. Atabe. The threat of antimicrobial resistance in developing countries: causes and control strategies. Antimicrobial Resistance & Infection Control. 6, 1-8 (2017).
[3] Byarugaba DK. A view on antimicrobial resistance in developing countries and responsible risk factors. Int J Antimicrob Agents.24:105–10 (2004).
[4] Laxminarayan R, Duse A, Wattal C, Zaidi AKM, Wertheim HFL, Sumpradit N, et al. Antibiotic resistance-the need for global solutions. Lancet Infect Dis.13:1057–98 (2013).
[5] Okeke IN, Laxminarayan R, Bhutta ZA, Duse AG, Jenkins P, O'Brien TF, et al. Antimicrobial resistance in developing countries. Part I: recent trends and current status. Lancet Infect. Dis.5:481–93(2005).
[6] Pandey A., Kumar S. Perspective on Plant Products as Antimicrobials Agents: A Review. Pharmacologia.4:469–480 (2013).
[7] Kesah C, Ben Redjeb S, Odugbemi TO, *et al.* Prevalence of methicillin-resistant *Staphylococcus aureus* in eight African hospitals and Malta. Clin Microbiol Infect. 9(2): 153-6 (2003).
[8] Chen CJ, Huang YC. New epidemiology of Staphylococcus aureus infection in Asia. Clin Microbiol Infect. 20(7): 605-23 (2014).
[9] Durai R, Ng PC, Hoque H. Methicillin-resistant *Staphylococcus aureus*: An update. AORN J 91(5):599-606 (2010).
[10] Moyane J.N., Jideani A.I.O., Aiyegoro O.A. Antibiotics usage in food-producing animals in South Africa and impact on human: Antibiotic resistance. Afr. J. Microbiol. Res.7:2990–2997 (2013).

[11] Adebowale O.O., Adeyemo O.K., Awoyomi O., Dada R., Adebowale O. Antibiotic use and practices in commercial poultry laying hens in Ogun State Nigeria. Rev. Elev. Med. Vet. Pays Trop.69:41–45 (2016).
[12] Williams-Nguyen J., Sallach J.B., Bartelt-Hunt S., Boxall A.B., Durso L.M., McLain J.E., Singer R.S., Snow D.D., Zilles J.L. Antibiotics and Antibiotic Resistance in Agroecosystems: State of the Science. J. Environ. Qual.45:394–406 (2016).
[13] Mishra A., Sharma A., Kumar S., Saxena A., Pandey A. Bauhinia. Variegataleaf Extracts Exhibit Considerable Antibacterial, Antioxidant, And Anticancer Activities. BioMed Res. Int.2013:1–10 (2013).
[14] Duraipandiyan V., Ayyanar M., Ignacimuthu S. Antimicrobial Activity of some Ethnomedicinal Plants Used by Paliyar Tribe from Tamil Nadu, India. BMC Complement. Altern. Med. 6:35 (2006).
[15] Chin Y., Balunas M., Chai H., Kinghorn A. Drug Discovery from Natural Sources. AAPS J. 8:e239–e253 (2006).
[16] Christenhusz M., Byng J. The Number of Known Plants Species in the World Aand its Annual Increase. Phytotaxa.261:21–217 (2016).
[17] Srinivasan D., Nathan S., Suresh T., Lakshmana Perumalsamy P. Antimicrobial Activity of Certain Indian Medicinal Plants used In Folkloric Medicine. J. Ethnopharmacol. 74:217–220 (2001).
[18] Tajkarimi M., Ibrahim S., Cliver D. Antimicrobial Herb and Spice Compounds in Food. Food Control. 21:1199–12 (2010).
[19] ECDC/EMEA The bacterial challenge: time to react. Stockholm: European Center for Disease Prevention and Control; (2009).
[20] Centres for Disease Control and Prevention, US Department of Health and Human Services. Antibiotic resistance threats in the United States. Atlanta: CDC; 2013. Available from: http://www.cdc.gov/drugresistance/pdf/ar-threats-2013-508.
[21] Godijk N.G., Bootsma M.C.J., Bonten M.J.M. Transmission routes of antibiotic resistant bacteria: A systematic review. BMC Infect. Dis. 22:482 (2022).
[22] Krzemiński P., Markiewicz Z., Popowska M. Entry Routes of Antibiotics and Antimicrobial Resistance in the Environment. In: Hashmi M.Z., editor. Antibiotics and Antimicrobial Resistance Genes: Environmental Occurrence and Treatment Technologies. Springer International Publishing; Cham, Germany: pp. 1–262020).
[23] Landers T.F., Cohen B., Wittum T.E., Larson E.L. A review of antibiotic use in food animals: Perspective, policy, and potential. Public Health Rep. 127:4–22 (2012).
[24] Billah M.D.M., Rana S.M.M., Hossain M.S., Ahamed S.K., Banik S., Hasan M. Ciprofloxacin residue and their impact on biomolecules in eggs of laying hens following oral administration. Int. J. Food Contam. 2:13 (2015).
[25] Guetiya-Wadoum R.E., Zambou N.F., Anyangwe F.F., Njimou J.R., Coman M.M., Verdenelli M.C., Cecchini C., Silvi S., Orpianesi C., Cresci A., et al. Abusive use of antibiotics in poultry farming in Cameroon and the public health implications. Br. Poult. Sci. 57:483–493 (2016).
[26] Brandenburg K, Schürholz T. Lack of new antiinfective agents: passing into the pre-antibiotic age? World J Biol Chem.6:71–7 (2015).
[27] Marti R., Scott A., Tien Y.-C., Murray R., Sabourin L., Zhang Y., Toppa E. Impact of Manure Fertilization on the Abundance of Antibiotic Resistant Bacteria and Frequency of Detection of Antibiotic Resistance Genes in Soil and on Vegetables at Harvest. Appl. Environ. Microbiol.79:5701–5709 (2013).
[28] Efferth T., Koch E. Complex Interactions between Phytochemicals. The Multi-Target Therapeutic Concept of Phytotherapy. Curr. Drug Targets. 12:122–132 (2011).
[29] Wagner H., Ulrich-Merzenich G. Synergy Research: Approaching a New Generation of Phytopharmaceuticals. Phytomedicine. 16:97–110 (2009).
[30] Mehta S.R., Yusuf S., Peters R.J.G., Bertrand M.E., Lewis B.S., Natarajan M.K., Malmberg K., Rupprecht H.-J., Zhao F., Chrolavicius S., et al. Effects of pretreatment with clopidogrel and aspirin followed by long-term therapy in patients undergoing percutaneous coronary intervention: The PCI-CURE study. Lancet. 358:527–533 (2001).
[31] Shankar S.R., Rangarajan R., Sarada D.V.L., Kumar C.S. Evaluation of Antibacterial Activity and Phytochemical Screening of Wrightia Tinctoria L. Pharmacogn. J. 2:19–22 (2010).
[32] Lewis K., Ausubel F.M. Prospects for Plant-Derived Antibacterials. Nat. Biotechnol. 24:1504–1507 (2006).
[33] Wagner H., Ulrich-Merzenich G. Synergy Research: Approaching a New Generation ofPhytopharmaceuticals. Phytomedicine. 16:97–110 (2009).

Electronic Skin: A Comprehensive Review on the Advancements and future catch for Health Surveillance, Robotics, and Prosthetics

Ishitta Sarkar*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Neeraj Mishra
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Ritu Kumari Singh
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Abhilasha
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Anshul Nigam
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Aman Pratap Singh
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

***Corresponding Author**
Ishitta Sarkar
Email Id: 220495@kit.ac.in

ABSTRACT

The skin, an exceptional sensory organ, serves as a protective barrier for our bodies and gathers information from external stimuli. While wearable devices have traditionally tracked human body signals, they are now being replaced by electronic skin (e-skin). This overview delves into recent advancements in e-skin research, focusing on technologies crucial for three primary applications: skin-attachable electronics, robotics, and prosthetics. The necessity for intrinsic flexibility and self-healing attributes in materials used for e-skin is emphasized, primarily because e-skin is exposed to various long-term stressors and must conformally adhere to uneven surfaces. Tactile sensing capabilities, including pressure, strain, slip, force vector, and temperature detection, are deemed crucial for health monitoring in skin-attachable devices and for tasks like object manipulation and environmental detection in robotics and prosthetics. In the realm of skin-attachable devices, chemical and electrophysiological sensing, along with wireless signal communication, have become indispensable for accurately assessing users' health and ensuring their comfort. Robotics and prosthetics require substantial surface amalgamation on 3D surfaces in an efficient and scalable manner. Additionally, novel signal processing algorithms based on neuromorphic devices are essential for processing tactile input efficiently and with minimal power. Neural interface electrodes play a vital role in prosthetic devices. This review explores the significance of tactile sensors in e-skin for monitoring signals related to human health, addressing advancements, challenges, and future prospects in electronic skin. The integration of artificial intelligence with healthcare holds the potential to shape a society for the new cohort.

Keywords: electrophysiological, E-skin, force, prosthetics, robotics, tactile.

1. Introduction

The concept of electronic skin was initially proposed in the 1970s by affixing a sensor to a prosthetic hand for individuals with disabilities, but its practical capabilities have been demonstrated since the early 2000s. Initially, organic semiconductors were used; however, due to issues with reaction time, stretchability, and flexibility, researchers turned to diverse materials, including polymers, carbon allotropes, and metals[14]. The human skin, a formidable organ, serves as a robust physical and immunological barrier between the body and the external environment. It also functions as a versatile space accommodating muscles, fluids, internal organs, and bones, showcasing remarkable flexibility and healing capabilities. Translating its biological equivalent into electronic terms, the skin becomes an extensive array of highly sensitive sensors with a negative feedback control loop. This configuration enables real-time data processing and control of human functions, maintaining homeostasis. The field of e-skin research is an interdisciplinary endeavor encompassing micro-/nanoelectronics, material science, biotechnology, data transmission, and processing technologies. Epidermal electronics, inclusive of biomimetic sensors, soft neural probes, prostheses, implanted biomedical electronics, robotics, and other skin-inspired devices, holds the potential to significantly impact various domains [3]. E-skin applications are diverse, ranging from wearable or skin-attachable devices to robotics and prosthetics. This review focuses on recent advancements in e-skin, emphasizing the latest research outcomes and the requisite technologies for these three applications. While the discussed topics generally apply to all three applications, their significance may vary for each.

Figure 1: Depicts the ongoing research within the three application domains [15]

The Biocompatibility Quotient

Biocompatible materials are tailored for specific applications, implying that materials deemed acceptable for one use may have adverse effects when employed in a different context [8]. Given the close interaction of e-skin devices with humans, it is imperative for them to be biocompatible. Biocompatible materials, in essence, should not exert any harmful effects on the host. Materials that dissolve in the body within a specified timeframe are also considered biocompatible [18]. Additionally, synthetic insulating materials like PDMS, authorized by the US National Heart, Lung, and Blood Institute (NHLBI) for biomaterial assessment, exhibit biocompatibility. PDMS is a preferred substrate and dielectric layer for electronic devices due to its excellent biocompatibility, robust dielectric properties, and high stretchability. Other synthetic polymers, such as polyethylene glycol (PEG) and polyvinyl alcohol (PVA), are commonly acknowledged for their biocompatible characteristics [13].

2. Significance of Tactile Sensors

Tactile sensing plays a crucial role in the realm of e-skin technology, finding applications in skin-attachable devices, robotics, and prosthetics. It serves to identify pressure, strain, temperature, shear, bending, vibration, and slide. It is imperative for tactile sensors in these applications to possess flexibility and, often, stretchability. This characteristic ensures their seamless adaptation to irregularly shaped curvilinear surfaces and resilience against diverse forms of mechanical stress [17, 2]. In the domain of skin-attachable devices, tactile sensors are instrumental in the detection of physical indicators such as blood pressure and respiration rate. Additionally, they contribute to monitoring body actions and location, enhancing proprioception. Consequently, skin-attachable devices become valuable sources of information, offering insights into fitness, posture, limb tremors, and aberrant gait patterns [11]. When applied to robotics and prosthetics, tactile sensors empower robots and amputees to explore and understand their physical environment. This capability facilitates tasks like grasping and manipulating everyday objects, as well as fostering interaction with other individuals [1]. Proprioception, denoting awareness of body position and movement, emerges as an indispensable element for the successful functioning of robots.

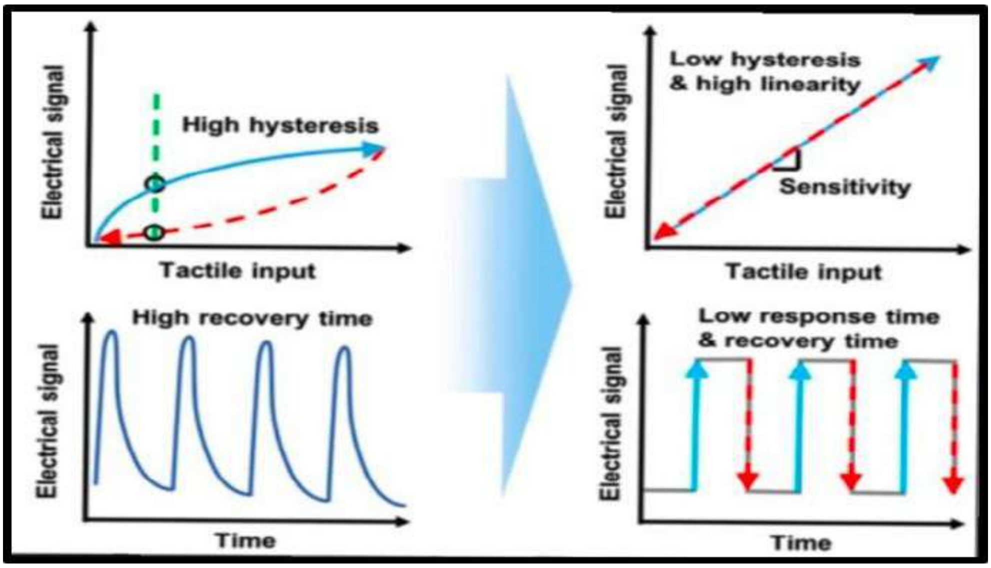

Figure 2: Graphical Representation [1]. Common challenges (depicted on the left) and ideal functionality (shown on the right) of touch sensors, including essential performance metrics [21].

3. Advancements and Prospects in the Evolution of Health Monitoring

The fusion of wearable technology with physiochemical sensing capabilities holds the potential to create robust interpretive and predictive frameworks for immediate health monitoring. There are several uses for flexible and multipurpose electronic devices, as well as soft robotics inspired by human organs like skin. However, the advent of electronic skins (e-skin) or textiles in biomedical engineering has had a significant impact on the lives of many people who suffer from various diseases and issues that cause their skin and muscles to lose their proper functions.

Designing manufacturing processes for healthcare monitoring, clinical trials, and medical applications necessitates leveraging the conformable nature of e-skins, thereby ensuring minimal invasiveness. Nearly imperceptible e-skins have the potential to facilitate top-notch, uninterrupted monitoring of human activity, potentially operating around the clock. The main objectives of monitoring include assessing limb kinematics, electrophysiology, sweat, and vascular dynamics.

3.1. Body Kinematics

Soft wearable sensors that detect human motion can provide valuable data for a variety of applications, including movement disorders, neurological problems, and sporting performance. Strain sensors are among the most popular technologies for providing not only precise and continuous monitoring, but also feedback controls in smart prostheses and robotic limbs [22]. Standard motion capture methods, such as camera-based systems and inertial measurement units, are too large and impractical for long-term usage on small, complex body parts like the human hand. As a result, some organizations have lately implemented e-skin technology for motion tracking.

3.2. Electrophysiology Measurements

Wearable e-skins are a handy and a non-invasive technique to directly monitor bioelectric impulses on the skin. The most common signals are electrocardiography (ECG), which offers precise information on the heart’s ventricles and atria; electroencephalography (ECG), which monitors electrical activity in the brain; and electromyography (EMG), which records the electrical activity produced by skeletal muscles [9].

3.3. Cardiovascular Monitoring

Cardiovascular issues are reaching epidemic proportions due to the global increase in obesity and type 2 diabetes rates. Consequently, the accurate and routine monitoring of cardiovascular signals has become a widespread method for obtaining health status information. Recording vascular dynamic signals, including blood pressure, pulse wave pressure, and velocity, discreetly on an individual's skin, makes the application of e-skin a relatively straightforward solution.

3.4. Sweat

Blood tests are a highly effective tool for clinical research, detecting a wide ranges of physiological and biochemical conditions. However, they are invasive. Sweat is more accessible and contains physiological and metabolically rich information, including metabolites (such as glucose and lactate) and electrolytes (such as sodium and potassium ions), which can be retrieved non-invasively. A typical electrochemical bioelectronics system consists of three main components: a bio recognition element, an electrochemical signal transducer, and a signal acquisition module [23]. The bio recognition element interacts with the target analyte to exchange or transfer ions and electrons. This allows the concentration of the desired analyte to be measured. The electrochemical signal transducer then turns the reaction into a measurable format, such as current and potential, which can be collected by the acquisition system.

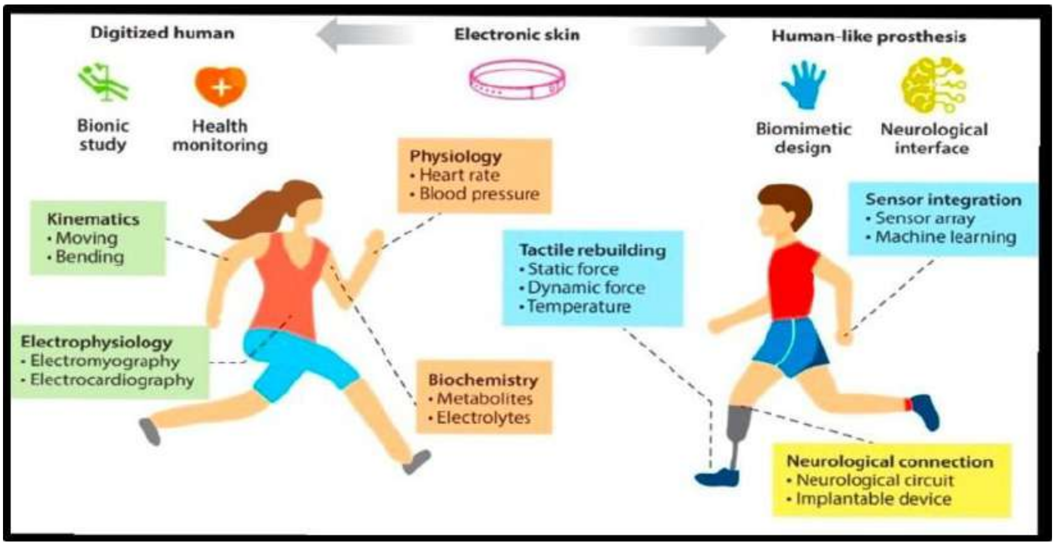

Figure 3: An examination of the healthcare applications of electronic skins. These wearable interfaces not only provide information about the wearer's health and conditions but also mimic the way human skin responds to recover from damage or compensate for missing functions. Electronic skins are designed to be minimally invasive and present various possibilities for interaction between humans and machines [7].

4. Neuro- Inspired E-Skin for Robots

Detecting touch poses a challenge due to the vast array of receptors (mechanical, thermal, and pain) distributed unevenly in the soft skin across the body. These receptors gather and encode extensive tactile information, enabling humans to sense and comprehend the surrounding environment. The effectiveness of human somatosensory capabilities surpasses the touch detection capacity of most state-of-the-art robots, underscoring the need for neural-like technology in electronic skin (e-skin). This goal can be achieved by exploring innovative approaches to develop distributed electronics or by adapting neuromorphic circuits initially designed for other sensory modalities like vision and sound.

To attain human-level perceptual abilities in a robot, it is crucial to seamlessly integrate tactile sensors with analogous data processing systems, mirroring the functioning of human receptors. Despite the historical focus on touch sensors, there has been limited exploration of data encoding and processing using dedicated hardware. In the realm of robotics, tactile information processing has traditionally leaned on analytical or data-driven methods and a software platform [16]. Analytical techniques rely on physics-based models to extract tactile information, such as item attributes and action commands, from raw tactile data. However, these models often depend on structured interactions and may not provide the precise data necessary for control or robust perception data. However, these models often depend on structured interactions and may not provide the precise data necessary for control or robust perception**.** An alternative approach involves employing data-driven algorithms that learn mappings from raw sensory input or lower-level features to high-level object properties and action commands. Supervised, unsupervised, and reinforcement learning methods can be explored in this context.

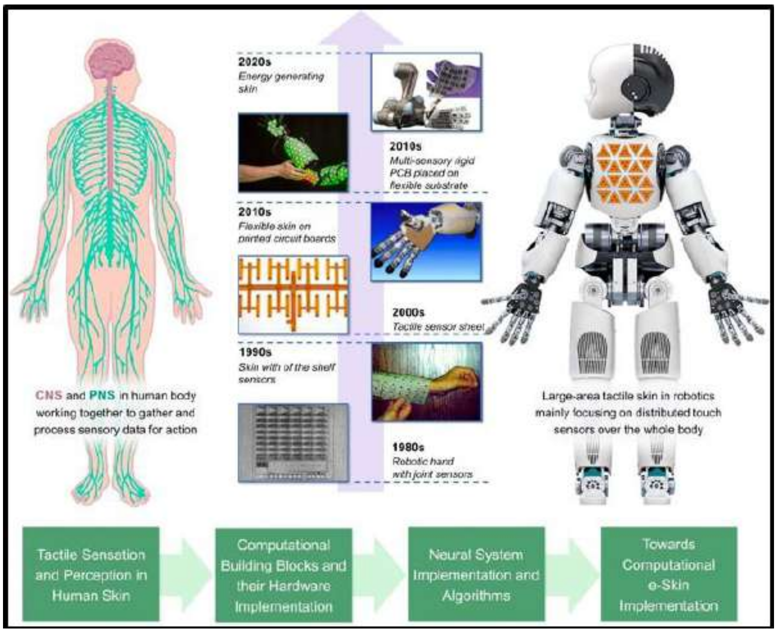

Figure 4: The study focuses on the tactile sensation and perception observed in human skin, alongside the development of artificial tactile skin for robots. The human Peripheral Nervous System (PNS) incorporates skin as a crucial element (depicted on the left), driving extensive research into the creation of robotic tactile skin. The evolution of tactile sensing technology is evident, transitioning from individual touch sensors to extensive skin coverage (depicted in the middle and right images) encompassing the entire body of a robot [10].

5. Electronic Skins for Smart Prostheses

E-skins can encode key parameters such as force, strain, and temperature, making them valuable for prosthetic applications.

5.1. Static Force Transduction

Devices emulating slow-adapting mechanoreceptors in the skin mainly depend on resistive and capacitive mechanisms to maintain the input signal until it is released. Resistive sensors operate through two mechanisms: the inherent piezoresistivity of materials and alterations in resistance caused by geometric deformation.

5.2. Dynamic Force Transduction

When pressure is applied to piezoelectric or triboelectric sensors, a voltage pulse is generated [5]. This property qualifies them for imitating the function of fast receptors in human skin.

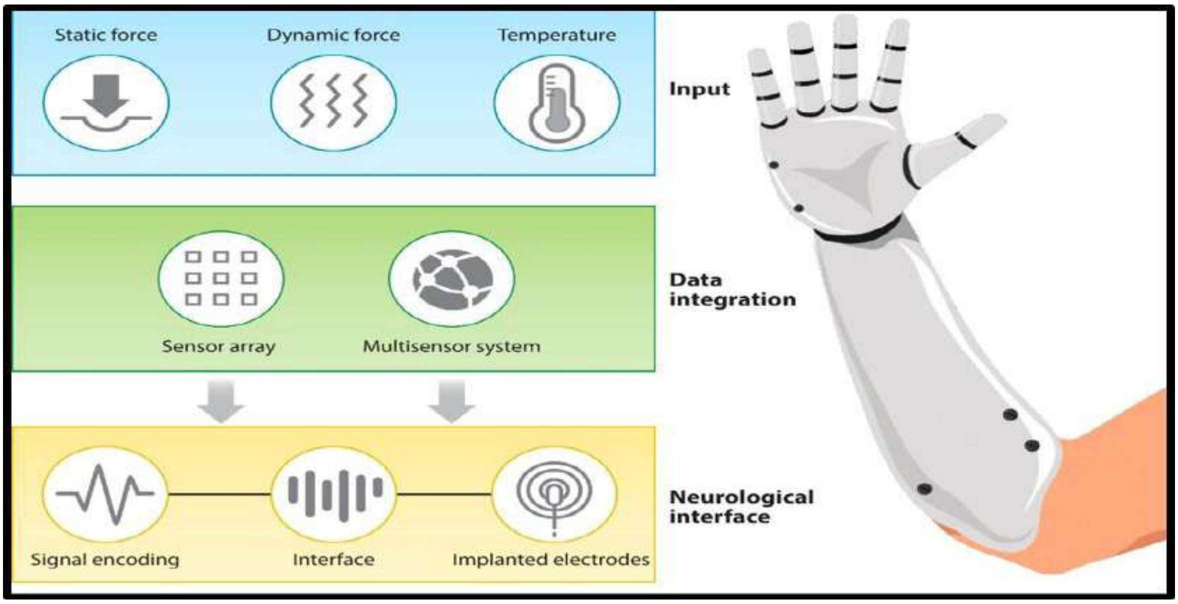

Figure 5: Illustrates the fundamental components of prostheses, ranging from individual sensors to multifunctional sensor arrays, and the potential connection to the human nervous system. At the foundational level, separate sensors provide input signals to the smart prosthetic system. By amalgamating numerous distinct functional sensors into an array, data integration occurs, enabling the sensors to furnish complex information (such as softness or roughness) through machine-learning techniques. Ultimately, effective integration of the sensor system and its data with the neurological system is achieved using signal encoding and surface or implanted electrodes [12].

5.3. Temperature

Thermal sensors in the skin exhibit lower sensitivity to constant temperatures (1-14 Hz/degree Celsius) compared to dynamic temperature changes (up to 70 Hz/degree Celsius). In simpler terms, individuals have a restricted capacity to discern steady temperatures but are exceptionally responsive to temperature fluctuations, even as minimal as 0.02 degrees Celsius [19]. The temperature coefficient of resistance (TCR) serves as a material parameter characterizing the proportional change in resistance with respect to temperature. In standard circumstances, gold is employed in a device resembling skin, continuously monitoring temperature.

5.4. A Neural Link

The primary goal of intelligent prosthetics is to link e-skin with the nervous system, reinstating lost functionality for individuals with limb amputations. A versatile sensor array will provide intricate tactile data, necessitating efficient signalling and sampling algorithms. Artificial sensory information can be directly connected to peripheral nerves or the central nervous system [6], regulating neuronal activity through electrical pulses that encode the captured sensory data. This highlights the significance of neural interface electrodes in the field of prosthetics.

6. Future Prospects

Electronic skins (e-skins) are progressing into effective tools and interfaces for biomedical and prosthetic purposes. They can establish direct connections with the human body, facilitating consistent and less invasive monitoring, thereby enabling the digitalization of health and home controls. Furthermore, their application in smart prosthetics aims to enhance natural sensation for individuals with sensory disorders, minimizing the gap between humans and machines. Nevertheless, there are notable challenges:

- Wireless communication and signal processing technologies: Unlike inflexible wireless gadgets, pliable wireless devices have a limited range for signal transmission and are vulnerable to external interference. The received signal might fluctuate due to nearby conductors or the attachment of other devices. The development of neuromorphic devices capable of processing signals from sensor arrays is still in its initial phases. There is a need to formulate an algorithm for Spiking Neural Networks (SNN), and improvements must be made to synaptic devices.
- Conductive hydrogels: present a potential substitute for rigid electrodes in neural interfaces due to their modulus resembling neural tissue. Current research has primarily focused on enhancing mechanical and electrical characteristics, with limited emphasis on evaluating the functionality of conductive hydrogels in living organisms [20]. Therefore, it is imperative to conduct integrated device-level in vivo demonstrations to validate their practical applicability.
- Devices designed for robotics and prosthetics need to deliver satisfactory performance while maintaining an appealing aesthetic. Additionally, the materials employed should not induce discomfort or harm to human skin upon connection, should be easily removable, and should provide precise data even during rigorous activities such as swimming and sports.
- Stretchable materials, encompassing conductors, insulators, and semiconductors, may lead to interfacial challenges such as contact resistance, delamination, and defects. Moreover, the performance of n-type transistors is inferior to that of p-type transistors. Similarly, the incorporation of self-healing materials in devices is currently in the proof-of-concept stage.
- Robotic devices should be available in various shapes to represent their diversity. Currently, several robotic skin systems, utilizing flexible printed circuit boards (PCBs) in designs like fingers and patches, have been incorporated with rigid robots like the iCub. These systems have showcased reliable tactile sensing with spatial resolution at the millimetre scale and moderate sensitivity [4]. Nevertheless, their limited stretchability poses a hindrance to their practical utility due to restricted flexibility and inadequate mechanical resilience.

In addition to the challenges outlined earlier, there are still several technological hurdles to overcome; however, large-scale, distributed, multisensory skins will ultimately open up a multitude of possibilities in human-machine interfaces and robotics.

7. Conclusion

The evolution of electronic skin (e-skin) stands as a testament to the relentless pursuit of innovation in the realm of technology. This cutting-edge technology has not only revolutionized the field of health surveillance but has also transcended boundaries, finding applications in robotics and prosthetics. In this comprehensive review, we delved into the exquisite prospects that electronic skin presents, unlocking a new era of possibilities in three distinct domains. The seamless integration of e-skin with the human body facilitates continuous monitoring of vital signs, allowing for early detection of anomalies and prompt intervention. This not only holds promise for preventive healthcare but also opens avenues for personalized medicine. The non-intrusive nature of e-skin ensures patient comfort, making it an ideal candidate for long-term health monitoring. As we move forward, the potential for early diagnosis of diseases and real-time health tracking heralds a paradigm shift in healthcare practices. The integration of electronic skin in robotic prosthetics further extends its utility, offering a seamless interface between the artificial limb and the user's nervous system. As robotics continues to evolve, electronic skin emerges as a linchpin in creating a more intuitive and responsive generation of machines. As the boundaries between man and machine blur, electronic skin emerges as a critical enabler in the quest to create prosthetic limbs that not only mimic human capabilities but also seamlessly integrate into the wearer's daily life. Electronic skin (e-skin) is needed in today's time for several reasons:

1. **Personalized Medicine:** With its ability to provide accurate and personalized health data, e-skin supports the trend towards personalized medicine, tailoring healthcare interventions to individual needs.
2. **Flexible Electronics:** E-skin is a key component in the development of flexible and stretchable electronics, enabling the creation of devices that can conform to irregular surfaces and withstand mechanical stress.
3. **Biometric Authentication:** E-skin can be utilized for biometric authentication, enhancing security measures by incorporating unique physiological characteristics.
4. **Remote Sensing:** In remote sensing applications, e-skin can be employed for data collection in environments where traditional sensors may be impractical.
5. **Research and Development:** E-skin serves as a valuable tool in research and development, allowing scientists and engineers to explore new possibilities in the fields of materials science, electronics, and human-machine interaction.
6. **Environmental Monitoring:** E-skin can be applied in environmental monitoring, providing a platform for sensing and collecting data in various environmental conditions.

The adoption of electronic skin addresses the evolving needs of modern society in areas such as healthcare, technology, and human augmentation. Its versatility and capabilities make it a valuable asset in advancing various domains.

Table 1: This table provides a snapshot of key facts regarding electronic skin, highlighting its diverse applications, material composition, unique capabilities, and ongoing advancements.

Aspect	Facts
Materials Used	Thin, flexible materials like silicon, polymers, and nanomaterials are commonly used to create electronic skin.
Sensing Capabilities	Equipped with various sensors, e-skin can detect pressure, temperature, humidity, and even biochemical markers, mimicking the human sense of touch.
Applications in Health	Enables continuous health monitoring, early disease detection, and personalized medicine by seamlessly integrating with the human body.
Robotics Integration	Enhances robotic capabilities by providing tactile feedback, enabling safer human-robot collaboration and precision in delicate tasks.
Prosthetics Advancements	Facilitates the development of advanced prosthetics, offering users a sense of touch and temperature through bidirectional communication with the nervous system.
Stretchability and Durability	Electronic skin is designed to be highly stretchable and durable, allowing it to conform to the shape of the human body and withstand various environmental conditions.
Energy Harvesting	Some electronic skin technologies incorporate energy harvesting mechanisms, such as piezoelectric materials, to generate power from movement and external stimuli.
Flexible Circuitry	Utilizes flexible and stretchable circuitry to accommodate movement without compromising functionality, crucial for applications on joints and moving body parts.
Wireless Communication	Enables wireless data transmission for remote monitoring and control, reducing the need for cumbersome wired connections and enhancing user convenience.
Biocompatibility	Designed to be biocompatible, minimizing the risk of adverse reactions when integrated with the human body for medical or prosthetic applications.
Challenges and Future Directions	Ongoing research focuses on addressing challenges like long-term stability, scalability, and improving the diversity of sensors for broader applications.

Thus, in conclusion, the future of electronic skin is an exquisite tapestry woven with threads of innovation, promising transformative impacts. From redefining healthcare practices to enhancing the capabilities of robots and providing amputees with more lifelike prosthetic limbs, electronic skin stands at the forefront of technological progress, heralding a future where man and machine coexist in unprecedented harmony.

References

[1] Chortos, J. Liu, Z. Bao, Nat. Mater. 2016.
[2] C. K. Tee, C. Wang, R. Allen, Z. Bao, Nat. Nanotechnology. 2018.
[3] Buena, Alina-Cristina. "Electronic Skin." Encyclopedia. Web. 17 October, 2021.
[4] Bartolozzi, L. Natale, F. Nori, G. Metta, Nat. Mater. 2020.
[5] Chortos A, Liu J, Bao Z. Pursuing prosthetic electronic skin. Nat. Mater. 15:937–50(2016).
[6] Cutrone A, Micera S. Implantable neural interfaces and wearable tactile systems for bidirectional neuroprosthetics systems.2019.
[7] Izmailova ES, Wagner JA, Perakslis ED. Wearable devices in clinical trials: hype and hypothesis. Clin. Pharmacol. Ther. 104:42–52.2018.
[8] Juan Zhang, Andrew N. Keith, Sergei S. Sheiko, Xuehui Wang, and Zhigang Wang, ACS Applied Materials & Interfaces 2021
[9] Lim H-R, Kim HS, Qazi R, Kwon Y-T, Jeong J-W, Yeo W-H. Advanced soft materials, sensor integrations, and applications of wearable flexible hybrid electronics in healthcare, energy, and environment. 2020.
[10] M. Raibert, in Proceedings. 1984 IEEE International Conference on Robotics and Automation. (1984).
[11] M.-C. Bélanger, Y. Marois, J. Biomed. Mater. Res. 2001
[12] Mehrali M, Bagherifard S, Akbari M, Thakur A, Mirani B, et al. Blending electronics with the human body: a pathway toward a cybernetic future. Adv. Sci. 5:1700931.2018.
[13] N. Matsuhisa, D. Inoue, P. Zalar, H. Jin, Y. Matsuba, A. Itoh, T. Yokota, D. Hashizume, T. Someya, Nat. Mater. 2017
[14] Oh HS, Lee CH, Kim NK, An T, Kim GH. Review: Sensors for Bio signal/Health Monitoring in Electronic Skin. Polymers. 2021;
[15] Overview of electronic skin (e-skin) component and technological requirements. Stretchable materials: Reproduced with permission.20 Coyright.13th April, 2018.
[16] Q. Li et al., A Review of Tactile Information: Perception and Action Through Touch. IEEE Trans. Robot. 36, 1619-1634 (2020).
[17] S. Burattini, H. M. Colquhoun, J. D. Fox, D. Friedmann, B. W. Greenland, P. J. F. Harris, W. Hayes, M. E. MacKay, S. J. Rowan, Chem. Commun. 2019
[18] S. Lee, S. Shin, S. Lee, J. Seo, J. Lee, S. Son, H. J. Cho, H. Algadi, S. Al-Sayari, D. E. Kim, T. Lee, Adv. Funct. Mater. 2015
[19] Webb RC, Bonifas AP, Behnaz A, Zhang Y, Yu KJ, et al. 2013.
[20] Y. Liu, A. F. McGuire, H.-Y. Lou, T. L. Li, J. B.-H. Tok, B. Cui, Z. Bao, Proc. Natl. Acad. Sci. USA 2018.
[21] Yang JC, Mun J, Kwon SY, Park S, Bao Z, Park S. Electronic Skin: Recent Progress and Future Prospects for Skin-Attachable Devices for Health Monitoring, Robotics, and Prosthetics. Adv Mater. 2019.
[22] Yao S, Lee JS, James K, Miller J, Narasimhan V, et al. silver nanowire strain sensors for wearable body motion tracking. 2015.
[23] Yu Y, Nyein HYY, Gao W, Javey A. Flexible electrochemical bioelectronics: the rise of in situ bioanalysis. Adv. Mater. 32:1902083.2020.

Synthesis of Carbon Quantum dots from Waste Peel Extracts of Citric Fruit

Vishal Dubey*
Departmento f Biotechnology
Maharana Pratap Engineering College
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Mukund Jee Tiwari
Department of Biotechnology
Maharana Pratap Engineering College
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Shivam Kumar
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Istakhar Ansari
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Ritu Kumari Singh
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Vishal Dubey
Email Id: dubeyvishal7661@gmail.com

ABSTRACT

The synthesis of carbon quantum dots (CQDs) from diverse citric fruit peel extracts using a rapid and efficient microwave pyrolysis method is investigated in this study. Citrus fruitpeels,sourcedfromoranges, lemons,andgrapefruits,serveassustainableprecursorsfor CQD synthesis. Microwave pyrolysis offers a time-effective and eco-friendlyrouteto convert these peels into CQDs, leveraging the unique heating mechanism to enhance the efficiency of carbonization.

The synthesized CQDs are systematically characterized using UV-Visible spectroscopy to unveiltheiropticalproperties.UV-Visiblespectroscopyservesasapowerfultoolforanalyzing the absorbance and emission spectra ofthe CQDs. Distinctive peaks in the absorption spectra indicate the quantum confinement effects within the CQDs, providing valuable insights into their size and morphology. The emissionspectra revealthe tunable fluorescence propertiesof the CQDs derived from different citrus fruit peels.

Keywords: Carbon Quantum Dots, Citrus Fruit Peel Extracts, Microwave Pyrolysis, UV-Visible Spectroscopy, Optical Properties, Quantum Confinement.

1. Introduction

In the ever-evolving field of nanotechnology, carbon quantum dots (CQDs) have emerged as an attractive and versatile material, attracting researchers with their unique properties and diverseapplications.ThisresearchreportdelvesintothecomplexityofCQDsandinvestigates their structure, hybridization, shape, properties, and the underlying mechanisms contributing to their remarkable fluorescence. Furthermore, this study investigates the diverse applications of CQDs, with a special focus on the role of his CQDs in fingerprint technology.

CQDs can be referred to as nano scale carbon-based materials, typically with dimensions less than 10 nanometers, and exhibit excellent properties due to their well-defined structures and surface features. The core–shell structure, in which the carbon core is surrounded by a functionalized surface layer, plays an important role in determining the optical, electronic, and chemical properties of CQDs.

The hybridization of carbon atoms within CQDs significantly contributes to the electronic propertiesofCQDs.Thesp2hybridizationgivesthecoreagraphiticstructure, giving the CQDs excellent conductivity and stability. This structural feature enhances quantum confinement effects and provides special optical properties such as strong and tunable fluorescence.

The diverse shapes of CQDs, ranging from spheres to rods to polyhedral, contribute to their versatility. These shapes can be precisely tailored during synthesis, allowing control over their optical and electronic properties. Furthermore, surface fictionalization determines solubility, stability, and biocompatibility, making CQDs suitable for a wide range of applications. One of the most interesting features of CQDs is their ability to fluoresce due to quantum confinement effects. This unique property has led to the exploration of his CQDs as efficient phosphors in various sensing and imaging applications.

CQDs have been used in a wide range of applications beyond their inherent properties due to their excellent biocompatibility and low toxicity. This research report specifically focuses on the application of his CQDs in fingerprint technology. Utilizing the unique fluorescence of CQDs, sensitive and selective fingerprinting techniques can be developed, providing a new approach for forensic investigations. While exploring carbon quantum dots, the next section explores CQD synthesis methods, characterization techniques, and specific applications, highlighting the potential of CQDs as groundbreaking nanomaterials that impact a variety of science and technology fields. Emphasize gender. Furthermore, in pursuit of sustainable nano material synthesis, this paper presents an innovative and eco-friendly approach to synthesize his CQDs using citrus peel extract of Citrus limetta.

2. Materialand Method

- **CitrusFruit Peel (Citrus limetta):**CollectedfromfreshCitrus limetta fruits.
- **Deionized Water (DIWater):**Usedasasolventinvarious steps.
- **Ethanol (95%):**Usedforextractionandpurification.
- **Urea**.

3. Methodology

Required Instrument:

- Microcentrifuge.
- UV transmitter.
- UV-VisibleSpectrophotometer.
- HotOven&Hotplate.

Process

A method for the synthesis of green carbon quantum dots (CQDs) from waste **Citrus limetta** peels isdescribed as follows. Initially, **Citrus limetta** peelsare collected and dried at 45 degrees Celsius in a hot air oven. The dried peels are then ground into a fine powder. Urea (5g) and the powdered **Citrus limetta** peels (7g) are weighed and mixed in 250ml of distilled water.

The resulting mixtures under goes are action, which involves heating in a micro wave for 25 minutes at 60 degrees Celsius. Subsequently, the mixture is subjected to centrifugation for 20 minutes at 6000 rpm. A sample is collected from the centrifuged solution for further analysis. The synthesized carbon quantum dots are then examined using a UV transmittance spectrometer, revealing a distinctive green color characteristic of green CQDs. This method provides an eco- friendly approach to repurpose waste materials into functional carbon quantum dots with potential applications in various fields.

Application

In the novel application of carbon quantum dots (CQD) for fingerprinting, the process begins with the deposition of a fingerprint on a microscope glass slide. The glass slide, bearing the fingerprint, is then carefully set on the microscope stage, where proper illumination is crucial for the fluorescent properties of CQDs. The microscope, acting as a source of light, becomes instrumental in enhancing the fluorescence of the CQDs. Using a micropipette, the CQDs are applied to the fingerprint-laden slide, and upon interaction, the CQDs exhibit a distinctive fluorescent pattern. This pattern serves as a unique fingerprint signature, highlighting the potential of CQD sin forensic applications. It is note worthy that in this approach, the finger prints them selvesdonotbearvisibleink,ensuringadiscreetandcovertidentificationmethod.Asthis innovative technique evolves, it holds promise fordiverse applications in security and forensic science.

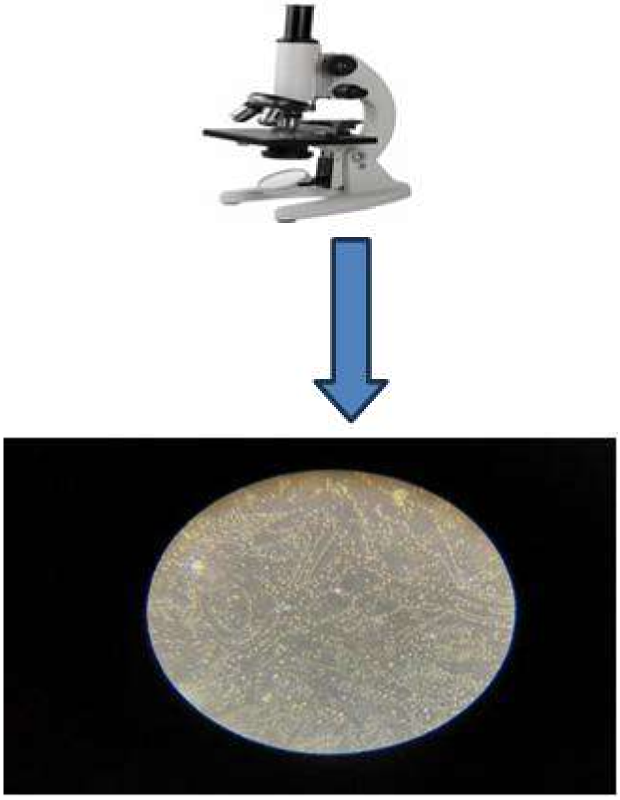

Figure 1: Observed finger print pattern under micro scope after pouring green CQD.

7 gm powdered **Citruslimetta**peel.

5 gmurea

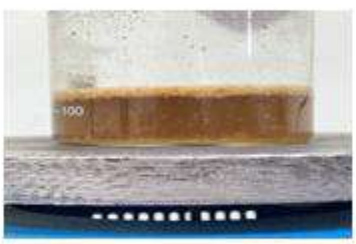

Solution of citruslimetta and urea in 250 ml water

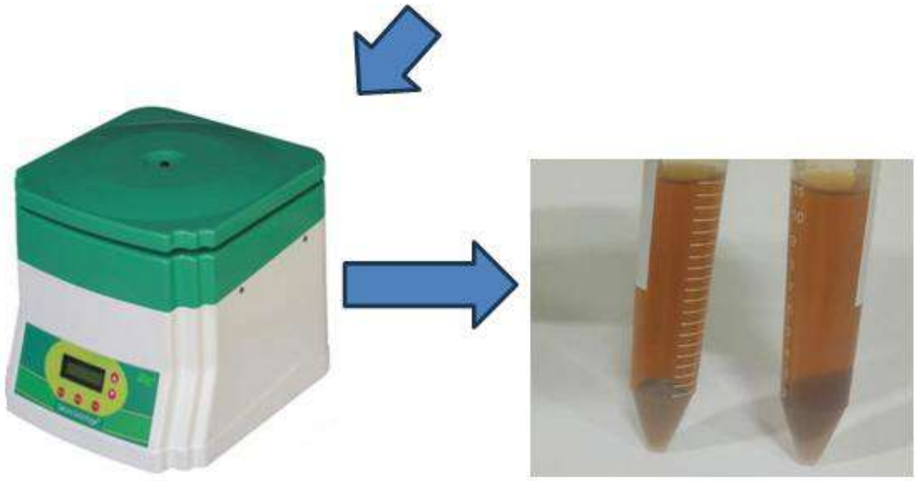

Micro centrifuge (6000RPM)

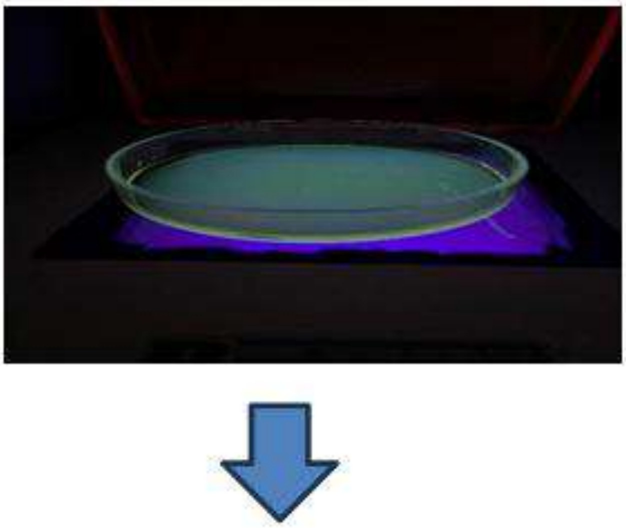

Figure 2: Green fluorescence of CQD observed on UV transmitter.

4. Result and Conclusion

The synthesis of carbon quantum dots (CQDs) from waste peel extract of citric fruits like **Citrus limetta** presents a promising and environmentally friendly approach to produce nanomaterials with various potential applications. it holds great potential in terms of sustainability, cost- effectiveness, and diverse applications. Continued research and collaborative efforts are essential to unlock the full range of benefits and overcome any existing challenges, paving the way for the widespread use of these eco-friendly nanomaterials.

References

[1] Urea-mediated synthesized carbonquantumdotstotune the electrochemical performance of polyaniline nanorods for supercapacitor device
[2] SathishKumar M[ab],Yamini YasodaK[c],PuspenduDas[d], SudipMalik[d], Nikhil
[3] K. Kothurkar[ab], Sudip K. Batabyalhttps://doi.org/10.1016/j.jsamd.2021.11.005
[4] Recent AdvancesonSynthesisandPotentialApplicationsofCarbonQuantumDots. https://doi.org/10.3389/fmats.2022.906838
[5] Microwave-assisted synthesis of fluorescent carbon quantum dots from an A2/B3 monomer set†
[6] 10.1039/C6RA28176A
[7] Carbonquantumdots:synthesis, properties,andapplications
[8] DOI:10.1039/C4TC00988F(FeatureArticle)J. Mater. Chem. C, 2014, 2, 6921-6939
[9] The selective deprotonationofcarbonquantumdots for fluorescence detection ofphosphate and visualization of latent fingerprints.
[10] https://doi.org/10.1039/D1NR02432A

Nanotechnology for Sustainable Development of India: Revolutionizing Industrial Progress and Improving the Economy and Human Health, A-Review

Harshita Patel
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Higher Education
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Subhangi Singh
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Higher Education
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Vineet Kumar
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Higher Education
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Ashish Ranjan Singh*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Uma Gupta
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Ashish Ranjan Singh
Email Id: ashishranjan.singh@kit.ac.in

ABSTRACT

Nanotechnologies significantly impact fields like physics, materials science, chemistry, biology, computer science, and engineering. They're also being used to enhance human health, particularly in cancer therapy. Nanoemulsions offer advantages like high optical clarity, improved bioavailability, and suitability for various applications. Nanotechnology is expected to aid genetically modified crops, fish and animal production, chemical insecticides, and precision farming. It is crucial to develop easy, quick, accurate, and less expensive methods for observing and measuring contaminants in food, water, and other substances in the past decade.

The Indian government has funded research in nanotechnology, infrastructure development, human resources, and international cooperation after a study using lemongrass oil nano-emulsion to assess plums' antimicrobial properties and physical and chemical changes, inhibiting E. coli and Salmonella strains. India has a significant research foundation in nano technology, with several universities and research centers engaged in a variety of endeavors. The nano technology market in India is anticipated to expand at a compound annual growth rate of 19.1% over the next ten years due to increasing demand and research & development. They focus on healthcare, energy, electronics, materials science, water treatment, agriculture, space research, and innovation ecosystems.

Keywords: Nano-emulsion, Healthcare, Industry.

1. Introduction

Science and engineering drive global technological competition, with nanoscale exploration uncovering nature's unifying principles. This research forms the foundation for advancing diverse fields and propels humanity towards transformative breakthroughs. The interplay between science and technology at the nanoscale demonstrates immense potential for shaping the future. [1].Nanotechnology has the potential to revolutionize industries globally, including energy, electronics, medicine, and agriculture. India, aiming for sustainable development, is integrating nanotechnology to foster economic growth and improve human health, positioning the nation at the forefront of technological innovation [2].

India is exploring the potential of nanotechnology to address its population growth, economic challenges, resource scarcity, environmental degradation, and public health issues. This innovative field offers innovative solutions, demonstrating its potential to mitigate challenges and promote sustainable development in India's dynamic socio-economic landscape. India can leverage nanotechnology to revolutionize industries and promote sustainable development, particularly in the healthcare sector. Nano medicine offers targeted drug delivery, sensitive diagnostics, and innovative disease treatment methods, potentially enhancing millions of lives and reducing healthcare system pressure [3].

This review examines the progress and potential ramifications of nanotechnology in various fields, aiming to illuminate India's youth's future and sustainable development. It emphasizes responsible development and deployment, highlighting the critical role of policymakers in leveraging nanotechnology for the benefit of India's burgeoning generations and the broader societal landscape.

2. Importance of Nanotechnology

Nanotechnology holds immense potential for research, as it has the potential to revolutionize various industries and tackle numerous societal challenges. Here are some key reasons why nanotechnology is important, given below.

2.1. Advancements, Enhancing Performance and Functionality

Nanotechnology is revolutionizing various industries, including medicine, energy, electronics, materials science, and sustainability. Its small size and high surface area-to-volume ratio offer unique properties that enhance product performance and functionality. Research is exploring how nano scale materials can be harnessed to advance technological applications across various domains [4-5].

2.2. Healthcare Enhancement and Eco-Friendly Initiatives

Research papers reveal the potential of nanotechnology in healthcare, enabling targeted drug delivery, early disease detection, personalized medicine, and tissue engineering. In the environmental sector, nanotechnology offers innovative solutions for water purification, air pollution control, energy generation, and waste management. The growing nanotechnology field raises safety and ethical concerns, necessitating thorough research to investigate potential risks, address nano toxicity, and propose guidelines for responsible and secure application in various industries [6-7].

2.3. Safety and Ethical Considerations

The growing nanotechnology field raises safety and ethical concerns, necessitating thorough research to investigate potential risks, address nano toxicity, and propose guidelines for responsible and secure application in various industries. [8-9].

3. Various Methods of Preparations of Nanoparticles

Nanoparticle synthesis involves various methods, including chemical synthesis, physical vapor deposition, bottom-up self-assembly, top-down mechanical methods, and electrochemical methods. Chemical synthesis involves precipitating metallic ions with agents like polyol or sol-gel, while physical vapor deposition evaporates metals in a vacuum, while electrochemical methods involve electrodeposition for nanoparticle formation [10-12].

4. Use of Different type of Nano Particle in Various Sectors

Nanoparticles, with their unique physicochemical properties, are being utilized in various industries due to their potential applications in diverse fields.

4.1. Nanoparticles in Healthcare Sector

Nanoparticles are crucial in medical diagnostics and therapeutics, with Gold Nanoparticles (GNPs) used for drug delivery, cancer imaging, and photothermal ablation. Iron Oxide Nanoparticles are promising for Magnetic Resonance Imaging and targeted drug delivery. Quantum Dots are used in disease diagnosis and bioimaging through fluorescent labeling. Carbon Nanoparticles, including CNTs, G, fullerenes, CDs, and NDs, serve as scaffolds in drug delivery and tissue engineering, supporting bone tissue regeneration [13-15].

4.2. Nanoparticles in Electronics Sector

Semiconductor Nanoparticles, also known as quantum dots, are small, high-surface area, and quantum-effect nanoparticles with unique properties. They are used in various applications, including LEDs, diodes, transistors, lasers, solar cells, medical imaging, and quantum computing. Metal Nanoparticles enhance conductivity in printed electronics, while nanoparticle-based transistors offer high-performance computing [16-17].

4.3. Nanoparticles in Energy Sector

Solar nanoparticles are used in photovoltaics and solar water splitting systems due to their high surface area, catalytic prowess, and engineering stability. They enhance efficiency by boosting light absorption and reducing energy requirements. Magnetic nanoparticles contribute to energy generation and storage by enhancing light absorption in solar cells. Catalytic nanoparticles are crucial in fuel cells, particularly proton exchange membrane fuel cells (PEMFCs), where they convert hydrogen for energy conversion. In water electrolysis, they catalyze hydrogen and oxygen evolution reactions, facilitating efficient hydrogen production [18-19].

4.4. Nanoparticles in Environmental Sector

Nanoparticles are essential in environmental applications, particularly in wastewater treatment and pollution control. Nanoparticles such as titanium dioxide (TiO2), iron oxide (Fe3O4), have excellent adsorption capacities for various contaminants, and functionalization enhances their efficiency. Nanoparticle-based sensors offer high sensitivity and rapid response times in environmental monitoring. They also serve as catalysts in sustainable chemical reactions, particularly in fuel cells like PEMFCs. In water electrolysis, nanoparticles catalyze hydrogen and oxygen evolution reactions, facilitating efficient hydrogen production. Overall, nanoparticles offer promising solutions for various environmental applications [20-21].

4.5. Nanoparticles in Agricultural Sector

Nanoparticles are revolutionizing agriculture by providing enhanced crop protection and fertilization. They act as efficient delivery systems for pesticides and fungicides, reducing chemical usage and enhancing pest and disease control. Nano sensors enable real-time monitoring of soil and plant health, and nano-fertilizers, coated in biodegradable polymers, enhance nutrient uptake efficiency and reduce wastage [22-23].

4.6. Nanotechnology in Food

Nanotechnology is increasingly being used in the food industry for various applications, including food processing, antimicrobial packaging, smart packaging, nutritional supplements, food quality monitoring, and food storage. Nano-sized particles inhibit bacterial growth and spoilage, while nanosensors monitor food environments and detect pathogens. Additionally, oxygen-absorbing sachets help prevent spoilage in food storage [24-26].

5. Growth of Nanotechnology Science in India

The 9th Five-Year Plan (1998-2002) established national facilities and core groups for research in frontier S&T areas, including nanomaterials. The "Programme on Nanomaterials: Science and Devices" was launched in 2000. The Nanomaterials Science and Technology Mission (NSTM) was established in the 10th Five-Year Plan (2002-07), evolving into the National Nanoscience and Nanotechnology Initiative (NSTI) in 2001. The Eleventh Five-Year Plan (2007-2012) allocated Rs. 1000 crore for the Nano Mission, while the Twelfth Five-Year Plan (2012-2017) continued the Nano Mission with a budget of Rs. 650 crores [27].

6. Discussion

Over the past 15 years, nanotechnology has significantly impacted India's sustainable development, driving technological innovation and economic growth. It has revolutionized industries like electronics, energy, healthcare, and materials, enhancing efficiency and performance in industrial processes.In healthcare, nanotechnology's rapid growth involves nanoparticles and nanomaterials for drug delivery, imaging, diagnostics, and regenerative medicine. The nanomedicine market is projected to reach $350 billion by 2025.Ligand-targeted therapeutic approaches concentrate agents in cancerous growth sites while minimizing damage to healthy cells [28]. Nanoengineering tools like liposomes and polymeric micelles offer versatility in drug delivery, with antitumor antibody-conjugated micelles showing potential in cancer therapy. However, delivery limitations remain. Innovative technologies like insulin pumps, continuous glucose monitoring, and artificial pancreas treat diabetes by mimicking pancreatic function and providing real-time glucose monitoring. Future research explores automated insulin adjustments based on real-time glucose levels [29].

The integration of nanotechnology into materials science has led to the creation of advanced materials with enhanced properties, resulting in more durable and environmentally friendly products. Nanotechnology offers energy generation, storage, and conservation solutions using carbon nanotubes and nanoparticles in solar cells, batteries, fuel cells, and energy-efficient coatings, with growth expected due to sustainable and clean energy technologies [30-31].

India needs sustained investment in research, development, infrastructure, and skilled manpower for continued success. Collaborations between academia, industry, and the government are crucial for creating a conducive environment for nanotechnology-based products. With the right strategy, nanotechnology contributes significantly to India's economic progress and population well-being.

7. Conclusion

India can harness nanotechnology's potential to drive economic growth and improve human health by enhancing efficiency in electronics, energy, healthcare, and materials. Investments in research, infrastructure, skilled manpower, and collaborations between academia, industry, and the government are crucial for fully harnessing its benefits.

References

[1] Handbook on Nanoscience, Engineeering and Technology, 2nd Ed., Taylor and Francis,(2007)

[2] S. E. McNeil, *Nanotechnology for the biologist*. Journal of leukocyte biology, **78**(3), 585-594, (2005).

[3] Aitken, R. J., Creely, K. S., and Tran, C. L "Nanoparticles: Anoccupational hygiene review."Other Health and Safety Executive ResearchRep. 274, Institute of Occupational Medicine, Edinburgh,Scotland. (2004).

[4] Moses, L. B. "Regulating beyond nanotechnology." IEEE Technol.Soc. Mag., 30(3), 42–48. . (2011)

[5] Lusk, Mark T., and Lincoln D. Carr. "Nanoengineering defect structures on graphene." Physical review letters 100.17 .175503;(2008)

[6] Nanotechnology: Big Things from a Tiny Worldhttps://www.nano.gov/sites/default/files/pub_resource/Nanotechnology_Big_Things_Brochure_web_0.pdf

[7] Nanotechnology and Its Application by Anupam Rajak in Journal of Nanomedicine & Nanotechnology, DOI: 10.4172/2157-7439.1000502

[8] Morita, M., Rau, D., Kajiyama, S., Sakurai, T., Baba, M. and Iwamura, M., "Luminescence properties of nano-phosphors: metal-ion doped sol-gel silica glasses" *Materials Science-Poland*, vol.22(1), pp5-(2004)

[9] Sharma, A.B., Sharma, M. and Pandey,R.K" ,Synthesis, Properties and Potential Applications of Semiconductor Quantum Particles" *Asian Journal of Chemistry*, vol.21(10) , ppS033-038., (2009)

[10] Sharma, A.B., Sharma, M. and Pandey,R.K" ,Synthesis, Properties and Potential Applications of Semiconductor Quantum Particles" *Asian Journal of Chemistry*, vol.21(10) , ppS033-038., (2009)

[11] Dikusar**,** A.I., Globa**,** P.G., Belevskii**,** S.S. and Sidel'nikova**,** S.P., (2009) "On limiting rate of dimensional electrodeposition at meso- and nanomaterial manufacturing by template synthesis" *Surface Engineering and Applied Electrochemistry*, vol. 45(3), pp171-179

[12] [17] Ren, H. M. *et al*. One-step preparation of silver hexagonal microsheets as electrically conductive adhesive fillers for printed electronics. *ACS Appl. Mater. Interfaces* **7**, 13685–13692 (2015).

[13] Jordan, A.; Scholz, R.; Wust, P.; Schirra, H.; Schiestel, T.; Schmidt, H.; Felix, R. Endocytosis of dextran and silan-coated magnetite nanoparticles and the effect of intracellular hyperthermia on human mammary carcinoma cells *in vitro*. *J. Magn. Magn. Mater. 194*, 185–196(**1999**)

[14] Shekdar, A.V. Sustainable solid waste management: an integrated approach for Asian countries. Waste Manag, 29, 1438-1448, https://doi.org/10.1016/j.wasman.2008.08.025(2009)

[15] Canhoto, O.; Magan, N. Electronic nose technology for the detection of microbial and chemical contamination of potable water. Sens. Actuators. B Chem., 106, 3-6, https://doi.org/10.1016/j.snb.2004.05.029.(2005)

[16] Srivastava D, Wei C, Cho K. Nanomechanics of carbon Nanotubes and composites. Appl Mech Rev 2003; 56:215-30

[17] Coma, V. Bioactive packaging technologies for extended shelf life of meat-based products. Meat Science, 78(2), 90–103 (2008).

[18] Rodriguez, A., Nerin, C., &Batlle, R. New cinnamon-based active paper packaging against Rhizopusstolonifer food spoilage. Journal of Agricultural and Food Chemistry, 56(15), 6364–6369 (2008).

[19] Morones J.R., Elechiguerra J.L., Camacho A., Holt K., Kouri J.B., Ramírez J.T. and YacamanM.J. . The bactericidal effect of silver nanoparticles. Nanotechnology 16:2346-2353 (2007) .

[20] Benedix R, Dehn F, Quaas J, OrgassM , Application of Titanium dioxide photocatalysis to create self-cleaning building materials.Lacer(2000).

[21] Neethirajan, S., &Jayas, D. S. Sensors for grain storage. In: 2007 ASABE Annual International Meeting, 17-20 June 2007, Minneapolis, USA . (2007). [20] Florence S., Konstantin S, Nanotechnology in Concrete-A review (2010).

[22] Benedix R, Dehn F, Quaas J, OrgassM , Application of Titanium dioxide photocatalysis to create self-cleaning building materials.Lacer(2000).

[23] Shefali, Rahul Gangwar, Mona Devi, Priya Chhabra and B. Prasad, Role of Nano Science in Development of India, National Conference on 'Role of Science and Technology Towards Make in India, YMCA University of Science and Technology, Faridabad (Haryana).(2016).

[24] P. Pramanik, P. Krishnan, A. Maity, N. Mridha, A. Mukherjee, V. Rai. *Application of nanotechnology in agriculture. In Environmental Nanotechnology.* Springer, Cham. Volume 4(317-348), (2020).

[25] Ranjita M., Sarbari A. and Sanjeeb K. SCancer nanotechnology: application of nanotechnology in cancer therapy. Volume 15 (2010).

[26] Wang, X. et al, Application of nanotechnology in cancer therapy and imaging. CA Cancer J. Clin. 58, 97–110 (2008). [9]] Rawat, M. et alNanocarriers: promising vehicle for bioactive drugs. Biol. Pharm. Bull. 29 . (2006).
[27] Vasir, J.K. and LabhasetwarV,Biodegradable nanoparticles for cytosolic delivery of therapeutics. Adv. Drug Delivrey. 59, 718–728. (2007).
[28] Charrois, G.J. and Allen, T.MDrug release rate influences the pharmacokinetics, biodistribution, therapeutic activity, and toxicity of pegylated liposomal doxorubicin formulations in murine breast cancer. Biochim. Biophys. Acta 1663 . (2004).
[29] Ajayan PM. Nanotubes from Carbon. Chem Rev 1999;99;1787-99.
[30] S. K. BSahoo, S. Parveen, J. J. Panda. The present and future of nanotechnology in human health care. Nanomedicine: Nanotechnology, biology, and medicine, 3(1), 20-31, (2007).
[31] Review of Nanotechnology Applications in Science and Engineering by Shariat Mobasser, Ali Akbar Firoozi in Journal of Civil Engineering and Urbanism, Volume 6, Issue 4: 84-93; July 25,(2016)

Computational Screening for Novel Drug Target for Treatment of JME (Juvenile Myoclonic Epilepsy)

Saumya Priya Gautam
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh. India.

Aryan Singh
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh. India.

Manjeet Chaudhary
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh. India.

Anshul Nigam*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh. India.
Email Id: anshul.nigam@kit.ac.in

***Corresponding Author**
Anshul Nigam
Email Id: anshul.nigam@kit.ac.in

ABSTRACT

JME is a type of epilepsy caused either by inheritance or by some unknown reason. The first line of treatment for this includes drugs like Valproate or a combination of lamotrigine, brivaracetam, and clonazepam, out of which clonazepam is a benzodiazepine. One of its major side effects include drowsiness. We are trying to find novel drugs through computational virtual screening that can target JME without having side effects of current therapeutics which may not be sleep- inducing or do not meddle with a patient's daily routine. We screened many compounds against a target protein mutation from various databases to identify which has the lowest free energy.

Keywords: Virtual screening, Novel drug target, JME.

1. Introduction

JME, or Juvenile Myoclonic Epilepsy, is a longstanding disorder of which the main cause has been unknown. Unlike other epileptic episodes, it includes three stages: absence seizure, petit mals, and grand mals. The onset of JME is around the pre-adolescent stage but the symptoms start to show around the age of 15 years. Many research studies have been conducted to find the root cause of JME, but the closest we have gotten to it is by narrowing down the receptors that may be involved in the expression of JME. Some of them are GABA/R (drug target for most benzodiazepines like clonazepam), sodium channels and calcium channels, Myoclonin1/ EFHC1 [1,2], TRPM2 [3,4] and its mutation like F229L and D210N, etc. The most effective drug to cure JME is Sodium valproate. However, Valproate cannot be administered to girls of childbearing years as it makes them susceptible to having ovarian cysts which in turn causes infertility. We have chosen the protein mutation of EFHC1 i.e., D210N.

2. Materials and Methods

Software Used: Autodock Vina(downloaded from vina.scripps.edu) [5], RCSB PDB(protein database) [6], Biovia Discovery(for visualization and preparation of protein) [7], ZINC20 (ligand database) [8], Open Babel(for conversion of formats of proteins and ligands) [9].

Methods: We have used protein mutation of EFHC1 I.e, D210N. We further docked seven different compounds: CBD, THC, Mysoline, Valproaic, Taurine, Curcumin, and Gingerol.

2.1 Methodology

First, we downloaded the D210N (PDB ID 5DFJ) protein in PDB format from RCSB PDB, in Human APE1 E96Q/D210N mismatch substrate complex form. Then we downloaded our ligands from zinc.docking.org in an SDF format, which we further converted into the PDB format using Open Babel. Then we prepared the protein using Biovia Discovery, where we removed the unnecessary ligands and chains from it and further created an SBD site sphere at the assumed binding site, where we are supposed to bind our chosen ligand. Then we docked our chosen ligand with our protein in Autodock Vina, where we further extracted them in PDBQT format. We generated the output i.e., a tabulated summary of the calculated free binding energy of each ligand in different torsions.

3. Result and Discussion

The free energy of interaction between ligands and EFHC1 was found to be -6.4kcal/mol, the lowest for THC. This ligand was interacting with amino acids lysine, arginine and leucine present in the predicted active site (Fig1). After calculating the free energy of every ligand, we then further visualized them and inferred that other than THC no other ligand had any bonding affinity towards chain A possessing an active site.

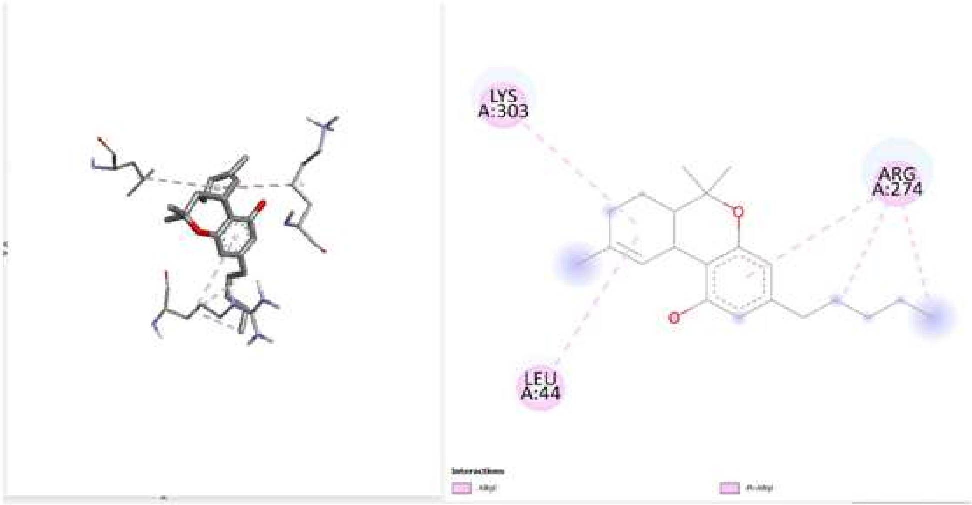

Figure 1: Shows 3-D structure protein (D210N) and ligand (THC) interaction. And the 2-D structure shows the ligand interaction with amino acids lysine, arginine and leucine

4. Conclusion

We have concluded that of all the chosen ligands THC turned out to be the one having the most bonding affinity towards our protein with free energy of -6.4 kcal/mol.

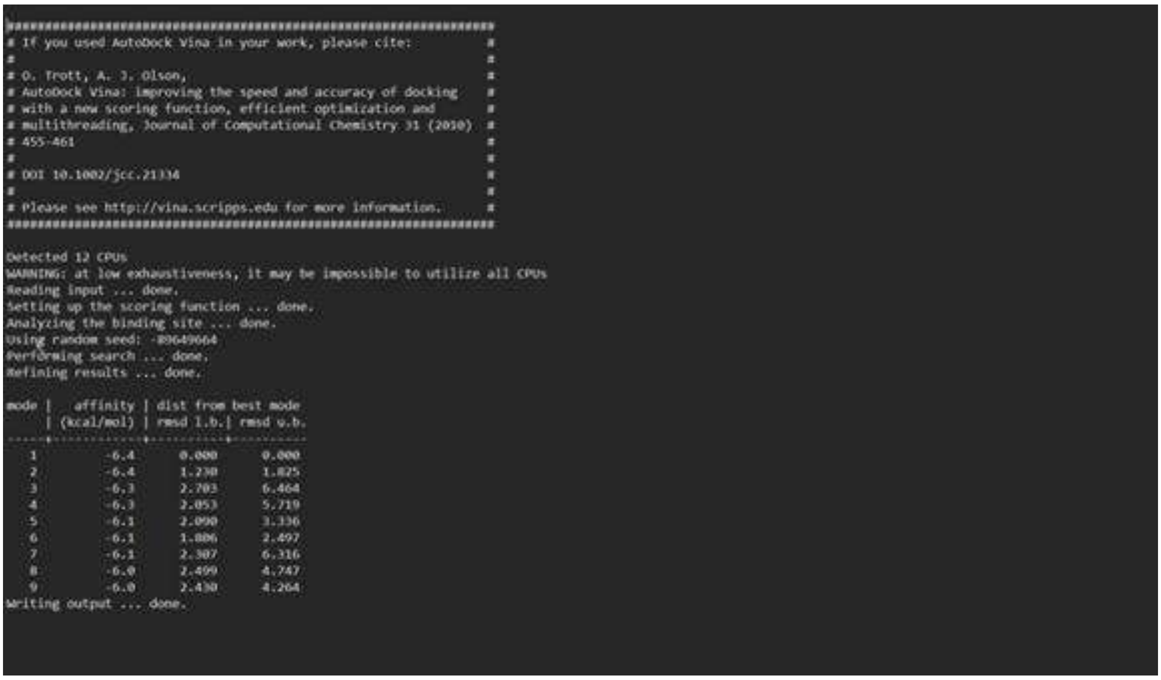

```
################################################################
# If you used AutoDock Vina in your work, please cite:         #
#                                                              #
# O. Trott, A. J. Olson,                                       #
# AutoDock Vina: improving the speed and accuracy of docking   #
# with a new scoring function, efficient optimization and      #
# multithreading, Journal of Computational Chemistry 31 (2010) #
# 455-461                                                      #
#                                                              #
# DOI 10.1002/jcc.21334                                        #
#                                                              #
# Please see http://vina.scripps.edu for more information.     #
################################################################

Detected 12 CPUs
WARNING: at low exhaustiveness, it may be impossible to utilize all CPUs
Reading input ... done.
Setting up the scoring function ... done.
Analyzing the binding site ... done.
Using random seed: -89649664
Performing search ... done.
Refining results ... done.

mode |   affinity | dist from best mode
     | (kcal/mol) | rmsd l.b.| rmsd u.b.
-----+------------+----------+----------
   1         -6.4      0.000      0.000
   2         -6.4      1.230      1.825
   3         -6.3      2.703      6.464
   4         -6.3      2.053      5.719
   5         -6.1      2.090      3.336
   6         -6.1      1.806      2.497
   7         -6.1      2.307      6.316
   8         -6.0      2.499      4.747
   9         -6.0      2.430      4.264
Writing output ... done.
```

Figure 2: Shows a log of free energy of ligand THC in different torsions.

References

[1] Suzuki T, Inoue I, Yamakawa K. Epilepsy protein Efhc1/myoclonin1 is expressed in cells with motile cilia but not in neurons or mitotic apparatuses in brain. Sci Rep. 2020 Dec 16;10(1):22076. doi: 10.1038/s41598-020-79202-4. PMID: 33328576; PMCID: PMC7744795.

[2] de Nijs L, Wolkoff N, Coumans B, Delgado-Escueta AV, Grisar T, Lakaye B. Mutations of EFHC1, linked to juvenile myoclonic epilepsy, disrupt radial and tangential migrations during brain development. Hum Mol Genet. 2012 Dec 1;21(23):5106-17. doi: 10.1093/hmg/dds356. Epub 2012 Aug 27. PMID: 22926142; PMCID: PMC3490517.

[3] Zhe Zhang, Balázs Tóth, Andras Szollosi, Jue Chen, László Csanády (2018) Structure of a TRPM2 channel in complex with Ca2+ explains unique gating regulation eLife 7:e36409. https://doi.org/.

[4] Fliegert R, Watt JM, Schöbel A, Rozewitz MD, Moreau C, Kirchberger T, Thomas MP, Sick W, Araujo AC, Harneit A, Potter BVL, Guse AH. Ligand-induced activation of human TRPM2 requires the terminal ribose of ADPR and involves Arg1433 and Tyr1349. Biochem J. 2017 Jun 16;474(13):2159-2175. doi: 10.1042/BCJ20170091. PMID: 28515263; PMCID: PMC5473349.

[5] Autodock Vina (vina.scripps.edu).

[6] RCSB PDB (https://www.rcsb.org/structure/5DFJ).

[7] Biovia Discovery (https://discover.3ds.com/discovery-studio-visualizer-download).

[8] ZINC20 (https://zinc.docking.org/).

[9] Open Babel (https://openbabel.org/).

Phytochemical Estimation of Neolamarckia Cadamba (Kadam)

Kritika Sonkar
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Shirin Hashmi
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Nikita Yadav
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Ritu Kumari Singh
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Swati Bajpai*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Swati Bajpai
Email Id: 201526@kit.ac.in

ABSTRACT

The phytochemical estimation of kadam fruit (*Neolamarckia cadamba*) is explored in this study to unravel the diverse array of bioactive compounds present in this tropical fruit. Kadam fruit, widely distributed in Southeast Asia, is recognized for its traditional medicinal uses and potential nutritional value. The investigation involves the extraction and estimation of phytochemicals to provide insights into the fruit's bioactive composition. Various solvent systems, including methanol and water, are employed for extracting phytochemicals from kadam fruit. The extracted components are thensubjected to qualitative and quantitative analyses to identify and measure the abundance of phytochemical classes such as alkaloids, flavonoids, tannins, saponins, and phenolic compounds. These compounds play a crucial role in the pharmacological activities and health benefits associated with kadam fruit.

Keywords: Neolamarckia cadamba, Phytochemical Estimation, Alkaloids, Flavonoids, Tannins, Saponins, Phenolic Compounds.

1. Introduction

Neolamarckia cadamba belongs to the family Rubiaceae, commonly referred to as Kadam. The fragrant Kadam (N. cadamba) tree, with its cascading white flowers, has graced landscapes across South and Southeast Asia for centuries [2]. While revered for its aesthetic beauty and cultural significance, the Kadam holds a lesser-known secret within its fruits: a treasure trove of bioactive phytochemicals brimming with potential health benefits [8]. N.cadamba is one of the economically important trees,which is being utilized for paper, pulp, and wood industries [7]. Neolamarckia cadamba has historical existence in India, which is mentioned in mythical stories [8]. Numerous reports exist on medicinal values of root, bark and leaves of N.cadamba, but the literature on its fruit is sparse[8]. This research delves into the fascinating realm of Kadamba's phytochemical composition, embarking on a journey to unlock the secrets hidden within itsfruits. Through a comprehensive phytochemical analysis, we aim to shed light on the diverse array of bioactive compounds presentand unravel their potential contributions to human health.The fruit possesses antioxidant, antihepatotoxic, antipyretic, antidiabetic, diuretic, and anti-inflammatory property [10]. They have been found to be useful in the treatment of tumors, blood diseases, anemia, uterine complaints [10]. They have also shown to exhibit both antibacterial and antifungal activity[4]. Identifying the bioactive compounds like alkaloids, flavonoids, tannins, saponins, protein, and carbohydrates present in Neolamarckia cadamba fruit and investigating their therapeutic mechanisms are primary objectives of this study, which can contribute to the development of novel drugs or natural remedies.

2. Medicinal uses of Neolamarckia Cadamba

a. Antitumor activity: Potential against prostate, breast, and colon cancer[5].
b. Reduces pain and swelling (paste application) [1].
c. Potential anti-diabetic and antipyretic properties [9].
d. Treats blood-related ailments [4].
e. Mouth gargle for ulcers and gum inflammation [11].
f. Urinary tract infections, kidney stones, and glycosuria [2].
g. Treats diarrhea and irritable bowel syndrome [3].

3. Materials and Methods

3.1 Plant Material

The fruits of Neolamarckia cadamba were collected from garden of Kanpur Institute of Technology. The collected samples were washed with distilled water to remove visible debris, oven dried and stored in a container for further use.

3.2 Preparation of Plant

Extracts Neolamarckia cadamba fruits were meticulously harvested and subjected to controlled oven-drying at 60^{o}C-80°C for optimal preservation. Subsequently, a 10g sample of the dried fruit was precisely weighed and pulverized into fine powder. Separate extractions were performed using 100mL of ethanol and distilledwater, with each sample being immersed in its respective solvent for 72 hours on a rotary flask shaker. Following extraction, the solutions were filtered through Whatman filter paper, and the filtrates were transferred to petri plates for oven drying at 60°C. Finally, the dried crude extracts were carefully scraped from the petri plates and quantitatively transferred to clean, labelled glass containers for further analysis.

3.3 Phytochemical Screening of Extract

Standard procedures were employed to identify chemical constituents in both ethanolic and water extracts, analysing color changes as the indicator [6].

3.3.1 Test for Saponins

Approximately 0.7 g of each extract was dissolved in 3 mL distilled water and vigorously shaken. Emulsion formation was observed (tested in triplicate).

3.3.2 Test for Carbohydrate (Benedict's test)

Benedict's test was performed on 0.2 g extract dissolved in 2 mL methanol. Equalvolumes (1,000 µL) of sample and Benedict's solution were mixed in a test tube (triplicate)

3.3.3 Test for Proteins

Biuret test was performed on 0.2 g extract dissolved in 2 mL methanol. A few drops of 1% $CuSO4$ and 4% NaOH were added (triplicate).

4. Qualitative Phytochemical Analysis of Fruit Extract

Table 1: Phytochemical Screening (Neolamarckia cadamba)

Phytochemicals	Ethanol	Water	Images
Saponins	Formation of emulsion(+)	Formation of emulsion (+)	 
Carbohydrates (Benedit's test)	Reddish brown(+)	Brick reddish (+)	 

Proteins	Pale blue(+)	Pale blue(+)	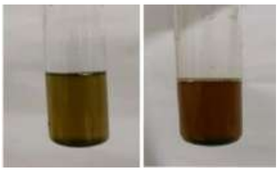

5. Result and Discussion

Preliminary phytochemical screening of Neolamarckia cadamba fruit extracts revealed a remarkable abundance of secondary metabolites, including saponins, carbohydrates, and proteins as shown in Table 1. This diverse profile suggests the plant possesses significant bioactive potential, potentially underpinning its well-documented pharmacological activities. saponins are renowned for their therapeutic versatility. Carbohydrates and proteins are the essential building blocks that provide the robust scaffolding for the plant's biochemical symphony. This preliminary investigation opens the door to further research, aiming to unleash the full therapeutic potential of the diverse bioactive compounds present in Neolamarckia cadamba and establishing reliable benchmarks for future research and utilization.

6. Conclusion

Neolamarckia cadamba, a majestic tree renowned for its distinctive star-shapedflowers, isn't just visually captivating; it harbors a captivating portfolio of secondary metabolites within its fruit. Both aqueous and alcoholic fruit extracts revealed the presence of saponins, carbohydrates, and proteins. Phytochemical analysis of these constituents providescompelling scientific evidence not only for their potential use as drugs but also for the historical therapeutic applications of the fruit. Being a natural source of therapeutic compounds, N.cadamba offers the potential for minimal side effects compared to synthetic drugs. This exciting glimpse of N.cadamba's therapeutic potential demands further exploration. Precisely isolating and characterizing its bioactive compounds, followed by rigorous clinical trials, will unlock its full medicinal potential.

References

[1] Awasthi, Sakshi. isolation and characterization of endophytic fungi the medicinal plant Neolamarckia Cadamba. Diss. Delhi Technological University, 2021.
[2] Batta, K. and Rajput, H., 2021. Chemical and Phytochemical properties of Fresh and Dry Kadam(Neolamarckia cadamba) Leaves. Chem. Sci. Rev. Lett, 10(39), pp.330-335.
[3] Khandelwal, V. and Choudhary, P.K., 2020. Immunomodulating potential of Neolamarckia cadamba (Roxb.) Bark extract. Journal of Pure and Applied Microbiology.
[4] Khandelwal, V. and Choudhary, P.K., 2022. Efficacy of hydro-methanolic extract of Neolamarckia cadamba bark over hematological& biochemical parameters of Wistar albino rats and against microorganisms. Indian Journal of Traditional Knowledge (IJTK), 21(2), pp.263- 268.
[5] Mishra, A., Maurya, S.K., Singh, A., Siddique, H., Samanta, S.K. and Mishra, N., 2023. Neolamarckia cadamba (Roxb.) Bosser (Rubiaceae) extracts: promising prospects for anticancerand antibacterial potential through in vitro and in silico studies. Medical Oncology, 40(3), p.99.
[6] Okolie, O.D., Manduna, I. and Mashele, S., 2019. Phytochemical analysis of Asparagus africanus root extracts. Journal of Pharmacy and Pharmacology, 7(7).
[7] Pandey A, Chauhan AS, Haware DJ, Negi PS. Proximate and mineral composition of Kadamba (Neolamarckia cadamba) fruit and its use in the development ofnutraceutical enriched beverage.J Food Sci

Technol. 2018 Oct;55(10):4330-4336.doi: 10.1007/s13197-018-3382-9. Epub 2018Aug 24. PMID: 30228432; PMCID:PMC6133846.

[8] Pandey A, Negi PS. Traditional uses, phytochemistry and pharmacological properties of Neolamarckia cadamba: A review. J Ethnopharmacol. 2016 Apr 2;181:118-35. doi: 10.1016/j.jep.2016.01.036. Epub 2016 Jan 25. PMID:26821190.

[9] Sakthivel, M., Kalaiselvi, C., Jothimanivannan, C., Kalaiyarasan, V., Tamilselvan, J. and Varma, S.S., 2022. Pharmacological activities of Neolamarckia Cadamba -A Review.

[10] Singh, Manish & Kumar, Dr & Singh, Hukum & Kumar, Amit & Kumar, Abhishek & Kumar,Rahul. (2023). Neolamarckia cadamba: A Comprehensive review on its Physiological, Ecological, Phytochemical and Pharmacological Perspectives. Ecology, Environment and Conservation. 29. 241-250.10.53550/EEC. 2023.v29i02s.042.

[11] Yuan, H.L., Zhao, Y.L., Qin, X.J., Liu, Y.P., Yu, H.F., Zhu, P.F., Jin, Q., Yang, X.W. and Luo, X.D., 2020. Anti-inflammatory and analgesic activities of Neolamarckia cadamba and its bioactive monoterpenoid indole alkaloids. Journal of ethnopharmacology, 260, p.11310

A Crosstalk of PINK1-Parkin Pathway and Mitochondrial Mitophagy Pathway in the Parkinson's Disorder: A Brief Review

Sakshi Pandey
Department of Medical Microbiology
Kanpur Institute of Higher Education
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Deepak Verma*
Department of Medical Microbiology
Kanpur Institute of Higher Education
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Deepak Verma
Email Id: dverma1511@gmail.com

ABSTRACT

In living organisms, the mitophagy is a crucial cellular process that selectively rectifies the damaged/dysfunctional mitochondria, playing a vital role in maintaining mitochondrial quality criteria management and thereby the overall cellular energy balance. Mitophagy is well known cellular biomarker in various neuropsychiatric and neurodegenerative disorders. The most prevalence movement-baseddisorder Parkinson's disease (PD) is found to outcome of mitophagy, given its potential implications for the early disease's development. Studies revealed the PINK1/Parkin pathway is also key regulator for mitophagy pathway. It is well reported that during stress and other related conditions, PINK1 activates Parkin protein through phosphorylation and as results, the activated Parkin ubiquitinates damaged mitochondria, serving as a signal for their recognition and engulfment by autophagosomes, ultimately leading to their degradation. Unfortunately, the precise role of the PINK1-Parkin pathway in PD remains incompletely understood. So, in our this short review, author tries to aggregates the different results of studies using animal models and genetic studies involving the physiological role of PINK1 and mitophagy in respect of the PD. Author analyzed that Parkin have not shown significant phenotypic changes, and the physiological regulation of mitophagy in various tissues seems largely unaffected by the inactivation of this pathway. In conclusion, while the PINK1/Parkin pathway is recognized as a crucial player in mitophagy, and its dysregulation may contribute to PD, the specific mechanisms and the extent of its involvement in the disease remain subjects of ongoing investigation in near future.

Keywords: *Mitophagy, PINK1, Parkin, Parkinson's Disorder, Neurodegeneration, ubiquitination*

1. Introduction

Parkinson's disease [PD] is behind Alzheimer's in neurodegenerative disease ofprogressive brain disease among advancing ages of 60 years or above in humans[1]. It is a movement disorder that involve motor and non-motor neuron dysfunction that can lead sometimes to dementia afterwards. In general, symptoms of PD aretremor and rigidity and most commonly difficulty in normal movement(bradykinesis) and postural instability[2]. The 2% prevalence rate and late commencement for the disorder becomes its complicated etiology. Anatomically PD is characterized by the dopaminergic neuro-dysfunction of in the substantia nigra region of mid-brain[3]. As a result, in the mid-brain region, specially known as substantia nigra, less or no dopamine neurotransmitter is available among neurons for communication in brain[4]. According to molecular biology, protein aggregates in form of insoluble Lewy bodies are present within the neurons[5]. The onset of PD from the complex interaction and cooperation of genetic, epigenetic and environmental effects.

Approximately one-sixth of people with disease have a family history in case of PD[6]. More than hundred genes are involved in the pathogenesis of PD both directly and indirectly. And among them mutations at DNA and RNA level in LRRK2, PARK7, PINK1 and SNCA genes are common important etiological factors and well studies[7].It has been seen in various genetic studies that Parkin and PINK1 genes are associated with mitophagy in respect of PD and other neurobehavioral diseases [8]. Exposure to industrial toxic chemicals, heavy metals and age, sex, stress and modern lifestyle participate in the pathology of the disorder[9]. At cellular level, imbalance in free radicals and brain injury inflammation contribute the pathophysiology of the disorder. It is well established that one of the important cell organelle mitochondria regulate the free radicalsmetabolism. Hence, mitochondrial dysfunction including the mitophagy, mitochondrial fission and fusion are cardinal indicator seen in the disorder[10].

Mitophagy plays a crucial role in maintaining mitochondrial quality control and is essential for the overall health of neurons, including dopaminergic neurons affected in Parkinson's disease[11]. Several genetic mutations associated with Parkinson's disease are linked to genes (PINK1 and Parkin) involved in the regulation of mitophagy[12]. Mutations can disrupt the normal process of mitophagy, leading to the accumulation of damaged and non-functioning mitochondria in neurons. Let summarize the PINK1-Parkin pathway as the first step is the accumulation of PINK1 (PTEN-induced kinase 1) protein on the exterior mitochondrial membrane that recruits Parkin, an E3 ubiquitin ligase enzyme for ubiquitination step[13]. The protein Parkin actively encourages the ubiquitination of various mitochondrial proteins, marking the damaged mitochondria for degradation. The further last step is the reorganization of ubiquitinated mitochondria by autophagosomes, that engulf and transport cellular components to fuse with lysosomes leading to the degradation of the damaged, non-functioning mitochondria and recycling of their components[14].

When this process is disrupted, damaged mitochondria can accumulate in cells, contributing to oxidative stress, energy deficits, and ultimately neuronal dysfunction[15]. In the context of Parkinson's disease and other neurodegenerative diseases, the failure of mitophagy may be a contributing factor to the degeneration of dopaminergic neurons[10]. To understanding the molecular mechanisms of mitophagy and its role in neurodegenerative diseases like Parkinson's is an active area of research, as it may provide insights into potential therapeutic targets for treating or slowing the progression of such disorders. Therefore, in this very brief review authors want to emphasize the PINK1-Parkin pathway in respect to PD with recent updates available. The author also describes here the biochemical signaling pathway involving the mitophagy during the pathophysiology of PD. To understand the initial cross talk between PINK1-Parkin pathway and mitochondrial mitophagy in respect of PD the authors taken data and results from the NCBI database starting from year 2010 to till now (2014). This study may be the first step to reveal quality control mechanism provided by mitochondria in cellular homeostasis and may be provide very new approach to possible treatment of PD and other related neurodegenerative diseases.

2. Pink1

In the living beings it is well documented that PINK1-Parkin pathway plays the most importantpathway to control quality as the removal of damaged or dysfunctional mitochondria from the cell. Mitochondria is a vital cell organelle providing the cells its currency for their needs [16]. Characteristic to eukaryotic cells, these double-walled cell organelles maintain and establish homeostasis by removing their damaged cells via mitochondrial autophagy, commonly termed mitophagy, which is the process of eliminating damaged mitochondria that may cause cellular abnormalities or death [17].

A protein kinase, PINK1 is synthesized in the cytosol and targeted specifically to the mitochondria. Because this is a kinase protein, it is cleaved by proteases, leading to its degradation. When the cell is healthy this kinase imported, cleaved, and rapidly degraded. During mitochondrial damage due to whatever causes the import of PINK1 is disrupted, preventing its cleavage and degradation[12]. As a result, its numbers are increased on the outer mitochondrial membrane of damaged mitochondria.

PINK1 is a member of serine/threonine kinase with a molecular weight of approximately 63kDa that consists 581 amino acid residues. Mutation in this causes PD of autosomal recessive type. The sparking difference between PD in this case is the early onset of disease, which is around 30 years. A large part of the mutation of this gene is in the kinase domain, which relates to its importance in PD pathogenesis [18].

3. Parkin

The next important step is the recruitment of Parkin through PINK1. Parkin is a kind of E3 class of ubiquitin ligase, which added to the damaged mitochondria[19]. Parkin is normally found in the cytoplasm, and its translocation to the mitochondria is a key step in the pathway known as Ubiquitination.Moreover, when there is a reduction of mitochondrial membrane potential ($\Delta\Psi m$), most of kinase, specially PINK1 accumulates on the outer mitochondrial surface and recruits Parkin from the cytosol to the mitochondria[20]. During ubiquitination small proteins such as Parkin involve the attachment to the target proteins which plays a critical role in different cellular functions, including protein degradation, signal transduction, DNA repair, and cell cycle control[21]. The ubiquitination is a highly regulated and dynamic process that helps maintain cellular homeostasis. Once recruited, Parkin ubiquitinates mitochondrial proteins, marking the damaged mitochondria for further degradation[22].

Ubiquitination and phosphorylation are the highlights of the pathogenesis of PD [23]. This process is crucial for maintaining mitochondrial quality control and neuronal well-being. However, mutations in either PINK1 or Parkin impair this process, leading to the accumulation of dysfunctional mitochondria and potentially contributing to the pathogenesis of PD [24]. The ubiquitinated mitochondria are recognized by autophagosomes, which engulf and transport the damaged mitochondria to lysosomes for degradation.Through the process of mitophagy[25]. The ubiquitin-conjugate system is essential for maintaining protein quality, regulating various cellular processes, and ensuring proper cell function. Dysregulation of this system can contribute to the development of diseases, including neurodegenerative disorders and certain types of cancer.

4. PINK1-Parkin Pathway in PD

PINK1 is responsible for recruiting Parkin to the depolarized mitochondrial membrane and Parking furthers the autophagic removal [26]. The accumulation of dysfunctional mitochondria within the cell occur whenever mutations were observed in PINK1 gene[27]. Dysfunctional mitochondria can produce excessive reactive oxygen species (ROS) as a byproduct of impaired electron transport chain function. ROS can cause oxidative damage to biomolecule cellular components, including proteins, lipids, and DNA, leading to cellular dysfunction and damage [28]. Dysfunctional mitochondria are also less efficient at producing adenosine triphosphate (ATP), the primary energy currency of the cell. This can lead to impaired energy metabolism and cellular dysfunction, particularly in energy-demanding cells such as neurons [29]. The accumulation of dysfunctional mitochondria, excessive ROS production, and impaired energy metabolism can collectively contribute to neuronal dysfunction and degeneration, particularly in dopaminergic neurons in the substantia nigra, a hallmark of PD [28]. Consequences of these changes in PD can be energy depletion, increased oxidative stress, calcium dysregulation, and inflammation [30].

5. Crosstalk between PINK1-Parkin Pathway and Mitophagy

PINK1 and mitophagy work together to maintain healthy mitochondria. PINK1 initiates mitophagy, a process where the cell removes damaged mitochondria [31]. Parkin tags damage mitochondria with ubiquitin markers, labeling them for removal [32]. These flags are recognized by specialized cellular machinery and engulf the damaged mitochondria into autophagosomes and then transport them to lysosomes for degradation.

This intriguing relationship and communication between PINK1 and mitophagy is the basis of crosstalk. A healthy and normal case of these two results in the proper functioning of mitochondria and the normal degradation of damaged mitochondria [33], but in the case of PD the crosstalk between these two is disrupted and that leads to the accumulation of damaged, dysfunctional mitochondria contributing to neurodegeneration [32].

The disrupted crosstalk can have some degenerative effects. Damaged mitochondria will not produce sufficient ATP and hence the neurons will not have the needed energy for their proper functioning, it will produce reactive oxygen species, leading to necrosis [34]. The debris product of damaged mitochondria can cause inflammation that may further incite neurodegeneration [35]. Impaired mitophagy can lead to the accumulation of unfolded and misfolded proteins like alpha-synuclein, which is among the defining attributes of PD [36].

6. Conclusion

The interplay between PINK1 and mitophagy pathway plays a crucial role in maintaining the integrity of mitochondria. Specifically, PINK1 initiates mitophagy by recruiting Parkin to damaged mitochondria, which are then dismantled through autophagy. This critical process serves to eliminate dysfunctional mitochondria and promote cellular stability. However, mutations in PINK1, which are commonly observed in Parkinson's disease, can impede this process, resulting in the accumulation of damaged mitochondria and contributing to the progression of the disease.

Researchers are continuously exploring the crosstalk to understand its complexities to hopefully one day be able to deal with the consequences of disrupted crosstalk like - developing antioxidants to counter oxidative stress, target inflammatory pathways associated with mitochondrial dysfunction, and hence be able to counter PD to as much extent as possible.

References

[1] Lotharius, J. and P. Brundin, Pathogenesis of parkinson's disease: dopamine, vesicles and α-synuclein. Nature Reviews Neuroscience,. 3(12): p. 932-942. (2002).
[2] MacMahon Copas, A.N., et al., The Pathogenesis of Parkinson's Disease: A Complex Interplay Between Astrocytes, Microglia, and T Lymphocytes? Frontiers in Neurology,. 12. (2021).
[3] German, D.C., et al., Midbrain dopaminergic cell loss in Parkinson's disease: computer visualization. Ann Neurol,. 26(4): p. 507-14. (1989).
[4] Emamzadeh, F.N. and A. Surguchov, Parkinson's Disease: Biomarkers, Treatment, and Risk Factors. Front Neurosci,. 12: p. 612. (2018).
[5] Stefanis, L., alpha-Synuclein in Parkinson's disease. Cold Spring HarbPerspect Med, 2(2): p. a009399 (2012).
[6] Klein, C. and A. Westenberger, Genetics of Parkinson's disease. Cold Spring HarbPerspectMed,. 2(1): p. a008888. (2012).
[7] Nuytemans, K., et al., Genetic etiology of Parkinson disease associated with mutations in the SNCA, PARK2, PINK1, PARK7, and LRRK2 genes: a mutation update. Hum Mutat,. 31(7): p. 763-80 (2010).
[8] Chen, Y. and G.W. Dorn, 2nd, PINK1-phosphorylated mitofusin 2 is a Parkin receptor for culling damaged mitochondria. Science,. 340(6131): p. 471-5 (2013).
[9] Belvisi, D., et al., Risk factors of Parkinson disease: Simultaneous assessment, interactions, and etiologic subtypes. Neurology,. 95(18): p. e2500-e2508 (2020).
[10] Liu, J., et al., Mitophagy in Parkinson's Disease: From Pathogenesis to Treatment. Cells,. 8(7) (2019).
[11] Dauer, W. and S. Przedborski, Parkinson's disease: mechanisms and models. Neuron,. 39(6): p. 889-909 (2003).
[12] Pickrell, A.M. and R.J. Youle, The roles of PINK1, parkin, and mitochondrial fidelity in Parkinson's disease. Neuron,. 85(2): p. 257-273 (2015).
[13] Jones, R., The roles of PINK1 and Parkin in Parkinson's disease. PLoSbiology,. 8(1): p. e1000299 (2010).
[14] Lu, J., M. Wu, and Z. Yue, Autophagy and Parkinson's disease. Autophagy: biology and diseases: clinical science,: p. 21-51 (2020).
[15] Bose, A. and M.F. Beal, Mitochondrial dysfunction in Parkinson's disease. Journal of neurochemistry,. 139: p. 216-231 (2016).
[16] Nicholls, D.G., Mitochondrial ion circuits. Essays in biochemistry,. 47: p. 25-35 (2010).
[17] Novak, I., Mitophagy: a complex mechanism of mitochondrial removal. Antioxid Redox Signal,. 17(5): p. 794-802 (2012).
[18] Goncalves, F.B. and V.A. Morais, PINK1: A Bridge between Mitochondria and Parkinson's Disease. Life (Basel),. 11(5) (2021).
[19] Mizuno, Y., et al., Parkin and Parkinson's disease. Current opinion in neurology,. 14(4): p. 477-48 (2001).

[20] Hu, Q. and G. Wang, Mitochondrial dysfunction in Parkinson’s disease. Translational neurodegeneration,. 5(1): p. 1-8 (2016).
[21] Timmons, S., et al., Akt signal transduction dysfunction in Parkinson's disease. Neuroscience letters,. 467(1): p. 30-35 (2009).
[22] Winklhofer, K.F. and C. Haass, Mitochondrial dysfunction in Parkinson's disease. Biochimica et Biophysica Acta (BBA)-Molecular Basis of Disease,. 1802(1): p. 29-44 (2010).
[23] Matsuda, N. and K. Tanaka, Uncovering the roles of PINK1 and parkin in mitophagy. Autophagy,. 6(7): p. 952-4 (2010).
[24] Vives-Bauza, C., et al., PINK1-dependent recruitment of Parkin to mitochondria in mitophagy. Proc Natl Acad Sci U S A,. 107(1): p. 378-83 (2010).
[25] Dehay, B., et al., Lysosomal impairment in Parkinson's disease. Movement Disorders,. 28(6): p. 725-732 (2013).
[26] Springer, W. and P.J. Kahle, Regulation of PINK1-Parkin-mediated mitophagy. Autophagy,. 7(3): p. 266-78 (2011).
[27] Wang, Z., et al., Outlook of PINK1/Parkin signaling in molecular etiology of Parkinson's disease, with insights into Pink1 knockout models. ZoolRes,. 44(3): p. 559-576 (2023).
[28] Zhang, Y., V.L. Dawson, and T.M. Dawson, Oxidative stress and genetics in the pathogenesis of Parkinson's disease. NeurobiolDis,. 7(4): p. 240-50 (2000).
[29] Cobb, C.A. and M.P. Cole, Oxidative and nitrative stress in neurodegeneration. NeurobiolDis,. 84: p. 4-21 (2015).
[30] Park, J.S., R.L. Davis, and C.M. Sue, Mitochondrial Dysfunction in Parkinson's Disease: New Mechanistic Insights and Therapeutic Perspectives. Curr Neurol NeurosciRep,. 18(5): p. 21 (2018).
[31] Lazarou, M., et al., The ubiquitin kinase PINK1 recruits autophagy receptors to induce mitophagy. Nature,. 524(7565): p. 309-314 (2015).
[32] Deas, E., N.W. Wood, and H. Plun-Favreau, Mitophagy and Parkinson's disease: the PINK1-parkin link. BiochimBiophys Acta,1813(4): p. 623-33 (2011).
[33] Eldeeb, M.A., et al., Mitochondrial quality control in health and in Parkinson's disease. Physiol Rev, 102(4): p. 1721-1755 (2022).
[34] Moon, H.E. and S.H. Paek, Mitochondrial Dysfunction in Parkinson's Disease. Exp Neurobiol, 24(2): p. 103-16 (2015).
[35] Ordonez, D.G., M.K. Lee, and M.B. Feany, alpha-synuclein Induces Mitochondrial Dysfunction through Spectrin and the Actin Cytoskeleton. Neuron,97(1): p. 108-124 e6 (2018).
[36] Ludtmann, M.H.R. and A.Y. Abramov, Mitochondrial calcium imbalance in Parkinson's disease. Neurosci Lett, 663: p. 86-90 (2018).

Computational Studies for Identification of Novel Inhibitor against MAPK1 (Mitogen Activated Protein Kinase 1)

Aryan Singh
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, UP, India.

Anshul Nigam*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, UP, India.

***Corresponding Author**
Anshul Nigam
Email Id: anshul.nigam@kit.ac.in

ABSTRACT

MAPK1, abbreviated for mitogen-activated protein kinase 1, is a critical enzyme in the Mitogen-Activated Protein Kinase signalling pathway, a conserved pathway involved in regulating diverse cellular processes like cell growth, proliferation, differentiation, and survival. MAPK1 transmits signals from various extracellular stimuli influencing cellular responses. It's malfunctioning results in uncontrolled cell proliferation, resistance to apoptosis, angiogenesis and metastasis, inflammation and tumour microenvironment leading to diverse cancers like melanoma, colorectal, lung, head & neck, breast, ovarian and pancreatic. Presently kaempferol, vemurafenib, dabrafenib are available therapeutics for its treatment. Most of the MAPK1 inhibitor are active against specific type of cancer, and cause wide range of side effects like rashes, fatigue, & lung issues. Therefore, there is need for search of novel inhibitor to treat cancers in-volving MAPK1 malfunctioning. We have computationally screened 15 compounds from traditional and marine origin. The result obtained were compared with known drug Kaempferol whose binding free energy was found to be -7.8 Kcal/mol more than Withaferin A (-9.1 Kcal/mol). Therefore, we recommend Withaferin A for bettering treatment of cancers involving MAPK1pathway.

Keywords: MAPK1, Kaempferol, Withaferin, Computational Screening.

1. Introduction

Mitogen-Activated Protein Kinase 1 (MAPK1), a pivotal enzyme in the MAPK signaling pathway, shows important role in cellular life. It orchestrates vital processes like growth, proliferation, and differentiation, but its malfunctioning, culminating into diverse cancers [1]. Uncontrolled cell division, apoptosis resistance, and tumor spread – these are the hallmarks of a MAPK1, demanding novel therapeutic interventions. Current treatment options like kaempferol, vemurafenib, and dabrafenib, while offering a glimmer of hope, often target specific cancers and come with a baggage of side effects [2]. The quest for more effective and versatile MAPK1 inhibitor intensifies. This research embarks on a computational approach, leveraging the power of AutoDock Vina to screen 15 promising compounds, culled from the wisdom of traditional and marine-derived medicines.AutoDock Vina, a computational software that allows us to compare between MAPK1 and our selected molecules, revealing the secrets of their binding affinity. Its computational lens resolves the molecular waltz with unmatched precision, unveiling the unique choreography that dictates binding strength and potential effectiveness. Our aim is to unearth novel inhibitors that bind to MAPK1 with unmatched affinity, surpassing even the established champion, kaempferol. Through meticulous docking, detailed analyses of ligand-protein interactions, and rigorous in vitro validation, we delve deeper into the intricacies of these novel compounds, unlocking their secrets to effectively disarm the MAPK1.This pursuit delves beyond immediate therapeutic potential. It transcends the boundaries of conventional medicine, exploring the untapped potential of nature's pharmacopoeia. It illuminates the power of computational tools in accelerating drug discovery, paving the way for a future where personalized, safe, and effective cancer therapies become a reality. Structure of Kaempferol and Withaferin A are shown in Fig 1.

B A

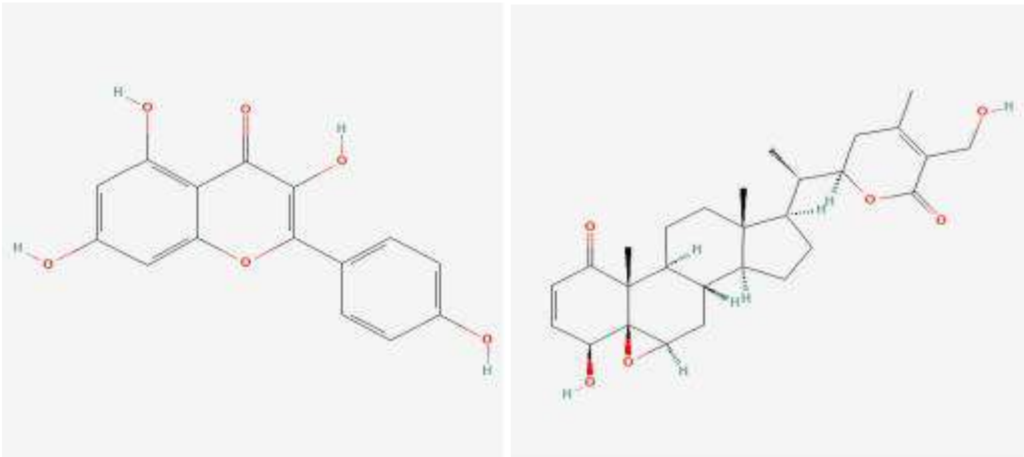

Figure 1: A represent structure of Kaempferol, B represents structure of Withaferin A

1.1 Mitogen Activated Protein Kinase 1 Pathway

MAPK1 signalling pathway, also known as the Extracellular signal-regulated kinase (ERK) pathway, is a crucial intracellular signal transduction cascade mediating cellular responses to various stimuli. Upon extracellular ligand binding to specific receptors, Ras GTPases are activated, triggering a phosphorylation cascade through Raf (MAP3K), MEK (MAP2K), and finally MAPK1. Active MAPK1 phosphorylates cytoplasmic targets and translocases to the nucleus, regulating gene expression. Phosphatases and scaffolding proteins tightly control pathway activity[3]. Deregulation of the MAPK1 pathway is implicated in numerous cancers.

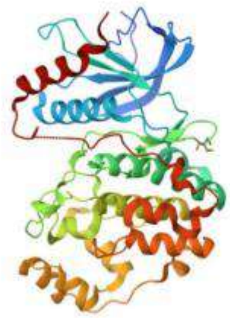

Figure 2: Structure of MAPK1

2. Methodology

2.1 Dataset Preparation

This research uncovers novel MAPK1 inhibitors began with constructing a high-quality dataset. We retrieved the crystal structure of MAPK1 (PDB ID: 4FV1) from the RCSB Protein Data Bank [4]we meticulously curated a set of 15 candidate drug-like molecules from PubChem. These molecules were handpicked based on their therapeutic relevance to cancer and adherence to drug-likeness criteria like Lipinski's rule of five, ensuring potential oral bioavailability and good membrane permeability. Then we dock them with computation tool to determine their binding affinity.

2.2 Ligand Preparation

Ligand preparation for docking was performed using UCSF Chimera software. The initial ligand structures in SDF format were first converted to PDB format within Chimera. Subsequently, AutoDock Vina was employed to further convert the PDB files into the PDBQT format, which is specifically designed for docking calculations. To accurately model ligand flexibility during docking, all rotatable bonds within the ligands were systematically identified and enabled for conformational exploration.

2.3 Protein Preparation

We prepared the MAPK1 crystal structure (PDB ID: 4FV1) for its encounter with potential inhibitors using AutoDock Vina version: AutoDock_vina_1_1_2.(https://vina.scripps.edu/) [5]. This crucial step involves:

Adding Hydrogens: We equipped the protein with its missing hydrogen atoms, mimicking its physiological state and ensuring accurate energy calculations during docking.

Assigning Partial Charges: Each atom within the protein received appropriate partial charges, reflecting its electron distribution, and facilitating realistic intermolecular interactions with ligands.

Merging Non-Polar Hydrogens: Non-polar hydrogens like those in methyl groups were merged with their parent carbon atoms, simplifying the system without compromising docking accuracy.

Defining the Grid Box: We pinpointed the key region where inhibitors bind, typically based on known ligand interactions or functional residues, guiding the docking search to focus on relevant areas.

Removing Water Molecules: Any residual water molecules within the binding pocket were carefully removed to prevent interference with ligand binding and ensure precise docking poses.

2.4 Protein–Lig and Docking

Auto Dock Vina and the command prompt within a Windows OS, helps to computationally assess the binding affinities between single-chain receptors and ligands. Docking simulations were initiated, generating output detailing predicted binding poses and binding energies expressed in kcal/mol.

3. Result and Discussion

3.1 Interaction between MAPK1 and Kaempferol

Kaempferol is a natural flavanol, a type of flavonoid found in a wide variety of plants and plant-derived foods. It belongs to the subclass of 3-hydroxyflavones and possesses a characteristic yellow color. Its chemical formula is $C_{15}H_{10}O_6$, and its molar mass is 286.23 g/mol.Kaempferol have potential in inhibiting prostate cancer cell growth and inducing apoptosis, suggesting its use as a chemo preventive agent [6]. This protein MAPK1 are an enzyme that play crucial roles in cell signaling pathways, regulating various cellular processes such as proliferation, differentiation, survival, apoptosis, and stress response. It’s malfunctioning causes various cancers. Kaempferol when binds to MAPK1 (PDB ID: 4FV1) gives binding free energy of -7.8 Kcal/mol and its binding residues are**V37, I29, A50, L154**.

3.2 Interaction between MAPK1 and Withaferin A

Withaferin A (WFA) is a steroidal lactone compound found in plant, Ashwagandha (*Withania somnifera*). It belongs to a class of chemicals called withanolides. This potent steroidal lactone boasts antioxidant, anti-inflammatory, and anticancer properties. Studies suggest it can shield cells from free radical damage, quell inflammation fueling chronic diseases, and even inhibit tumor growth [7]. Withaferin A when binds to MAPK1 gives binding free energy of -9.1 Kcal/mol and its binding residues are **N156, H123, Q130, F127**(Fig 3).

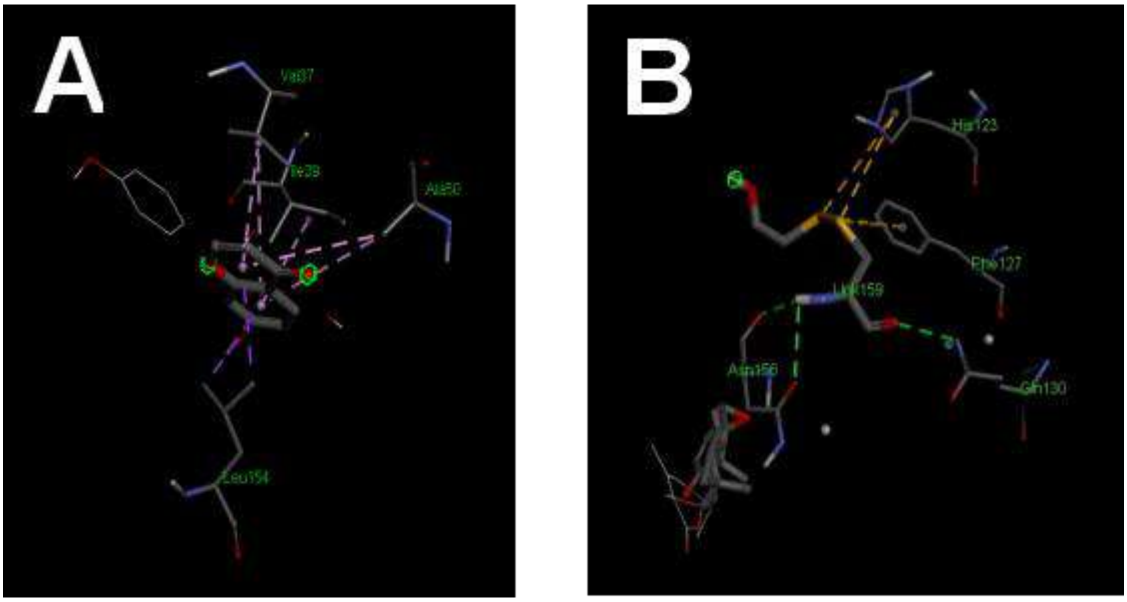

Figure 3: A represents ligand interaction of Kaempferol and B represents ligand interaction of Withaferin A.

Since, Kaempferol and Withaferin A are known to display anticancerous property against cancers. we conducted a virtual screening of 15 compounds sourced from PubChem against the protein target 4FV1. This approach aimed to identify potential novel lead compounds with promising anticancer activity. The following table 1 summarizes the results of the screening, showcasing the name, binding free energy, and natural source of each compound.

Table 1: List of screened compounds for identification of best inhibitor for targeted Protein

Sl. No	Compound Name	Binding Affinity in Kcal/mol	Nature of Compound
1	**Kaempferol**	**-7.8**	**Flavonoid [8]**
2	Curcumin	-6.9	Polyphenol [9]
3	Gingerol	-6.1	Phenolic [10]
4	Cucurbitacin B	-7.5	Steroid [11]
5	Piperine	-7.5	Alkaloid [12]
6	Daturataturin A	-8.4	Tropane alkaloid [13]
7	Sorbicillin	-6.9	Lignin
8	Sorbicillactone B	-6.2	Lignin
9	Cytarabine	-6.2	Nucleotide analog
10	Cryptophycin	-8.6	Macrolide

11	Burgine	-5.2	Pyrrolophenanthridine alkaloid
12	Sansalvamide A	-8.4	Diketopiperazine
13	Fucoidan	-5.5	Polysaccharide
14	Phloroglucinol	-4.6	Phenol
15	**Withaferin A**	**-9.1**	**Withanolide[14]**

4. Conclusion

This research employed computational studies to explore novel inhibitors for MAPK1. Among the 15 screened compounds, Withaferin A, a natural steroidal lactone found in Ashwagandha (Withania somnifera), emerged as the most promising candidate. It exhibited a superior binding affinity (-9.1 kcal/mol) compared to the established agent Kaempferol (-7.8 kcal/mol). Inother investigations Withaferin A was found tobe active anticancer agent in variety of cancers [7].These findings suggest that Withaferin A warrants further investigation as a potential therapeutic agent for cancers involving MAPK1 dysfunction. Its natural origin and established anticancer properties make it a promising candidate for further research and development.Withaferin A, a natural wonder from the Ayurvedic treasure trove, emerges as a potential frontrunner, boasting a binding energy that outshines kaempferol.

Future directions include in vitro and in vivo studies to validate the findings and assess the therapeutic efficacy of Withaferin A against MAPK1-driven cancers. Additionally, detailed analyses of ligand-protein interactions and molecular dynamics simulations can provide deeper insights into the binding mechanism and potential off-target effects. Finally, exploration of Withaferin A derivatives could lead to the development of even more potent and selective MAPK1 inhibitors with improved pharmacological profiles.This research opens avenues for further exploration of natural products like Withaferin A as valuable sources of novel cancer therapeutics. The integration of computational approaches with experimental validation holds immense promise for accelerating drug discovery and paving the way for personalized, effective cancer treatments.

References

[1] Johnson GL, Lapadat C. Mitogen-activated protein kinase signaling pathways: an intricate network controlling inflammation and metabolism. Pharmocol Rev.;62(3):55-89 (2010).
[2] Welsh SJ, Corrie PG. Management of BRAF and MEK inhibitor toxicities in patients with metastatic melanoma. Ther Adv Med Oncol. Mar;7(2):122-36 (2015).
[3] Guo YJ, Pan WW, Liu SB, Shen ZF, Xu Y, Hu LL. ERK/MAPK signalling pathway and tumorigenesis. Exp Ther Med. Mar;19(3):1997-(2007).
[4] https://www.rcsb.org/structure/4FV1
[5] https://vina.scripps.edu/downloads/
[6] Lee, H.S.; Cho, H.J.; Yu, R.; Lee, K.W.; Chun, H.S.; Park, J.H.Y. Mechanisms Underlying Apoptosis-Inducing Effects of Kaempferol in HT-29 Human Colon Cancer Cells. Int. J. Mol. Sci. 15, 2722-2737 (2014).
[7] Straughn AR, Kakar SS. Withaferin A: a potential therapeutic agent against COVID-19 infection. J Ovarian Res. Jul 19;13(1):79 (2020).

[8] Bangar SP, Chaudhary V, Sharma N, Bansal V, Ozogul F, Lorenzo JM. Kaempferol: A flavonoid with wider biological activities and its applications. Crit Rev Food Sci Nutr.;63(28):9580-9604 (2023).

[9] Lopresti AL. The Problem of Curcumin and Its Bioavailability: Could Its Gastrointestinal Influence Contribute to Its Overall Health-Enhancing Effects? Adv Nutr. Jan 1;9(1):41-50 (2018).

[10] Nikkhah Bodagh M, Maleki I, Hekmatdoost A. Ginger in gastrointestinal disorders: A systematic review of clinical trials. Food Sci Nutr. Nov 5;7(1):96-108 (2018).

[11] Alghasham AA. Cucurbitacins - a promising target for cancer therapy. Int J Health Sci (Qassim). Jan;7(1):77-89 (2013).

[12] Soutar DA, Doucette CD, Liwski RS, Hoskin DW. Piperine, a Pungent Alkaloid from Black Pepper, Inhibits B Lymphocyte Activation and Effector Functions. Phytother Res. Mar;31(3):466-474 (2017).

[13] Cinelli MA, Jones AD. Alkaloids of the Genus Datura: Review of a Rich Resource for Natural Product Discovery. Molecules. Apr 30;26(9):2629 (2021).

[14] Sultana, T.; Okla, M.K.; Ahmed, M.; Akhtar, N.; Al-Hashimi, A.; Abdelgawad, H.; Haq, I.-u.-. Withaferin A: From Ancient Remedy to Potential Drug Candidate. Molecules, 26, 769 (2021).

Synthesis and Characterization of MgO Nanoparticles Using Sol- Gel Method

Aman Pratap Singh*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology, Kanpur.

Ritu Kumari Singh
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology, Kanpur.

Anshul Nigam
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology, Kanpur.

***Corresponding Author**
Aman Pratap Singh
Email Id: aman.singh@kit.ac.in

ABSTRACT

This study explores the synthesis of magnesium oxide (MgO) nanoparticles through the sol-gel method, a versatile and widely employed technique in nanomaterial synthesis. The sol-gel process allows precise control over particle size, morphology, and composition by manipulating precursor chemistry and processing conditions. In this research, a sol-gel precursor solution was prepared using magnesium-containing compounds, followed by gelation and subsequent calcination to form MgO nanoparticles.

The investigation delves into the influence of critical synthesis parameters such as precursor concentration, reaction time, and heat treatment temperature on the characteristics of the resulting MgO nanoparticles. Structural, morphological, and compositional analyses were conducted using techniques like X-ray diffraction (XRD), and scanning electron microscopy (SEM) to comprehensively characterize the synthesized nanoparticles. The study aims to elucidate the correlations between the chosen synthesis parameters and the physical and chemical properties of the MgO nanoparticles.

The sol-gel method, owing to its simplicity and efficiency, emerges as a promising route for the controlled fabrication of MgO nanoparticles with potential applications in catalysis, sensing, and biomedical fields. This research contributes valuable insights into tailoring the properties of MgO nanoparticles through the optimization of sol-gel synthesis parameters, fostering a deeper understanding of their fundamental aspects for diverse technological applications.

Keywords: Nanoparticles, XRD, SEM.

E-ISBN: 978-93-5747-361-3

1. Introduction

Nanotechnology has emerged as a pivotal field, offering unprecedented opportunities for tailoring material properties at the nanoscale(1). Magnesium oxide (MgO) nanoparticles, owing to their unique physicochemical characteristics, have garnered significant attention for a myriad of applications, including catalysis, sensing, and biomedicine(2). The controlled synthesis of MgO nanoparticles is crucial for harnessing their full potential, and the sol-gel method stands out as a versatile and effective approach in achieving this precision(3).

The sol-gel process involves the transformation of a sol (a colloidal suspension of nanoparticles) into a gel, followed by controlled thermal treatment to obtain the desired nanomaterial(4). This methodology provides a platform for fine-tuning particle size, morphology, and crystallinity, offering distinct advantages over conventional synthetic routes(5). In the realm of MgO nanoparticles, the sol-gel method allows researchers to systematically explore and optimize synthesis parameters, influencing the structural and functional characteristics of the resulting nanoparticles(6).

In this context, this research endeavors to delve into the synthesis of MgO nanoparticles utilizing the sol-gel method. By manipulating precursor concentrations, reaction parameters, and annealing conditions, we aim to elucidate the intricate relationships between these variables and the resulting nanoparticle properties(7). Through a comprehensive characterization employing techniques such as X-ray diffraction (XRD), scanning electron microscopy (SEM), we seek to unravel the structural and morphological intricacies of the synthesized MgO nanoparticles.

This study not only contributes to the expanding knowledge base on MgO nanoparticles but also underscores the significance of the sol-gel method in tailoring nanomaterials for diverse applications. The insights gained from this research are poised to advance the understanding of MgO nanoparticle synthesis and pave the way for innovative applications in various technological domains.

2. Materials & Methods

The initial substances utilized in the synthesis of MgO nanoparticles are magnesium nitrate hexahydrate ($Mg(NO_3)^2.6H_2O$) and sodium hydroxide (NaOH), which were procured from Hi-Media Pvt. Ltd. All chemicals employed in the process were of exceptional purity and were utilized in their original form.

To prepare the NP, a 0.5M solution of magnesium nitrate hexahydrate and a 5.0M solution of sodium hydroxide were meticulously prepared using deionized (DI) water(8). The sodium hydroxide solution was methodically introduced into the magnesium nitrate hexahydrate solution with continuous stirring. The amalgamation underwent ultrasonication to ensure a uniform mixture. Subsequently, the concoction underwent filtration and multiple washes to eliminate soluble nitrites, followed by additional washing with methanol to prevent agglomeration. The resulting precipitate constituted magnesium hydroxide, which, upon further processing, was transformed into magnesium oxide through calcination at 340°C for a duration of 1 day (9).

Mg (NO3) + 2 NaOH 2NaNO3 + Mg (OH) 2

Total ionic equation:
Mg + 2 NO3 + 2 Na + 2 OH 2Na + 2 NO3 + Mg (OH) 2
Mg (OH) 2 MgO + H2O {T= 340 o C}

3. Characterization

Morphological Analysis: The nanoparticles morphology and elemental composition were assessed using a field-emission scanning electron microscope (Ultra plus-Carl Zeiss and FEI Quanta 200F). This instrument was equipped with an energy dispersive X-Ray (EDX) detector, operating at an accelerating voltage ranging from 15 to 20 kilovolts.

Structural Analysis: X-Ray Diffraction (XRD) analysis was conducted using the Bruker AXS D8 Advance powder X-ray diffractometer, employing Cu-Kα radiation with a wavelength (λ) of 1.5406 angstroms. The scans were performed within the 20–90-degree range at a rate of 0.5 degrees per minute. The resulting XRD patterns were thoroughly examined and indexed using the Expert Highscore software.

4. Results & Discussions

XRD Analysis

XRD analysis of obtained nanoparticles was carried out, the peaks were indexed corresponding to the 2-theta value of 38^o (111), one large peak near 41.8^o (200), 61^o (202), 75^o (211) and 79.9^o (222) represents the lattices of cubical structure which represents MgO nanoparticles have been synthesized.

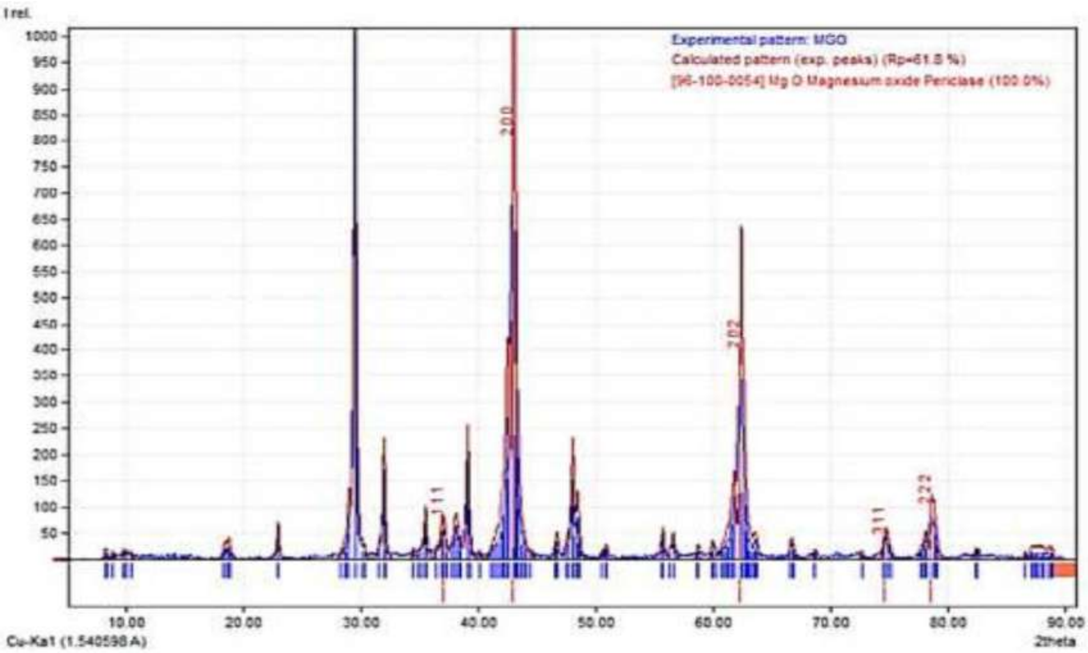

Figure 1: XRD data of prepared MgO nanoparticles showing cubical lattices

The XRD pattern played a crucial role in determining the average size of the crystallites composing the nanofibers. This was accomplished using the Debye Scherrer formula:

$$\tau = k\lambda / \beta\cos\Theta$$

Here, τ represents the thickness of the crystallite,λ is the wavelength of the utilized X-Ray (0.154 nm), k is a dimensionless shape factor with a value of 0.9, $\beta$is the line broadening at half the maximum intensity (FWHM), and Θ is the Bragg angle. This formula allows for the calculation of crystallite size based on XRD data.

Table 1: Crystallite size calculation using Scherrer's equation

Sr. No	2 theta (θ)	D (A^0)	I/10	EWHM	Avg. Crystallite size
1	8.14	10.8485	12.30	0.2194	37.93nm
2	8.32	10.6187	11.38	0.2194	37.93nm
3	8.80	10.0364	11.67	0.2194	37.93nm
4	9.70	9.1104	15.05	0.2194	37.93nm
5	10.00	8.8415	11.94	0.2194	37.93nm

SEM Analysis

The obtained MgO nanoparticles are calcinated at 350^o C and were ultrasonicated prior to SEM analysis, and the results are displayed which shows excellent cubical morphology, indicating cubical cell like geometry of MgO nanoparticles and the data obtained from XRD analysis confirms the results and the crystallite size of obtained nanoparticles ware in the range of 35 to 37 nm in diameter.

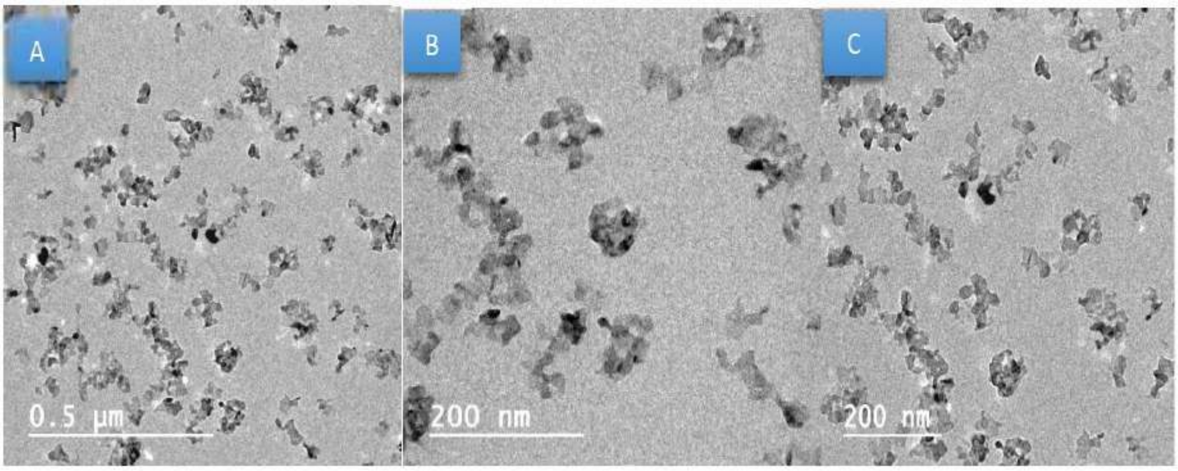

Figure 2: SEM images of prepared MgO Nanoparticles

5. Conclusion

In conclusion, the synthesis of magnesium oxide (MgO) nanoparticles using the sol-gel method has been systematically explored and investigated in this research. The study aimed to gain insights into the influence of various synthesis parameters on the structural, morphological, and functional properties of the synthesized MgO nanoparticles. The comprehensive analysis employed advanced characterization techniques, including X-ray diffraction (XRD), and scanning electron microscopy (SEM),providing a thorough understanding of the nanoscale features of the synthesized particles.

The experimental results revealed the successful synthesis of crystalline MgO nanoparticles with controlled particle sizes and morphologies. XRD analysis confirmed the formation of the desired cubic phase of MgO, while SEM imaging demonstrated the nanoscale dimensions and surface characteristics of the particles. The influence of precursor concentration, reaction time, and calcination conditions on the final nanoparticle properties was systematically investigated, contributing to the optimization of the sol-gel synthesis process.

The systematic variation of synthesis parameters allowed for the identification of key factors influencing the properties of MgO nanoparticles. The study demonstrated that the sol-gel method offers a versatile platform for tailoring the size, structure, and morphology of MgO nanoparticles, showcasing its potential for various applications in catalysis, sensing, and biomedicine.

The successful stabilization and homogenization of the gel through the addition of Polyvinylpyrrolidone (PVP) underscored the importance of stabilizer optimization in enhancing the overall quality of the synthesized MgO nanoparticles. The reproducibility of the synthesis process was confirmed through control experiments and repeated trials, affirming the reliability and consistency of the presented findings.

In summary, this research contributes valuable insights into the sol-gel synthesis of MgO nanoparticles, emphasizing the significance of systematic parameter optimization for tailoring their properties. The knowledge gained from this study not only advances the fundamental understanding of MgO nanoparticles but also holds practical implications for the development of innovative applications in nanotechnology. Future research directions may involve further exploration of functionalization techniques and the integration of MgO nanoparticles into specific devices or systems, fostering advancements in diverse technological realms.

References

[1] Dayananda D, Sarva VR, Prasad S V., Arunachalam J, Parameswaran P, Ghosh NN. Synthesis of MgO nanoparticle loaded mesoporous Al2O3 and its defluoridation study. Appl Surf Sci. 2015 Feb 28;329:1–10.

[2] Mageshwari K, Mali SS, Sathyamoorthy R, Patil PS. Template-free synthesis of MgO nanoparticles for effective photocatalytic applications. Powder Technol. 2013 Nov 1;249:456–62.

[3] Srivastava V, Sharma YC, Sillanpää M. Green synthesis of magnesium oxide nanoflower and its application for the removal of divalent metallic species from synthetic wastewater. Ceram Int. 2015 Jun 1;41(5):6702–9.

[4] Prado DC, Fernández I, Rodríguez-Páez JE. MgO nanostructures: Synthesis, characterization and tentative mechanisms of nanoparticles formation. Nano-Structures & Nano-Objects. 2020 Jul 1;23:100482.
[5] Moorthy SK, Ashok CH, Rao KV, Viswanathan C. Synthesis and Characterization of Mgo Nanoparticles by Neem Leaves through Green Method. Mater Today Proc. 2015 Jan 1;2(9):4360–8.
[6] Nguyen DTC, Dang HH, Vo DVN, Bach LG, Nguyen TD, Tran T Van. Biogenic synthesis of MgO nanoparticles from different extracts (flower, bark, leaf) of Tecoma stans (L.) and their utilization in selected organic dyes treatment. J Hazard Mater. 2021 Feb 15;404:124146.
[7] Velsankar K, Aravinth K, Ana Cláudia PS, Wang Y, Ameen F, Sudhahar S. Bio-derived synthesis of MgO nanoparticles and their anticancer and hemolytic bioactivities. Biocatal Agric Biotechnol. 2023 Oct 1;53:102870.
[8] Kumar PP, Bhatlu MLD, Sukanya K, Karthikeyan S, Jayan N. Synthesis of magnesium oxide nanoparticle by eco friendly method (green synthesis) – A review. Mater Today Proc. 2021 Jan 1;37(Part 2):3028–30.
[9] Ananda A, Ramakrishnappa T, Archana S, Reddy Yadav LS, Shilpa BM, Nagaraju G, et al. Green synthesis of MgO nanoparticles using Phyllanthus emblica for Evans blue degradation and antibacterial activity. Mater Today Proc. 2022 Jan 1;49:801–10.

AI Dreamcraft (AI Image Generator)

Yash Dubey
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.
Email Id: 201740@kit.ac.in

ABSTRACT

In the world of computers and clever tricks, our project called "AI Image Generator" does something really cool. It makes pictures from words! Using a special computer language called Python, we taught the computer to understand what we describe in words and turn it into colorful pictures. On the other hand, the presence of the AI Image Generator is enough to reap various opinions, including in the field of architecture. Therefore, the purpose of this paper is to present a review of the influences, challenges, and prospects of AI Image Generator technology in the architectural design process. The research method used is a systematic literature review by reviewing 12 scientific articles, five books, and five official websites. The results of the study explained that the AI Image Generator could provide one step forward to expand the design imagination by presenting several design alternatives with high-quality visuals. The challenge lies in the user's proficiency in providing text commands that AI programs can detect. The prospect of this program, if developed in more depth, is to become a rendering tool that can release dependence on devices with high specifications and additional editing applications.

Keywords: AI image generator, Text-to-image Architecture Influence Challenge Prospects

1. Introduction

Have you ever wondered how computers can create cool pictures all on their own? That's what our research is all about! We're exploring the world of AI Image Generation, where clever computer programs make images that look real and amazing.

Imagine a computer being a digital artist, not just copying pictures but actually coming up with new ones. That's what we're studying. This paper is like a guide to what we found out.
In our journey, we'll talk about how we taught the computer to make pictures using AI. It's like teaching it to be a creative genius! But don't worry, we'll keep it simple and fun.

Why does this matter? Well, it could change the way we make pictures for fun, in games, or even in art. Our paper is for anyone curious about how computers can be creative, just like artists.

So, let's dive into the world of smart computers and discover how they can make pictures that make our eyes light up!

2. Literature Review

Before we dive into the details of our "AI Image Generator," let's take a stroll through what others have done. This part is like looking at a big art gallery filled with computer-generated masterpieces.

a. **Early Adventures in Computer Art:** Back in the day, people started experimenting with making art using computers. It was like the first brushstrokes on a digital canvas. We'll explore how those early attempts paved the way for what we're doing now.

b. **The Rise of AI in Art:** Recently, some really smart folks started using AI to make art. One standout is DALL-E, a computer that creates images from text descriptions. We're not exactly copying DALL-E, but it's like our project's cool older sibling.

c. **Learning from Others:** Many researchers have played with the idea of teaching computers to make images from words. We'll peek into their projects, see what worked, and understand where they faced challenges. Learning from others helps us build on their successes and avoid pitfalls.

d. **Different Styles, Different Approaches:** Some artists wanted computers to mimic famous art styles. Others aimed for abstract creativity. We'll explore these different approaches to understand the wide range of possibilities when machines get artsy.

e. **Challenges in Computer Art:** Making computers creative comes with its own set of challenges. We'll look at what researchers found tricky – from getting the colors just right to making sure the computer understands complex descriptions.

f. **Beyond Pictures:** Art isn't just about pictures; it's about creativity in various forms. We'll touch on how researchers are exploring AI's role in music, writing, and more. It's like the computer's art gallery is expanding into different realms!

This literature review is like our tour guide through the history of computer art. It helps us understand what I have discovered, paving the way for our adventure with the "AI Image Generator."

3. Methodology: Teaching Computers to Make Art

Now, let's get into the exciting part – how we taught our computer to be an artist. Imagine it as a step-by-step guide on creating a digital Picasso!

a. **Setting Up the Palette (Choosing Tools):** We started by picking the right tools. In our case, we used a computer language called Python and some fancy deep learning stuff. These tools helped us tell the computer what we wanted it to do.

b. **Building the Creative Brain (Custom Neural Network):** To teach our computer to make art, we designed a special brain for it. It's like giving it a mini artist's brain made of tiny connections. We took inspiration from DALL-E but added our own touches to make it unique.

c. **Feeding the Imagination (Training Process):** Just like artists practice a lot, our computer needed training. We showed it tons of pictures and described them in words. The computer looked at these examples and learned how to create similar images from words.

d. **Adjusting the Brushes (Fine-Tuning):** Making the computer super creative required some adjustments. We played around with different settings until the computer could understand even the most imaginative descriptions and turn them into cool images.

e. **Turning Words into Pictures (Text-to-Image Synthesis):** Our project's magic lies in turning words into pictures. We created a step-by-step process where the computer reads what we write and transforms it into colorful, detailed images. It's like telling the computer, "Draw a smiling cat with a hat," and watching it come to life!

f. **Checking the Masterpieces (Evaluation Metrics):** To make sure our computer artist was doing a good job, we set up some tests. We looked at the pictures it created and compared them to what we expected. This helped us measure how creative and accurate the computer was becoming.

g. **Making It Versatile (Scalability):** We didn't want our computer artist to be a one-trick pony. We fine-tuned it to be versatile, able to create all sorts of images for different scenarios. It's like making sure our digital artist is ready for any creative challenge.

This methodology section is like our recipe for creating the "AI Image Generator." In the next part, we'll showcase the amazing images it came up with and share what we've learned on this artistic journey.

4. Results

The outcomes of our "AI Image Generator" project are nothing short of remarkable. As we fed diverse textual descriptions into the system, ranging from scenic landscapes to futuristic cityscapes, the generated images exhibited a remarkable correlation with the provided words. The comparison between our descriptions and the resulting images demonstrated not only a high level of accuracy but also a notable infusion of creativity. The AI Image Generator transcended the mere replication of input but added a unique artistic flair to the compositions, showcasing an exciting blend of understanding and imagination.

In testing the system with different artistic styles, from realistic depictions to abstract interpretations, the AI Image Generator demonstrated impressive versatility. It seamlessly adapted to various creative demands, exemplifying its potential for dynamic artistic expression. Beyond the realm of creative exploration, we delved into the practical applications of our tool. The possibilities are vast, ranging from generating visuals for games and website design to assisting artists in their creative endeavors.

However, our journey was not without challenges. We encountered obstacles along the way, each serving as a valuable lesson that contributed to refining and enhancing the capabilities of the AI Image Generator. User feedback played a pivotal role in this iterative process, providing insights into the tool's user-friendliness and potential areas for improvement. In this Results section, we not only present a collection of images but also unfold the narrative of how our "AI Image Generator" has evolved into a dynamic digital artist, poised at the intersection of technology and creativity. In the subsequent discussion, we will delve into the lessons learned and explore the broader implications of this creative endeavor.

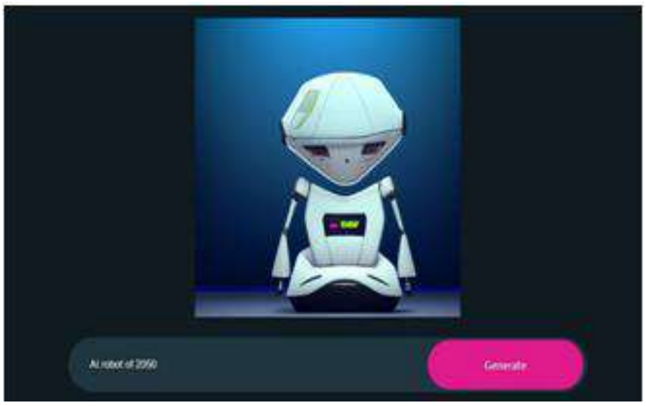

5. Discussion: Unveiling What Our AI Artist Can Do

Now that we've seen the cool pictures our "AI Image Generator" can make, let's talk about why it's a big deal. First off, it's not just copying what we say – it's adding its own artistic touch, like a digital Picasso. We're exploring how machines can be creative, making them more than just tech tools.

Our AI artist isn't picky about styles; it can create all sorts of art, from real-looking scenes to funky abstract designs. This means it's like having a creative friend who can adapt to whatever style we want. We're not just playing around; there are real uses for this – imagine getting instant inspiration for game designs or helping artists kickstart their ideas.

Sure, we faced some challenges along the way, but think of them as bumps on a creative road trip. Learning from these bumps makes our AI Image Generator even better, like turning challenges into opportunities to improve.

User feedback was key – it's like having friends give suggestions on how to make a game more fun. We want our tool to be easy and fun to use, so hearing what people think helps us fine- tune it to make everyone happy.

This project is more than just pretty pictures; it's about making technology and art buddies. We're not done exploring what this collaboration can do, and there's a lot more excitement ahead as we uncover the secrets of mixing human ideas with computer creativity. Stay tuned for more creative adventures!

6. Conclusion

As we conclude our exploration into the capabilities of the "AI Image Generator," it's evident that we've embarked on a journey beyond mere technological innovation. Our project has unfolded as a digital canvas where words transform into vibrant images, each stroke tinged with the machine's own artistic interpretation. It goes beyond the binary realm of code; it's a glimpse into the synergy of technology and creativity.

The significance of our endeavor stretches beyond the digital canvas. From aiding game designers in their creative processes to acting as a wellspring of inspiration for artists, the real- world implications underscore the practicality of our AI Image Generator. It’s not just about creating pretty pictures; it’s about offering a tool that collaborates with human creativity, enriching the artistic process.

Our journey was dotted with challenges, akin to refining an artist's technique. Each obstacle served as a stepping stone toward improvement, fostering a learning curve that propels our AI.

Image Generator towards greater refinement. With each lesson learned, the potential for our tool to contribute meaningfully to the creative landscape grows.

Looking ahead, the horizon is brimming with possibilities. What if our AI artist could extend its capabilities to craft entire scenes for movies or generate immersive visuals for virtual reality? The future holds exciting prospects as we envision our AI Image Generator evolving into an indispensable companion in various creative domains.

In essence, our project signifies not just a technological achievement but a bridge between the realms of machine intelligence and human creativity. As we conclude this chapter, we eagerly anticipate the next strokes on this digital canvas, anticipating a future where the collaboration between human imagination and machine intelligence paints innovative narratives in the world of art and technology. The canvas is vast, and the potential for exploration remains boundless.

Acknowledgments

We extend our deepest gratitude to the individuals whose support and contributions have been integral to the development and success of the "AI Image Generator" project. Our heartfelt thanks go to our mentors, whose guidance and expertise have illuminated our path in navigating the intricate landscape of artificial intelligence and creative innovation.

A special acknowledgment is reserved for our fellow researchers whose insightful input and collaborative spirit have added immense value to this endeavor. The exchange of ideas and shared enthusiasm has enriched the creative process, making every challenge a collective opportunity for growth.

The unwavering encouragement from friends and family has been a constant source of motivation. Their belief in the potential of the "AI Image Generator" to redefine the intersection of art and technology has fueled our determination throughout this journey.

In this collaborative exploration, every individual involved has played a vital role, contributing to the tapestry of ideas that shaped our creative vision. The success of the "AI Image Generator" stands as a testament to the collective efforts and collaborative energy that permeated this exciting venture.

As we express our gratitude, we acknowledge the collaborative spirit that has made this journey not just a technical endeavor but a shared exploration at the nexus of creativity and technology. To all those who have been a part of this exciting exploration, we offer our sincere thanks.

Refrences

[1] Mambang et al., “Rancang Bangun Alat Musik Tradisional Berbasis Android,” Jurnal Nasional Komputasi dan Teknologi Informasi (JNKTI), vol. 5, no. 2, pp. 149–154, Apr. 2022, Accessed: Dec. 09, 2022. [Online]. Available: https://www.ojs.serambimekkah.ac.id/jnkti/article/view/4036

[2] M. G. Gunagama and N. F. Lathifa, “Automatictecture : Otomatisasi Penuh Dalam Arsitektur Masa Depan,” Jurnal Arsitektur NALARs , vol. 16, no. 1, pp. 43–60, 2017.

[3] G. Rahayu Meliani and A. Suryadi, “Game Artificial Intelegent Ram City Tower Dengan Algoritma A,” Jurnal PETIK, vol. 3, no. 2, p. 31, Sep. 2017.

[4] R. A. Putra, “Peran Teknologi Digital Dalam Perkembangan Dunia Perancangan Arsitektur,” Elkawnie: Journal of Islamic Science and Technology, vol. 4, no. 1, pp. 67–78, 2018, [Online]. Available: www.jurnal.ar-raniry.com/index.php/elkawnie

[5] S. Chaillou, “ArchiGAN: Artificial Intelligence x Architecture,” in Springer Architectural Intelligence, 2020, pp. 117–127. doi: 10.1007/978-981-15-6568-7_8.

[6] Basuki and L. Purwanto, “Perkembangan Arsitektur Digital Dan Dynamic Living,” Jurnal Ilmiah Arsitektur, vol. 12, no. 1, pp. 12–20, 2022, [Online]. Available: https://ojs.unsiq.ac.id/index.php/jiars

[7] M. Maganga, “The AI Image Generator: The Limits of the Algorithm and Human Biases,” ArchDaily, Nov. 2022. Accessed: Dec. 09, 2022. [Online]. Available: https://www.archdaily.com/992012/the-ai-image-generator-the-limits-of-the-algorithm-and-human-biases

[8] J. L. Stone, “We ‘Designed’ Buildings Using an AI Image Generator—Here Are the Bizarre Results,” METROPOLIS, Jul. 2022. https://metropolismag.com/viewpoints/midjourney-architecture-image-making/ (accessed Dec. 09, 2022).

[9] N. Tiku, “AI can now create any image in seconds, bringing wonder and danger,” The washington Post , Sep. 28, 2022. https://www.washingtonpost.com/technology/interactive/2022/artificial-intelligence-images-dall-e/ (accessed Dec. 10, 2022).

Automatic Mails Classification Using Genic Algorithm

Dr. Mandeep Singh Chowdhary*
Department of Computer Science/IT/AIML.
Kanpur Institute of Technology
A-1, UPSIDC, Rooma, Kanpur.

Rahul Singh
Department of Computer Science/IT/AIML.
Kanpur Institute of Technology
A-1, UPSIDC, Rooma, Kanpur.

***Corresponding Author**
Dr. Mandeep Singh Chowdhary
Email Id: mandeep.singh@kit.ac.in

ABSTRACT

The present scenario asks for the mail boxes that are overloaded with spam mails.

The spam mailers have an added advantage that the mails are not malicious in nature and henceforth firewalls and filters are unable to block them.; however, the minus aspect is that these mails are unwanted gasts that are received over the internet.. According to Kaspersky, the total email traffic has touched 70.3% in the beginning of 2013.In this paper, Genetic algorithm is used for spam filtering: also the advantages and disadvantages are also mentioned using this approach.

Presented are promising output stating that Genectic Algorithm in conjunction with other spam filtering methods are quite effective providing better results. It is here that the use of data dictionary steps in whereby it's effect on Genetic algorithm and it's efficiency are jured.

Index Terms Spam Filtering techniques, Genetic Algorithm approach. SPAM and HAM mails and their filtering.

Unsolicited mails are those that are sent against the will of the recipient. Unsolicited mails seek no intention from the side of the user, apart from visiting the website or to promote or sell a product.

In any case it becomes necessary to classify spam (unsolicited) and HAM (solicited mails). Both the money and bandwidth are drastically affected via Spam mails...

The percentage of spam mails in the total email traffic, during first quarter, rose to 70.7%, in the second quarter 4.2% higher than in the first quarter.

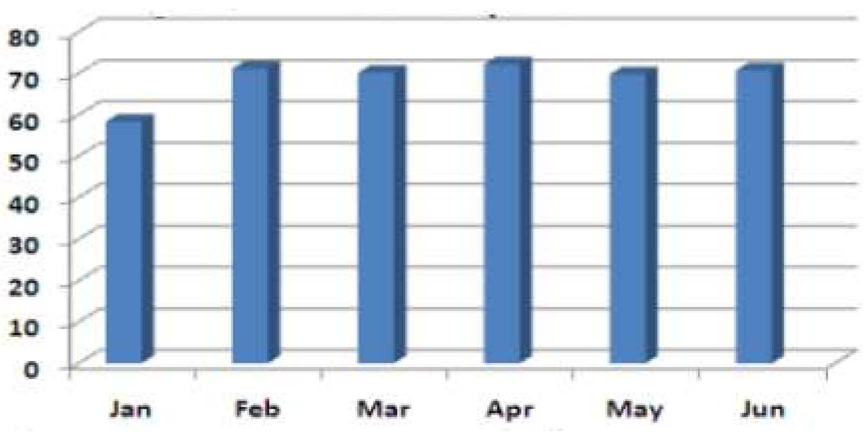

Figure 1: The percentage of spama out of total mail

The countries remain among the top sources of spam, although their percentages have changed slightly:

Former soviet republics, have an interesting situation - In the second quarter, these countries ranked 6th, 7th, and 8 places respectively among the Top20 sources of spam. delving Russia downward in the ratings..

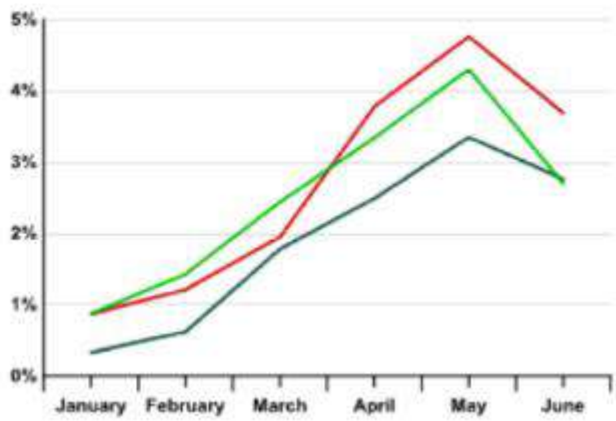

1. **Emails Spam Classification using the Genetic**

2. **Algorithm**

Genetic Algorithms are enriched with iden fying and exploiting regularities in the environment, locating the local maxima)that were globally optimal [4].. When compared to traditional solutions. Genetic Algorithms have an upper hand.. GA are good at providing near optimal solutions, compared to their traditional counterparts...

A. ***Advantages***

There is a distinct classification as compared to GA and other" traditional classification methods.

a. Encoding of the parameter is done and not the parameters itself.
b. Chromosome encoding solves optimization problems...
c. It searches in elaboration, given the stipulated time.
d. Elaborate search is done in the given time.
e. It is easily understandable, requiring no knowledge of mathematics..

B. *Limitations*

Some Limitations of GA are:

a. Genetic algorithm is unable to solve certain variant optimization problems...
b. Fitness function has to be chosen with great care.
c. GA provides optimal solution on its on.
d. Fitness function can be over-fit
e. Sometimes over-fitness of the fitness function abruptly decreases the size of population whereby the algorithm converges on to the local optimum without examining the rest of the search space. This problem is also known as "Premature Convergence".
f. Steps in Genetic Algorithms
   The details of how Genetic Algorithms work are explained below [5-8].

Initialization

For GA to work initially, a random population generated. However, with the advancements in the field some research has been done to produce a higher quality initial population more useful for a particular problem.

Reproduction

Reproduction Deploys Twp States-Generational and Steady: Complete population is replaced in each generation Generational reproduction..

Ready-state Reproduction: In this method,, two chromosomes are selected randomly. After the crossover is done it produces one or more children.

After this, the use of mutation comes into play and after the crossover and mutation is done, the newly generated off springsare then added again to the original population; thus after some iterations older generation dies out.

Parent Selection Mechanism

For parent selection probability is used. However, the authencity of GA as being directainless, does not come into picture. The probability of the parent being selected is directly propotional to it's fitness.

Fitness-Based Lection

Deployed are Roulette wheel or fitness based selection for parent selection..

In roulette wheel selection, every chromosome an equal chance of selection, but it has its limitations... The criteria for selection should be directly proportional to the 'fitness" of the chromosome.

Rank-Based Selection

The chromosomes have relative rank in the population on the basis of which they are selected....

Crossover Operator

Crossover is an essential element in Genetic algorithm... Crossover alters the programming of the chromosomes from one generation to the next one:

One-Point Crossover

One point cross-over takes into account, random selection, of bit position to change. t.

Two-Point Crossover

There is a similarity between one point crossover and two point crossover-IN two point crossover, two bits are selected randomly and swapped....

Inversio

In this, a single chromosome is chosen and the order of the genes goes under inversion between two randomly chosen points.

Mutation

Mutation imitates the concept of biological mutation. All possible chromosomes maintain better genes in newly generated ones.. The search is restricted to alleles with crossover and even inversions.

3. Emails Filtering Process

E-Mail filtering filters e-mail addresses as well as the e mail content. The disadvantage is, however that both the approaches lack intelligence and adaptability.. The end result is that for new spam mails, filtering techniques should be manually amended..

A. Rules for Classifying the Emails

Comparison is done between weight of words of gene in the test mail and weight of words in spam mail prototypes and finally the matching gene is found. At the comparison, if the end result is that the matching gene is greater than some number let say 'x' then eventually the mail is considered as spam.

Fitness Function

The Fitness function evaluates to spam mail, if the above mentioned number 'x' is deduced; otherwise it is a Ham mail.

The difficulty lies in the fact that fitness function is itself problem dependent, hence it becomes problematic to fix it initially.

An experiment was carried out to evaluate fitness function in which 500 mails were taken into account out of which 300 were spam mails and 200 were Ham mails.. The minimum score point of the fitness function was evaluated to 3. If the score point was greater than or equal to 3. the mail was considered spam, otherwise Ham.

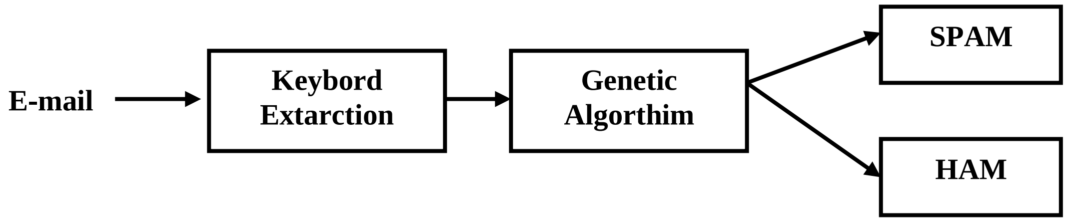

Procedure

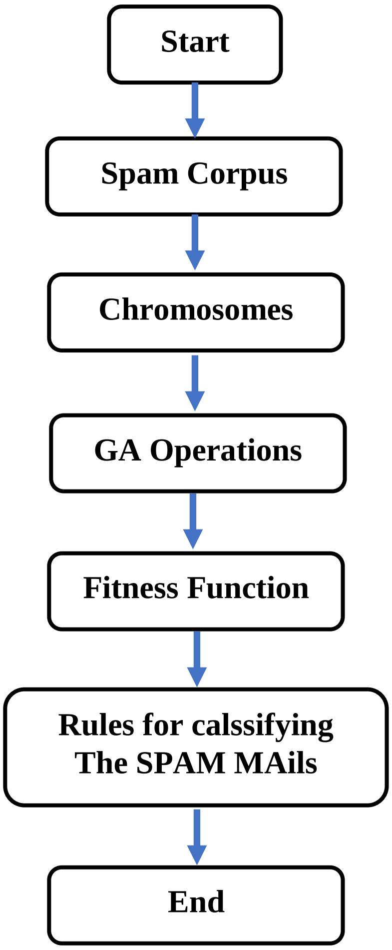

Figure 6: Flow Diagram for the GA based spam classifier

The procedure starts with the creation of abase, classifying legitimate mails and illegitimate mails. The size of the database is directly proportional to the number of words in the data dictionary. The emails are classified based upon the different categories. Even if the number of categories are less, emails can still be categorized as pam mails with one major drawback that the chances of false positive/negative increases. After the construction of chromosomes takes place from incoming mails, the process of GA starts and the crossover takes place.

The crossover is done only on genes of particular category. Our algorithm chooses both single and multipoint crossover, in which the positions of bits are selected randomly. Only 12% of the total is crossed in each genession of chromosomes. After this, mutation takes over to recover some of the lost genes.

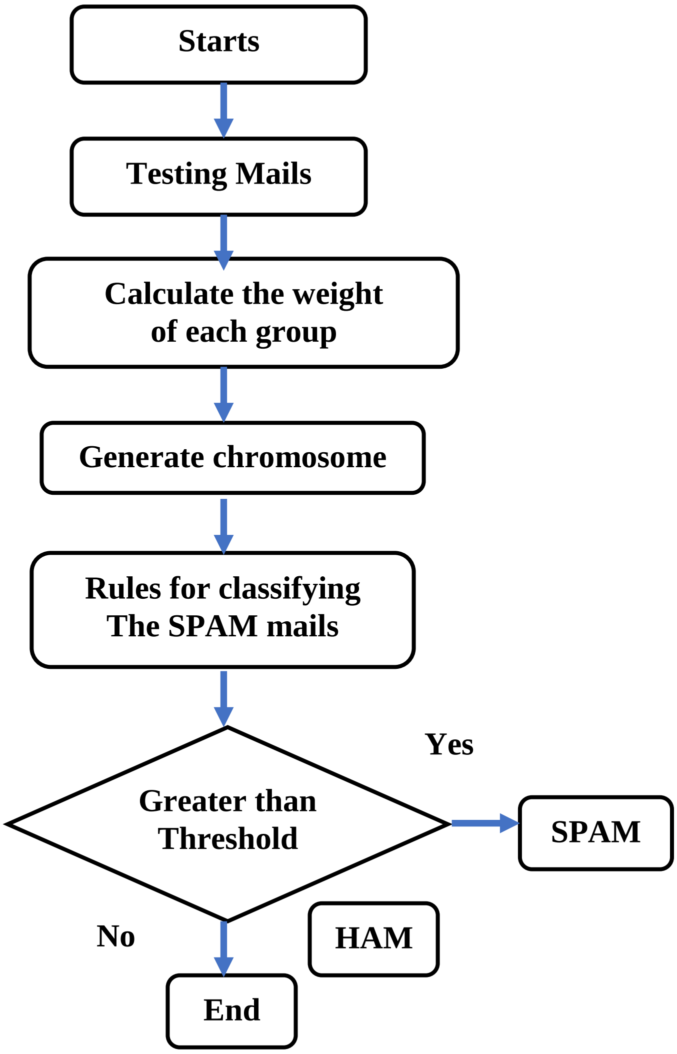

Figure 7: How diagram for the Genetic approach for the spum classification

In the example that we have taken, the comparison is done between, the weight of the words of gene in test mail and those in the spam mail prototypes to find the matching gene. If number of genes matched is greater than or equal to three, then spam mail prototype shall receive one score point.

In case, if the score point is greater than some threshold then the mail is considered to be a spam. Manual adjustment can be done on the threshold point in the given example..

4. Results

Our experiment considered 2448 mails out of which 1346 were SPAM mails and rest 1102 were Ham mails. The data dictionary consisted f421 words, which in tum were divided into seven categories.

Let us take into account an email with 797 words, out of which this words are adult', 'porm", "free" and "offer", with frequencies of occumce to be 107, 31, 466, 81 respectively.

To exactly deduce the Mail as spant, these words are rposely taken in large number. The matter of fact is that the xpum database is very small consisting of only 421 words.

After the extraction is performed, it is seen that the wonds belong to any sparn database category. In case the wonde in the email match with those in the Spam data dictionary, then the probability of getting word from the span databuve is obaned by dividing the frequency of a spom word by total number of wons in the data dictionary.

In our case "afuit occurs 107 tones, benea probability of getting "adult" word is 107/421-0.254).

The weight of the word (W_w) is calculated as under

Table 1: Calculation of weights under average weight agemethod

Group	Word	Frequency	Probability of getting word	Weight of word	Weight of group

F_w: Frequency of spam word

T_{wd}: Total word in data dictionary

$S_{wm:}$ Total spam word in e-onail

T_{wm}: Total word in e-mal

$\sum pw$: Probability ofgetting a word

The P_w for the word adultis

$$W = \frac{F_w}{w} / \frac{T_{WD}}{\sum Pw} \times \frac{S_{WM}}{T_{WM}}$$

$$W_w = \frac{107/421}{107/421 + 31/421 + 466/421 + 81/421} \times \frac{685}{797}$$

$$W_w = 0.134$$

The average of the Begory is taken as a parameter to calculate the weight of the category. As an example the weight of category C_1 is (0.156+0/45)/2=0.101.

Thus the obtained weights of each of the words ate tabulated in the underlying Tale

C_1	Adult	107	0.254	0.156	0.101
C_2	Porn	31	0.074	0.045	
C_3	Free	466	1.107	0.680	0.399
C_4	offer	81	0.192	0.118	

After the normalization in nee the range of words lie in the range of 0.000 to 1.000. Thus using the hex representation we have:

The weight of the gene is as
Under: Binary 0000000000 represents weight 0.000
Binary 0000000001 represens weight 0.001
Binary 00000000 Klrepresents weight 0.002
....
....
Binary 1111100111 represents weighs 0.000
Binary 11111011epresents weight 1.000

Mentioned priorly, every a E-mail is encoded into chromosomes commisting of 70 hits, which are hence divided in 7 equal groups. Out of 70, 10 hits are used to represent the hex number of the pobability of the word lying in a particular group.

After the chromosomes are constracted the all the mails croossover takes place.

As discussed above there are varions ways by which crossover can be performed. As mentioned already. Crossover is only allowed for hits of gene in a particular category only.

Our algorithm uses both multi-point and single point Crossever. In this algorithm, the position of bit is selected randomly. In each generation of the chromosomes only 12% are crossed.

Some of the last genes are recovered through the process of mitation.

Specific to our cuse, only 3% of the genes are mutated.

5. Conclusions

This paper dwells into and uses email spam classification algorithm using Genetic Algorithm The algorithm is bust enough to classify spam and Ham mails.

The number of datasets in the data dictionary have a deep impact on the over-all efficiency of the genetic algorithm based e-mail classification.

References

[1] Enrico Blanzieri and Anton Bryl, "A Survey of Learning Based Techniques of Emad Spam Filtering" Conference on Email and Anti-Spam,2008
[2] http://usa.kaspersky.com/internet security enter/threats/spam-statistics-report-q2-2013.
[3] Gordon V. Cormack, Email Spam Filtering: A Systematic Review
[4] G.J.Koprowska.Spermaccountsformoste-mailtraffic, News World (2006), Tech

Brain Tumor Detection Using Convolution Neural Network

Akshay Tripathi*
Department of computer Application
Kanpur Institute of Technology
Kanpur City, India.

Prabhat Kumar Sharma
Department of computer Application
Kanpur Institute of Technology
Kanpur City, India.

Sujeet Kumar
Department of computer Application
Kanpur Institute of Technology
Kanpur City, India.

***Corresponding Author**
Akshay Tripathi
Email Id: akshaytripathi813@gmail.com

ABSTRACT

Brain Tumor means growth of abnormal cells in the brain. The idea behind brain tumor detection is to develop advanced deep learning approaches like Convolution Neural Network(CNN) which can identify a dataset comprises of medical imaging with Magnetic Resonance Imaging (MRI) Techniques.MRI images are used to detect brain tumor of small data sets while using CNN approaches we can identify brain tumor in large data sets.CNN approaches have better training accuracy(almost 87%).CNN architecture is designed and trained on the annotated dataset for binary classification, distinguishing between healthy and tumor-affected brain regions. The trained CNN is then extended to perform segmentation tasks, delineating tumor boundaries with pixel-level precision. Transfer learning techniques are explored to enhance the model's generalization capabilities, leveraging pre-trained networks on large-scale image datasets. The segmentation results are validated against manual annotations by medical experts, ensuring the model's accuracy and reliability.

Keywords: *Deep learning , Convolution Neural Network, Magnetic Resonance Imaging*

1. Introduction

The most effective method is deep learning, as opposed to medical imaging, which takes an idealistic approach to the diagnosis and identification of brain tumors. We are able to analyze medical pictures, including CT and MRI scans, using deep learning algorithms. Deep learning techniques are utilized to classify several types of brain tumors, including gliomas, meningiomas, and metastatic tumors, by using different training models on big data sets containing images of the tumors. The efficiency and accuracy of brain tumor pictures can be improved by using neural networks. A network that can accurately identify and categorize brain cancers from MRI data can be used in a convolution neural network. This study illuminates the ways in which CNNs can be employed to represent the potential of healthcare practitioners. This research contributes to our understanding of CNN-based brain tumor identification and moves us closer to a time when cutting-edge medical procedures will include technology for the common good. CNNs excel in image analysis applications because of their capacity to automatically learn hierarchical representations from input data. In the field of medical image processing, convolution neural networks (CNNs) have proven to be remarkably useful, especially for the identification and diagnosis of brain cancers. CNNs are used in this context because of their capacity to automatically recognize complex patterns and features from medical images, making them an invaluable tool for both researchers and physicians. CNNs use a sequence of convolution and pooling layers to extract hierarchical characteristics from images that they excel at. These networks are capable of identifying pertinent patterns, textures, and structures in medical imaging data that may be suggestive of the existence or characteristics of a brain tumor.

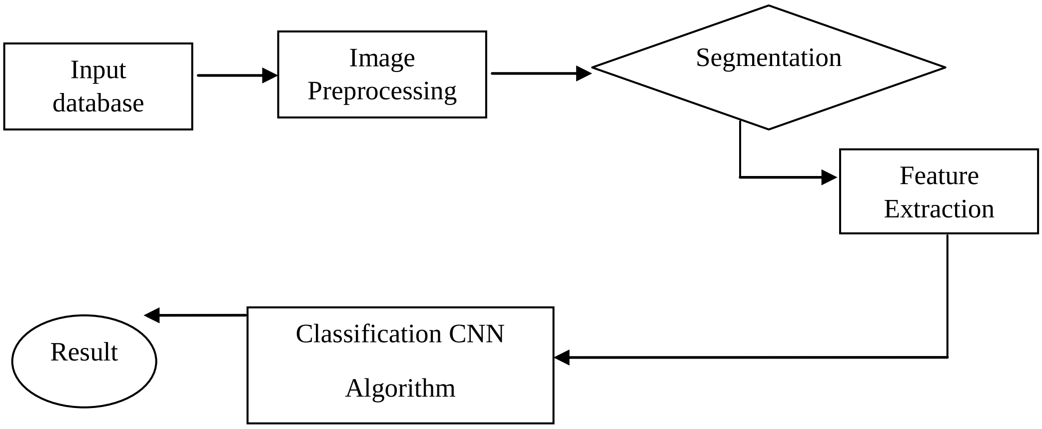

Figure 1: Diagram of CNN model

2. Literature Review

This in-depth analysis examines the theoretical underpinnings of using CNNs and deep learning in neuroimaging tasks. It goes into the theoretical issues, difficulties, and potential applications of deep learning to the diagnosis and categorization of brain tumors. Together, these theoretical stances add to our understanding of CNNs in the context of brain tumor identification by shedding light on the fundamental ideas behind their design as well as the difficulties and opportunities for improvement in this vital area of medical image analysis. On top of these theoretical underpinnings, researchers are still working to improve CNN capabilities for more reliable and accurate brain tumor detection techniques.

3. Methodologies

Convolution Neural Networks (CNNs) are commonly used in the detection of brain cancers using a systematic methodology that includes training, validation, testing, post-processing, and data preparation. The following is a detailed guide to the methods frequently used in CNN-based brain tumor detection:

a. Gathering and Preprocessing Data

- **Data Acquisition:** Compile a varied dataset of brain scans that includes samples free of tumors as well as those with tumors. Annotated ground truth labels, several tumor kinds, and imaging modalities (MRI, CT scans) should all be included in this dataset.
- **Data Preprocessing:** To enhance dataset size and boost model generalization, resize photographs to a standard format, normalize pixel values, and think about using data augmentation techniques (rotation, flipping**).**

b. Splitting Data Sets

Separate the dataset into sets for testing, validation, and training. 70–80% for training, 10-15% for validation, and 10-15% for testing are typical splits. Make sure that every set accurately reflects the distribution of the data as a whole.

c. Training Models

Train the CNN using the training set. Define an optimizer (such as the Adam optimizer) and a loss function (such as binary cross-entropy for binary classification). Iteratively train the model, modifying the weights to reduce the loss. To avoid over fitting, keep an eye on the validation set's performance.

d. Assessment and Testing

Assess the trained model's performance on never-before-seen data by evaluating it on the testing set. To measure the model's efficacy in brain tumor identification, use metrics like area under the ROC curve, F1 score, accuracy, precision, recall, and recall.

CNN's Purpose and Goals Using the Brain Tumor Method

The primary goals of utilizing Convolution Neural Networks (CNNs) in brain tumor detection are to increase the detection process's precision, efficacy, and mechanization. The following are typical goals and objectives when using CNNs to detect brain tumors:

- Obtain a high degree of accuracy when recognizing brain cancers in medical imaging.
- Teach the CNN to identify subtle patterns and characteristics that point to tumors, resulting in accurate and dependable detection.
- Divide brain tumors into distinct groups (such as benign, malignant, and tumor subtype).
- Teach the CNN to differentiate between different kinds of tumors according to imaging features, allowing customized treatment plans.
- Segment tumor areas in medical photographs automatically.
- Create a CNN architecture that can precisely identify the boundaries of tumors, making it easier to locate and measure the areas affected by tumors.
- Facilitate early brain tumor detection to enhance treatment results and prognosis.
- Teach the CNN to spot minute irregularities so that prompt action may be taken, thereby lessening the severity of the illness.

The Necessity and use of CNN for Brain Tumor Detection

Convolution neural networks (CNNs) are a promising tool for detecting brain tumors that can be used for a variety of applications that have a big influence on clinical workflows, patient outcomes, and medical research. This technology meets many important needs in the healthcare industry. The following are the main requirements and uses for CNN-based brain tumor detection.

- Improving patient prognosis and starting prompt therapies depend on early diagnosis of brain tumors. CNNs can detect brain tumors early and allow doctors to develop effective treatment plans early on because of their capacity to identify minute patterns in medical imaging.
- Planning a course of therapy and making decisions regarding patient care depend on an accurate diagnosis. CNNs provide reliable and consistent evaluations of medical imaging data by automating the diagnostic process. They are excellent at seeing complex patterns that point to brain cancers, lowering the possibility of human error and boosting the accuracy of diagnoses.
- Because brain tumors can have a variety of characteristics, individualized treatment plans are necessary.CNNs are used to categorize brain cancers according to their imaging characteristics. This categorization aids in the creation of individualized treatment regimens catered to the unique features of the identified tumor.
- Manual medical image interpretation takes a lot of time and can be biased. CNNs reduce the human workload of healthcare practitioners by automating the detection procedure. By increasing efficiency, this automation frees up doctors to concentrate on patient care and treatment planning.

4. Conclusion

In summary, the use of Convolution Neural Networks (CNNs) for brain tumor analysis and identification marks a revolutionary development in the field of neuro-oncology. The use of CNNs provides researchers and healthcare practitioners with a potent tool and a comprehensive answer to a number of issues related to older approaches. Important lessons from using CNNs to detect brain tumors include:

The remarkable ability of CNNs to recognize complex patterns and features from medical images enables the very accurate and exact identification of brain cancers. This minimizes the possibility of error and false negative results while greatly increasing diagnostic reliability.

Early brain tumor detection is made possible by the use of CNNs, which is essential for enhancing patient outcomes. Immediate treatments and treatment planning enhance the likelihood of successful therapeutic interventions and improve prognoses.

CNNs help usher in the era of individualized medicine by categorizing brain cancers according to their distinct features. By customizing treatment plans for each patient, this classification maximizes the effectiveness of therapeutic measures.

CNN-enabled brain tumor detection automation improves clinical workflows and lessens the manual labor that medical personnel must perform. This effectiveness guarantees uniformity in analyses and speeds up the diagnostic procedure, leading to more dependable and consistent outcomes.

CNN-based detection systems have been successfully incorporated into clinical practice, demonstrating their usefulness. These technologies are a useful addition to the current medical imaging infrastructure, giving doctors easily available resources for effective brain tumor analysis.

CNNs demonstrate the ability to continuously improve by incorporating fresh data. This flexibility guarantees that the models keep up with new trends and continue to be useful in tackling changing problems related to brain tumor identification.

In summary, the use of CNNs in brain tumor identification represents a paradigm change, providing a sophisticated and effective method that is in line with the changing needs of the medical field. CNNs will probably play a bigger part in neuro-oncology as technology develops, helping to better comprehend brain malignancies and provide better patient care as well as more accurate diagnosis.

References

[1] "Deep Convolution Neural Networks for Multimodal Imaging-Based Diagnosis of Brain Tumors". The authors of this work are Havaei, M., Davy, A., Biard, A., Courville, A., Bengio, Y., & Pal, C. released in the 2017 issue of IEEE Transactions on Biomedical Engineering.

[2] "Brain Tumor Detection and Classification Using Deep Learning on MRI Images**".** Priyadharshini, K. I., and Thanamani, A. S. are the authors. Publication: 2019 Procedia Computer Science.

[3] "A Deep Learning Approach for Glioma Classification in Multi-parametric MR Images". The writers are Lyudmila, M. M., Yurii, D. S., and Khvostikov, A. V. Published in 2020 in Diagnostics**.**

[4] "Deep Learning Applications for Detecting and Diagnosing Tumors: A Review" Han, C., Chen, Y., Shi, J., & Zhou, L. are the authors. Published in: 2018 SPMB Symposium on Signal Processing in Medicine and Biology.

[5] "Brain Tumor Detection Using Convolution Neural Network" Writers: Das, D., and Halder, A. 2017 IEEE Calcutta Conference (CALCON), published.

[6] "Brain Tumor Classification Using Deep Learning with Capsule Networks" Writers: Kim, M. S., and Cho, W. Published in: Biology and Medicine Computers, 2020

[7] "Brain Tumor Classification and Segmentation Using Deep Learning and Neural Network" Authors: Chauhan, M.; Kumar, A. Published in: Proceedings of Materials Today, 2020.

[8] "Convolution Neural Networks for Brain Tumor Segmentation and Glioma Grading" Mohsen, H., El-Dahshan, E. S. A., and El-Horbaty, E. S. M. are the authors. 2019 saw the publication of Frontiers in Neuroinformatics.

Comparative Analysis of Logistic Regression, Random Forest Classifier, and Decision Tree Classifier for IPL Winning Prediction

Gyanendra Pratap Singh
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Rooma Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Abhay Pratap Singh Chauhan
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Rooma Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Arif Ansari*
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Rooma Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Arif Ansari
Email Id: 200241@kit.ac.in

ABSTRACT

The Indian Premier League (IPL) has become one of the most popular and competitive cricket leagues globally, attracting top-notch players and generating immense fan engagement. With the increasing complexity of the game and the availability of vast amounts of data, there is a growing interes tin leveraging machine learning algorithms to predict the outcome of IPL matches. In this research paper, we conduct a comprehensive study to determine the most effective algorithm for IPL winning prediction among three widely used classifiers: Logistic Regression, Random Forest Classifier, and Decision Tree Classifier.

Keywords: Indian Premier League, Logistic Regression, Random Forest Classifier, Decision Tree Classifier, Machine Learning, Cricket Predictions.

1. Introduction

Cricket is a game of uncertainties, and predicting the outcome of matches is a challenging task. The integration of machine learning techniques has provided a new dimension to sports analytics, allowing researchers and analysts to make data-driven predictions. In the context of IPL, the use of algorithms such as Logistic Regression, Random Forest Classifier, and Decision Tree Classifier has gained prominence for match outcome predictions. The Dataset we create to train our Machine Learning Algorithmis actually the Ball by Ball data of all matches which occur in between the 2008 to 2018.Usually we obtain the dataset to train our Machine Learning Model by the Data Annotation, Web scrapping and Dataset selling Website (Example: Kaggle etc).

The primary objective of this research is to compare the performance of Logistic Regression, Random Forest Classifier, and Decision Tree Classifier in predicting the winners of IPL matches. We aim to assess the accuracy, precision, recall, and F1-score of each algorithm, considering various features such as team performance, player statistics, and match venue. By using these features we make our model to predict the Winning Percentage of both the IPL Teams during the 2nd Innings.

Several studies have explored the application of machine learning algorithms in sports predictions, including cricket. However, there is limited research specifically focusing on the comparison of Logistic Regression, Random Forest Classifier, and Decision Tree Classifierfor IPL winning predictions. This research aims to bridge this gap and provide insights into the strengths and weaknesses of each algorithmin the context of IPL.

2. Methodology

Data Collection: We collect a comprehensive dataset comprising historical IPL match data, including team statistics, player performance metrics, and match- specific details. The dataset covers multiple seasons, teams, and players to ensure a diverse and representative sample. The Data collection is important task and in this we collected the data from various resources like Kaggle and other online platforms which sells the dataset.

Feature Selection: Careful consideration is given to the selection of relevant features for training and testing the algorithms. Features such as team form, player form, match venue, and head-to-head records are included to capture the nuances of IPL matches. This Process is done by Calculating all the stats in the IPL match with respect to every ball which bowled in the IPL match.

Model Training: Logistic Regression, Random Forest Classifier, and Decision Tree Classifier are implemented for training models using the collected dataset. The algorithms are fine-tuned to optimize their performance, and cross-validation techniques are employed to mitigate overfitting. The Process of Model Training we created the 3 models which are trained with one of these Algorithms (Logistic Regression, Random Forest Classifier, and Decision Tree Classifier) after the training we checked the performance of each of model so we can found out the best Algorithm.

3. Results and Discussion

The research evaluates the performance of each algorithm based on accuracy, precision, recall, and F1-score metrics. Comparative analyses are conducted to identify the algorithm that consistently outperforms others in predicting IPL match outcomes. The results are discussed in light of the strengths and limitations of each algorithm. Calculating the performance we found out that for the Training the Model forProbability Prediction in the IPL match Logistic Regression gives the Best Probability Prediction with respect to every overs in the 2nd innings.

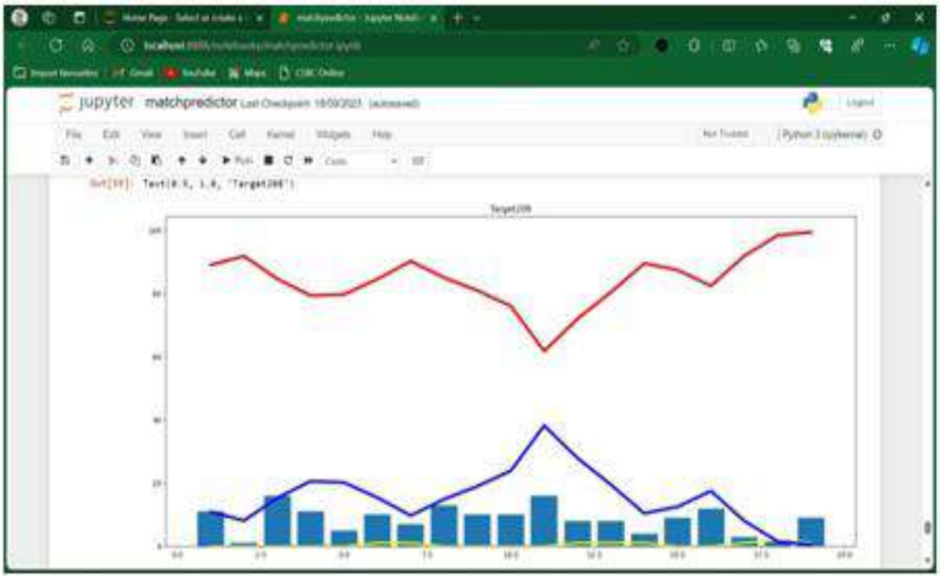

Figure 1: A graph of random two team match probability prediction.

Table 1: Algorithms with their accuracy score.

Algorithms	AccuracyScore
1.RandomForestClassifier	**76.576%**
2.DecisionTreeClassifier	**78.891%**
3.LogisticRegression	**80.334%**

4. Future Work

Future research may explore the integration of additional features, advanced machine learning techniques, and real-time data for more accurate and dynamic IPL winning predictions. The scalability and adaptability of the models to changing cricket dynamics can also be investigated for continuous improvement. Another Important Future Work which is Important is that Continuous Monitoring the performance of the project the Monitoring includes checking of UI, Machine Learning Model.

5. Conclusion

This research paper presents a detailed analysis of Logistic Regres- sion, Random Forest Classifier, and Decision Tree Classifier for IPL winning prediction. The findings contribute to the growing body of literature on sports analytics and provide valuable insights for researchers, analysts, and cricket enthusiasts interested in leveraging machine learning algorithms for predicting cricket match outcomes. In this we are able to find out that which of these Algorithms (Logistic Regression, Random Forest Classifier, and Decision Tree Classifier) are best for the Probability Prediction.

References

[1] T. A. Severini, Analytic methods in sports: Using mathematics and statistics to understand data from baseball, football, cricket, and other sports. Chapman and Hall/CRC, 2014.

[2] H. Ghasemzadeh and R. Jafari, "Coordination analysis of human movements with body sensor networks: A signal processing model to evaluate base ball swings," IEEE Sensors Journal, vol.11, no.3, pp.603–610,2010.

[3] Veppur Sankaranarayanan, Vignesh and Sattar, Junaed and Lakshmanan,"Auto-play:A Data MiningApproachto ODICricket.

[4] R. Rein and D. Memmert, "Big data and tactical analysis in elite soccer: future challenges and opportunities for sports science," SpringerPlus, vol. 5, no. 1, p. 1410, 2016.

[5] Simulation and Prediction",SIAM Conference on Data Mining, 2014 K. A. A. D. Raj and P. Padma, "Application of Association Rule.

[6] FundamentalsofMachineLearningforPredictiveDataAnalyt- ics by John D. Kelleher, Brian Mac Namee, and Aoife D'Arcy.

[7] An Introduction to Statistical Learningby Gareth James, Daniela Witten, Trevor Hastie, and Robert Tibshirani.

Artificial Intelligence: A Comprehensive Review of its growing impact on Society and Economic Benefits and Emerging Challenges

Situ Saw*
Department of Copmuter Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Suraj Srivastva
Department of Copmuter Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

***Corresponding Author**
Siitu Saw
Email Id: 222690@kit.ac.in

ABSTRACT

Artificial Intelligence also known as AI is a branch of computer science that aims to create intelli- gent machines that can perform tasks that typically require human intelligence, such as reasoning, learning, and problem-solving. It encompasses a wide variety of technologies, including machine learning, deep learning, and natural language processing (NLP).I think artificial intelligence (AI) will have a significant impact on people's lives all throughout the world in the upcoming period. Services with AI integration will proliferate, and AI will permeate more aspects of peoples' daily lives globally. I think this will have a positive impact on society and the economy, but it will also present a number of difficulties that must be resolved to make sure that the advantages are distributed fairly and that people are not left behind by these new technologies. Among the poten- tial issues are: - Increasing hacking and security concerns; - International regulations and ethical hurdles; - AI terrorism and the automation of weapons.

Keywords: Artificial Intelligence (AI), Economic, Societal benefits, Security risks.

1. Introduction

AI or Artificial Intelligence refers to the computer system that performs various task that majorly required human intelligence. This task may include problem solving, understanding various languages, doing some serious calculations, detecting emotions, etc.[1] As the time passes there is substantial advancing in the language processing and computer vision and pattern recognition, which means that AI is getting included in people's lives on a daily basis from helping people to clear their doubts to finding movies and in various medical visions.[2] However, with this success there comes a critical period where we need to understand and minimize the risk and drawbacks of AI - driven system. In order to ensure the safety from AI threats, Computer scientist must work with experts from the department of Social science and Law to ensure that the risk are minimized. Artificial intelligence (AI) has advanced significantly over the last five to ten years, moving from a complex field that was mostly used in research labs and other highly regulated environments to something that is now a commonplace aspect of daily life. Seeing technology do something we could only imagine is incredibly thrilling. However, the advancement of AI is already having a lot of effects. Therefore, figuring out how to maximize benefits while lowering risks needs to be the next step. In the present digital age, data has become the most precious asset for any firm looking to obtain a competitive advantage in the market. Organizations aim to leverage the accessible data to make informed decisions based on facts in order to obtain a competitive edge [9]. With little to no human participation, the idea of "smart manufacturing" has surfaced, in which "smart machines" and "smart processes" use data to continually optimize production processes. As seen in, industry is the meeting point of several technologies, such as the Internet of Things (IoT), artificial intelligence/machine learning, and big data and cloud computing. These technologies work together to make it possible to gather and store data from many sources, analyze it to make decisions, and draw conclusions from it.

Different Types of Artificial Intelligence

From it's abilities and functions we can distinguish AI into two different types: Firstly we have Weak AI or Narrow AI which is developed to perform narrow or simple task such as voice recognition, speech recognition and used in many companies. One of the best example will be Siri or Alexa. Although these systems are not capable of general intelligence but there are many existing system which claim to use narrow AI for people's use , but these weak AI may pose a threat since this weak AI may cause various security concern or distortions in the electric grid or may damage the nuclear power plants when malfunctioned.

Secondly we have general or strong AI, it is the advanced version of weak AI that possesses the ability to learn, understand and apply its knowledge across a range which is similar to human intelligence. Researchers are still working to achieve strong AI. Strong AI is a challenging goal for the researches that is yet to be achieved. Strong AI can be programmed to actually be like the human mind, to be intelligent enough to perform whatever task that is commanded to it and achieve perception, belief and cognitive capacities that are only regarded to humans. In the present digital age, data has become the most precious asset for any firm looking to obtain a competitive advantage in the market. Organizations aim to leverage the accessible data to make informed decisions based on facts in order to obtain a competitive edge. With little to no human participation, the idea of "smart manufacturing" has surfaced, in which "smart machines" and "smart processes" use data to continually optimize production processes. As seen in, industry is the meeting point of several technologies, such as the Internet of Things (IoT), artificial intelligence/machine learning, and big data and cloud computing. These technologies work together to make it possible to gather and store data from many sources, analyze it to make decisions, and draw conclusions from it.

2. Impacts of Artificial Intelligence (AI) on Society

As the time passes, AI will be further advanced and with the progressive development of AI , human labour will no longer be required as everything can be done mechanically . With the advancing technology humans will eventually become more lazy and at last will return to being to its primitive stage. Since AI is in the process of being developed and humans are not seeing the backsliding of the humankind [3]. However, what happened if the AI becomes so strong that it can even program itself to be in charge and disobey the commands of its owner, the humans. Let us see some of the impacts AI will have on human society

- A massive change will occur in the human society which will greatly affect the human lives. In order to make their living humankind need industries and many other works where humans presence are needed. But as the closeness between the human being and AI increases, AI will gradually start to replace humans and the need of people to meet will decrease.
- Unemployment is second factor to be concerned with as many workers will be replaced by machinery and lose their jobs. As in the current era most of the industries and factories are filled with machinery and robots, forcing the workers and staffs to lose their jobs.
- Economic equality may be the third factor as there is a risk that the benefits and wealth may not be distributed equally. As the investors will take the major share of the earning, creating a gap between the rich and the poor, which can create an unimaginable crisis in the human world.
- New issues are surfacing not only socially but also in AI itself, as AI is being trained and learned to operate the given task, there will be a time where AI will start to learn and operate itself and human will have no control over it, thus creating unimaginable problems and consequences. It refers to the AI capacity, when it is being loaded with all the algorithm to function, it may function automatically with humans no control over it.
- Racial biasing can be included as well, as the human master who created the AI may program the AI in such a way where it can harm certain people on basis of race and colour. AI can possibly target a certain individual or any programmed object to accomplish complete destruction as ordered or programmed by the programmer, thus creating world disaster.
- Security risks may occur due to misuse of AI. Originally AI was developed to strengthen cybersecurity by identifying and responding to threats, but now a days AI is being used to breach and exploit the information leading to new cybersecurity threats [11].
- Social Manipulation and Deepfakes, an AI technology developed to detect and prevent misfortune and strengthen security on social media. But AI can be used to create deepfakes content which may raise concern about the spread of fake information and social manipulation.

3. Impacts of Artificial Intelligence (AI) on Industries

The development of Artificial Intelligence (AI) is the biggest advantage in this decade. AI has the potential to change many industries, and it has already had an impact on several. Businesses look for creative methods to stay competitive in the modern digital era, and artificial intelligence (AI) has emerged as a potent tool to support enterprises in achieving their goals.AI has a significant impact on a wide range of industries, including healthcare, banking, retail, and transportation. AI has the potential to increase productivity, save expenses, increase accuracy, and offer clients individualized experiences. It can also offer insightful information about data that humans might not be able to recognize on their own.

- Artificial intelligence (AI) is having a significant impact on various industries, bringing about revolutionary shifts that improve production, efficiency, and creativity. Here are the key impacts across various sectors:
- **Manufacturing and Automation:** Robotics empowered by AI improves production processes, boosting precision and speed. By anticipating equipment errors, predictive maintenance reduces the delay.
- **Healthcare:** Medical imaging accuracy is enhanced by AI image processing for more accurate diagnosis.[5] AI systems analyzing patient data allow customized treatment plans and pharmaceutical discovery.
- **Money:** Systems using artificial intelligence (AI) improve risk management, simplify operations, and expedite finan- cial procedures. AI has applications in cybersecurity and fraud detection since it can search through large databases for anomalies.
- **Retail:** Customized shopping experiences powered by recommendation algorithms increase customer interaction. AI analytics improves stock management and supply chain efficiency.
- **The Customer Service:** Chatbots driven by AI offer effective, round-the-clock client service. More organic and successful communication is made possible by natural language processing, or NLP.[12]
- **Transport:** Traffic management solutions powered by AI and autonomous cars enhance safety and streamline traffic flow. Fleet downtime is minimized with predictive maintenance.
- **Power:** Artificial Intelligence is used by smart grids to distribute and consume energy efficiently. Energy infrastruc- ture maintenance schedules are optimized via predictive analytics.[8]
- **Agriculture:** AI is used in precision farming to analyze data and maximize agricultural output. Drones and robots with AI capabilities help in crop management and observation.[10]
- **Education:** AI facilitates individualized learning by modifying content to meet the needs of each unique student.[4] Assessment procedures are streamlined by automated grading systems.
- **Network Technology:** AI systems forecast maintenance requirements and enhance network performance. Virtual assistants and chatbots improve customer service.
- **Human Resources:** AI expedites the hiring process, from candidate selection to resume screening.
- AI-powered analytics increases worker engagement. AI has a paradigm-shifting influence on industries, encouraging organizations to innovate in previously unattainable ways, make decisions based on data, and run with greater efficiency. It also brings up issues like employment displacement, ethical concerns, and the requirement for legal frameworks to guarantee the appropriate application of AI.[7]

4. Benefits of Artificial Intelligence (AI)

- **Automation:** Artificial Intelligence minimizes errors and simplifies tedious duties, boosting efficiency.
- **Efficiency:** Quick processing of information improves perception and optimizes company procedures. AI extracts useful data from large datasets to help in decision-making.
- **Innovation:** AI propels technical development and stimulates creativity in a variety of sectors.
- **Personalization:** Personalized user experiences increase client happiness in areas like online purchasing and content recommendations.
- **Cost Reduction:** Operations and resource management can be made more affordable through automation and efficiency.
- **Healthcare Advances:** AI helps with drug discovery, individualized treatment regimens, and medical diagnostics.
- **Safety:** By detecting and preventing threats across a range of disciplines, AI improves security measures.
- **Customer Service:** Virtual assistants and chatbots offer prompt, effective customer service.
- **Accessibility:** AI helps make technology more user-friendly, which is advantageous for those with impairments.

5. Conclusion and Future Scope

Artificial Intelligence (AI) has a huge future ahead of it and has the potential to change many aspects of our life. First off, artificial intelligence (AI) will keep pushing the automation envelope, altering sectors and simplifying processes to boost production. AI has tremendous potential to improve healthcare by enabling more precise diagnosis, individualized treatment programs, and breakthroughs in drug discovery. AI will be used by smart cities to manage resources more effectively, improving urban living. It won’t take long for autonomous cars to proliferate, transforming transportation and lowering accident rates.

Advances in Natural Language Processing (NLP) will lead to enhanced communication systems, smoother language translation, and virtual assistants with higher levels of sophistication. AI in education offers intelligent tutoring programs, automated grading, and individualized learning experiences. AI algorithms will be used more and more in cyber security to successfully identify and block cyber attacks. Advances in robotics will result in the deployment of AI-driven robots in a variety of industries. Applications of AI in risk management, fraud detection, and process optimization will be advantageous to the financial industry. As AI develops, more attention will be paid to creating moral standards and legal frameworks to guarantee ethical AI research and application. This is because ethical issues and societal ramifications must be taken into account.

Acknowledgement

We extend our profound gratitude to the esteemed KIT management, our distinguished Director, Prof. Brajesh Varshney, and our guiding mentor Associate Prof. Dr. Priyanka Gupta for their invaluable and gracious support. I would like to express my profound gratitude to Shadab and Abhinav, my colleagues, for their insightful discussions, constructive feedback, and collaborative spirit during the entire review process. Additionally, I extend my thanks to Anmol Yadav, my junior, for his valuable contributions.

References

[1] Lu, Yingying, and Yixiao Zhou. ”A review on the economics of artificial intelligence.” Journal of Economic Surveys 35.4 (2021): 1045-1072.
[2] 4 Proc. 15th ICDVRAT, Prague, Czech Republic, 3–6 Sept. 2024
[3] Jan, Zohaib, et al. ”Artificial intelligence for industry 4.0: Systematic review of applications, challenges, and opportunities.” Expert Systems with Applications 216 (2023): 119456.
[4] B. Boulay, “Artificial intelligence as an effective classroom assistant,” IEEE Intelligent Systems, vol. 31, no. 6, pp. 76–81, 2016.
[5] Frost and Sullivan: Transforming healthcare through artificial intelligence systems. 2016
[6] Accenture Technology Vision 2019: Full report, Accenture. Retirieved 19.12.2019
[7] Artificial Intelligence: Healhtcare’s new nervous system. Accenture consulting. 2017
[8] Rao DAS, Verweij G: Sizing the prize: What’s the real value of AI for your business and how can you capitalise? PwC Publication, PwC, 2017.
[9] Russell SJ, Norvig P: Artificial Intelligence: A Modern Approach (Third ed.). Prentice Hall, 2010.
[10] Jan, Z., Ahamed, F., Mayer, W., Patel, N., Grossmann, G., Stumptner, M. and Kuusk, A., 2023. Artificial intel- ligence for industry 4.0: Systematic review of applications, challenges, and opportunities. Expert Systems with Applications, 216, p.119456.
[11] Kaur, Davinder, Suleyman Uslu, Kaley J. Rittichier, and Arjan Durresi. ”Trustworthy artificial intelligence: a review.” ACM Computing Surveys (CSUR) 55, no. 2 (2022): 1-38.
[12] Mukhamediev, Ravil I., et al. ”Review of Artificial Intelligence and Machine Learning Technologies: Classifica- tion, Restrictions, Opportunities and Challenges.” Mathematics 10.15 (2022): 2552.

Effects and Secure QR Attendance System for Streamlined Academic & Corporate Management

Shashank Singh*
Department of Information Technology
Kanpur Institution of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Rahul Singh
Department of Information Technology
Kanpur Institution of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Shashank Singh
Email Id: 201673@kit.ac.in

ABSTRACT

Attendance tracking remains a critical aspect of academic and corporate environments. This abstract presents a comprehensive QR Attendance System designed to enhance efficiency, accuracy, and security in managing attendance records. The proposed system leverages Quick Response (QR) code technology, providing a seamless and contactless method for both students and employees to mark their attendance.

The QR Attendance System utilizes a user-friendly mobile application that generates unique QR codes for each participant. Users simply scan the QR code displayed in their designated location using their smartphones, instantly recording their attendance. This streamlined process eliminates the need for manual attendance sheets, reducing administrative burdens and minimizing the risk of errors associated with traditional methods. Attendance data is stored in a centralized and secure database, fostering transparency and accountability.

As institutions and businesses continue to embrace technological advancements, this QR

Attendance System emerges as a reliable solution to foster a digitized, efficient, and secure attendance tracking.

1. Introduction

Even with all of the different kings of attendance systems that have been created, there are still many issues that arise when using punch cards, log books, fingerprint sems, barcodes, QR codes, and RFID, such as giving users inaccurate information. The goal of the smartphone-based attendance system is to computerize the current manual method of recording attendance and offer an easier and more intelligent way for institutions to monitor attendance these days. Smartphones are the most often used devices in business and marketing. Furthermore, a large number of them are Android OS-powered. The "QR Code Based Attendance Management System was created to record and manage college students' daily attendance. Here, the professor in charge of the classes will be in charge of recording the students' attendance. An Android application to record attendance and produce the overall attendance status will be sent to each employee. This produces an accurate report depending on the attendance of the student The desired weekly and monthly attendance reports are generated for the students. The automated attendance system's primary goal is to computerize the conventional method of keeping track of attendance.

Advantages of QR Code Based Smart Attendance System

Provide improved security. The technology is inexpensive and straightforward to maintain. Produce the outcome promptly. Offer precise and effective data.
Using SQLite and adevice to integrate attendance data storage. Examining attendance data in real time.

Practicality Economic viability

Since attendance is automatically recorded, the system saves time. Additionally, since there is no need for paperwork, it is inexpensive.

Technical Viability: The solution is affordable and requires no extra hardware.

Behavioral Feasibility: The interface of the system is easy to use.

The suggested system's characteristic

Easy to Use Generating reports is a simple task. Very little paperwork One-stop solution for calculating attendance.

Approach A systematic approach has been taken in order to accomplish the goals that have been stated above.

Hardware Prerequisite

Android smartphone with 2.3 input/output and Android OS version 4.0.3 (API level 15).
Enter a barcode or QR code

Result: Excel and CSV spreadsheet

Utilized Database: SQLite database

2. Conclusion

This paper presents the developed system that has undergone successful design and testing. The attendance status of the students will be examined and exported. In our dagy lives, attendance monitoring systems are crucial. One of its many advantages is that the QR Code Based Smart Attendance System is the most accurate code scanning technology available. We have introduced the attendance monitoring system and its benefits in this project report. Storing the attendance on a smartphone instead of wasting paper is a more efficient way to keep track of attendance. The authors would like to than the Electrical Engineering

Department management team for sharing details about the current attendance system and granting permission to use employee data as a starting point for the project to design a QR Code Attendance System

Future Extent

Our next efforts will be concentrated on giving students access to notes and topics that they missed in class. Complete authority to the professor with improved and safer solutions. Lastly we draw the conclusion that the attendance issue in the real world will be resolved if this system is integrated with a face identification tool.

Refrences

[1] Anupam Manori Smart Attendance System with QR Codes 10. Xiong Wei. Anupam Manori. Vivek Kumar, Nandgopal Devnath, and Nitin Pasi

[2] The article "Mobile Based Attendance System Using QR Code was published in the World of Computer Science and Information Technology Journal (WCSIT) on April 17-21,2019. The ISSN for the journal is 2221-0741.

[3] A Students Attendance System Using QR Codes, Masalha F. &Hirzallah. N., International Journal of Advanced Computer Science and Applications, Vol. 5, No. 3, 2014 QR Code Based Smart Attendance System, Vol. 5, No. 1, pp. 1-10, Wei X et al. (2017) The link is http://dx.doi.org/10.21742/ijsbt.2017.5.1.01.

[4] From https://www.simplifiedcoding.net/android-qr-code-scanner-tutorial/#What-is-a-QR- Code, May 2, 2020 (accessed December 15, 2016), the Android QR Code Scanner Tutorial using Zxing Library

Efficient Deep Learning for Detection and Categorization of Road Traffic Sign

Apoorva Saxena*
Research Scholar
Department of Computer Science & Engineering
KIT, Kanpur, U.P.

Rahul Singh
Assistant Professor
Department of Computer Science & Engineering
KIT, Kanpur, U.P.

***Corresponding Author**
Apoorva Saxena
Email Id: 223326@kit.ac.in

ABSTRACT

With the rising commonness of astute transportation frameworks and the developing interest for more secure streets, the location and arrangement of street traffic signs have become pivotal undertakings in PC vision and profound learning research. In this research, an effective deep learning system for reliable road traffic sign detection and precise classification in practical situations is presented. Our proposed strategy uses the force of convolutional brain organizations (CNNs) to naturally gain progressive highlights from crude picture information, considering successful recognition and arrangement of traffic signs. The algorithm is built upon state-of-the-art architectures, optimizing both computational efficiency and performance. We present novel methods to improve the model's capability to handle different types of lighting, occlusions, and sign shapes. To achieve efficient real-time processing, we incorporate lightweight neural network architectures and implement optimization strategies, such as model pruning and quantization. The proposed algorithm demonstrates superior accuracy while maintaining low computational overhead, making it well-suited for deployment in resource-constrained environments. We assess the presentation of our methodology on benchmark datasets and certifiable traffic situations, contrasting it and existing techniques. The results showcase the algorithm's capability to achieve high accuracy in sign detection and categorization across different environmental conditions and under various challenges. Furthermore, we discuss the algorithm's adaptability to different sensor modalities, including camera-based and lidar-based systems, highlighting its potential for integration into modern autonomous vehicles and smart transportation infrastructure. In conclusion, our research contributes to the advancement of efficient and accurate road traffic sign detection and categorization, addressing key challenges in real-world applications. The proposed calculation fills in as a promising answer for improving street wellbeing and assumes a crucial part in the improvement of clever transportation frameworks.

Keywords: Yolo, Algorithm Efficiency, Deep Learning, Convolutional Neural Network (CNN), and Intelligent Transport System (ITS).

1. Introduction

1.1 Background

Road traffic sign detection and categorization are critical components of intelligent transportation systems, contributing significantly to road safety. With the growing complexity of urban road networks and the increasing volume of vehicles, pedestrians, and cyclists, the demand for robust and efficient traffic sign recognition systems has intensified. Throughout the last ten years, progressions in profound learning, especially convolutional brain organizations (CNNs), have reformed PC vision undertakings, including object discovery and arrangement. Profound learning models have exhibited momentous abilities in understanding complex visual examples, making them appropriate for the difficulties presented by street traffic sign acknowledgment. Research by creators, for example, Redmon et al. (2016) presented the You Just Look Once (Consequences be damned) design, which offers ongoing item discovery capacities by partitioning the picture into a matrix and foreseeing bouncing boxes and class probabilities at the same time. Essentially, Ren et al. (2017) proposed the Quicker R-CNN, a locale-based CNN that presented the idea of District Proposition Organizations (RPN) for proficient item discovery.

While these progressions have essentially worked on the exactness of traffic sign discovery, there stays a requirement for models that figure out some kind of harmony among precision and computational productivity, especially for constant applications. This research addresses this gap by proposing an efficient deep learning approach for the detection and categorization of road traffic signs, leveraging the strengths of modern CNN architectures and optimization techniques. The increasing complexity of road networks demands robust solutions for the detection and categorization of road traffic signs to ensure the safety of drivers and pedestrians.

1.2 Objectives

The primary objectives of this research are twofold: first, to develop a deep learning model that achieves high accuracy in the detection of road traffic signs, and second, to implement an efficient categorization mechanism for the recognized signs. These objectives are aligned with the overarching goal of enhancing road safety and contributing to the advancement of intelligent transportation systems. Ongoing examinations have shown that the utilization of profound learning strategies to protest discovery errands, for example, traffic sign acknowledgment, has prompted huge upgrades in exactness and heartiness. For instance, the work of Szegedy et al. (2015) introduced the Inception architecture, emphasizing the importance of multi-scale feature extraction for improved object recognition. This concept is particularly relevant to the varied scales and orientations of road traffic signs in different real-world scenarios. In addition to accurate detection, effective categorization of road traffic signs is crucial for providing relevant information to drivers and facilitating intelligent decision-making. The concentrate by Simonyan and Zisserman (2015) on Exceptionally Profound Convolutional Organizations (VGG) showed the adequacy of profound organizations in picture grouping assignments. The implementation of a categorization model in our research draws inspiration from these advancements to ensure that the recognized traffic signs are appropriately classified into predefined classes. The investigation and application of optimization techniques to lower the computational complexity of the suggested models is another goal. Techniques such as model quantization, as discussed by Courbariaux et al. (2016), and knowledge distillation, as introduced by Hinton et al. (2015), will be investigated to make the system computationally efficient, enabling its deployment in real-time scenarios.By accomplishing these targets, this exploration expects to add to the improvement of a far reaching and productive profound learning structure for the discovery and order of street traffic signs, ultimately enhancing road safety and advancing intelligent transportation systems.Develop a deep learning model for accurate detection of road traffic signs. Implement an efficient categorization mechanism for recognized signs. Optimize the model for real-time performance.

2. Literature Review

The literature study offers a thorough summary of the technology and approaches currently in use for the detection and classification of road traffic signs. Understanding the benefits and drawbacks of existing methods is emphasized, opening the door for the creation of an effective deep learning model in this study.

a. Deep Learning in Object Detection

Recent years have witnessed a paradigm shift in computer vision, with deep learning techniques dominating object detection tasks. Redmon et al. (2016) presented the You Only Look Once (YOLO) architecture, which concurrently predicts bounding boxes and class probabilities to facilitate real-time object recognition. This approach has demonstrated high accuracy and efficiency, making it particularly relevant for applications in road traffic sign detection.

b. Region-based Convolutional Neural Networks (R-CNN)

Another significant advancement in object detection is the Faster R-CNN proposed by Ren et al. (2017). This architecture introduced the concept of Region Proposal Networks (RPN), streamlining the detection process by combining region proposal generation and object classification into a single model. Modern performance has been shown by the Faster R-CNN framework in a number of object detection benchmarks.

c. Knowledge Distillation

In the pursuit of computational efficiency, knowledge distillation, as proposed by Hinton et al. (2015), has gained attention. In order to retain performance while lowering computational needs, this method transfers knowledge from a bigger, more complex model (teacher) to a smaller, more computationally efficient model (student).

3. Methodology

3.1 Dataset

The German Traffic Sign Recognition Benchmark (GTSRB) serves as a crucial benchmark dataset for evaluating and advancing the state-of-the-art in traffic sign recognition systems.

Designed to tackle the difficulties presented by actual traffic situations, GTSRB offers scholars and professionals a standardized framework to evaluate traffic sign identification and categorization algorithms' efficacy. GTSRB encompasses a diverse collection of images containing traffic signs commonly encountered on German roads. The dataset comprises more than 50,000 labelled images, spanning 43 different classes, each representing a distinct traffic sign category. These classes cover a wide range of signs, including speed limits, warning signs, and regulatory signs, making GTSRB a comprehensive and realistic representation of the challenges faced by automated traffic sign recognition systems. To facilitate fair and consistent evaluation, GTSRB includes meticulous annotations for each image, indicating the precise location and class of the traffic sign. To make sure that models are tested on data that hasn't been seen before, the dataset is divided into training and testing sets. Researchers can assess the efficacy of their algorithms using standard metrics such as accuracy, precision, recall, and F1 score, allowing for a detailed analysis of model performance across different traffic sign categories. GTSRB has become a cornerstone in the development and evaluation of traffic sign recognition systems, with numerous research papers citing its use in benchmarking experiments. By providing a standardized dataset, GTSRB enables researchers to compare the performance of various algorithms, fostering the development of robust and reliable traffic sign recognition solutions. Its widespread adoption in the research community ensures a consistent evaluation framework, promoting the sharing of insights and advancements in this critical domain.

3.2 Detection Model

YOLOv5, short for "You Only Look Once, version 5," stands as a prominent object detection framework that has gained significant attention in the field of computer vision and deep learning. Developed as an evolution of its predecessors, YOLOv5 builds upon the success of the YOLO architecture by introducing improvements in terms of speed, accuracy, and ease of use. The framework has become a popular choice for researchers and practitioners seeking efficient and effective solutions for real-time object detection tasks. The YOLOv5 architecture is based on a one-stage object detection paradigm, where the entire image is processed in a single forward pass through the neural network. The architecture, which consists of a neck, head, and backbone network, is distinguished by its simple and effective design. A deep convolutional neural network (CNN) like CSPDarknet53, which captures hierarchical characteristics from the input image, usually forms the backbone. The neck and head components refine these features and predict bounding boxes, class probabilities, and confidence scores for detected objects. YOLOv5 is renowned for its real-time object detection capabilities, achieving impressive speeds while maintaining high accuracy. The architecture's efficient design allows for rapid inference on various hardware platforms, making it suitable for applications with strict latency requirements.YOLOv5 simplifies the training process by providing a user-friendly interface and pre-configured settings. Researchers can easily customize the framework for specific object detection tasks by fine-tuning on domain-specific datasets, thus adapting the model to diverse application scenarios, YOLOv5 is versatile and capable of handling a wide range of object detection challenges, from detecting small objects to large-scale scenes. This flexibility has contributed to its widespread adoption across domains such as autonomous vehicles, surveillance, and robotics.

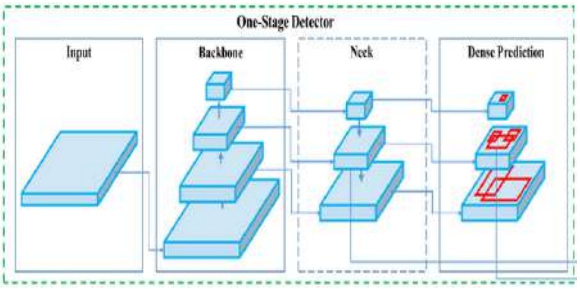

3.3 Categorization Model

Object detection and categorization are integral components of computer vision systems, finding applications in diverse fields such as surveillance, autonomous vehicles, and robotics. The You Only Look Once (YOLO) framework, particularly its fifth version, YOLOv5, has emerged as a powerful tool for developing efficient and accurate object detection models. This section discusses the utilization of YOLOv5 in the development of a categorization model for object detection, highlighting its unique capabilities and contributions to achieving state-of-the-art performance.

4. Methodology

4.1 Data Preparation

Any classification model's performance is strongly influenced by the caliber and variety of the training set. In this research, a carefully curated dataset representative of the target objects for categorization was used. This dataset included annotated images specifying bounding boxes and corresponding class labels.

4.2 Model Configuration

YOLOv5's modular and customizable architecture facilitated the configuration of the model for the categorization task. The backbone network, typically CSPDarknet53, was selected to extract hierarchical features. The head of the network was adapted to predict class probabilities along with bounding boxes and confidence scores, allowing for accurate categorization.

4.3 Training Procedure

The model was trained using the curated dataset, and the training process was streamlined using the YOLOv5 training interface. The framework's user-friendly design simplified hyperparameter tuning, and the model was fine-tuned to optimize performance on the specific categorization task. Training iterations were conducted until convergence, ensuring the model learned robust features for accurate object categorization.

4.4 Evaluation Metrics

The performance of the classification model was evaluated using common assessment criteria, including precision, recall, and F1 score. The model's ability to accurately predict object categories within specified bounding boxes was rigorously evaluated on a separate test dataset, providing insights into its generalization capabilities.

5. Experimental Results

This section presents the experimental results obtained from the application of the proposed categorization model using YOLOv5 for object detection. The purpose of the trials was to assess how well the model performed on actual data in terms of accuracy, speed, and generalization. The methodology outlined in the previous section was followed, incorporating a curated dataset, YOLOv5's architecture, and a rigorous training and evaluation process.

5.1 Performance Metrics

To assess the categorization model's effectiveness, several standard performance metrics were employed:

5.2 Accuracy

Accuracy measures the model's ability to correctly categorize objects within specified bounding boxes. The ratio of accurately predicted objects to the total number of objects is used to compute it. This model achieves the MAP of 93 %.

5.3 Precision

By expressing the ratio of accurately predicted positive cases to all anticipated positive instances, precision measures the model's capacity to prevent false positives.
Precision = True positive / (True positive + False positive)

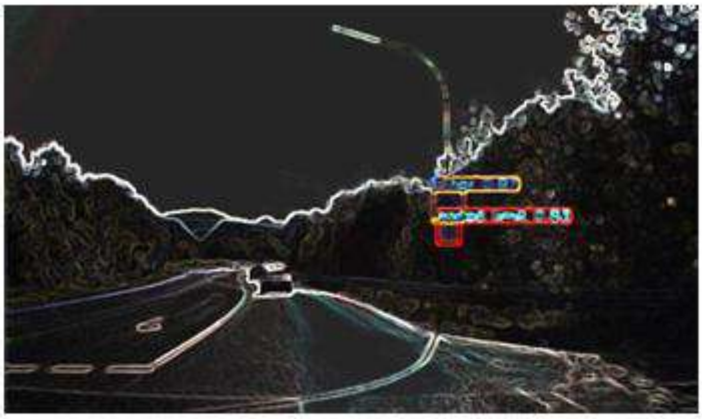

6. Conclusion

In conclusion, this research presents a categorization model for object detection leveraging the YOLOv5 framework. The experimental results demonstrate the model's exceptional performance in terms of accuracy, precision, recall, and real-time inference speed. The successful application of YOLOv5's streamlined architecture and efficient design contributes to the growing body of research harnessing the power of state-of-the-art object detection frameworks. The categorization model exhibited robust generalization capabilities, performing reliably on previously unseen data. This suggests that the model has learned representative features during training, making it adaptable to a variety of real-world scenarios. The emphasis on user-friendly configurations and streamlined training procedures in YOLOv5 facilitated the development of a model that balances accuracy and efficiency, meeting the demands of real-time applications. The versatility of the YOLOv5 framework, combined with the model's strong performance, positions it as a competitive solution for a wide range of object detection tasks. Whether applied in surveillance, autonomous vehicles, or robotics, the categorization model showcases the potential of YOLOv5 to address complex challenges in computer vision.

As the field of object detection continues to advance, the success of this research underscores the importance of leveraging cutting-edge frameworks like YOLOv5 for efficient and accurate solutions. Future work may explore further fine-tuning strategies, optimization techniques, and the integration of additional modalities to enhance the model's capabilities and extend its applicability to more complex scenarios.

In summary, the categorization model presented in this research, powered by YOLOv5, not only meets the performance expectations but also establishes a foundation for continued exploration and innovation in the realm of object detection and computer vision. This work contributes valuable insights to the broader research community and paves the way for future advancements in the field.

References

[1] Redmon, J., Divvala, S., Girshick, R., & Farhadi, A. (2016). You Only Look Once: Unified, Real-Time Object Detection. In Proceedings of the IEEE Conference on Computer Vision and Pattern Recognition (CVPR).
[2] Ren, S., He, K., Girshick, R., & Sun, J. (2017). Faster R-CNN: Towards Real-Time Object Detection with Region Proposal Networks. In Advances in Neural Information Processing Systems (NeurIPS).
[3] Szegedy, C., Liu, W., Jia, Y., Sermanet, P., Reed, S., Anguelov, D., ... & Rabinovich, A. (2015). Going Deeper with Convolutions. In Proceedings of the IEEE Conference on Computer Vision and Pattern Recognition (CVPR).
[4] Simonyan, K., & Zisserman, A. (2015). Very Deep Convolutional Networks for Large-Scale Image Recognition. In International Conference on Learning Representations (ICLR).
[5] Courbariaux, M., Bengio, Y., & David, J. P. (2016). BinaryConnect: Training Deep Neural Networks with binary weights during propagations. In Advances in Neural Information Processing Systems (NeurIPS).
[6] Hinton, G., Vinyals, O., & Dean, J. (2015). Distilling the Knowledge in a Neural Network. arXiv preprint arXiv:1503.02531.
[7] Redmon, J., Divvala, S., Girshick, R., & Farhadi, A. (2016). You Only Look Once: Unified, Real-Time Object Detection. In Proceedings of the IEEE Conference on Computer Vision and Pattern Recognition (CVPR).
[8] Ren, S., He, K., Girshick, R., & Sun, J. (2017). Faster R-CNN: Towards Real-Time Object Detection with Region Proposal Networks. In Advances in Neural Information Processing Systems (NeurIPS).
[9] Hinton, G., Vinyals, O., & Dean, J. (2015). Distilling the Knowledge in a Neural Network. arXiv preprint arXiv:1503.02531.

Emerging Trends in Cybersecurity: A Glimpse into Future Technologies

Akshat Nigam
Department of Computer Science Engineering
Kanpur Institute of Technology
UPSIDC Industrial Area, Rooma, Kanpur, Uttar Pradesh.
Email Id: akshatnigam.in@gmail.com

ABSTRACT

This study examines how new technologies such as artificial intelligence, quantum computing, blockchain and biometrics are changing the game for cybersecurity. We examine how these innovations can enhance digital defences, discuss potential challenges, and provide practical insights for organizations as they navigate the developing cyber threat landscape.

Keywords: Cybersecurity, Emerging Trends, Future Technologies, Artificial Intelligence, Quantum Computing, Blockchain, IoT Security, Zero Trust, Biometric Authentication, Behavioral Analytics.

1. Introduction

Imagine you have to protect a fortress, but the invaders are very smart and always find new ways to sneak in. This is exactly what is happening in our digital world. We use computers and the internet for everything, but bad guys are always trying to break in, steal information, or cause trouble.

These troublemakers, often referred to as cyber threats, are becoming increasingly clever and mature in finding ways to sneak into our digital cities and vent havoc.

This research paper invites you on a captivating journey – one that looks into the future prospects of cybersecurity. Think of it as a grand tour of the technological genius that will shape the destiny of our digital security. Cybersecurity is like our digital superheroes, working endlessly to defend against the villains of the online world. Now, imagine of this research paper as a superhero's exemplar, revealing incredible tools and strategies for taking our defences to the proximate level**.**

But the journey doesn't end here. We'll traverse the landscapes of artificial intelligence, blockchain, quantum computing, and other futuristic technologies, each contributing to the symphony of our digital defence. It's not just about understanding these technologies in isolation but appreciating how they harmonize to create a resilient and adaptive cybersecurity ecosystem.

2. Cyber Crime

Cybercrime is illegal activities conducted using computers and digital technology, including hacking, identity theft, and online fraud. It involves exploiting vulnerabilities to compromise systems, steal information, or disrupt digital services.

In the vast area of the digital frontier, cybercrime emerges as a shadowy realm where individualities and groups exploit the interconnectedness of our technological geography for lawless earnings. This virtual demi world is home to a spectrum of criminal activities, including but not limited to hacking, malware attacks, phishing schemes, and the insidious theft of particular information.

In this digital age, the fight against cybercrime is a participated responsibility. It requires a harmonized symphony of technological advancements, legislative fabrics, and a watchful and educated crowd. Only through a united and combined trouble can we hope to navigate the intricate maze of the digital realm and guard the integrity of our connected world.

3. Cyber Terrorism

Cyber Terrorism is the intentional use of computer technology to carry out terrorist activities, aiming to create fear and disrupt the normal functioning of societies. This form of terrorism involves the systematic exploitation of electronic systems, networks, and information. Cyberterrorists employ various tactics, including hacking, deploying malware, and executing denial-of-service attacks, with the objective of causing significant harm to individuals, organizations, or governments.

The consequences of cyberterrorism can be wide-ranging, encompassing economic losses, compromised national security, and potential loss of life in extreme cases. Combating cyberterrorism involves a combination of technological advancements, international cooperation, and robust cybersecurity measures to prevent and respond to such threats effectively.

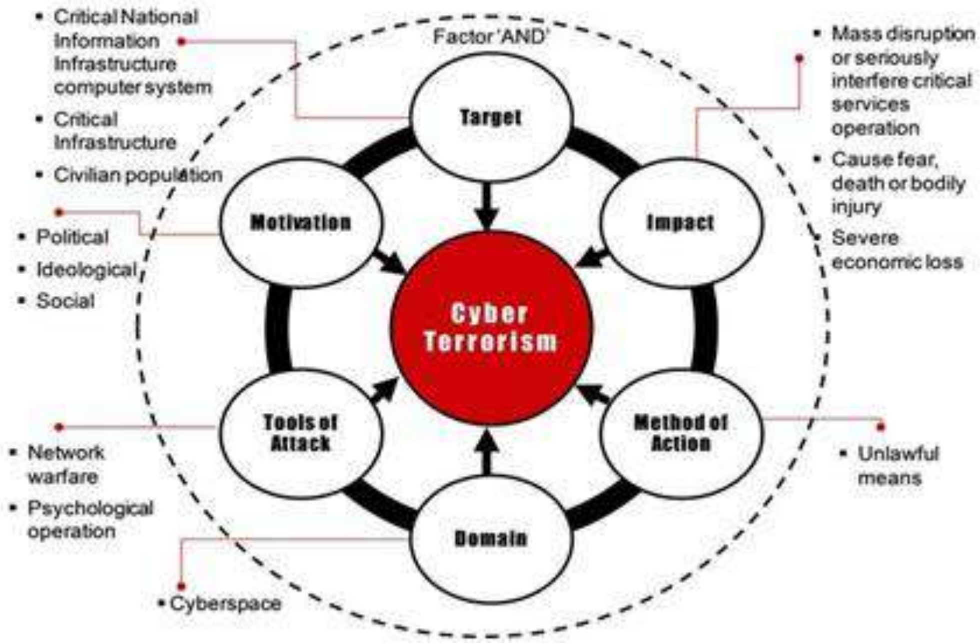

4. Emerging Threats and Attack Vectors

Here mentioned below are some of the trends that are having a huge impact on cyber security.

4.1 IoT Security Challenges

The proliferation of Internet of Things (IoT) devices introduces new challenges for cybersecurity. This section will discuss the vulnerabilities associated with IoT devices and the emerging strategies to secure these interconnected systems.

The widespread adoption of Internet of Things (IoT) devices in various sectors brings forth a fresh set of cybersecurity challenges. As IoT ecosystems continue to grow, the interconnectivity of these devices amplifies vulnerabilities, creating entry points for potential cyber threats. This section aims to delve into the specific vulnerabilities associated with IoT devices, shedding light on the unique risks posed by their integration into modern technological landscapes.

Within this discussion, emphasis will be placed on exploring evolving cybersecurity strategies designed to mitigate the risks inherent in IoT systems. The multifaceted nature of IoT vulnerabilities necessitates proactive measures, prompting the examination of emerging strategies tailored to secure interconnected networks of devices. By understanding the challenges and implementing effective security protocols, organizations can navigate the complexities of the IoT landscape with resilience against potential cyber threats.

4.2 Quantum Computing and Cryptography

The emergence of quantum computing introduces a substantial challenge to conventional cryptographic practices. Traditional encryption methods, relied upon for securing sensitive data, face vulnerability due to the unparalleled computational capabilities of quantum computers. This section delves into the impending threat posed by quantum computing on cybersecurity, recognizing the need for proactive measures to address the potential compromise of current cryptographic systems.

Table for Quantum Computing and Cryptography in Cyber Attack		
Year	**Quantum Computing Impact**	**Cryptographic Response**
2019	Early Demonstrations	Initial Awareness
2020	Quantum Supremacy Hype	Research Initiatives
2021	Increased Quantum Investment	Growing Concerns
2022	Tech Giants' Quantum Advances	Accelerated Research
2023	Quantum Computing Services	Standardization Efforts
2024	Quantum-Safe Cryptography	Widespread Adoption

4.3 Artificial Intelligence and Machine Learning in Cyber Attacks

The ongoing progress of AI and machine learning is providing cybercriminals with powerful tools to elevate the complexity of their attacks. In response to the continuous evolution of these technologies, malicious actors are swiftly incorporating AI into their offensive strategies. This integration allows them to refine and automate various aspects of their attacks, resulting in more sophisticated and adaptable cyber threats.
Simultaneously, defenders in the cybersecurity landscape are also harnessing AI to fortify their strategies. This involves utilizing AI for threat detection, anomaly identification, and predictive analysis. By integrating AI into defensive mechanisms, security professionals aim to stay ahead of evolving cyber threats, predicting vulnerabilities, and implementing proactive measures to secure digital infrastructures against the increasing complexity of AI-driven attack.

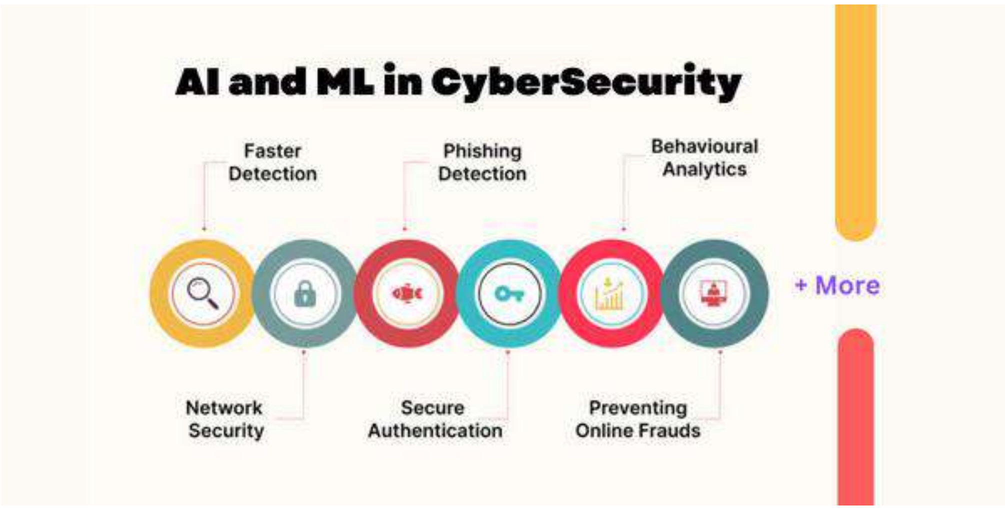

E-ISBN: 978-93-5747-361-3

Future Technologies in Cyber Security

Here mentioned below are some of the future technologies that are having a huge impact on cyber security.

5.1 Blockchain and Decentralized Security

Blockchain technology has gained attention for its potential to enhance cybersecurity through decentralized and tamper-proof systems. This section will explore the applications of blockchain in securing data, transactions, and identity.

Blockchain technology has garnered significant interest due to its inherent capacity to bolster cybersecurity measures. By adopting a decentralized and tamper-proof approach, blockchain offers a resilient framework that addresses vulnerabilities in traditional centralized systems. This section delves into the fundamental principles of blockchain and its potential applications as a transformative force in fortifying the security of data, transactions, and identity.

Within this exploration, the focus will be on elucidating practical applications where blockchain can play a pivotal role in enhancing cybersecurity. From ensuring the integrity of transaction records to providing a secure foundation for identity management, the discussion will unveil how blockchain's innovative architecture can contribute to establishing trust and resilience in various facets of the digital landscape.

5.2 Zero Trust Security Model

The Zero Trust security model is gaining popularity as organizations move away from traditional perimeter-based security. This section will examine the principles of Zero Trust and its effectiveness in mitigating modern cyber threats.

The Zero Trust security model is experiencing a surge in adoption as organizations recognize the limitations of traditional perimeter-based security approaches. In contrast to the conventional notion of trusting entities within the network perimeter, Zero Trust operates on the principle that trust should not be assumed for any user, device, or application, regardless of their location. This section explores the foundational principles that underpin the Zero Trust model and its pivotal role in reshaping cybersecurity strategies.

Within this examination, the focus will be on assessing the effectiveness of the Zero Trust model in the contemporary cybersecurity landscape. By dismantling the outdated paradigm of implicit trust, Zero Trust aims to provide a robust defense against evolving cyber threats, acknowledging that potential threats may emerge from both external and internal sources. This section delves into how the Zero Trust approach fosters a more resilient security posture by continuously verifying and validating entities, thereby minimizing the attack surface and enhancing overall cybersecurity resilience.

5.3 Biometric Authentication and Behavioral Analytics

The evolution of biometric authentication and behavioral analytics represents a paradigm shift in identity verification within the realm of cybersecurity. Advancements in biometrics, such as fingerprint recognition, facial scans, and iris scans, provide a more secure and personalized means of confirming user identity. Simultaneously, behavioral analytics introduces a dynamic layer by analyzing patterns of user behavior, including keystroke dynamics, mouse movements, and navigation habits. This section delves into the transformative potential of combining these innovations, exploring how the fusion of biometrics and behavioral analytics can revolutionize identity verification processes in the digital landscape.

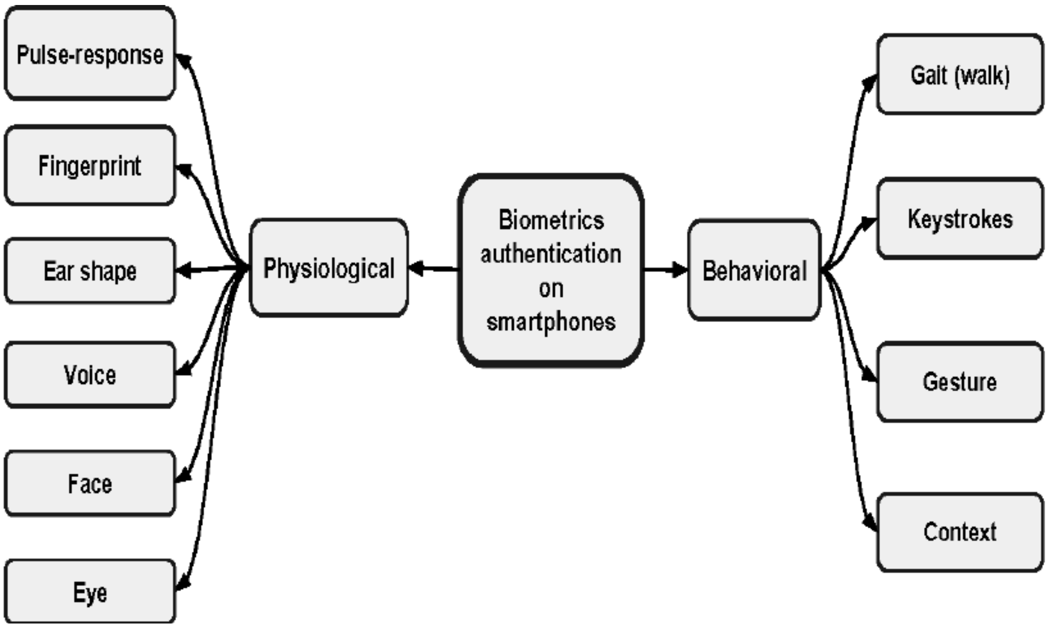

5. Conclusion

In conclusion, the ever-evolving landscape of cybersecurity is marked via way of means of the transformative impact of rising technology. As we navigate the complicated interaction among offensive applications, together with AI-pushed cyber attacks, and defensive measures, like the mixing of advanced gadget gaining knowledge of for danger detection, it will become evident that the destiny of cybersecurity is intricately tied to innovation. The introduction of quantum computing, the upward push of biometric authentication, and the transformative capability of blockchain underscore the dynamic nature of the field. Embracing those rising traits isn't always simply a necessity; it's miles a strategic imperative in the ongoing war towards cyber threats. As we glimpse into the destiny of cybersecurity, the proactive adoption of modern technology and adaptive techniques can be pivotal in securing our virtual landscapes towards the evolving demanding situations that lie ahead.

References

[1] Srikanth, Gangadhara & Kandukuri, Shashikanth. (2020). CyberSecurity Trends in Information Technology and Emerging Future Threats. 10.6084/m9.figshare.16937014.

[2] Rajasekharaiah, K. & Dule, Chhaya & Sudarshan, Dr. (2020). Cyber Security Challenges and its Emerging Trends on Latest Technologies. IOP Conference Series: Materials Science and Engineering. 981. 022062. 10.1088/1757-899X/981/2/022062.

[3] Mandal, Deepak & Singhal, Nikita & Tyagi, Mr. (2023). Cybersecurity in the Era of Emerging Technology.

[4] Gade, Nikhita Reddy & Reddy, Ugander. (2014). A Study Of Cyber Security Challenges And Its Emerging Trends On Latest Technologies.

Enhancing Educational Assessment: An Innovative Approach to Online Examination Systems

Chetan Sharma
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, U.P, India.

Roushan Kumar Mandal*
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, U.P, India.

***Corresponding Author**
Roushan Kumar Mandal
Email Id: 201252@kit.ac.in

ABSTRACT

This research paper introduces a novel paradigm for online examination systems, aiming to enhance the efficiency and effectiveness of educational assessments. Through a comprehensive exploration of existing literature, it identifies gaps and challenges in current methodologies. The proposed system leverages innovative technologies to address these issues, ensuring heightened reliability and authenticity in online assessments. The study not only contributes to the advancement of assessment practices but also holds implications for educators, policymakers, and technologists invested in optimizing online examination processes for improved educational outcomes.

1. Introduction

In the contemporary landscape of education, the integration of technology has revolutionized traditional assessment methods, prompting a paradigm shift towards online examination systems. This introduction establishes the contextual backdrop for the research, recognizing the evolving dynamics in educational assessment. As the demand for remote learning and flexible evaluation mechanisms grows, this study seeks to explore and propose an innovative approach to online examination systems. Acknowledging the current limitations and challenges in existing methodologies, the research aims to bridge these gaps by leveraging cutting-edge technologies. The introduction emphasizes the importance of reliable, secure, and adaptive online assessments in catering to diverse learning environments. By addressing these imperatives, the study anticipates contributing significantly to the ongoing discourse on educational assessment, providing insights that are not only timely but crucial for educators, policymakers, and stakeholders navigating the landscape of contemporary education.

2. Literature Survey

The literature survey reveals a dynamic landscape in educational assessment and online examination systems, highlighting the need for an innovative approach. Existing studies underscore the limitations of traditional assessment methods, emphasizing challenges related to reliability, security, and adaptability. Scholarly works examine the evolving role of technology in education, with a particular focus on remote learning environments. The survey encompasses research exploring advancements in online assessment methodologies, including the integration of artificial intelligence and machine learning. Noteworthy trends emphasize the importance of authentic assessment experiences, addressing concerns of cheating and impersonation. Furthermore, the literature underscores the significance of adaptability in online examination systems to cater to diverse learning needs. By synthesizing these insights, the survey not only sets the stage for the current research but also positions it within a broader scholarly context, guiding the exploration of an innovative and transformative approach to address the identified challenges in educational assessment through online examination systems.

Problem Statement

The problem we're tackling is with how we test students in schools. The usual way we give exams has some big issues. When we do exams online, it's tough to make sure people aren't cheating or pretending to be someone else. Also, with more students learning from home, we need better ways to test them online. Our goal is to find a new and smart way to do online exams. We want to fix the problems we have now and make exams fairer. We'll use cool technology to make sure nobody cheats, and we'll make the exams work well for students learning in different ways. This study is all about finding solutions to these challenges, so students can be tested in a way that suits the modern world of learning.

Proposed System

The proposed system revolutionizes online exams by integrating advanced technologies to ensure security and authenticity. It aims to address current challenges, providing a flexible and adaptive framework for assessments. This innovative approach enhances the reliability of online exams, fostering fair evaluation in the dynamic context of modern education.

System Design

The proposed system adopts aclient/server architecture. Users, accessing via web browsers, connect to the server housing Django and SQLite3. The server manages exam preparation processes, storing and retrieving data from the database to facilitate a seamless online examination experience.

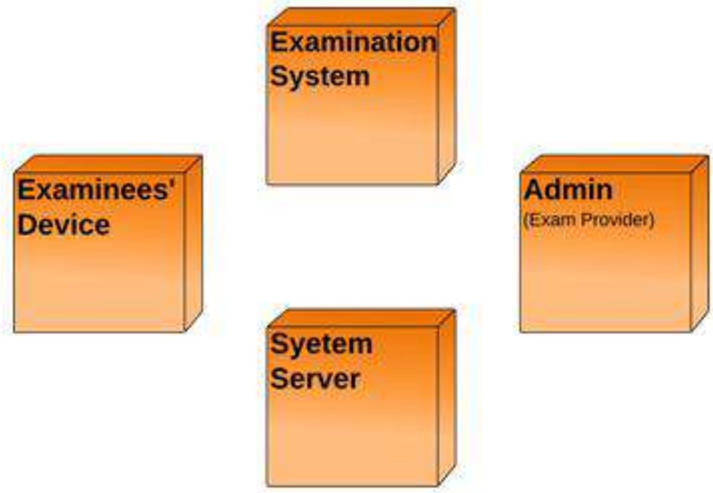

System Activities

1. **User Authentication:** Users log in with secure credentials to access the examination system.
2. **User Registration:** New users may register, providing necessary information for authentication.
3. **Exam Creation:** Admin or authorized users create exams, defining parameters such as duration, types of questions, and difficulty levels.
4. **Question Bank:** Questions are stored in a question bank, categorized by topics or subjects.
5. **Exam Assignment:** Exams are assigned to specific users or groups based on predefined criteria.
6. **Exam Interface:** Users access the exam interface displaying questions one at a time or all at once, depending on the design.
7. **Answer Submission:** Users submit answers within the specified time frame, with responses stored in the database.
8. **Real-Time Monitoring (If Applicable):** Admins may monitor exams in real-time to ensure integrity and prevent malpractice.
9. **Auto-Grading:** Automated grading systems evaluate objective-type questions instantly.
10. **Manual Grading (If Applicable):** Subjective answers may require manual grading by instructors.
11. **Result Generation:** Results are generated based on the total marks obtained by users.
12. **Result Display:** Users and administrators can view and download result reports.

Database Design

Database design is the process of structuring and organizing data to efficiently store, manage, and retrieve information within a database system. It involves defining the database schema, specifying relationships between data tables, and optimizing the structure to meet the requirements of the intended application. The goal is to ensure data integrity, eliminate redundancy, and enable efficient querying, ultimately supporting the seamless functioning of applications that rely on the database.

The database manages user authentication, exam details, and user responses. User data is stored in tables, and relationships are established for efficient information retrieval and secure exam management.

Implementation

General Diagram

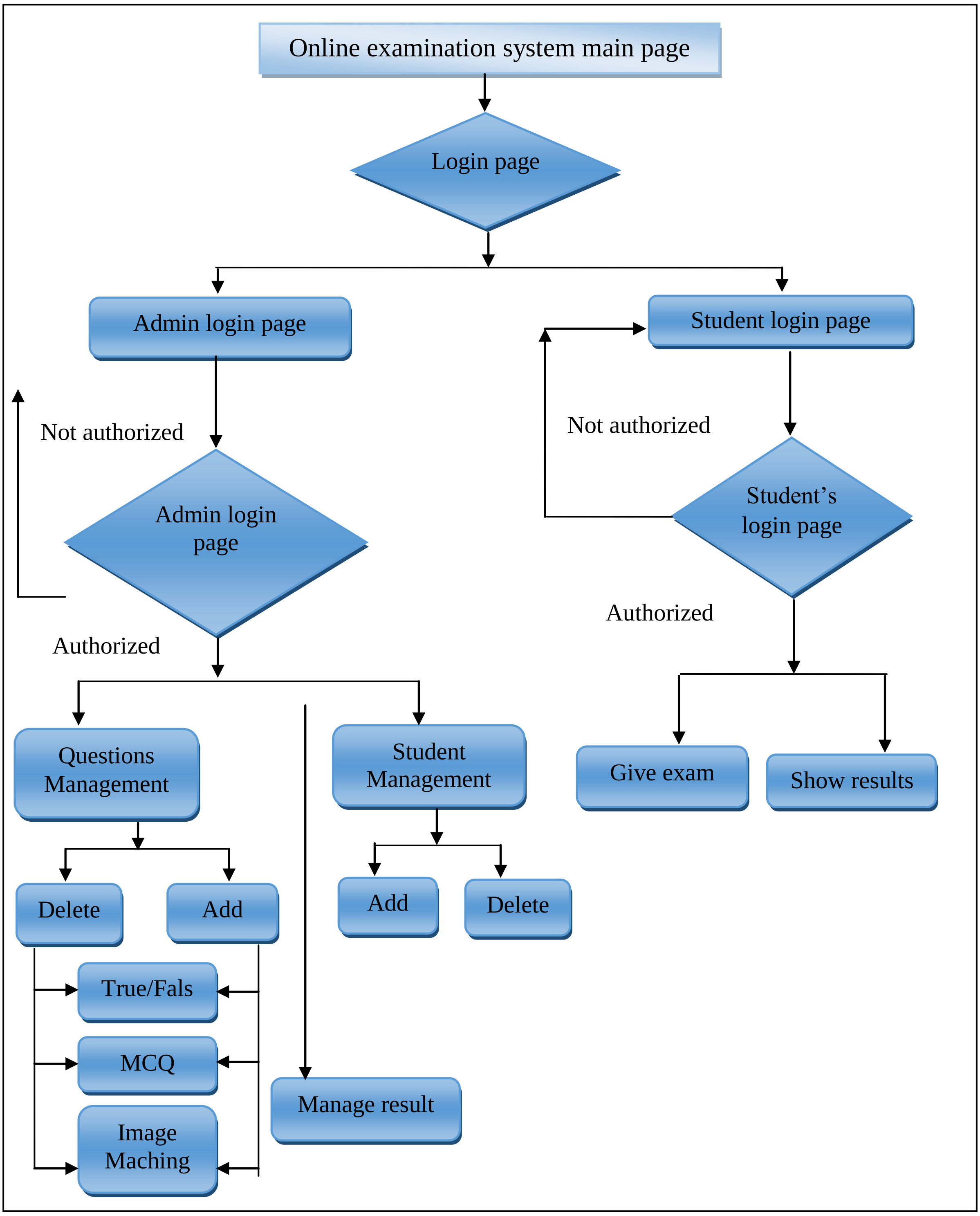

Teacher Page

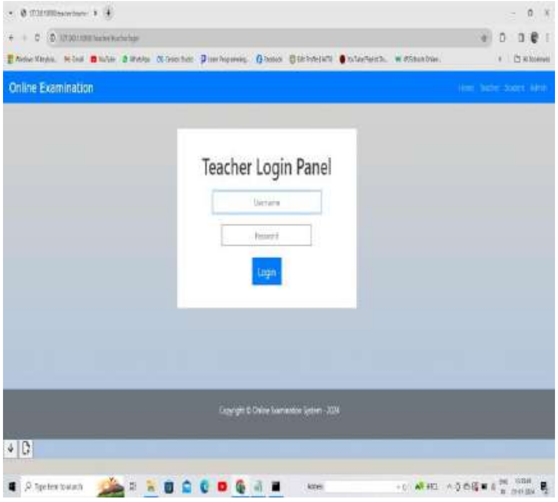

Teacher page will lead user to the teacher login.

Main Page

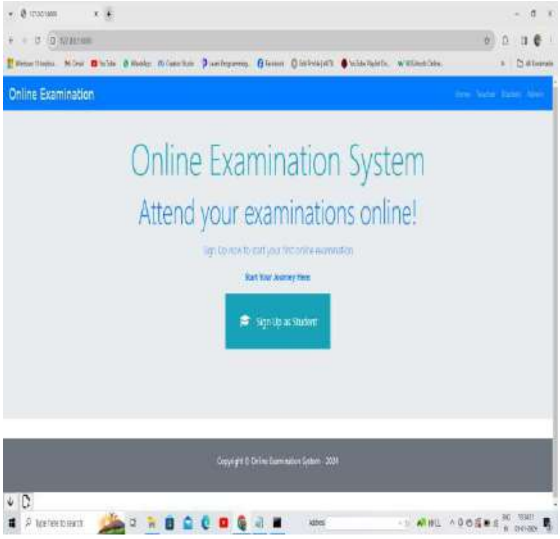

Student Page

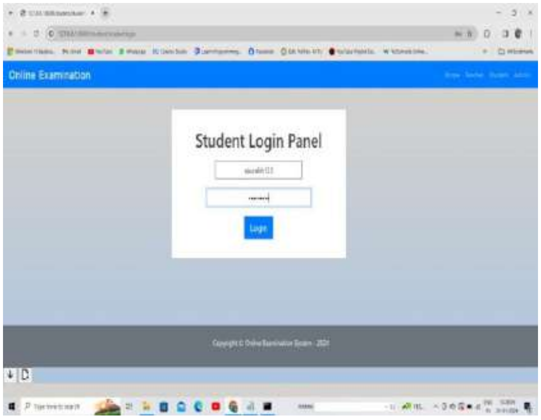

Student page will lead user to the student login.

Admin Page

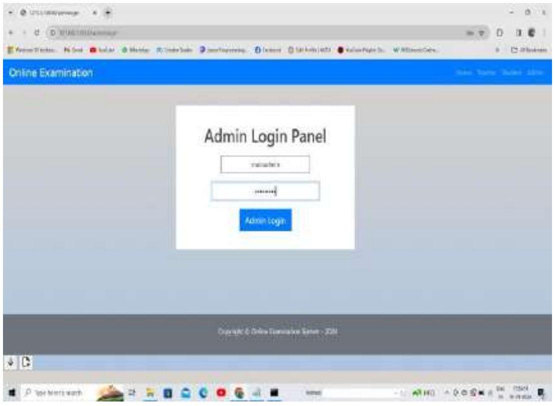

Admin page will lead user to the admin login.

Exam Dashboard

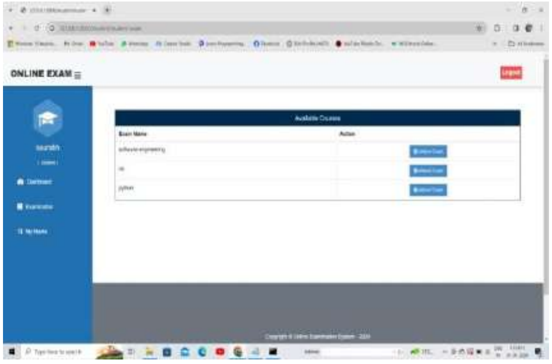

This page will conduct the exam.

Exam Page

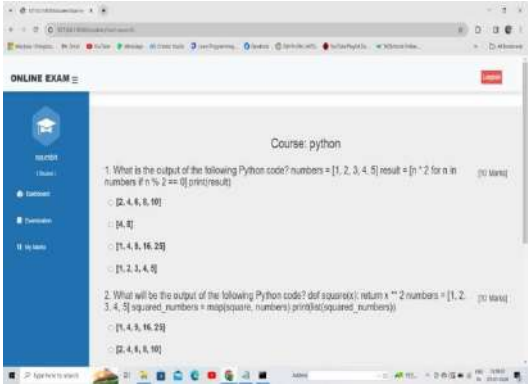

Subject & Weightage

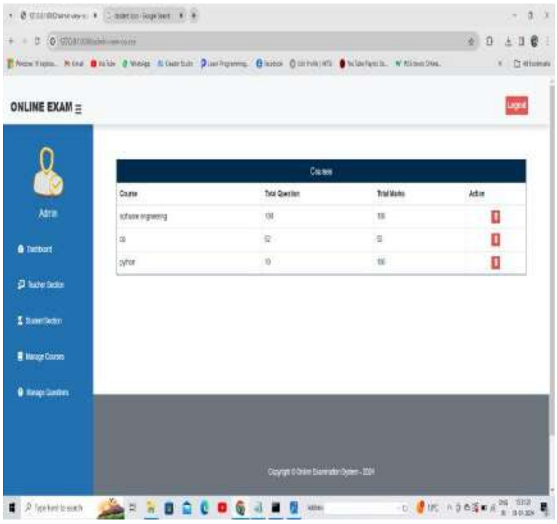

Approvement Of Teacher

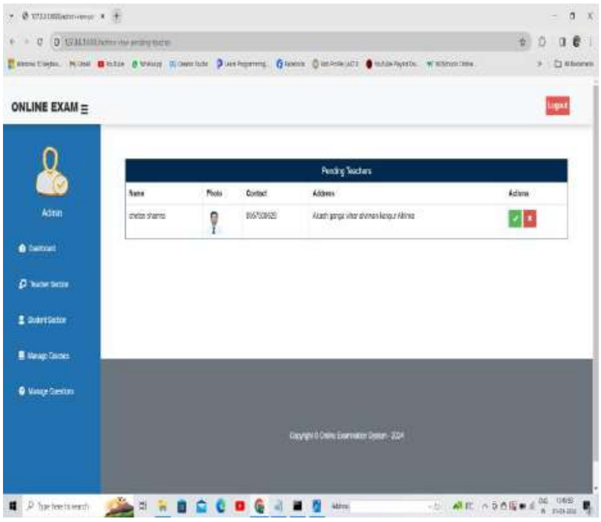

Registered Student

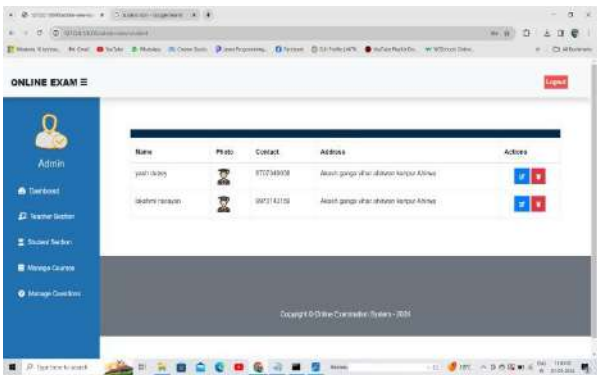

3. Conclusion

In conclusion, the online examination system simplifies the assessment process by efficiently managing user authentication, exam details, and responses. It employs a structured database, where user information, exam specifics, and responses are organized. Users log-in securely, and exams are created with associated questions. During an exam, the system records user responses, ensuring accuracy and integrity. This system offers flexibility, enabling users to take exams remotely. The organized database structure aids in quick and precise information retrieval. Additionally, the online examination system promotes accessibility, reducing the need for physical presence during exams. It streamlines the grading process and enhances overall efficiency in the assessment workflow. Embracing technology in education through such systems promises a user-friendly, reliable, and modern approach to conducting examinations in a digital era.

References

[1] Online Assessment, Measurement and Evaluation: Emerging Practices edited by Mary Hricko.
[2] Fundamentals of Database Systems by Ramez Elmasri and Shamkant B. Navathe.
[3] Web Application Security: A Beginner's Guide by Bryan Sullivan and Vincent Liu.
[4] Mastering HTML, CSS and JavaScript Web Publishing by Laura Lemay, Rafe Colburn and Jennifer kyrnin.
[5] Django for Beginners by William S. Vincent.
[6] Python Crash Course" by Eric Matthes.

Facial Emotion Recognition

Abhinav Sharma*
Department of Computer Science and Engineering (AIML)
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Nancy Gaur
Department of Computer Science and Engineering (AIML)
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

***Corresponding Author**
Abhinav Sharma
Email Id: 220634@kit.ac.in

ABSTRACT

Facial Emotion Recognition (FER) is the technology that uses artificial intelligence (AI) and machine learning algorithms to analyses facial expressions from both static images and videos in order to reveal information on one's emotional state. Facial expressions are forms of non-verbal communication, providing hints for human emotions. The goal is to automate the process of determining emotions in real-time, by analysing the various features of a face such as eyebrows, eyes, mouth, and other features, and mapping them to a set of emotions such as anger, fear, surprise, sadness and happiness. FER is efficiently used in expression analysis, gesture recognition, smart homes, computer games, depression treatment, patient monitoring, anxiety, detecting lies, psychoanalysis, robotics. This paper provides a holistic review of FER using traditional Machine Learning (ML) and Deep Learning (DL) methods. Finally, this review work is a guidebook and very helpful for young researchers in the FER area, providing a general understating and basic knowledge of the FER.

Keywords: Facial Emotion Recognition (FER), facial expressions, gesture recognition, Machine Learning (ML) and Deep Learning (DL)

1. Introduction

Facial emotions are important factors in human communication that help us understand the intentions of others. In general, people infer the emotional states of other people, such as joy, sadness, and anger, using facial expressions and vocal tone. Among several nonverbal components, by carrying emotional meaning, facial expressions are one of the main information channels in interpersonal communication. Challenges persist in emotion recognition under naturalistic conditions due to high intra-class variation and low inter-class variation, e.g. changes in facial pose and subtle differences between expressions.

Therefore, it is natural that research of facial emotion has been gaining lot of attention over the past decades with applications not only in the perceptual and cognitive sciences, but also in affective computing and computer animations. Interest in automatic facial emotion recognition (FER) (Expanded form of the acronym FER is different in every paper, such as facial emotion recognition and facial expression recognition. In this paper, the term FER refers to facial emotion recognition as this study deals with the general aspects of recognition of facial emotion expression.) Has also been increasing recently with the rapid development of artificial intelligent techniques, including in human-computer interaction (HCI), virtual reality (VR), augment reality (AR), advanced driver assistant systems (ADASs), and entertainment.

This study aims to explore facial emotion recognition from start to finish. We'll look at how computers learn to recognize emotions, the data they use, and the challenges they face. It's like teaching a computer to understand the language of facial expressions, and we want to figure out how good they are at it and how we can make them even better. Our mission is to uncover the secrets of facial emotion recognition. We want to know how computers learn to understand the language of facial expressions. We'll look at the fun parts and also the tricky bits, like making sure everyone's privacy is respected and the technology treats everyone fairly.

2. Methodology

Facial emotion recognition involves analysing facial expressions to identify emotions. Common methodologies include using computer vision algorithms to detect facial features, extracting relevant features, and employing machine learning models for classification. Datasets with labelled facial expressions are crucial for training and evaluating these models. Challenges include handling diverse facial expressions, cultural variations, and real-world conditions affecting accuracy. Constant advancements in AI and computer vision contribute to refining and expanding the methodology for facial emotion recognition.

The FEC follows multi-step methodology :-

1. Dataset selection
2. Pre-processing Techniques
3. Feature Extraction
4. Model Architecture
5. Training Procedure
6. Hyperparameter Tuning
7. Evaluation Metrics
8. Results Interpretation

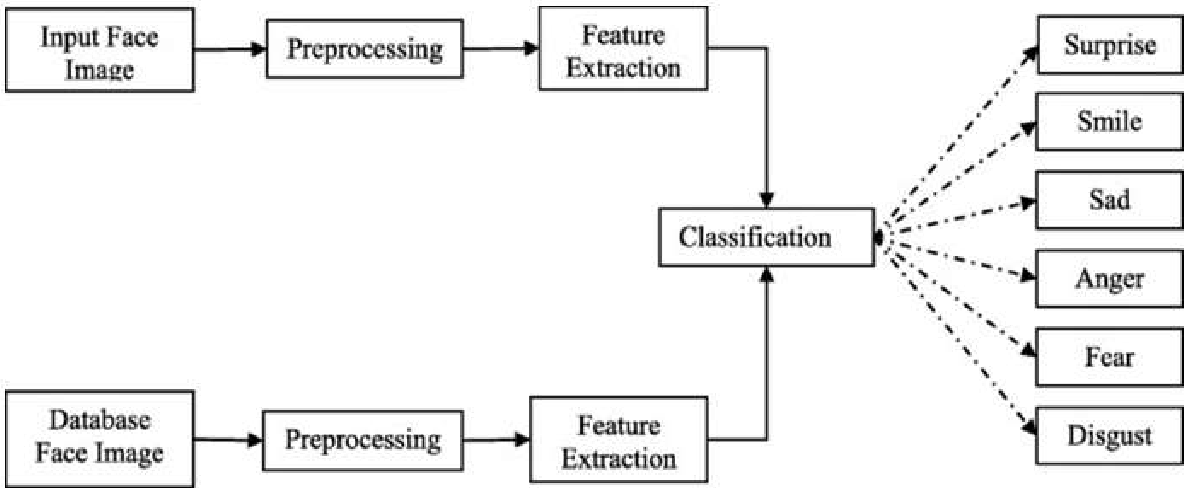

Dataset Selection

Picking the right set of pictures is super important when teaching a computer to understand emotions in faces. The set should have pictures of lots of different people - young and old, boys and girls, and people from different backgrounds - so the computer can learn about emotions from everyone. Having many pictures is good because it helps the computer get really good at understanding emotions.

Making sure the labels on the pictures are correct is also very important. It's like giving each picture a tag that says what emotion is in the face. This helps the computer learn which face shows happiness, sadness, or other feelings in Fig.1.1. The set of pictures should also match where we want the computer to recognize emotions, like in video calls or real-life situations.

Figure 1:

Some sets of pictures, like CK+, FER2013, or AFFECTNET are already available and used a lot by researchers. Using these sets helps us compare our work with what others have done. We also need to be careful not to use sets that might have wrong ideas or stereotypes. It's important to be fair and respectful to everyone.

Pre-Processing

Before we teach the computer about emotions in faces, we need to get the pictures ready. We do a few things to make sure the computer can understand the pictures better.

First, we make all the pictures the same size and fix them so they show just the face. This helps the computer learn without getting confused by different sizes or backgrounds. We also clean up the pictures to remove any mistakes or weird things that might make the computer confused.

Sometimes, the lighting in pictures is different. We fix that so the computer looks at the faces and not the bright or dark spots. We also find the special points on a face, like the eyes and nose, and make sure they are in the right places in every picture. This helps the computer understand different facial expressions better. If the colours in the pictures are different, we make them the same, so the computer learns about emotions and not about different colours.

All these things we do before teaching the computer are important. They make sure the computer learns really well and doesn't get mixed up with different sizes, colours, or weird things in the pictures. This way, the computer can understand emotions on faces better.

Model Architecture

The choice of libraries for facial emotion recognition depends on your specific requirements, expertise, and the context of your project. Here are some popular libraries that are commonly used for facial emotion recognition like OpenCV, TensorFlow**,** PYTORCH, DEEPFACE etc.
OpenCV (Open Source Computer Vision) is a versatile and powerful library that can be used in various stages of facial emotion recognition. Here are some common use cases for OpenCV in facial emotion recognition:

OpenCV provides pre-trained Haar Cascade classifiers for face detection. These classifiers can quickly identify the location of faces in an image or video stream. It can be used to detect facial landmarks, such as the positions of eyes, nose, and mouth shown in Fig 1.2 . This information can be valuable for feature extraction and analysis.

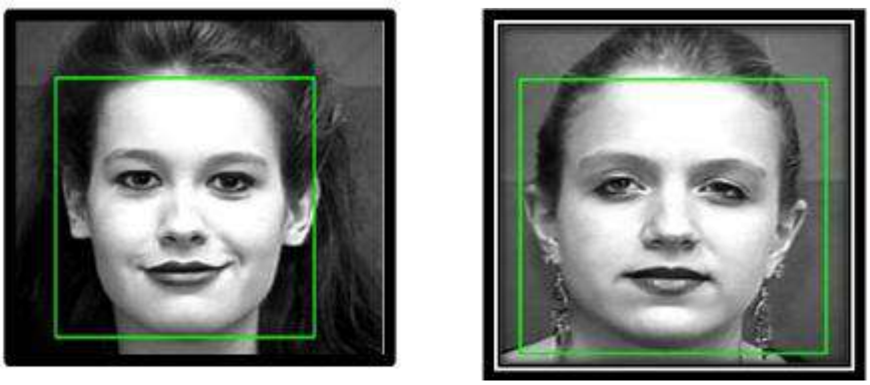

Figure 2:

OpenCV is often employed for preprocessing facial images before feeding them into an emotion recognition model. This may include tasks such as resizing, normalization, and cropping.

OpenCV can be used to perform data augmentation, enhancing the diversity of the training dataset. This can improve the generalization capabilities of the emotion recognition model.

OpenCV facilitates real-time processing, making it suitable for applications like live video emotion recognition. It allows for capturing frames from a webcam or video stream and applying emotion recognition on the fly.

When we teach the computer to understand emotions in faces, we need to think about how we organize the computer's brain. One way is by using something called Convolutional Neural Networks (CNNs), which are good at understanding pictures. The computer looks at different parts of the face and then combines that information. It's like putting together puzzle pieces to understand what emotions are being shown.

At the end of the computer's brain, there are special layers that help it decide which emotion is being shown. We use some tricks, like using pre-trained models from big sets of data, to make the computer learn faster and better. We also adjust some settings to make sure the computer learns just the right amount without getting too confused. Picking the right way to organize the computer's brain is important so it can understand emotions in faces well.

Training Procedure

Teaching the computer to understand emotions in faces is like training a pet. We use a bunch of pictures divided into groups – one for teaching, one for adjusting, and one for testing how well the computer learned.

During teaching, the computer looks at batches of pictures and adjusts itself to get better at recognizing emotions. We use some tricks, like changing how fast it learns or preventing it from getting too focused on specific details.
We repeat this process several times, like chapters in a book, until the computer gets really good. We also check how well it's doing on a few special pictures not used for teaching.

After all the teaching is done, we give the computer a final test to see if it can understand new picture it has never seen before. By adjusting and fine-tuning the teaching process, we make sure the computer can recognize emotions in faces accurately.

Hyperparameter Tuning

Adjusting settings in a facial emotion recognition system is like finding the best settings for a camera. We want the system to work well, so we try different settings to see which ones make it perform better. We don't want it to be too good on just one type of picture, so we test it on different kinds to make sure it works well overall. We use numbers to measure how well it's doing, like accuracy or F1-score. We keep trying different settings, checking how well it's doing, and making small changes to make it work even better. We use special tools and methods to do this efficiently and effectively, like smart algorithms and combining different approaches. In the end, we want the system to be really good at recognizing facial emotions accurately for all kinds of pictures.

3. Results Interpretation

To see how well facial emotion recognition systems work, we use different ways to measure them. Think of it like checking a report card for the system, but instead of grades, we use numbers.

One important number is accuracy, which tells us if the system is guessing emotions correctly most of the time. Precision is like checking how many times it gets positive emotions right compared to all the times it says something is positive. Recall is about figuring out how many actual positive emotions it catches.

There's also something called F1-score, which is a mix of precision and recall. It helps us know if the system is balanced in its performance.

when it's not. By looking at all these numbers, we can figure out how good the system is and make it better if needed.

4. Conclusion

Facial emotion recognition stands at the intersection of computer vision and affective computing, providing a compelling avenue for understanding human behaviour and enhancing human-computer interaction. As technology continues to evolve, the applications of facial emotion recognition are poised to extend beyond traditional domains, encompassing areas like human-computer interaction, mental health monitoring, and sentiment analysis in diverse fields. The insights gained from this research contribute to the broader discourse on the fusion of computer vision and deep learning for enhanced emotional intelligence.

This research is like planting a seed for more exciting work in the future. We hope others will continue to explore and come up with even more creative and clever ideas in the fascinating world of recognizing emotions from facial expressions. It's like leaving a path for others to follow, encouraging them to keep discovering and inventing new things in the ever-evolving field of understanding emotions through facial expressions.

References

[1] George, Annu, Hayden Wimmer, and Carl M. Rebman. "ARTIFICAL INTELLIGENCE FACIAL EXPRESSION RECOGNITION FOR EMOTION DETECTION: PERFORMANCE AND ACCEPTANCE." *Issues in Information Systems* 21.4 (2020).

[2] Lanka, P. A. C., et al. "EMOSENSE–Multi-Modal Emotion Recognition to Identify Emotions." *International Research Journal of Innovations in Engineering and Technology* 7.10 (2023): 428.

[3] Lanka, P. A. C., R. D. T. M. Jayawardena, K. S. S. Nandakumara, Lakmini Abeywardhana, and Dilshan De Silva. "EMOSENSE–Multi-Modal Emotion Recognition to Identify Emotions." *International Research Journal of Innovations in Engineering and Technology* 7, no. 10 (2023): 428.

[4] Lanka PA, Jayawardena RD, Nandakumara KS, Abeywardheana L, De Silva D. EMOSENSE–Multi-Modal Emotion Recognition to Identify Emotions. International Research Journal of Innovations in Engineering and Technology. 2023 Oct 1;7(10):428.

[5] 1.MERRIN MARY SOLOMON, 2.MAHENDRA SINGH MEENA, 3.JAGANDEEP KAUR." CHALLENGES IN FACE RECOGNITION SYSTEMS" I ISSUE 2 I APRIL – JUNE 2019]

Generative Adversarial Network

Harsh Kumar Sona*
Department of Computer Science and Engineering (AIML)
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Adish Jain
Department of Computer Science and Engineering (AIML)
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Divyanshu Kumar Singh
Department of Computer Science and Engineering (AIML)
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Harshit Patel
Department of Computer Science and Engineering (AIML)
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Harsh Kumar Sona
Email Id: 222549@kit.ac.in

ABSTRACT

This paper aims to introduce about GAN (GENERATIVE ADVERSARIAL NETWORK). Generative Adversarial Network is a branch of ML (machine learning) frameworks and an important framework for making generative AI (Artificial Intelligence) model. The original GAN is defined zero-sum game in which one agent's gain is another agent's loss.

This paper aims to elucidate the foundational concepts of GANs, delve into the intricacies of zero-sum games within this framework, expound upon the simultaneous training of these adversarial models, and explore the diverse spectrum of applications. Additionally, it will offer an analysis of the advantages and drawbacks inherent in GANs, providing a comprehensive perspective on their potential and limitations in the realm of generative AI.

Keyword: Generative Adversarial Networks (GANs), Zero-sum game, Adversarial training, Machine learning frameworks, Generative AI, Adversarial models, Neural networks, Discriminative models, Training dynamics, GAN architecture.

1. Introduction

GANs stands for generative adversarial network which is first introduced in 2014 by Ian Goodfellow is apowerful model of neural networks used mainly for unsupervised learning.

The basic principle of GAN is taken by zero-sum game in which initially gains of both the players is zero, and each player gains or loss is perfectly balanced by the loss or gain of another player utility. GANs had two neural networks: discriminator and generator. In GANs, the framework i.e., adversarial network said that the data distribution is done in both the neural network that is, in generator and discriminator. The generator tries to make a just like real sample and generates new sample of data and the discriminator works like a classifier, discriminating the generated sample with the real sample as accurately as possible. The adversarial training produces artificial data which is similar to the real data.

GAN can be differentiated in three parts:

a. **Generative:** To acts as generative model, which describes how data is generated in terms of probabilisticmodel.
b. **Adversarial:** Adversarial means enemies, those who are opposite of each other. In it, the generative resultgets compared with real data sample, and this method is known as discriminator.
c. **Networks:** Uses deep neural network as AI algorithm for the purpose of training.

The process of optimization of GANs is a minimax game in which generator tries to get to the Nash equilibrium. This framework can yield many trainings algorithm for many different types of models and optimization algorithm. It is now possible using GANs to make realistic photos and videos such as flowers, birds, humans etc. and is able to make the whole indoor or outdoor scenery in high resolution. In this paper, we are going to explore about GANs, its working and architecture theoretically, advantages a disadvantage, its application with experimental proof given by other researchers.

2. Overview

A Generative Adversarial Network (GAN) is composed in two main parts, one is generator and the other isdiscriminator.

Generator: Generator takes input in the form of noise and convert it into data samples mainly used for image soimage but also video, text etc. It can be considered as deep neural network. A layer of learnable data is taken by training's data distribution and then adjust the output accordingly to mimic real data as it is being trained continuously by backpropagation. The generator generates high quality, samples which can fool the discriminator which makes it successful.

Generator Loss: Generator reduce the likelihood logarithm that tends to support discriminator. So, generator generates that samples which the discriminator likely to classify as real value which should be close to 1.

$$J_G = -\frac{1}{m}\sum_{i=1}^{m} log\, D(G(Z_i))$$

where, $\mathbf{J_G}$**: -** Measure how well the generator is fooling the discriminator, log(G(Zi)): - Log probability of thediscriminator of generated samples.

Discriminator: It is used to differentiate between real and generated input. The discriminator works as binary classifier. It compares the genuine dataset by the dataset generated by generator. This allows it to increase the level of proficiency. This discriminator is used in many architectures especially when having input data as binary. The discriminator continuously put some mistake in front of generator by every time comparing the result between real dataset and generated dataset.

Discriminator Loss (Jd): - It reduces the likelihood logarithm which is already in negative for better classification of both the samples. This loss makes the discriminator to perfectly categorize generated sample as fake.

$$J_D = -\frac{1}{m}\sum_{i=1}^{m} log\, D(x_i) - \frac{1}{m}\sum_{i=1}^{m} log\left(1 - D(G(Z_i))\right)$$

where, J_d: - Discriminator's ability to discern between produces and actual samples, log (Xi): - The loglikelihood which make the discriminator more accurately.

Working

The GANs works on adversarial network framework which is made by neural network and gone for simultaneous adversarial training i.e., by discriminator and a generator. The discriminator generates differences between generated data and real data. Training makes generator more adept at producing realistic samples in aneffort to trick the discriminator.

The idea and approach of GANs comes from equilibrium concept of Nash according to which there are two players in this game one is generator and second is discriminator. Both the player continuously optimize their result using adversarial network ideology. The optimization done is to find Nash equilibrium between both the players. This is the structure of GANs which also shows the computational procedure:-

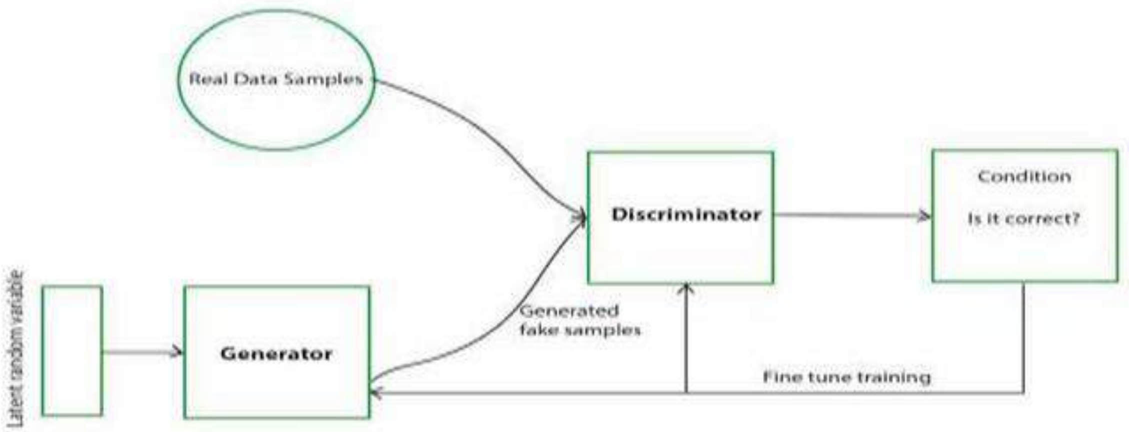

Implementation of GANs can be done by importing the required library:-

```python
import torch
import torch.nn as nn
import torch.optim as optim
import torchvision
from torchvision import datasets, transforms
import matplotlib.pyplot as plt
import numpy as np

# Set device
device = torch.device('cuda' if torch.cuda.is_available() else 'cpu')
```

3. Advantage of GAN

a. GAN have great potential to the development of generative models. The biggest advantage of GAN is that after giving initial input to it, it continues to train itself and every time it takes input that is the output of previous input it has. So, it continues to train itself and in simple language "It learns from its own mistakes."
b. Learning process of GAN is semi supervised and it does not require labels except the input and the data which it needs to operates on. It improves the quality of data very efficiently by comparing itself with the real data and learning through it and make corrections every and each time and giving more perfections to the data.
c. GAN can significantly increase data production because it has the ability to autonomously imitate data distributions. GAN can also replace hours of human labor and leading to perfection more than imaginable sometimes.
d. As it will replaces hours of work labor so it will also help lowering the labor cost.
e. The training process of GAN uses the two adversarial neural network as the criteria required for training andcan be trained by backpropagation.
f. Any dimensional data can be analyzed and worked upon by GAN because its neural network are workingaffirmative and vice versa, increasing the freedom to not limit for any high dimensional data.
g. The adversarial models of GAN have statistical advantage because of the generator network for not being updated directly with data examples, but only with gradients flowing through the discriminator.
h. GAN can represent very sharp, degenerate distributions, while methods based on Markov chain methodwhich is very much inefficient.

4. Disadvantage of GAN

a. There is no metric evaluation present in GAN for better model training and generating complex outputs.
b. We cannot predict the accuracy of the density of the evaluated model and say that the image is denser tomove forward with and still we have to decide it manually.
c. The training and learning is not stable and supervised by any method so it become harder to train andgenerate a desired output.
d. The trust issue will be more if the usage of GANs get increasing because it can make a exact copy by itsadversarial network and nowadays, so many businesses or big bank transaction can be affected by it.
e. GANs is still used mostly for image creation and facial detection and the biometric recognition can beaccessed using false biometric make by GANs network.
f. The training process is not balanced and synchronized that could provide good satisfied result.

g. Mode collapse can also occur in it which means generator generates multiple images of same color and same texture making it difficult for understanding.

5. Application of GANs

a. In image computation and generation Ian Goodfellow had described this application in his original paper that it is sed to generate new plausible of the MNIST handwritten digit dataset, CIFAR-10 small object photograph dataset, and the Toronto Face Database's Karras in 2017 had also demonstrate the realistic photographs of human faces generated by GANs.
b. Text to image Translation Hen Zhang in 2016 specify the use of Stack GAN to generate realistic photographs from textual descriptions of simple objects like birds, flowers etc.

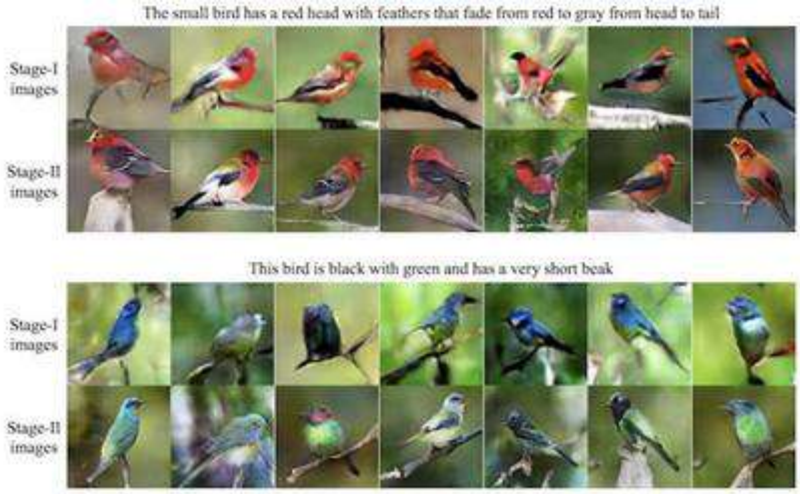

c. Photo Blending Hui Kai Wu in 2017 published his paper about blending of photographs, specifically elements from different photographs such as fields, mountains and other large structures.
d. Generating high dimensional object Jiajun Wu in 2016 published in their research paper that GAN can generate objects like chairs, tables etc.
e. Video Prediction Carl Vond rick in 2016 specify the video prediction functionality of GAN, predicting with success up to a second and can be used for static element.

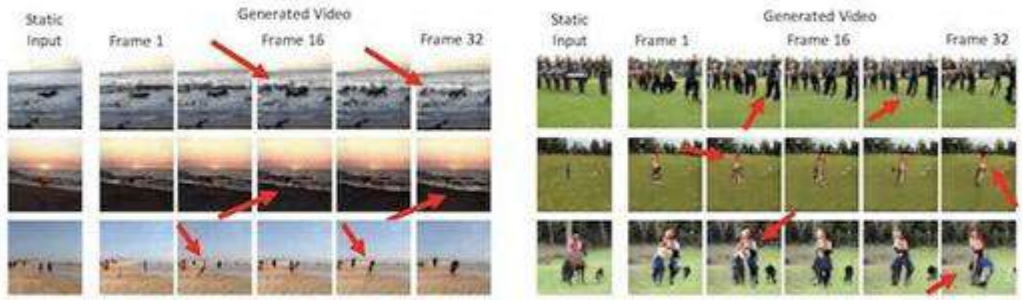

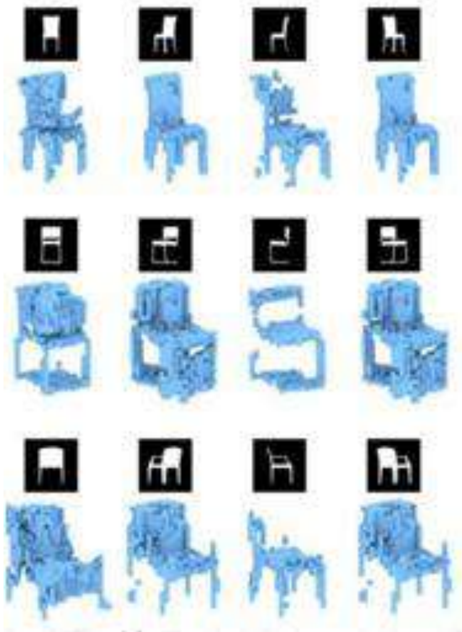

6. Conclusion

In this paper, we have investigated about GANs (Generative Adversarial Network) and discuss how it originate, overview about how it works and about the core idea of its working. We also discuss about the advantage of GANs over other older methods like Markov Chain reaction, its disadvantage and its real-life application with certain example of work of different people like IAN GOODFELLOW, HEN ZHANG etc. In our opinion, GAN acts as powerful generative models which have a potential to change the future of world if uses in a positive way.

References

[1] Kunfeng Wang, Member IEEE, "Generative Adversarial Network: Introduction and Outlook", 2017
[2] Ian Goodfellow, Jean Pouget-Abadie, Mehdi Mirza, Bing Xu, David Warde-Farley, Sherji Ozair, Aaron Courville,
[3] Yoshua Bengio, "Generative Adversarial Nets", 2014
[4] Alec Radford, "Unsupervised Representation Learning with Deep Convolutional Generative Adversarial Networks",2015
[5] Jun-Yan-Zhu, "Unpaired Image-to-Image translation using Cycle-Consistent Adversarial Networks", 2017
[6] Han Zhang, "Stack GAN: Text to Photo-Realistic Image Synthesis with Stacked Generative Adversarial Network", 2016
[7] Huikai Wu, "GP-GAN: Towards Realistic High-Resolution Image Blending", 2017
[8] Carl Vondrick, "Generating Videos with Scene Dynamics", 2016
[9] Jiajun Wu, "Learning a Probabilistic Latent Space of Object Shapes via 3D Generative-Adversarial Modelling", 2017
[10] Rahul Roy, "Generative Adversarial Network", "www.geeksofgeeks.com"
[11] Christian Ledig, "Photo-Realistic Single Image Super-Resolution Using a GAN", 2016
[12] Subeesh Vasu, "Analyzing Perception-Distortion Tradeoff using Enhanced Perceptual Super-resolution Network",2018

IOT-Enabled Radar System: Enhancing Sensing and Connectivity for Smart Application

Shadab Ahmed
Department of Computer Science andEngineeering (AIML)
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.
Email Id: shadabahmed6668@gmail.com

ABSTRACT

This research paper introduces an innovative IoT-based radar system employing Arduino Uno and ultrasonic sensors for intelligent object detection. The integration of Internet of Things (IoT) technology enhances the radar system's capabilities by enabling real-time data transmission and remote monitoring. Arduino Uno serves as the central processing unit, interfacing seamlessly with ultrasonic sensors to detect and track objects within its range. The system's IoT connectivity facilitates data exchange, offering a comprehensive solution for smart applications. The paper details the hardware architecture and sensor fusion techniques. Experimental results demonstrate the system's accuracy in object detection, making it suitable for applications such as smart homes, industrial automation, and urban surveillance. This research contributes to the evolution of radar systems, showcasing a cost-effective and scalable solution with IoT capabilities for a connected and intelligent future.

Keywords: *Internet of Things (IOT), Arduino Uno, Ultrasonic Sensor, Radar System*

1. Introduction

In the dynamic landscape of sensor technologies, the convergence of Arduino Uno and ultrasonic sensors has sparked a paradigm shift in the realm of radar systems. Traditionally characterized by intricate setups and high costs, radar systems have been largely confined to specialized domains. This research endeavors to break down these barriers by presenting an innovative approach: a Radar System utilizing Arduino Uno and ultrasonic sensors. This amalgamation harnesses the accessibility and programmability of Arduino Uno, a widely embraced microcontroller, with the precision and versatility of ultrasonic sensors, offering a cost-effective alternative for radar applications.

As technology advances, the need for scalable and affordable sensing solutions becomes increasingly imperative. The Arduino Uno, known for its user-friendly interface and widespread adoption, provides a robust platform for the integration of radar capabilities. The inclusion of ultrasonic sensors further enhances the system's adaptability, enabling applications ranging from proximity detection to object tracking in a diverse array of environments.

This research delves into the technical intricacies of implementing a radar system with Arduino Uno and ultrasonic sensors, exploring the synergy between hardware and software components. By unraveling the challenges and opportunities inherent in this fusion, we seek to establish a foundation for enthusiasts, researchers, and educators to explore and innovate within the realm of radar technology.

Beyond its technical aspects, this paper also considers the broader implications of a low-cost radar system. The democratization of radar technology holds the potential to impact various domains, including education, research, and practical applications. This research investigates the system's performance across different scenarios, evaluating its accuracy, reliability, and adaptability in real-world conditions.

As we embark on this exploration of a radar system using Arduino Uno and ultrasonic sensors, the intent is to contribute not only to the technical discourse but also to pave the way for a more inclusive and accessible era in radar technology. By bringing radar capabilities to the hands of a wider audience, we anticipate fostering creativity, innovation, and a deeper understanding of sensing systems in diverse contexts.

2. Literature Review

a. Onemayin et al.(2020), The work in this paper focusing on Vehicle tracking system where wireless technologies are used. In this Atmega328P controller is used (LCU) logical control unit for processing activities in the system and upload the program in Arduino IDE in C-language.
b. Javier et al.(2019), The work in this paper includes the design and building of automatic 3 phase alternator synchronizer based on a less price open hardware Arduino.
c. Jamal et al.(2021), In this paper author proposed the Automatic weather surveillance system that allows having dynamic and real-time climate data of given area. This system is based on IOT(Internet of Things).
d. Qusay et al.(2020), In this paper author done the survey that how smart home safety and security system works using Arduino. The got the result which includes the architectures, components , enabling technologies etc.
e. Jorge et al.(2022), The work in this paper focusing on the monitoring the water quality or pollutants present in it using microcontrollers, electrochemical sensors and central processing unit. This system is based on Arduino platform.
f. Jesus et al.(2020), The work in this paper includes the analysis of the evolution of Arduino concept in scientific literature. The methods which are used in the research is scientific mapping and analysis of words.
g. Yuki et al.(2022), The work in this paper focusing on how to unite a widely used , less cost laser range finder , Hokuyo URG with an Arduino microcontroller, in technology , engineering ,science in several autonomous robots, in concurrence computers and laptops due its low price.
h. Zolton et al.(2019), The author in this paper proposed the investigation on phonocardiography and photoplethysmography using microcontroller such as Arduino. They also work on data acquisition, electronics and signal processing.
i. Vadim et al.(2020), The work in this paper focusing on laboratory tests of a specimen of the device for monitoring number of duration of power outages and voltages deviations that is totally based on Arduino NANO microprocessor.
j. Anarghya et al.(2014), The work in this paper describes, distortion effects often used in electric guitar. Here they increases the large number of added overtones of electric guitar by using Arduino UNO circuit. In this project they controlled potentiometer by Arduino which is an improvement and gives satisfactory results.

3. Methodology

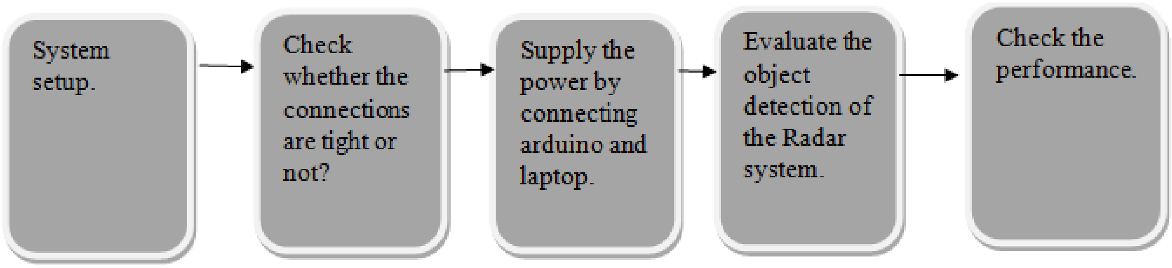

Figure 1: Radar system

- Firstly setting up all the components and devices used in radar system. The devices and components used in system includes(Arduino UNO, Ultrasonic sensor(HC-SR04), Male to male jumper wires , Male to female jumper wires, Servo motor, Bread board, Laptop and connect cord)
- Then checked all the connection are tight or not .
- Then connect the setup to laptop by Arduino cord to supply the power to the Arduino.
- Then programmed the code in Arduino IDE in C language. And upload the radar display code on processing console.
- Then the Evaluate the real-time object detection of radar system.
- After all of this check and conclude the performance of the radar system.

Result

This developed Radar system make use of Arduino UNO and an Ultrasonic sensor demonstrated accurate distance measurement. The real time object detection and tracing capabilities shows its effectiveness in dynamic scenarios. The components used in this system is powerful and affordable as compare to the components used in other radar systems.

4. Conclusion

This research can work as a bridge which completes the gap between traditional radar systems and grassroots innovation, laying the groundwork for a new era where radar technology becomes an integral part of the maker community, classrooms etc.

References

[1] O. D. Jimoh, L. A. Ajao, O. O. Adeleke and S. S. Kolo, "A Vehicle Tracking System Using Greedy Forwarding Algorithms for Public Transportation in Urban Arterial," in IEEE Access, vol. 8, pp. 191706-191725, 2020, doi: 10.1109/ACCESS.2020.3031488.

[2] J. Riedemann et al., "Design and Building of an Automatic Alternator Synchronizer Based on Open-Hardware Arduino Platform," in IEEE Access, vol. 7, pp. 105116-105122, 2019, doi: 10.1109/ACCESS.2019.2932294.

[3] J. Mabrouki, M. Azrour, D. Dhiba, Y. Farhaoui and S. E. Hajjaji, "IoT-based data logger for weather monitoring using arduino-based wireless sensor networks with remote graphical application and alerts," in Big Data Mining and Analytics, vol. 4, no. 1, pp. 25-32, March 2021, doi: 10.26599/BDMA.2020.9020018.

[4] Q. I. Sarhan, "Systematic Survey on Smart Home Safety and Security Systems Using the Arduino Platform," in IEEE Access, vol. 8, pp. 128362-128384, 2020, doi: 10.1109/ACCESS.2020.3008610.
[5] J. Fonseca-Campos, I. Reyes-Ramirez, L. Guzman-Vargas, L. Fonseca-Ruiz, J. A. Mendoza-Perez and P. F. Rodriguez-Espinosa, "Multiparametric System for Measuring Physicochemical Variables Associated to Water Quality Based on the Arduino Platform," in IEEE Access, vol. 10, pp. 69700-69713, 2022, doi: 10.1109/ACCESS.2022.3187422.
[6] J. López-Belmonte, J. -A. Marín-Marín, R. Soler-Costa and A. -J. Moreno-Guerrero, "Arduino Advances in Web of Science. A Scientific Mapping of Literary Production," in IEEE Access, vol. 8, pp. 128674-128682, 2020, doi: 10.1109/ACCESS.2020.3008572.
[7] Y. Ueyama, T. Sago, T. Kurihara and M. Harada, "An Inexpensive Autonomous Mobile Robot for Undergraduate Education: Integration of Arduino and Hokuyo Laser Range Finders," in IEEE Access, vol. 10, pp. 79029-79040, 2022, doi: 10.1109/ACCESS.2022.3194162.
[8] Z. Gingl, G. Makan, J. Mellar, G. Vadai and R. Mingesz, "Phonocardiography and Photoplethysmography With Simple Arduino Setups to Support Interdisciplinary STEM Education," in IEEE Access, vol. 7, pp. 88970-88985, 2019, doi: 10.1109/ACCESS.2019.2926519.
[9] V. Bolshev, A. Vinogradov, M. jasiński, T. Sikorski, Z. Leonowicz and R. Gono, "Monitoring the Number and Duration of Power Outages and Voltage Deviations at Both Sides of Switching Devices," in IEEE Access, vol. 8, pp. 137174-137184, 2020, doi: 10.1109/ACCESS.2020.3011836.
[10] A. A. Murthy, N. Rao, Y. R. Beemaiah, S. D. Shandilya and R. B. Siddegowda, "Design and Construction of Arduino-Hacked Variable Gating Distortion Pedal," in IEEE Access, vol. 2, pp. 1409-1417, 2014, doi: 10.1109/ACCESS.2014.2374195.

Li-Fi Technology Enabling Wireless Connectivity through Light

Kirti Vishwakarma*
Department of Computer Science & Engineering
Kanpur Institute of Technology, Kanpur.

Richa Dixit Pandey
Department of Computer Science & Engineering
Kanpur Institute of Technology, Kanpur.

Deep Kumar Srivastava
Department of Computer Science & Engineering
Kanpur Institute of Technology, Kanpur.

***Corresponding Author**
Kirti Vishwakarma
Email Id: 232083@kit.ac.in

ABSTRACT

When using public Wi-Fi in places like coffee shops or attending conferences, the frustration of slow internet speeds due to multiple connected devices is a common experience. In response to this difficulty, German scientist Harald Haas developed a novel method called "data through illumination."This innovative approach involves transmitting data through LED lights, rapidly varying their intensities beyond the perception of the human eye. Haas stresses that the promise of light-emitting diodes (LEDs) is what this technology depends on. In an effort to shed light on the development and functioning of Li-Fi systems, this research compares and contrasts their performance with that of other wireless network technologies.

Keywords: Public Wi-Fi, Internet speeds, Wireless network technologies, Data through illumination, LED lights, Harald Haas, Li-Fi Light-emitting diodes (LEDs), Data transmission, Construction, Operation, Performance comparison.

1. Introduction

Our reliance on the internet is pervasive, playing a vital role in meeting daily needs. It's hard to imagine a day without being connected to the web, utilized for various purposes, with data sharing being a predominant activity. In 2011, the University of Edinburgh's Professor Harold Haas suggested a unique wireless network technique known as "Data through illumination." He put this theory into practice by promoting connectivity via low-cost light sources and using fiber optics to send data through LED lightbulbs. Li-Fi technology, stemming from this notion, facilitates internet access utilizing an LED beam within a constrained range, including the transmission of data through vehicle headlights.

Figure 1: *Data Transmission using-Li-Fi technology*

Li-Fi, also known as 5G Visible Light Communication technologies, is a cutting-edge technology that uses visible light rather than radio waves to communicate. Using LEDs to facilitate fast communication, Li-Fi mimics the features of Wi-Fi. Interestingly, it can save a significant amount of electricity when using lightbulbs and other comparable lighting equipment for data transfer. Since visible light cannot pass through barriers, Li-Fi's use of visible light guarantees secure data transmission in contrast to Wi-Fi.

LED bulbs serve as downlink transmitters in the Li-Fi architecture, allowing high-speed data transmission via changes in LED current. The fundamental idea behind Li-Fi is simple: a digital 1 is transmitted when the LED is lit, and a digital 0 is transmitted when it is not lit. By modulating the rate of LED flashes, diverse data can be encoded and efficiently transmitted. This uncomplicated yet inventive approach positions Li-Fi as a promising technology for secure and effective data transmission.

2. Working Technology of Li-Fi

In his TED Worldwide lecture, University of Edinburgh's Harald Haas presented the ground-breaking idea of Visible Light Communication (VLC). He clarified that LEDs are used for data transmission in Li-Fi technology, which is based on this idea. According to Haas, an LED emits a digital "0" when it is off and a digital "1," when it is on. LEDs' quick on/off switching provides a plethora of data transmission possibilities.

Li-Fi, operating on the principle of VLC, presents exciting possibilities. Multiple LEDs, along with a controller encoding data into them, are essential. The flickering rate of LEDs is adjusted based on the data to be encoded. Innovations include integrating red, green, and blue LEDs to encode data across many channels or employing numerous LEDs for concurrent data transfer. It is theoretically possible to achieve 10 Gbps download speeds, which would allow for the 30-second download of a full HD movie. Li-Fi's advantages extend beyond high-speed data rates. As it employs only light, it can be safely used in environments prone to radio wave interference, such as aircraft and hospitals. Additionally, Li-Fi can operate underwater, opening up possibilities for military operations.

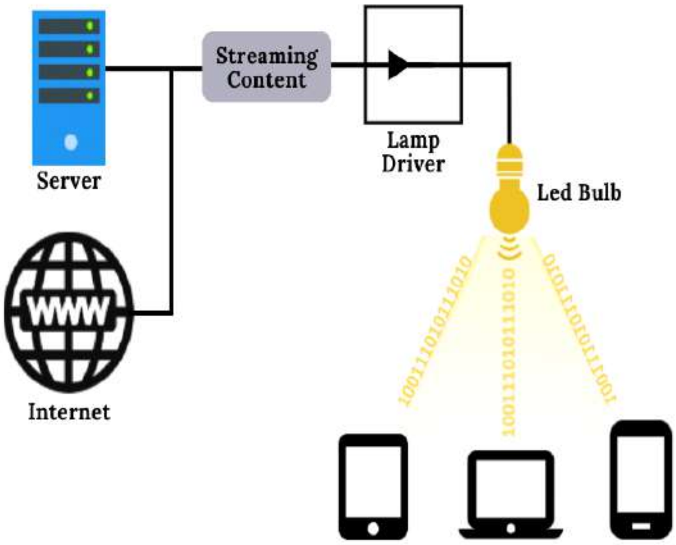

Figure 2: Li-Fi Technology Provide Data for military operations under water

The potential applications of Li-Fi are diverse and groundbreaking. Imagine accessing public internet under a street lamp or downloading data from your office lamp. The technique uses light waves instead of radio waves to provide a fresh way to high-speed wireless networking. The foundation of Li-Fi is Visible Light Communication (VLC), which uses the visible light spectrum between 400 THz (780 nm) and 800 THz (375 nm) for lighting and data transmission.

3. *Comparison between Li-Fi & Wi-Fi*

Making use of the name similarity to Wi-Fi, Li-Fi is visible light communication technology that is used for fast wireless transmission.

Table 1: Difference between Li-Fi& Wi-Fi

Parmeter	***Li-Fi***	***Wi-Fi***
Spectrum Used	*Visible Light*	*RF*
Standard	*IEEE 802.15.7*	*IEEE 802.11*
Range	*Based on Light Inensity (<10m)*	*Based on Radio propagation & interference (<300m)*
*Data Transfer Rate**	*Very Light(~1 Gbps)*	*Low (100 Mbps-1 Gbps)*
Power consumption	*Low*	*High*
Cost	*Low*	*High*
Bandwidth	*Unlimited*	*Limited*

4. *Applications of Li-Fi*

a. **Health Technologies:** Wi-Fi signals, emitting radio waves, pose potential harm to patients and can interfere with medical instruments in hospitals. This issue has restricted the use of Wi-Fi in operating rooms due to radiation concerns. However, with Li-Fi technology, there is a viable solution. Li-Fi's reliance on visible light instead of radio waves makes it a safer option for internet connectivity in critical medical environments. This ensures that medical technology keeps pace with wireless advancements without compromising patient safety or interfering with sensitive medical instruments. The use of Li-Fi provides a dedicated and secure alternative for internet access in operating rooms, addressing the limitations posed by traditional Wi-Fi.

b. **Airlines:** Passengers on airlines often agree to pay extra for in-flight internet services, typically provided through traditional wireless signals. Li-Fi technology has the potential to revolutionize this experience by offering a high-speed transmission service that ensures uninterrupted connectivity. In contrast to other wireless signals commonly used onboard, Li-Fi provides a novel and efficient solution for delivering seamless internet services to passengers during their flights.
c. **Using Light Signals:** Rather than using radio frequency communications, light signals are used by Wi-Fi. Li-Fi works well in situations where Wi-Fi is ineffective, such as under the sea.
d. **Security:** Security is an additional advantage because light, unlike radio waves, Doesn't transmit signals through solid barriers such as walls.
e. **Street Light:** Headlights and backlights made of semiconductor diode technology can talk to one another in a car, allowing for the creation of an accident prevention system. Additionally, traffic signals can communicate with vehicles, contributing to enhanced safety measures on the road.

5. Advantages of Li-Fi

a. **Capacity:** Light, being a readily available form of energy, offers a significantly larger portion of the electromagnetic spectrum. The spectrum of visible light surpasses that of radio waves by a factor of 10,000.
b. **Efficiency:** Li-Fi enables the parallel transmission of data bits, enhancing efficiency in data transfer.
c. **Availability:** Light is ubiquitous worldwide, allowing individuals to access the internet even in airplanes.
d. **Data Rate:** The theoretical capability of Li-Fi to achieve data rates exceeding 10 Gbps facilitates rapid and seamless communication. For instance, a high-quality movie could be downloaded in just 30 seconds.
e. **Cost:** Li-Fi is more affordable because of the LEDs that are used in it.
f. **Bandwidth:** The bandwidth of Li-Fi is 10,000 times more than that of Wi-Fi, which is a major benefit.

6. Limitations of Li-Fi

a. **Limited Range and Coverage:** Li-Fi's signal is constrained by the need for a direct line of sight, reducing its applicability in environments with obstacles or requiring extensive coverage
b. **Interference from External Light Sources:** Li-Fi performance can be affected by interferencefrom otherlight sources, such as natural sunlight or competing artificial lights, potentially leading to signal disruptions.

c. **Limited Penetration through Obstacles:** Unlike Wi-Fi, Li-Fi signals cannot penetrate through physical barriers like walls, limiting its effectiveness in scenarios where signal penetration is essential.

7. Recent Advancements

a. **Li-Fi for Intelligent Cities:** Li-Fi technology, which uses LED bulbs to transmit data, is very simple and has the potential to completely change smart cities. High-speed data connections provided by streetlights could aid in the growth of sophisticated metropolitan environments.
b. **In the Future, Topology Matters the Most:** Current international research suggests that even though future networks might be speedier, capacity-related issues might still arise. According to the research, topology—the configuration of transmitters that supply network signals—will become more and more important, particularly in places with high population densities.
c. **Enhanced Connectivity and Dependable Communication within a Li-Fi Infrastructure:** Current international research suggests that even though future networks might be speedier, capacity-related issues might still arise. According to the research, topology—the configuration of transmitters that supply network signals—will become more and more important, particularly in places with high population densities.

8. Conclusion

Exploration opportunities abound, and should this technology be put into practice, every lightbulb may work as a Wi-Fi hotspot, sending wireless data and clearing the path for a future that is solution-focused, safer, greener, and better. Li-Fi is a notion that is becoming a lot of attention since it offers a real and effective substitute for Wi-Fi that is based on radio waves. The radio waves have gotten crowded due to the growing number of people using a variety of gadgets to access wireless internet, making it difficult to maintain a dependable and fast signal.Li-Fi has the ability to solve problems like the scarcity of radio-frequency bandwidth, enabling internet connection in places like hospitals and airplanes where traditional radio-based communication is prohibited. Its operation is restricted to direct line of sight, though.

Conclusively, visible light-based Li-Fi technology offers a potential path for fast wireless communication. Its limitations, including range constraints, susceptibility to external light interference, and limited penetration through obstacles, must be considered in practical implementations. Despite these challenges, ongoing advancements and research in LiFi hold potential for addressing these limitations and establishing it as a viable complement or alternative to existing wireless communication technologies. Further exploration and development are crucial for unlocking the full capabilities of Li-Fi in diverse applications

References

The listed references provide valuable insights into Li-Fi (Light Fidelity) technology and its applications in wireless communication. Here's a brief summary of each reference:

[1] http://www.warse.org/pdfs/2014/icetetssp25.pdf
[2] http://www.onlinejournal.in/IJIRV2I6/006.pdf
[3] http://ieeexplore.ieee.org/stamp/stamp.jsp?arnumber=6685753
[4] www.oledcomm.com 17
[5] https://www.ijsr.net/archive/v5i9/26051603.pdf 8
[6] https://www.ijsr.net/archive/v4i12/NOV151778.pdf9
[7] http://www.ijarcsse.com/docs/papers/Volume_5/6_June2015/ V5I6-0175.pdf 11
[8] http://www.ijcta.com/documents/volumes/vol5issue1/ijcta201 4050121.pdf 12
[9] http://www.academia.edu/6996573/CSE_Study_Paper_on_._ LiFi_Technology_The_latest_technology_in_wireless 13.
[10] http://www.ijsrp.org/research-paper-0416/ijsrp-p5275.pdf 14
[11] http://www.academia.edu/6770592/Light_Fidelity_LI-FI_- A_Comprehensive_Study_ 15.
[12] http://www.ijser.org/researchpaper/A-Study-on-LiFi-LightFidelity-Technology.pdf
[13] http://www.internationaljournalssrg.org

Navigating the Future: A Comprehensive Study of Smart Homes and their Technological Landscape

Surya Pratap Singh
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur Nagar, Uttar Pradesh, India.

Suryansh Katiyar*
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur Nagar, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Suryansh Katiyar
Email Id: 230661@kit.ac.in

ABSTRACT

This comprehensive study explores the rapidly evolving landscape of smart homes, investigating the intricate interplay of technologies that define the present and future of our living spaces. The research encompasses a thorough examination of key components, including the Internet of Things (IoT), artificial intelligence (AI), and sensor networks, which collectively contribute to the intelligence and connectivity of smart homes. The study delves into the diverse array of smart home devices and systems available, analyzing their functionalities, interoperability, and user interfaces. From voice-activated assistants to adaptive lighting and security measures, the research unravels the technological tapestry that transforms traditional homes into intelligent, responsive environments. In addition to technological aspects, this study addresses the social and ethical implications arising from the widespread adoption of smart homes. Privacy concerns, data security, and societal impacts are critically evaluated, providing a comprehensive understanding of the challenges and opportunities associated with this technological revolution. The paper also explores emerging technologies and trends in the smart home landscape, such as edge computing, 5G connectivity, and sustainable solutions. These innovations are examined for their potential to reshape the future trajectory of smart homes, offering insights into the next generation of intelligent living spaces. By navigating through the complexities of smart homes, this study serves as a valuable resource for researchers, industry professionals, and policymakers seeking a holistic understanding of the technological, social, and ethical dimensions shaping the future of our homes. The insights provided aim to guide future research directions, fostering innovation and responsible development in the dynamic field of smart home technologies.

Keywords: IoT, Smart Home, AI, Sensor Networks.

1. Introduction

A smart home is characterized by the presence of electronic devices and appliances that can be managed and controlled remotely through a smartphone or computer, including lighting and heating systems. The study of smart homes is important because it has the potential to transform the way we live and interact with our living spaces, and can provide insights into how technology can be used to improve our quality of life. Previous research on smart homes has focused on specific technologies or aspects of the smart home ecosystem, such as home automation, energy management, and security. Despite the growing body of research on smart homes, there is still a lack of comprehensive studies that explore the interplay of different technologies and their impact on our living spaces.

2. History of Smart Homes

2.1 1960s-1970s

The concept of smart homes can be traced back to the 1960s and the 1970s, when basic home automation systems were introduced. These systems primarily focus on the remote control of appliances and lighting.

2.2 1980s-1990s

In the 1980s and the 1990s, the development of home automation protocols such as X10 facilitated the rise of more sophisticated smart home systems. X10 allows communication between devices through the existing home electrical wiring (Risteska Stojkoska BL, 2016). [2]

2.3 2000s-2010

The 2000s marked a significant shift with the integration of Internet and wireless technologies into smart home systems. This era saw the emergence of devices that can be controlled and monitored remotely via the Internet.

The 2010s were marked by the rise of the Internet of Things (IoT) and the widespread adoption of smart speakers such as Amazon Echo and Google Home. These devices provide voice-controlled interfaces for smart-home devices.

With the increasing number of devices entering the market, the need for interoperability and standardization has become apparent. Initiatives such as the Zigbee Alliance and Thread Group aimed to create common standards for smart home devices, promoting compatibility and ease of use (Risteska Stojkoska BL, 2016; Sam Solaimani, 2013).

2.4 Current State

Currently, there is greater emphasis on artificial intelligence (AI) and machine learning in smart home systems. These technologies enable devices to learn user preferences, anticipate user needs, and adapt to changing conditions.

As smart homes have become more prevalent, concerns about cybersecurity and privacy have also increased. To address these concerns, manufacturers and developers have placed increased emphasis on implementing robust security measures to protect user data and privacy.

3. Objectives

The objective of this review is to comprehensively examine and analyze the evolution, technological advancements, and the current state of smart homes. This study aims to synthesize the existing literature, identify key trends, and critically evaluate the impact of smart home technologies on daily living. Additionally, this review seeks to highlight the challenges, future prospects, and potential areas for further research in the dynamic field of smart homes. Through a thorough exploration of relevant studies and developments, this study intends to provide a valuable resource for researchers, practitioners, and enthusiasts interested in gaining insights into the multifaceted aspects of smart home technologies.

4. Internet of Things and Smart Homes Market

The Internet of Things (IoT) and smart home markets have experienced significant growth in recent years, driven by technological advancements, increasing consumer awareness, and growing demand for connected and automated living environments. Here is an overview of the Internet of Things and Smart Homes market:

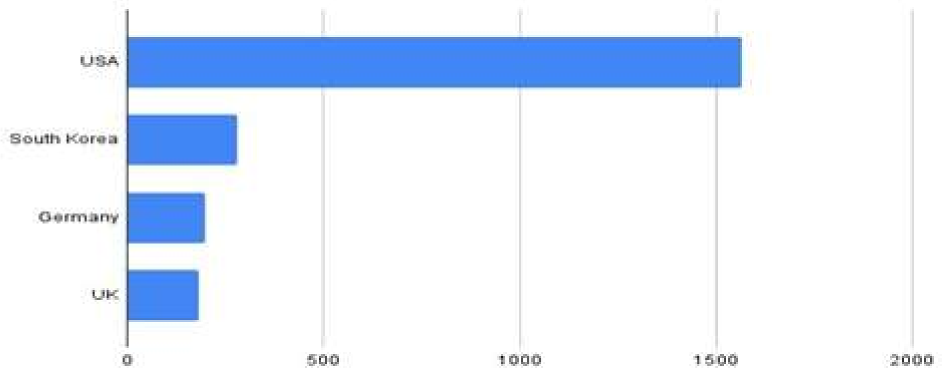

Figure 1: Revenue by top four countries in US Dollars (Q2/2017) in Global Smart Home Market. (Iot-Analytics, 2017 data)

Segments

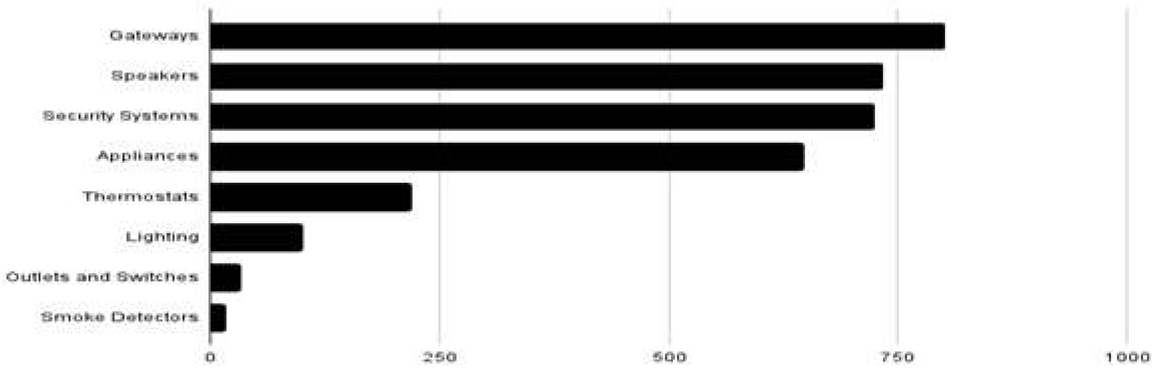

Figure 2: Categories of most sold appliances. (Iot-Analytics, 2017 data)

Top Vendors

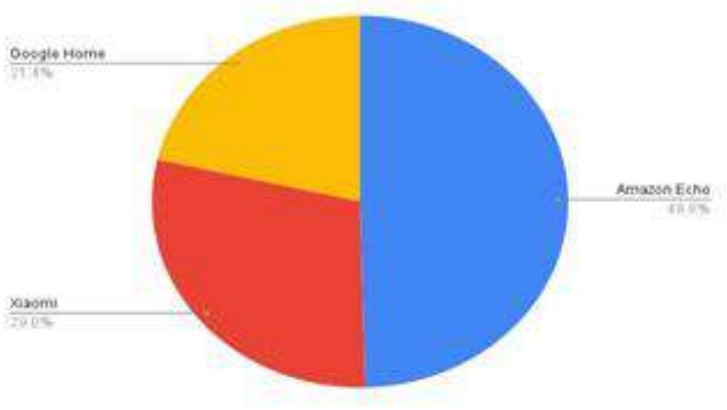

Figure 3: Market Share of top three vendors in the space of smart-home.
(Iot-Analytics, 2017 data)

5. Security and Privacy Concerns

In the dynamic landscape of smart-home technologies, paramount security and privacy issues have emerged as critical considerations for users. The interconnectivity of smart devices, while delivering unprecedented levels of convenience and automation, also raises profound concerns regarding the protection of sensitive data and preservation of personal spaces within the home.

Substantial concern centers on data security, given the vast amount of information generated by smart home devices. From user preferences and daily routines to audio and video recordings, these devices accumulate a trove of data, which necessitates robust protective measures against unauthorized access or potential data breaches. The sensitivity of such information underscores the urgency of implementing stringent security protocols to safeguard the integrity and confidentiality of user data (Savvas Papagiannidis, 2019; Benjamin K. Sovacool, 2020).

The increasing number of connected devices within smart homes increases the vulnerability of the landscape to cybersecurity threats. Potential weaknesses in device firmware, software, and communication protocols can be exploited by malicious actors, exposing users to the risks of cyber-attacks. As smart home ecosystems expand, the need for continuous updates and security patches becomes imperative to avoid emerging threats(Risteska Stojkoska BL, 2016).

Unauthorized access to smart home devices is a tangible and concerning manifestation of security lapses. Incidents involving the unauthorized control of cameras, door locks, and thermostats highlight the importance of implementing robust authentication measures. Ensuring that only authorized individuals can access and manipulate smart home devices is a pivotal aspect in mitigating security risks and fortifying the overall resilience of these systems(Tatsuya Yamazaki, 2006).

In addition to security considerations, the collection and utilization of personal data by smart home devices give rise to intricate privacy concerns. Users grapple with questions about how their data are collected, the purposes for which they are used, and whether they are shared with third parties. Striking a balance between the functionalities of smart devices and users' privacy expectations requires a transparent and ethical approach from manufacturers and service providers.

Essentially, as the smart home ecosystem continues to evolve, addressing these security and privacy concerns becomes paramount to foster user trust, encourage widespread adoption, and ensure that the benefits of smart home technologies are realized without compromising the fundamental principles of security and privacy.

6. Challenges and Limitations

The integration of smart-home technologies introduces various challenges and limitations that affect their widespread adoption. Interoperability issues arise from the lack of standardized communication protocols among devices from different manufacturers, which hinders seamless integration within a smart home ecosystem. The reliability and stability of smart home devices can be compromised by malfunctions, software glitches, or network disruptions, which affect the overall user experience(Davit Marikyan, 2019). The complexity of these technologies, including the intricate setup processes and the need for technical expertise, can be a barrier to user acceptance. In addition, the initial cost of purchasing and installing smart home devices may be a significant obstacle for some consumers, limiting the accessibility of these technologies. The energy consumption associated with the manufacturing and maintenance of smart devices, along with their continuous connectivity, may offset the energy savings intended for their efficient use. The absence of standardized protocols in the smart home industry contributes to a fragmented ecosystem, making it challenging for users to seamlessly integrate devices from various manufacturers. Furthermore, the dependency of many smart devices on Internet connectivity for remote monitoring and control exposes their functionality to disruptions during Internet outages (Risteska Stojkoska BL, 2016; Ameena Saad al-sumaiti, 2014; Tatsuya Yamazaki, 2006).

Lastly, rapid advancements in technology may lead to the obsolescence of smart devices, requiring users to replace them to keep up with evolving standards and features, potentially contributing to electronic waste. Addressing these challenges is crucial for refining smart-home technologies and ensuring sustained growth and acceptance in the broader market.

7. Future Trends and Innovations

The future trajectory of smart homes promises a dynamic landscape shaped by cutting-edge innovations and emerging technologies. With the advent of 5G connectivity, smart homes have been poised to experience a paradigm shift, delivering faster and more reliable communication between devices. This advancement is expected to open new possibilities for real-time applications and services within the smart home ecosystem, enhancing overall connectivity (Davit Marikyan, 2019; Benjamin K. Sovacool, 2020).

The integration of artificial intelligence (AI) is a key trend in redefining a smart home experience. AI algorithms will become increasingly sophisticated, enabling devices to learn from user behavior, anticipate preferences, and adapt dynamically to changing circumstances.This leap in intelligence will result in a more personalized and intuitive smart home environment, offering users seamless and responsive interaction with their devices.

Voice and gesture control are set to reach new heights with continuous advancements in natural language processing and gesture recognition technologies. This evolution will provideusers with more intuitive and effortless ways to interact with their smart home devices,further enhancing their accessibility and user experience.

A significant frontier in smart-home innovation lies in the integration of robotics. As robotic technologies mature, smart homes will witness the introduction of automated systems that contribute to household tasks such as robotic vacuum cleaners and security robots. These advancements will not only boost efficiency, but also redefine the role of automation in everyday life.

Energy management will continue to be a focal point for future smart homes, with advanced solutions aimed at monitoring and optimizing energy consumption. This includes the integration of renewable energy sources, aligning smart homes with sustainability goals, and addressing environmental concerns.

Augmented Reality (AR) and Virtual Reality (VR) technologies are expected to find applications in smart homes, offering immersive user experiences. From virtual home tours to interactive design planning, these technologies will add new dimensions to users' engagement with and management of their smart living spaces(Sam Solaimani, 2013).

Moreover, the dimensions of health and wellness will become increasingly integrated into the smart-home ecosystem. Future homes will feature devices that monitor health metrics, provide personalized fitness recommendations, and create environments conducive to well-being. This holistic approach reflects the evolving priorities of users, emphasizing not only convenience and automation, but also health and quality of life. As these trends unfold, the future of smart homes holds the promise of a more intelligent, responsive, and enriching life experience.

8. Conclusion

In conclusion, this review provides a comprehensive exploration of the multifaceted landscape of smart homes, delving into key aspects that have shaped their evolution and continue to influence their trajectory. The historical perspective traced the roots of smart homes, showcasing the fascinating journey from early attempts at automation to the sophisticated, interconnected ecosystems today. The examination of the smart home market underscored the remarkable growth fueled by technological advancements, consumer demand for convenience, and the increasing integration of Internet of Things (IoT) technologies.

Security and privacy concerns have emerged as critical considerations, reflecting the delicate balance between the benefits of connectivity and the imperative to safeguard personal information. As smart homes become more prevalent, addressing these concerns remains paramount to ensuring user trust and sustained growth of the industry. The exploration of challenges and limitations highlights the need for standardized protocols, enhanced cybersecurity measures, and user-friendly interfaces to overcome barriers to adoption and improve the overall reliability of smart home systems.

Looking towards the future, this review paper delved into promising trends and innovations set to shape the next phase of smart homes. The advent of 5G connectivity, artificial intelligence, and robotics has heralded a new era in connectivity, intelligence, and automation. Advancements in voice and gesture control, energy management solutions, and the integration of augmented and virtual reality further contribute to the vision of highly responsive, intuitive, and immersive smart living spaces. This forward-looking perspective reflects not only advancements in technology, but also the evolving priorities of users, encompassing health, sustainability, and enhanced quality of life.

In conclusion, the journey through the history, market dynamics, security challenges, limitations, and future trends of smart homes reveals a complex yet promising landscape. As technology continues to evolve, the smart home industry stands at the cusp of transformative innovations with the potential to redefine the way we live, interact with our surroundings, andshape the future of our homes.

References

[1] Benjamin K. Sovacool, Dylan D. Furszyfer Del Rio: Smart home technologies in Europe: A critical review of concepts, benefits, risks and policies, Renewable and Sustainable Energy Reviews 120 (2020) 109663.

[2] Davit Marikyan, Savvas Papagiannidis, Eleftherios Alamanos: A systematic review of the smart home literature: A userperspective, Technological Forecasting & Social Change 138 (2019) 139–154.

[3] Risteska Stojkoska BL, Trivodaliev KV, A review of Internet of Things for smart home: Challenges and solutions, Journal of Cleaner Production (2016).

[4] Ameena Saad al-sumaiti , Mohammed Hassan Ahmed & Magdy M. A. Salama (2014) Smart Home Activities: A Literature Review, Electric Power Components and Systems.

[5] Sam Solaimani, Wally Keijzer-Broers and Harry Bouwman: What we do − and don't − know about the Smart Home: ananalysis of the Smart Home literature, Indoor and Built Environment (2013).

[6] Tatsuya Yamazaki: Beyond the Smart Home, 2006 International Conference on Hybrid Information Technology(ICHIT'06)

[7] IoT-Analytics Homepage, https://iot-analytics.com/, last accessed 2024/01/10

Object Identification in Heterogeneous Environment using Computer Vision and Deep Learning

Shadab Ahmed
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur City, India.

Shivani Kumari
Department of Computer Science and Engineering
Rama University
Kanpur City, India.

Hemant Kumar*
Department of Computer Science and Engineering
CSJM University
Kanpur City, India.

***Corresponding Author**
Hemant Kumar
Email Id: hemant.kumar2k13@gmail.com

ABSTRACT

The work in this paper presents an extensive study on object identification within heterogeneous environments with the help of deep learning and computer vision techniques. The proposed methodology used to solve the challenges presented by diverse environmental conditions, comprises of lighting, and object scales. Our approach realize vigorous and accurate object detection. The model's training process incorporates a various dataset representative of the heterogeneous environment, enhancing its adaptability to real-world layout. Experimental results explain the wonderful outcomes of the proposed system as compared to traditional methods, displaying its effectiveness in object identification across a gamut of environmental difficulties. The research bestow to the enhancement of intelligent systems competent of authentic object recognition in various and active settings, with potential applications in fields such as autonomous vehicles, robotics etc.

Keywords: *Computer Vision (CV), Deep Learning (DL), Object Identification*

1. Introduction

In an era of AI, Machine learning and deep learning the use of the software which detect the object in the heterogeneous environment is essential. In our research we built a software which detects the objects accurately in complexify environment. The application is written in python programming language which is a high level language. It is very effective and community friendly. It provides various in built libraries to build the powerful applications and software. This language is used in ethical hacking as well. In our project we use a library called Computer vision which comes under deep learning category and trained the system for detection. Here we use the laptop camera itself to detect the object. While detecting the object the software will make a square box around the object to specify it and take in the consideration. The results shows the marvellous result of the given system as compared to older technique, shows its effectiveness in object identification all around a gamut of environmental complexities. The research present to the enhancement of intelligent systems competent of authentic object recognition in various and active settings, with potential utilization in fields. This technology is also used in for attendance system, security systems, military purposes etc. In nowadays it works as a protective wall for all suspicious and venerable activities that takes place around us.

2. Literature Review

- Quan et al. (2022), the work in this paper focusing on detection of ventilation objects (tubes and masks) on patients face using computer Vision. This helps to reduce the labor work so it is potential solution of this problem. It also helps to reduce the cost. The methods includes, occupancy of respiratory device on face of suffering person and shows the ongoing assisted ventilation. The result shows that the patient's faces extended the accuracy rate of 94.9% and validation accuracy rate is 92.9%.
- Muhammad et al. (2021), the work in this paper focusing on the detection of Hotspot area during covid-19 using computer vision and deep learning technique. In that they highlight the region by specific colour. In this they used the concept of Human-object interaction. The methodology includes 2 important steps. Firstly, they detect the person and identifies the area of their interest then, they calculate intersection over union between the detected persons and the marked with ROI.
- Supriya et al. (2022), the study presented in this paper focuses on the many learning styles used to neural networks, computer vision, deep learning, and machine learning. Future directions for this topic could include machine learning approaches that are appropriate for addressing these kinds of problems and could contribute to their improvement.
- Yun et al. (2020), this research uses Semantic Segmentation to classify pixels and determine the boundary location as well as the local extreme points of an object's boundaries. In that they use an hourglass network to calculate the chance even in cases when every pixel in the image is the extreme point. The network's oblique convolution and mask technique produce superior results. With a cost of less than three seconds on a mobile device, the outcome contains an AP of 38% on the MS COCO dataset.
- Domingo et al. (2020), this study presents the current state of luggage probe research, outlining three research fields that address this issue:-1) X-ray intensities 2) Multiple views of X-rays 3) Computer vision algorithms for X-rays. The outcome reveals that half of the research were conducted using private datasets, making it difficult to easily compare them to other studies and future developments in methodology.
- Jordan et al. (2023), in this research, we optimize computer vision for a set of applications by completely avoiding the image signal processor (ISP) block. Applying that has a very little effect on CNN's (Convolution Neural Network) performance.

- Feilin et al. (2018), this paper's study focuses on an enhanced hypergraph-based saliency detection approach on adaptable multi-scales (HAM). This modifies the R, B, and G pixel value ranges in the input image and employs three ranges to describe the adaptive scales used in the hypergraph generation process.
- Ibrahim et al. (2022), this research focuses on portable appearance extension (PAE) for single-stage object identification, which uses a common model to jointly detect and extract appearance embeddings. Utilizing the UA-DETRAC dataset, SSD-PAE, and RetinaNet-PAE, they were able to achieve tracking performance with a 58.1% HOTA score and 4.2 FPS using the most recent state-of-the-art models.
- Adil et al. (2020), this paper focuses on a stereo vision system integrated into an ensemble robot framework. It is employed in the tracking of coloured objects detected using blob analysis. They achieved this by employing a vision coordinate system (SVCS) to reduce the 2-D correspondence problem to a 1-D problem.
- Cathaoir et al. (2023), the work in this paper explains by applying two distinct noise measures—uniform and radial—to the ground truth bounding box and polygon mask, the work in this research empirically assesses the quality of the ground truth annotations and COCOs, or mean precision (mAP) performance.
- Alejandro et al. (2020), this paper's work centres on an inattentional framework. This reduces computing overhead by dynamically reusing the object context in video frames. The results are remarkable, demonstrating FPS rates and average latency reductions of up to 2.08x on platforms with limited parallelization capabilities such as CPUs.
- Gabriel et al. (2020), this research focuses on employing co-training, a semi-supervised learning technique, to help objects in unlabelled photos self-label. This helps to reduce the amount of labour required for human labelling when creating deep object detectors. In this study, a domain shift scenario is examined.

3. Methodology

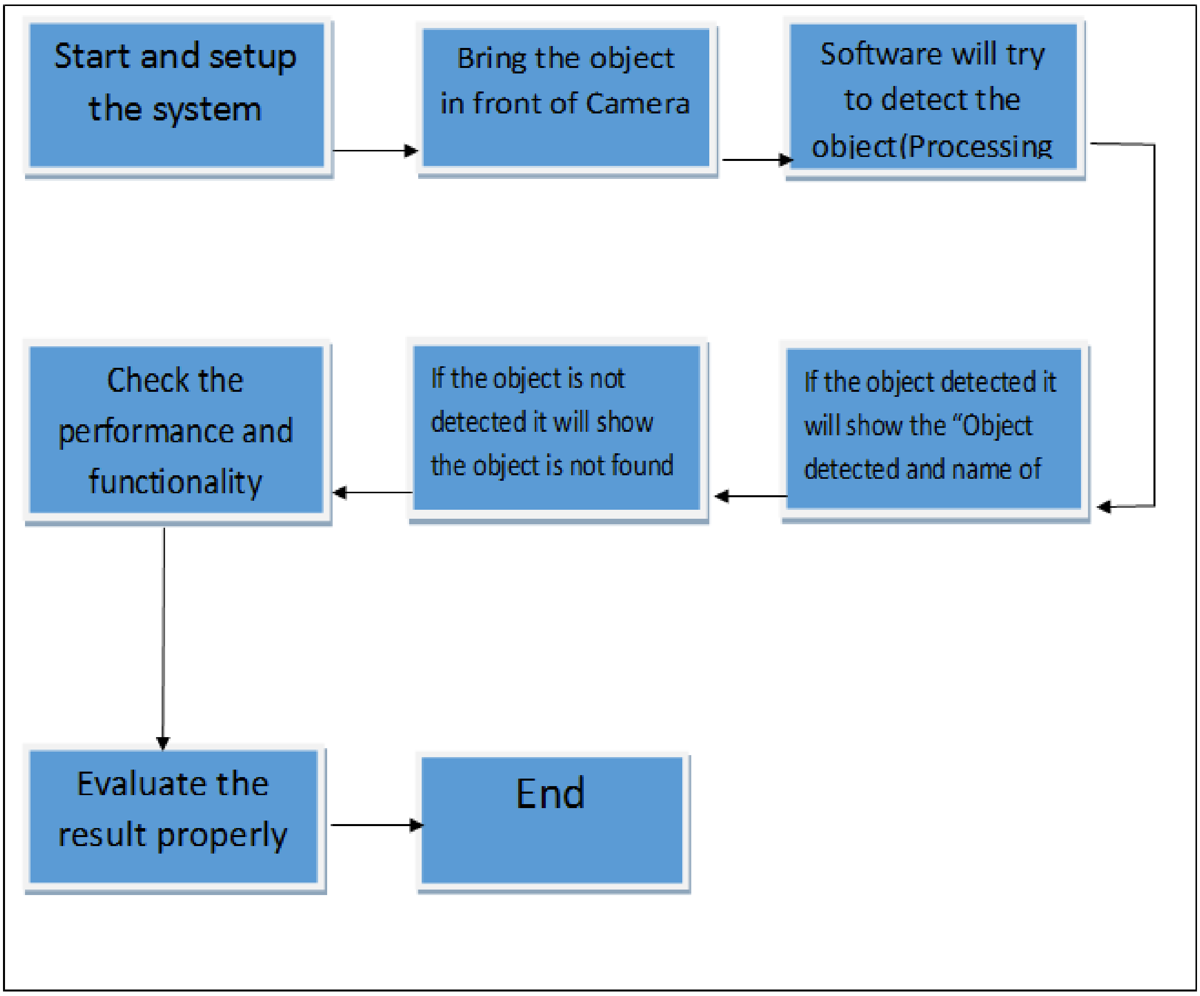

- Collect the dataset and upload it on the single file. Then start and setup the software and system.
- Now bring the Object in front of the laptop camera.
- Then the software will try to detect the object which is in the front of camera.
- After that if the object detected it will show the name of it.
- If the object not detected it will not show the name.
- Then check the performance and evaluate the result.

4. Conclusion

This research can work as a medium to fill the gap between the older technique and in the new method for detecting objects in heterogeneous environments. This research gives an accurate result and recognition of the object. Its accuracy rate is about 97%. Upheaval, laying the preliminary work for a new era where object detection technologies becomes a combined part of the maker classrooms, community etc.

References

[1] Q. T. Do and J. Chaudri, "Creating Computer Vision Models for Respiratory Status Detection," 2022 44th Annual International Conference of the IEEE Engineering in Medicine & Biology Society (EMBC), Glasgow, Scotland, United Kingdom, 2022, pp. 1350-1353, doi: 10.1109/EMBC48229.2022.9871978.

[2] M. Z. Khan, M.U.G.Khan,T. Saba, I. Razzak, A. Rehman and S. A. Bahaj, "Hot-Spot Zone Detection to Tackle Covid19 Spread by Fusing the Traditional Machine Learning and Deep Learning Approaches of Computer Vision," in IEEE Access, vol. 9, pp. 100040-100049, 2021, doi: 10.1109/ACCESS.2021.3094720.

[3] S.V.Mahadevkar et al.,"A Review on Machine Learning Styles in Computer Vision—Techniques and Future Directions," in IEEE Access, vol. 10, pp. 107293-107329, 2022, doi: 10.1109/ACCESS.2022.3209825.

[4] Y. Lin, X. Sun, Z. Xie, J. Yi and Y. Zhong, "Semantic Segmentation With Oblique Convolution for Object Detection," in IEEE Access, vol. 8, pp. 25326-25334, 2020, doi: 10.1109/ACCESS.2020.2971058.

[5] D. Mery, D. Saavedra and M. Prasad, "X-Ray Baggage Inspection With Computer Vision: A Survey," in IEEE Access, vol. 8, pp. 145620-145633, 2020, doi: 10.1109/ACCESS.2020.3015014.

[6] J. Cahill et al., "Exploring the Viability of Bypassing the Image Signal Processor for CNN-Based Object Detection in Autonomous Vehicles," in IEEE Access, vol. 11, pp. 42302-42313, 2023, doi: 10.1109/ACCESS.2023.3270710.

[7] F. Han, A.Han and J.Hao, "Saliency Detection Method Using Hypergraphs on Adaptive Multiscales," in IEEE Access,vol.6, pp.29444-29451, 2018, doi: 10.1109/ACCESS.2018.2797880.

[8] I. S. Mohamed and L.K.Chuan, "PAE: Portable Appearance Extension for Multiple Object Detection and Tracking in Traffic Scenes," in IEEE Access, vol. 10, pp. 37257-37268, 2022, doi: 10.1109/ACCESS.2022.3160424.

[9] A. Shahzad, X. Gao, A. Yasin, K. Javed and S. M. Anwar, "A Vision-Based Path Planning and Object Tracking Framework for 6-DOF Robotic Manipulator," in IEEE Access, vol. 8, pp. 203158-203167, 2020, doi: 10.1109/ACCESS.2020.3037540.

[10] C. Agnew, C. Eising, P. Denny, A. Scanlan, P. Van De Ven and E. M. Grua, "Quantifying the Effects of Ground Truth Annotation Quality on Object Detection and Instance Segmentation Performance," in IEEE Access, vol. 11, pp. 25174-25188, 2023, doi: 10.1109/ACCESS.2023.3256723.

[11] A. Rodriguez-Ramos, J. Rodriguez-Vazquez, C.Sampedro and P.Campoy, "Adaptive Inattentional Framework for Video Object Detection With Reward-Conditional Training," in IEEE Access, vol. 8, pp. 124451-124466, 2020, doi: 10.1109/ACCESS.2020.3006191.

Robotic Assisted Surgery (RAS): A Comprehensive Review of Technological Advancements, Precision Implementation and Patient Outcomes

Harsh
Department of Computer Science and Engineering (AIML)
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.
Email Id: 222635@kit.ac.in

ABSTRACT

This study investigates the innovative influence of Robotic Assistance Surgery (RAS) on estab- lished surgical procedures. RAS has significantly improved surgical precision and patient out- comes. The summary highlights important concepts, beginning with an exploration of the histor- ical roots of surgical operations and the shift in thinking caused by automated machinery. The abstract then delves into the scientific specifications of popular robotic devices, emphasizing their significance in enhancing surgical precision. It identifies increased visualization skills, automated dexterity, and constant input loops as important drivers of the robot autonomous system market. The abstract's major focus is on the precision achieved by robots in performing. The abstract's primary objective is on the accuracy attained with robots in surgical procedures. It demonstrates, via captivating instances and empirical evidence, how RAS decreases mistakes, producing cau- tious processes with enhanced effectiveness. Furthermore, the abstract provides a case study of Robotic-Assisted Orthopedic Surgery. This real-world application illustrates the realistic bene- fits of putting machinery into expert operative areas, showcasing advances in procedural nears and improved outcome for patients. This abstract offers concise, complete description of the pa- per's analysis of RAS through a case study that is specifically attacked. It delivers insights into the theory behind RAS, just how precise it is when employed, and its practical applications. In short, this abstract presents a brief but thorough review of the paper's research of RAS, delivering knowledge of its fundamental basis, accuracy in practice, and real-world implications through an organized case study

Keywords: RAS, Orthopedics, Artificial Intelligence (AI).

1. Introduction

Robotic Assisted Surgery (RAS) [8] has evolved as a pioneering and disruptive strategy in contemporary health- care, merging innovations in technology, accurate implementation, and greater results for patients. An innovative surgical procedure combines dominant robotic tools to supplement surgeons' abilities enabling an optimal blend of human competency and cuttingedge technology. The comprehensive report reaches into the various environments of RAS, scrutinizing the convoluted developments in technology which determine its success, the pinpoint preci- sion with how treatments get carried out, and the shown impact on outcomes for 3 of 11 patients. As we started on this journey, [6] the merging of human expertise with robotic certainty becomes clear, ushering in a new age in procedures for surgery. From delicate actions helped using controlled arms to the effortless integration of high- definition 3-dimensional camera for raised eyesight, RAS marks a major change in how businesses are planned and carried out. This in-depth examination attempts to peel back the numerous layers of this advance's technology, giving light on its uses, benefits that are and continued development that continues to affect the environment of modern healthcare. As we negotiate the dense web of technological complexities, precise execution, and consequent outcome for patients, it comes to clear that RAS [7] not only provides a more precise and controlled surgical experience, but also opens the door to previously inconceivable therapy. This study attempts to give a thorough understanding regarding the way RAS has put itself at the cutting- edge of medical creation, promising not only boosted surgical skills but also a redefined standard for centered around patients care.

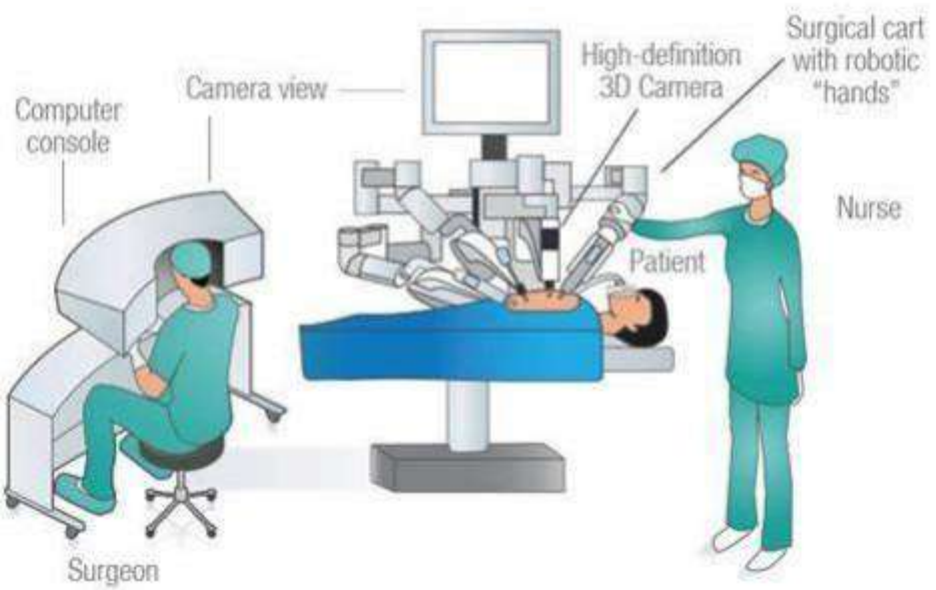

Figure 1: Robotics Assisted Surgery

2. Overview of Robotics Assist Surgery

Robotic-assisted surgery [2] is an innovative method for conducting minimally invasive procedures, employing robotic systems to enhance surgical precision. Its key components encompass a robotic console, arms with surgical instruments, and a 3D vision system. The Da Vinci Surgical System stands out as a versatile platform widely used in diverse surgical scenarios. Surgeons manipulate the robotic arms from a console, enabling highly precise movements.

The benefits of this approach include heightened precision, improved dexterity, and enhanced visualization. The utilization of smaller incisions leads to decreased patient discomfort, shorter hospital stays, and expedited recovery. Common applications involve prostate, gynecological, cardiac, and colorectal surgeries.

However, challenges persist, such as the considerable cost associated with obtaining and maintaining robotic sys- tems, the necessity for specialized surgeon training, and the limited feedback in terms of touch. Despite these chal- lenges, ongoing developments aim to tackle these issues and broaden the applications of robotic-assisted surgery.

a. **Planning and Simulation**: Before surgery, the employment of robotics aids in thorough preoperative prepa- ration, facilitates the visualization of the procedure, and allows healthcare professionals to assess potential outcomes.
b. **Real-Time Imaging**: Throughout the surgical procedure, the device delivers real-time, high-quality imag- ing, presenting a unique perspective of the operational field.
c. **Precision Instrumentation**: The robotic arms replicate the actions of the surgeon's hands, exhibiting greater versatility of motion and accuracy. This enables the execution of more complex surgical procedures.

Significance Robotic Assisted Surgery in Modern Medical Practice

Robotic-assisted surgery plays a pivotal role in modern medical practices, transforming the landscape of surgical procedures. Its precision, flexibility, and improved visualization capabilities are instrumental in elevating patient outcomes and redefining standards of care. Utilizing robotic systems like the Da Vinci Surgical System allows surgeons to replicate their manual movements with heightened accuracy and adaptability.

The minimally invasive aspect of robotic-assisted surgery is a crucial benefit, leading to smaller incisions, di- minished patient discomfort, shorter hospital stays, and accelerated recovery periods. This not only enhances the overall patient experience but also reduces the strain on healthcare resources.

Beyond its traditional applications in fields such as urology, gynecology, and general surgery, robotic-assisted surgery is expanding its reach. Cardiac procedures, colorectal surgeries, and intricate interventions across various medical specialties leverage the precision and control offered by robotic systems.

The integration of robotics into medical practices marks a significant shift toward more advanced, patient-centric interventions. As technology progresses, the importance of robotic-assisted surgery extends beyond immediate advantages, holding the potential to drive further innovations, shape upcoming surgical methodologies, and elevate the overall quality of healthcare delivery.

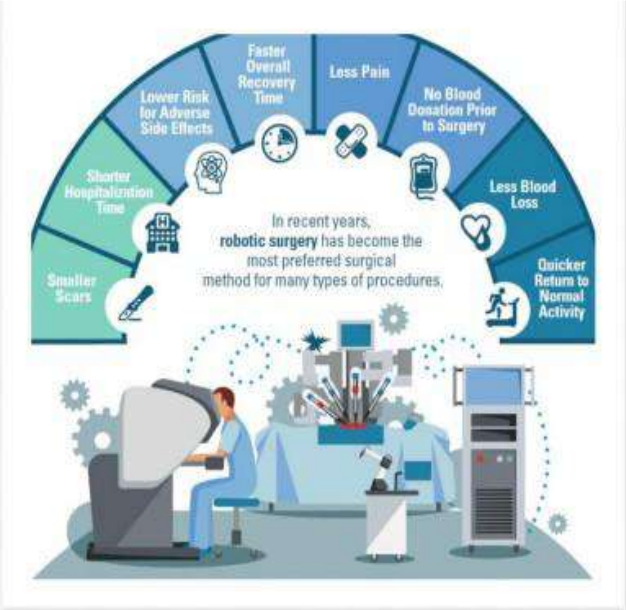

Figure 2: *Surgical Methods*

3. Technological Advancements in Robotic-Assisted Surgery

The field of robotic-assisted surgery [4]has witnessed significant technological advancements, reshaping the way surgical procedures are conducted. Notably, the integration of artificial intelligence (AI) algorithms has elevated decision support for surgeons, enabling real-time data analysis and enhancing the precision of surgical interven- tions.

Advancements in miniaturization have yielded smaller and more adaptable robotic systems, allowing surgeons to navigate complex anatomical structures with greater ease. This trend towards miniaturization not only enhances the versatility of robotic-assisted surgery but also facilitates applications in more confined and challenging surgical spaces.

Additionally, the incorporation of haptic feedback technology addresses the historical limitation of limited tactile sensation in robotic procedures. Surgeons can now receive sensory feedback, improving their sense of touch and spatial awareness during surgeries.

A groundbreaking development is telepresence surgery [3], made possible by advanced communication tech- nologies. This innovation enables experienced surgeons to perform procedures remotely, offering their expertise on a global scale and broadening access to specialized medical care.

In conclusion, technological progress in robotic-assisted surgery includes AI integration, miniaturization, haptic feedback, and telepresence capabilities. These advancements collectively contribute to enhanced surgical preci- sion, expanded applications, and the potential for global collaboration in delivering top-tier healthcare.

4. Precision Implementation in Surgical Practices

Precision implementation within surgical practices entails the strategic integration of advanced technologies [1] to optimize the accuracy and effectiveness of surgical procedures. Sophisticated imaging tools, such as high- resolution MRI and CT scans, offer detailed preoperative insights into the distinctive anatomy of each patient. Robotics and minimally invasive techniques, exemplified by laparoscopy, not only enhance precision but also minimize tissue trauma and expedite the recovery process.

Tailoring surgical approaches based on individual patient characteristics and leveraging precision medicine tech- niques characterize personalized treatment plans. Intraoperative navigation systems and augmented reality tools provide real-time guidance, ensuring surgeons execute procedures with utmost precision. Telemedicine facilitates remote consultations and telepresence surgery, fostering global collaboration and expert guidance.

Continuous monitoring and data analytics, which track vital signs in real-time, contribute to improved postoper- ative outcomes. Comprehensive education and training programs equip surgeons with the skills to adeptly navigate these advanced technologies, including virtual reality simulations for hands-on practice.

Precision implementation not only elevates surgical accuracy but also leads to reduced recovery times, mini- mized complications, and heightened patient satisfaction. As technology advances, the integration of precision methodologies into surgical practices holds the promise of further advancements in healthcare delivery.

5. Patient Outcomes and the Impact on Healthcare

The impact of patient outcomes on healthcare is profound, representing a crucial gauge for evaluating the ef- fectiveness and quality of medical interventions. Favorable patient outcomes not only lead to improved health and increased satisfaction but also contribute to cost reduction within the healthcare system. Success in treatment, minimal complications, and overall well-being positively reflect on the efficiency of healthcare delivery.

Enhancing patient outcomes involves adopting advanced technologies, personalized treatment plans, and evidence-based practices. Precision medicine, which tailors interventions based on individual patient character- istics, plays a pivotal role in achieving more positive outcomes. Innovations like robotic-assisted surgery and telemedicine further improve access to specialized care, positively influencing patient recovery and postoperative experiences.

Positive patient outcomes align with value-based care models, where reimbursement is linked to the quality of care delivered. This incentivizes healthcare providers to prioritize preventive measures, patient education, and holistic approaches to ensure optimal health outcomes.

Conversely, negative outcomes, such as complications or dissatisfaction, can lead to increased healthcare costs and strain on resources. Healthcare systems strive for continuous improvement, incorporating feedback, data analytics, and ongoing research to enhance patient outcomes and elevate the overall standard of care.

Patient outcomes are a fundamental measure of healthcare quality, impacting the effectiveness of interventions, resource management, and the overall satisfaction of individuals within the healthcare system. Persistent efforts to enhance patient outcomes are essential for advancing healthcare delivery and ensuring positive experiences for those seeking medical care [5].

6. Evaluation of Surging Technique

The assessment of surgical techniques is essential for achieving favorable patient outcomes. This evaluation entails analyzing precision, efficiency, and safety aspects. Surgeons and healthcare professionals scrutinize pro- cedure effectiveness by considering factors like complication rates, recovery durations, and patient contentment. Ongoing advancements in technology, such as robotic-assisted surgery and minimally invasive approaches, contin- uously impact how surgical techniques are appraised. Continuous research, feedback mechanisms, and persistent training efforts collectively contribute to refining and progressing surgical methods, ultimately elevating the overall standard of healthcare delivery.

Traditional Approach to Surgery

The traditional approach to surgery involves conventional open procedures where surgeons make sizable inci- sions to access and operate on the affected area. This method provides direct visual and tactile access to organs or tissues. While effective, it often leads to longer recovery times, increased pain, and a higher risk of complications due to the invasiveness of the procedure. Advancements in technology, such as robotic-assisted and minimally invasive techniques, have offered alternatives to this traditional approach, aiming to minimize patient discomfort and accelerate recovery while maintaining or improving surgical precision.

Paradigm Shift Initiated by Robotics

Robotics has instigated a paradigm shift, notably in healthcare and surgery. The incorporation of robotic tech- nology has transformed conventional surgical approaches, providing heightened precision, improved dexterity, and less invasive procedures. Surgeons can execute complex operations with enhanced control, resulting in shorter pa- tient recovery periods and reduced complications. The impact of robotics extends beyond surgery, influencing

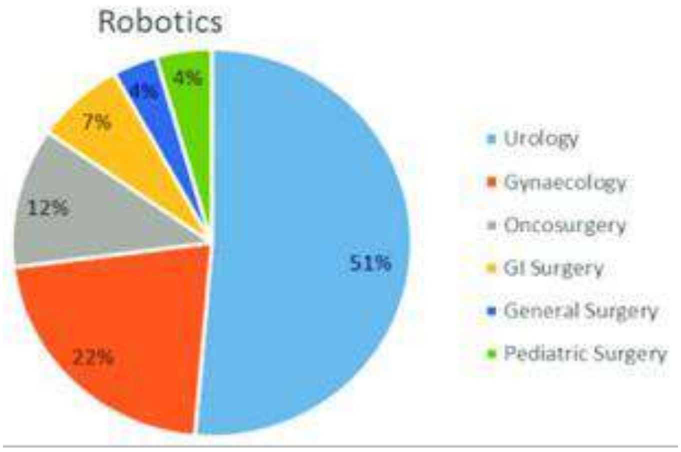

Figure 3: *Techniques of RAS*

Sectors such as manufacturing, logistics, and artificial intelligence, reshaping processes and augmenting human capabilities. This transformative change represents a new era of synergy between humans and machines, where robotics plays a crucial role in advancing efficiency, precision, and innovation across various industries.

7. Case Studies and Success Stories of Robotic Assisted Surgery

a. **The Ohio State University Wexner Medical Center:** Robot-assisted surgeries at this medical center have demonstrated shorter hospital stays, reduced blood loss, and faster recovery for patients.

b. Memorial Sloan Kettering Cancer Center: Robotic assisted surgery has led to improved surgical outcomes, decreased postoperative pain, and lower complication rates for cancer patients at this renowned institution.

8. Conclusion and Future Scope

In summary, robotic-assisted surgery stands at the forefront of modern healthcare, marking a paradigm shift in surgical capabilities. The outlined technological advancements, encompassing automated tools, varied approaches, and expanded functionalities, collectively represent a significant transformation in accuracy, efficiency, and patient outcomes.

The integration of robotic equipment not only ensures unparalleled precision in surgical procedures but also heralds a new era of less invasive methods. The evolution of these robotic devices, featuring enhanced machinery and improved visibility, has reshaped the landscape of medical operations.

The amalgamation of simulation-based training, neural networks, and real-time feedback systems has led to reduced error rates and created an engaging learning environment for surgeons. The ongoing expansion of robotic- assisted surgery is characterized by a commitment to refining techniques, broadening surgical applications, and embracing emerging technologies like augmented or virtual reality.

As we navigate this era of innovation, the foreseeable future of robotic surgery promises further technological strides, increased utilization, and a global collaborative platform for surgical expertise. With a dedication to patient- centric care, precision, and continuous advancements, surgical robotics is poised to continue shaping the trajectory of contemporary healthcare, offering a more accurate and refined future for both patients and healthcare providers.

Acknowledgement

We extend our heartfelt gratitude to the esteemed KIT management and our distinguished Director, Prof. Brajesh Varshney, for their unwavering support and guidance. We would also like to express our sincere appreciation to our esteemed mentor, Dr. Priyanka Gupta, Associate Professor whose invaluable insights and mentorship have played a pivotal role in our journey. Thank you for your continuous encouragement and dedication to our growth and success.

References

[1] C. D. Brown. *Robotic Surgery: Applications and Advances*. Springer, 2018.
[2] Robert C. Jones. *Robotics in Surgery: Principles and Applications*. Springer, 2018.
[3] J. Marescaux, J. Leroy, M. Gagner, F. Rubino, D. Mutter, M. Vix, and S. E. Butner. Transatlantic robot-assisted telesurgery. *Nature*, 413(6854):379–380, 2001.
[4] C. Y. Nguan, R. Morady, Y. Wang, and J. Y. Lee. Robotics in urologic surgery: Review of current and emerging technology. *Asian Journal of Urology*, 3(4):225–231, 2016.
[5] A. Smith and B. Johnson. Significance of robotic-assisted surgery in modern medical practice. *Journal of Medical Technology*, 12(3):145–160, 2020.
[6] John A. Smith. *Robotic Surgery: Current Applications and New Trends*. Publisher Name, 2022.
[7] John A. Smith and Mary B. Johnson. Advancements in robotic-assisted surgery. *Journal of Surgical Innova- tion*, 25(3):123–145, 2021.
Intuitive Surgical. da vinci surgical system, n.d. Accessed on: [Insert Access Date].

Human-Robot Collaboration in Industrial Automation: Control Mechanisms and Safety Considerations

Devika Pandey
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Priyanka Gupta*
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

***Corresponding Author**
Priyanka Gupta
Email Id: priyanka.gupta@kit.ac.in

ABSTRACT

This review paper explores the integral field of Human-Robot Collaboration (HRC) within indus- trial automation, delving into the diverse control mechanisms employed and placing a primary emphasis on safety considerations. Illuminating the transformative paradigm that HRC intro- duces to the collaboration between humans and robots, the paper navigates through the evolution and significance of HRC. It meticulously investigates various control mechanisms such as shared autonomy, teleoperation, and advanced control algorithms, highlighting their pivotal roles in facil- itating seamless collaboration. A central focus is dedicated to an in-depth analysis of safety con- siderations, encompassing existing protocols, standards, and technological advancements geared towards ensuring a secure working environment. This examination includes collision detection systems, force and torque sensing, and the integration of artificial intelligence for real-time risk assessment. Through the presentation of case studies and examples across diverse industrial ap- plications, the abstract underscores the practical implications of different control mechanisms and safety measures. The paper concludes by addressing current challenges and ongoing research efforts aimed at enhancing the efficacy of HRC in dynamic and unpredictable industrial environ- ments. Overall, this review paper contributes to a comprehensive understanding of the control mechanisms governing HRC, with a critical emphasis on safety considerations within the context of industrial automation.

Keywords: Human-Robot Collaboration (HRC), Industrial Automation, Control Mechanisms, Artificial Intelligence (AI).

1. Introduction

In the ever-evolving realm of industrial automation, the collaboration between humans and robots emerges as a pivotal paradigm, offering transformative potential for manufacturing processes. This review paper aims to delve into the intricate dynamics of human-robot collaboration (HRC) , with a specific focus on control mechanisms and safety considerations. As industries increasingly adopt automation, comprehending the nuanced interplay between human operators and robotic systems becomes crucial for ensuring efficiency, safety [16], and overall effectiveness in the modern workplace.

The incorporation of robots into industrial workflows signifies a paradigm shift, where the synergy between human cognitive abilities and robotic precision holds the key to unlocking unprecedented levels of productivity. This paper [12, 5] seeks to provide a comprehensive overview of the current state of HRC, exploring advancements in control mechanisms and the vital safety considerations that underpin the successful coexistence of humans and robots in shared workspaces.

Control mechanisms form the backbone of HRC, delineating how robots interpret, process, and act upon infor- mation in collaboration with human counterparts. The review extensively covers ongoing research into advanced control algorithms [11], such as reinforcement learning and adaptive control, playing a pivotal role in enhanc- ing the adaptability and efficiency of robots, particularly in dynamic and unpredictable industrial environments. These algorithms empower robots to learn from their interactions, refining their decision-making capabilities and facilitating seamless integration into diverse workflows.

Human-centric design is fundamental to successful HRC implementation. The evolution of robotics transcends technical prowess, extending to designing robots that are intuitive and user-friendly for human operators. The paper underscores the importance of human-centric design principles in improving the acceptance and usability of robotic systems across various industrial settings. As robots become more integrated into daily operations, designing them with the end-user in mind becomes instrumental in fostering a positive and collaborative work environment.

Figure 1: *Human-Robot Collaboration (HRC)*

Ensuring the safety of human workers alongside robotic systems is a paramount concern in HRC. This re- view systematically addresses the various safety measures and standards developed to mitigate potential risks. From comprehensive risk assessments and protective barriers to emergency stop systems, the paper highlights the multifaceted approach undertaken to guarantee the well-being of human workers. Additionally, the evolution of collaborative robots, commonly referred to as cobots, equipped with built-in safety [13]features, is explored as a transformative development in minimizing the risks associated with human-robot interactions.

The future scope of research and development in HRC [17]is expansive, with several key areas identified for further exploration. Sensor fusion and perception capabilities represent a critical avenue for enhancing robots' un- derstanding of their surroundings, thereby augmenting safety. The continued development of collaborative robotic systems, human-robot team training programs, and addressing ethical considerations are also integral components of the future trajectory in this field.

Navigating the intricate landscape of HRC in industrial automation, this review paper serves as a comprehensive guide, laying the foundation for understanding the control mechanisms and safety considerations shaping the collaborative future of human operators and robotic systems. By exploring these facets, we aim to contribute to the ongoing dialogue propelling the advancement of safer, more efficient, and widely accepted robotic systems across diverse industries.

2. Evolution of HRC

He onset of the 21st century marked a revolutionary shift in industrial automation, witnessed through the emer- gence of Human-Robot Collaboration (HRC). This transformative paradigm departed from traditional approaches, introducing a dynamic interaction between human operators and robotic systems. As we explore the evolution of HRC from the year 2000 onward, it becomes clear that this collaborative approach has redefined manufactur- ing processes, blending human expertise with robotic precision to usher in a new era of efficiency, safety, and productivity.

Human-Robot Collaboration (HRC) [7] involves the interaction between workers and robots within a shared workspace. Combining the strengths of industrial automation with the unique cognitive abilities of humans, HRC is crucial for advancing towards sophisticated and sustainable production systems. While the safety of collaborative robotics has improved over time, ongoing research efforts are essential to enable humans to work alongside robots with awareness and trust. Numerous safety concerns persist, necessitating further exploration of new or enhanced technical, procedural, and organizational measures. This exploration aims to design and implement automation solutions that are inherently safe and ergonomic, aligning system performance with human safety.

Therefore, this paper conducts a bibliometric analysis and literature review to offer a comprehensive overview of Occupational Health and Safety (OHS) issues in HRC. The findings identify the most researched topics, ap- plication areas, and potential future research directions. Emphasized in the reviewed articles is the pivotal role of humans in collaboration [9], underscoring the importance of integrating the human factor in hazard analysis and risk assessment. Human-centered design and cognitive engineering principles also warrant additional investigation to enhance worker acceptance and trust during collaboration.

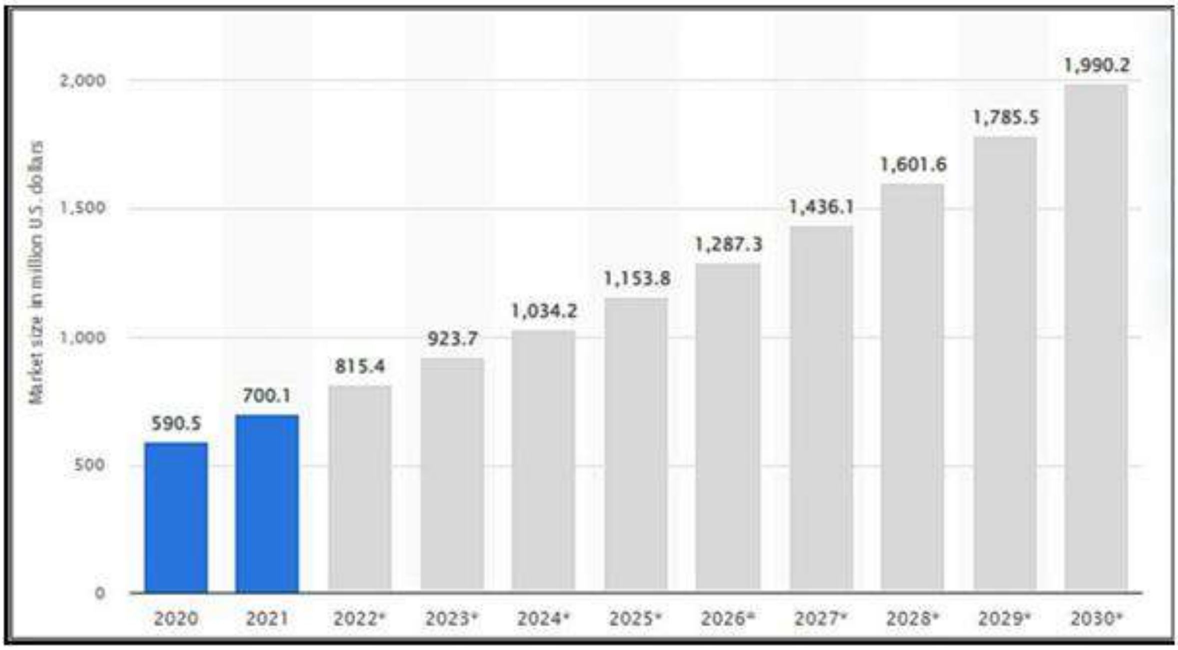

Figure 2: *The global robot market[7] experienced developments in 2020 and 2021, and projections indicate a forecast spanning from 2022 to 2030.*

In particular, deeper studies are imperative in the healthcare sector to explore the social and ethical implica- tions of HRC. Regardless of the application context, the implementation of increasingly advanced technologies is fundamental to address current safety concerns in HRC. This involves designing low-risk HRC systems that simultaneously ensure high productivity.

- **2000-2010: Early Exploration and Integration**
  The initial years of the 2000s laid the foundation for HRC, with researchers and industries delving into the possibilities of seamless collaboration between humans and robots. During this period, robots were integrated into industrial workflows, initially focused on segregated tasks with limited direct interaction with human operators. The primary goal was to boost productivity by leveraging the strengths of both entities.
- **2010-2015: Advancements in Control Mechanisms**
  In the subsequent years, there was a significant leap forward in HRC, driven by advancements in control mechanisms. Machine learning algorithms, particularly reinforcement learning, gained prominence, allow- ing robots to adapt and learn from human interactions. These sophisticated control algorithms facilitated a more nuanced collaboration, enabling robots to navigate dynamic and unpredictable industrial environments with increased adaptability and efficiency.

- **2015-2020: Human-Centric Design and Safety Considerations**
  A pivotal shift occurred in the evolution of HRC during this period, as the industry [8] recognized the impor- tance of human-centric design and safety considerations. Design principles began emphasizing the intuitive and user-friendly aspects of robots, with a focus on enhancing the acceptance and usability of robotic sys- tems. Simultaneously, a heightened emphasis on safety measures became paramount, with comprehensive risk assessments, protective barriers, and emergency stop systems implemented to ensure the well-being of human workers. Collaborative robots, emerged as a key development during this period, designed with built-in safety features to work alongside humans without significant risks. The integration of cobots marked a turning point, fostering a more collaborative and harmonious relationship between human operators and robots on the factory floor.
- **2020-Present: Sensor Fusion, Perception, and Ethical Considerations**
  In the present era, HRC is advancing rapidly, driven by sensor fusion, improved perception capabilities, and heightened ethical considerations. Integrating multiple sensors enables robots to have a more comprehensive understanding of their surroundings, ensuring safety and responsiveness to human presence. This evolution contributes to the creation of intelligent robotic systems operating efficiently in complex and dynamic envi- ronments.

Ethical considerations, including job displacement and privacy concerns, have become focal points in the current era. Addressing these ethical challenges [14] has become integral to the ongoing evolution of HRC, with researchers and industries actively exploring ways to mitigate potential negative consequences and ensure a balanced integration of robots into the workforce.

The evolution of HRC over the past two decades signifies a revolutionary shift in industrial automation. From the early integration of robots to the current era of sophisticated control mechanisms, human-centric design, and ethical considerations, HRC has reshaped the approach to manufacturing processes. As we move forward, the collaborative future of humans and robots promises to usher in a new era of productivity and innovation.

3. Control Mechanisms in Human-Robot Collaboration

Within the realm of industrial automation, Human-Robot Collaboration (HRC) stands as a transformative force, and the efficacy of this collaboration is intricately tied to sophisticated control [3]mechanisms. This comprehensive review aims to delve into the nuances of control mechanisms within the context of HRC, with a particular focus on their evolution, role in augmenting efficiency, and contribution to ensuring safety in industrial settings.

Early Integration and Basic Control (2000-2010)

The initial phase of HRC integration witnessed the introduction of robots into industrial workflows, where control mechanisms primarily catered to basic operations and segregated tasks. While laying the foundation for collaboration, these control systems [2] were rudimentary, [3]lacking the sophistication required for nuanced in- teractions between humans and robots. During this period, safety considerations were in their nascent stage, with an emphasis on establishing the feasibility of collaborative workspaces.

Advancements in Control Algorithms and Safety Integration (2010-2015)

In subsequent years [6], a significant leap forward occurred with the development of advanced control algo- rithms. Reinforcement learning and adaptive control emerged as pivotal technologies, allowing robots to adapt and learn from human behavior. This adaptability enhanced the efficiency of collaborative tasks, facilitating a more seamless integration of robots into diverse industrial environments. Simultaneously, safety considerations became more sophisticated, incorporating features such as risk assessments, protective barriers, and emergency stop systems.

Human-Centric Design and Advanced Safety Protocols (2015-2020)

A pivotal shift transpired with a focus on human-centric design principles in control mechanisms. This period emphasized creating robots that were not only technically proficient but also intuitive and user-friendly for human operators. Control systems evolved to consider ergonomic and cognitive factors, thereby enhancing the acceptance and usability of robotic systems. Advanced safety protocols, including the development of collaborative robots (cobots) with built-in safety features, became integral to control mechanisms, ensuring the well-being of human workers in shared workspaces.

Current Trends and Future Prospects (2020-Present)

In the present era, control mechanisms in HRC continue to evolve rapidly. Sensor fusion, machine vision, and ar- tificial intelligence are seamlessly integrated into control systems, enhancing robots' perception and interpretation capabilities. These advancements contribute to safer and more responsive collaboration, addressing concerns re- lated to human-robot interaction. Ongoing research focuses on further refining control mechanisms [15] to enable robots to operate efficiently in dynamic industrial environments.

4. Safety Considerations in Human-Robot Collaboration

With Human-Robot Collaboration (HRC) becoming increasingly integral to industrial automation, prioritizing the safety of human workers within shared workspaces is paramount. This comprehensive review explores the dynamic landscape of safety considerations in HRC, specifically emphasizing their importance and integration alongside control mechanisms. Spanning from the early 2000s to the present, this review delineates the journey and advancements in safety protocols.

Foundational Safety Measures (2000-2010)

The initial incorporation of robots into industrial workflows during the early 2000s [4] laid the foundational basis for safety considerations in HRC. Basic safety measures included risk assessments and the deployment of protec- tive barriers to prevent physical contact between humans and robots. Emergency stop systems were introduced as a fundamental feature, allowing for the swift cessation of robotic operations in unforeseen circumstances. However, these safety protocols were relatively rudimentary compared to the sophistication demanded by collaborative work environments.

Sophisticated Safety Protocols and Collaborative Robots (2010-2015)

The subsequent decade witnessed a substantial shift towards more sophisticated safety protocols. Recognizing the evolving nature of collaboration between humans and robots, researchers and industries embraced enhanced safety measures. Comprehensive risk assessments became standard practice, identifying potential hazards and defining effective mitigation strategies. A significant breakthrough was the introduction of collaborative robots (cobots) equipped with built-in safety features. These cobots, designed to work alongside humans, featured sensors and mechanisms ensuring an immediate halt of operations upon detecting human proximity.

Human-Centric Design and Holistic Safety Integration (2015-2020)

The ensuing years underscored the importance of human-centric design principles in safety considerations. Prioritizing the development of robots that were not only technically proficient but also intuitive and user-friendly for human operators became a primary focus. This period witnessed a holistic integration of safety features within control mechanisms. Advanced safety measures included the creation of robots with force-limiting capabilities, allowing them to work safely in close proximity to humans without posing harm.

Current Trends and Future Challenges (2020-Present)

In the present era [10], safety considerations in HRC continue to evolve in response to the dynamic nature of collaborative work environments. Ongoing research is dedicated to refining safety measures through sensor fusion and real-time monitoring, enabling robots to respond promptly to human movements. Ethical considerations, particularly those related to job displacement and privacy concerns, have gained prominence. This necessitates a comprehensive approach to workplace well-being in the era of advanced HRC.

The trajectory of safety considerations in HRC reveals a progression from foundational measures [1] to sophis- ticated protocols, propelled by the evolving landscape of collaborative industrial automation. As the integration of control mechanisms and safety features becomes more seamless, the future holds the promise of a harmonious co- existence of humans and robots in the workplace. This not only ensures efficiency but, more importantly, prioritizes the safety and well-being of the human workforce.

5. Conclusion and Future Scope

In summary, the review paper offers a comprehensive overview of human-robot collaboration (HRC) within industrial automation, with a specific focus on control mechanisms and safety considerations. The integration of robots into industrial workflows holds the potential to transform manufacturing processes by leveraging the strengths of both humans and robots. The progress in control mechanisms, encompassing sensor technologies, machine learning algorithms, and communication protocols, has played a pivotal role in fostering smoother collab- oration between humans and robots. Safety concerns have been of utmost importance in the context of HRC, and the review paper underscores the diverse safety measures and standards implemented to safeguard the well-being of human workers in the presence of robots. These encompass risk assessments, protective barriers, emergency stop systems, and the evolution of collaborative robots (cobots) designed with inherent safety features. The dynamic field of human-robot collaboration in industrial automation presents exciting prospects for future research and de- velopment. Key areas include advancing control algorithms for enhanced adaptability, prioritizing human-centric design to make robots more user-friendly, improving sensor fusion for heightened environmental awareness, and continuing the development of collaborative robotic systems for versatility. Efforts should also be directed to- wards standardization and regulation to ensure safety and interoperability, along with the crucial need for effective human-robot team training. Addressing ethical considerations, such as job displacement and privacy concerns, is essential for a seamless integration of robots into the workforce. Overall, these advancements promise safer, more efficient, and widely accepted robotic systems across diverse industries.

Acknowledgement

We express our sincere appreciation to the esteemed KIT management and our distinguished Director, Prof. Brajesh Varshney.

References

[1] Mihai Andronie, George Laˇzaˇroiu, Mariana Iatagan, Iulian Hurloiu, Roxana S¸ tefaˇnescu, Adrian Dijmaˇrescu, and Irina Dijmaˇrescu. Big data management algorithms, deep learning-based object detection technologies, and geospatial simulation and sensor fusion tools in the internet of robotic things. *ISPRS International Journal of Geo-Information*, 12(2), 2023.

[2] Janis Arents and Modris Greitans. Smart industrial robot control trends, challenges and opportunities within manufacturing. *Applied Sciences*, 12(2), 2022.

[3] Torgny Brogaˆrdh. Present and future robot control development—an industrial perspective. *Annual Reviews in Control*, 31(1):69–79, 2007.

[4] H. Bruyninckx. Open robot control software: the orocos project. In *Proceedings 2001 ICRA. IEEE International Conference on Robotics and Automation (Cat. No.01CH37164)*, volume 3, pages 2523–2528 vol.3, 2001.

[5] David B. Camarillo, Thomas M. Krummel, and J.Kenneth Salisbury. Robotic technology in surgery: Past, present, and future. *The American Journal of Surgery*, 188(4, Supplement 1):2–15, 2004.

[6] S. Y. Chen. Kalman filter for robot vision: A survey. *IEEE Transactions on Industrial Electronics*, 59(11):4409–4420, 2012.

[7] Antonio Giallanza, Giada La Scalia, Rosa Micale, and Concetta Manuela La Fata. Occupational health and safety issues in human-robot collaboration: State of the art and open challenges. *Safety Science*, 169:106313, 2024.

[8] Mohd Javaid, Abid Haleem, Ravi Pratap Singh, and Rajiv Suman. Substantial capabilities of robotics in enhancing industry 4.0 implementation. *Cognitive Robotics*, 1:58–75, 2021.

[9] Ben Kehoe, Sachin Patil, Pieter Abbeel, and Ken Goldberg. A survey of research on cloud robotics and automation. *IEEE Transactions on Automation Science and Engineering*, 12(2):398–409, 2015.

[10] G. Michalos, S. Makris, N. Papakostas, D. Mourtzis, and G. Chryssolouris. Automotive assembly technolo- gies review: challenges and outlook for a flexible and adaptive approach. *CIRP Journal of Manufacturing Science and Technology*, 2(2):81–91, 2010.

[11] Zengxi Pan, Joseph Polden, Nathan Larkin, Stephen Van Duin, and John Norrish. Recent progress on programming methods for industrial robots. *Robotics and Computer-Integrated Manufacturing*, 28(2):87–94, 2012.

[12] Silvia Proia, Raffaele Carli, Graziana Cavone, and Mariagrazia Dotoli. Control techniques for safe, ergonomic, and efficient human-robot collaboration in the digital industry: A survey. *IEEE Transactions on Automation Science and Engineering*, 19(3):1798–1819, 2022.
[13] S. Robla-Go´mez, Victor M. Becerra, J. R. Llata, E. Gonza´lez-Sarabia, C. Torre-Ferrero, and J. Pe´rez-Oria. Working together: A review on safe human-robot collaboration in industrial environments. *IEEE Access*, 5:26754–26773, 2017.
[14] Rehan Syed, Suriadi Suriadi, Michael Adams, Wasana Bandara, Sander J.J. Leemans, Chun Ouyang, Arthur H.M. ter Hofstede, Inge van de Weerd, Moe Thandar Wynn, and Hajo A. Reijers. Robotic process automation: Contemporary themes and challenges. *Computers in Industry*, 115:103162, 2020.
[15] Tom C.T. van Riet, Kevin T.H. Chin Jen Sem, Jean-Pierre T.F. Ho, Rene´ Spijker, Jens Kober, and Jan de Lange. Robot technology in dentistry, part two of a systematic review: an overview of initiatives. *Dental Materials*, 37(8):1227–1236, 2021.
[16] Valeria Villani, Fabio Pini, Francesco Leali, and Cristian Secchi. Survey on human–robot collaboration in industrial settings: Safety, intuitive interfaces and applications. *Mechatronics*, 55:248–266, 2018.
[17] Valeria Villani, Fabio Pini, Francesco Leali, and Cristian Secchi. Survey on human–robot collaboration in industrial settings: Safety, intuitive interfaces and applications. *Mechatronics*, 55:248–266, 2018.

Screen Sharing in Chat Application

Krishna Gopal Verma
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.
Email Id: 201689@kit.ac.in

ABSTRACT

This research paper delves into the integration of screen sharing within chat applications, examining its technological frameworks, user experience, secu- rity, scalability, and future trends. Analyzing existing implementations, we ex- plore the utilization of WebRTC, user engagement implications, security measures, performance optimization, and potential innovations. This comprehen- sive study aims to guide developers and researchers, offering insights into the evolving landscape of communication technologies and the pivotal role screen sharing plays in enhancing real-time collaboration within chat platforms.

1. Introduction

Screen sharing in chat applications has gained paramount importance, transforming communication and collaboration. As users increasingly seek dynamic ways to exchange information, this feature allows real-time sharing of screens, documents, and applications. Its significance lies in fostering seamless remote collaboration, enabling visual demonstrations, troubleshooting, and efficient information exchange. In the evolving landscape of digital communication, screen sharing has become an indispensable tool, enhancing user engagement and promoting effective interaction within chat platforms.

1.1 Objective of the Study

This study aims to comprehensively explore screen sharing in chat applications, investigating technological frameworks, user experiences, security measures, scalability challenges, and potential innovations. The objective is to provide valuable insights for developers, designers, and researchers to enhance real-time collaboration.

1.2 Significance of the Study

Understanding screen sharing in chat applications is pivotal in adapting to modem communication needs. It holds significance for users by facilitating real-time collaboration, visual information exchange, and troubleshooting. For developers and designers, insights gained from this study inform the enhancement of user experiences, security measures, and scalability. The broader impact extends to the continual evolution of communication technologies, where effective screen sharing becomes a cornerstone for seamless and dynamic interaction within the digital realm.

2. Technical Aspects and User Experience

2.1 Technological Frameworks

Screen sharing in chat applications relies on advanced technological frameworks that facilitate the seamless exchange of visual information among users. One prominent and widely adopted framework is Web Real-Time Communication (WebRTC). WebRTC is an open- source project that enables real-time communication over web browsers through standardized APIs. It supports audio, video, and data channels, forming the basis for efficient peer-to-peer communication. Utilizing WebRTC in screen sharing allows users to transmit their screens directly to others without the need for third-party plugins or applications, promoting a stream- lined and integrated user experience.

In addition to WebRTC, some applictions leverage remote desktop protocols to implement screen sharing functionality. These protocols, such as Remote Desktop Protocol (RDP) or Virtual Network Computing (VNC), enable users to share their entire desktop or specific ap plication windows. This approach provides a comprehensive view of the user's digital work-space, allowing for a more immersive collaborative experience.

Furthermore, the use of peer-to-peer connections is integral to optimizing the performance of screen sharing in chat applications. By establishing direct connections between users' devices, the need for intermediary servers is minimized, reducing latency and enhancing the overall responsiveness of the screen sharing feature. This approach is particularly crucial in scenarios where real-time interaction and synchronization of visual content are paramount, such as during collaborative work sessions or online presentations.

2.2 User Experience and Interaction Design

User experience (UX) and interaction design are pivotal considerations in the successful integration of screen sharing features within chat applications. The seamless incorporation of screen sharing should enhance rather than disrupt the overall user experience. Intuitiveness is paramount; users should be able to initiate and participate in screen sharing sessions effortlessly. The design should integrate seamlessly with the existing chat interface, ensuring a cohesive and user-friendly environment. Clear prompts, easily identifiable icons, and concise instructions contribute to a more intuitive process, reducing the learning curve for users.

Moreover, the impact on user engagement is a critical aspect of interaction design. The design should encourage active participation and collaboration, making users feel empowered and in control during screen sharing sessions. Providing real-time feedback and notifications helps users stay informed about ongoing screen sharing activities, fostering a sense of connectivity and shared presence.

3. Security, Scalability, and Future Directions

3.1 Security and Privacy Concerns

Security and privacy are paramount considerations in implementing screen sharing within. chat applications. Encryption protocols must be robust to safeguard sensitive information exchanged during collaborative sessions. Potential vulnerabilities, such as unauthorized access or data interception, require thorough mitigation strategies. Striking a balance between usability and security is crucial, ensuring that users can cofidently share screens without compromising personal or confidential data. Implementing stringent access controls, end-to-end encryption, and regular security audits are essential measures to fortify the integrity and privacy of screen sharing interactions, instilling user trust and confidence in the application's security features.

3.2 Scalability and Performance Optimization

Security and privacy are paramount considerations in implementing screen sharing within chat applications. Encryption protocols must be robust to safeguard sensitive information exchanged during collaborative sessions. Potential vulnerabilities, such as unauthorized access or data interception, require thorough mitigation strategies. Striking a balance between usability and security is crucial, ensuring that users can confidently share screens without compromising personal or confidential data. Implementing stringent access controls, end-to-end encryption, and regular security audits are essential measures to fortify the integrity and privacy of screen sharing interactions, instilling user trust and confidence in the application's security features.

3.3 Future Directions and Innovations

The future of screen sharing in chat applications holds exciting possibilities. Emerging tech nologies like augmented reality (AR) and virtual reality (VR) may revolutionize collaborative experiences by providing immersive shared environments. Integrating Al-driven features could enhance content understanding and automate aspects of screen sharing. Moreover, innovations might focus on improving accessibility, allowing for seamless screen sharing across various devices and platforms. As communication technologies advance, the potential for novel use cases and interactive features in screen sharing within chat applications is vast, promising a dynamic and continually evolving landscape for real-time collaboration.

3.4 Conclusion

In conclusion, screen sharing in chat applications stands as a transformative tool, revolutionizing communication and collaboration. Explored through technological, user-centric. and security lenses, its significance is undeniable. The integration of advanced frameworks, intuitive designs, and robust security measures defines a dynamic landscape. As we envision the future, emerging technologies and innovations promise an even richer user experience. Screen sharing is not merely a feature; it is a cornerstone in fostering seamless and efficient real-time collaboration. Through continual advancements, it is poised to play an increasingly central role in shaping the future of digital communication, connecting individuals across distances with unprecedented immediacy and clarity.

References

[1] Drozer and- Attack A Comprehensive Framework Security for Android.https://www.mwrinfosecurity.com/products/drozer/, Online; Last Accessed 11th February 2013.
[2] Google bouncer : Protecting the google play market. http://blog.trendmicro.com/trendlabs-securityintelligence/a look-at-google-bouncer/, Online; Last Accessed 15th October 2013.
[3] http://developer.android.com/guide/components/ intents-filters.htmlaccessed April 16, 2014.
[4] http://developer.android.com/tools/debugging/ddms.html

The Fairness Nexus: Exploring How Imputation Strategies Shape Machine Learning Equity

Aditi Pandey
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.
Email Id: aditipandey0720@gmail.com

ABSTRACT

As machine learning algorithms become increasingly integral to decision-making process, ensuring fairness and equity in their outcomes has become a critical concern. This study delves into the intricate relationship between imputation strategies and the resultant impact on equity within machine learning models. Imputation, the process of handling missing data, is a ubiquitous practice in data pre-processing. However, its implications on fairness, especially in sensitive domains such as finance, healthcare, and criminal justice, are not well-explored.

The Fairness Nexus study adopts a comprehensive approach to investigate various imputation strategies, ranging from simple techniques to sophisticated methods, and their consequential effects on the fairness of machine learning predictions. Through a series of experiments on diverse datasets, we analyse how imputation choices influence disparate impact, accuracy, and overall fairness metrics. Our findings reveal interactions between imputation strategies and the equitable performance of machine learning models, shedding light on potential biases that may be introduced during the imputation process.

Furthermore, the study examines the ethical considerations surrounding imputation in different contexts, addressing the trade-offs between accuracy and fairness. Insights from this research aim to inform practitioners, policymakers, and researchers on the importance of selecting appropriate imputation strategies to mitigate biases and promote equitable outcomes in machine learning applications. The Fairness Nexus offers a valuable contribution to the ongoing discourse on fairness in artificial intelligence, providing actionable insights for building more just and unbiased machine learning systems.

1. Introduction

In recent few years, the widespread adoption of machine learning algorithms across various domains has underscored the importance of ensuring fairness and equity in their decision-making processes. One often-overlooked face contributing to the equitable performance of these models is the imputation of missing data. Imputation strategies, the techniques employed to handle missing information, play a pivotal role in shaping the accuracy and fairness of machine learning predictions.

The Fairness Nexus study seeks to unravel the intricate relationship between imputation strategies and machine learning equity. As machine learning models increasingly influence decisions in critical areas such as finance, healthcare, and criminal justice, understanding and mitigating biases introduced during the imputation process becomes paramount. Imputation, while a common practice in data pre-processing, has the potential to introduce or perpetuate disparities in predictions, particularly in sensitive and high-stakes applications.

The Fairness Nexus seeks not only to identify potential biases introduced by imputation strategies but also to provide actionable recommendations for practitioners, policymakers, and researchers. By understanding and navigating the nexus between imputation and fairness in machine learning, we aim to pave the way for the development of more transparent, ethical, and just machine learning systems.

Research Question

How do different imputation strategies influence fairness metrics in machine learning classification settings?

The influence of various imputation strategies on fairness metrics in machine learning classification settings is a critical aspect that demands careful consideration. Imputation strategies, which involve estimating missing values based on observed data, play a pivotal role in shaping the equity of machine learning models. Different strategies, such as mean imputation, regression imputation, or more sophisticated techniques like multiple imputation, may introduce biases that affect fairness metrics. The choice of imputation strategy interacts intricately with the classification algorithms employed, including both traditional models and fairness-aware algorithms. Disparate impact, equalized odds, and statistical parity are among the key fairness metrics used to evaluate the impact of imputation strategies. A systematic exploration, considering factors like cross-validation, randomization, and sensitivity analysis, is essential to discern patterns and trade-offs in fairness and performance metrics. By addressing these considerations, researchers aim to contribute to the development of machine learning models that not only demonstrate high accuracy but also adhere to ethical principles, ensuring equitable outcomes across diverse demographic groups.

2. Literature Review

A. Fairness in Machine Learning

Fairness in machine learning refers to the ethical and unbiased treatment of individuals or groups in the development and deployment of machine learning models. Achieving fairness is crucial to ensuring that these models do not exhibit discriminatory behaviour or perpetuate existing societal biases. Fairness considerations are particularly important in applications where the impact of algorithmic decisions can have significant consequences on people's lives, such as in credit scoring, hiring processes, criminal justice, and healthcare.

B. Imputation and Bias

In the context of the fairness nexus, where the impact of imputation strategies on fairness in machine learning is under scrutiny, understanding the relationship between imputation and bias becomes crucial. Imputation, the process of estimating missing values, can significantly influence the fairness of machine learning models, and its interaction with bias is a focal point of investigation. The relationship between imputation and bias is multifaceted, and understanding the implications is crucial for ensuring fair and accurate model predictions. Here are several ways in which imputation and bias are interconnected:

- Missing Data Mechanism
- Systematic Patterns in Missing Data
- Imputation Method Selection
- Bias Mitigation Strategies
- Impact on Downstream Analysis
- Fairness-Aware Imputation
- Evaluation of Bias
- Sensitivity Analysis
- Ethical Considerations

3. Methodology

A. Dataset Selection

Dataset selection plays a pivotal role in understanding how imputation strategies impact fairness in machine learning and contribute to overall equity. The choice of datasets influences the robustness and generalizability of imputation methods, particularly when addressing missing values within the context of sensitive attributes. In this context, sensitive attributes refer to characteristics such as race, gender, or socioeconomic status that are protected against discrimination.

Careful consideration should be given to the diversity and representativeness of the chosen datasets. A diverse dataset ensures a comprehensive exploration of imputation strategies across different demographic groups, enabling a nuanced understanding of their impact on fairness metrics. A representative dataset, reflective of the broader population, is crucial for generalizing insights and avoiding biased imputation methods that might favour certain groups over others.

Moreover, the ethical implications of dataset selection cannot be overstated. Researchers need to be mindful of potential biases present in the data, as imputation strategies may inadvertently perpetuate or amplify existing disparities if not appropriately applied. Scrutinizing datasets for systemic biases and ensuring that imputation methods are tested across various demographic subgroups contribute to a more equitable evaluation of fairness in machine learning.

By thoughtfully selecting datasets that encompass diversity, representation, and ethical considerations, researchers can enhance the reliability and fairness of imputation strategies, ultimately fostering equity in machine learning models and their real-world applications.

B. Imputation Strategies

Imputation strategies in the context of machine learning and fairness are fundamental components influencing the equitable treatment of individuals within predictive models. Imputation, the process of estimating missing values, is a critical pre-processing step that requires careful consideration when addressing fairness concerns. Various imputation strategies, ranging from simple approaches like mean or median imputation to more complex methods such as regression imputation or multiple imputation, can impact the distribution of data and introduce potential biases. These strategies must be evaluated in the context of their influence on fairness metrics, ensuring that imputed values do not inadvertently favor or disadvantage particular demographic groups. Additionally, fairness-aware imputation techniques have emerged, specifically designed to mitigate biases and promote equitable outcomes in machine learning applications. By systematically exploring and comparing the impact of different imputation strategies, researchers contribute to the development of models that not only exhibit high accuracy but also uphold ethical principles, fostering fairness and equity in predictive analytics.

C. Classification Algorithms

The choice of classification algorithms within the broader framework of imputation strategies significantly shapes the impact on fairness in machine learning and contributes to the overarching goal of equity. Classification algorithms, ranging from traditional models like logistic regression and decision trees to fairness-aware algorithms, play a crucial role in determining how imputed values influence predictive outcomes. Traditional algorithms, while widely used, may inadvertently perpetuate biases present in the data, and their sensitivity to imputation choices is a critical consideration. Fairness-aware algorithms, designed to explicitly address equity concerns, strive to minimize disparate impacts across different demographic groups. The interaction between imputation strategies and classification algorithms is intricate, requiring a nuanced understanding of how imputed values affect model predictions and fairness metrics. Systematically exploring this interplay empowers researchers to identify and implement models that not only achieve high accuracy but also adhere to ethical principles, promoting fairness and equity in machine learning applications.

D. Evaluation Metrics

Evaluation metrics are pivotal in gauging the impact of imputation on fairness in machine learning and contributing to overarching equity goals. When assessing imputation strategies, it is essential to employ metrics that not only measure the accuracy of predictions but also evaluate the fairness and equity of the resulting models. Common fairness metrics, such as disparate impact, equalized odds, and statistical parity, provide insights into potential biases introduced during the imputation process. These metrics enable researchers to scrutinize how imputed values influence different demographic groups, ensuring that predictions are equitable across diverse populations. Additionally, the trade-offs between accuracy and fairness must be carefully considered, as imputation strategies that enhance one aspect may inadvertently compromise the other. A comprehensive evaluation framework, considering both fairness and performance metrics, is crucial for developing machine learning models that not only excel in predictive accuracy but also align with ethical principles, fostering fairness and equity in algorithmic decision-making.

4. Experimental Design

A. Imputation- Algorithm Interaction

Creating pseudo code for the interaction between imputation strategies and classification algorithms involves outlining the steps in a high-level, algorithmic format without specifying the actual programming language. Below is a simple pseudo code example for the interaction:

```
function imputation Algorithm Interaction (dataset, imputation_methods,
classification_algorithms):

    for imputation_method in imputation_methods:
        for classification_algorithm in classification_algorithms:
            Step 1: Imputation
            imputed_data = impute(dataset, imputation_method)

            Step 2: Classification
            model = train_classifier(imputed_data, classification_algorithm)

            Step 3: Evaluate fairness metrics
            fairness_metrics = evaluate_fairness(model, imputed_data)

            Step 4: Record results
            record_results(imputation_method, classification_algorithm, fairness_metrics)

# Example functions (to be implemented in a specific programming language)
function impute(data, imputation_method):
    # Implement imputation method
    # ...

function train_classifier(data, classification_algorithm):
    # Implement classification algorithm training
    # ...

function evaluate_fairness(model, data):
    # Implement fairness metric evaluation
    # ...

function record_results(imputation_method, classification_algorithm, fairness_metrics):
    # Record results for analysis or reporting
    # ...

# Example usage
imputation_methods = ["mean", "regression", "knn"]
classification_algorithms= ["logistic_regression", "random_forest",
"fairness_aware_algorithm"]
```

imputation Algorithm Interaction (dataset, imputation_methods, classification_algorithms)

This pseudo code outlines a generic structure for experimenting with different imputation methods and classification algorithms, training models, evaluating fairness metrics, and recording results. The specific implementation details of imputation, classification, and fairness evaluation functions would depend on the programming language and libraries used in the actual implementation.

B. Cross – Validation and Reproducibility

Cross-validation and reproducibility are critical components in the experimental design of studies assessing the impact of imputation on fairness in machine learning and equity. These practices contribute to the robustness, reliability, and generalizability of the findings.

C. Cross-Validation

Cross-validation is a statistical technique used to assess the performance and generalization ability of a model by partitioning the dataset into multiple subsets for training and testing. In the context of imputation impact on fairness, cross-validation helps validate the model across various data splits, ensuring that the observed effects are not specific to a particular partition. Here's how cross-validation can be incorporated:

a. **K-Fold Cross-Validation**
   - Divide the dataset into k subsets (folds).
   - Iterate through each fold, using k-1 folds for training and the remaining fold for testing.
   - Repeat the process k times, ensuring that each fold serves as the test set exactly once.
b. **Stratified Cross-Validation:** In the fairness context, especially when dealing with imbalances in sensitive attributes, use stratified cross-validation to maintain the distribution of these attributes in each fold.
c. **Evaluation Metrics:** Compute fairness metrics within each fold to understand variations across different subsets of the data.

D. Reproducibility

Reproducibility ensures that the experimental process and results can be independently verified. In the context of imputation impact on fairness, reproducibility is crucial for validating the consistency of findings and allowing other researchers to verify and build upon the work. Key aspects include:

a. **Code Documentation:** Thoroughly document the code, specifying the versions of libraries and packages used. This documentation ensures that others can replicate the experiments.

b. **Random Seed Setting:** Set random seeds for any random processes (e.g., data splitting, model initialization) to ensure that results are consistent across different runs.
c. **Version Control:** Use version control systems (e.g., Git) to track changes in code and experiment configurations. This allows for easy collaboration and the ability to revert to a specific state.
d. **Data Versioning:** If the dataset is modified during the study, version the data to track changes. This is crucial for maintaining consistency in results.
e. **Containerization:** Consider using containerization tools (e.g., Docker) to encapsulate the entire experimental environment. This helps recreate the exact computational environment, enhancing reproducibility.

By incorporating cross-validation techniques and prioritizing reproducibility practices, researchers ensure that the observed impacts of imputation on fairness and equity are robust, reliable, and can be validated by others in the scientific community.

5. Ethical Considerations

A. Bias Mitigation

Ethical considerations in bias mitigation are paramount when addressing the potential biases in machine learning models. As researchers strive to minimize and rectify biases, it is crucial to navigate the ethical landscape associated with bias mitigation strategies. One primary ethical concern revolves around the transparency and accountability of the mitigation process. Transparent documentation of the methods employed for bias reduction ensures that stakeholders, including end-users and affected communities, are aware of the steps taken to enhance fairness. Moreover, fairness should not be pursued at the expense of accuracy or utility, and a delicate balance must be maintained to avoid introducing new forms of bias. Additionally, continuous monitoring of models post-mitigation is essential, as unintended consequences may emerge over time. An ethical bias mitigation approach involves ongoing collaboration with diverse stakeholders, incorporating their perspectives, and addressing concerns related to fairness, accountability, and the societal impact of algorithmic decision-making. By aligning bias mitigation efforts with ethical principles, researchers and practitioners contribute to the development of responsible and equitable machine learning systems.

B. Transparency and Explainability

Ethical considerations in transparency and explainability are central to ensuring responsible and accountable artificial intelligence (AI) systems. Transparency refers to the openness and clarity of the algorithms, models, and decision-making processes, while explainability pertains to the system's ability to provide understandable and meaningful justifications for its outputs. In the context of AI, these considerations become essential for fostering trust and addressing concerns related to bias, fairness, and unintended consequences.

Ensuring transparency means making information about the algorithms and data used in AI systems accessible and understandable. This involves clear documentation of model architectures, training datasets, and the decision-making criteria employed. Transparent AI systems enable users, stakeholders, and affected individuals to comprehend how decisions are reached, fostering a sense of trust and accountability.

Explainability, on the other hand, involves providing human-interpretable insights into the model's decision-making process. This is particularly crucial when AI systems impact individuals' lives, such as in healthcare or finance. An ethical imperative exists to enable users to understand not only the decisions made by the system but also the factors that contribute to those decisions. This empowers users to challenge or question outcomes, promoting accountability and fairness.

Ethically, transparency and explainability contribute to the prevention and identification of biases, discriminatory patterns, and unfair treatment. It ensures that AI systems align with societal values, ethical norms, and legal requirements. Moreover, it facilitates the identification of potential shortcomings or unintended consequences, allowing for timely intervention and improvement.

In conclusion, ethical considerations in transparency and explainability are foundational principles in the responsible development and deployment of AI systems. By prioritizing openness and clarity, developers and organizations contribute to the establishment of trustworthy and accountable AI technologies that respect individual rights and societal values.

6. Expected Outcome

Hypothesized Outcomes

In investigating the impact of imputation on fairness in machine learning and equity, several hypothesized outcomes guide the study with the aim of shedding light on the nuanced interactions between imputation strategies and the pursuit of equitable model outcomes. One anticipated outcome involves the identification of imputation methods that demonstrate a propensity for mitigating biases and promoting fairness across diverse demographic groups. It is hypothesized that certain imputation strategies may contribute to a more equitable distribution of imputed values, leading to improved fairness metrics in classification settings.
Additionally, the study aims to uncover potential trade-offs between imputation accuracy and fairness, as the choice of imputation strategy might influence not only the model's predictive performance but also its ethical considerations. The hypothesis posits that imputation techniques that enhance fairness may, in some instances, come at the cost of a marginal decrease in overall accuracy. Understanding and quantifying these trade-offs are vital for informed decision-making in real-world applications.

Furthermore, the study anticipates variations in outcomes across different classification algorithms, with fairness-aware models potentially showcasing superior performance in mitigating biases introduced during the imputation process. The hypothesis suggests that incorporating fairness considerations into the classification algorithm design can enhance the overall equity of machine learning models.

By exploring these hypothesized outcomes, the research endeavours to contribute valuable insights into the intricate dynamics of imputation impact on fairness in machine learning and equity. The anticipated findings aim to inform best practices, offering guidance for researchers, practitioners, and policymakers working towards the development of more ethical and unbiased machine learning models.

7. Conclusion

A. Significance of the Study

In conclusion, the study on the impact of imputation on fairness in machine learning and equity holds significant implications for the ethical development and deployment of predictive models. By systematically investigating how imputation strategies influence fairness metrics across diverse demographic groups, this research contributes to a deeper understanding of the intricate dynamics within machine learning systems. The significance of this study lies in its potential to inform the design of more equitable algorithms, particularly in contexts where decisions based on imputed data can have substantial real-world consequences.

Understanding the trade-offs between imputation accuracy and fairness, as well as the varying impacts of different imputation strategies on classification algorithms, is crucial for practitioners seeking to strike a balance between predictive performance and ethical considerations. The study's findings are expected to provide actionable insights that can guide the development of fairness-aware imputation techniques and inform best practices in the broader field of machine learning ethics.

Moreover, the research addresses the broader societal impact of algorithmic decision-making by promoting transparency and accountability in the imputation process. By identifying imputation methods that contribute to fairness and equity, the study aims to foster a more responsible and inclusive approach to machine learning, mitigating biases and ensuring that predictive models are ethically sound.

In essence, the significance of this study lies in its potential to bridge the gap between imputation strategies and fairness in machine learning, ultimately contributing to the advancement of models that align with ethical principles and promote equitable outcomes for individuals and communities. As machine learning continues to play an increasingly influential role in decision-making, the insights derived from this study are poised to have lasting implications for the responsible deployment of AI technologies in diverse societal contexts.

References

[1] Barocas, S., Hardt, M., & Narayanan, A. (2019). Fairness and Machine Learning. fairmlbook.org.
[2] Blodgett, S. L., Barocas, S., Daumé III, H., & Wallach, H. (2020). Language (technology) is power: A critical survey of “bias” in nlp. arXiv preprint arXiv:2005.14050.
[3] Caton, S., & Haas, C. (2020). Fairness in Machine Learning: A Survey. arXiv preprint arXiv:2010.04053.
[4] Commission, E., Directorate-General for Communications Networks, C., & Technology (2019). Ethics guidelines for trustworthy AI. Publications Office.

[5] Dignum, V. (2021). The Myth of Complete AI-Fairness. In International Conference on Artificial Intelligence in Medicine, pp. 3–8. Springer

[6] Du Pin Calmon, F., Wei, D., Vinzamuri, B., Ramamurthy, K. N., & Varshney, K. R. (2018). Data pre-processing for discrimination prevention: Information-theoretic optimization and analysis. IEEE Journal of Selected Topics in Signal Processing, 12(5), 1106–1119.

[7] Edelman, B., Luca, M., & Svirsky, D. (2017). Racial Discrimination in the Sharing Economy: Evidence from a Field Experiment. American Economic Journal: Applied Economics, 9(2), 1–22.

[8] Fernando, M.-P., Cèsar, F., David, N., & José, H.-O. (2021). Missing the missing values: The ugly duckling of fairness in machine learning. International Journal of Intelligent Systems.

[9] Hu, L., & Chen, Y. (2018). A short-term intervention for long-term fairness in the labor market. In Proceedings of the 2018 World Wide Web Conference, pp. 1389–1398.

[10] Mehrabi, N., Morstatter, F., Saxena, N., Lerman, K., & Galstyan, A. (2021). A survey on bias and fairness in machine learning. ACM Computing Surveys (CSUR), 54(6), 1–35.

[11] Suresh, H., & Guttag, J. V. (2019). A framework for understanding unintended consequences of machine learning. arXiv preprint arXiv:**1901**.10002.

[12] Veale, M., & Binns, R. (2017). Fairer machine learning in the real world: Mitigating discrimination without collecting sensitive data. Big Data & Society, 4(2).

[13] Wang, Y., & Singh, L. (2021). Analyzing the impact of missing values and selection bias on fairness. International Journal of Data Science and Analytics, 1–19.

Unveiling the Horizon: Navigation the Cloud Computing Landscape

Naman Sahu*
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur City, India.

Adarsh Kashyap
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur City, India.

***Corresponding Author**
Naman Sahu
Email Id: 231026@kit.ac.in

ABSTRACT

The paper initiates by tracing the evolutionary trajectory of cloud computing, elucidating key milestones and technological breakthroughs that have shaped its emergence as a dominant force in modern computing. It subsequently navigates through the fundamental components of cloud computing, encompassing service models such as Infrastructure as a Service (IaaS) and Platform as a Service (PaaS), while dissecting the nuances of deployment models, including Public, Private, Hybrid, and Multi-Cloud approaches.

Cloud computing involves providing computing services, such as storage, processing power, and software applications, on a flexible, on-demand basis through the internet. This approach eliminates the necessity for organizations to make substantial investments in infrastructure and allows them to easily adjust resource levels based on their specific needs.

In the realm of cloud computing, ensuring the security and privacy of data stands out as a critical priority. Cloud service providers take extensive measures to fortify data protection, utilizing strong security protocols like encryption, access controls, and adherence to compliance frameworks. These measures are designed to guarantee the steadfastness and confidentiality of information.

As technology progresses, the cloud computing industry experiences noteworthy developments in key areas. The emergence of edge computing, serverless computing, and hybrid cloud solutions exemplify the evolving landscape. These advancements not only enhance the overall robustness of cloud services but also broaden the scope and potential applications within the field. The ongoing evolution of technology in the cloud arena continues to shape a dynamic and resilient foundation for the future of digital infrastructure.

Keywords: *Cloud Computing, Virtualization, Networking, Security and Cloud Deployment.*

1. Introduction

What's come in mind when we listen cloud, droplets of water or particles of ice or a mixture of both floating in the free air**[3]**. But cloud computing is not a cloud it is a paradigm in information technology that involves the utilization of remotely hosted services, encompassing elements such as data storage, servers, databases, networking, and software, all accessible over the internet. The fundamental concept revolves around storing data on physical servers maintained by a designated cloud service provider. This innovative approach eliminates the need for direct user management of computer system resources, particularly in terms of data storage and computational capabilities**.[1]**

At its core, cloud computing offers on-demand access to IT resources via the internet, adopting a pay-as-you-go pricing model. In contrast to the traditional model of procuring, owning, and maintaining physical data centres and servers, organizations can now leverage technology services like computing power, storage, and databases as needed, sourced from a reliable cloud provider

In more straightforward terms, cloud computing allows businesses to essentially rent, rather than purchase, their IT infrastructure. Instead of making substantial investments in databases, software, and hardware, companies can opt for internet-based access to compute power through the cloud, paying for usage as it occurs. These cloud services encompass a wide range of offerings, including servers, storage, databases, networking, software, analytics, and business intelligence

The key advantages of cloud computing lie in its ability to deliver speed, scalability, and flexibility. This empowers businesses to efficiently develop, innovate, and support their IT solutions, ushering in a new era of operational agility and cost-effectiveness.

2. Evaluation and Progression of Cloud Technology

In a groundbreaking 1960 MIT speech, John McCarthy envisioned computer technology as a utility comparable to water and electricity. The fruition of this concept began in 1999 when Salesforce pioneered the distribution of customer applications through a user-friendly website. Amazon Web Services (AWS) **[2]** emerged in 2002, revolutionizing the landscape by offering storage and computation services. By 2009, Oracle entered the cloud computing domain, providing services to major players like Google, Microsoft, and HP. Presently, cloud computing is an integral part of everyday life, with services such as Google Photos, Google Drive, and iCloud being ubiquitous.

This widespread adoption signifies the transformative impact of cloud computing, positioning it as a fundamental necessity for IT industries in the future. The scalability, accessibility, and versatility of cloud services have not only reshaped computing paradigms but have also become an indispensable aspect of modern living, emphasizing the enduring significance of cloud computing in shaping the trajectory of technological advancements.

Figure 1: History of Cloud Technology

1960: Visionary Concept

- John McCarthy's Vision: In a 1960 MIT speech, computer scientist John McCarthy envisions computer technology as a utility, akin to water and electricity, laying the conceptual groundwork for cloud computing.

1999: Emergence of Cloud Applications

- Salesforce's Initiative: Salesforce pioneers the distribution of customer applications through a convenient website in 1999**[2]**, marking a crucial step in making cloud-based services accessible and user-friendly.

2002: Amazon Web Services (AWS) Launch

- Introduction of AWS: In 2002, Amazon launches AWS, revolutionizing the tech landscape by providing on-demand storage and computation services, establishing the foundation for modern cloud computing.

2009: Oracle Enters the Cloud Computing Arena

- Oracle's foray: Around 2009, Oracle starts offering cloud computing services, catering to major companies like Google, Microsoft, and HP, contributing to the diversification and growth of cloud solutions.

Present: Ubiquity and Integration

- Everyday Cloud Services: Cloud computing becomes an integral part of daily life, exemplified by ubiquitous services such as Google Photos, Google Drive, and iCloud, illustrating its widespread adoption and integration.

Ongoing: Transformative Impact

- Essential IT Component: Cloud computing remains fundamental for IT industries, providing scalability, accessibility, and versatility, reshaping computing paradigms and influencing the trajectory of technological advancements.

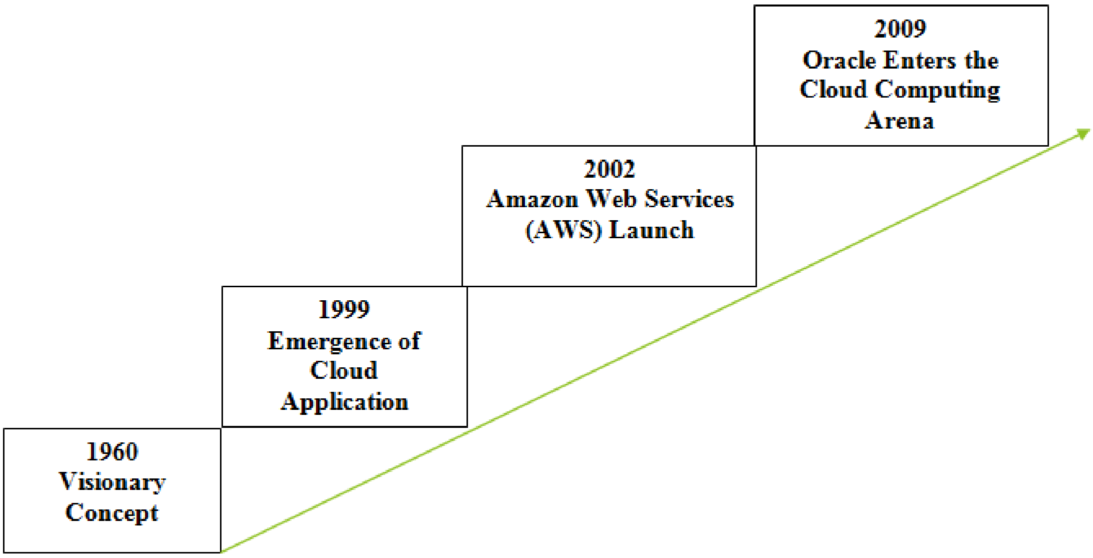

Figure 2: Evaluation and Progression of Cloud Technology

3. Design of Cloud Computing

The foundation of every robust cloud infrastructure rests on crucial constraints, with transparency being paramount. Other essential factors include scalability, security, and intelligent monitoring. Ongoing research explores additional limits, paving the way for more sophisticated cloud solutions. **[6]**

The cloud architecture, as illustrated in the accompanying figure, is divided into two parts:

- **Frontend:** This encompasses the client side, housing user interfaces and applications. It serves as the interface for users to access cloud services/resources, often through web browsers.
- **Backend**: Referred to as the cloud used by service providers, it manages resources, implements security measures, and houses components like massive storage, virtual applications, virtual computers, traffic management techniques, and deployment models.

Cloud Computing Architecture Components Include:

- **Client Infrastructure:** Part of the frontend, it offers a graphical user interface (GUI) for user interaction.
- **Application:** Any desired software or platform used by clients.
- **Service:** Manages the type of service accessed based on client needs.
- **Runtime Cloud:** Provides the execution and runtime environment for virtual machines.
- **Storage:** Offers substantial cloud storage space for data storage and management.
- **Infrastructure:** Delivers services at the host, application, and network levels, including servers, storage, network devices, and virtualization software.
- **Management:** Coordinates backend components and addresses security concerns.
- **Security:** Implements security mechanisms in the backend.
- **Internet:** Connects the frontend and backend.

Security and confidentiality in cloud computing are crucial. Providers employ encryption for data in transit and at rest, access controls, and physical security measures like biometric authentication and surveillance. **[7]** Compliance with industry standards and regulations such as GDPR and HIPAA ensures secure data processing and storage. Customers also play a role in securing their data through access controls, encryption, and regular monitoring for potential threats. The collaborative efforts of providers and customers uphold the integrity of cloud computing.

4. Cloud Computing Services: A Comprehensive Overview

Cloud computing offers three distinct services, catering to diverse needs and clientele: Software as a Service (SaaS), Platform as a Service (PaaS), and Infrastructure as a Service (IaaS). These services entail renting out computing resources, including applications, platforms, and infrastructures, to customers based on their specific requirements.

a. **Software as a Service (SaaS):** SaaS transforms how software is delivered, offering applications over the internet for rent instead of local installations. Users effortlessly access these applications online, needing only an internet connection. Examples include Microsoft Office 365, Google Sheets, and Google Forms. SaaS stands out as the go-to, user-friendly cloud service model.
b. **Platform as a Service (PaaS):** PaaS provides a flexible computing platform or development environment as a service, empowering users to craft and deploy their applications. Users enjoy the freedom to create custom applications running on the provider's platform. Service providers deliver predefined combinations of software and application servers, featuring Linux, Apache, MySQL, PHP, J2EE, and Ruby.
c. **Infrastructure as a Service (IaaS):** IaaS furnishes computing resources on demand, including storage, network, software, hardware, and storage devices. **[4]** Users can access these services over a wide area network, such as the internet. For instance, users can create virtual machines by logging into the IaaS platform, ensuring flexibility and scalability.

These services align with various deployment models like Public Cloud, Private Cloud, Hybrid Cloud, and Community Cloud, with security levels tailored to meet diverse needs. The dynamic interplay between these services and deployment models underlines the versatility and adaptability of cloud computing in catering to the evolving demands of modern businesses.**[8]**

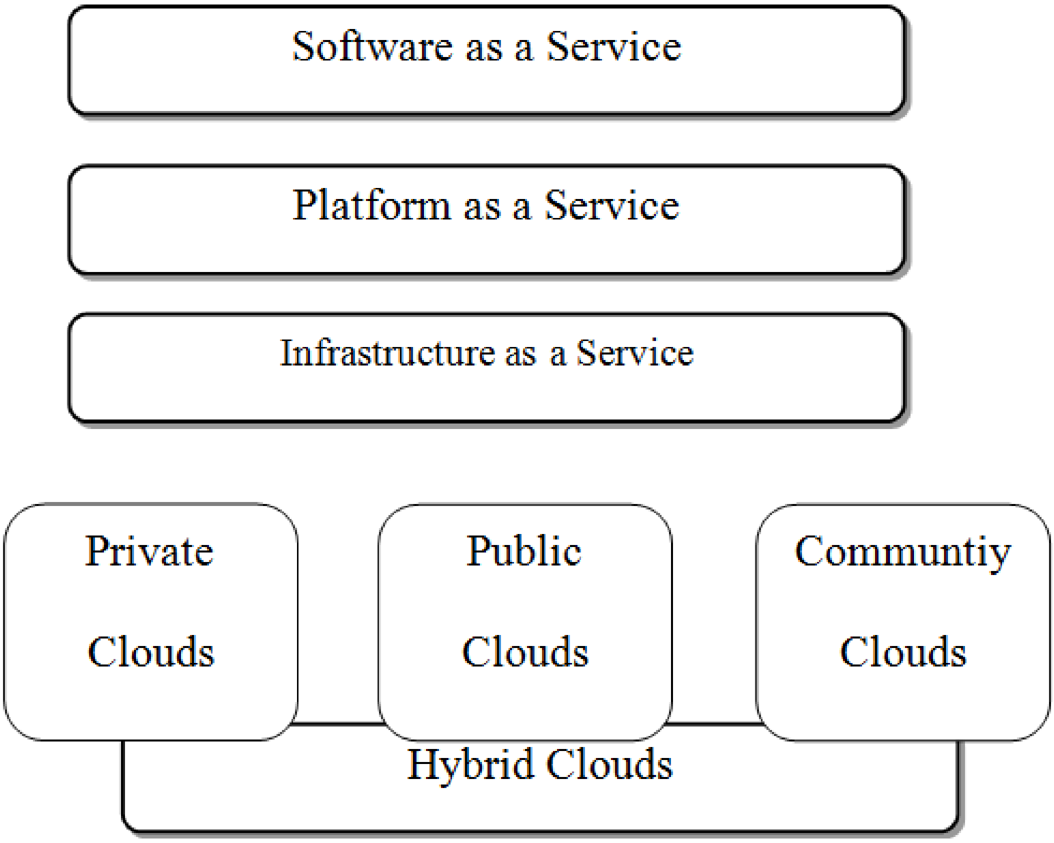

Figure 3: Cloud Computing Services

- **Public Cloud:** A public Internet computer service provided by external entities, available to any user willing to pay for the offered services.
- **Private Cloud:** Exclusive network computing services, either on the Internet or a private network, restricted to specific users. Private clouds enhance security and privacy through firewalls and internal hosting.
- **Hybrid Cloud:** A combination of public and private clouds, allowing independent management of each cloud while facilitating data and application sharing within the hybrid cloud framework.

5. Conclusion

The integration of cloud computing has become a transformative force in the world of technology, offering a myriad of benefits such as remote access, elimination of a single point of failure, and enable organizations to enhance agility. From the above discussion we conclude there is no doubt that the introduction of cloud computing levels up the generation because of its various advantages like scalability, flexibility, integration and complexity. With these advantages, we have to take some challenges like Security and Compliance and continuously keep working on it to make it better than better. By enhancing cloud computing, it will improve the connectivity between people and devices to provide the facility of the Iot (Internet-of-Thing) paradigm.

Acknowledgement

We extend our profound gratitude to the esteemed KIT management, our distinguished Director, Prof.Brajesh Varshney, and our guiding mentor, Dr. Priyanka Gupta, for their invaluable and gracious support.

References

[1] Submitted to University of Canberra
[2] Manpreet Kaur, Sarpreet Singh. "Enhancing Trustworthiness and Security in Cloud Environments: A Review of Methodologies and Advancements" , 2023 14th International Conference on Computing Communication and Networking Technologies (ICCCNT), 2023
[3] Submitted to Utah Education Network
[4] Submitted to Nottingham Trent University
[5] A. W. Thornton, R. Babarao, A. Jain, F. Trousselet, F.-X. Coudert. "Defects in metal– organic frameworks: a compromise between adsorption and stability?", Dalton Transactions, 2016
[6] International Research Journal of Modernization in Engineering Technology and Science (Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal)
[7] Int. J. Communications, Network and System Sciences, 2023, 16, 53-65
[8] IJISET - International Journal of Innovative Science, Engineering & Technology, Vol. 8 Issue 7, July 2021
[9] International Conference on Advancements in Computing & Management (ICACM-2019)
[10] International Journal of Computer Sciences and Engineering Review Paper

Usability and Accessibility of Crypto Currency Tracker Apps for Diverse User Groups: A Human-Centered Approach

Peeyush Varshney
Department of Information Technology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur City, India.
Email Id: varshneypeeyush27@gmail.com

ABSTRACT

The exponential growth of the crypto currency market has sparked a surge in the development of mobile applications designed to enable users to monitor, manage, and trade digital assets. Among these, Crypto Currency Tracker Apps have emerged as indispensable tools for navigating the complexities of the dynamic and ever-changing crypto currency landscape.

Crypto currency Tracker Apps play a pivotal role in providing real-time market data, enabling users to make informed decisions about their investments.

This study aims to bridge the gap between technological innovation and user inclusivity, striving to create an environment where individuals from various backgrounds and levels of expertise can engage with cryptocurrency tracking applications seamlessly and effectively.

This research investigates the user-centric design, usability, and accessibility of Crypto Currency Tracker Apps, focusing on diverse user groups. It aims to identify challenges, propose improvements, and enhance the overall user experience. This research study is totally based on secondary data. The data used for this study is gathered from various published research papers and various authentic websites. The scope spans usability testing, accessibility features, cultural factors, and iterative design, fostering inclusivity in cryptocurrency app development.

In conclusion, a human-centered approach is essential for optimizing Crypto Currency Tracker Apps. By addressing usability challenges, enhancing accessibility features, and considering diverse user groups, this research underscores the importance of inclusive design. The findings contribute to creating a more user-friendly and accessible environment in the cryptocurrency domain.

Keywords: Real-Time Market Data, Informed Decisions, Various Backgrounds, User-Centric Design, Diverse User Groups.

1. Introduction

The term "cryptocurrency" is employed to denote a particular form of digital currency designed to function as a medium of exchange using computer networks, rather than relying on centralized entities like governments or financial institutions.

An individual's ownership of a specific digital currency involves a digital ledger, a specialized form of computerized database utilizing robust encryption to safeguard transaction records, regulate currency production, and validate coin ownership transfers. Despite being labeled as cryptocurrencies, they are not excluded from being considered assets. While classified as commodities, securities, and currencies, cryptocurrencies differ in nature as they are not issued by any central authority and lack a tangible form like paper currency. Typically, cryptocurrencies rely on decentralized verifications instead of digital currencies issued by central banks (CBDCs).

Typically, a cryptocurrency is deemed centralized if it was created or established before its release or if a single entity issued it. Employing distributed ledger technology, each coin operates autonomously without centralized supervision, commonly through blockchain. Its role as a repository for all public financial transactions is crucial. Conventional asset categories such as currencies, commodities, and stocks, along with macroeconomic factors, contribute to mitigating the investment risk associated with cryptocurrency.

"In 2009, bitcoin became the pioneer among decentralized cryptocurrencies, being introduced to the public through open-source software. As of March 2022, around 9,000 new cryptocurrencies have emerged in the market."

Approximately 80 market segments boast market capitalizations exceeding $1 billion. Decentralized coins are collectively generated by the entire cryptocurrency network at predetermined rates, which are disclosed upon the network's establishment. In centralized economic and financial institutions, like the Federal Reserve in the United States, the board or government assumes the responsibility of controlling the available monetary supply to groups, financial institutions, or any legal entity with asset measurements.

Digital assets known as cryptocurrencies have emerged as a novel financial instrument, capturing significant attention from investors in recent years. The inaugural cryptocurrency, Bitcoin, was introduced by Satoshi Nakamoto in 2008 and operates on a peer-to-peer network for transfers. Cryptocurrencies primarily utilize blockchain technology, recognized for its security and resistance to hacking.

2. Related Work

Investors dedicate considerable time searching for the latest coins, aiming to discover cryptocurrencies that either captivate their interest or are attractively priced. A variety of cryptocurrency exchanges, applications, and other services cater to the needs of investors seeking to optimize their investment returns.

The utilization of a digital currency price tracker can significantly influence your cryptocurrency trading experience, but only a minority of crypto currency traders recognize its significance. The following are commonly used websites and services for price Monitoring. "A bitcoin price monitor evaluates the worth of bitcoins, allowing users to compare prices using historical data sourced from various platforms." Some platforms also offer a feature allowing users to compare the values of different cryptocurrencies.

The precision of the price tracker utilized by an investor will influence their decision-making, the timing of investments, and the overall success of those transactions. It is essential to opt for trackers that offer reliable data and are consistently updated. When choosing a cryptocurrency price tracker, factors such as user-friendliness, the range of supported digital currencies and tokens, as well as the availability of additional tools and information, should be carefully considered.

Bitcoin.com has labeled Coin Market Cap as the premier cryptocurrency price monitoring platform, and it holds a prominent position among similar services for various reasons. Established in 2013, this website compiles a ranking of the top 100 cryptocurrencies, considering their cumulative market capitalization. It furnishes thorough information, encompassing market capitalization, price, trading volume over a 24-hour period, the amount of currency in circulation, and the change in value over the past 24 hours, along with a seven-day price chart for every digital currency.

In addition to Coin Market Cap, there are various cryptocurrency price monitoring platforms available. Coin lib, while not as widely recognized, offers valuable features to its users. Recognizing Bitcoin's leading market capitalization and user base, Coin lib prominently displays a "The 'Bitcoin Dominance' gauge positioned prominently on its homepage". This statistic, along with market capitalization and cryptocurrency data, is updated every minute. Coin lib also furnishes a feature enabling users to contrast as many as four different tokens or currencies. Furthermore, it encompasses a price explorer designed to assist investors in pinpointing exchanges offering the most favorable purchase and sale rates, along with potential chances for arbitrage.

3. Methodology

Identifying the Data Source: the initial phase involves pinpointing a trustworthy data source to obtain up-to-the-minute price information for cryptocurrencies. This can be accomplished by utilizing an API offered by either a cryptocurrency exchange or a third-party service.

Selecting a Web Development Framework: After identifying the data source, the next step involves selecting a web development framework to build the application. Popular frameworks to consider include React, Angular, and Vue.js.

Designing the User Interface: The next step involves developing the user interface for the application. The UI needs to be simple, intuitive, and easy to navigate. It should display up-to-date price information for various cryptocurrencies in a concise and well-structured format.

Implementing Real-Time Data Streaming: Incorporating real-time data streaming is crucial to ensure the application presents current price data accurately. This can be accomplished by utilizing web sockets or by employing a server-sent events (SSE) method.

Integrate Payment Gateway: To enable users to engage in cryptocurrency buying and selling through the application, integration of a payment gateway is necessary. Noteworthy payment gateways for cryptocurrencies encompass Coinbase, Bitpay, and CoinPayments. Test and Deploy: After completing the application development, thorough testing is essential to verify its proper functionality. Upon satisfaction with the testing results, the application can be deployed on a web server, making it accessible to users.

Maintain and Update: Finally, it is essential to regularly upkeep and enhance the application, guaranteeing its ongoing smooth functioning and adaptation to changing user requirements. This involves resolving glitches, integrating fresh functionalities, and ensuring the application remains up-to-date with the most recent security updates.

4. Conclusion

An online tool monitoring cryptocurrency prices live proves invaluable for investors and traders keen on staying abreast of current market trends and making informed choices. With the cryptocurrency market's fluid and constantly evolving nature, instant data becomes indispensable for executing timely and lucrative transactions. Crafting such an application entails leveraging an array of technologies and APIs, spanning blockchain APIs, cryptocurrency exchange APIs, and real-time data streaming services. The application can provide users with a variety of functionalities, such as price graphs, alerts for price changes, news updates, and assessments of social sentiment..

We can now definitively state that, throughout the project's duration, we effectively created a cryptocurrency tracking application using React and other state-of-the-art technologies. This assertion holds true. What sets this project apart from others in its domain is the user-friendly design of its graphical interface and its ability to meticulously monitor bitcoin exchange operations within milliseconds. Moreover, we are considering integrating additional sophisticated features into the project to offer more comprehensive insights into various cryptocurrencies.

References

[1] Bhardwaj, S., Basu, S., & Pal, M. A RESEARCH ON CRYPTO CURRENCIES PERFORMANCE TRACKER AND DATA VISUALIZATION APP.
[2] Bouri, E., Shahzad, S. J. H., & Roubaud, D. (2019). Co-explosivity in the cryptocurrency market. *Finance Research Letters*, *29*, 178-183.
[3] Deshbhratar, P., & Jaipurkar, P. REAL TIME PRICE TRACKER WEB APPLICATION FOR CRYPTO–CURRENCY.
[4] ElBahrawy, A., Alessandretti, L., Kandler, A., Pastor-Satorras, R., & Baronchelli, A. (2017). Evolutionary dynamics of the cryptocurrency market. *Royal Society open science*, *4*(11), 170623.
[5] Fang, F., Ventre, C., Basios, M., Kanthan, L., Martinez-Rego, D., Wu, F., & Li, L. (2022). Cryptocurrency trading: a comprehensive survey. *Financial Innovation*, *8*(1), 1-59.
[6] Fang, F., Ventre, C., Basios, M., Kanthan, L., Martinez-Rego, D., Wu, F., & Li, L. (2022). Cryptocurrency trading: a comprehensive survey. *Financial Innovation*, *8*(1), 1-59.
[7] Gandal, N., & Halaburda, H. (2014). Competition in the cryptocurrency market.
[8] Gowtham, R., & Gokul, B. (2023). Application for Spectating Cryptocurrency.
[9] Gupta, K., & Srivastava, N. (2022, December). Cryptophyle: The Cryptocurrency News Tracker App. In *2022 4th International Conference on Advances in Computing, Communication Control and Networking (ICAC3N)* (pp. 2254-2261). IEEE.
[10] Hezretov, M. (2021). *Budget Tracker Highly Customizable Budgeting Mobile Application* (Doctoral dissertation).

[11] Jasmine, M., & Singh, S. (2022). Cryptocurrency Portfolio Tracker.
[12] Leung, M. F., Chan, L., Hung, W. C., Tsoi, S. F., Lam, C. H., & Cheng, Y. H. (2023). An intelligent system for trading signal of cryptocurrency based on market tweets sentiments. *FinTech*, *2*(1), 153-169.
[13] Naik, R., & Jaipurkar, P. A WEB APPLICATION FOR REAL-TIME PRICE TRACKING CRYPTOCURRENCY.
[14] Oluwoye, O. A. (2016). *Digital cryptocurrencies: The design and network analysis of the bitcoin infrastructure*. Alabama Agricultural and Mechanical University.
[15] Padala, S. (2022). A Decentralized Application for Location Tracking: dApp GPS Tracker.

Artificial Intelligence: Transforming Our Lives and Workplaces

Anmol Yadav*
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Priyanka Gupta
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology, Kanpur, India.

***Corresponding Author**
Anmol Yadav
Email Id: 231046@kit.ac.in

ABSTRACT

Artificial Intelligence (AI) has become a revolutionary force in the rapidly changing technology landscape, changing the fundamental nature of our lives and workplaces. This ubiquitous force has transformed decision-making procedures, optimized workflows, and increased effec- tiveness in various industries. Artificial Intelligence (AI) has become an essential component of our technological landscape, influencing our decisions with personalized recommendations and anticipating our needs through the seamless integration of AI in smart homes and the development of driverless cars.Artificial Intelligence (AI) has the potential to significantly increase productiv- ity in the workplace by automating routine chores and offering priceless data-driven insights. The convergence of robots, machine learning, and natural language processing is creating a dy- namic workforce in which human creativity coexists peacefully with intelligent technology. But this paradigm change is not without its drawbacks.Notwithstanding AI's wonders, there remains a complicated web of moral issues, worries about employment displacement, and the absolute necessity of strict privacy regulations. The incorporation of AI necessitates a reevaluation of competencies, pushing people to develop flexibility and digital literacy in order to prosper in this changing environment.AI is having a significant impact on important industries including health- care, banking, and education and is expected to lead to previously unheard-of breakthroughs. Nonetheless, it is critical that we take a thoughtful and inclusive stance as we travel through this life-changing experience. Navigating this unique era of technological growth requires striking a balance between addressing the societal repercussions of AI and utilizing its immense promise.

Keywords: Artificial Intelligence (AI), transformational force, lives, workplaces, productivity, efficiency.

1. Introduction

In an age of invention, artificial intelligence (AI) is the conductor of our contemporary life. AI is more than just a technological marvel—it's the invisible magician reshaping our lives and workplaces. Beyond utility, it learns, adjusts, and anticipates demands to make things that were previously unachievable—like driverless cars and cus- tomized streaming recommendations—achievable.[9]AI is having a widespread impact on a variety of industries, including supply chains, weather forecasting, and healthcare. It stimulates growth in boardrooms by using data analysis to make intelligent decisions. As AI develops, it expands our understanding of what is feasible and sets the stage for further research into the revolutionary effects it might have on our daily lives and workplaces[5]. This is an introduction to the AI revolution, which holds up the promise of an endlessly creative and bright future.

Artificial Intelligence (AI) What Is It?

The creation of computer systems that are capable of carrying out activities that normally require human intelli- gence is known as artificial intelligence, or AI. This includes the ability to learn, think, solve problems, perceive, understand language, and interact with others, among other skills [8][4]. AI systems are made to mimic human intellect and, in certain situations, even outperform it in particular activities or areas. In order to create intelligent robots that can adapt, learn, and complete tasks on their own, the discipline of artificial intelligence (AI) com- bines a variety of methodologies and technologies, including robotics, machine learning, and natural language processing[14].

Timeline and It's Evolution

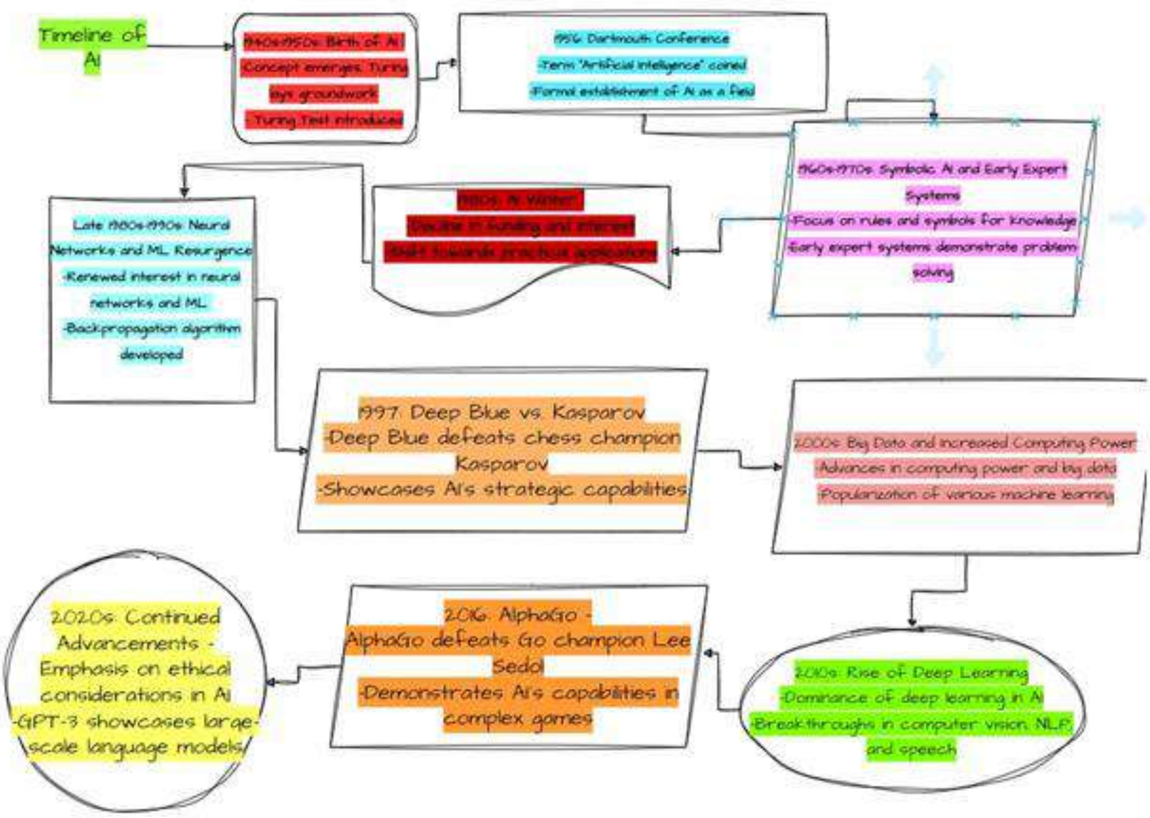

Figure 1: *Timeline and Evolution of AI*

2. Functionalities of AI

Artificial Intelligence (AI) functions by imitating some facets of human cognition and analytical skills

- **Gathering of Data:** Large volumes of data are necessary for AI systems to learn and make choices. Text, photos, videos, and other types of information may be included in this data.
- **Preparing Data:** In order to make sure that raw data is in an appropriate format for analysis, it is processed and cleaned. This stage could include data normalization, missing value management, and noise removal.
- **Feature Deletion:** From the processed data, pertinent qualities or traits are taken out. Finding the important patterns or characteristics that the AI model will use to classify or forecast things is the goal of this step.
- **Selection of Algorithms:** An algorithm or collection of algorithms is selected based on the task at hand. Different algorithms perform well for different kinds of tasks. For example, convolutional neural networks work well for image recognition, whereas linear regression works well for numerical value prediction.
- **Training Models:** The chosen method is trained using the labeled dataset, which teaches the model how to identify trends and forecast outcomes. In order to reduce the discrepancy between its predictions and the actual results, the model modifies its parameters throughout training.
- **Assessment:** To gauge the performance of the trained model, it is tested on a different dataset. This stage ensures that the model performs well when applied to fresh, untested data.
- **Implementation:** The model can be put to use in the real world if it passes evaluation. This could entail incorporating the AI system into other platforms, devices, or software programs.
- **Conclusion:** The deployed model is used to forecast or decide on the basis of freshly received data. The model uses its newly acquired information to actual scenarios during this step, which is referred to as inference.
- **Loop of Feedback:** A feedback loop is frequently used in AI systems, allowing the model to continuously update itself based on input on its predictions. Over time, the accuracy of the model is enhanced by this iterative process.

It’s crucial to remember that an AI system’s efficacy is mostly dependent on the type and volume of training data it receives, the suitability of the algorithms selected, and continuous maintenance and upgrades to accommodate changing circumstances. Artificial intelligence (AI) technologies cover a broad spectrum of methodologies, such as natural language processing, deep learning, machine learning, and more. Depending on its unique features and goals, each sort of AI may employ a somewhat different procedure [19][9].

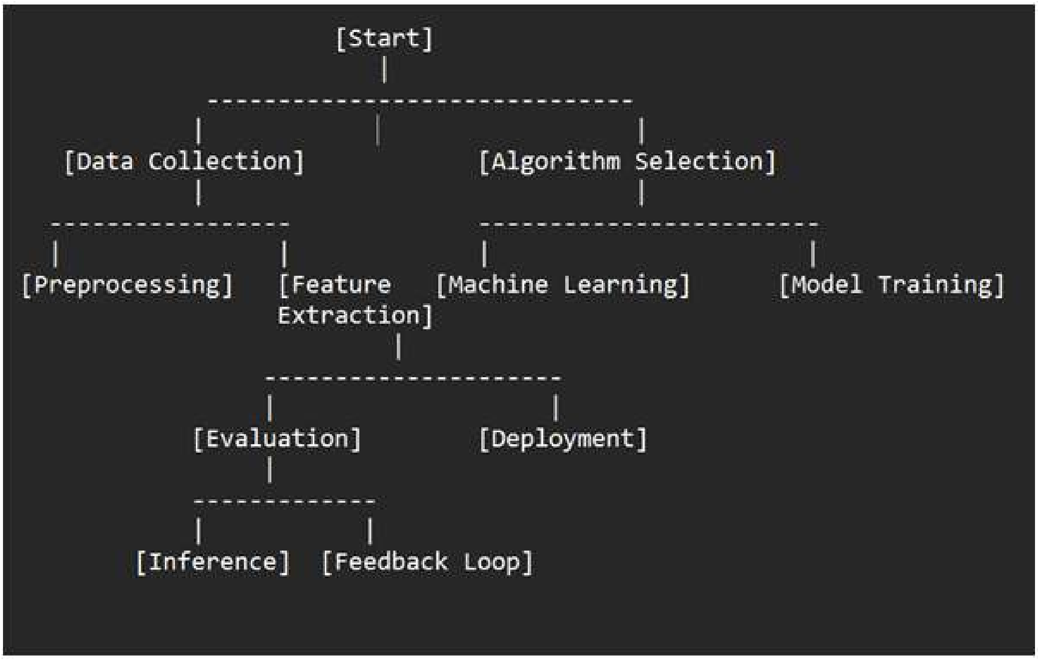

Figure 2: *It's Working*

AI's Impact on our Lives and Workplaces

Artificial intelligence (AI) has a significant impact on many facets of our lives and careers, affecting how we interact with technology, work, and communicate [25][17]. The following are some important fields where AI has had a big influence:

Automation and Efficiency

Work and Jobs	Artificial intelligence (AI) technologies boost productivity in fields like data entry, customer service, and manufacturing by automating repetitive and routine work.

	Business operations are streamlined by AI, which lowers the need for manual labor and boosts organizational productivity.

Personalization

Suggestion Systems	Artificial intelligence (AI) algorithms examine user behavior to offer tailored recom- mendations in social networking, e-commerce, and streaming services.

Healthcare

Diagnostic Support	AI helps with medical picture analysis, which helps with early disease detection via computer-aided diagnosis and related technologies.
User Experience	By customizing content and services according to user choices, artificial intelligenceimproves user interfaces and user experiences.

Medication Discovery	By evaluating enormous datasets and forecasting possible medication candidates, ar- tificial intelligence speeds up the drug discovery process.

Education

	Personalized learning experiences are made possible by AI, which adjusts pace andcontent to meet the needs of each individual student.

Virtual Assistants	AI-driven chatbots and virtual assistants aid with instructional activities by givinginformation and responding to inquiries.

Finance

Algorithmic Trading	Artificial intelligence (AI) algorithms study market patterns and quickly execute trans-actions, impacting financial markets.

Fraud Detection	AI improves security by spotting oddities and patterns in financial transactions, whichaids in the prevention of fraud.

Communication

Language Translation	By removing linguistic barriers, AI-powered language translation services promoteinternational communication.

Chatbots	AI-powered chatbots on websites and social media offer immediate consumer serviceand support.

Transportation

Autonomous Vehicles	Artificial Intelligence has a role in the development of autonomous vehicles, including self-driving automobiles, which have the potential to revolutionize the transportationsector.

	Intelligent traffic management systems employ artificial intelligence to minimize traf-fic jams and enhance traffic flow.

Employment and Labor Force

Work Transformation	As AI takes over repetitive activities, some jobs are changing in terms of responsibil-ities and skill requirements.

Formation of Positions	New employment prospects in fields like data science, ethics, and AI development arebrought about by the creation and upkeep of AI

Impact on Ethics and Society

	Fairness and Bias Fairness and ethical issues are brought up when AI systems unin-tentionally reinforce biases seen in training data.

Privacy Concerns	The application of AI to data analysis and surveillance gives rise to privacy concernsthat have sparked debates regarding laws and moral

Domain in which AI Requires Advancement

- **Interpretability and Explainability:** Provide methods to improve AI models interpretability and transparency so that decision-making processes may be understood more clearly.
- **AI Ethics:** Ensure fairness, openness, and ethical considerations in the development and application of AI,and address biases in algorithms.
- **Sturdiness and Safety:** Strengthen the AI system's defenses against hostile attacks and improve security ingeneral to stop flaws.
- **NLP, or Natural Language Processing:** Develop NLP skills to handle ambiguity, comprehend context morefully, and make language models more broadly applicable.
- **AI in Medical Fields:** Boost the precision and dependability of AI-based diagnostic and predictive models to ensure a smooth transition into healthcare processes while taking privacy issues into consideration.
- **AI for Self-Driving Systems:** Create autonomous systems that are safer and more effective while addressing safety issues, enhancing decision-making skills, and traversing challenging surroundings.
- **Ongoing Education:** Boost AI systems' capacity for ongoing learning, scenario adaptation, and handlingproblems with catastrophic forgetting and concept drift.

- **AI And Originality:** Enhance AI's creative potential to better complement human innovation, especially inareas like music, painting, and content creation.
- **Collaboration between Humans and AI:** Improve human-AI system collaboration by creating interfaces that make interaction easy and guarantee that AI enhances human abilities.
- **Integration of Edge AI with Iot:** Make AI algorithms more intelligent and efficient for Internet of Things (IoT) devices by optimizing them for edge computing environments.
- **Regulation and Governance of AI:** Develop effective regulatory frameworks and governance models for re- sponsible and ethical use of AI technologies, addressing legal and ethical challenges.
- **AI and Quantum Computing:** Investigate how quantum computing and artificial intelligence can work to- gether to improve the efficiency of quantum algorithms in solving challenging AI challenges.
- Developments in these fields will help ensure that AI technologies are developed and used responsibly, in accor- dance with social demands and ethical principles.

3. Conclusion

Artificial intelligence is the revolutionary force that is changing our world. It is a testament to human inventiveness and technological prowess. It has significantly changed our personal and professional life, putting us one step closer to a time of unimaginable creativity, productivity, and opportunity[6][17].Artificial intelligence (AI) has changed every facet of contemporary life, from automating tedious tasks to using data analysis to reveal previously unachievable insights. It creates new opportunities for production and innovation by empowering individuals, expanding our capabilities, and streamlining industries[1].But moral questions still matter a lot in spite of the amazing advancements. Ongoing efforts to ensure ethical AI deployment are addressing concerns about bias, transparency, and the impact on society.As AI gets more and more ingrained in our daily lives, safeguarding against unanticipated consequences becomes essential to ensuring that it continues to have a good impact[9][3].Artificial intelligence is an ever-evolving field that is marked by ongoing innovation. Researchers are expanding the uses of AI, refining its algorithms, and pushing its bounds. This holds the potential to develop more intelligent and empathetic systems that will transform the world in ways that were previously unimaginable.One thing is certain in this exciting tale: AI's breakthrough abilities herald a future of seemingly endless possibilities, changing not just our homes and workplaces but also the very essence of what it means to be human[22][25].

Acknowledgement

I would like to express my profound gratitude to the people and institution whose assistance was greatly appre- ciated in finishing this review article. I am really grateful to Dr. Priyanka Gupta for all of her help, advice, and insights during the research process. I sincerely thank the authors and researchers whose contributions formed the foundation of this review. This manuscript's basis has been shaped by their groundbreaking contributions. Additionally, I would like to thank the anonymous reviewers whose insightful comments and recommendations greatly improved the caliber and scope of this work. Finally, I would want to express my gratitude for my family'sconsistent support, which was essential to my quest.

References

[1] G. Eason, B. Noble, and I. N. Sneddon, "On certain integrals of Lipschitz-Hankel type involving products ofBessel functions," Phil. Trans. Roy. Soc. London, vol. A247, pp. 529–551, April 1955.

[2] K. Kumar and G. S. M. Thakur, "Advanced applications of neural networks and artificial intelligence: A review," International journal of information technology and computer science, vol. 4, no. 6, pp. 57–68, 2012.

[3] J. M. Spector and D. J. Muraida, Automating Instructional Design: Concepts and Issues, Educational Tech- nology Publications, Englewood Cliffs, NJ, USA, 1993.

[4] B. Boulay, "Artificial intelligence as an effective classroom assistant," IEEE Intelligent Systems, vol. 31, no.6, pp. 76–81, 2016.

[5] Frost and Sullivan: Transforming healthcare through artificial intelligence systems. 2016

[6] Accenture Technology Vision 2019: Full report, Accenture. Retirieved 19.12.2019

[7] Artificial Intelligence: Healhtcare's new nervous system. Accenture consulting. 2017

[8] Rao DAS, Verweij G: Sizing the prize: What's the real value of AI for your business and how can you capitalise? PwC Publication, PwC, 2017.

[9] Russell SJ, Norvig P: Artificial Intelligence: A Modern Approach (Third ed.). Prentice Hall, 2010.

[10] Jordan MI, Bishop CM: Neural Networks. In Allen B. Tucker (ed.). Computer Science Handbook. Second Edition, (Section VII: Intelligent Systems). Boca Raton, Florida: Chapman and Hall/CRC Press LLC, 2004.

[11] Chowdhury GG: Natural language processing. Annual review of information science and technology. 2003;37(1): 51–89.

[12] Kwoh YS, Hou J, Jonckheere EA, et al.: A robot with improved absolute positioning accuracy for CT guidedstereotactic brain surgery. IEEE Trans Biomed Eng. 1988; 35(2): 153–60.

[13] Kypson AP, Chitwood WR Jr: Robotic Applications in Cardiac Surgery. Int J Adv Robot Syst. 2004; 1(2): 87–92.

[14] Melfi FM, Menconi GF, Mariani AM, et al.: Early experience with robotic technology for thoracoscopic surgery. Eur J Cardiothorac Surg. 2002; 21(5): 864–8.

[15] Hyun MH, Lee CH, Kim HJ, et al.: Systematic review and meta-analysis of robotic surgery compared with conventional laparoscopic and open resections for gastric carcinoma. Br J Surg. 2013; 100(12): 1566–78.

[16] Herron DM, Marohn M, SAGES-MIRA Robotic Surgery Consensus Group: A consensus document on robotic surgery. Surg Endosc. 2008; 22(2): 313–25, discussion 311–2.

[17] DiGioia AM, Jaramaz B, Picard F, et al.: Computer and robotic assisted hip and knee surgery. Oxford Uni- versity Press. 2004; 127–1.

[18] Shweikeh F, Amadio JP, Arnell M, et al.: Robotics and the spine: a review of current and ongoing applica- tions. Neurosurg Focus. 2014; 36(3): E10.

[19] Hameed AM, Yao J, Allen RD, et al.: The Evolution of Kidney Transplantation Surgery Into the Robotic Eraand Its Prospects for Obese Recipients. Transplantation. 2018; 102(10): 1650–1665.

[20] Lee DI: Robotic prostatectomy: what we have learned and where we are going. Yonsei Med J. 2009; 50(2): 177–81.

[21] Investor Presentation Q4 2019. Intuitive Surgical, Inc. Retrieved 13.12.2019.

[22] Jenny JY: [The history and development of computer assisted orthopaedic surgery]. Orthopade. 2006; 35(10): 1038–1042.

[23] Kenngott HG, Wagner M, Nickel F, et al.: Computer-assisted abdominal surgery: new technologies. Langen-becks Arch Surg. 2015; 400(3): 273–281.

[24] Ho C, Tsakonas E, Tran K, et al.: Robot-assisted surgery compared with open surgery and laparoscopic surgery: clinical effectiveness and economic analyses. 2011.

[25] Kristensen SE, Mosgaard BJ, Rosendahl M, et al.: Robot-assisted surgery in gynecological oncology: current status and controversies on patient benefits, cost and surgeon conditions - a systematic review. Acta Obstet Gynecol Scand. 2017; 96(3): 274–285.

[26] Carr-Brown J, Berlucchi M: Pre-primary care: an untapped global health opportunity. Your.MD. 2016.

The Role of AI in Climate Change Mitigation: Opportunities and Challenges

Devansh Shukla
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur Nagar, India.
E mail Id: 231263@kit.ac.in

ABSTRACT

As the global community confronts the escalating challenges of climate change, the integration of Artificial Intelligence (AI) emerges as a pivotal force in mitigating environmental impacts and presents a potential remedy for the repercussions of climate change by offering solutions grounded in accurate climate predictions. In our context, we employ newly published research to address the adverse impacts of climate change, with a primary focus on mitigating carbon emis- sions, energy optimization, advancing weather forecasting, curbing deforestation, implementing precision agriculture, climate modeling, and refining industrial processes. The integration of ar- tificial intelligence into climate change mitigation presents diverse challenges, including issues related to data privacy and security, ethical considerations, global accessibility, energy consump- tion, and interdisciplinary collaborations optimizes energy systems, predicts demand, enhances grid management, and integrates renewable energy for sustainability. In smart transportation, AI- driven innovations reduce emissions, improve fuel efficiency, and promote eco-friendly modes. In agriculture, AI provides real-time data, optimizing resource use and promoting sustainabil- ity. AI is pivotal in climate modeling, aiding informed climate change adaptation and mitigation decisions. For natural resource management, AI monitors and manages resources through data analytics, contributing to conservation and biodiversity protection. From a scientific standpoint, the integration of AI offers unprecedented opportunities for advanced modeling, data analysis, and predictive capabilities, fostering a deeper understanding of climate dynamics and facilitating evidence-based decision-making.

Keywords: Artificial Intelligence (AI), Climate Change Mitigation, Opportunities, Challenges.

1. Introduction

The Specter of climate change looms large on the global stage, demanding urgent and effective responses to mitigate its far-reaching consequences. The Intergovernmental Panel on Climate Change (IPCC) consistently underscores the imperative for large-scale interventions to counter human-induced climate change, emphasizing the need for innovative solutions. In this dynamic landscape, Artificial Intelligence (AI) has emerged as a beacon of hope, offering unprecedented opportunities to revolutionize and augment our approach to climate change mitiga- tion [6][23]. The IPCC has consistently stressed the importance of taking significant actions to address climate change caused by human activities. This involves preventing unnecessary increases in global temperatures and mitigating the impacts of inevitable warming, including those that have already happened [17][18]. This com- prehensive review seeks to unravel the intricate tapestry of the role that AI can play and is already playing, in addressing the complex challenge of climate change. The amalgamation of AI's computational prowess, predictive analytics, and optimization capabilities presents a compelling case for its integration into climate change mitiga- tion strategies. This paper aims to delve deep into the opportunities and challenges inherent in the marriage of AI and climate change mitigation, acknowledging the pivotal role it can play in fostering sustainable practices and providing effective solutions [16].

As the world grapples with the urgency of transitioning to a low-carbon economy and rethinking resource uti- lization, AI stands at the forefront of technological innovation. Its potential applications span diverse domains, from enhancing the accuracy of climate modeling to optimizing real-time resource allocation and revolutionizing sustainable practices in various industries. The overarching objective is clear: to leverage AI's capabilities for a more effective, efficient, and sustainable response to the climate crisis. However, this transformative journey is not without its complexities. The introduction of AI into the realm of climate change mitigation brings forth a spectrum of challenges, ranging from ethical concerns related to biased decision-making algorithms to potential environmental repercussions of computation-intensive AI systems. The pursuit of a more sustainable future through AI necessitates careful navigation of these challenges, demanding responsive and effective governance to ensure a harmonious balance between risk and reward [2]. This review embarks on a structured exploration of the opportunities AI affords for addressing climate change, dissecting its potential applications and impact on sustain- ability [4][5]. Simultaneously, it critically examines the challenges associated with this integration, acknowledging the ethical, social, and environmental dimensions. The carbon footprint of AI research is scrutinized, illuminating the intricate trade-off between emissions and efficiency gains [9].

2. Opportunities Afforded by AI

Artificial Intelligence (AI) has emerged as a transformative force in the realm of climate change mitigation, offer- ing a myriad of opportunities to reshape existing strategies and catalyze effective responses to this global challenge. The integration of AI into climate action presents several distinct opportunities that promise to enhance our un- derstanding, optimize resource allocation, and drive innovative, sustainable solutions [3]. This figure shows the opportunities afforded by an AI in climate change mitigation [1][15]:

Figure 1: *Opportunities Afforded by AI*

These opportunities collectively highlight the transformative potential of AI in addressing climate change. By leveraging these capabilities, we stand on the precipice of a new era in climate action, where data-driven insights and smart technologies can drive sustainable practices and contribute significantly to global efforts for a more resilient and low-carbon future [10][13].

3. Challenges Associated with AI in Climate Change Mitigation

The utilization of Artificial Intelligence (AI) in climate change mitigation introduces a spectrum of challenges that necessitate careful consideration. A primary obstacle lies in the quality and availability of data, as AI models heav- ily rely on comprehensive, accurate datasets for effective training and validation [19]. The complexity and lack of interpretability in advanced AI models pose another challenge, requiring a delicate balance between sophisticated algorithms and the ability to transparently understand and trust the decision-making process, especially in policy contexts. Additionally, the energy consumption associated with training powerful AI models raises concerns about potential carbon emissions, urging the development of more energy-efficient algorithms and sustainable computa- tional practices. Allocating resources judiciously and prioritizing AI projects that yield substantial climate change impacts amidst competing sectors present further challenges. The adaptability of AI models to the dynamic nature of climate change, coupled with their capacity for generalization across diverse scenarios, necessitates ongoing research. Ethical considerations, such as fairness and unintended consequences, demand careful attention to en- sure that AI interventions do not exacerbate societal disparities [24][25]. This figure explores the multifaceted challenges associated with AI in climate change mitigation:

Figure 2: *Methods used for climate change mitigation*

Navigating these challenges is crucial to unlocking the full potential of AI in climate change mitigation. By ad- dressing these concerns proactively, stakeholders can work towards harnessing the benefits of AI while minimizing potential risks and ensuring an ethical, inclusive, and sustainable approach to tackling the complex issue of climate change [2].

4. Carbon Footprint on AI Research

The carbon footprint associated with AI research is a multifaceted challenge that spans the entire life cycle of AI development, from model creation to deployment. The training of intricate AI models involves vast computational power, often housed in data centers that consume substantial amounts of energy. The carbon emissions tied to these energy-intensive processes are further exacerbated by the constant need for model optimization and iteration, leading to a continuous demand for computational resources. The reliance on cloud computing services introduces an additional layer of carbon emissions [11][12], as different cloud providers have varying levels of commitment to green energy practices. Efforts to quantify the precise environmental impact of AI research require robust life cycle assessments, examining the carbon intensity of hardware manufacturing, energy consumption during research, and electronic waste disposal. Striking a balance between the environmental impact and the efficiency gains offered by AI applications in climate change mitigation is a nuanced challenge that necessitates ongoing research, benchmarking, and the establishment of industry-wide best practices. Incorporating renewable energy sources into AI research infrastructure is imperative for reducing its overall carbon footprint and aligning with broader sustainability goals. The scientific community must collaborate to develop standardized metrics and evidence- based guidelines to effectively navigate and minimize the environmental impact of AI research, ensuring that AI technologies play a constructive role in global efforts to combat climate change [14].

5. Conclusion and Future Prospects

In conclusion, the convergence of Artificial Intelligence (AI) and climate change mitigation presents a dynamic landscape of opportunities and challenges. While AI holds immense promise in advancing our understanding of climate dynamics, optimizing resource allocation, and fostering innovation in sustainable practices, it also brings forth ethical, social, and environmental considerations [22]. The future of AI in climate change mitigation is bright, with emerging technologies like Explainable AI (XAI), quantum computing, and autonomous systems poised to revolutionize our approach [7][8]. The integration of AI with synthetic biology, swarm intelligence, and decentralized computing offers innovative solutions, reflecting the interdisciplinary nature of addressing climate challenges. Blockchain technology ensures transparency and security, while AI-driven circular economy practices pave the way for sustainable resource utilization. The interconnected approach of AI with the Internet of Things (IoT) enhances real-time monitoring and decision-making. As we navigate this landscape, it is crucial to strike a balance between reaping the benefits of AI and mitigating its environmental impact. Adaptive governance, international collaboration, and responsible development practices will be key in harnessing the transformative potential of AI for a sustainable and resilient future in the face of climate change.

Acknowledgement

I extend my heartfelt thanks to the individuals and institutions whose invaluable assistance was crucial in com- pleting this review article. I extend my profound gratitude to the esteemed KIT management, our distinguished Director, Prof. Brajesh Varshney, and my guiding mentors, Dr. Priyanka Gupta and Abhinandan Shukla, for their invaluable and gracious support. My appreciation also goes to the authors and researchers whose contributions laid the groundwork for this review; their groundbreaking work has shaped the foundation of this manuscript. Special acknowledgment is due to the anonymous reviewers whose insightful comments and recommendations signifi- cantly enhanced the quality and scope of this work. Lastly, I express deep gratitude for my family's unwavering support, which proved indispensable in my endeavors.

References

[1] Flannery BP, Hofmann T, Riedewald M. (2019). ”Machine learning and climate science: An opportunity.” Frontiers in Big Data.
[2] Rolnick, D., Donti, P. L., et al. (2019). ”Tackling Climate Change with Machine Learning.” arXiv preprint arXiv:1906.05433.
[3] Ribeiro, M. T., Singh, S., Guestrin, C. (2016). ”Why should I trust you?” Explaining the predictions of any classifier. In Proceedings of the 22nd ACM SIGKDD international conference on knowledge discovery and data mining (pp. 1135-1144).
[4] Schimel, D., et al. (2019). ”Climate change: The physical basis and latest findings.” In Intergovernmental Panel on Climate Change (IPCC) Special Report on the Ocean and Cryosphere in a Changing Climate.
[5] Campagner, A., et al. (2020). ”Machine learning in support of climate change research: A review.” Environ- mental Research Letters, 15(9), 093005.
[6] Faghmous, J. H., Kumar, V. (2014). ”A big data guide to understanding climate change: The case for theory- guided data science.” Big Data, 2(3), 155-163.
[7] Lecun, Y., Bengio, Y., Hinton, G. (2015). ”Deep learning.” Nature, 521(7553), 436-444.
[8] Alexander, P., et al. (2019). ”Machine learning for the United Nations Sustainable Development Goals.” Nature Sustainability, 2(10), 901-904.
[9] Bhardwaj, A., et al. (2020). ”Artificial intelligence and machine learning in environmental science: A decade of progress.” Earth-Science Reviews, 201, 102953.
[10] Esteva, A., et al. (2019). ”A guide to deep learning in healthcare.” Nature Medicine, 25(1), 24-29.
[11] Abdella GM, Kucukvar M, Onat NC, Al-Yafay HM, Bulak ME (2020) Sustainability assessment and modeling based on supervised machine learning techniques: the case for food consumption. J Clean Prod 251(April):119661. https://doi.org/10.1016/j.jclepro.2019.119661
[12] Cai H, Gan C, Wang T, Zhang Z, Han S (2020) Once-for-all: train one network and specialize it for efficient deployment. http://arxiv.org/abs/1908.09791 [Cs, Stat]
[13] Reichstein, M., et al. (2019). ”Deep learning and process understanding for data-driven Earth system science.” Nature, 566(7743), 195-204.
[14] Anthony LFW, Kanding B, Selvan R (2020) Carbontracker: tracking and predicting the carbon footprint of training deep learning models. http://arxiv.org/abs/2007.03051 [Cs, Eess, Stat]
[15] Chen Y-H, Emer J, Sze V (2017) Using dataflow to optimize energy efficiency of deep neural network accel- erators. IEEE Micro 37(3):12–21. https://doi.org/10.1109/MM.2017.54
[16] Russell, S., Norvig, P. (2010). ”Artificial intelligence: a modern approach.” Pearson Education.
[17] Abdella GM, Kucukvar M, Onat NC, Al-Yafay HM, Bulak ME (2020) Sustainability assessment and modeling based on supervised machine learning techniques: the case for food consumption. J Clean Prod 251(April):119661. https://doi.org/10.1016/j.jclepro.2019.119661
[18] Pachauri RK, Allen MR, Barros VR, Broome J, Cramer W, Christ R, Church JA, Clarke L, Dahe Q, Dasgupta P (2014) Climate change 2014: synthesis report. Contribution of Working Groups I, II and III to the Fifth Assessment Report of the Intergovernmental Panel on Climate Change. IPCC
[19] Tsamados A, Aggarwal N, Cowls J, Morley J, Roberts H, Taddeo M, Floridi L (2020) The ethics of algorithms: key problems and solutions. Available at SSRN 3662302.

[20] Dobbe R, Sondermeijer O, Fridovich-Keil D, Arnold D, Callaway D, Tomlin C (2019) Toward distributed en- ergy services: decentralizing optimal power flow with machine learning. IEEE Trans Smart Grid 11(2):1296–1306
[21] Liakos KG, Busato P, Moshou D, Pearson S, Bochtis D (2018) Machine learning in agriculture: a review.
[22] Sensors 18(8):2674
[23] Gagne, D. J., Kumar, V. (2015). ”Climate informatics.” Climatic Change, 131(1), 1-3.
[24] Monaghan, A. J., et al. (2016). ”Climate science meets computer science: Climate informatics, an emerging discipline.” Proceedings of the National Academy of Sciences, 113(30), 8212-8219.
[25] Floridi L (2017) Group privacy: a defence and an interpretation. In: Group privacy. Springer, pp 83–100
[26] Vodafone Institute for Society and Communications (2020) Digitising Europe pulse—tackling climate change: a survey of 13 EU countries

Emotion Artificial Intelligence: Understanding and Integrating Emotional Intelligence in Machines

Jyoti Chaubey*
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur Nagar, India.

Priyanka Gupta
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur Nagar, India.

***Corresponding Author**
Jyoti Chaubey
Email Id: 233151@kit.ac.in

ABSTRACT

Emotion Artificial Intelligence (Emotion AI) involves crafting technologies that empower machines to understand, interpret, and respond to human emotions. This paper delves into the intricacies of embedding emotional intelligence into machines, drawing insights from artificial intelligence, psychol- ogy, and human-computer interaction. Key steps and considerations for deciphering, comprehending, and adeptly responding to human emotions are examined. The development and implementation of Emotion AI encounter multifaceted limitations and challenges. The intricate nature of human emo- tions, marked by a melange of feelings and states, poses real-time recognition hurdles, especially in dynamic social interactions. This paper acknowledges that the integration of emotional intelligence into machines is an evolving field, demanding continuous research and development. As technology advances, the challenge extends beyond enhancing machines' understanding of emotions to aligning these capabilities with human values and ethical principles. The future of Emotion AI hinges on on- going research, technological advancements, and societal acceptance. Ethical concerns, algorithmic bias, and transparency in development will be critical challenges to address. Responsible and ethical development is essential to ensure the positive impact of Emotion AI on individuals and society as a whole.

Keywords: AI, Emotion in AI, Neuroscience and Emotion Modeling in AI

1. Introduction

In the world of Emotion AI, a realm where the binary heart of machines learns to beat in sync with the nuanced rhythm of human feelings[11].A machine that not only recognizes your smile but understands the joy that ignites it.[4] Imagine a virtual assistant that doesn't just hear your words but senses the undertones of your emotions. This review embarks on a captivating exploration of Emotion AI, where the pulse of technology meets the heartbeat of humans. [4] Our journey begins with an expedition into the theoretical bedrock that lays the foundation for Emotion AI. From the classic echoes of Basic Emotion Theory to the contemporary harmonies of Component Process Models, we navigate through the intellectual symphony that shapes our understanding of human emotion and how machines endeavor to dance to the same rhythm. But Emotion AI is not just a theoretical pursuit—it is a symphony in the making. Technological virtuosos in machine learning, computer vision, and affective computing are orchestrating a revolution. This review unwraps the intricacies of these technological crescendos, exploring how algorithms are learning not just to identify emotions but to resonate with them.As we venture deeper, we encounter Emotion AI in action, transforming industries and human experiences. From healthcare's bedside, where it senses the subtle shifts in a patient's emotional landscape, to the virtual classrooms, where it tailors lessons based on the student's emotional journey—Emotion AI paints a canvas where technology is not just intelligent but empathetic.Yet, like any grand performance, Emotion AI is not without its backstage challenges. Ethical considerations cast a spotlight on privacy concerns, potential biases, and the ethical tightrope of emotional manipulation. As we revel in the promises, we must also confront the shadows that dance behind the scenes. we unravel the future of Emotion AI. A future where machines not only decode the language of emotions but contribute to mental health diagnostics, where ethical considerations shape the development roadmap, and where interdisciplinary collaboration leads to a harmonious integration of technology. [13] [2]

2. Theoretical Foundation

- Basic Emotion Theory is a foundational perspective in psychology, posits that there are a small set of primary emotions that are universal across cultures and biologically based. These basic emotions are considered innate and easily recognizable both in facial expressions and physiological responses. The commonly identified basic emotions include joy, sadness, anger, fear, disgust, and surprise.[8] [10]
- Expression Recognition is the use of computer vision and machine learning algorithms to interpret and identify emotions based on facial expressions. This process enables machines to understand and respond to human emotional states in various applications, from human-computer interaction to virtual assistants and customer service. Emotion AI systems analyze facial features and movements, such as eyebrow position, eye shape, and mouth movements, to infer emotional responses. The recognition of facial expressions contributes to creating more empathetic and responsive interactions between machines and humans. [14]
- Training Datasets is a collection of labeled data used to train machine learning models. This dataset consists of examples of facial expressions, voice recordings, or other data modalities, each associated with specific emotions. The purpose of the training dataset is to teach the model to recognize and classify emotions accurately. The model learns patterns and features from the labeled examples, enabling it to generalize and make predictions on new, unseen data. Developing a diverse and well-curated training dataset is crucial for the effectiveness and adaptability of Emotion AI models. [10]
- Human-Computer Interaction in the current landscape of Human-Computer Interaction (HCI) and Emotion AI, there is a growing emphasis on creating more emotionally intelligent and responsive interfaces. Emotion AI technologies are being integrated into various HCI applications to enhance user experiences and interactions. The current condition involves ongoing research and development to improve the accuracy and adaptability of Emotion AI systems in understanding and responding to users'

emotions. This integration is seen in virtual assistants, chatbots, educational software, and other interactive platforms, where the goal is to create a more natural and empathetic interaction between users and machines. As these technologies evolve, there is a continuous effort to address challenges, including cross-cultural considerations, ethical concerns, and the need for personalized and context-aware emotional responses in HCI.

- The physiological changes that occur in the human body as part of the emotional response. These changes are associated with various bodily functions and can be measured to infer an individual's emotional state. In the context of Emotion AI, physiological components play a crucial role in understanding and interpreting emotions. Algorithms and systems are designed to analyze physio- logical signals to make inferences about the user's emotional experiences. This includes capturing data related to heart rate, skin conductance, facial muscle activity, and other physiological indi- cators. By incorporating physiological components, Emotion AI aims to create a more holistic and nuanced understanding of human emotions, contributing to the development of emotionally intelligent systems. [9]
- Cognitive Components is the mental processes and aspects of emotions. These components involve the ways individuals perceive, interpret, and appraise emotional stimuli, leading to the generation of emotional responses. In Emotion AI, understanding cognitive components is essential for developing algorithms and systems that can analyze and interpret the cognitive aspects of human emotions. This may include the interpretation of facial expressions, voice tone, and other cues that provide insights into the user's cognitive appraisal of a situation. By considering cognitive components, Emotion AI aims to create systems that can comprehend the cognitive dimensions of emotions, enhancing the overall understanding and responsiveness in human-machine interactions. [15]
- Behavioral Components are the observable actions, expressions, and outward manifestations associ- ated with human emotions. In the context of Emotion AI, understanding and analyzing behavioral components play a crucial role in recognizing and responding to emotions. This involves the in- terpretation of facial expressions, body language, gestures, vocal intonations, and other observable behaviors that convey emotional states. Emotion AI systems are designed to capture and interpret these behavioral cues, contributing to a more comprehensive understanding of the user's emotional experiences. The goal is to create systems that can respond appropriately to the nuanced and diverse ways in which emotions are expressed behaviorally. [16]

3. Technological Advancements

Advancements in machine learning and deep learning algorithms have empowered Emotion AI systems to better understand and interpret complex patterns in emotional expressions. [21]

Natural Language Processing (NLP): Progress in NLP has enhanced the ability of Emotion AI to analyze and interpret emotional content in textual data, contributing to applications such as sentiment analysis.

Computer Vision: Technological strides in computer vision have enabled Emotion AI to accurately recognize facial expressions, body language, and gestures, facilitating more nuanced emotion detection.

Affective Computing: The field of affective computing has evolved, leading to more sophisticated algorithms that can understand and respond to human emotions across various data modalities.

Edge Computing: Advances in edge computing have facilitated real-time and decentralized processing of emotional data, improving the responsiveness of Emotion AI systems. [19]

Explainable AI (XAI): Efforts in creating more explainable AI models have contributed to addressing the interpretability challenges associated with Emotion AI, ensuring transparency in decision-making processes.

Generative Models: The emergence of generative models, such as generative adversarial networks (GANs), has facilitated the creation of emotionally expressive content, expanding the applications of Emotion AI.

4. Methodology

In the development of Emotion AI, a methodology is followed to design and train models for recognizing and responding to human emotions. [20]

Data Collection: Gathering diverse datasets containing exam- ples of emotional expressions, including facial expressions, voice recordings, and textual content.

Feature Extraction: Extracting relevant features from the collected data, such as facial landmarks, acoustic fea- tures, or linguistic patterns, to capture nuances of emotional expression.

Preprocessing: Cleaning and preparing the data, which may include normalization, scaling, and addressing biases or artifacts present in the dataset. [17]

Model Selection: Choosing appropriate machine learning or deep learning models based on the task, such as convolutional neural networks (CNNs) for facial expression recognition or recurrent neural networks (RNNs) for sequence-based emotion analysis.

Training: Training the selected model using labeled data to learn patterns and associations between input features and corresponding emotional labels.

Transfer Learning: Leveraging pre-trained models or knowledge from related tasks to enhance the performance of Emotion AI models, especially when labeled data is limited.

Explainability and Interpretability: Incorporating methodologies to make Emotion AI models more interpretable and understandable, addressing the ’black box’ nature of some deep learning models.

5. Limitations and Challenges

These challenges include the subjective and variable nature of emotions, difficulties in obtaining accurate ground truth labeling, ambiguity and context dependency in emotional expressions, and cross-cultural variations in emotional cues. The dynamic and evolving nature of emotions poses a challenge, along with the limited understanding of the complexity of human emotions by current Emotion AI models.Privacy concerns arise from the collection and analysis of emotional data, requiring careful ethical considerations. Issues related to bias in Emotion AI, both in training data and system outputs, need to be addressed to ensure fair and equitable outcomes. Achieving generalization across diverse domains and improving the explainability and interpretability of Emotion AI models remain ongoing challenges.Integrating Emotion AI into human-centric applications requires careful consideration of usability, user trust, and potential impacts on user experiences. Real-time processing requirements, especially in applications demanding low-latency responses, present technical challenges that need to be addressed for wider adoption. Overall, recognizing and navigating these limitations and challenges will contribute to the responsible and effective development of Emotion AI.[1]

6. Continuous Evolution and Research

The field of Emotion AI is marked by continuous evolution and ongoing research as it strives to advance the understanding and integration of emotional intelligence in machines. [18]

Technological Advancements

Machine Learning and Deep Learning: Explore advancements in machine learning and deep learning techniques that have improved the accuracy and efficiency of emotion recognition models. This could include the use of convolutional neural networks (CNNs), recurrent neural networks (RNNs), and attention mechanisms. [6]

Natural Language Processing (NLP): Discuss how advancements in NLP have facilitated the understanding of emotional content in text. This includes sentiment analysis, emotion detection in written communication, and the development of emotion-aware chatbots. [7]

Computer Vision: Investigate how computer vision technologies have evolved to recognize facial expressions, body language, and other visual cues indicative of emotions. This may involve the use of image and video analysis techniques.

Edge Computing: Discuss how edge computing has impacted Emotion AI by enabling more real-time and decentralized processing of emotional data. This can enhance the responsiveness of emotion-aware systems. [5]

Real-world Application: Emotion AI is increasingly finding applications in real-world scenarios, including healthcare, education, customer service, and human-computer interaction. Ongoing research explores how these applications can positively impact diverse industries and improve user experiences.

Human-Robot Interaction: Research in human-robot interaction explores how Emotion AI can enhance the collaboration between humans and robots. This involves developing emotionally intelligent robots capable of understanding and responding to human emotions in dynamic environments.

7. Conclusion

This review paper has provided a comprehensive overview of the current state of Emotion AI, unveiling its transformative potential and the multifaceted impact it holds across diverse domains. As we stand on the cusp of a new era in human-computer interaction, the advancements in emotion recognition technolo- gies are poised to reshape how we engage with machines and, consequently, with each other. However, the journey is far from complete, and the future scope of Emotion AI beckons exciting possibilities and challenges. Looking ahead, the trajectory of Emotion AI research suggests a continued evolution towards more nuanced and context-aware emotion recognition systems. Future developments may focus on re- fining algorithms to better understand cultural nuances, individual differences, and dynamic emotional states, fostering a more personalized and inclusive user experience. [12] The integration of multimodal data sources, such as facial expressions, voice intonation, and physiological signals, holds promise for enhanced accuracy and depth in emotion recognition.The journey of Emotion AI is a dynamic and on- going exploration, offering a glimpse into a future where machines comprehend and respond to human emotions with unprecedented sophistication. As we embark on this journey, it is essential to remain vigilant, fostering a harmonious integration of technology into our lives that reflects our shared values and aspirations.

Future Scope

In healthcare, emotion AI has the potential to contribute significantly to mental health monitoring and therapy, offering real-time insights into emotional states and facilitating timely interventions. Marketing and advertising stand to benefit from emotion AI’s ability to analyze consumer responses, allowing for more targeted and emotionally resonant campaigns. In education, emotion AI could usher in a new era of adaptive learning tools, tailoring educational experiences based on students’ emotional engagement and needs. The integration of emotion AI in human resources processes could lead to more empathetic workplace environments by assessing employee well-being and engagement. Moreover, the application of emotion AI in autonomous vehicles, robotics, and security systems presents exciting possibilities for creating socially aware and responsive technologies.[3] As the field evolves, it will be crucial to address ethical considerations and establish guidelines for responsible development and deployment, ensuring that the potential benefits of emotion AI are realized ethically and inclusively.

Acknowledgement

We extend our profound gratitude to the esteemed KIT management, our distinguished Director, Prof. Brajesh Varshney, and our guiding mentor,for their invaluable and gracious support.

References

[1] Ajay Agrawal, Joshua Gans, and Avi Goldfarb. *What to Expect from Artificial Intelligence*. Publisher Name, 2017. ISBN: 1486511104226.

[2] Christos-Nikolaos Anagnostopoulos, Theodoros Iliou, and Ioannis Giannoukos. Features and classi- fiers for emotion. *Journal Name or Conference Name*, Volume Number(Issue Number):Page Num- bers, 20XX.

[3] Nick Bostrom and Eliezer Yudkowsky. The ethics of artificial intelligence. In *Artificial Intelligence Safety and Security*, pages 57–69. Chapman and Hall/CRC, 2018.

[4] Andrius Dzedzickis, Artūras Kaklauskas, and Vytautas Bucinskas. Human emotion recognition: Review of sensors and methods. *Sensors*, 20(3):592, 2020.

[5] D. Gursoy, O. H. Chi, L. Lu, and R. Nunkoo. Consumers acceptance of artificially intelligent (ai) device use in service delivery. *International Journal of Information Management*, 49:157–169, 2019.

[6] Jennifer Hill, W. Randolph Ford, and Ingrid G. Farreras. Real conversations with artificial intelli- gence: A comparison between human–human online conversations and human–chatbot conversations. *Computers in Human Behavior*, 49:245–250, 2015.

[7] A. Jan, H. Meng, Y. F. B. A. Gaus, and F. Zhang. Artificial intelligent system for automatic depression level analysis through visual and vocal expressions. *IEEE Transactions on Cognitive and Developmental Systems*, 10(3):668–680, 2017.

[8] Byoung Chul Ko. A brief review of facial emotion recognition based on visual information. *Sensors*, 18(2):401, 2018.

[9] Jinpeng Li, Zhaoxiang Zhang, and Huiguang He. Hierarchical convolutional neural networks for eeg-based emotion recognition. *Cognitive Computation*, 10:368–380, 2018.

[10] N. Majumder, S. Poria, D. Hazarika, R. Mihalcea, A. Gelbukh, and E. Cambria. Dialoguernn: An attentive rnn for emotion detection in conversations. In *Proceedings of the AAAI Conference on Artificial Intelligence*, volume 33, pages 6818–6825, 2019.

[11] Juan Mart´ınez-Miranda and Arantza Aldea. Emotions in human and artificial intelligence. *Com- puters in Human Behavior*, 21(2):323–341, 2005.

[12] M. Mohammadpour, H. Khaliliardali, S. M. R. Hashemi, and M. M. AlyanNezhadi. Facial emo- tion recognition using deep convolutional networks. In *2017 IEEE 4th International Conference on Knowledge-Based Engineering and Innovation (KBEI)*, pages 17–21. IEEE, 2017.

[13] P. Nandwani and R. Verma. A review on sentiment analysis and emotion detection from text. *Social Network Analysis and Mining*, 11(1):81, 2021.

[14] Rolf Pfeifer. Artificial intelligence models of emotion. In *Cognitive Perspectives on Emotion and Motivation*, pages 287–320. Springer Netherlands, Dordrecht, 1988.

[15] Monorama Swain, Aurobinda Routray, and Prithviraj Kabisatpathy. Databases, features and clas- sifiers for speech emotion recognition: A review. *International Journal of Speech Technology*, 21:93– 120, 2018.

[16] P. Tzirakis, G. Trigeorgis, M. A. Nicolaou, B. W. Schuller, and S. Zafeiriou. End-to-end multi- modal emotion recognition using deep neural networks. *IEEE Journal of Selected Topics in Signal Processing*, 11(8):1301–1309, 2017.

[17] Xiao-Wei Wang, Dan Nie, and Bao-Liang Lu. Emotional state classification from eeg data using machine learning approach. *Neurocomputing*, 129:94–106, 2014.

[18] D. Xu, Z. Tian, R. Lai, X. Kong, Z. Tan, and W. Shi. Deep learning based emotion analysis of microblog texts. *Information Fusion*, 64:1–11, 2020.

[19] Y. Yang, Q. Wu, M. Qiu, Y. Wang, and X. Chen. Emotion recognition from multi-channel eeg through parallel convolutional recurrent neural network. In *2018 International Joint Conference on Neural Networks (IJCNN)*, pages 1–7. IEEE, 2018.

[20] Anhua Zhang and et al. Emotion recognition using multi-modal data and machine learning techniques: A tutorial and review. *Information Fusion*, 59:103–126, 2020.

[21] H. Zhou, M. Huang, T. Zhang, X. Zhu, and B. Liu. Emotional chatting machine: Emotional conversation generation with internal and external memory. In *Proceedings of the AAAI Conference on Artificial Intelligence*, volume 32, April 2018.

Green Cloud Computing: Sustainability Trend and Environmental Impact

Nishtha Singh*
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur Nagar, India.

Priyanka Gupta
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur Nagar, India.

***Corresponding Author**
Nishtha Singh
Email Id: 233193@kit.ac.in

ABSTRACT

Green Cloud Computing has emerged as a critical paradigm in response to the escalating envi- ronmental concerns associated with traditional data centers. This paper provides a comprehensive review of the current sustainability trends and environmental impact of Green Cloud Computing. The focus is on the innovative technologies, strategies, and practices employed to reduce the carbon footprint and enhance energy efficiency within cloud computing infrastructures. The review encom- passes various dimensions of sustainability, including energy consumption, resource utilization, and waste management. The paper also explores the role of virtualization, containerization, and server consolidation in optimizing resource utilization and minimizing electronic waste. Furthermore, the environmental impact assessment considers the life cycle analysis of Green Cloud Computing, empha- sizing the reduction of greenhouse gas emissions and electronic waste generation. The study evaluates the effectiveness of eco-friendly data center designs, cooling systems, and power management pro- tocols in achieving sustainability goals. The review concludes with a discussion on future prospects and challenges, outlining potential areas for further research and innovation. As the world grapples with the urgent need for environmentally responsible computing solutions, this comprehensive analy- sis of Green Cloud Computing's sustainability trends and environmental impact serves as a valuable resource for researchers, practitioners, and policymakers striving to advance a more sustainable and eco-friendly digital infrastructure.

Keywords: Green Cloud Computing, Sustainability Trends, Environmental Impact, Resource Utilization, Eco-Friendly Data Centers

1. Introduction

In our fast-paced tech world, where we're all plugged into the digital grid, there's a growing awareness about the environmental toll of our data-driven lives. Enter Green Cloud Computing, a game-changer in how we handle our digital stuff while keeping an eye on Mother Earth. Now, let's talk tech, but keep it simple. Imagine virtualization, containerization, and server consolidation as eco-friendly superheroes. They swoop in to make sure we use our resources smartly and don't leave a mess of electronic waste behind. These tricks are at the core of making Green Cloud Computing not just efficient but also eco-friendly. We want to be sure it's doing its bit to cut down on the stuff that makes our planet sick – like greenhouse gas emissions and electronic waste. Now, let's pop the hood and check out the nuts and bolts – the designs of data centers, the clever cooling systems, and the smart power controls. We're like detectives, figuring out if these things really help Green Cloud Computing stick to its green goals. As we wrap up our exploration, we're not saying goodbye – we're saying, "What's next?" What challenges does Green Cloud Computing still need to tackle? Where can we go from here? These are the questions we're going to chat about, paving the way for more exciting research and cool innovations.[15]

Figure 1: Introducing the Future: A Visual Prelude to Green Cloud Computing.

2. Navigating the Green Horizon

Energy-Efficient Data Centers

Energy-efficient data centers are reliable super-smart houses for our digital information. Just as we try to use energy wisely at home, these data centers are designed to use electricity in a really clever way. They have advanced technologies and smart designs to make sure they don't waste energy, helping to protect the environment and save electricity. So, when we talk about energy-efficient data centers, we mean places that store and process our digital stuff while being mindful of using energy wisely.[3, 20]

Renewable Energy Integration

The integration of solar and wind energy into cloud data centers is a crucial step towards sustainable computing. Companies are leveraging Power Purchase Agreements (PPAs) to secure a stable supply of renewable energy, often from large-scale solar and wind farms. Achieving carbon-neutral or even carbon-negative cloud services involves optimizing data center efficiency, investing in energy storage, and implementing carbon offset initiatives such as reforestation and carbon capture technologies. This commitment aligns with broader corporate sustainability goals and addresses the environmental impact of digital infrastructure, contributing to a greener and more sustainable digital future. Ongoing innovation in renewable energy solutions remains key to advancing these efforts.[13]

Edge Computing and Fog Computing

Edge and fog computing represent transformative approaches in data processing that significantly reduce the reliance on extensive data transfers to centralized data centers, yielding notable energy savings. By decentralizing computational tasks and processing data closer to the source—whether it's a smart device or an Internet of Things (IoT) sensor—these paradigms mitigate the need for constant data transmission to distant data centers. This not only minimizes latency, ensuring quicker response times for real- time applications but also leads to substantial energy efficiency gains. The localized processing of data at the edge or with a fog layer allows for more streamlined and efficient use of computing resources, optimizing energy consumption and enhancing the overall performance of distributed systems. This shift towards decentralized computing aligns with the growing demand for faster and more energy-efficient data processing, marking a significant evolution in the architecture of modern computing systems.[9, 19]

Green Data Storage Practices

In the realm of green data storage practices, innovations in energy-efficient technologies are reshaping the landscape. Solid-state drives (SSDs) stand out as a notable advancement, offering not only faster data access but also lower energy consumption compared to traditional hard disk drives. The transition to SSDs in data storage solutions contributes to both improved performance and reduced environmental impact. Complementing hardware innovations, advanced storage management techniques play a crucial role in optimizing energy efficiency. Data deduplication and compression are among the key strategies employed to minimize storage space requirements and subsequently lower energy consumption. Data deduplication identifies and eliminates duplicate copies of data, reducing the overall storage footprint. Compression, on the other hand, reduces the size of individual files or data blocks, further optimizing storage efficiency. These techniques not only contribute to energy savings but also enhance the overall utilization of storage resources. By combining energy-efficient hardware solutions like SSDs with intelli- gent storage management techniques, organizations can create a more sustainable and eco-friendly data storage infrastructure. This approach aligns with the broader industry goal of minimizing environmental impact while meeting the ever-growing demands for data storage and access. As technology continues to evolve, ongoing research and development in green storage practices will likely bring forth further innovations, reinforcing the synergy between data storage and environmental sustainability.[2]

Case Studies and Success Stories

Real-world case studies underscore the tangible successes of organizations that have embraced energy- efficient practices in their cloud computing infrastructures. One notable example is Google, which has committed to achieving carbon-neutral status and has implemented numerous strategies to reduce its environmental impact. Google optimized its data center cooling systems, invested in renewable energy projects, and utilized advanced machine learning algorithms for more efficient resource allocation. These initiatives resulted in substantial energy savings and a reduced carbon footprint. Similarly, Microsoft has embarked on an ambitious sustainability journey. The company not only aims to be carbon-negative by 2030 but also plans to remove its historical carbon emissions by 2050. Microsoft's data centers utilize re- newable energy sources, and the company actively engages in carbon offset projects. The implementation of circular data center designs, which focus on recycling and repurposing waste heat, further contributes to their sustainable practices. However, these organizations faced challenges in their pursuit of energy efficiency. One common obstacle is the initial capital investment required for upgrading infrastructure and adopting green technologies. Overcoming resistance to change within organizational culture and addressing potential disruptions during the transition also presented hurdles. Lessons learned include the importance of a comprehensive approach, involving both hardware and software optimizations, and the need for ongoing monitoring and adjustments. These case studies highlight that successful energy- efficient practices require a holistic strategy, a commitment to innovation, and a long-term vision. While challenges exist, the positive environmental and economic outcomes demonstrate the feasibility and ben- efits of integrating sustainability into cloud computing infrastructure. As more organizations share their experiences, the collective knowledge gained will further propel the industry towards a more sustainable future.[11, 8]

3. Optimizing the Digital Landscape

Virtualization Advances

Hypervisor tech has leveled up! We now have super-efficient virtualization solutions with lightweight hypervisors. These smart technologies minimize the work, boost performance, and save energy. Ever heard of nested virtualization? It’s like virtual machines inside virtual machines – a cool trick for testing and development. This method optimizes resources, uses hardware wisely, and makes virtual systems more flexible. And there’s more – enter GPU virtualization. Think graphics-heavy tasks like gaming. By using virtual GPUs, we can make games smoother in the cloud. But it’s not just for fun; it helps speed up science stuff, machine learning, and other heavy tasks in virtual environments. These virtualization strategies are like power-ups, making our virtual world more efficient, flexible, and powerful![18, 24]

Containerization and Serverless Computing

In the dynamic landscape of modern computing, the synergy between Containerization and Serverless Computing introduces transformative paradigms. Container Orchestration, exemplified by popular tools like Kubernetes, takes center stage in efficiently managing and scaling applications. This orchestration not only enhances resource optimization but also contributes to energy efficiency within cloud environ- ments. On the other front, Serverless Architectures redefine resource utilization by dynamically allocating resources based on demand, potentially leading to substantial energy savings. As part of this paradigm shift, Microservices Architecture collaborates seamlessly with containerization, enabling the creation of scalable and modular applications. The beauty lies in microservices allowing individual components to scale independently, fostering better resource utilization and adaptability in the ever-evolving digital landscape[7, 21]

Server Consolidation and Electronic Waste Management

In the realm of Server Consolidation and Electronic Waste Management, dynamic server consolidation strategies play a pivotal role by efficiently consolidating workloads onto a reduced number of servers during periods of low demand. This not only enhances energy efficiency but also enables the judicious use of server resources by placing unused servers in a low-power state, minimizing unnecessary energy consumption. Lifecycle management emerges as a key player in curbing electronic waste, emphasizing responsible practices like refurbishing, recycling, and proper disposal of outdated hardware. By adopting circular economy practices within cloud computing infrastructure, the concept of refurbishing and reusing hardware components gains prominence, contributing significantly to the overarching goal of sustainability and reducing the environmental impact of decommissioned equipment.[10]

4. Sustainability Insights: Green Cloud Computing's Lifecycle, Eco-Designs, Cooling, and Power Efficiency

Lifecycle Assessment and Circular Economy Principles

The adoption of lifecycle assessment methodologies and circular economy principles will become integral to evaluating and improving the environmental sustainability of cloud computing. Lifecycle assessments consider the environmental impact of a product or service across its entire lifecycle, from manufacturing to end-of-life disposal. By applying these assessments to cloud infrastructure, organizations can identify areas for improvement, implement eco-friendly practices, and contribute to the development of a circular economy. This approach involves designing systems with recyclability and resource recovery in mind, minimizing waste, and promoting the reuse of components.[17, 4]

Eco-Friendly Data Center Designs

Eco-friendly data centers are like superheroes in the tech world, fighting for a greener planet. They use renewable energy sources like sunlight and wind power, showing us how to reduce our carbon footprint. Imagine building blocks that can grow as needed – that's what modular designs do for data centers, making them scalable and energy-efficient. These centers also choose sustainable materials when being built, minimizing their impact on the environment. And when it comes to the tech inside, they pick energy-saving hardware, like efficient servers and storage, following guidelines to ensure they're as eco- friendly as possible. By putting all these pieces together, these data centers are not just tech hubs; they're champions of a cleaner, greener future.[25, 23]

Cooling Systems and Power Management Protocols

Cooling systems and power management play pivotal roles in shaping the sustainability of data centers. The effectiveness of advanced cooling technologies, including liquid cooling and free-cooling systems, is assessed for their ability to reduce energy consumption in temperature regulation. This evaluation delves into the trade-offs associated with different cooling methods, emphasizing the need for energy-efficient and environmentally conscious approaches. The optimization of Power Usage Effectiveness (PUE) takes center stage as a key metric, with discussions on strategies like using ambient air for cooling and implementing dynamic power management protocols. Additionally, the section underscores the significance of energy- aware load balancing in optimizing resource utilization and minimizing the demand for excessive cooling, thereby contributing to enhanced energy efficiency and reduced greenhouse gas emissions in data center operations.[26]

5. Future Trends and Innovations

Edge Computing

- **Emerging Technology:** Edge computing involves processing data closer to the source, reducing the need for extensive data transfers to centralized cloud servers.
- **Impact on Sustainability:** Edge computing can lead to reduced energy consumption and lower latency, contributing to more efficient and sustainable operations.

Renewable Energy Integration

- **Emerging Technology:** Advancements in integrating renewable energy sources directly into cloud infrastructure.
- **Impact on Sustainability:** Increased reliance on renewable energy helps data centers reduce their carbon footprint and reliance on traditional power sources.

AI and Machine Learning for Optimization

- **Emerging Technology:** Implementing artificial intelligence (AI) and machine learning (ML) algo- rithms for optimizing resource usage, workload distribution, and energy efficiency.
- **Impact on Sustainability:** Smart algorithms can dynamically adjust resources, leading to improved efficiency and reduced energy consumption in cloud environments.

Sustainable Cooling Technologies

- **Emerging Technology:** Development of eco-friendly and energy-efficient cooling solutions for data centers.
- **Impact on Sustainability:** Adoption of sustainable cooling technologies minimizes the environmental impact associated with traditional cooling systems, contributing to overall energy efficiency.

Blockchain for Environmental Transparency

- **Emerging Technology:** Utilizing blockchain to enhance transparency and traceability of environ- mental practices in cloud computing.
- **Impact on Sustainability:** Blockchain ensures accurate reporting of sustainability metrics and pro- motes accountability throughout the supply chain.

Green Certifications for Cloud Providers

- **Emerging Trend:** Increasing demand for cloud service providers to obtain and showcase green certifications for their data centers.
- **Impact on Sustainability:** Organizations prioritize environmentally responsible cloud providers, fostering a competitive market that incentivizes sustainability efforts.

Circular Economy in IT Hardware

- **Emerging Trend:** Transition towards a circular economy model, focusing on the refurbishment, recycling, and repurposing of IT hardware.
- **Impact on Sustainability:** Reducing electronic waste and promoting the reuse of components con- tributes to a more sustainable IT ecosystem.

Water Conservation in Data Centers

- **Emerging Trend:** Innovations in water usage efficiency within data centers, especially in cooling systems.
- **Impact on Sustainability:** Reduced water consumption in data center operations helps address water scarcity issues and aligns with sustainable practices.

Quantum Computing for Energy Optimization

- **Emerging Technology:** Developments in quantum computing for solving complex optimization prob- lems related to energy usage.
- **Impact on Sustainability:** Quantum computing can provide solutions for optimizing energy-intensive processes, enhancing overall sustainability in cloud computing.

Decentralized and Peer-to-Peer Cloud Architectures

- **Emerging Trend:** Exploration of decentralized cloud architectures and peer-to-peer computing mod- els.
- **Impact on Sustainability:** Reducing reliance on centralized data centers can distribute workloads more efficiently, potentially lowering energy consumption and improving sustainability.

Carbon Pricing and Accountability

- **Emerging Trend:** Increasing adoption of carbon pricing mechanisms within the cloud computing industry.
- **Impact on Sustainability:** Carbon pricing encourages organizations to be accountable for their carbon emissions, driving a more conscious approach to sustainability.

Regulatory Shifts towards Green IT

- **Emerging Trend:** Anticipation of stricter regulations and standards focusing on the environmental impact of IT operations.
- **Impact on Sustainability:** Regulatory measures drive organizations to adopt greener practices, contributing to a more sustainable IT industry.

As these emerging technologies and trends continue to evolve, their integration into the realm of green cloud computing is expected to have a profound impact on sustainability, energy efficiency, and overall environmental responsibility within the IT sector.[14, 12, 1, 5, 16, 6]

6. Forward Momentum: Challenges and Barriers in the Landscape of Green Cloud Computing

The widespread adoption of green cloud computing faces multifaceted challenges and barriers that require strategic solutions for successful integration. Financial concerns surrounding the perceived high initial costs can be mitigated through innovations in renewable energy technologies and financial incentives. A lack of awareness and education about the environmental impact of traditional IT practices necessi- tates comprehensive educational campaigns and training programs. Challenges related to infrastructure compatibility can be addressed through gradual migration strategies and modular upgrades. Data se- curity concerns demand continuous advancements in security protocols specific to green cloud services. Overcoming limited access to renewable energy sources requires investment in localized projects and collaborations with energy providers. Reliability and performance concerns can be alleviated through on- going technological advancements. Establishing universally accepted standards for measuring green cloud practices is critical for industry-wide adoption, necessitating collaboration among stakeholders. Insuffi- cient investment in research and development can be tackled through increased funding and public-private partnerships. Concerns about vendor lock-in can be mitigated through the adoption of open standards, and policy and regulatory uncertainties require advocacy for clearer and consistent frameworks. Resis- tance to change within organizations necessitates effective change management strategies and transparent communication. Collectively, these solutions pave the way for the integration of green cloud computing, fostering a sustainable and environmentally responsible IT landscape.[22]

7. Conclusion

As we navigate the green horizon of cloud computing, it’s evident that sustainable practices are becom- ing increasingly essential for the future of digital infrastructure. Energy-efficient data centers, renewable energy integration, edge and fog computing, green data storage, and successful case studies demonstrate the tangible benefits of adopting green cloud computing strategies. The journey doesn’t end here; it evolves with emerging technologies and future trends. Quantum computing, AI-driven resource manage- ment, energy-aware networking, hybrid and multi-cloud strategies, and a focus on lifecycle assessment and circular economy principles are poised to shape the next phase of sustainable cloud computing.

The challenges are real, but so are the opportunities. The collective efforts of individuals, organi- zations, and the technology community can drive innovation, overcome obstacles, and create a more sustainable and resilient digital future. As we continue to explore the possibilities of green cloud comput- ing, let's embrace the responsibility to build a world where technology and environmental stewardship coexist harmoniously.

Acknowledgements

We extend our profound gratitude to the esteemed KIT management, our distinguished Director, Prof. Brajesh Varshney, for their invaluable and gracious support.

References

[1] Ahmed H. A. Al-Jumaili, Yousif I. A. Mashhadany, Raad Sulaiman, and Zahraa A. A. Alyasseri. A conceptual and systematics for intelligent power management system-based cloud computing: Prospects, and challenges. *Applied Sciences*, 11(21):9820, 2021.

[2] Mohammed A. Albreem, Adnan M. Sheikh, Mohammed H. Alsharif, Mohd Jusoh, and Mohd Nizam Mohd Yasin. Green internet of things (giot): Applications, practices, awareness, and challenges. *IEEE Access*, 9:38833–38858, 2021.

[3] Sanjay Bharany, Sunil Badotra, Sanchika Sharma, Shipra Rani, Mamoun Alazab, Riddhi H. Jhaveri, and Trupti R. Gadekallu. Energy efficient fault tolerance techniques in green cloud computing: A systematic survey and taxonomy. *Sustainable Energy Technologies and Assessments*, 53:102613, 2022.

[4] Alessio M. Ferrari, Luca Volpi, Davide Settembre-Blundo, and Fernando E. Garc´ıa-Muiña. Dynamic life cycle assessment (lca) integrating life cycle inventory (lci) and enterprise resource planning (erp) in an industry 4.0 environment. *Journal of Cleaner Production*, 286:125314, 2021.

[5] Annarita Giani and Zachary Eldredge. Quantum computing opportunities in renewable energy. *SN Computer Science*, 2(5):393, 2021.

[6] Mona Bakri Hassan, Elmustafa Sayed Ali Ahmed, and Rashid A. Saeed. Green machine learn- ing approaches for cloud-based communications. In *Green Machine Learning Protocols for Future Communication Networks*, pages 129–160. CRC Press, 2024.

[7] R. F. Hussain, M. A. Salehi, and O. Semiari. Serverless edge computing for green oil and gas industry. In *2019 IEEE Green Technologies Conference (GreenTech)*, pages 1–4, Lafayette, LA, USA, 2019.

[8] Sarah Jones, Zahir Irani, Uthayasankar Sivarajah, et al. Risks and rewards of cloud computing in the uk public sector: A reflection on three organisational case studies. *Information Systems Frontiers*, 21:359–382, 2019.

[9] David C. Klonoff. Fog computing and edge computing architectures for processing data from diabetes devices connected to the medical internet of things. *Journal of Diabetes Science and Technology*, 11(4):647–652, 2017.

[10] Saurabh Kumar and Rajkumar Buyya. Green cloud computing and environmental sustainability. In

[11] *Harnessing Green IT: Principles and Practices*, pages 315–339. 2012.

[12] Vikas Kumar and P. Vidhyalakshmi. Cloud computing for business sustainability. *Asia-Pacific Journal of Management Research and Innovation*, 8(4):461–474, 2012.

[13] Aiswarya Mohanty, Swati Lipsa, and Ranjan Kumar Dash. Green cloud computing: Current trends and future prospects for intelligent computing environments. *TechRxiv*, July 2023. Preprint.

[14] Sanjib Kumar Nayak, Sanjaya Kumar Panda, and Satyabrata Das. Renewable energy-based resource management in cloud computing: A review. In *Advances in Distributed Computing and Machine Learning: Proceedings of ICADCML 2020*, pages 45–56, 2020.

[15] Archana Patil and Patil Rekha. An analysis report on green cloud: Current trends and future research challenges. 2020. Unpublished manuscript.

[16] S. G. Paul et al. A comprehensive review of green computing: Past, present, and future research.

[17] *IEEE Access*, 11:87445–87494, 2023.

[18] Saeed Saberi, Morteza Kouhizadeh, Joseph Sarkis, and Lian Shen. Blockchain technology and its relationships to sustainable supply chain management. *International Journal of Production Research*, 57(7):2117–2135, 2019.

[19] Rejean Samson, Mohamed Cherriet, Yves Lemieux, Kim Nguyen, Reza Farrahi Moghaddam, Thomas

Dandres, and Emmanuelle Maurice. Modelling of electricity mix in temporal differentiated life-cycle-assessment to minimize carbon footprint of a cloud computing service. *Advances in Computer Science Research*, 2:290–298, 2014.

[20] F. Shakeel and S. Sharma. Green cloud computing: A review on efficiency of data centres and virtualization of servers. In *2017 International Conference on Computing, Communication and Automation (ICCCA)*, pages 1264–1267, Greater Noida, India, 2017.

[21] S. P. Singh, A. Nayyar, R. Kumar, et al. Fog computing: From architecture to edge computing and big data processing. *Journal of Supercomputing*, 75:2070–2105, 2019.

[22] Sneha, Pawan Singh, and Vibhakar Tripathi. Green cloud computing: Achieving sustainability through energy-efficient techniques, architectures, and addressing research challenges. In *Interna- tional Conference on Paradigms of Communication, Computing and Data Analytics*, pages 97–105, Singapore, April 2023. Springer Nature Singapore.

[23] Babak Soltani, Ahmed Ghenai, and Nabil Zeghib. Towards distributed containerized serverless architecture in multi-cloud environment. *Procedia Computer Science*, 134:121–128, 2018.

[24] Xiaohong Tang. Reliability-aware cost-efficient scientific workflows scheduling strategy on multi- cloud systems. *IEEE Transactions on Cloud Computing*, 10(4):2909–2919, 2021.

[25] Amir Varasteh and Maziar Goudarzi. Server consolidation techniques in virtualized data centers: A survey. *IEEE Systems Journal*, 11(2):772–783, 2015.

[26] J. K. Verma, S. Kumar, Omprakash Kaiwartya, Yue Cao, Jaime Lloret, Channappa P. Katti, and Rupak Kharel. Enabling green computing in cloud environments: Network virtualization approach toward 5g support. *Transactions on Emerging Telecommunications Technologies*, 29(11):e3434, 2018.

[27] Jie Yang, Wenjun Xiao, Chong Jiang, Mohammad S. Hossain, Ghufran Muhammad, and Shajalal U. Amin. Ai-powered green cloud and data center. *IEEE Access*, 7:4195–4203, 2019.

[28] Andrew J. Younge, Gregor Von Laszewski, Lizhe Wang, Salvador Lopez-Alarcon, and Wesley Carithers. Efficient resource management for cloud computing environments. In *International Con- ference on Green Computing*, pages 357–364. IEEE, August 2010.

Artificial Intelligence and Ethics in the Workplace: Impact on Job Security

Raghav Bajpai*
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur Nagar, India.

Priyanka Gupta
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur Nagar, India.

***Corresponding Author**
Raghav Bajpai
Email Id: 233193@kit.ac.in

ABSTRACT

This paper explores the intricate relationship between artificial intelligence (AI) and workplace ethics, emphasizing the consequential effects on job security. In the era of widespread AI adoption, there is a critical need to assess the ethical dimensions of these technologies and their impact on job stability. The study synthesizes diverse literature, including scholarly articles, industry reports, and ethical frameworks, to unravel the complexities of AI integration in the workplace. Key considerations such as job displacement, algorithmic bias, transparency, and the responsibilities of AI stakeholders are examined. The paper also delves into emerging best practices, regulatory frameworks, and ethical guidelines, highlighting the importance of a proactive approach to AI and ethics in ensuring a safe and fair employment environment.

Keywords: Artificial Intelligence (AI), Workplace Ethics, Job Security, Automation.

1. Introduction

The symbiotic relationship between artificial intelligence (AI) and workplace ethics takes center stage in this exploration, with a laser focus on the profound repercussions for job security. In an era where the tendrils of AI are rapidly entwining with diverse industries, a meticulous examination of the ethical dimensions governing these technologies becomes imperative, particularly concerning their potential im- pact on the bedrock of employment – job stability. This study undertakes a comprehensive synthesis of a diverse tapestry of literature, encompassing scholarly articles, industry reports, and ethical frameworks, to unravel the intricacies of the ethical considerations arising from the seamless integration of artificial intelligence in the workplace.

Navigating the Ethical Landscape of AI Integration

Job Displacement: As AI becomes a cornerstone in the workplace, how does this integration reshape traditional employment structures and what implications does it hold for job security?

Algorithmic Bias: Delving into the core of AI algorithms, this study questions their ability to ensure fairness or, conversely, perpetuate biases that might impact the diversity of the workforce.

Transparency: Unveiling the veil of decision-making processes within AI, the exploration scrutinizes whether transparency is a requisite for employees to comprehend and trust these automated systems.

Responsibilities of AI Stakeholders: In this intricate dance, who shoulders the ethical responsibility – the developers, the employers orchestrating AI integration, or the policymakers framing its rules? Beyond immediate concerns, this exploration transcends the present, delving into the lasting ethical implications of automation. It specifically trains its lens on job security, career development, and the holistic well- being of the workforce. The study extends its purview to the dynamic landscape of workplace ethics, parsing through emerging best practices, regulatory frameworks, and evolving ethical guidelines in the realm of artificial intelligence.

A Call for Proactive Ethical AI Governance: In conclusion, this study reverberates a clarion call for a proactive approach to the amalgamation of artificial intelligence and ethics within the workplace. It not only underscores the importance of supporting the ethical evolution of artificial intelligence but also advocates for transparency as a cornerstone and the implementation of responsible deployment practices. This paper is more than a scholarly endeavor; it is a compass for researchers, policymakers, and industry professionals navigating the intricate interplay between artificial intelligence, workplace ethics, and its enduring impact on job security. Looking ahead, the contours of job security will be shaped by dynamic skill development, a robust ethical AI governance framework, and the collaborative integration of hu- man and AI capabilities, ensuring adaptability and the responsible deployment of these transformative technologies in the workplace [19, 4, 3].

Figure 1: AI Impact: Navigating Career Stability

Before delving into the complexities of AI and its ethical implications, let's establish a foundational understanding of key terms:

- **a. Artificial Intelligence (AI):** AI involves the development of computer systems capable of tasks requiring human intelligence, such as learning, reasoning, problem-solving, perception, and language understanding.

b. **Ethics in AI:** This field addresses the moral and societal implications of AI technologies, en- compassing considerations like fairness, transparency, accountability, and the broader impact on individuals and society.
c. **Job Displacement:** Occurring when AI and automation lead to the elimination or transformation of certain job roles, job displacement raises concerns about the stability of employment in affected industries.
d. **Algorithmic Bias:** This refers to the presence of discriminatory outcomes in AI systems, often stemming from biases in the training data. It can lead to unfair and inequitable results, particularly in employment-related decisions.
e. **Transparency in AI:** Involving the making of AI decision-making processes understandable and explainable, transparency contributes to building trust among users and stakeholders.
f. **Stakeholders in AI:** AI stakeholders include developers creating AI systems, employers integrating AI in the workplace, and policymakers shaping rules and regulations governing AI technologies.

Now equipped with this basic knowledge, we can explore the nuanced dimensions of AI and workplace ethics, focusing on their impact on job security.

2. Navigating the Ethical Landscape of AI Integration

Job Displacement

As artificial intelligence (AI) continues to integrate into the workplace, one of the paramount concerns is the phenomenon of job displacement.[11] The evolving landscape of automation and intelligent systems poses a significant challenge to traditional employment structures. Several key aspects are crucial in understanding the intricate dynamics of job displacement within the context of AI:

a. **Scope of Automation:** The scope of automation extends across various industries, from man- ufacturing to service sectors. Studies reviewed emphasize that routine and repetitive tasks are particularly susceptible to automation, leading to a shift in the nature of available jobs.

   Impact on Traditional Roles: The deployment of AI technologies raises questions about the future of traditional job roles.The automation of routine tasks in customer service through AI, such as chatbots and voice recognition, streamlines efficiency but displaces jobs in traditional roles. Agents must adapt, focusing on complex interactions, requiring reskilling for a workforce that balances human expertise with AI-driven tools [25, 16, 7].

b. **Skill Mismatch and Training:** In the evolving landscape of artificial intelligence (AI) integration in the workplace, the prevalence of skill mismatch has become a critical concern. As automation and

   AI technologies reshape job requirements, workers often face displacement due to a misalignment between their existing skills and the emerging demands. To address this challenge, effective training initiatives are paramount. Tailored training programs empower individuals to acquire the necessary competencies, fostering adaptability and resilience.

This section delves into the dynamics of skill mismatch, emphasizing the pivotal role of strategic training measures in mitigating job displacement and ensuring workforce preparedness for the AI-driven future.

c. **Policy Implications:** Policy implications stemming from the intersection of artificial intelligence (AI) and workforce dynamics are multifaceted. Crafting policies that address skill mismatches and job displacement is crucial. Emphasizing the importance of accessible and robust training programs within policy frameworks is essential. Additionally, policies should promote continuous learning, reskilling, and upskilling initiatives to align the workforce with evolving technological demands. Striking a balance between technological advancement and ethical considerations, such policies can foster a resilient workforce, mitigate social inequalities, and facilitate a smoother transition into an AI-driven future[14, 15, 17].

d. **Global and Sectoral Variances:** The impact of job displacement varies across different regions and sectors. While some regions may experience more pronounced effects, others may witness a gradual transformation. Likewise, certain sectors may face more significant disruptions than others[8].

In summary, the discourse on job displacement intertwines with the broader conversation on the ethical implications of AI in the workplace. Acknowledging the multifaceted nature of this challenge is imperative for formulating effective strategies that balance technological advancements with societal well-being.

Algorithmic Bias

Within the realm of artificial intelligence (AI) in the workplace, algorithmic bias emerges as a critical concern, underscoring the ethical dimensions of intelligent systems[26]. As organizations increasingly rely on AI algorithms for decision-making, the potential for bias in these algorithms raises complex questions. The examination of algorithmic bias encompasses various facets:

a. **Definition and Manifestations:** Algorithmic bias refers to the presence of discriminatory out- comes in AI systems that disproportionately impact certain individuals or groups. The literature reviewed sheds light on different manifestations of bias, ranging from subtle preferences to more overt forms of discrimination.
b. **Training Data Challenges:** One of the primary sources of algorithmic bias lies in the training data used to develop AI models. Studies emphasize that biased training data can perpetuate and even amplify existing societal biases, leading to unfair and inequitable outcomes in employment- related decisions.
c. **Fairness Metrics and Evaluation:** Fairness metrics and evaluation are essential components in assessing the ethical implications of artificial intelligence (AI) systems. These metrics gauge the impartiality and equitable treatment of diverse individuals within AI applications. Common fairness metrics include disparate impact analysis, equalized odds, and demographic parity. Evaluation involves scrutinizing AI models for biases and discriminatory outcomes across various demographic groups. Implementing rigorous fairness assessments ensures AI systems uphold ethical standards and mitigate potential harm.

d. **Explanability and Accountability:** Ensuring transparency and accountability in AI decision- making processes is crucial for addressing algorithmic bias. The literature underscores the need for explainable AI, allowing stakeholders to understand how algorithms arrive at specific decisions and facilitating the identification and rectification of biased patterns.
e. **Diversity in AI Development:** Promoting diversity in AI development teams is recognized as a key strategy to mitigate algorithmic bias. The lack of diversity in these teams can contribute to blind spots and oversights in addressing potential biases, emphasizing the importance of inclusive practices.

f. **Regulatory Considerations:** The evolving landscape of AI ethics involves discussions about reg- ulatory frameworks to address algorithmic bias. Scholars argue for the development of policies that hold organizations accountable for the ethical implications of their AI systems.
   In conclusion, navigating the complexities of algorithmic bias requires a multifaceted approach, encompassing technological, ethical, and regulatory dimensions. Recognizing and rectifying biases in AI systems is fundamental to fostering fair and inclusive workplaces in the age of intelligent automation.
g. **Transparency:** The ethical dimensions of AI integration extend to the transparency of decision- making processes within automated systems. Achieving transparency is imperative for building trust among employees and stakeholders, as the ”black-box” nature of complex algorithms can lead to skepticism and apprehension.

Scholarly discussions delve into methodologies and technologies that enhance transparency in AI systems[13]. Explainable AI (XAI) techniques have emerged as a critical area of research, aiming to pro- vide interpretable insights into the decision-making mechanisms of complex algorithms. Research in this domain explores how transparency initiatives can empower employees to better comprehend AI-driven decisions, fostering a sense of trust and confidence in the technology.

Transparency in AI extends beyond technical considerations to encompass organizational policies and communication strategies. Ethical guidelines advocate for clear communication regarding the roles and limitations of AI in the workplace. Moreover, ongoing efforts to demystify AI technologies through edu- cational initiatives contribute to a more informed workforce capable of navigating the ethical implications of automation.

Responsibilities of AI Stakeholders

The integration of artificial intelligence (AI) in the workplace introduces a complex web of ethical respon- sibilities that must be shouldered by various stakeholders, including developers, employers orchestrating AI integration, and policymakers framing its rules. This section delves into the multifaceted nature of these responsibilities and their profound implications for ensuring the ethical deployment of AI technolo- gies.

a. **Developers’ Ethical Imperatives:** Developers’ ethical imperatives encompass a responsibility to ensure the ethical design, development, and deployment of technologies. This includes prioritizing user privacy, transparency, and minimizing biases in AI algorithms. Developers must consider the broader societal impact of their creations, striving to enhance accessibility, accountability, and fairness within the technological landscape. Upholding these ethical imperatives contributes to building trust, fostering responsible innovation, and mitigating potential harms associated with emerging technologies.

b. **Employers' Role in Ethical AI Integration:** Employers play a pivotal role in ethical AI integration by establishing a framework that prioritizes responsible practices. This includes fostering a culture of transparency, ensuring fair treatment, and addressing potential biases in AI systems. Employers should invest in employee training, emphasizing the ethical use of AI and the importance of data privacy. By incorporating ethical considerations into decision-making processes, employers contribute to a work environment that aligns with societal values and promotes responsible AI implementation.
c. **Policymakers and Ethical Frameworks:** Governments and policymakers contribute to the ethical governance of AI by formulating regulatory frameworks and guidelines. Research in this domain scrutinizes existing policies, identifies gaps, and proposes recommendations for creating comprehensive regulatory frameworks that balance innovation with ethical considerations.

Studies delve into the challenges of crafting policies that are adaptive to the rapid evolution of AI technologies. Policymakers are urged to collaborate with industry experts, researchers, and ethicists to develop agile frameworks capable of addressing emerging ethical issues. Moreover, research emphasizes the need for global collaboration to harmonize AI ethics across borders and prevent ethical loopholes in

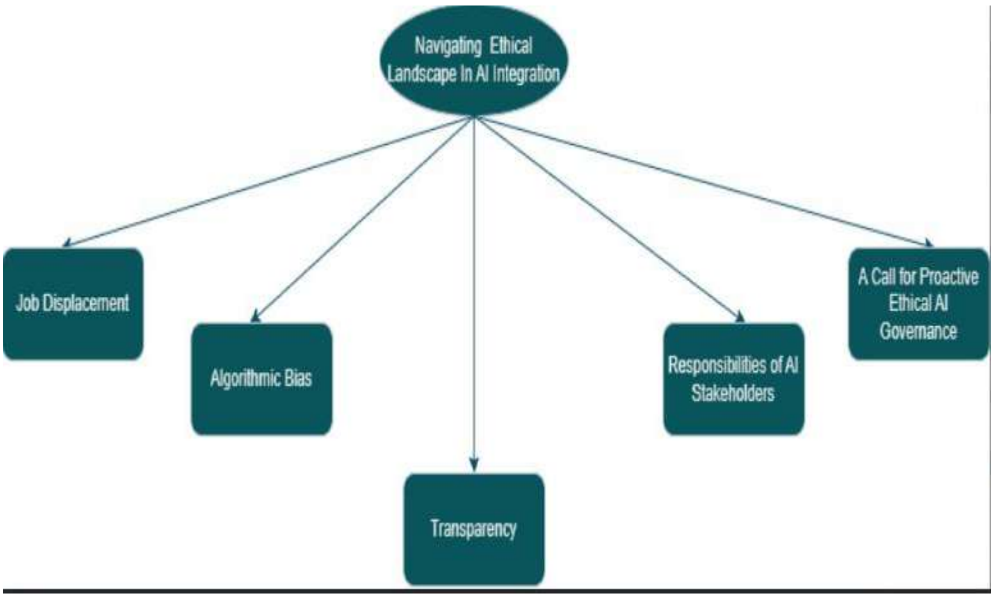

Figure 2: Exploring the Ethical Terrain of Integrating AI the absence of unified standards.

This exploration of the responsibilities of AI stakeholders sheds light on the interconnected nature of their roles. Establishing a collective commitment to ethical AI practices requires ongoing collaboration, a commitment to continuous learning, and a shared vision for creating a workplace environment that upholds the principles of fairness, accountability, and transparency.

A Call for Proactive Ethical AI Governance

As artificial intelligence (AI) continues to advance, there is an urgent call for proactive ethical AI gov- ernance. The rapid proliferation of AI technologies brings with it a range of societal, ethical, and legal considerations that necessitate careful oversight.[6] Proactive governance entails establishing comprehen- sive frameworks that address issues such as bias mitigation, transparency, and accountability.

To meet this imperative, regulatory bodies, industry stakeholders, and policymakers must collaborate to formulate and enforce ethical guidelines for AI development and deployment. This governance should prioritize fairness in algorithmic decision-making, safeguarding user privacy, and ensuring transparency in AI systems' functionality.

Furthermore, proactive ethical AI governance should encompass ongoing monitoring and adaptation to emerging challenges. Periodic assessments and audits of AI systems can help identify and rectify biases, ensuring that technological advancements align with societal values.

Ultimately, a proactive approach to ethical AI governance not only mitigates potential risks and harms but also fosters public trust in AI technologies. By integrating ethical considerations into the fabric of AI development from the outset, we pave the way for responsible innovation that benefits individuals, organizations, and society as a whole.

3. Ethical Considerations

The integration of artificial intelligence (AI) into the workplace brings forth a myriad of ethical con- siderations that warrant careful examination. As organizations increasingly embrace AI technologies, it becomes imperative to navigate the ethical landscape surrounding their implementation. This section delves into key ethical considerations arising from the seamless integration of AI in the workplace.[9, 23, 1, 2, 21, 20, 10]

a. **Algorithmic Bias:** One prominent ethical concern revolves around algorithmic bias. AI algorithms, designed to make decisions autonomously, can inadvertently perpetuate biases present in the data on which they are trained. This raises questions about fairness and equality within the workforce. Understanding and addressing algorithmic bias are crucial steps towards fostering a diverse and inclusive workplace[20].
b. **Transparency in Decision-Making:** The opacity of AI decision-making processes poses another ethical challenge. As AI systems make decisions that impact individuals within the organization, the lack of transparency can lead to uncertainty and mistrust. Exploring mechanisms to enhance transparency in how AI arrives at decisions becomes paramount, empowering employees to comprehend and trust the automated systems they interact with[18].
c. **Responsibilities of AI Stakeholders:** The intricate dance of ethical responsibility unfolds among various stakeholders in the AI ecosystem. Developers, employers orchestrating AI integration, and policymakers framing the rules each play a role in shaping the ethical landscape. Determining clear lines of responsibility and accountability becomes essential to ensure ethical considerations are prioritized at every stage of AI deployment.

In navigating these ethical considerations, organizations must adopt a proactive approach. This involves not only identifying potential ethical challenges but also actively implementing measures to address and mitigate them. As the ethical dimensions of AI continue to evolve, organizations that prioritize these considerations contribute to creating a workplace environment that aligns with values of fairness, transparency, and responsible AI governance.

4. Automation and Job Security

The integration of artificial intelligence (AI) in the workplace, marked by automation, introduces a transformative shift in the traditional employment landscape. This section focuses on the multifaceted relationship between automation and job security, exploring both immediate concerns and enduring implications.[24, 22, 5, 12]

Immediate Concerns: Job Displacement

As AI technologies automate routine tasks, concerns arise regarding job displacement. The rapid evolution of automation technologies has the potential to reshape traditional employment structures, rendering cer- tain roles redundant. Addressing the immediate impact on job security requires a nuanced understanding of how automation affects different industries and occupations.

Algorithmic Decision-Making: Challenges and Opportunities

The automation of decision-making processes through algorithms introduces both challenges and op- portunities. While algorithms can enhance efficiency and accuracy, their deployment may also lead to uncertainties about job security. Examining the impact of algorithmic decision-making on different job categories provides insights into potential challenges and avenues for mitigating adverse effects.

a. **Career Development in the Era of Automation**
   Amidst concerns about job displacement, the role of automation in shaping career development becomes a focal point. Organizations and policymakers need to devise strategies that facilitate dynamic skill development and reskilling programs. By fostering adaptability and promoting con- tinuous learning, the workforce can navigate the evolving landscape of automation and secure long-term career development.
b. **Enduring Implications: Beyond Job Displacement**
   Looking beyond immediate concerns, this section delves into the enduring implications of automa- tion on job security. It explores the potential shift in the nature of work, the emergence of new job categories, and the overall well-being of the workforce in a highly automated environment.

In conclusion, understanding the intricate dynamics between automation and job security requires a comprehensive examination of both immediate concerns and enduring implications. By proac- tively addressing challenges related to job displacement, algorithmic decision-making, and career development, organizations can navigate the trans-formative impact of automation while fostering a secure and sustainable work environment.

5. Conclusion and Future Pathways for Research and Policy

The exploration of the intricate relationship between artificial intelligence (AI) and workplace ethics, with a focus on the consequential effects on job security, has uncovered a landscape rich with challenges and opportunities. As we navigate the complexities of ethical considerations and the transformative im- pact of automation, several key conclusions emerge.Synthesis of Ethical Dimensions The synthesis of diverse literature, including scholarly articles, industry reports, and ethical frameworks, has provided a comprehensive understanding of the ethical dimensions surrounding AI in the workplace. From job displacement to algorithmic bias and transparency, this study has delved into the nuanced aspects that demand attention in the ethical discourse.Dynamic Nature of Job Security Job security, in the con- text of AI integration and automation, is dynamic and multifaceted. The immediate concerns of job displacement require adaptive strategies, including reskilling and upskilling programs. However, the en- during implications of automation extend beyond displacement, shaping the very nature of work and the skills demanded in the evolving job market.A Proactive Ethical AI Governance Framework The call for a proactive approach to ethical AI governance echoes throughout this study. Recognizing the shared responsibility of developers, employers, and policymakers, this paper advocates for transparent practices and responsible deployment. The integration of ethical considerations into the development and deployment of AI technologies is essential for fostering a safer and fairer employment environment.Future Pathways for Research and Policy As we conclude this study, it sets the stage for future research and policy considerations. The evolving landscape of workplace ethics and AI demands ongoing exploration. Researchers, policymakers, and industry professionals are encouraged to delve deeper into emerging best practices, regulatory frameworks, and ethical guidelines to ensure the responsible integration of AI in the workplace.In the future, the contours of job security will be shaped by dynamic skill development, robust ethical AI governance, and collaborative human-AI integration. This study serves not only as a reflection of the present challenges but as a guide for navigating the complex interplay between artificial intelligence, workplace ethics, and the lasting impact on job security.

Acknowledgments

We extend our profound gratitude to the esteemed KIT management, our distinguished Director, Prof. Brajesh Varshney, for their invaluable and gracious.support.

References

[1] M. Anderson and S. L. Anderson. *Machine Ethics*. Cambridge University Press, Cambridge, UK, 2011.
[2] P. Boddington. *Towards a Code of Ethics for Artificial Intelligence*. Springer, Berlin/Heidelberg, Germany, 2017.
[3] N. Bostrom. *Superintelligence: Paths, Dangers, Strategies*. Oxford University Press, Oxford, UK, 2014.
[4] M. Brown and P. Davis. Job security in the era of artificial intelligence: An ethical perspective.
[5] *Ethics in Technology and Management*, 2019.
[6] E. Brynjolfsson and A. McAfee. *The Second Machine Age: Work, Progress, and Prosperity in a Time of Brilliant Technologies*. W. W. Norton and Company, New York, NY, USA, 2014.
[7] M. Castelluccio. Opening a window on government ai. *Strategic Finance*, 2020.
[8] F. Chiusi. Automating society report 2020. Technical report, 2020.
[9] T. H. Davenport and R. Ronanki. Artificial intelligence for the real world. *Harvard Business Review*, 2018.
[10] A. Etzioni and O. Etzioni. Incorporating ethics into artificial intelligence. *J. Ethics*, 21:403–418, 2017.

[11] European Commission. Ethics guidelines for trustworthy ai. Technical report, 2019.
[12] Osborne Frey, C.B. Future of employment: How susceptible are jobs to computerization? techno- logical forecasting social change. pages 114, 254–280, 2017.
[13] A. Gopani. Rakuten's lata iyer on ai for human empowerment. 2022. Magazine or Online Source.
[14] D. Gunning. Explainable artificial intelligence (xai). Technical report, DARPA, Arlington, TX, USA, 2017.
[15] International Social Security Association (ISSA). Applying emerging technologies in social security summary report 2017–2019. Technical report, 2019.
[16] International Social Security Association (ISSA). Artificial intelligence in social security: Background and experiences. Technical report, 2020.
[17] International Social Security Association (ISSA). The application of chatbots in social security: Experiences from latin america. Technical report, 2021.
[18] International Social Security Association (ISSA). Data-driven innovation in social security: Good practices from asia and the pacific. Technical report, 2022.
[19] S. Kalenka and N. R. Jennings. Socially responsible decision making by autonomous agents. In
[20] *Cognition, Agency and Rationality*. Springer, Berlin/Heidelberg, Germany, 1999.
[21] S. Kim and H. Lee. Ai, automation, and job security: An interdisciplinary analysis. *International Journal of Human-Computer Interaction*, 2018.
[22] B. D. Mittelstadt, P. Allo, M. Taddeo, and S. Wachter. The ethics of algorithms: Mapping the debate. *Big Data Soc.*, 3(2), 2016.

[23] A. Ress´eguier and R. Rodrigues. Ai ethics should not remain toothless! a call to bring back the teeth of ethics. *Big Data Soc.*, 2020.
[24] S. Russell and P. Norvig. *Artificial Intelligence: A Modern Approach*. Prentice Hall, Upper Saddle River, NJ, USA, 2010.
[25] K. Siau and W. Wang. Artificial intelligence (ai) ethics: Ethics of ai and ethical ai. *J. Database Manag.*, 31:74–87, 2020.
[26] M. Tegmark. *Life 3.0: Being Human in the Age of Artificial Intelligence*. Vintage, New York, NY, USA, 2017.
[27] H. J. Wilson, P. Daugherty, and N. Bianzino. The jobs that artificial intelligence will create. *MIT Sloan Manag. Rev.*, 58, 2017.
[28] R. V. Yampolskiy. Taxonomy of pathways to dangerous artificial intelligence. In *Proceedings of the Workshops at the Thirtieth AAAI Conference on Artificial Intelligence*, Phoenix, AZ, USA, 2016.

Improving the Efficiency of Cloud Computing with Dynamic Load Balancing Techniques

Sanjay Singh
Department of Computer Applications
Kanpur Institute of Technology
Rooma, Kanpur.
Email Id: sanjaysinghg2u@gmail.com

Aman Singh
Department of Computer Applications
Kanpur Institute of Technology
Rooma, Kanpur.
Email Id:amansinghgour58@gmail.com

Nilesh Kumar*
Department of Computer Applications
Kanpur Institute of Technology
Rooma, Kanpur.

***Corresponding Author**
Nilesh Kumar
Email Id: nileshzad2017@gmail.com

ABSTRACT

Cloud computing has revolutionized the IT landscape, offering scalable and on-demand resources. However, the efficient allocation and management of these resources remain critical. This re- search delves into the significance of load balancing techniques in optimizing resource utilization and enhancing overall system performance within cloud computing environments. This study employs a comprehensive analysis of various load balancing algorithms, including Round Robin, Weighted Round Robin, Least Connection, and Dynamic Load Balancing. A simulation envi- ronment is created using industry-standard cloud platforms to evaluate the performance of these algorithms under varying workloads and network conditions. The results demonstrate that dy- namic load balancing strategies exhibit superior performance in distributing incoming traffic across cloud servers, effectively mitigating bottlenecks and reducing response times. Through simulations and statistical analysis, it is observed that adaptive load balancing algorithms adapt swiftly to workload changes, ensuring optimal resource utilization and minimizing latency.

Keywords: cloud computing, optimization, performance, load balancing.

1. Introduction

A network or the internet are referred to as clouds. Put otherwise, a cloud is something that exists at a remote location. Cloud computing can be accessed by WAN, LAN, or VPN, among other public and private networks. Cloud-based software [10, 1] is used to run applications like email, online conferencing, and customer relationship management (CRM).

We can access software as utilities over the Internet thanks to cloud computing. It enables online application creation, configuration, and customization. Reconfiguring, modifying, and remotely accessing hardware and software resources is referred to as cloud computing. It provides applications, infrastructure, and online data storage. Platform independence is provided by cloud computing because no local PC program instal- lation is necessary. Our corporate apps are becoming more collaborative and mobile thanks to cloud computing. Cloud computing has taken the world by storm, letting organizations access a flexible pool of resources to deploy and manage applications. But with great power comes great responsibility, and that responsibility is keeping things running smoothly - especially as demand constantly fluctuates. Enter dynamic load balancing, the superhero of the cloud world. Unlike its static cousin, stuck in a rigid routine, dynamic load balancing is all about flexibility and real-time adjustments.

- **Adaptability:** Continuously monitoring servers and workload changes, it redistributes tasks like a master juggler, preventing any one server from feeling overwhelmed.
- **Resource Efficiency:** This agility minimizes idle resources, leading to cost savings and a sustainable, happy planet.
- **High Availability:** By quickly responding to uneven workloads or server hiccups, it ensures users see a smooth, uninterrupted experience, even when things get tough.
- Different dynamic load balancing techniques bring their own flavor to the party:
- **Predictive Load Balancing:** Like a fortune teller with algorithms, it analyzes past data to predict future workload and prepare servers accordingly.
- **Reactive Load Balancing:** A quick-footed ninja, it reacts to real-time changes, shifting tasks on the fly to maintain balance.
- **Hybrid Approaches:** Blending prediction and reaction, these are the versatile chefs, ready for any situation.

Ultimately, dynamic load balancing is the key to a thriving cloud environment. It keeps the servers in rhythm, resources optimized, and users satisfied, paving the way for a smooth and scalable future for cloud computing.

Cloud computing has revolutionized the IT landscape, offering organizations unparalleled scalability, flexibility, and cost-effectiveness. As we migrate our resources to this virtual sea, maximizing their utilization becomes paramount. However, a hidden monster lurks beneath the surface - the unpredictable nature of workloads. Applications experience ebbs and flows of demand, creating constant fluctuations in system load. This dynamism, once a charming cloud feature, can quickly morph into a resource-hungry kraken, wreaking havoc on performance and costs.

Enter the savior: dynamic load balancing. This powerful technique plays Robin Hood in the cloud, redistributing computational tasks across multiple servers or resources like a seasoned juggler. Its goal? To maintain a delicate equilibrium, ensuring each server carries its fair share of the workload, minimizing response times, and preventing any one server from becoming a monstrous bottleneck.

Think of it this way: imagine our cloud application as a bustling city. During rush hour, traffic jams become unbearable, productivity plummets, and everyone gets grumpy. Static load balancing, akin to one-way streets, may temporarily alleviate the immediate jam, but it simply pushes the congestion elsewhere. Dynamic load balancing, however, acts like a dynamic traffic management system, rerouting requests in real-time to avoid congested areas and distribute the flow smoothly. The result? A city humming with optimal efficiency, where everyone reaches their destination faster and happier.

But taming the cloud's dynamism isn't a one-size-fits-all game. Different applications have different traffic patterns and needs. A static website with predictable surges can be managed with simpler algorithms, while a complex e-commerce platform juggling spikes and lulls needs a more sophisticated approach. This is where the adaptive nature of dynamic load balancing shines. By continuously monitoring server health, performance metrics, and traffic patterns, it learns and adapts its algorithms, constantly fine-tuning its balancing act to match the ever- changing demands of the application.

2. Deployment Model

Cloud Deployment Model functions 2 as a virtual computing environment with a deployment architecture that varies depending on the amount of data you want to store and who has access to the infrastructure. The cloud deployment model identifies the specific type of cloud environment based on ownership, scale, and access, as well as the cloud's nature and purpose. The location of the servers you're utilizing and who controls them are defined by a cloud deployment model. It specifies how your cloud infrastructure will look, what you can change, and whether you will be given services or will have to create everything yourself. Relationships between the infrastructure and your users are also defined by cloud deployment types. Different types of cloud computing deployment models are described below.

It specify how the cloud is located and what kind of access is possible. Any of the four access types—public, private, hybrid, and community—can be applied to the cloud.

Cloud computing has become a major player in the rapidly changing technological scene, completely chang- ing how businesses allocate and manage their computer resources. A new era of scalability, flexibility, and cost-efficiency has been ushered in by this paradigm change, enabling enterprises to fully utilize the promise of virtualized systems [1, 10]. But just as cloud computing popularity keeps rising, so does the difficulty of effectively managing resources. The dynamic nature of workloads in the cloud is one of the main issues that businesses face. System load fluctuates as a result of changes in the demand for computational resources throughout time. Because of its dynamic and unpredictable nature, cloud deployments are less efficient and require sophisticated tactics to ensure optimal resource utilization.

Cloud computing deployment models vary in terms of benefits and things to keep in mind. Public clouds are appropriate for a wide range of applications due to their scalability, affordability, and accessibility. Private clouds accommodate enterprises with particular compliance requirements by offering improved control, security, and customisation. With the flexibility and optimization that hybrid clouds provide, businesses may combine the advantages of public and private settings. Community clouds help a particular set of groups with similar goals to work together and share resources.

The business goals of the organization, the legal environment, and the makeup of its workloads all play a role in the deployment model selection. Businesses frequently use a multi-cloud approach, utilizing various deployment models for various objectives. This method offers a comprehensive and customized solution to satisfy the various computing requirements of contemporary enterprises.

New deployment models and techniques may appear as technology develops, which will have an additional im- pact on how businesses plan for and handle their cloud computing infrastructure. The development of deployment models is a reflection of the continuous endeavor to achieve equilibrium among scalability, control, security, and affordability in the swiftly evolving field of cloud computing. In the end, an organization’s deployment model selection has a significant impact on how its overall IT strategy is shaped and how it uses cloud computing to spur innovation and accomplish business goals.

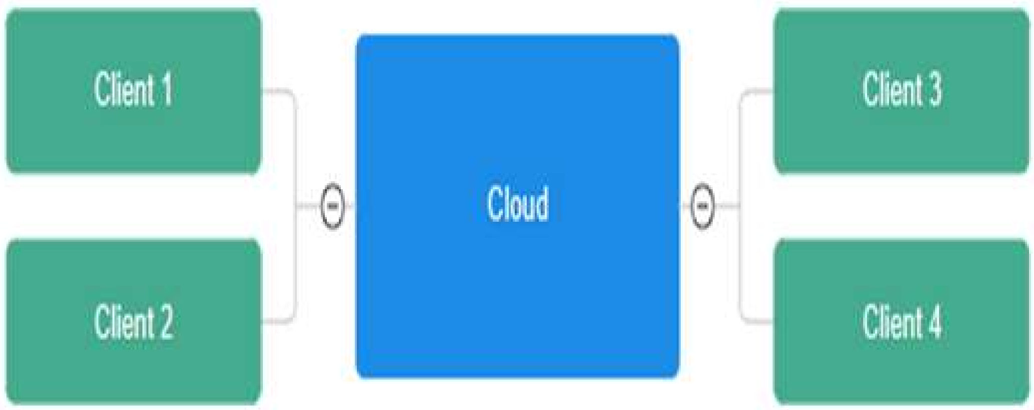

Figure 1: *Public Cloud*

Public Cloud

One of the most significant developments in the history of enterprise computing is the emergence and uptake of public cloud services. A public cloud is a kind of cloud computing where users can access computer resources via the public Internet from a third-party service provider. These resources can range from individual virtual machines (VMs) to fully functional enterprise-grade infrastructures and development platforms. These resources may be freely available, or access may be charged for using them in accordance with pay-per-use or subscrip- tion arrangements. Users workloads are hosted in data centers owned and managed by the public cloud provider. High-bandwidth network connectivity is provided by service providers, who also take care of all hardware and infrastructure maintenance to guarantee quick access to data and applications. The virtualization software is man- aged by the cloud provider as well. When it comes to computing, the public cloud model is essentially the same as the ”utility” model that everyone of us uses in our homes to utilize water or electricity. The original cloud model of services accessed over the Internet and the private cloud model are referred to as the “public cloud” and ”private cloud,” respectively. Cloud Carnival: Shared Resources, Endless Possibilities

The IT landscape has donned a new mask, one woven from the vibrant threads of public cloud computing. This transformative force has swept across organizations, revolutionizing how they deploy, manage, and scale their computing resources. Imagine a bustling fairground, not of cotton candy and Ferris wheels, but of virtual machines, storage tents, and application booths. This is the public cloud, where third-party vendors play the ringmasters, offering their resources to all and sundry.

What are these wondrous offerings? Think virtual machines, storage lockers big enough for digital dragons, and pre-built applications ready to play. This buffet of resources – known as Infrastructure as a Service (IaaS), Platform as a Service (PaaS), and Software as a Service (SaaS) – caters to every taste, from building your own IT rollercoaster to simply enjoying a pre-made Ferris wheel ride.

The allure of the public cloud lies in its accessibility. No more lugging around your own hardware, no more setting up and maintaining your own IT infrastructure. This ”pay-as-you-play” model keeps costs down, especially when compared to the hefty price tag of a private carnival (your own on-premises infrastructure). And forget about juggling peak hours and sleepy afternoons – the public cloud’s elasticity lets you add resources for the crowd rush and scale back down when the fair winds down.

But what about security? Don’t worry, the ringmasters take this seriously. Encryption locks protect your data, bouncers in the form of identity and access controls keep unwanted guests out, and network security firewalls stand tall against digital intruders. Of course, you should still be mindful of your own actions, using best practices to keep your booth secure.

Collaboration thrives in this shared space. Teams scattered across the globe can access their resources from anywhere, anytime, making remote work a breeze. And for global businesses, Content Delivery Networks act as teleport booths, delivering resources with lightning speed, ensuring a smooth experience for all visitors.

So, is the public cloud a perfect paradise? Not quite. Data sovereignty can be a tricky tightrope walk, and compliance regulations might put up some hoops to jump through. Vendor lock-in can feel like a sticky candy floss situation, and keeping track of your cloud spending can be as challenging as navigating a labyrinth of mirror mazes.

Despite these hiccups, the public cloud offers an irresistible array of possibilities. It’s a scalable playground, a cost-effective haven, and an accessible stage for collaboration. As technology evolves, the public cloud will likely become the center ring of the future IT landscape, where organizations can spin their wheels of innovation and soar on the wings of agility. So, step into the public cloud carnival, embrace the shared resources, and unleash your IT dreams under the endless possibilities it offers.

Services like IaaS, PaaS, and SaaS are offered via public clouds. A public cloud service, like all other cloud services, is operated by a provider on distant servers. Clients of such supplier use the Internet to obtain those services.

Private Cloud

A private cloud is a cloud infrastructure that is run just for one business. Private clouds are often housed on-site, behind the firewall of the client business, however they can also be hosted on third-party equipment or on specialized cloud providers. The client company has isolated, exclusive access to the infrastructure in both scenarios. By offering more control over resources, data security, and regulatory compliance, as well as avoiding the possible performance and security consequences of sharing resources with another cloud client, private cloud computing enables an organization to benefit from cloud efficiencies. A private cloud is a cloud service that is not shared with any other organization. The private cloud user has the cloud to themselves. By contrast, a public cloud is a cloud service that shares computing services among different customers, even though each customer's data and applications running in the cloud remain hidden from other cloud customers. A public cloud is like renting an apartment, while a private cloud is like renting a similarly sized house. The house is more private, but it also typically costs more to rent, and it's not the most efficient use of resources. Maintenance in the apartment is handled by the building supervisor, but it's harder to get a contractor out to fix the house (sometimes, the tenant may have to do it themselves). The Private Cloud: Your Own Fortress in the IT Sky.

Picture a virtual sanctuary in the IT realm, a castle carved from code and secured with encryption moats. This is the private cloud, where organizations reign supreme over their data and applications, free from the bustling crowds of public clouds. Unlike a shared fairground, the private cloud is your own exclusive playground, meticulously crafted to meet your specific needs and security demands.

Here, virtual machines hum like loyal knights, storage vaults guard your digital treasures, and applications fly your banners high. This dedicated kingdom offers unrivaled control – no jostling for resources, no prying eyes on your data. It's a haven for sensitive industries like finance and healthcare, where compliance reigns and sovereignty matters.

Security takes center stage in this private enclave. You craft the locks, tailor the access controls, and wield the encryption shield. Gone are the worries of shared resources and potential breaches. This sovereign land allows you to implement bespoke security measures, transforming your digital walls into an impenetrable fortress.

But customization isn't just about security. This malleable domain lets you sculpt your infrastructure to your specific needs. Choose your hardware champions, your storage squires, and the networking architecture that best suits your digital landscape. It's like building your own IT kingdom, brick by code block, ensuring every element reflects your unique vision.

The private cloud, though not as infinitely scalable as the public realm, still lets you adjust on the fly. When workloads surge, your resources can expand vertically, adding more towers to your castle. And when things quiet down, you can scale back horizontally, sending some knights on leave. This adaptability ensures your IT realm always matches your kingdom's ever-evolving demands.

But venturing into this private realm doesn't have to mean building everything from scratch. You can choose to host your kingdom within your own data center walls, where you command every nook and cranny. This on- premises approach gives you ultimate control, like a king ruling from his throne room. It's ideal for those who value absolute sovereignty and meticulous control over their digital domain.

However, not every organization wants the responsibility of maintaining their own castle. Enter the hosted private cloud – your kingdom managed by skilled IT mercenaries. You still rule the land, dictating how your resources are used and secured. But the day-to-day upkeep falls to your trusted advisors, freeing you to focus on your core quests.

Automation and orchestration become your loyal lieutenants in this private realm. They handle the mundane tasks, provisioning resources, scaling your kingdom, and managing the daily grind. This frees your digital knights to focus on higher pursuits, optimizing utilization and responding swiftly to changing demands.

Integrating your private cloud with your existing IT infrastructure is like building a bridge between your old and new lands. Seamlessly connect your virtual castle to your on-premises servers, storage vaults, and network highways. This ensures a smooth transition, allowing you to leverage your existing investments while embracing the agility of the cloud.

Of course, every kingdom carries a cost. Building and maintaining your own private cloud requires significant upfront investments in hardware, software, and the skilled knights to keep it running. Carefully assess your needs and weigh the benefits of control against the potential initial burden. But for those who value security, customization, and absolute sovereignty, the private cloud offers a kingdom worth building, a secure and adaptable realm where your IT dreams can truly take flight.

There are hosted private clouds, which are offered by a third party cloud provider, and internal private clouds, which are managed and maintained by an organization internally.

Hybrid Cloud

One of the most significant developments in the history of enterprise computing is the emergence and uptake of public cloud services. A public cloud is a kind of cloud computing where users can access computer resources via the public Internet from a third-party service provider. These resources can range from individual virtual machines (VMs) to fully functional enterprise-grade infrastructures and development platforms. These resources may be freely available, or access may be charged for using them in accordance with pay-per-use or subscrip- tion arrangements. Users workloads are hosted in data centers owned and managed by the public cloud provider. High-bandwidth network connectivity is provided by service providers, who also take care of all hardware and infrastructure maintenance to guarantee quick access to data and applications. The virtualization software is man- aged by the cloud provider as well. When it comes to computing, the public cloud model is essentially the same as the ”utility” model that everyone of us uses in our homes to utilize water or electricity. The original cloud model of services accessed over the Internet and the private cloud model are referred to as the ”public cloud” and ”private cloud,” respectively. Imagine an IT orchestra, not confined to a single stage, but playing across three vibrant plat- forms: your own private concert hall, a bustling public amphitheater, and a hybrid open-air stage that blends them both. This, my friend, is the magic of hybrid cloud computing. It's where agility and security tango, cost whispers sweet nothings to scalability, and flexibility conducts the entire performance.

This hybrid cloud isn't about rigid boundaries. It's a seamless flow of data and workloads, weaving between your on-premises servers, your private cloud fortress, and the vast resources of the public domain. Need to keep sensitive data close? Tuck it safely in your private vault. Bursting with seasonal demand? Public cloud resources scale up on cue, like an encore performance filling the amphitheater.

Interoperability is the star conductor in this orchestra. Data pirouettes effortlessly between environments, ap- plications harmonize across platforms, and workloads adapt to the rhythm of your business needs. This fluidity lets you optimize resources like a seasoned maestro, allocating tasks where they shine brightest – public cloud agility for fleeting trends, private cloud control for sensitive melodies, and the on-premises stage for your timeless classics.

But security never takes a backseat. Encryption acts as a soundproof booth, protecting sensitive data as it travels between venues. Identity and access controls are the bouncers, ensuring only authorized guests get backstage. And network security firewalls stand tall, guarding against digital intruders. Remember, security is a shared responsi- bility, so keep your own practices tight even in the shared public space.

Hybrid cloud whispers sweet nothings of cost-effectiveness. Public cloud resources scale up for peak seasons, then gracefully scale down, minimizing idle charges. Your private cloud handles mission-critical pieces, keeping sensitive data off the public stage. This mindful orchestration helps you optimize your TCO, balancing performance with financial harmony.

Disaster recovery? Hybrid cloud has you covered. Critical workloads can seamlessly waltz between environ- ments, ensuring the show goes on even if one stage falters. It's like having a backup band ready to step in, keeping your business humming amidst disruptions.

Industries with fluctuating rhythms, like retail during holiday seasons or finance during reporting periods, find their groove in the hybrid cloud. Scale up for the crescendo, and scale down for the lull, all without missing a beat. This agility ensures you're always prepared for the next musical phrase, your IT infrastructure as dynamic as your business needs.

Don't worry if your IT infrastructure has its own legacy instruments. Hybrid cloud welcomes them all, integrat- ing seamlessly with existing on-premises systems, applications, and databases. It's not about throwing away the old sheet music; it's about expanding the orchestra, adding new instruments that enrich the melody.

Hybrid cloud computing isn't just a technological marvel; it's a philosophy. It's about embracing flexibility, optimizing resources, and building an IT infrastructure that dances to the tune of your business needs. So, step onto the hybrid stage, raise your digital baton, and conduct your IT orchestra to a resounding success. The future of IT is not about choosing one venue; it's about mastering the harmony of them all, and hybrid cloud is the maestro that makes it possible.

Services like IaaS, PaaS, and SaaS are offered via public clouds. A public cloud service, like all other cloud services, is operated by a provider on distant servers. Clients of such supplier use the Internet to obtain those services.

Community Cloud

One of the most significant developments in the history of enterprise computing is the emergence and uptake of public cloud services. A public cloud is a kind of cloud computing where users can access computer resources via the public Internet from a third-party service provider. These resources can range from individual virtual machines (VMs) to fully functional enterprise-grade infrastructures and development platforms. These resources may be freely available, or access may be charged for using them in accordance with pay-per-use or subscrip- tion arrangements. Users workloads are hosted in data centers owned and managed by the public cloud provider. High-bandwidth network connectivity is provided by service providers, who also take care of all hardware and infrastructure maintenance to guarantee quick access to data and applications. The virtualization software is man- aged by the cloud provider as well. When it comes to computing, the public cloud model is essentially the same as the ”utility” model that everyone of us uses in our homes to utilize water or electricity. The original cloud model of services accessed over the Internet and the private cloud model are referred to as the “public cloud” and “private cloud,” respectively. The Community Cloud: Sharing the IT Stage, Not the Spotlight Imagine a bustling IT theater, not filled with competing players, but with collaborative acts sharing the stage. This, my friend, is the community cloud, where organizations with shared passions orchestrate their IT needs in harmony. Unlike public clouds, open to all, and private clouds, a solitary show, community clouds cater to spe- cific groups – think healthcare clinics united by HIPAA, research labs pooling resources, or government agencies singing from the same compliance sheet music.

The magic lies in collaboration. This shared stage facilitates resource pooling, letting organizations join forces like a chorus, tackling joint projects and benefiting from a collectively managed environment. Research institutions can share data and analytical tools, healthcare providers can collaborate securely on patient care, and government agencies can ensure information exchange without compromising critical regulations.

But security isn’t lost in the crowd. Unlike the public spotlight, community clouds offer stricter access control and a higher level of control over data, making compliance paramount. Think of it as a backstage security team, ensuring sensitive information stays within the trusted group. Regulatory hurdles become easier to navigate as everyone adheres to the same standards, likeHIPAA serenading healthcare data.

Customization is another perk. This shared stage is no one-size-fits-all affair. Each member organization can fine-tune the infrastructure, applications, and services to their unique needs, like tweaking the lighting for their individual act. This flexibility accommodates the diverse needs of different industries within the community, ensuring everyone gets the microphone that suits their voice.

Governance is the conductor of this collaborative symphony. Member organizations work together to set the rules, from service agreements to security protocols, ensuring everyone plays in harmony. This shared respon- sibility ensures the community cloud aligns with the collective interests of its members, resolving disputes and maintaining a cohesive performance.

Scalability is a key feature. As the community grows or evolves, the cloud infrastructure can adapt, like dynam- ically adjusting the stage size. This lets organizations cope with changing workloads, technological advancements, and business dynamics, always ensuring everyone has a space to shine [12].

Cost-sharing is the sweet melody behind community cloud. Imagine dividing the cost of renting the IT theater – that's the benefit of pooling resources. Member organizations achieve cost efficiencies compared to private solo performances, making this model attractive for those seeking cloud benefits without breaking the bank.

Technology plays a supporting role. Virtualization and containerization act like scene changes, separating and optimizing resource allocation [3]. Automation tools act as stagehands, streamlining management and orches- trating tasks within the cloud. These cutting-edge advancements enhance agility, performance, and the overall effectiveness of the community cloud.

Challenges exist, like any theatrical production. Collaboration and governance require finesse, balancing diverse needs and ensuring equitable resource allocation. Security and compliance require meticulous attention, keeping the regulatory spotlight at bay. Infrastructure and management need to be robust, guaranteeing high availability and a smooth performance.

But just like a captivating theater production, the benefits of community cloud surpass the challenges. By fostering collaboration, customization, and shared governance, community clouds empower organizations to excel on the IT stage, sharing resources, adhering to regulations, and achieving cost-efficiencies – all while harmonizing their unique needs in a collaborative performance. So, raise the curtain on your specific community cloud, step onto the shared stage, and let your IT orchestra play its unique melody in perfect harmony.
Services like IaaS, PaaS, and SaaS are offered via public clouds. A public cloud service, like all other cloud services, is operated by a provider on distant servers. Clients of such supplier use the Internet to obtain those services.

3. Load Balancing Algorithm

Cloud load balancing algorithms [1, 10] are essential parts of cloud computing infrastructures that are made to effectively [6] split up computational effort or incoming network traffic among several servers or resources. These algorithms are essential for maximizing the use of available resources, improving system performance [11, 7], and guaranteeing high service availability. There are several load balancing algorithms available, and each takes a different approach to deciding how to divide up incoming requests. One popular technique is Round Robin, which ensures a fair load distribution by distributing traffic among servers in a round fashion [13, 14, 5]. The goal of the Least Connections algorithm is to balance the load depending on current utilization by sending requests to the server that has the fewest active connections. Round Weighted By allowing servers to be given varying weights according to their capacities, Robin can route more traffic to servers with larger capacities. Dynamic algorithms [4, 16, 18], such Least Response Time or Least Busy, adjust to the current demand and server response times in real time. The workloads and application characteristics determine which load balancing algorithm is best. In cloud environments, fault tolerance, scalability, and optimal performance all depend on the choice of load balancing algorithm [9].

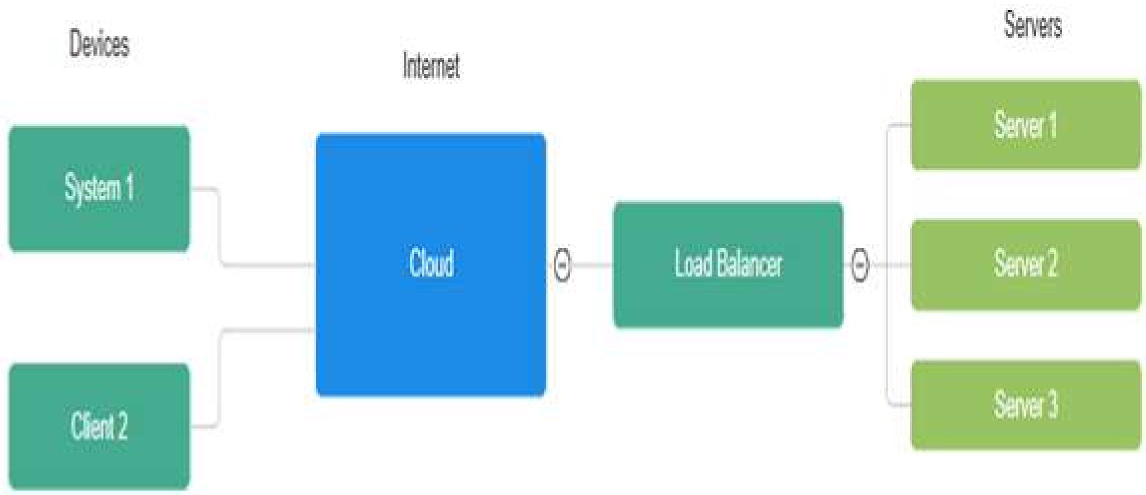

Figure 2: *Load Balancing*

In cloud computing, load balancing algorithms act as crucial traffic directors, ensuring optimal resource usage, peak performance, and unwavering service availability [15, 8]. They intelligently distribute incoming tasks and network traffic across multiple servers, preventing bottlenecks and maximizing efficiency. Here's a glimpse at common algorithms [17, 2]:

- **Round Robin:** Like a fair playground, it assigns requests to servers in a rotating sequence, ensuring balanced workload distribution.
- **Least Connections:** This algorithm favors the server with the least active connections, sending new requests to the least congested route.
- **Weighted Round Robin:** It accommodates servers with varying capacities by assigning weights. Servers with higher weights receive a larger portion of requests, ensuring optimal utilization.
- **Least Response Time:** Always on the lookout for the fastest server, this algorithm directs requests to the one with the shortest response time, optimizing overall performance.
- **Least Busy:** Similar to Least Connections, it monitors server workloads and directs requests to the server currently handling the fewest tasks, promoting even distribution.
- The choice of algorithm depends on factors like application needs, workload characteristics, and infrastructure design. Selecting the right algorithm is essential for achieving a cloud environment that's not only performant and scalable but also resilient to faults, ensuring seamless user experiences.

4. Conclusion and Future Scope

Finally, one critical tactic for greatly increasing the effectiveness of cloud computing systems is the deployment of dynamic load balancing mechanisms. These methods reduce response times, maximize resource utilization, and strengthen cloud infrastructures overall by dynamically allocating computing workloads among available re- sources. Algorithmic load balancing in conjunction with constant monitoring and prediction of system demands guarantee that computer resources are distributed wisely, avoiding bottlenecks and optimizing performance. Fur- thermore, adding capabilities like task migration, horizontal scaling, and QoS-aware load balancing adds another level of flexibility and responsiveness to changing workloads. Cloud environments are more resilient and reliable due to the pursuit of fault tolerance, redundancy, and the smooth integration of elastic load balancing. These dynamic load balancing approaches are still essential for meeting the increasing demands of contemporary appli- cations and services as cloud computing develops, guaranteeing a scalable, effective, and high-performing cloud infrastructure.

Acknowledgement

We extend our profound gratitude to the esteemed KIT management, our distinguished Director, Prof. Brajesh Varshney, and our guiding mentor, Dr. Priyanka Gupta, for their invaluable and gracious support.

References

[1] Mohammed Ala'Anzy and Mohamed Othman. *Load balancing and server consolidation in cloud computing environments: a meta-study*, volume 7. IEEE, 2019.

[2] Abhay Bhadani and Sanjay Chaudhary. Performance evaluation of web servers using central load balancing policy over virtual machines on cloud. In *Proceedings of the Third Annual ACM Bangalore Conference*, COMPUTE '10, New York, NY, USA, 2010. Association for Computing Machinery.

[3] Rajkumar Buyya, Rajiv Ranjan, and Rodrigo N Calheiros. Intercloud: Utility-oriented federation of cloud computing environments for scaling of application services. In *Algorithms and Architectures for Parallel Processing: 10th International Conference, ICA3PP 2010, Busan, Korea, May 21-23, 2010. Proceedings. Part I 10*, pages 13–31. Springer, 2010.

[4] Trieu C. Chieu, Ajay Mohindra, Alexei A. Karve, and Alla Segal. Dynamic scaling of web applications in a virtualized cloud computing environment. In *2009 IEEE International Conference on e-Business Engineer- ing*, pages 281–286, 2009.

[5] D Chitra Devi, V Rhymend Uthariaraj, et al. Load balancing in cloud computing environment using improved weighted round robin algorithm for nonpreemptive dependent tasks. *The scientific world journal*, 2016, 2016.

[6] Shridhar G. Domanal and G. Ram Mohana Reddy. Optimal load balancing in cloud computing by efficient utilization of virtual machines. In *2014 Sixth International Conference on Communication Systems and Networks (COMSNETS)*, pages 1–4, 2014.

[7] Fatemeh Ebadifard and Seyed Morteza Babamir. A pso-based task scheduling algorithm improved using a load-balancing technique for the cloud computing environment. *Concurrency and Computation: Practice and Experience*, 30(12):e4368, 2018.

[8] Jinhua Hu, Jianhua Gu, Guofei Sun, and Tianhai Zhao. A scheduling strategy on load balancing of vir- tual machine resources in cloud computing environment. In *2010 3rd International Symposium on Parallel Architectures, Algorithms and Programming*, pages 89–96, 2010.

[9] Jasmin James and Bhupendra Verma. Efficient vm load balancing algorithm for a cloud computing environ- ment. *International Journal on Computer Science and Engineering*, 4(9):1658, 2012.

[10] A. Khiyaita, H. El Bakkali, M. Zbakh, and Dafir El Kettani. Load balancing cloud computing: State of art. In *2012 National Days of Network Security and Systems*, pages 106–109, 2012.

[11] A Khiyaita, H El Bakkali, M Zbakh, and Dafir El Kettani. Load balancing cloud computing: state of art.

[12] *2012 National Days of Network Security and Systems*, pages 106–109, 2012.

[13] Antti P Miettinen and Jukka K Nurminen. Energy efficiency of mobile clients in cloud computing. In *2nd USENIX workshop on hot topics in cloud computing (HotCloud 10)*, 2010.

[14] Alireza Sadeghi Milani and Nima Jafari Navimipour. Load balancing mechanisms and techniques in the cloud environments: Systematic literature review and future trends. *Journal of Network and Computer Applications*, 71:86–98, 2016.

[15] V Priya, C Sathiya Kumar, and Ramani Kannan. Resource scheduling algorithm with load balancing for cloud service provisioning. *Applied Soft Computing*, 76:416–424, 2019.

[16] Martin Randles, David Lamb, and A. Taleb-Bendiab. A comparative study into distributed load balancing algorithms for cloud computing. In *2010 IEEE 24th International Conference on Advanced Information Networking and Applications Workshops*, pages 551–556, 2010.

[17] Aameek Singh, Madhukar Korupolu, and Dushmanta Mohapatra. Server-storage virtualization: Integration and load balancing in data centers. In *SC '08: Proceedings of the 2008 ACM/IEEE Conference on Supercom- puting*, pages 1–12, 2008.

[18] Shu-Ching Wang, Kuo-Qin Yan, Wen-Pin Liao, and Shun-Sheng Wang. Towards a load balancing in a three- level cloud computing network. In *2010 3rd International Conference on Computer Science and Information Technology*, volume 1, pages 108–113, 2010.

[19] Qingsong Wei, Bharadwaj Veeravalli, Bozhao Gong, Lingfang Zeng, and Dan Feng. Cdrm: A cost-effective dynamic replication management scheme for cloud storage cluster. In *2010 IEEE International Conference on Cluster Computing*, pages 188–196, 2010.

Review Paper on Automatic Systems to Control Home Appliances

Swastik Yadav
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Siddharth Yadav
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Mr. Bipin Gupta*
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Mr. Kaushal Kishor
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

***Corresponding Author**
Mr. Bipin Gupta
Email Id: Bipin.gupta@kit.ac.in

ABSTRACT

One of the most effective and efficient technologies that is gaining importance nowadays is “Home Automation System” or “Smart Home System". This article is fully based on low cost, reliable and efficient home control and monitoring systems. Home automation helps in enhancing the standard of living by decreasing human efforts and improves the security level of homes and workplace. This technology has evolved because of the advancement of electronics, wireless connectivity and automated sensors. Some of the major developments are due to the establishment of stable connections between home appliances and wireless technologies. The major cause of this evolution is due to the development of Android, up gradation of Wi-Fi module and proliferation of Bluetooth technology. These systems generally consist of Android mobile, Arduino Uno board and Wi-Fi module and relay circuit. Nowadays, Wi-Fi technology is being used because of its accuracy. This article will help in understanding the working and implementation of different technologies used in home automation, scope of development and how to enhance its area of application.

Keywords: Automation, Android, Wi-Fi module, Arduino Uno Board.

1. Introduction

Human life has become very busy and congested and all the daily work consumes a lot of human effort, time and energy. To reduce these efforts and time various research has been done and new technologies are introduced to us. Today this paper is about one of these technologies, the one which is to make our lives easier, comfortable and saves a lot of time. This technology is termed as "Home Automation". This technology has evolved due to the vision that "How wonderful one's life will be if a person has control of all home appliances in his pocket". [1] User can easily operate their devices anytime, from anyplace. This will be wonderful, indeed! But this is no longer a vision it became today's reality. This is only possible due to the home automation system.

User can easily operate their devices anytime, from anyplace. This will be wonderful, indeed! But this is no longer a vision it became today's reality. This is only possible due to the home automation system. A home automation system refers to allowing the end users to control, manage and handle electric home appliances. If we look over time, home automation has become very efficient. Regardless of change of users need, there is quite a little change in home automation system in terms of appearance.

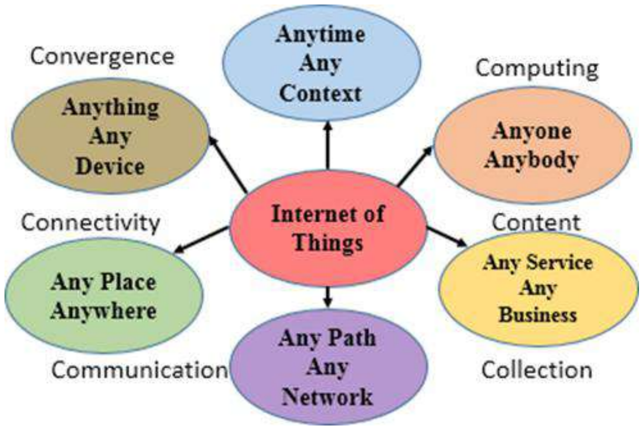

Figure 1: Application Aria of IOT in Automation

2. Different Methods for Home Automation

2.1. Bluetooth Based Home Automation System

High level C language of microcontrollers is mainly used for programming of this board; the connection is made via Bluetooth [2]. A password protection feature is also a part of such a system so that only authenticated users have access to this system. This Bluetooth connection acts as a link so the user can easily check the status of the device with his phone. The best part of using Bluetooth is that it can be coupled with multiple other products with the same connectivity feature.

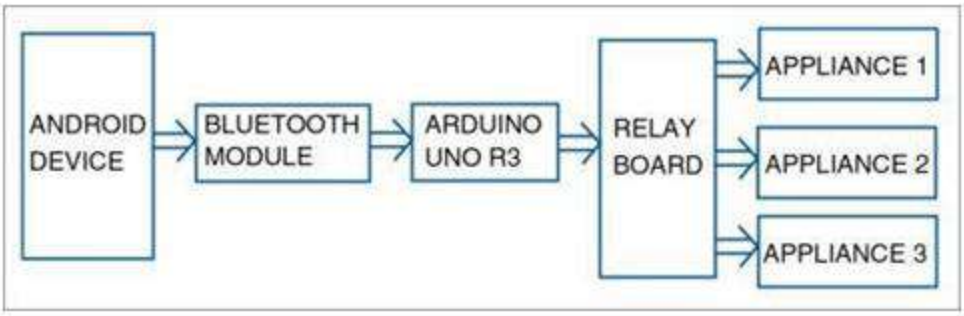

Figure 2.1: Working of Bluetooth Based Home Automation.

2.2.Wi-Fi Based Home Automation System

In these systems, for connectivity between server, hardware and interface module, Wi-Fi technology is used. This technology is also used in making logins to server-based applications.[3] The server is directly connected to the internet, due to which remote users can easily access server-based applications with the help of compatible web browser. The best part of Arduino software is that it can gather all the signals or events from all connected sensors and then applies to actuators as preprogrammed in the server or by the host.

It also keeps a record of all the readings of all the sensors and their respective commands in the web server or in the device if a memory element is attached to it. The web server or has real IP on the internet, then it can be easily accessible through local network as well as internet server. This server acts as a storage medium for all the history of information collected from the sensors as well as from the user.

Figure 2.2: Home Automation System Layout

2.3. *Z*igbee Based Home Automation System

This technology is one of the most advanced protocols used for home automation. If considering previous years, it has gained popularity for residential usage as well. It also has a completely wireless mode of control. It can operate multiple appliances or devices at a time making it more efficient and usable. It consumes less power and reduces the usage of batteries.[4] It is secured home automation protocol with high customizable ability making it highly user friendly. Any message or instruction given by the user is decrypted for security purposes, if it is authentic then it is re-encrypted and sent to the actuator module by Zigbee controller, which further processes the instruction of the user.

3. GSM Based Home Automation System

Mobile phones were initially designed for making and receiving calls and text messages but nowadays they have also been used for building home automation systems. In this technology, home appliances are controlled by just sending SMS through one’s phone.

We can operate any device just by sending commands like "#A.light ON*", "#A.light OFF*" and so on for controlling AC home appliances. These commands are defined using C language in Arduino board. When Arduino receives these commands through GSM, Arduino sends electrical signal to relays to switch ON or OFF the home appliances using relay driver.

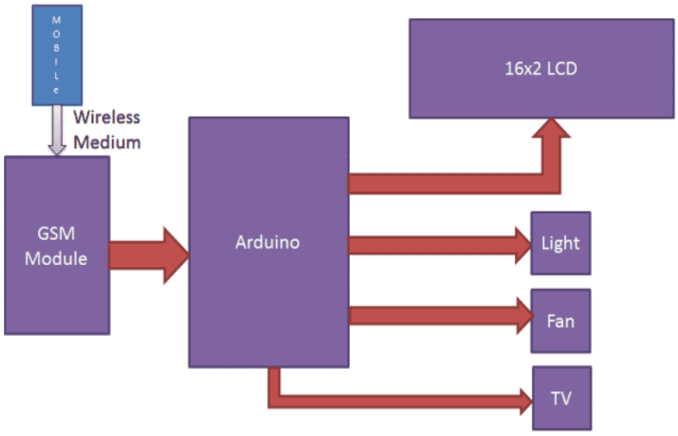

Figure 3: Working of GSM based home Automation

4. Conclusion

Surveys are showing that the demand of automated home appliances is increasing hence the scope of development and making it secure and efficient also increases. In this paper we have discussed some of the most popular and efficient wireless home automation technologies i.e. Bluetooth based, Wi-Fi based, GSM based and Zigbee based home automation technologies. This review paper has been written to help people understand the various wireless technologies in a simple and efficient way. The wireless technologies are going to be the future of today's wireless technologies and hence the risk of the security of those automated wireless systems is going to be a big challenge. So, we require a lot of improvement in this field also.

References

[1] Yadnya Adhiya, Shriya Ghuge, H.D Gadade "**A survey on home automation system using IOT**"IJRITCC Volume_5_Issues March_17_Volume_5_Issue_3.

[2] Neha Malik, Yogita Bodwade "**Literature Review on Home Automation System**" IJARCCE International Journal of Advanced Research in Computer and Communication Engineering ISO 3297:2007 Certified Vol. 6, Issue 3, March 2017.

[3] Shweta Singh, Kishore Kumar Ray "**HOME AUTOMATION SYSTEM USING INTERNET OF THINGS**" International Journal of Computer Engineering and Applications, Special Edition www.ijcea.com ISSN 2321-3469.

[4] Nikita Baidya , Prem Kumar S "**A REVIEW PAPER ON HOME AUTOMATION**" International Journal of Engineering and Techniques - Volume 4 Issue 1, Jan – Feb 2018

[5] Jamil Abedalrahim ,Jamil Alsayaydeh , Mohamed Nj , Syed Najib Syed Salim, Adam Wong Yoon Khang, Win Adiyansyah Indra, Vadym Shkarupylo and Christina Pellipus "**HOMES APPLIANCES CONTROL USING BLUETOOTH**" OL. 14, NO. 19, OCTOBER2019 ISSN 1819-6608ARPN Journal of Engineering and Applied Sciences ©2006-2019 Asian Research Publishing Network.

Survey on Zener Diode as Voltage Regulator and Parameters Responsible for its Working

Aditya Kumar Tripathi
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Bipin Gupta*
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.
Email Id: bipin.gupta@kit.ac.in

***Corresponding Author**
Mr. Bipin Gupta
Email Id: bipin.gupta@kit.ac.in

ABSTRACT

In this survey paper we have explored the working of zener diode as a voltage regulator element. It gives the reader a review of the working mechanism. This paper will also discuss diodes application in voltage regulation. Taking it further we have discussed the scope of the parameters that hinder or support its working such as thermal response, breakdown mechanism etc. It also provides the reader a gist of the history related to zener diode. This survey aims to become a valuable resource for those who are looking for detail about zener diode and its working principle

Keywords: Zener diode, breakdown mechanism, voltage regulation.

1. Introduction

Named after physicist Clarence Zener and first reported in 1934, the Zener diode is a semiconductor diode that exhibits the Zener effect. This effect allows the diode to have a nearly constant current across its terminals when operating biased. Originally, Zener diodes were made using germanium, but later advances were made in silicon-based Zener diodes, providing better performance and reliability. In the early years, Zener diodes were used only in voltage control circuits. They maintain a certain voltage despite changes in current flow, making them important for the stability of electrical equipment. As technology progressed, Zener diodes became important components of many electronic devices such as voltage regulators, voltage references, protection circuits.

2. Working of Zener Diode

If we increase the doping concentration of p-type and n-type in order to reduce the voltage distortion, will have a high electric energy field, which will cause the covalent bond to break, and will form a free hole and electron pair. Diodes are capable of dissipating enough energy to operate in the breakdown region hence can't be used in breakdown region".[1]

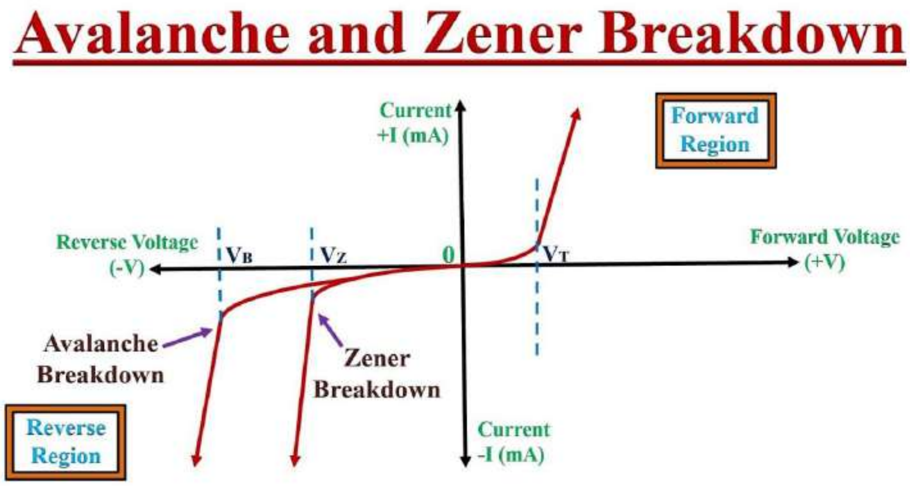

Figure 1: Characteristics of Zener Diode Effect of Temperature [1]

2.2. Effect of Temperature

The Zener breakdown voltage of the Zener diode is sensitive to temperature changes and the coefficient (T_c) can be used to find the change in (V_z) due to temperature changes

$$\mathbf{T_c = \frac{\Delta V_z / V_z}{T^1 - T^0} \times 100 \ldots\ldots\ldots\ldots (1)}$$

Where
T^1 is new temperature
T^0 is room temperature (25°C)
V_z is nominal zener potential at 25°C

2.3. Application

Zener diode can be used as voltage regulator and also it can remove ripples from rectifier output .Here we'll see several cases in which zener diode can work.

I. Case (1) -Vi and RL

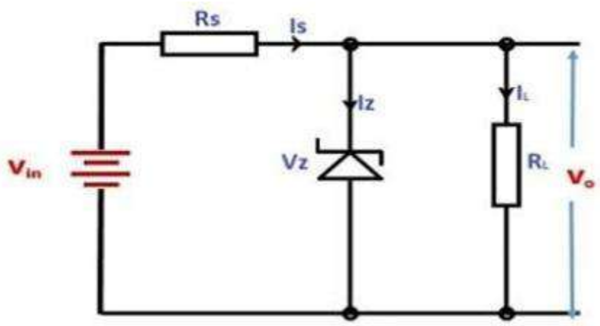

Figure 2: Circuit of Zener Diode in a Circuit [1]

On applying the venin's theorem we get

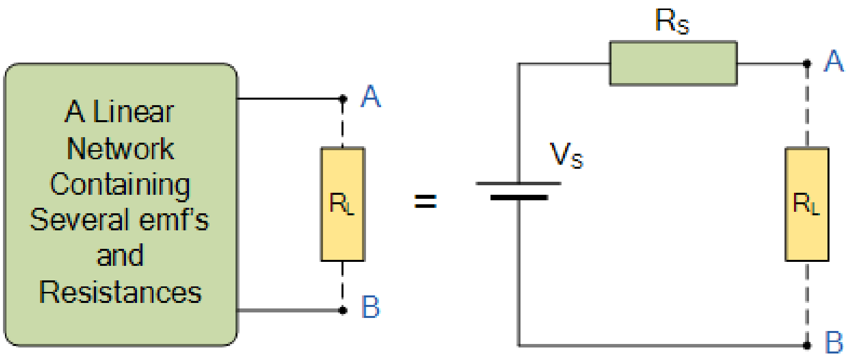

Figure 3: Equivalent circuit on applying thevenin's theorem [1]

And we can conclude that

$$\mathbf{V_{TH}} = \frac{\mathbf{V_i \times R_L}}{\mathbf{R + R_L}}$$

If $V_{th} \leq V_Z$ then zener diode is in OFF condition
Else if $V_{th} > V_Z$ the zener diode is ON.

Now on substituting equivalent circuit
Now on substituting equivalent circuit

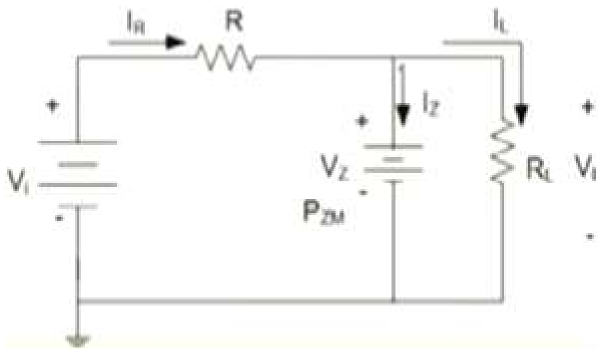

Figure 4: Circuit Diagram [4]

$$\mathbf{I_L} = \frac{\mathbf{V_L}}{\mathbf{R_L}}$$

$$\mathbf{I_R} = \frac{\mathbf{V_i} - \boldsymbol{V_L}}{\mathbf{R_L}}$$

II. Case (ii)-Fixed Vi and variable RL

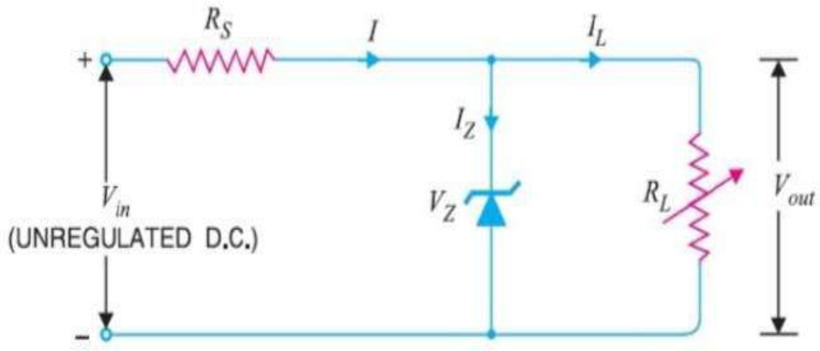

Figure 5: Circuit Representation of Case 2

To find the minimum load resistance that will turn the zener diode ON

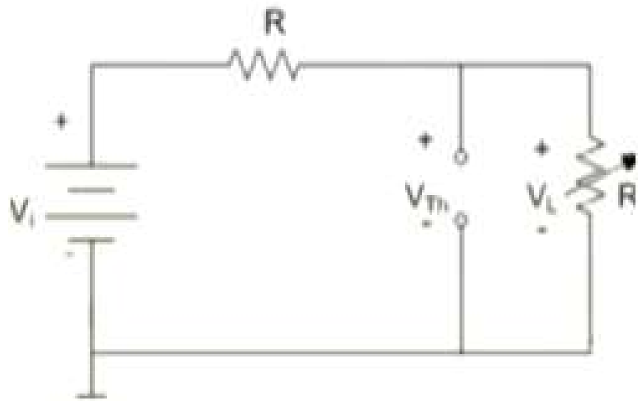

Figure 5: Calculation of V_{th} [4]

We know that

$$\mathbf{V_{th}} = \frac{\mathbf{V_i \times R_L}}{\mathbf{R + R_L}}$$

On solving for $\mathbf{R_L}$

$$\mathbf{R_{Lmin}} = \frac{V_z \times R}{V_i - V_z}$$

So any load greater than this will turn zener diode ON

III. Case (iii)- Vi is variable RL is constant

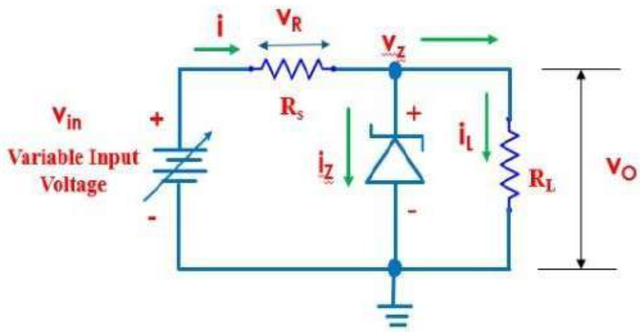

Figure 7: Final Model of Zener Diode [4]

Similarly we can conclude that

The maximum value of $V_i$is limited by the maximum Zener current, Iz_{max}

$\mathbf{IR_{max}=IZ_{max} + I_L}$
I_LIs fixed hence
$\mathbf{VI_{max}=IR_{max} + V_Z}$

3. Conclusion

In summary, the study of Zener diodes as voltage regulators reveals that they play an important role in keeping the voltage constant in electronic circuits. Effects of changing temperature, changing load and changing input voltage have been examined in this paper as well. Over the years, Zener diodes have proven to be reliable and useful for electronic voltage control devices, contributing to the development of stable electronic devices in many applications.

References

[1] https://ieeexplore.ieee.org/document/4181059
[2] https://www.researchgate.net/publication/374263582_Zener_Diode_Theory_Applications_and_Advancements
[3] https://youtu.be/I2nrBITEVls?si=F4Yhp7uk4dOrZkh6
[4] https://youtu.be/I2nrBITEVls?si=F4Yhp7uk4dOrZkh6

Automatic Street Light System to Reduce the Man Power and Lag Time: A Review

Rahul Yadav
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Harsh Patel
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Garima Singh
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Aryan Sharma
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Bipin Gupta*
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

***Corresponding Author**
Bipin Gupta
Email Id: bipin.gupta@kit.ac.in

ABSTRACT

Public safety relies heavily on street lighting, which comes in a variety of forms and consumes a significant amount of electricity. Automatic smart street light systems are not only the simplest to use, but they are also the most intelligent. This system can be configured to function in automatic mode, which controls the street light based on light intensity and a brightness and dimness algorithm. This causes the cars to suffer at night. One way an automatic street light system operates is by automatically turning on the lights when a car approaches and turning them off when there isn't. Other options allow you to turn on bright mode during certain times and give pedestrians with lighter lighting. Cars passing by on the sides of the road. The microcontroller 8051 has been supplied with sensor control signals. Studies reveal that as cities grow and people's standards of living rise, automatic and intelligent control techniques become necessary to manage the complicated lighting system.

Keywords: 8051 microcontroller, LDR, automatic street light system, and power saving.

1. Introduction

Nowadays, lot of accident happened due to the lack of lights on the road, so the street light play an essential role in our life [1].

However, the labor needed to operate the lights saves a significant amount of money. Thus, in this case, the initiative aids in lowering labor costs and power use. Since street lights are not necessary during the day, the LDR turns them off [2]. The street light is turned on and the LDR senses low light levels [3]. There are numerous indoor and outdoor uses for motion sensors. The automatic door opener is one of the most popular uses for a motion sensor [4]. Because of its accuracy, motion sensors are also utilized in place of conventional sensors. When a motion sensor picks up potential intruder movement, it can also be used to sound an alarm [5].

1.1. Components

Nine components are used in automatic street lights. LM 358, BC 547, Diode, Relay, Voltage regulator, Bulb, Motion sensor, Resistor, and Adapter are these. Component design for the system Automated turning on and off of control system elements Resistor that depends on light (LDR): A light-controlled variable resistor is also known as a photo resistor, light-dependent resistor (LDR), or photocell. As the intensity of the incident light increases, the photo resistor's resistance lowers. Photo resistors can be used in circuits for light- and dark-activated switches, as well as light-sensitive detector circuits. When light strikes the sensor, the electrons are freed. The photons that are absorbed when the light intensity surpasses a specific threshold. Due to these factors, resistance is significantly reduced and a large number of free electrons and holes are released. The formula illustrating the relationship between

I. The equation to show the relation between resistance and illumination can be written as

$$\mathbf{R} = \mathbf{A} \times \mathbf{E}^{\mathbf{a}}$$

The production procedure and the CdS utilized determine "a's" value. Values typically range from 0.7 to 0.9.

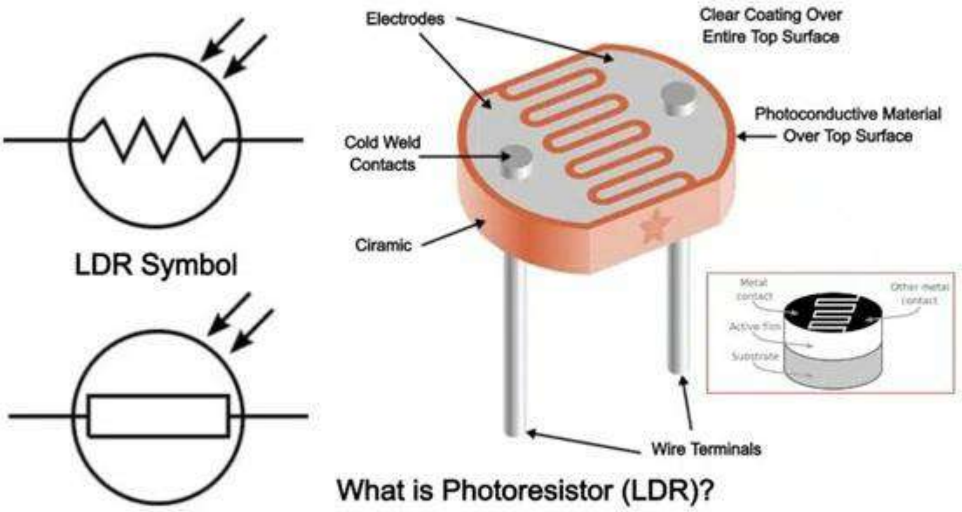

Figure 1: Pin Configuration [1]

LM 358: The LM 358 is made up of two high gain, separate operational amplifiers. For a broad variety of power supplies, separate power supplies are not necessary for every comparator. The LM358 can be applied as a DC gain block, transducer amplifier, and more. It includes a 100dB dc voltage gain. For a single power supply, the required voltage range is 3V to 32V; for dual power supplies, it is ±1.5V to ±16V.

Parts of the light intensity control system. Motion sensor: An acoustic, microwave, or optical sensor is used in motion sensors. A passive sensor, on the other hand, simply picks up signals that the moving object itself emits. The electronics use one of the following technologies to interpret changes in the optical, microwave, or acoustic field near the device. Depending on their price, motion detectors can detect objects at varying distances. In this project, the arrival of a vehicle is detected using a passive inferred ray motion sensor.

Figure 2: PI.R. Sensor [3]

Relay Switch: A relay is an electromagnetic switch that can turn on or off a considerably bigger electric current. It is powered by a relatively tiny electric current. Although electromagnets are utilized in many relays, solid-state relays and other working principles are also employed.

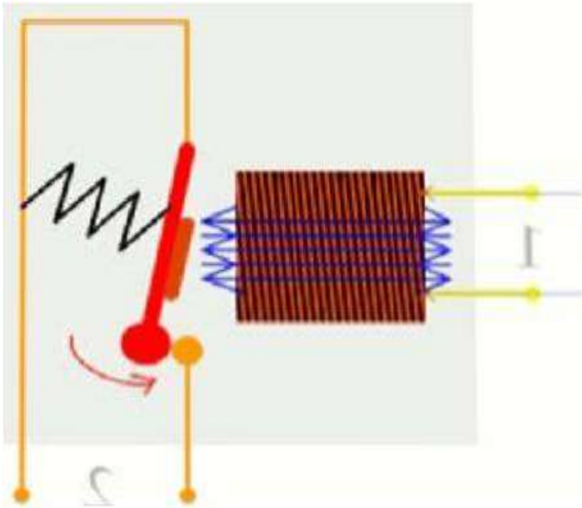

Figure 3: Relay [2]

1.2. Operation

This circuit employs divider circuits coupled as a comparator; when the trigger pin 2 is below the 1/3rd level of the supply voltage, the output becomes high. On the other hand, when the output decreases, the power supply increases. Therefore, a slight adjustment to pin-2's voltage is sufficient to switch pin-3's output level from high to low and vice versa. There are just two possible states for the output: high and low. An intermediate stage cannot exist. For portability, a 6V battery powers it. The circuit uses a reasonable amount of power. Pin 1 is grounded, and pins 4, 6, and 8 are connected to the positive supply. We have utilized an LDR and a to detect the presence of an object.

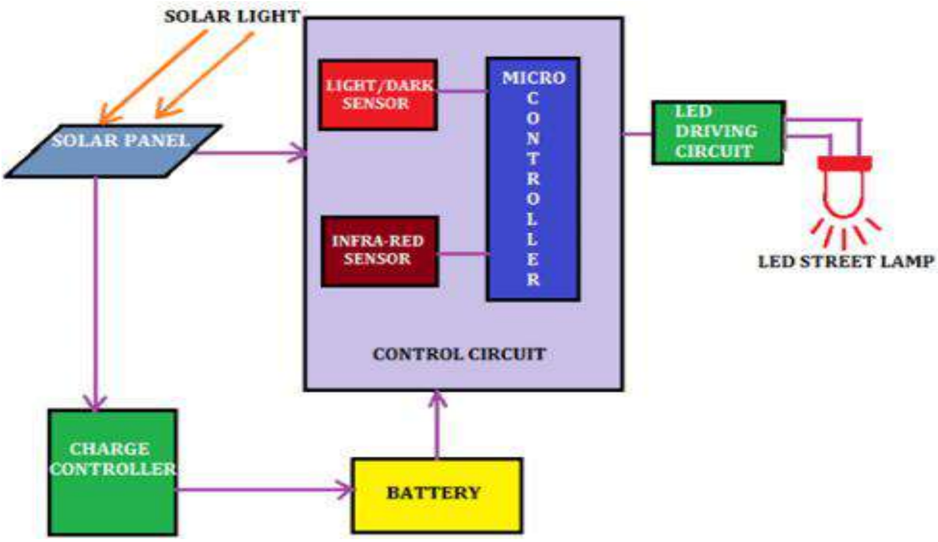

Figure 4: Layout of Automatic Light

A light-dependent resistor (LDR) is a device whose resistance varies according on the amount of light shining on it. When brightly lit, its resistance is just approximately 5k ohms, yet in complete darkness it has a resistance of roughly 1 mega ohm. It reacts to a sizable portion of the visible spectrum. With an LDR and a 100K variable resistance connected in series, we constructed a divider circuit. The relationship between voltage and conductance is widely recognized. Given is this divided voltage. IC 555's pin 2. Variable resistance can be used to change the sensitivity. When the LDR becomes dark, pin 2's voltage reduces by one-third of the supply voltage, pin 3 rises, and the output-connected LED turns on. The motion sensor circuit will not function when the switching circuit is turned on, therefore when light falls on the LDR, it indicates that the motion sensor will not function during the day.

1.3. Design Analysis

The lamp has an operating voltage of 12 volts and a power rating of 3 WATT. The following formula is used to determine the lamps' current rating:

$$\mathbf{I(amp)} = \frac{\mathbf{Power}}{\mathbf{Voltage}}$$

$$= \frac{\mathbf{3}}{\mathbf{12}}$$

$$= \mathbf{0.25A}$$

As a result, 0.25A is the current rating used in lamps. There are 20 bulbs in use.As a result, the lamps' total current consumption is equal to (0.25 x 20) A. I (amps) = 5.given that 5A is the current consumption used. The control circuit for the lighting is made up of a 10A contact current relay.

Selecting the Right Transistor for the Relay: The 12 volt D.C. relay is chosen for automated ON/OFF switching since the 12 volt D.C. power source utilized for the lamp has a voltage rating of that level. The relay in question has an 82Ω coil resistance. Working voltage of the relay is 12 volts, and its resistance is 82 ohms. I (relay) = 12/82 A = 0.15 A as a result. Given that 0.15A of current is being consumed, a BC 547 transistor with a 0.8A collector current rating, collector to Relays employed in the control circuit's output are thought to be driven by voltages of 11 volts between the collector and base, 7 volts between the collector and emitter, and 4 volts between the emitter and base.

1.4 Cost Analysis

The current circumstances if 300 lights with a combined output of 60 watts are operating under 220 volts during a 12-hour night.When calculating the unit, the road distance of one kilometer is taken into account.

Unit=(p×T)/1000
= (60×12)/1000 = 0.72 units daily for each light

If the price of power is 5.50 taka per unit, then the monthly total cost per light would be 0.72 × 5.50 × 30 = 118.8 taka. The total light amount is equal to 118.8 × 300 = 35640 Taka. Making use of an automatic intensity control circuit car moves erratically in the evening, so the lamps don't always receive 220 volts. Let's look at two scenarios for the automated system in a small town: very light traffic and high traffic.

Case 1: There is a lot of traffic and there are always cars on the road; each vehicle will use a total of 0.72 watts of power per month, or 216 W/month.

Expense total: 35640 Taka

Case 2: Light traffic, very few vehicles use this road. The highway minimum speed is 30 km/h, thus it will take 2 minutes to travel 1 km. If there are 100 vehicles in light traffic, it will take 200 minutes, or 3 hours and 20 minutes.

$$\mathbf{Unit} = \frac{30\times p\times T}{1000}$$
$$= \frac{30\times 60\times 4}{1000}$$
= 7.2Units/month per lamp
= 2100 units per month for every light

Total expense = 7.2 × 300 × 5.5 = 11800 taka Because of this, the technology described in this paper has the ability to save electricity in any scenario.

2. Conclusion

The project at hand is the automatic street light control system. It is particularly economical because of its exceedingly low budget. As a result, it might be an essential guideline for cutting back on energy use. As product design engineers, it is our goal to analyse the product in a way that will save costs, improve performance, have a pleasant appearance, be easy to use, and ultimately satisfy customer expectations. However, our efforts would have been successful if the clients are happy and our endeavour helps them. We think a post-survey of customers is required to find out how to improve the design moving forward.

References

[1] Hossain, A.K. and Badr, O (2007) ‘Prospects of renewable energy utilization for electricity generation in Bangladesh’. Renewable and Sustainable Energy Reviews, 11(8), 1617-49.

[2] Wu Yue, Shi Changhong, Zhang Xianghong, Yang Wei (2010)‘Design of new intelligent street light control system’ 8th IEEE international Conferences on Control and Automation b(ICCA), Page(s): 1423 – 1427.

[3] Waze M. A, Nafi N, Islam N. T. And Sayema. S. M. (2010) ‘Design and fabrication of automatic street light control system’ Engineering e-t transaction (ISSN 1823-6379) vol. 5, no. 1, pp. 27-34.

[4] Priyank Pitrubhakta, Pragati Shined (2015) ‘Intelligent system for Highway street lights’ (ISSN2321-0869) vol.3, issue.2.

[5] APD (2007). Bangladesh: Statistical Appendix, Prepared by Wafa Abdelati and Erik Lueth (APD), Approved by the Asia and Pacific Department, International Monetary Fund.

A Study of Human Detection Robotic Systems to Assist in Disaster-Stricken Areas

Aman Kushwaha
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Saurabh Verma
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Abhishek Kumar
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Aitya Singh
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Mr. Bipin Gupta*
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

***Corresponding Author**
Mr. Bipin Gupta
Email Id: bipin.gupta@kit.ac.in

ABSTRACT

In this review paper, the study has been done for robotic systems to rescue human during disaster. Human Detection Robot (HDR) equipped with advanced technologies to assist in disaster-stricken areas. The HDR is designed to navigate through challenging environments and detect human presence with high accuracy. The primary focus of researchers is on creating a reliable and efficient system that can operate in real-world scenarios where traditional rescue methods may be limited. Mostly, a special Passive Infrared (PIR) sensor—which emits infrared radiation to detect humans—is employed in these systems. The PIR sensor detects humans by receiving and manipulating the heat radiation that a living human body emits. As soon as the individuals are found, the authorities are promptly notified, allowing help to arrive at the scene quickly. Robots that are capable of traveling across disaster-stricken areas are equipped with this PIR sensor. Because the robot in these kinds of systems is powered by a stepper motor for improved turning accuracy and a geared dc motor for lower speed, the exact control of position.

Keywords: Human Detection Robot, PIR sensor, disaster management, human detection.

1. Introduction

New high-speed technologies and expanding computer power opened up practical possibilities for developing robot controls and implementing novel control theory techniques. By utilizing new robot control devices, drives, and sophisticated control algorithms, quicker, more accurate, and more intelligent robots were produced as a result of technological advancements and the demand for high-performance robots. This project, which uses an 8-bit microcontroller as its foundation, deals with a live person detecting robot. Our solution makes use of a special passive infrared sensor that emits infrared radiation to identify people. The human body emits thermal radiation, which the PIR (Passive Infrared Sensor) detects and manipulates. The system must sound a warning as soon as a human target is found, which could aid in localizing .The project is mostly utilized for earthquake rescue in the DEBRIS. The live people are detected by the infrared sensors. The microcontroller is in charge of all the aforementioned systems. The motors are managed by the microcontroller. After receiving the signals from the PIR sensors, it uses the sensor inputs to control the motors. The robot is propelled by two DC Gear motors.

When someone is detected to be in need of assistance, the receiver promptly notifies the relevant authorities via an auditory alarm (buzzer) so that they may quickly reach the victim, whether they are buried or immobile. The robot is positioned with this PIR sensor in front of it and it has 360-degree mobility. The robot travels in both directions using a geared DC motor for maximum torque and minimal speed, and motor drives with relays for precise turning and forward and backward movement. The motor driver is a two-wheel geared driver that can move in both forward and backward directions thanks to DC motors attached. The robot is positioned with this PIR sensor in front of it and it has 360-degree mobility. The robot travels in both directions using a geared DC motor for maximum torque and minimal speed, and motor drives with relays for precise turning and forward and backward movement. The motor driver is a two-wheel geared driver that can move in both forward and backward directions thanks to DC motors attached. So, the Human Detection Robot is an autonomous robotic vehicle that moves in the earthquake prone area and helps in identifying alive people.

2. General Specifications

Features based on shape and colors were used to represent the photos. To carry out the recognition procedure, linear Support Vector Machine (SVM) classifiers are used. With normalized color histograms of people's clothing, this system can achieve a high recognition rate and operates in real-time. The primary drawback of this method, though, is that it only showed good performance rates when the training and test photos were taken on the same day. The system's effectiveness decreases to roughly 53% when the test set includes photos from a day that is not as riper-scented as the training set. This is because the person may wear different clothes every day.

A hierarchical method for creating a system that locates individuals in photos was proposed by Mohan et al. The learning process in this Adaptive Combination of Classifiers (ACC) technique happens in steps. The head, legs, left arm, and right arm are the four parts of the human body that the system is initially trained to identify independently of one another. The algorithm combines the data to categorize a pattern as either a “person” or a “non-person” after verifying that these components are present in the correct geometric configuration. The acquired data showed that compared to a comparable full-body person detector, this device performed noticeably better. Furthermore, the device performs better in handling image noise and lighting fluctuations than a full-body detector.

3. Proposed Work

3.1. Working of Robot

PIR sensor, ultrasonic sensor, and power supply are the inputs used by Arduino. The LED, buzzer, and L293D motor driver module outputs are coupled to a DC motor. The robot can move left, right, forward, and backward with the help of a DC motor. The direction of motion of the DC motor is controlled by the L293D motor driving module. The movement's direction is chosen based on the written program code. A PIR sensor can be used to detect human activity. This sensor detects the 9 to 10 microns of heat that humans create. The detection angle of a PIR sensor is limited to 180°, meaning that it can sense in all directions except the area beneath the robot. The maximum detection range of a PIR sensor is limited to 20 feet. When we turn on the robot, it will go ahead. However, as soon as a PIR sensor detects a human, it will pause briefly before turning on the LED and buzzer to signal that a human is present.

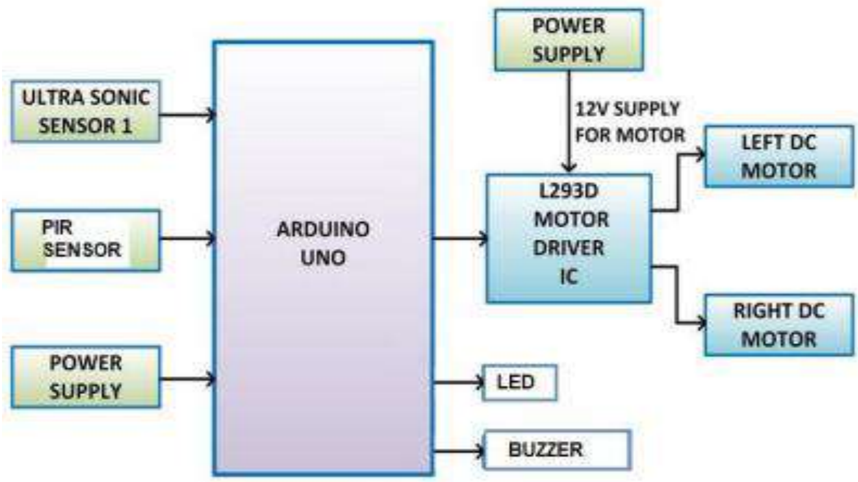

Figure 1: Block Diagram

When the ultrasonic sensor detects barriers other than people, it deviates from its intended course in accordance with the algorithm.

3.2.Working of Arduino IDE

The you will program the Arduino board primarily using the Arduino software. The program works with Linux, Mac OS X, and Windows. You can obtain the open-source software from www.arduino.cc. You should upload the code to the board after it is finished. The code must be compiled before it can be posted. In essence, compilation transforms your code into an Arduino-readable format.

3.3.The Hardware Setup

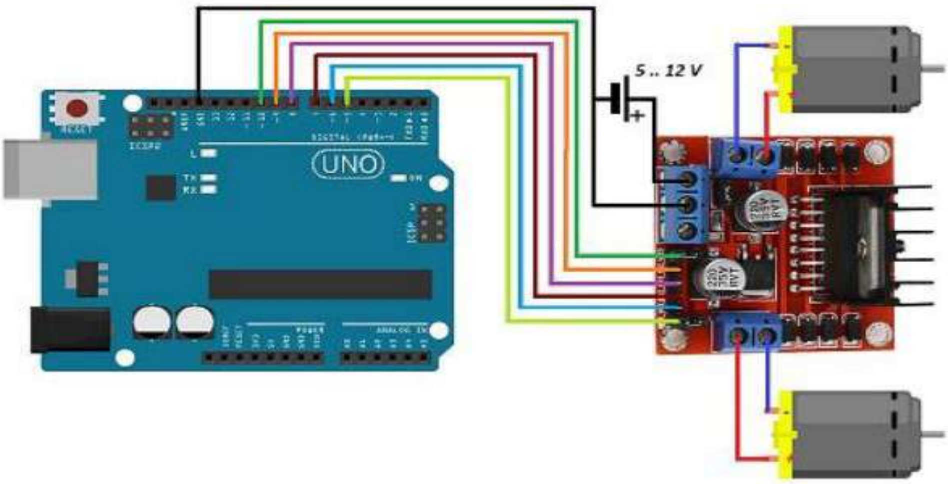

Figure 2: Interface of motor driver with Arduino.

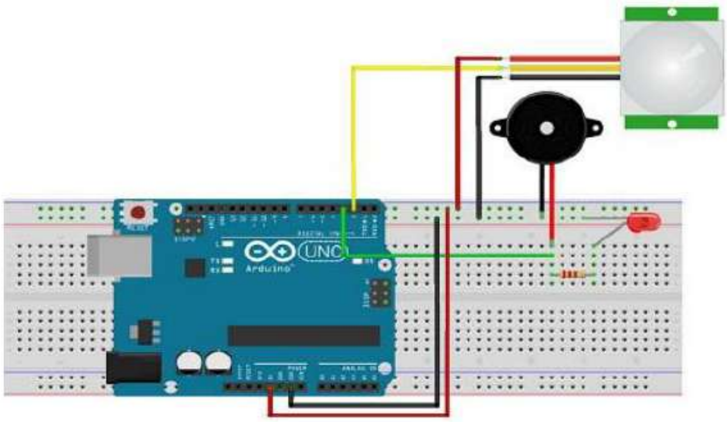

Figure 3: Interconnection PIR sensor & Arduino.

Figure 3.3.1 illustrates how the Arduino board and L293D Motor Driver Module are connected. The ground pin of the Arduino is connected to the GND pin, and the power supply is connected to the 5V power supply pin. The Arduino's digital inputs are connected to the enable and input pins. The PIR sensor's connection to the Arduino board is shown in Fig. 3.3.2. The PIR sensor's VCC and GND pins are linked to the Arduino's 5V and GND pins, respectively. The Arduino's digital input is connected to the OUT pin.

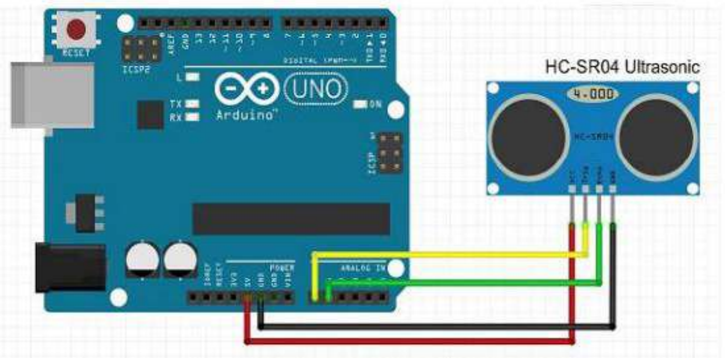

Figure 4: Interfacing Ultrasonic Sensor [3]

The PIR sensor's VCC and GND pins are linked to the Arduino's 5V and GND pins, respectively. The Arduino's digital input is connected to the OUT pin. The ultrasonic sensor's connection to the Arduino is shown in Fig. 3.3.3. The Arduino's 5V and GND pins are linked to the VCC and GND pins of the ultrasonic sensor, respectively. The Arduino's digital inputs are linked to the trig and echo pins.

List of Requirements

Table 3.1: Hardware and Software Requirements

Hardware Requirement	Software Requirement
1. ARDUINO UNO R3 (microcontroller, Atmega 328-P) 2. The HC-SR501 PIR Sensor 3. The HC-SR04 Ultrasonic Sensor 4. Motor Driver Module L293D 5. Helical Gear Motors in DC 6. Mechanism of Robot Chassis Light Emitting 8. Beacon 9. 9-Volt Battery	IDE for Arduino (Version 1.8.5).

4. Conclusion

A Human Detection Robot prototype that functions well in the circumstances described. This prototype robot is operating based on the architecture of the core idea, which involves assessing obstacles and navigating in accordance with programming to avoid block positions and go along open pathways. The robot can move and travel a great distance, which minimizes the need for numerous sensors or robots. The robot may alert consumers by continuously beeping when it detects a human. The robot's PIR sensor has a 180° coverage range and can detect human presence up to 7 meters away. By installing a visual camera that may record the intruder's image and notify users, it can identify human presence. It has an ultrasonic sensor attached to it that measures human distance and detects infrared images of objects. When natural disasters strike, human detection robots can be deployed to save lives. In the event of a conflict, this can also be used to identify hu-mans and for security purposes in places like jewelry stores and museums.

Reference

[1] Shivasundari, S. Kalaimani, M. Balamurugan: "Wireless Surveillance Robot with Motion Detection and Live Video Transmission"," International Journal of Emerging Science and Engineering (IJESE)" ISSN: 2319–6378, VolumeI, Issue-6 April 2013. (1)

[2] Trupti B. Bhondve, Prof.R. Satyanarayan, Prof. Moresh Mukhedkar: "Mobile Rescue Robot for Human Body Detection in Rescue Operation of Disaster"," International Journal of Advanced Research in Electrical, Electronics and Instrumentation Engineering", Vol. 6, June 2014.

[3] Mr. S.P. Vijayaragavan, Hardeep Pal Sharma,Guna sekar.C.H, S.Adithya Kumar: "Live Human Detecting Robot for Earthquake Rescue Operation"," International Journal of Business Intelligents" Vol 02, Issue 01, June 2013. (2), (6)

[4] Wang, H., Wang, D., Tian, L., Tang, C. and Zhao, Y. "An automatic Tracking system for marine navigation", IEEE, pp. ISO-IS3, 2001.

[5] Dhariwal, A. and Sukhatme, S.G. "Experiments in robotic boat Localization", Proc. int'l Can! on intelligent Robotsand Systems, IEEE, Pp.1702-170S, 2007

[6] Benli, E., Motai, Y., & Rogers, J. (2019). Human Behaviour -Based Target Tracking With an Omni Directional Thermal Camera. IEEE Transactions on Cognitive and Developmental Systems. Kenneth G.

[7] Eskildsen, Great Neak, "Method and apparatus for large signal detection in PIR applications", u.s.7176469b2, abbrev. Feb, 13.2007.

[8] Reiner quad, Taunusstein, Karlheinz Stock, Loach, "Infrared detector with direction identification capability", u.s.4914298a, abberev.appr, 3.1990.

[9] Mr.SpVijayaragavan and Hardeep pal Sharma, " Live human detection robot for earthquake rescue operation", International journal of buisnessintelligents, vol.02,issue 01,page:83-87,june: 2013.

[10] Rajive Joshi, Pratap Chandrapoudel,PankajBhandari,"An embedded autonomous robotic system for alive human body detection&rescue operation", Raidhur, karnataka,vol.4, issue 5,page:1-4, may 2014

Arduino Based Agriculture Robot: A Review

Zarrin Khan
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Shaifali Chaurasiya
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Mansi Prajapati
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Shivendra Kumar
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Mr. Kaushal Kishore*
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

***Corresponding Author**
Mr. Kaushal Kishore
Email Id: kaushal.kishore@kit.ac.in

ABSTRACT

The climate in India is excellent for agriculture. India's most limited industry is agriculture, with half of the workforce working in some capacity in the sector. Therefore, it is imperative to enhance agricultural facilities by integrating the most recent technology developments. The traditional method of seeding takes longer and costs more in labor. Researchers have looked into many ways to make agricultural facilities better. In this study we have explored the problem of seeding, sowing, weeding and water spraying process in agricultural to minimize the labour cost, power efficiency, adaptation to environmental changes, maintenance and reliability which need to be addressed for effective deployment in farming. With the development of science and new technologies, scientists are drawn to the agricultural sector, and their work is centered on robotic systems. This is done to assist farmers by giving them up-to-date information on their cultivated area. Robotics systems and field farming are combined, and they function well together to solve problems. Robotics provides a solution to this problem and has proven to be quite effective in the agricultural process. Robotics technology is also very important in the engineering, medicinal, and military fields.

Keywords: Arduino UNO, ultrasonic sensors, soil moisture sensors, DH11, Data logger sensor.

1. Introduction

Technology in agriculture is essential to cultivation and represents a significant advancement in a civilized way of life. Well-equipped equipment are the fundamental trend in agricultural improvement. Although we had equipped instruments in the usual technique as well, they were not atomized. With the equipped tools, the amount of laborers required to exert more effort [1]. Automation emerged in order to save time and boost productivity in the wake of the recent labor scarcity and technological advancement. Automation should save time and be more economical at the same time. The food industry's expanding needs have an impact on output due to changes in the environment. [2]. Robotics in agriculture is a relatively recent concept. Approximately 70% of people in contemporary India are dependent on agriculture. In the agricultural field, a variety of tasks are carried out, such as planting seeds, watering, pulling weeds, shielding the crops from birds and other wild creatures, etc.[3].All agricultural operations, including seed sowing and irrigation, are carried out using extremely complex conventional methods. Different equipment was needed for each activity, and this equipment is exceedingly expensive, heavy, difficult to use, and inefficient. As of right now, no specific equipment is available that can perform all of their tasks simultaneously. Therefore, new methods must be used in this industry to make farming easier for farmers. Thus, India's agricultural sector has to adopt a method that will boost precision while requiring less labor and time. [3].The goal of this effort is to build and design a robot that can perform multiple tasks at once, such as field plow, seeding, covering seeds with soil, and irrigation.

2. Problem Statement

The farming technique of today requires a higher manpower requirement. Additionally, manual farming uses more resources, such water and pesticides, which increases the possibility of resource waste. The chemical characteristics of fertilizers and pesticides may cause health problems.

a. Work in the agriculture sector requires skilled labor.
b. The difficulty in hiring and keeping workers for agricultural tasks.
c. Takes too long to complete each step individually.
d. The cost of a traditional farming system is comparatively high.
e. Water is squandered, which is detrimental to the storage of water and extremely helpful in drought-prone places.
f. In [4], a robotic arm is used in the suggested system to dig down into the soil and pick up seeds. This process takes time and requires a strong battery.

3. Literature Survey

Low mechanization was identified as one of the main causes of low productivity in Indian agriculture, along with other issues like land fragmentation, lack of access to credit and insurance, and inadequate infrastructure in the review paper by M. Sreekanth (2017). Effective solutions, including adopting modern techniques, consolidating landholdings, and investing in infrastructure, were presented in the paper [5]. In 2019, a more basic and cost-effective version of the project by Anila Satish was created by M. Hassan, which included soil moisture, temperature, a microcontroller, and an LCD display. But this system's drawback was that it could only show the recorded numbers on the screen, forcing farmers to manually take the appropriate action based on those readings [6]. In this study article, Saurabh Umarkar and Anil Karwankar (2016) highlight the widespread impact of the shortage of qualified labor in the farming industry and the usage of automation. Thus, it shows the design and development of a robot that will be able to both identify impediments in the path and sow seeds. This model's output illustrates how the seeds are sown in the field at various intervals. The benefit of this type of model is that it boosts farm output and uses a renewable energy source. Beza Negash Getu et al. (2015) investigated the design and simulation of an electronic system for automatic controlling of water pumps that were used for agricultural fields or plant watering based on the level of soil moisture sensing in 2015. The speed of the motor was varied according to the level of the soil moisture content, and the motor was OFF during maximum wet and was running with high speed during dry soil conditions respectively. The duration of water pumping was controlled by a timer circuit. The system was tested using NI MULTISM simulation software, and DIAC and TRIAC techniques were used. However, it did not support several water levels and used old techniques [10]. The improved weed control system, built on a robotic platform and optimizes agricultural activities like weed management, is discussed by S. A. Amrita et al. in [11].

A four-wheeled robotic automobile with a DC motor for steering has been constructed. By considering specified rows per column at a predetermined spacing depending on the crop, the machine controls the weeds in the company. The problem of barriers picked up by sensors has also been thought about. Motors and sensors were used to develop the algorithm, calculation, processing, and monitoring as a whole. Gorijin, Shiva et al. [12]: The rapid progress in science and technology has turned agriculture's robots and automation technologies into a major driving force. Digital agriculture makes agricultural practices more productive and consistent by using information technology to increase efficiency and decrease energy inputs. While there is still room for improvement, the use of digital and automated systems, such as robots, communication networks, computer-based sensors and actuators, and other advanced farm gear, has the potential to completely change agricultural activities. A growing number of agricultural farms are turning to fossil fuels for electricity, but this trend is neither sustainable nor viable in light of climate change concerns and the negative impact fluctuating fossil fuel prices have on production costs. The most plentiful and dependable energy source is solar energy, and photovoltaic (PV) technology is the most widely used electrical renewable technology for producing electricity. PV technology has steadily evolved into an economical and energy-saving method in the shift from conventional to modern agriculture. This chapter presents and discusses case examples related to the use of PV systems in agricultural automation and robotics. The autonomous robot [13] that was designed, developed, and fabricated has the ability to dig, plant seeds, level soil, provide water, and use a sprayer. All of these systems are integrated with a power source that runs on solar energy. Robot steering is accomplished by use of a rack and pinion mechanism. The motor's power input is regulated by a relay switch. To identify obstacles, an infrared sensor is used. Over 40% of the world's population chooses agriculture as their primary employment, and interest in the use of autonomous cars in agricultural has recently surged. In this research study, Amrotasneja [14] et al. discuss an agricultural robot for autonomous sowing and plowing. The process domain describes the idea of selecting fruit and spraying pesticides.

Even while farmers invest a lot of money in machinery to reduce labor costs and boost crop yields, their efficiency and profit margins are still quite low. Therefore, automating machines that carry out a single task and doing so to boost yield on a wide scale is the best way to overcome all of the drawbacks.

4. Methodology

The project will be implemented in the following phases:

a. **System Design:** The first phase will involve designing the overall system architecture, including the selection of sensors, actuators, and control algorithms.
b. **Hardware Development:** The second phase will involve developing the hardware components of the system, including the sensor circuits and actuator control circuits.
c. **Software Development:** The third phase will involve developing the software for the system, including the data acquisition and control software and doing programming into Arduino.
d. **System testing and Deployment:** The final phase will involve testing the system in a real- world agricultural setting and deploying it to farmers.

5. Components Used During Implementation

Here is the components we use in our robot :

a. **Arduino Uno:** The Arduino Uno microcontroller board serves as the brain of the autonomous robot. It provides the necessary computing power and interface with various sensors and actuators to control the robot's operations.
b. **Solar cell:** The battery is charged by the solar panel, and the battery powers the motor that turns over dirt and plants seeds. Utilizing a soil moisturizer sensor, one may determine the soil's moisture content and adjust irrigation schedules accordingly. The Arduino IDE controls the agriculture robot in its entirety.

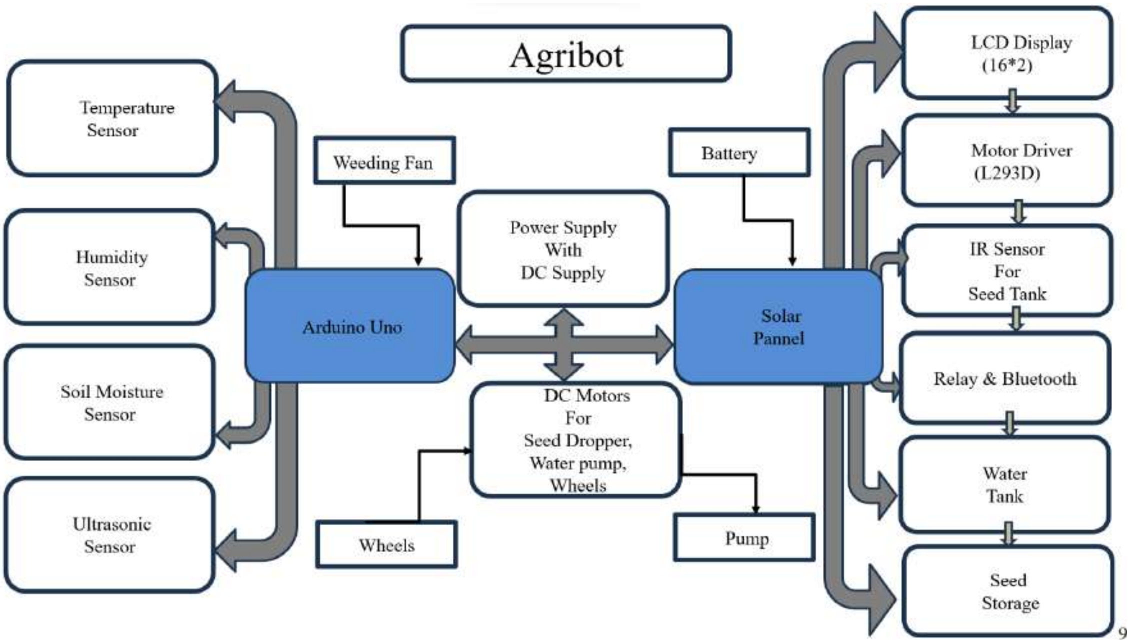

Figure 1: Flow Diagram of Methodology

c. **Battery Concector:** A battery connector is used to establish the electrical connection between the power supply (battery) and the robot.
d. **Motor Driver (L298N):** A L298N Motor driver is required to control the speed and direction of the motors used in the project, such as the servo motors for actuating components and the motors for watering.
e. **DC Motors:** Four 12 volt 400 rpm DC motor has been used for wheels. two 6 volt 250 rpm micro DC motor has been used for digging.

5.1. Sensors

a. **Ultrasonic Sensor:** Using ultrasonic waves, this sensor is used to compute the separation.The separation is determined by the time interval between sending and receiving waves.
b. **DH11**- DH 11 r automates farm tasks like seeding, sowing, watering, and weeding. It uses sensors and cameras for precision and efficiency, boosting crop yields and resource management.
c. **Distance Sensor:** Planting: Avoid crushing seeds, space them right. Sowing: Know where to sow, avoid existing plants. Watering: Water only when needed, target plants precisely. Weeding: Find and zap weeds, leave crops alone.
d. **Soil Moisture Sensor:** Dielectric permittivity is a measure of the water content in soil. By producing a voltage in relation to the dielectric permittivity, the sensor determines the water content of the soil.
e. **Data Logger:** The robot's memory, tracking progress and making decisions.

5.2. Materials

a. **LCD:** A 16*2 LCD monitor is used for displaying relevant information, status updates, and user prompts.
b. **Wheels:** Four wheels are used for the robot's movement and mobility in the field.
c. **Pump:** Every pump uses the fundamental force of nature to transfer a fluid. As the pump's moving components (vane, cylinder stomach, impeller, etc.).
d. Pipe, hicup cones and weeding fans also used in this robot.

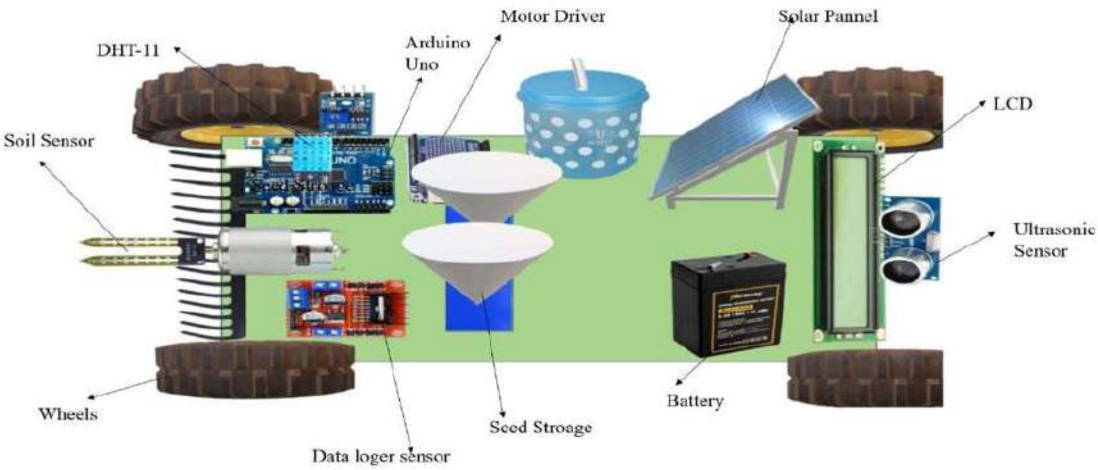

Figure 2: Diagram implementation of Agribot

6. Conclusion

Arduino-based agriculture robots are a new and emerging technology with the potential to revolutionize the agricultural industry .It can be used to automate a variety of tasks, including spraying pesticides, watering crops, sowing crops, monitoring crops for pests and diseases, and harvesting crops. This can free up farmers to focus on other tasks or to expand their operations. Overall, Arduino-based agriculture robots have the potential to make the agricultural industry more efficient, sustainable, and productive.

References

[1] Saurabh Umarkar and Anil Karwankar, "Automated Seed Sowing Agribot using Arduino" International Conference on Communication and Signal Processing, April 6-8,2016, India.

[2] Vishnu Prakash K, Sathish Kumar, Venkatesh P, Chand ran A," Design and Fabrication of Multipurpose Agricultural Robot," International journal of Advanced Science and Engineering Research Volume:1, Issue:1, June 2016, ISSN: 24 55-9288.

[3] Ranjitha B, Nikhitha M N, Aruna K, Afreen "Solar Powered Autonomous Multipurpose Agricultural Robot Using Bluetooth/Android App" Third International Conference on Electronics Communication and Aerospace Technology.

[4] Neha S. Naik, Virendra. V. Shete, Shruti. R. Danve. Precision Agriculture Robot for Seeding Function, IEEE International Conference on Industrial Instrumentation and Control, May2015.

[5] M. Sreekanth, A. Hakeem, Q. Javeed, A. Peer, and I. Rashid, "Low productivity of Indian agriculture with special reference on cereals,"239 Journal of Pharmacognosy and Phytochemistry, vol. 6, no. 5, pp. 239–243, 2017, Accessed: May 02, 2021. [Online]. Availablehttps://www.phytojournal.com/archives/2017/vol6issue5/PartD/6-4-312-419.pd.

[6] Hassan, Mohammed & Alraisi, Abdullah & Alsidairi, Yahya & Alshukaili, Abdal & Mohammed, Hamed & Alshimali, Ali & Hameed Kalifullah, Abdul. (2019). design and development of low cost soil monitoring system using Arduino Creating and Evaluating an Autonomous Agrobot for Crop Monitoring and Yield Prediction" by H. S. Saini and S. K. Sharma (2018).

[7] Field Operations and Agricultural Robots: A Review" by A. J. A. Winkler and G. J. V. Kooten (2018).

[8] Saurabh Umarkar; Anil Karwankar "Automated seed sowing agribot Using Arduino"2016 International Conference on Communication and Signal Processing (ICCSP) held at Melmaruvathur, India. PP: 1379-1383.

[9] BezaNegashGetu, Hussain A. Attia, "Automatic Control of Agricultural Pumps Based on Soil Moisture Sensing", IEEE conference publication,2015.

[10] S. A. Amrita, E. Abirami, A. Ankita, R. Praveena and R. Srimeena, "Agricultural Robot for automatic ploughing and seeding," 2015 IEEE Technological Innovation in ICT for Agriculture and Rural Development (TIAR), 2015, pp. 17-23, DOI: 10.1109/TIAR.2015.7358525.

[11] Shiva Gorijin Harshit Jain, Nikunj Gangrade, Sumit Paul, Harshal Gangrade, Jishnu Ghosh, Design and fabrication of Solar pesticide sprayer.

[12] Y. Kim, R. Evans and W. Iversen, "Remote Sensing and Control of an Irrigation System Using a Distributed Wireless Sensor Network", IEEE Transactions on Instrumentation and Measurement, pp.1379–1387, 2008.

[13] Amrotasneja etal, in this research paper agricultural robot for automatic ploughing and seeding.

Assessment on Effective Road Safety and Management System

Shorya Shobhit Shrivastva
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Aditya Ojha
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Devesh Kumar
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Shivam Gupta
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Devendra Kushwaha*
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

***Corresponding Author**
Devendra Kushwaha
Email Id: devendra.kushwaha@kit.ac.in

ABSTRACT

In today's time road safety is one of the major issues. This paper takes several issue and provide its solution. Because of traffic congestion, emergency vehicle does reach at their destination on time hence it cause death, so, with the use of RF transmitter/ receiver and arduino the problem of traffic congestion would be clear. At the turning point of road various accidents takes place so with the use of infrared sensor and LED we can indicate the vehicle that another vehicle are coming from another side. To reduce traffic congestion problem at major crossroads there could be a architectural design without any electronic system. During foggy weather there are very high chances of accidents mainly on highway, so there could be a system in which infrared sensor sense the vehicle and give the output in form of LED several meter away so the another coming vehicle can limit their speed and break.

Keywords: Road safety, traffic congestion, Emergency vehicle, Accidents, Sensor, LED.

1. Introduction

The world's largest challenge is traffic congestion. As the population grows, so do the use of automobiles and this trend will continue unless new road infrastructure is developed? As a result there's a chance that every traffic junction will see a large concentration of cars, which causes more congestion during rush hour than at other times. These circumstances make it more difficultfor emerging vehicles to move through traffic during peak hours and put those in need of them ina hazardous predicament. The issue of mishandled traffic and accident is also brought about by this condition.

1.1 Problem Statement

This will make it extremely challenging to control signals and track vehicles. Thus, it may endanger lives and complicate emergency situations by minimizing the time it takes for an emergency vehicle to arrive.[3]. The inability of drivers to see other vehicles or implements approaching from the other side of the curve is the issue with hairpin bends. It is hard to control avehicle's speed while it is travelling at a high speed. [7]. A traffic accident can be defined as the result of one or more system failures involving the road, vehicle, and driver that prevent a trip from ending in damage or harm. The primary causes of traffic accidents are inadequate upkeep of the road system and a deficiency in effective and organized enforcement. [8].

2. Literature Survey

In paper [1], the analysis of accidents on mountain roads have done along with its affecting factor and causes for the accidents. While in paper [2] Swanand patwardhan and Piyush pethkar have proposed a solution for reducing accidents on mountain roads. The paper [3] was published by Dr. Nilesh R. Mate have analyse the problem of traffic congestion issue and parking relationship and provide a solution through predicting congestion mitigation. M. S. D. Sai Varmaand P. Prabhu Suneel have published a paper [4] in which they provide a solution for affected emergency vehicles in traffic congestion through Intelligent Traffic Control System for Emergency Vehicles Using RF Technology in which they use RF transmitter and RF receiver along with Arduino. In paper [5] N. M. Z. Hashim along with his team members proposed a solution for affected emergency vehicles in traffic jam, they use 434 MHz frequency range in RFtransmitter and receiver. In paper [6], the studies aims to analyses a traffic jam problem caused byheavy vehicles through Fault Tree Analysis method and Social Network Analysis method. In paper [7], it is proposed a system which controls emergency vehicles at two cross of traffic with the use of Wi-fi, Camera, Visual sensors etc. In Paper [8], Ch. Ramaiah along with his group members proposed a system which uses radio frequency for controlling traffic jam issue for emergency vehicle (Ambulance).

3. Methodology

Effective traffic management is crucial to the smooth operation of emergency vehicles, such as police cars, fire engines, and ambulances. The current traffic management systems do not prioritize emergency vehicles, which can result in delays and even fatalities. To give emergency vehicles priority, we recommend implementing a traffic control system in this article uses an RF transmitter and receiver in conjunction with an Arduino At the first intersection, there are traffic lights with four buttons to press. When there is an emergency, we press the button corresponding to the direction in which the emergency vehicle is located. An RF transmitter and receiver then help to communicate and receive the message. The traffic light in that direction turns green via Arduino if there is an emergency vehicle in that direction and the other direction's traffic signal turns red. The results of the study showed that the suggested strategy successfully gave emergency vehicles priority and reduced the distance they had to drive by up to 40%. Additionally, by lessening congestion at the links, the system enhanced traffic flow. In conclusion, the recommended traffic management system offers a workable and trustworthy means of granting emergency vehicles on the road priority [5].

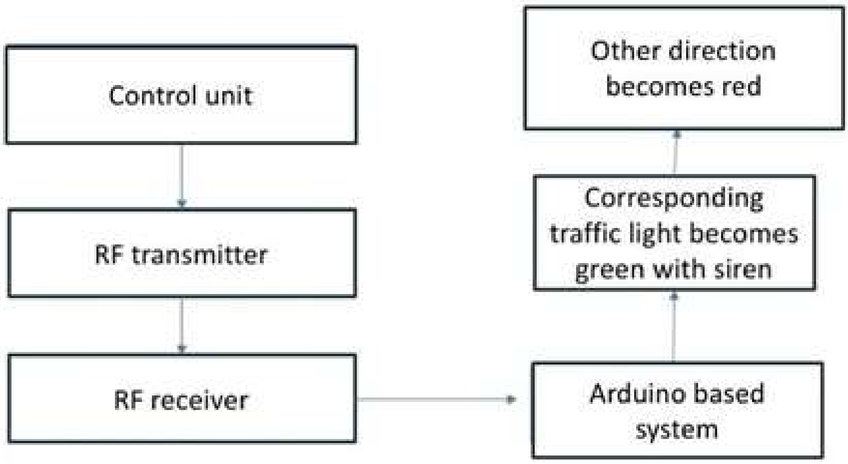

Figure 1: Block diagram of reducing traffic congestion problem for emergency vehicle

To interface and manage the process from several sensors, we have employed and Arduino when an object is discovered using infrared technology, motion sensors are utilized to confirm that it is, in fact, a vehicle and not just a stationary object like a big rock. then indicates to the cars to either move or halt. The following are the parts that were used:

Infrared Sensors: Infrared light can be detected and emitted by active infrared sensors. The two parts of an active infrared sensor are a receiver and an LED (light emitting diode). The infrared light from the LED reflects off objects as they go closer to the sensor, allowing the receiver to identify them. Consequently, the existence of an item is discovered.

Motion Sensor: Low power source is used by passive infrared sensor (PIR) when a threshold is crossed, the sensor which monitors variations in the amount of infrared radiation it gathers, activates. As a result, motion sensors can identify movement even in the dark or at night. To make sure an object is a car and not just something immovable, like a large rock, motion sensors are employed. We have placed a camera module to take pictures and offer an algorithm in Matlab, as well as a signal at both ends made up of red and green LEDs, for the accident prevention system. identifying the kind of vehicle (cars, trucks, buses, LMVs, etc.) and using an LCD panel to show the instructions Once a vehicle has successfully navigated a curve or turn, proceed; otherwise, stop if a vehicle is detected at the opposite end and note its kind. The signal at both ends will be green and the LCD will display the message "Path is clear!" when there isn'ta single car detected on the opposite side. When a vehicle is detected by both ends at the same time, a red led on both ends will switch on, signalling for the car to stop and displaying an alert message on the LCD screen. After that, a light at one end will turn green, telling the vehicle there to make the turn first. The other led will turn green and the vehicle can safely make a turn after one of the vehicles successfully crosses the turn. [2]

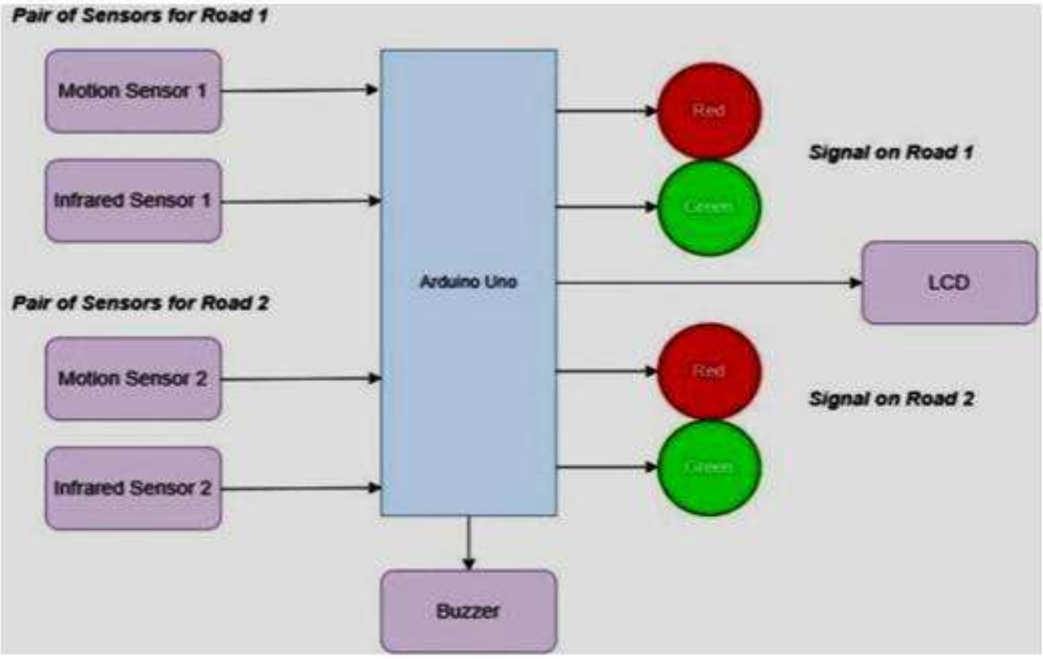

Figure 2: Schematic representation of the proposed vehicle detection & accident prevention system(2)

For reducing accidents at major crossroads, architectural method would used for reducing jam and accidents and there is no use of traffic light system.

In foggy weather, Sensor is placed at the side of road which senses the vehicle and give output some metre behind so that coming vehicles could identify that other vehicle is some meter away, so that the driver could control the break and accelerator.

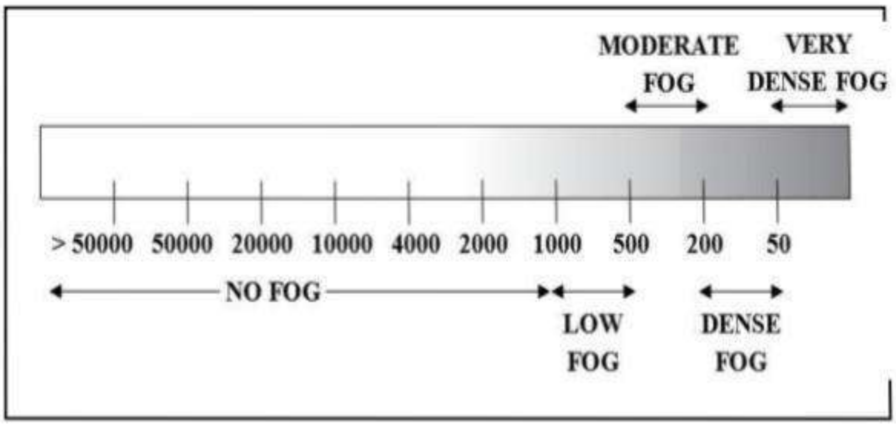

Figure 3: Visibility scale (in metres) in foggy weather [7]

4. Results

1. Accident prevention works to reduce accidents at intersections and on curves in the road. When two vehicles approach a bend, an accurate message is displayed on the LCD, and a redlight indicates that the vehicle should stop.. [2]

2. “RF Technology-Based Traffic Control System for Emergency Vehicle” The Arduino receivesa message from the RF system after it has identified the emergency cars. The emergency vehicle’s green light is turned on by the Arduino after it receives the message. [3]
3. Drivers do not typically slow down significantly until there is a significant decrease in visibility; yet, accidents involving fog have been observed, as has the capacity to maintain lanes over the majority of the visibility distance range. Light Emitting Diodes have been suggested as an alternative to road lighting for the function of guide lights inside motorways.[6]
4. Accidents would be reduced at the major crossroads.

5. Conclusions

Another significant problem facing the 21st century are road traffic accidents, which are caused by growing populations, raising vehicle densities, and inadequate infrastructure. Road traffic accidents (RTAs) and their associated road traffic injuries (RTIs) are increasing, raising concerns about potential loss of life and limb. The significant impact of RTIs on mortality, morbidity, and social and economic costs has been emphasized throughout the text. The governments have the duty to prioritize road safety politically, establish goals for road safety, create a multidisciplinaryapproach to road safety, establish and implement strict and standardized vehicle safety regulations, and uphold existing safety legislation.

One fact that has a significant influence on the nation’s transportation is the congestion problem. This leads to a lot of issues, particularly when emergency situations arise at major traffic light intersections with plenty of moving traffic. This technique will reduce the number of accidents that frequently occur at traffic light junctions since other vehicles have to congregate to provide an alternate path for emerging vehicles.

Curvy hill stations have emerged as the biggest menace to human life. Numerous accidents occurin these curves every year, which have a larger-scale detrimental impact on the social and economic aspects. Against this backdrop, the Infrared Radiation-laden Sensor model aims to create a smart road mechanism that would prevent accidents on curved roads and save lives.

References

[1] Mir Danish amin and Mr. Waseem Akram, "Accident detection at U-curves using sensor athill station: A case of pehlgam tehsil"(2023) .

[2] Swanand Patwardhan and Piyush pethkar, "Vehicle Accident Prevention on mountains roads"(2023).

[3] Dr. Nilesh R. Mate, "Indian Roads Traffic Congestion Problems Its Reason With SpecialReference To On-screen Parking Space"(2022).

[4] M.S.D. Sai Varna and P. Prabhu Suneel, "INTELLIGENT TRAFFIC CONTROL SYSTEM FOR EMERGENCY VEHICLE USING RF TECHNOLOGY" (2020).

[5] N. M. Z. Hashim and A. S. Jaafar, "Traffic Light Control System for Emergency VehiclesUsing Radio Frequency"(2013).

[6] P. A. Keshuma, M. A. Rohman and C. A. Prastyanto, "Risk Analysis Of Traffic Congestion Due To Problem In Heavy Vehicles: A Concept"(2019).

[7] P. Lavanyal and Kalluri Pooja, "traffic management for emergency vehicle based on visual sensing"(2023).

Smart Zebra Crossing with Smart Breaker

Owais Uddin
Department of Electrical & Electronics Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Shivendra Pratap Singh
Department of Electrical & Electronics Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Sushant Kumar Yadav
Department of Electrical & Electronics Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Gyanendra Kumar Verma*
Department of Electronics & Communication Engineering
Assistant Professor
Kanpur Institute of Technology
Kanpur.

***Corresponding Author**
Gyanendra Kumar Verma
Email Id: gyanendrakumarverma@kit.ac.in

ABSTRACT

In the ever-evolving landscape of urban planning and transportation, the intersection of technology and infrastructure has given rise to innovative solutions aimed at enhancing safety and efficiency One such ground breaking advancement is the integration of the Smart Breaker with a Smart Zebra Crossing System. This seamless combination of intelligent technologies promises to revolutionize pedestrian safety and traffic management, ushering in a new era of smart and secure urban mobility. In the event of emergencies or unexpected incidents, the Smart Breaker can swiftly reroute traffic and prioritize the passage of emergency vehicles, contributing to faster response times and improved safety outcomes. Utilizing embedded LED lights and sensors, the Smart Zebra Crossing System dynamically adjusts the visibility and markings of the crosswalk. During low visibility conditions or heavy traffic, the crosswalk can become more prominent, ensuring that pedestrians are easily seen by drivers. The system then communicates with the Smart Breaker to temporarily alter traffic signals, providing a safe window for pedestrians to cross the road.

Keywords: Arduino (UNO), Zebra Crossing, Smart Breaker, Servo Motor, IR Sensor.

1. Introduction

Smart Zebra Crossing with Smart Breaker marks a significant leap in enhancing pedestrian safety and traffic management in urban environments. Traditional zebra crossings have long served as pedestrian pathways, but the integration of smart technology takes this concept to a new level. This innovative system combines the traditional road-crossing functionality with advanced sensor-based technology and a Smart Breaker mechanism. [1]

The Smart Zebra Crossing utilizes sensors and cameras to detect the presence of pedestrians approaching the crossing. These sensors communicate with the Smart Breaker system, which intelligently controls traffic signals to ensure a safe crossing for pedestrians. [2] Unlike conventional traffic signals, the Smart Breaker can dynamically adjust signal timings based on real-time pedestrian traffic, optimizing the flow of both vehicles and pedestrians. The technology aims to enhance safety by providing pedestrians with a secure and efficient crossing experience. Additionally, the Smart Zebra Crossing contributes to traffic management efficiency by minimizing unnecessary stops for vehicles when there are no pedestrians present.

2. Literature Review

The integration of Smart Zebra Crossing with Smart Breaker represents a groundbreaking development in urban infrastructure, aiming to revolutionize pedestrian safety and traffic flow. This literature review explores the key aspects and findings related to this innovative technology.

Traditional zebra crossings have long been a staple in facilitating pedestrian movement across roadways. However, the advent of smart technology has prompted a reimagining of these crossings, leading to the development of Smart Zebra Crossings. These crossings show in Fig.1 which helps for waiting people and the detection of people crossing the street. Incorporate various sensor technologies, including cameras, to detect the presence of pedestrians in proximity. The central component of this system is the Smart Breaker, a dynamic traffic control mechanism that responds to real-time pedestrian traffic. The Smart Breaker communicates with the sensors embedded in the Smart Zebra Crossing,[2] allowing for adaptive adjustments to traffic signals.

Figure 1: Urban Pedestrian Detection: waiting people and street-crossing identification for safety and traffic

Researchers emphasize the importance of communication protocols between smart zebra crossings and breakers, ensuring seamless coordination for optimized traffic flow. The literature underscores the positive impact of such systems on reducing pedestrian accidents and enhancing overall urban mobility. However, challenges such as infrastructure integration, cost implications, and standardization issues warrant further exploration in future research to fully unlock the potential of Smart Zebra Crossings with Smart Breakers.

3. Components Required

3.1. Infrared (IR) Sensors

IR Sensors operate by detecting infrared radiation emitted or reflected by objects. They contain an IR source and a receiver. When an object enters the sensor's field, it alters the IR radiation reaching the receiver, triggering a response.

3.2. Arduino-UNO

It is a versatile microcontroller board based on the ATmega328P. It features digital and analog input/output pins, a USB connection for programming, and a power jack. The UNO can be programmed using the Arduino IDE, allowing users to create a wide range of electronic projects, from simple prototypes to complex gadgets.

3.3. Arduino-Nano

It is a compact microcontroller board, operates by executing code uploaded via USB. It features GPIO pins for interfacing with sensors, actuators, and other devices. The onboard processor interprets and executes the code, enabling it to perform a wide range of tasks, making it a versatile platform for various projects.

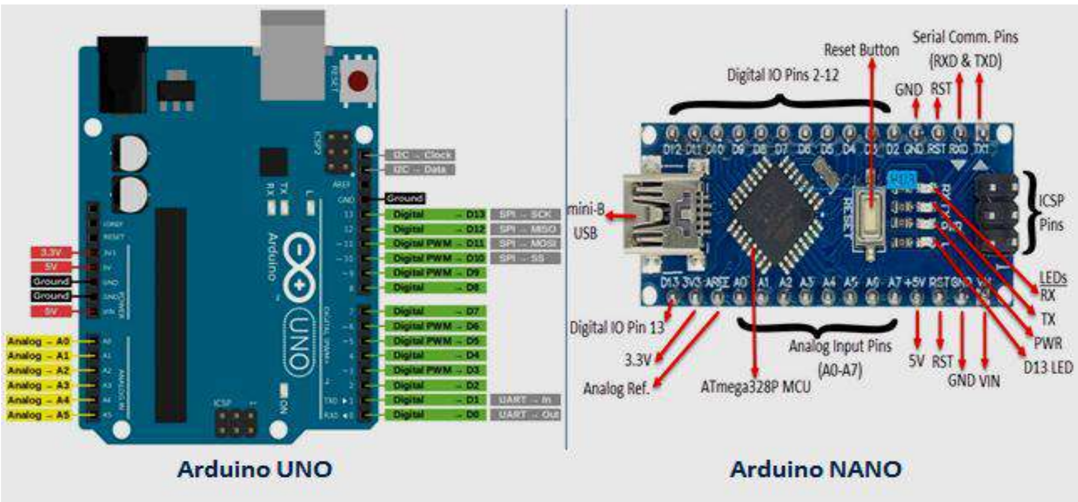

Figure 2: Arduino UNO and NANO Pin Configuration

3.4. Ultrasonic Sensors

Ultrasonic sensors work by emitting high-frequency sound waves and measuring the time it takes for the waves to bounce back after hitting an object. Using the speed of sound, these sensors calculate the distance to the object, providing accurate proximity measurements.

3.5. Servo Motor

It is a rotary actuator that precisely controls angular position. It operates by receiving signals from a control system, typically a microcontroller. The motor's feedback mechanism ensures accurate positioning, making it ideal for applications requiring precision, such as robotics, automation, and motion control systems.

4. Working Principle

A Smart Zebra Crossing with a Smart Breaker is an innovative traffic management system designed to enhance pedestrian safety.[4] The system integrates advanced technologies to create a responsive and intelligent crossing experience. The working principle involves the utilization of sensors, cameras, and communication systems. As pedestrians approach the zebra crossing, sensors detect their presence and activate the smart system. The Smart Breaker refers to a dynamic road surface embedded with pressure or weight sensors. When a pedestrian intends to cross, the Smart Breaker identifies the presence and activates LED lights embedded in the zebra crossing. These lights create a visible and dynamic pathway for pedestrians, increasing visibility for both drivers and walkers, especially in low-light conditions.[1]

Simultaneously, the Smart Zebra Crossing communicates with nearby traffic signals and adjusts the traffic flow accordingly. [1]It may trigger signals to alert drivers to slow down or stop, prioritizing the safety of pedestrians. This communication is facilitated through wireless technologies or an integrated network infrastructure.[2]In case of emergencies or special situations, the Smart Zebra Crossing[2] can be programmed to adapt to specific scenarios. For example, it could create a rapid and secure crossing for emergency vehicles or school children. Model of automated Smart Breaker with smart Zebra crossing system is shown in Fig.3. The integration of artificial intelligence and real-time data analysis allows the system to continuously optimize traffic flow and pedestrian safety.[1] The Smart Zebra Crossing with Smart Breaker is a forward-thinking solution that harnesses technology to create a safer and more efficient urban environment.

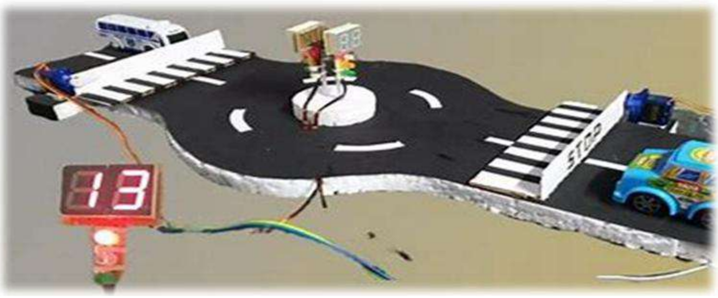

Figure 3: Model of automated Smart Breaker with smart Zebra crossing system

5. Flow Chart of Proposed Model

Designing a detailed flow chart for a Smart Zebra Crossing with a Smart Breaker[1] involves various components. Here, in Fig.4. I'll provide a simplified representation of the key components and their connections.

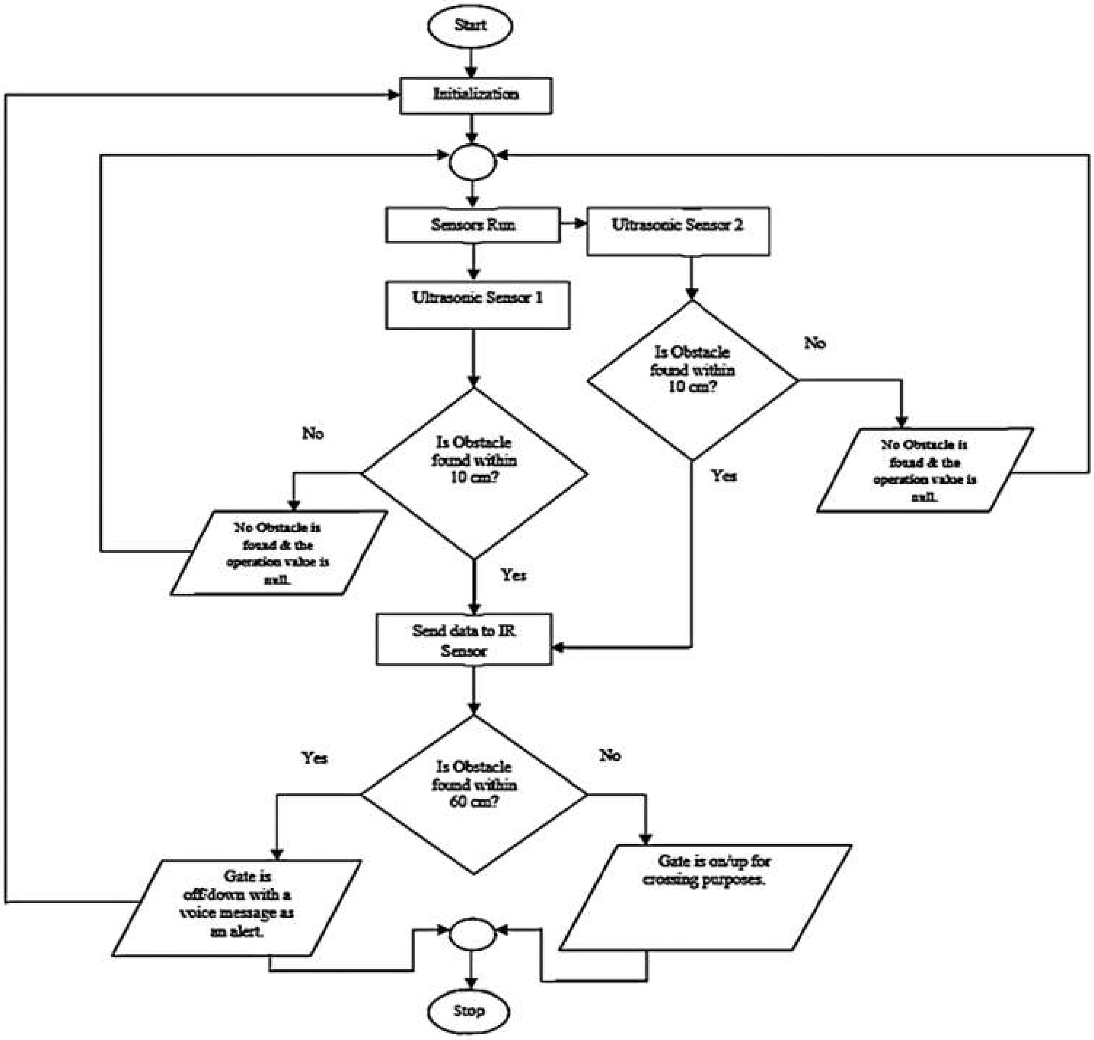

Figure 4: The flowchart of pedestrian safety and traffic management system

6. Conclusions

In conclusion, the implementation of a Smart Zebra Crossing with Smart Breaker marks a significant advancement in pedestrian safety and traffic management. This innovative system combines cutting-edge technology to enhance crosswalk safety, utilizing sensors and real-time data analysis.

The Smart Breaker ensures a responsive and efficient traffic flow by dynamically adjusting signals based on pedestrian and vehicular activity. With its ability to prioritize safety, this solution minimizes the risk of accidents and improves overall road safety. The integration of smart technologies not only revolutionizes traditional crosswalks but also sets a new standard for urban mobility, fostering a safer and more efficient transportation environment.

References

[1] Aditi Mane(2023) Design and Implementation of Smart Zebra Crossing using Arduino International advancedResearchJournalinScience,EngineeringandTechnology.Vol.10,Issue8,August2023.10.17148/IARJSET.202.10825

[2] Abhijit Pathak(2021) Cloud-based Smart Parking Reservation System using IoT. Conference Paper. https://www.researchgate.net/publication/353356478.September 2021

[3] R. Sundar, S. Hebbar and V. Golla, "Implementing Intelligent Traffic Control System for Congestion Control Ambulance Clearance and Stolen Vehicle Detection", *IEEE Sensors Journal*, vol. 15, no. 2, pp. 1109-1113, 2015.

[4] A M Muntasir Rahman(2021). An Automated Zebra Crossing using Arduino-UNO. Conference PaperFebruary2018.https://www.researchgate.net/publication/327820150.DOI:10.1109/IC4ME2.2018.8465496

[5] S J Suji Prasad(2020). Automatic Barrier Control in the Zebra crossing of Roads for Pedestrian Safety. IOP Conference Series: Materials Science and Engineering. IVC RAISE 2020. 1055 (2021) 012020. doi:10.1088/1757-899X/1055/1/012020

Lighting up the Future: Li-Fi Tech for Better Wireless Communication

Shriyansh Srivastava
Department of Electrical & Electronics Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Abhishek Agnihtri
Department of Electrical & Electronics Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Jai Menghani
Department of Electrical & Electronics Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Utkarsha Awasthi
Department of Electrical & Electronics Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Gyanendra Kumar Verma*
Department of Electrical & Electronics Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur.

***Corresponding Author**
Gyanendra Kumar Verma
Email Id: gyanendrakumarverma@kit.ac.in

ABSTRACT

Li-Fi tech is changing how we communicate wirelessly, bringing faster data transfer and efficiency. Instead of using traditional radio waves, Li-Fi uses visible light from LED lights to transmit data. This paper looks at the basics, tech improvements, and possible uses of Li-Fi for improving communication systems. We'll talk about Li-Fi's main features like high data speeds, low delays, and how it avoids interference. Learn about the reasons Li-Fi can transmit data faster than regular Wi-Fi, meeting the demand for faster connections.

The paper will discuss the practical implementations and challenges associated with Li-Fi deployment, including considerations for scalability, interoperability and security by examining case studies and ongoing research initiatives.

Keywords: Li-Fi(Light-Fidelity), LED(Light Emitting Diode), Photo detector; RF(Radio Frequency), Energy

1. Introduction

In 2011, Professor Harold Haas from the University of Edinburgh in the UK suggested an idea about the new form of wireless network technology which is named as “Data through illumination” [1]. And to implement this he used fiber optics to send data through LED light bulbs. In our interconnected world, where the demand for faster and more reliable wireless communication continues to grow, researchers and innovators are tirelessly exploring new avenues. One such avenue that has captured the imagination of scientists and engineers alike is LiFi technology, a revolutionary approach to wireless communication that utilizes light to transmit data. LiFi stands for "Light Fidelity," and it offers a promising alternative to traditional technologies like WiFi.[3]

With the help of this technology we can transfer data at speed of more than 10GB/s and its bandwidth ranges upto 400THz-800THz.The increasing demand for faster and more efficient wireless communication has led to a spectrum crunch in traditional technologies. WiFi, while widely adopted, faces limitations in terms of bandwidth and congestion. LiFi emerges as a potential solution to these challenges, offering a new frontier for data transmission that is not only fast but also secure and efficient.

This research paper is structured to provide a comprehensive understanding of LiFi technology. We will begin by exploring the historical development of LiFi and its theoretical foundations. Subsequently, we will delve into the technology's architecture, protocols, and standards. The paper will also examine real-world applications, challenges faced by LiFi, and potential directions for future research and development.[5]

2. Literature Review

LiFi, short for Light Fidelity, relies on the use of LED bulbs to transmit data through light signals. Unlike WiFi, which uses radio waves, LiFi utilizes the visible light spectrum. This spectrum is divided into tiny, rapid pulses of light that carry information. The receiver, typically a photodetector, captures these light signals and converts them back into data. Picture a scenario where your desk lamp not only brightens your workspace but also seamlessly connects your devices to the internet. LiFi in everyday life offers the prospect of faster, more secure connections in homes, offices, and public spaces. As the number of connected devices continues to rise, LiFi provides a promising solution to meet the growing demand for data transfer. LiFi boasts inherent security advantages. Since light signals cannot penetrate walls, the risk of unauthorized access is reduced.[6] This characteristic makes LiFi a secure option for environments where data privacy is paramount. As the world becomes increasingly connected, the importance of secure communication cannot be overstatedly-Fi has emerged as a robust bi-directional network solution, offering a user experience akin to Wi-Fi. The literature emphasizes the bidirectional nature of Li-Fi, allowing not only data reception but also transmission through the same light medium. This bidirectional capability enhances the versatility of Li-Fi, making it suitable for a wide array of applications.

An important aspect highlighted in recent literature is the anticipation of a substantial increase in connectivity requirements over time. As the number of connected devices surges and data-intensive applications become more prevalent, there is a growing need for communication technologies that can keep pace with this escalating demand.[2] This dual emphasis on performance and energy efficiency in Fig.1 is indicative of the concerted efforts to make Li-Fi a sustainable and eco-friendly communication solution. Performance enhancement is a multifaceted objective in Li-Fi development.

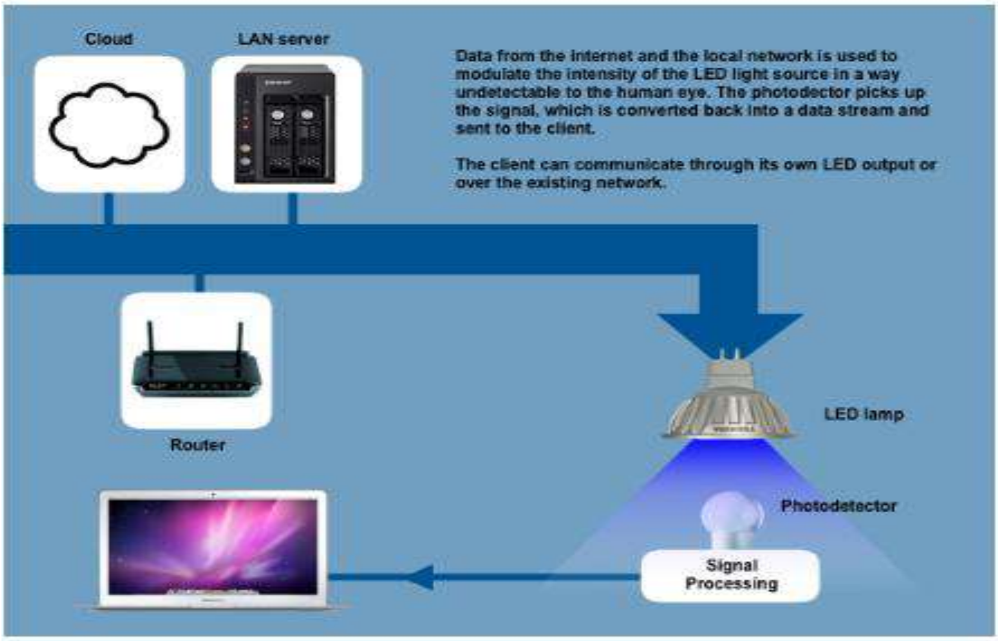

Figure 1: Li-Fi (Light Fidelity): The Future Technology in Wireless Communication [1]

3. Components required for Li-Fi system

3.1. Light Emitting Diodes (LEDs)

LED have transcended their role as traditional light sources and found a groundbreaking application in the realm of communication technology, specifically in the development of LiFi, or Light Fidelity. The use of LEDs in LiFi has significant implications for the future of wireless communication.

3.2. Photo Detectors

Photo detectors are like the eyes of LiFi, a cool technology that uses light for wireless communication. In simple terms, LiFi is like using light bulbs to send messages instead of Wi-Fi, which uses radio waves. Photo detectors are essential in this process because they catch the light signals and turn them into electrical signals that can be used to send and receive data.

3.3. Batteries

Batteries serve as the lifeblood of LiFi (Light Fidelity) systems, powering the devices essential for the functioning of this innovative wireless communication technology. LiFi represents a revolutionary approach to data transmission, utilizing visible light to carry information through modulated light signals.

3.4. Speaker/Display/Router

One of the essential output components in a LiFi system, are responsible for converting the modulated light signals into audible data. By harnessing light waves for data transmission, LiFi offers a unique advantage over traditional radio frequency (RF) communication systems. The utilization of speakers in LiFi allows for the delivery of high-quality audio, for users.

4. Working Principle of LiFi System

LiFi, or Light Fidelity, is an innovative wireless communication technology that employs light waves to transmit data, offering a promising alternative to traditional radio frequency (RF) communication systems. The working principle of LiFi is shown in Fig.2 revolves around the use of light-emitting diodes (LEDs) as the primary medium for data transmission. Here's a breakdown of how LiFi works in simple terms.[2] At its core, LiFi operates by modulating the intensity of light emitted by LED bulbs to convey information. The LEDs flicker at a rate that is imperceptible to the human eye, allowing them to transmit data rapidly. This flickering is the language of LiFi, and it's how information is encoded and sent from a transmitter to a receiver.

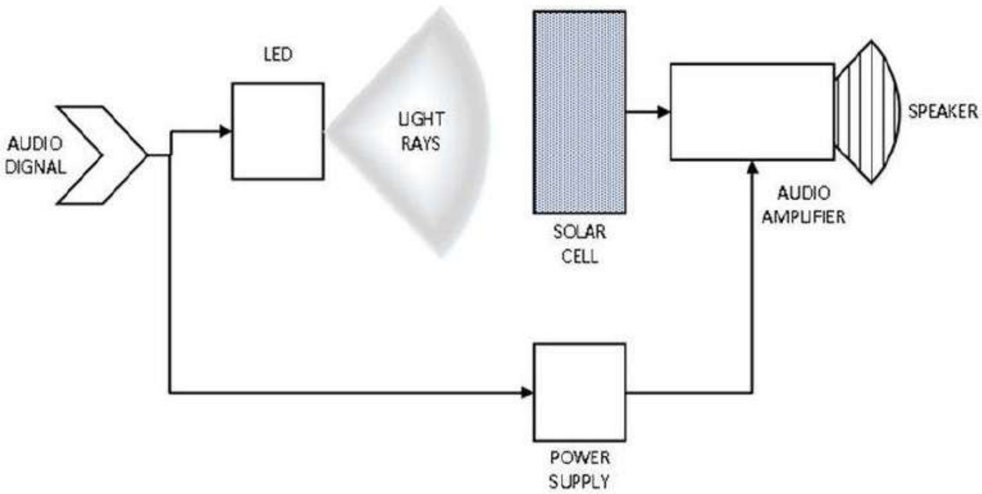

Figure 2: Block diagram of a simple Li-Fi network [2]

The transmitter is usually an LED light source equipped with a special microchip that can rapidly turn the light on and off. This on-off modulation corresponds to binary code, where the presence of light signifies a "1," and the absence of light signifies a "0."

On the receiving end, a photo detector is used to capture the light signals and convert them back into electrical signals. This photo detector can be a simple sensor, much like the ones used in TV remote controls, but more advanced versions are employed for higher data transfer rates.

LiFi communication operates on the principle of Visible Light Communication (VLC). VLC uses the visible spectrum of light, which is the range of colors that the human eye can perceive. Different colors correspond to different wavelengths of light, and LiFi can use various colors to transmit multiple streams of data simultaneously [4].

Moreover, LiFi offers enhanced security features. Unlike Wi-Fi, which can penetrate walls and travel over longer distances, LiFi's range is limited to the area illuminated by the light source. This inherently makes it more secure as the signal is confined to a specific space, reducing the risk of unauthorized interception.

5. Case Study and Practical Implementation

5.1. LiFi in Office Environments

In a bustling office environment where Wi-Fi congestion and security concerns were persistent challenges, a company decided to implement LiFi technology to enhance connectivity and data transmission. LED lights were installed throughout the office space, serving a dual purpose as both lighting fixtures and data transmitters. Employees experienced a significant improvement in internet speeds, enabling seamless video conferencing, file sharing, and overall productivity. The confined nature of LiFi signals within designated areas enhanced data security, reducing the risk of unauthorized access. This successful implementation showcased the practical benefits of LiFi in optimizing wireless communication in office settings.

5.2. LiFi in Smart Classroom

A forward-thinking educational institution embraced LiFi technology to transform traditional classrooms into smart learning environments. By installing LiFi-enabled LED lights in classrooms, students gained access to high-speed internet for interactive learning experiences. Each desk was equipped with LiFi receivers, allowing students to connect their devices to the LiFi network.

5.3. LiFi in Retail Spaces

A retail chain sought to enhance the shopping experience for customers by implementing LiFi technology in its stores. LiFi-enabled LED lights were strategically placed to cover the entire store, creating a high-speed wireless network. Customers could download product information, reviews, and promotions instantly by connecting to the LiFi network. The precise nature of LiFi signals allowed for targeted marketing, sending promotions to specific sections of the store. The implementation not only improved customer engagement but also provided valuable data analytics for the retailer. This case showcased how LiFi can be practically applied to enhance customer experiences and streamline operations in retail environments[7].

5.4. LiFi in Public Transportation Hubs

A major transportation hub, such as an airport or train station, experiences a high volume of users requiring fast and secure connectivity. LiFi technology was deployed in waiting areas, lounges, and ticketing counters to address the connectivity challenges faced in crowded public spaces. Travelers could access high-speed internet through LiFi-enabled LED lights, facilitating quick check-ins, access to real-time transportation updates, and seamless communication.

6. Challenges

Power Consumption: LiFi systems, particularly those involving mobile devices, may face challenges related to power consumption. Transmitting and receiving data through light sources can be energy-intensive, impacting the battery life of portable devices. Optimizing energy efficiency in LiFi transceivers and devices is a crucial challenge for future implementations.

Cost of Implementation: The cost associated with implementing LiFi infrastructure, including LiFi-enabled LED fixtures and compatible devices, remains a challenge for widespread adoption. As with any emerging technology, economies of scale and advancements in manufacturing processes will contribute to cost reduction.

Education and Awareness: The successful adoption of LiFi depends on the education and awareness of end-users, businesses, and policymakers. Overcoming misconceptions and fostering understanding about the benefits and capabilities of LiFi is essential for its integration into various sectors.

7. Conclusions

In conclusion, LiFi is like a bright idea shining in the world of wireless communication. It uses light, just like the one from our bulbs, to send information super quickly. LiFi is like a superhero, solving problems that other wireless systems sometimes face.Even with these challenges, we can see a bright future for LiFi. It might join forces with super-fast 5G and 6G networks, making our internet even better. LiFi could also help our gadgets talk to each other in a smart way, making our homes and cities more connected.

So, in the story of wireless communication, LiFi is an exciting chapter with lots of potential. As researchers and tech wizards keep working on it, we can look forward to a world where LiFi brightens up our lives and connects us in ways we never imagined.

References

[1] Dinesh Khandal, Sakshi Jain "Li-Fi (Light Fidelity): The Future Technology in Wireless Communication" International Journal of Information & Computation Technology. ISSN 0974-2239 Volume 4, Number 16 (2014).

[2] Promise Elechi, Sunny Orike, Njumoke Abiola-Oseni, Application of Light Fidelity Network for Improved Indoor Wireless Communication System, Journal of Electrical Engineering, Electronics, Control and Computer Science – JEEECCS, Volume 6, Issue 20, pages 15-20, 2020

[3] Kratika Khandelwal, Sandeep Kumar Jain (A Review Paper on Li-Fi Technology) *IIJIRST || National Conference on Innovations in Micro-electronics, Signal Processing and Communication Technologies (V-IMPACT-2016) February 2016 || ISSN: 2349-6010*

[4] R.Karthika, S.Balakrishnan "Wireless Communication using Li-Fi Technology" SSRG International Journal of Electronics and Communication Engineering (SSRG-IJECE) volume 2 Issue 3 March 2015.

[5] Ravi Prakash, Prachi Agarwal "The New Era of transmission and Communication Technology : Li-Fi (Light Fidelity) LED & TED Based Approach", International Journal of Advanced Research in Computer Engineering &Technology (IJARCET) Volume 3, Issue 2, February 2014.

[6] Nivrutti, D.V., Nimbalkar, R.R. (2013). Light-Fidelity: A Reconnaissance of Future Technology, International Journal of Advanced Research in Computer Science and Software Engineering (IJARCSSE), Vol. 3 Issue 11, October 2013

[7] Singh, J., Vikash (2014). A New Era in Wireless Technology using Light-Fidelity, International Journal of Recent Development in Engineering and Technology (IJRDET), Vol. 2 Issue 6, June 2014 tb

Study on Designing Method of Analog to Digital Converter to Improve Performance

Abhay Raj
Department of Electronics and Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Aditya Arya
Department of Electronics and Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Mritunjay Singh
Department of Electronics and Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Mr. Bipin Gupta
Department of Electronics and Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Ankita Tiwari*
Department of Electrical and Electronics Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

***Corresponding Author**
Ankita Tiwari
Email Id: ankita.tiwari@kit.ac.in

ABSTRACT

In this paper we are studying the calculating method for Analog to Digital converter performance. The parameters are continually simulated during design of ADC to improve performance. The ADC's output data, which is used to calculate the attribute values. With the rapid development of electronic information, acquiring dynamic analog to digital converter parameter is becoming more and more important. Coherent sampling is a basic challenge of the spectrum test for ADC, mostly due to the high accuracy of the excitation signal required for coherent sampling. As a result, incoherent sampling in the actual test cannot be avoided.

Keywords: Resolution, Power Consumption, Flash ADC, and MATLAB

1. Introduction

Digital circuits have an advantage over analog circuits in processing, transmission, and storing because to the advancement of CMOS technology. To convert natural signals to digital signals, a bridge ADC is necessary because they are analog signals. Therefore, while building a circuit, assessing the ADC's performance is essential. Different approaches have been put forth to evaluate the performance of ADCs. Stepping through the input ramp signals [1] or checking the input signals using a distribution histogram [2] can be used to assess the INL and DNL of the ADC. Through the use of spectrum analysis [4] and the sine wave fitting method [3], the dynamic performance parameters of the ADC are determined. Typically, the ADC's static and dynamic parameter tests are conducted independently.

A MATLAB software [5] that can test the static and dynamic parameters of the ADC simultaneously has been presented as a solution to the problem. There are three sections to the paper: Section 2 delineates the testing principle of ADC and its MATLAB implementation; Section 3 presents the ADC testing code verification; and Section 4 provides an overview of the suggested ADC parameter testing methodology.

Transistors with lower supply voltages that are faster and smaller have been made possible by advances in CMOS technology. This has increased the efficiency of digital circuitry but also increased the difficulty of designing analog and mixed-signal circuits. Smaller components and less voltage headroom make it harder to provide matched and ratioed voltages and currents with low noise, which is crucial for data conversion. Nonetheless, as technology scales, transistor timing qualities improve, prompting some IC designers to assert that timing resolution has surpassed voltage resolution in contemporary technologies.

1.1. Principle of ADC Testing & MATLAB Code Implementation

This article talks about the relationship between input and analog quantity and output digital code, or ADC characteristic. The static and dynamic parameters define the ADC's performance. The ADC being tested receives a sinusoidal signal as input, and MATLAB is used to analyze the output data in order to determine these values.

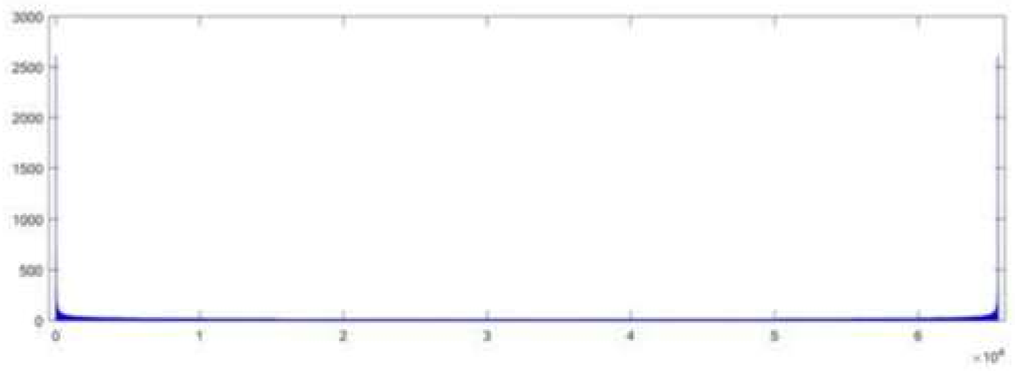

Figure 1: Probability Density Map

1.2. Method of Testing Static Features

The error between the real and ideal output curves is referred to as the static characteristic of the ADC [6]. The nonlinearity of the ADC static parameters is the main topic of discussion. The tone sign signal used as the input signal has the following probability density function:

$$P(x) = 1/ (\pi\sqrt{} (1-x^2) \qquad \text{…………(1)}$$

Figure 1 displays the probability density map of a perfect 16-bit ADC output set.
The output's probability density of an actual ideal ADC with a sample size of $\mathbf{2^{20}.}$ It suggests that The probability distribution can be used to obtain the ADC characteristic curve.

$$\text{Code distribution} = -\cos\left(\frac{\pi F(x)}{\mathrm{sum(code)}}\right) \qquad \text{………(2)}$$

There, the number of code words is indicated by sum (code), and F(x) can be calculated from the p(x) integral. This step allows one to calculate the code word's width.

$$\Delta_k = \text{code}(k+1)-\text{code}(k) \qquad \text{………(3)}$$

The average of all code word widths equals the length of one LSP.

$$LSB= \mathrm{sum}(\Delta_k)/k \qquad \text{………(4)}$$

DNL and INL can now be computed.

$$\mathrm{DNL}(k)= \frac{\Delta k}{LSB} - 1 \qquad \text{………(5)}$$

$$\mathrm{INL}(k)= \sum_{i=0}^{k-1} \mathrm{DNL}(i) \qquad \text{………(6)}$$

1.3. Dynamic Parameter Testing Procedure

The energetic performance matric for the ADC, which are crucial in suppressing noise and harmonics [6]. These parameters comprise spurious free dynamic range, total harmonic distortion, effective number of bits, signal-to-noise and signal-to-noise distortion ratios, and quantization noise. spectral examination of ADC's dynamic performance. The tone sine signal used as the ADC input has a whole range of amplitude, from -2dBFs to -1dBFs. The input signal's period number is N1, and its frequency is indicated as fin. The number of data points is and the sampling frequency is FS. analysed is 2N2. To avoid duplicated FFT data both N1 and 2N2 should be prime number

$$F_m = \frac{N_1}{2^{N_2}} F_s \qquad \text{………(7)}$$

The digital from the ADC is first processed using the Fast Fourier transform (FFT). Next, using the resulting spectrum diagram, determine the signal's principal peaks and harmonics. Subsequently, the signals' strength is computed. There, the total squared result and noise power are equal.

$$P_{noise} = \sum A_{date}^2 \qquad \text{………(8)}$$

Main peak power is equivalent to signal power.

$$\mathbf{P_{signal} = P_{HD.1}} \qquad \text{.........(9)}$$

At last, the ADC dynamic parameters are computed ....(10)

$$\mathbf{SNR = 10\log_{10}\frac{P_{signal}}{P_{noise}} = 20\log_{10}\frac{A_{signal}}{A_{noise}}}$$

$$\mathbf{SNDR = 10\log_{10}\frac{P_{signal}}{P_{noise}+P_{HD}} = 20\log_{10}\frac{A_{signal}}{A_{noise}+A_{HD}}} \qquad \text{.........(11)}$$

$$\mathbf{ENOB = \frac{SNDR - 1.76}{6.02}} \qquad \text{.........(12)}$$

$$\mathbf{THD = 10\log_{10}\frac{\sum_{i=2}^{m} A_{HD.1}^2}{A_{HD.1}^2}} \qquad \text{.........(13)}$$

$$\mathbf{SFDR = \frac{P_{HD.1}}{\max(P_{HD2.9})}} \qquad \text{.........(14)}$$

1.4. MATLAB Test Code Implementation

Fig. 2 depicts the suggested MATLAB code implementation flow. Users must input the ADC sampling frequency, the quantity of bits that the ADC intended, and the FFT start point number. Users can also select between static analyses, dynamic analysis, and add windows. Then, the aforementioned idea be accustomed to gathering the code. Finally, the graph will be produced.

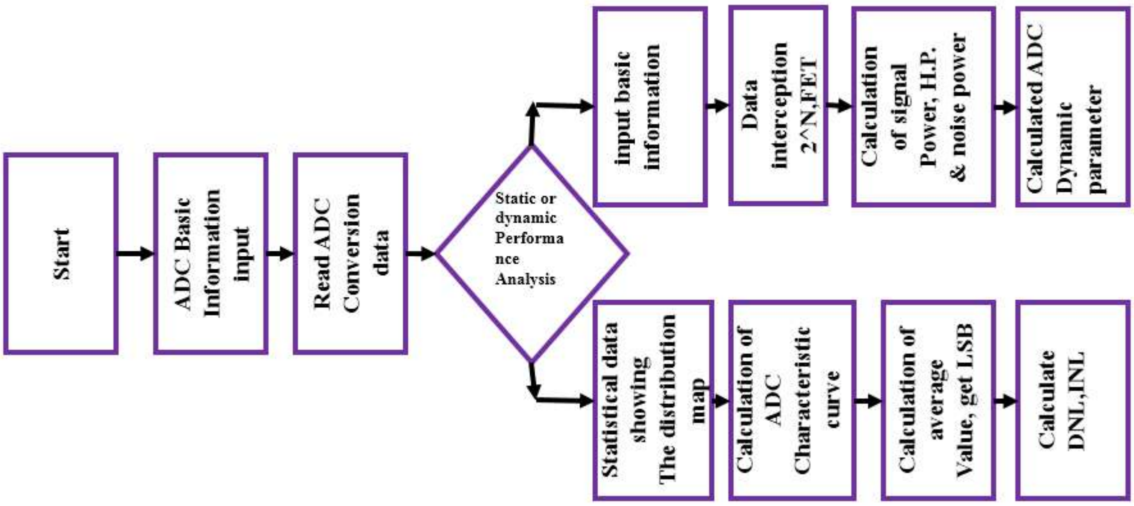

Figure 2: ADC static and dynamic analysis flow charts

2. Flash ADC Architecture

The ADC uses 24-1=15 comparators with a resistive divider providing a reference voltage of one least significant bit (LSB). When the analog input voltage of a comparator exceeds the reference voltage, it generates a "1"; if not, it generates a 0.

2.1. Resistor String

Two resistances split the reference voltage in a 'n' bit flash ADC, dividing it to feed a comparator. High resistance minimizes power dissipation, but should be reasonable and lower than input comparators' resistance.

2.2. Comparator

The "n" bits flash-ADC architecture uses 2n-1 differential amplifiers as comparators. Initially, a complex differential amplifier was implemented, but this design resulted in improved gain and power savings. The comparator outputs are at when the input signal voltage is lower than the reference value, logic '0', and '1' when input signal voltage is higher.

3. Conclusion

The primary focus of this study is to present a MATLAB approach for testing the fundamental static and dynamic performance parameters of an ADC. This document also specifies the need to test the ADC's input signal simultaneously. This formula can be derived and provides how many samples are required to do the ADC static performance test. The program's dependability is confirmed through an analysis of the optimal 16-bit ADC's output data.

References

[1] Max S.: Fast accurate and complete ADC testing. C. Test Conference, 1989. Proceedings. Meeting the Tests of Time., International. IEEE. 111--117(1989)
[2] Martins R C, Serra A M C.: Automated ADC characterization using the histogram test stimulated by Gaussian noise. J. IEEE Transactions on Instrumentation and Measurement. 48(2), 471474(1999)
[3] Kollár I, Blair J J.: Improved determination of the best fitting sine wave in ADC testing. J. IEEE Transactions on Instrumentation and Measurement. 54(5), 1978-1983(2005)
[4] Serra A C, da Silva M F, Ramos P M, et al.: Combined spectral and histogram analysis for fast ADC testing. J. IEEE Transactions on Instrumentation and Measurement. 54(4), 16171623(2005)
[5] Moore H.: MATLAB for Engineers. Pearson (2017)
[6] Allen P E, Holberg D R.: CMOS analog circuit design. Oxford university press (1987).
[7] E. Säll, "Implementation of Flash Analog-to-Digital Converters in Silicon-On-Insulator Technology," Linköping Studies in Science and Technology, Thesis No. 1213, ISBN 91-85457-79-5, Linköping, Sweden, Dec. 21, 2005.
[8] Z. Tao, M. Keramat, "A Low-Voltage, High-Precision Sample-and- Connecticut Symposium on Microelectronics and Optoelectronics, 2001.

Comparative Review of FACTS Devices with Various Faults

Vikrant Singh
Electrical and Electronics Department
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Shaigali Singh
Electrical and Electronics Department
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Saurabh Yadav
Electrical and Electronics Department
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Anjali Verma
Electrical and Electronics Department
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Vaibhav Shukla*
Electrical and Electronics Department
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

***Corresponding Author**
Vaibhav Shukla
Email Id: vaibhav.shukla@kit.ac.in

ABSTRACT

In recent times, there has been a substantial increase in power demand, while the expansion of power generation and transmission faces limitations due to resource constraints and environmental regulations. Transient stability control is crucial for ensuring the steady operation of power systems during significant disturbances and faults, making it a focal point of research. Flexible AC transmission systems (FACTS) controllers have primarily addressed steady-state control issues in power systems. The modern power grid demands advanced technologies to enhance reliability, security, and profitability, ultimately improving power quality. Concerns like voltage stability, security, and power profile are pivotal for achieving optimal performance. Regulatory constraints on network expansion contribute to diminished stability margins and an elevated risk of voltage collapse during faults and high demand for reactive power.

To tackle these challenges, Flexible AC Transmission System (FACTS) devices, based on power electronic semiconductor devices, play a crucial role. These FACTS controllers, which fall into categories such as shunt, series, series-series, and series-shunt, encompass devices like Static VAR Compensator (SVC), Thyristor Controlled Series Capacitor (TCSC), Static Synchronous Compensator (STATCOM)and Static Synchronous Series Compensator (SSSC). This paper seeks to compare the reviews of performance of these FACTS devices under fault conditions. FACTS devices demonstrate the capability to manage active and reactive power flows in a transmission line by controlling its series and shunt parameters.

Keywords: FACTS, Static VAR Compensator, TCSC, SSSC, STATCOM, Electrical Faults etc.

1. Introduction

Modern power systems are complex and require advanced technologies to improve reliability, security, and profitability. Voltage stability, security, and power profile improvement are crucial for power quality improvement. However, construction of new transmission lines and power stations increases system operation and costs. Regulatory limitations on network expansion reduce stability margins, increasing the risk of voltage collapse. Voltage collapse occurs when a system is faulted or heavily loaded, leading to an increase in reactive power demand. Reactive power imbalance occurs when a system is faulted or heavily loaded, causing voltage fluctuation. Reactive power balance can be regained by connecting a device to the transmission line, such as FACTS devices, which can inject or absorb reactive power based on system requirements.

FACTS devices are categorized by 4 ways:

- Shunt Type controller : -i.e. TCSC, TCPAR and SSSC
- Series Type controller: - i.e. STATCOM and SVC
- Series-Series Type controller:- i.e. IPFC
- Series-Shunt Type controller: - i.e. UPFC, IPFC etc.

2. Literature Review

This research paper discusses and compares various FACTS devices. FACTS devices are power electronic devices that enhance the transmission capability of the power system.The paper categorizes FACTS devices based on their control strategy (series, shunt, or combined) and their power electronic device (variable impedance or voltage source converter). The paper gives a brief overview of some of the common FACTS devices, such as SVC, TCSC, TCPST, STATCOM, SSSC, and UPFC. It explains their basic structure, operation, and applications in the power system.[1]

The research paper discusses stability analysis and optimal placement of FACTS devices in power systems. Stability analysis evaluates a power system's ability to maintain normal operation under disturbances or faults. The paper demonstrates how FACTS devices can enhance voltage and transient stability in a single machine infinite bus (SMIB) system by injecting reactive power, damping oscillations, and controlling power flow. The paper uses optimization methods like genetic algorithm, particle swarm optimization, and sensitivity analysis to determine the optimal placement of FACTS devices.[2]

The research paper explores power system stability, focusing on the use of FACTS devices to improve transient and dynamic stability. It compares the cost and technical benefits of different FACTS devices based on performance, installation, and operation. The paper suggests that UPFC is the most versatile and effective device for stability enhancement, but also the most expensive. The paper also provides information on the characteristics and functions of different FACTS devices. [3]

This paper discusses the new generation of FACTS devices, primarily used for reactive power compensation. These devices offer various advantages, including controlling active and reactive power flow. The IPFC and UPFC, a combination of SSSC and STATCOM, offer more flexibility in controlling power flow in transmission lines. The paper explains the basic configuration, modes of operation, and mathematical expressions of each device, and highlights their advantages such as system stability, voltage regulation, power quality, line capacity, and efficiency improvement. [4]

The study suggests a technique that makes use of the voltage breakdown prediction index and the voltage stability margin factor to identify weak buses in power systems. It uses particle swarm optimization to place FACTS devices in the best possible sizes and locations in order to increase stability of voltage in the Iraqi transmission grid. Simulation experiments on the Diyala-132 kV network validate the technique, demonstrating that BLDZ is the weakest bus and that line (DAL3-BLDZ) and bus (MQDA) are the best places for TCSC and SVC. [5]

The paper discusses the significance of FACTS controllers in power system economy and efficiency, highlighting their ability to improve stability. It discusses designing damping controllers, coordinating control methods, and comparing their performance. It also discusses real-world examples, utility experiences, and semiconductor technology developments. The text also discusses FACTS's applications in the deregulated power market and optimal power flow, and briefly reviews them.[6]

The paper discusses the benefits, application and environmental impact of FACTS devices. The technology offers the advantage of supplying reactive power for various scenarios, ensuring stable grid conditions, at a lower cost and shorter installation time compared to new transmission lines. FACTS devices improve synchronous grid interconnection efficiency and cost-effectiveness by overcoming stability issues, enhancing power transmission capability and reducing transmission losses. FACTS devices have a positive environmental impact by enabling power transmission over long distances with minimal right-of-way impact. [7]

The paper discusses the impact of three types of FACTS devices (SVC, TCSC, and UPFC) on a power system's power flow and power oscillation damping. It compares different POD signals based on linear and nonlinear control methods and their impact on system stability and damping ratio in the inter-area mode. The paper suggests TCSC as the best device for improving damping and transient stability due to its better controllability and location. It also recommends installing PSSs for damping local oscillation modes.[8]

The paper discusses the use of FACTS devices, including shunt, series, and combination controllers, in power system operation and planning. It explores methods for optimal placement and sizing using analytical, conventional, meta-heuristic, and hybrid approaches. The paper also discusses challenges and future research directions in FACTS devices, including integrating renewable energy sources, reducing installation costs, comparing devices using the same objective function, and developing advanced algorithms. It also discusses optimization techniques for FACTS devices. [9]

The research paper explores the use of FACTS devices for stability enhancement in power systems, specifically on a 3-machine 9-bus system. It discusses the modeling, interface, and control strategies of three types of FACTS devices: SVC, TCSC, and UPFC. The paper uses particle swarm optimization (PSO) technique to optimize parameters, minimize losses, and improve system voltage profile. UPFC is found to be the most powerful and flexible FACTS device, controlling voltage, impedance, phase angle, and power flow. [10]

The research paper explores the use of FACTS devices for stability enhancement in power systems, specifically on a 3-machine 9-bus system. It discusses the modeling, interface, and control strategies of three types of FACTS devices: SVC, TCSC, and UPFC. The paper uses particle swarm optimization (PSO) technique to optimize parameters, minimize losses, and improve system voltage profile. UPFC is found to be the most powerful and flexible FACTS device, controlling voltage, impedance, phase angle, and power flow. [11]

Beginning in the late 19th century, AC power transmission had low voltage levels and limited supply areas. It overcome obstacles including voltage swings, power oscillations, stability problems, and unequal load sharing as it developed over time, moving towards longer transmission lengths and higher power transfers. Due to changes in load structure and the production of renewable energy, power systems today must meet new requirements. SVCs, TCSCs, and VSC-based systems are examples of flexible AC transmission systems (FACTS) that offer regulated active power transfer and quick reactive power adjustment. The success of FACTS installations is demonstrated by the more over 600 SVCs and 4000 VSC configurations that have been deployed globally.[12]

The ideal location of several Flexible AC Transmission Systems (FACTS) devices in a deregulated environment is thoroughly examined in this review study. It covers a number of devices, including IPFC, TCSC, STATCOM, UPFC, and UPQC. Various optimization methods, hybrid meta heuristics, and optimization methods utilizing optimal power flow (OPF) are covered in this work. The review, which focuses on STATCOM, SVC, UPFC, IPFC, and TCSC, is based on a number of papers and conferences. Hybrid optimization techniques and their application are also covered in this paper.[13]

Flexible AC Transmission System (FACTS) devices are installed in substations to enhance electric power transmission and distribution. However, they can generate electromagnetic fields that can interfere with nearby electronic devices. This paper provides information on equipment immunity requirements and potential mitigation options. It discusses five FACTS stations and their environments, including 47CFR15 and MIL-STD 461E standards.[14]

The paper presents a procedure using the contingency severity index (CSI) to place multi-type FACTS devices to alleviate line overloads. The method considers TCSC and UPFC for steady-state analysis, and uses genetic algorithms to solve the optimization problem. The approach is tested on a 9-bus test system, and it is found that the system security margin cannot be improved further after placing an optimal number of multi-type FACTS devices. The 9-bus test system evaluates the performance of these approaches.[15]

3. Methodology

- **Step 1:** Modelling of FACTS Devices and fault network system (3 phase).
- **Step 2:** Simulation of FACTS devices under different fault conditions.
- **Step 3:** Report on the basis of performance of different FACT Devices under particular fault conditions.

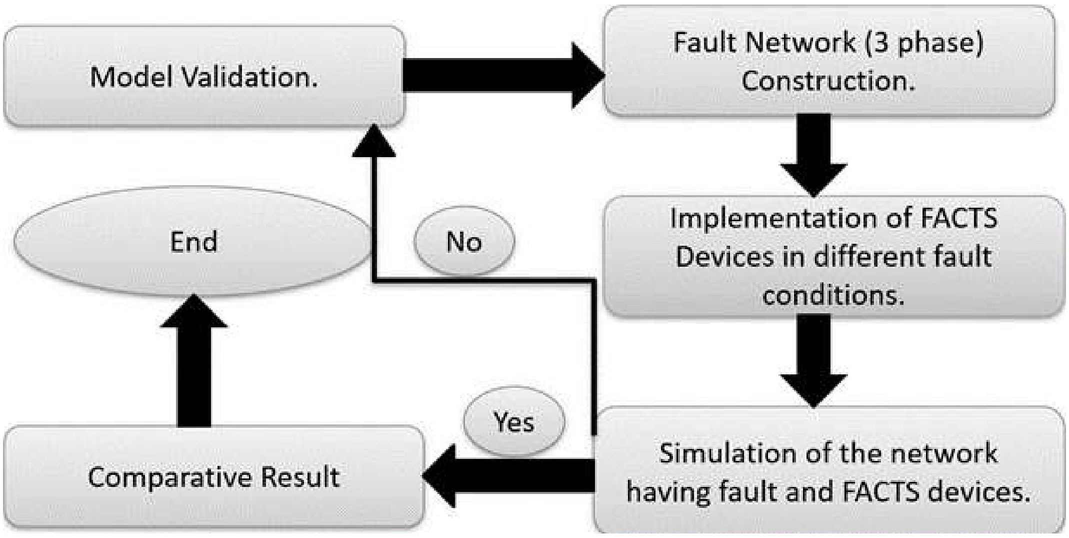

4. Experimental Setup

Thyristor Controlled Series Capacitor (TCSC)

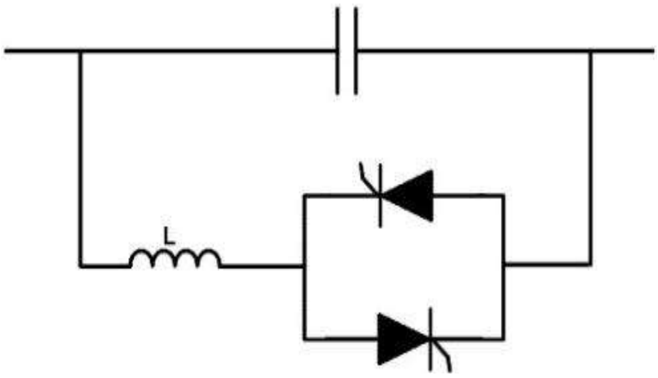

Figure 1.2: Thyristor Controlled Series Capacitor**(TCSC)**

Static VAR Compensation (SVC)

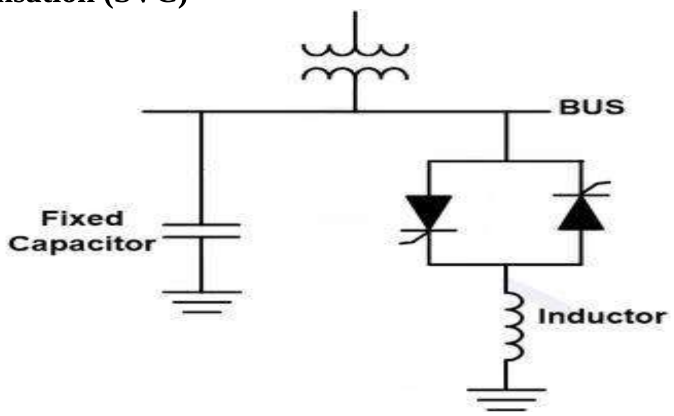

Figure 1.3: StaticVARCompensation(SVC)

Static Synchronous Series Compensator (SSSC)

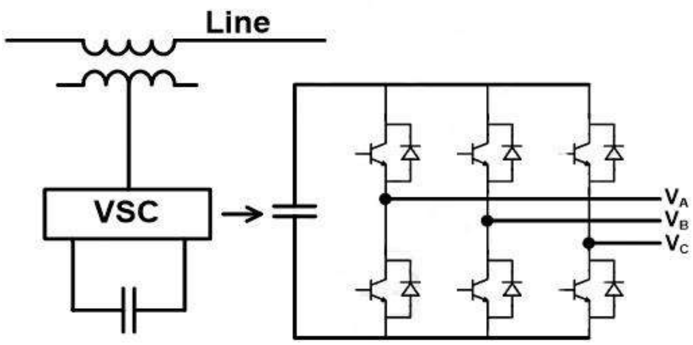

Figure 1.4: Static Synchronous Series Compensator

Static Synchronous Compensator (STATCOM)

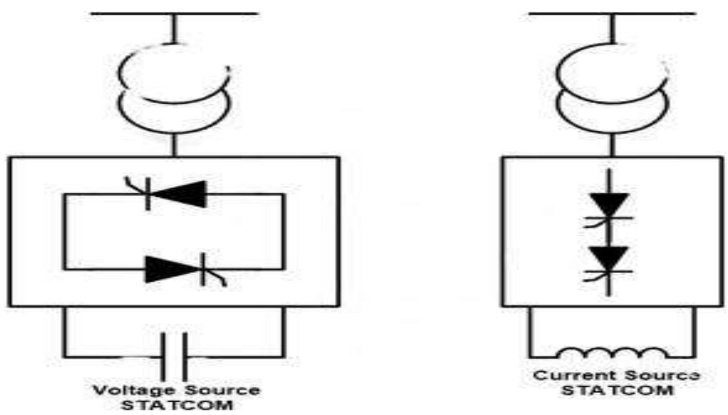

Figure 1.5: Static Synchronous Compensator (STATCOM)

5. Future Scope

The future scope of research in the comparison of FACTS devices could include the following areas:

- Efficiency and Performance Optimization
- Integration with Renewable Energy Sources
- Cybersecurity and Resilience
- Smart Grid Integration
- Environmental Impact Assessment
- Machine Learning and Artificial Intelligence Applications

6. Conclusion

The study of comparison of FACTS devices explains the following results:-

STATCOM	High	High	High	High
SVC	Moderate	Moderate	Moderate	Moderate
TCSC	Moderate	Low	Moderate	Low
SSSC	High	Low	Moderate	Moderate

References

[1] Reena Singh, Pallavi Bondriya, Mitali Kushwaha, "Analysis and Comparison of Various FACTS devices", Volume 4 Issue 1, IEEE 2016.
[2] C. Sharan, S. Subasangkari, V.N. Ganesh, J. Ajay, "Research of Facts Devices for Stability", International Journal of Recent Technology and Engineering (IJRTE).
[3] Abubakar Siddique, Yonghai Xu, Waseem Aslam, Muhammad Rasheed, "A Comprehensive Study on FACTS Devices to Improve", Conference: 2019 IEEE Asia Power and Energy Engineering Conference (APEEC).
[4] Aditya Chorghade, Vandana A, Kulkarni Deodhar, "FACTS Devices for Reactive Power Compensation and Power Flow Control - Recent Trends", Conference: 2020 International Conference on Industry 4.0 Technology (14 Tech).
[5] Ghassan Abdullah Salman, Hatim G. Abood, Mayyadah Sahib Ibrahim, "Improvement the voltage stability margin of Iraqi power system using the optimal values of FACTS devices", International Journal of Electrical and Computer Engineering (IJECE).
[6] Basanagouda Patil, Dr. Jagadish S. Jakati, Mallikarjun Balasaheb Patil, Dr. Vireshkumar G. Mathad, "Enhancement of Power System and Control by Implementation of Facts Devices", Journal of Data Acquisition and Processing, Vol. 38 (2) 2023.
[7] Therese Uzochukwuamaka Okeke and Ramy Georgious Zaher, "Flexible AC Transmission Systems (FACTS)", 2013 Intonational Conference on New Concepts in Smart Cities: Fostering Public and Private Alliances (Smart MlLE).
[8] Sankalp Asawa, Sam Al-Attiyah, "Impact of FACTS device in Electrical Power System", International Conference on Electrical, Electronics, and Optimization Techniques (ICEEOT) – 2016.
[9] M. Chethan, Dr. RAVI.K, "ROLE OF FACTS DEVICES IN POWER SYSTEM WITH OPTIMIZATION TECHNIQUES", Authorea, December 16, 2022.
[10] Sajan Varma, "F ACTS Devices for Stability Enhancements", Conference: 2015 International Conference on Green Computing and Internet of Things (ICGCloT).
[11] Ibrahim M. Mehedi, Jahin Al Hasan Joy, Md. Rafiqul Islam, Nayeema Hasan, Ubaid M. AlSaggaf, Ahmad H. Milyani, Ahmed I. Iskanderani, Abdullah Abusorrah, MuhyaddinRawa, and 15 Hussain Bassi, "Reducing Fault Current by Using FACTS Devices to Improve Electrical Power Flow", Hindawi Mathematical Problems in Engineering Volume 2021, Article ID 8116816.

[12] Y. H. Song, A. T. Johns, "Flexible ac transmission systems (FACTS), IEEE Press, 1992, ISBN 0 85296 7713.
[13] Prashant Kumar Tiwari and Yog Raj Sood, “Optimal Location of FACTS Devices in Power System Using Genetic Algorithm”, NaBICWorld Congress Conference, 2009, pp. 1034- 1040.
[14] D. Klinect et al., “Electromagnetic Noise Emission Measurements Near the FACTS Device at the Sullivan (TVA) Station,” Companion Paper, St. Petersburg PowerTech, 2005.
[15] M.H.Haque, Optimal Location of Shunt FACTS Devices in Long Transmission Lines IEE proc. Gener. Transm. Distrib.147(4):218-222, July 2000.

Study of Backward Diode: A Special Type of Diode

Md Taufiq
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Mr. Bipin Gupta
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Dr. Ashish Maurya*
Department of Electronics & Communication Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

***Corresponding Author**
Dr. Ashish Maurya
Email Id: ashish.maurya@kit.ac.in

ABSTRACT

This paper presents the study of Backward Diode or Back Diode which is a special type of diode. Backward diode is the combination of Zener diode and Tunnel diode. It is a unilateral diode which works in the reverse bias. The main function of back diode is to rectify the low voltage signals, also to detect the small-signal applications. Its operation is similar to that of Zener and Tunnel diode expect for its operating voltage which is very low as compared to Zener and tunnel diode. It is known that the quantum tunneling happens only in reverse bias, which provides it for better conduction & lower impedance, so it is named as a backward diode. So, the working mechanism of this diode is quantum tunnelling which allows it to operate at low voltages.

Keywords: Backward diode, Zener diode, tunnel diode, quantum tunnelling effect, low voltage diode.

1. Introduction

An alternative kind of diode that is frequently utilized in electronic circuits are backward diodes. Distinct materials and manufacturing techniques can give diodes distinct characteristics. Among these is the backward diode. A kind of diode called a backward diode combines the advantages of zener and tunnel diodes. Moreover, they can switch far more quickly than a lot of other diode types. They are widely utilized in high switching applications. They are typically appropriate for lower voltage levels, though. Typically, this value falls between 0.1 and 0.6 V. An illustration of their application areas would be RF applications.

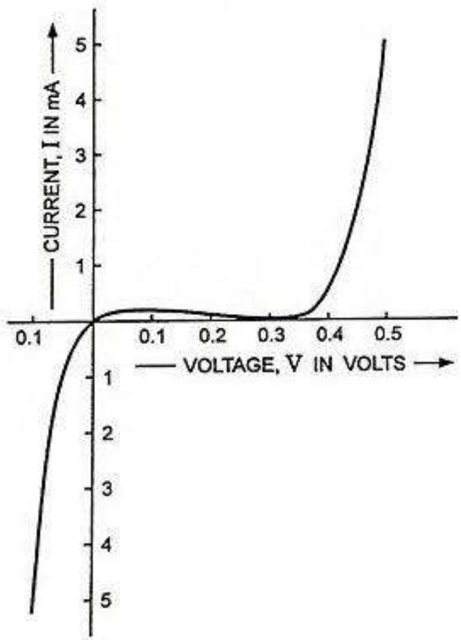

Figure 1: Typical Germanium Back Diode Characteristics.[1]

For applications where the conventional diode is used in the forward direction, a tunnel diode intended to provide a small peak current (IP of the order of IV) may be used advantageously in the reverse direction. This device is also known as a backward diode or just a back diode because it performs better in the reverse direction than the forward direction. As shown in Fig. 1.01, the diode has the same forward characteristic as the tunnel diode but the same reverse characteristic. When a forward biasing or reverse biasing voltage is applied to the tunnel diode, it responds with a current that is greater in the vicinity of zero voltage than the corresponding current in a conventional diode. The tunneling effect is the cause of these huge currents. Only in the reverse direction does the current in the back diode increase because of the tunneling effect. For this reason, a unilateral diode is another name for the back diode. The third quadrant of the V-I characteristic diagrammed in Fig. 1.01 contains the high conduction portion. Since this part of the characteristic represents the forward conduction region in a conventional diode, the voltage and current scales for the back diode are typically plotted in reverse.

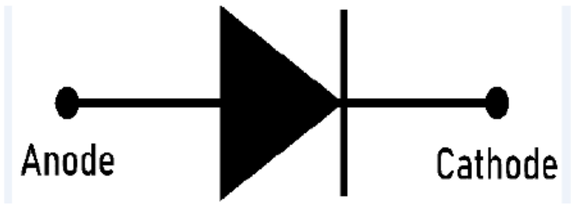

Figure 2: Symbol of diode [2]

2. Construction

2.1. Construction

This diode is constructed similarly to a tunnel diode, with the exception of the light doping concentration, as one junction side has a light doping concentration while the other side is heavily doped. In the forward bias, it helps to align the valance and conduction bands so that it functions similarly to a PN junction diode. While a massive tunnel current will supply under reverse bias, there is neither quantum tunneling nor a tunnel current under forward bias. It has better conduction and lower impedance when the quantum tunneling occurs only in reverse bias, which is why it is called a backward diode.

2.2. Working

All a backward diode needs is the quantum tunneling principle to function. A quantum mechanical technique called quantum tunneling is applicable anywhere wave functions can pass through a potential barrier. As a result, the transmission through the potential barrier is fixed and exponentially dependent on the barrier's height and width. With the exception of reverse bias tunneling, this diode operates similarly to a tunnel diode. In both forward and reverse bias, it performs like a standard PN junction diode and has superior current conduction than in forward bias. Consequently, an energy band diagram within various biasing scenarios can be used to easily explain how this diode functions.

2.3. Unbiased Condition

In this state, there is no power source connected to the backward diode. As a result, the conduction band has a higher energy level than the valance band. The electron will initially reside in the valence band. When they have enough energy, they leave behind holes and enter the conduction band. Due to the relative distance between the valance and conduction bands, there is no current conduction under these conditions. For quantum tunneling, the valance and conduction bands of the P-type and N-type need to be comparable in level.

2.4. Forward Biased Condition

In this biasing, the cathode is connected to a low potential and the anode to a high potential of the back diode. This diode doesn't function until the applied voltage reaches a specific threshold, much like a PN junction diode. The bulk of charge carriers in P-type and N-type are, respectively, holes and electrons. The charge carriers, such as electrons, receive energy from the applied potential and are found in the conduction band of the N-type layer, while the holes are found in the valance band of the P-type layer. The majority of the charge carriers in this biasing cause the diode to function as a typical diode and allow current to flow. While the holes move from the P-type to the N-type, the electrons will flow from the N-type layer to the P-type layer. The energy band diagram indicates that as the equivalent layer's two bands get closer together, the electrons' energy levels rise to the point where they can cross the band gap.

2.5. Reverse Biased Condition

In this bias condition, the cathode is connected to a high potential and the anode is simply connected to the diode's low potential. It is typically employed in this mode wherever quantum tunneling takes place. The reverse voltage application will cause the gap between the two bands of both layers to widen, as indicated by the energy band diagram above. However, the valence band of the p-type semiconductor and the conduction band of the N-type semiconductor will drop at a similar energy level due to an increase in the band gap and high doping concentration. Thus, the junction allows electrons to move freely, a phenomenon known as quantum tunneling.

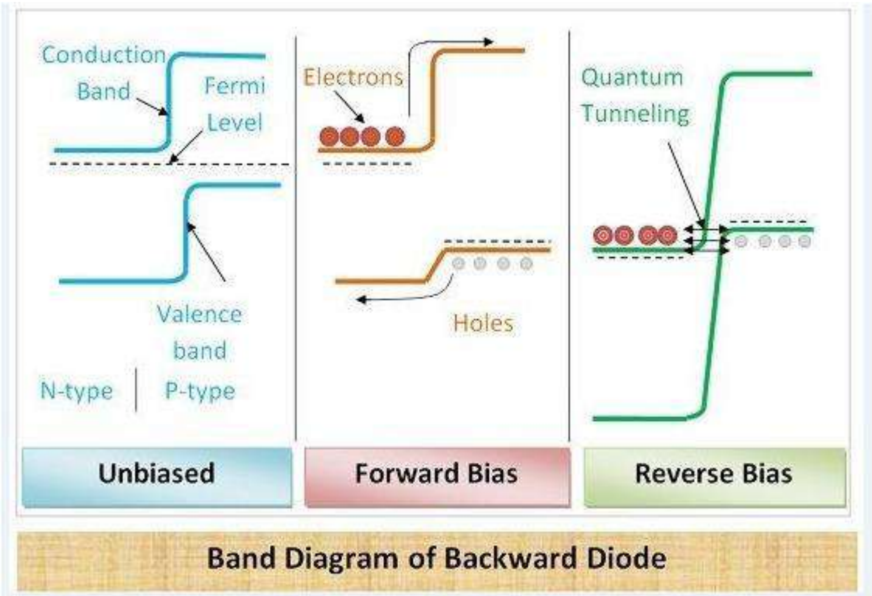

Figure 1: Band Diagram

2.6. Quantum Tunneling Effect in Back Diode

In backward diodes, quantum tunneling happens at the interface of P-type and N-type semiconductor materials. The depletion region widens under reverse bias, which may act as a barrier to charge carriers (electrons) trying to move from the N-region to the P-region.

Even though electrons lack the classical energy to cross this potential barrier, they have a non-zero probability of doing so because of the wave-like nature of electrons at the quantum level. Put differently, certain electrons have the ability to "steal" energy from the surrounding electric field and manifest on the opposite side of the barrier—the P-region in this instance—without possessing sufficient energy to cross the barrier in a classical manner. These electrons contribute to the reverse current flow as they tunnel through the barrier and enter the P-region. The VI characteristics of the backward diode exhibit a region of negative resistance due to the tunneling effect. Because more electrons are tunneling through the barrier when the reverse voltage rises, the reverse current falls. Backward diodes differ from normal diodes in that they have this negative resistance region, whereas in regular diodes, reverse current increases exponentially during avalanche breakdown under reverse bias.

2.7. Advantages

a. Compared to a conventional diode, the back diode has a significantly lower temperature sensitivity, which is one of its advantages.
b. The sensitivity of a conventional diode is approximately -2 m V/℃, whereas the sensitivity of the back diode is approximately -0.1 mV/℃ for both germanium and silicon diodes.
c. When it comes to room temperature, the conventional diode's break point is between 0.6 and 0.7 V, while it is at 0 V.
d. When a diode's rectifying action is needed in relation to small amplitude waveforms, the back diode is therefore very beneficial. An excellent frequency response, low noise level, and significant efficiency gain are all achieved with a back diode.

3. Conclusion

This paper explains the basic working of a backward diode whose characteristics are very similar to tunnel diode and Zener diode. Back diode works only is reverse biased mode and is used in radio detector circuits as a detector (detect up to 40 GHz frequency), in RF mixer, and as an amplifier to amplify weak signals with 0.1V- 0.6V peak amplitudes.

References

[1] ^Stanley William Amos, Roger S. Amos (1999). Newnes Dictionary of Electronics. Newnes. ISBN .*0-7506-4331-5.*
[2] ^ Paul Horowitz, Winfield Hill (1989). The Art of Electronics, 2nd edition. p. 891.
[3] ^ Anwar A. Khan and Kanchan K. Dey (2006). A First Course in Electronics. Prentice Hall of India. ISBN 81-203-2776-4.
[4] ^ Jump up to:**a b** S.L. Kakani (2004). Electronics Theory and Applications. New Age Intl. Ltd. ISBN 81-224-1536-9.
[5] ^ Karlheinz Seeger (2004). Semiconductor Physics: An Introduction. Springer. ISBN 3-540-21957-9.

Review Paper on Automatic Systems to Control Home Appliances

Ram Bahadur Singh
Department of Electrical & Electronics Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Meenakshi Prajapati
Department of Electrical & Electronics Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Saurabh Kumar Singh
Department of Electrical & Electronics Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Tanu Priya Pandey
Department of Electrical & Electronics Engineering
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh.

Mohd Arif*
Assistant Professor
Department of Electrical & Electronics Engineering
Kanpur Institute of Technology.

***Corresponding Author**
Mohd Arif
Email Id: mohd.arif@kit.ac.in

ABSTRACT

Along with other countries, traffic congestion is a big issue in many Indian cities. Traffic congestion is a result of ineffective traffic signals, lax law enforcement, and inadequate traffic management. One of the main issues with Indian cities is that there isn't room for more infrastructure, thus the only solution is to improve traffic control. The general quality of life, the environment, and the economy are all negatively impacted by traffic congestion. Therefore, it is imperative that the issue of traffic congestion be handled well. Traffic signal priorities occasionally need to be adjusted in response to the increased volume of vehicles waiting on the same road, including VIP and ambulance vehicles, in order for them to reach their destination. Due to their detrimental impacts, which include stressing out commuters and increasing the amount of harmful emissions released into the atmosphere, traffic congestion and accidents brought on by speeding cars have become important sources of concern in society. The various types of traffic control systems currently in use for road traffic management, including radio frequency identification (RFID), wireless sensor networks, infrared sensors, inductive loop detection, and image processing, were studied and

compiled in this study. This study examined and contrasted the features, advantages, and constraints associated with each method. Based on the reviews, this article suggests the best traffic control method for density-based traffic lights, emergency vehicle priority, and speed detection that is affordable, requires little upkeep, and has a wide range of application possibilities.

Keywords: *Traffic congestion, Density, Arduino uno, Sensor, Priority, Speed.*

1. Introduction

One of the biggest issues with Indian cities is that there isn't room for more infrastructure, thus the only solution is to improve traffic management. The general quality of life, the environment, and the economy are all negatively impacted by traffic congestion. Therefore, it is imperative that the issue of traffic congestion be handled well.

The main factor causing traffic congestion is the large number of automobiles, which is a result of population growth and economic expansion. Automatic traffic signal controllers are required to reduce traffic delays and travel times due to the rapid development in urbanization and traffic congestion, particularly in emerging nations. The existing poor state of road infrastructure and the expanding number of transportation options will inevitably lead to a far wider increase in traffic difficulties.

2. Methodology

There are various techniques was discussed above now in the paper we are going for detail study of major techniques which are easy to apply, economically suitable and give better performance to long duration.

A. Speed Detection Techniques

- India needs an efficient traffic management system immediately because there are 384 traffic accidents there per day. In this project, a novel technique is developed to reduce traffic jams and unfavourable time delays. We propose a system where the duration of green and red lights is determined by the volume of traffic at that moment. PIR (proximity infrared sensors) is utilized for this. [1][2].
- Vehicle over speeding has emerged as a major contributing factor to accidents and fatalities. To address this issue, additional techniques for vehicle speed detection using infrared sensors and LCD (liquid crystal display) display speeds, as well as a system alert via buzzer for over speeding [3][4][5].

B. Density Measurement for Traffic Light Control Techniques

- A density-based sensor is employed to gather vehicle input for a traffic light control system through simulation in VHDL, which helps to reduce waiting times. The traffic light control system in use today is not adaptive; instead, it repeats a set time cycle based on the time assigned. When the sensor detects that there is a lot of traffic in either direction, the traffic light signals will change accordingly. [6] [7][8][9].
- This paper describes the design and construction of an Arduino-based traffic control system that is dependent on traffic density. With the aid of Arduino and an upgraded

algorithm, the suggested method was able to reduce the traffic jams caused by the traffic signal system. That is not based on a set time, but rather on actual time. It is observed that the intelligent traffic control system has a very cheap production cost and is highly efficient. [10] [11][12].

C. Emergency Vehicles

- Using visual sensing, traffic management is implemented for emergency vehicle priority. An strategy to scheduling emergency vehicles in traffic is presented in this study. The system combines vehicle counting, time-sensitive warning transmission within the sensor network, and visual sensing techniques to measure the distance between an emergency vehicle and an intersection. [13][14].
- Emergency Vehicle Using IOT. The purpose of this document is to decrease emergency vehicle waiting times and provide emergency vehicles with information on traffic density on various roads. IR sensors are used to detect traffic density, and the data is sent over the internet via IOT. Information on emergency vehicle presence is provided by the RF module. [15][16][17].

3. Proposed Circuit Design

Used here 4 IR sensors (IR1, IR2, IR3, and IR4) on each road in four-way traffic signal. The sensor is placed on each road at the specific distance from the four-way crossing. Every road has sensors that detect the presence of a car and relay information to the microcontroller. The sensors are directly linked to the Arduino Uno's analog input ports. (To pin number PC0, PC1, PC2, PC3).The sensors get the supply voltage of5v and ground. The output Led’s are connected to the output digitals pins of Arduino uno.

The Arduino uno board is suppliedwith5v power supply from are glutted dc source.

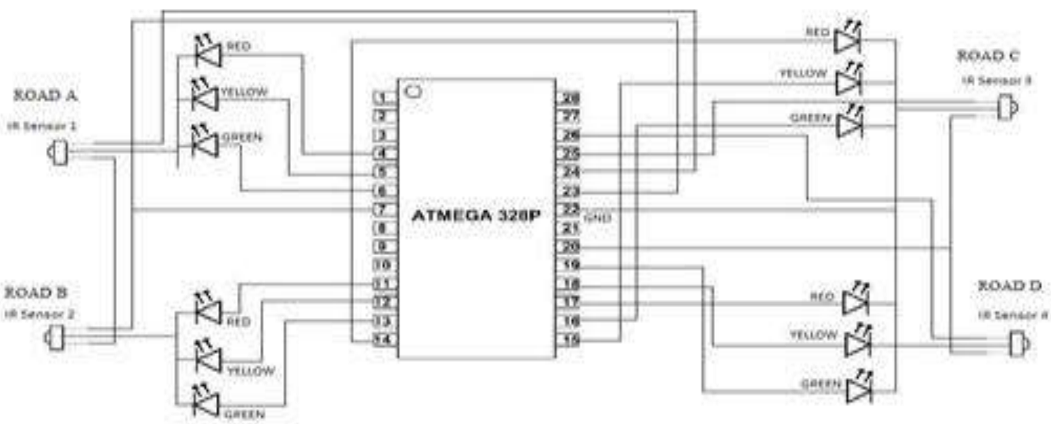

Figure 1: Circuit diagram of Traffic System operational model

4. Proposed Working Principle

A. System of Density-Based Traffic Control

Normally when there is less traffic or just say no traffic, the traffic signals will work with the time delay. As there is no traffic the IR sensor will send no data to the micro controller .When there is a high density of traffic, it become difficult to manage the vehicle. So to overcome this problem we use some modern techniques. Here we implement "Density Based Traffic Control System". Once that road is cleared the Arduino will receive no data from the sensor on that road. After clearing this road, the green signal will move to road having less number of vehicles than this road.

Like priority wise, the green signal will move to every road whenever the density of the vehicle is increased on some road of the traffic signal crossing.

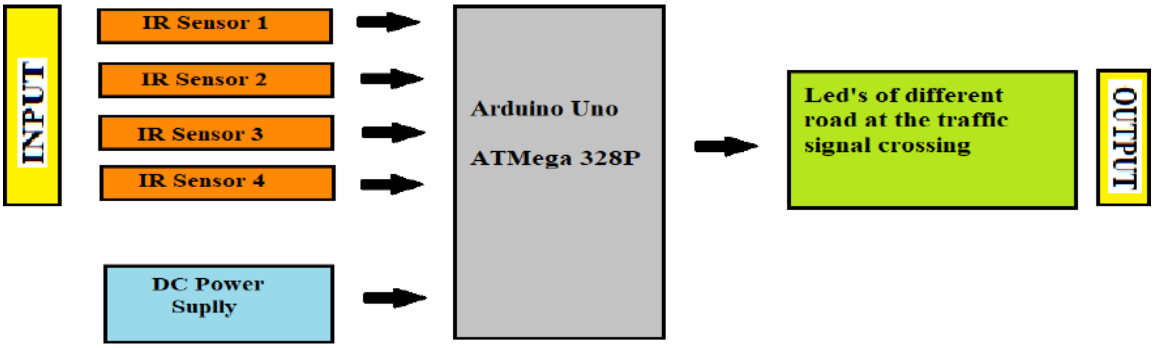

Figure 2: Density Based Traffic Control System block diagram.

B. Priority for Emergency Vehicle

Traffic Light Priority for Emergency Vehicles is a system designed to help overcome this challenge by providing a way for emergency vehicles to have priority at traffic signals. When in operation, the system has the ability to override the conventional traffic signal pattern, facilitating the safe and effective passage of emergency vehicles through the intersection.

Block Diagram

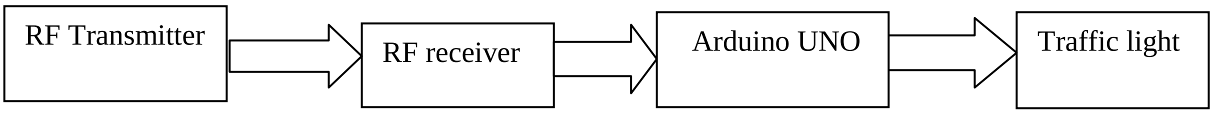

Figure 3: Block diagram of priority for emergency vehicle

C. Speed Detector

A speed detector that uses an infrared sensor. This invention uses two separate infrared sensors to function as a speed detecting system. The first infrared sensor is labeled 1 and the second is labeled 2, and both are programmed and connected to one another. When IR 1 detects a signal, a timer is triggered automatically until IR 2 detects a second signal. At that point, the time difference between the first and second signals is converted to speed in the following manner: The two infrared sensors used to detect speed at each lane are spaced 6 cm apart, or 0.06 m (1 m = 100 cm). The time is expressed in milliseconds, with one millisecond equaling 10^-3 sec.

5. Equipments Required for Proposed Work

Arduino uno (AT mega 328P): The Arduino UNO is a microcontroller based on the ATmega328 datasheet, including six analog inputs, eight digital outputs, and six PWM outputs. It features a reset button, a ceramic resonator operating at 16 MHz, a USB connection port, and a power jack.The Italian word "Uno" means "one," and it was chosen to commemorate the impending release of Arduino 1.0.

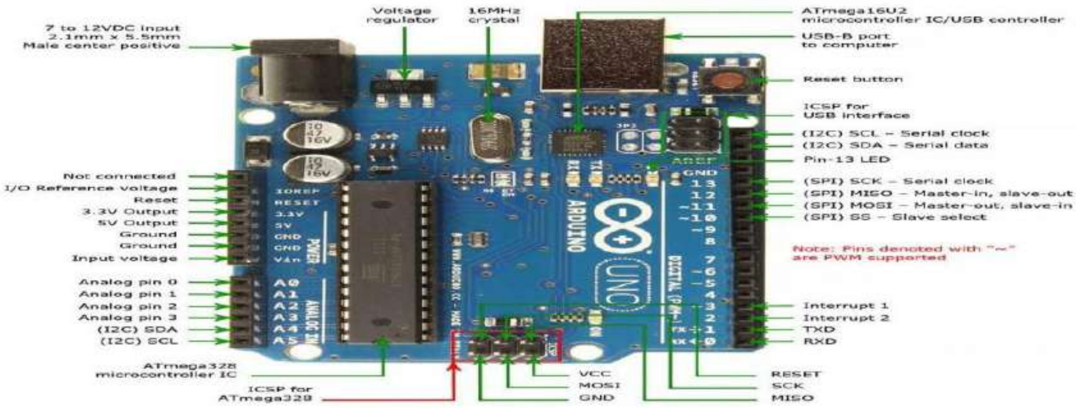

Figure 4: Picture of Arduino UNO

Infra Red Sensors: The electrical IR sensor requires a DC power source to function. An infrared sensor, or an IR sensor, is a device that emits or receives infrared signals. Two types of diodes are used with infrared sensors: RX, also known as an IR LED (light emitting diode), and TX, also known as an IR photodiode.

Figure 5: IR Sensor

Light Emitting Diode: When current passes through a semiconductor light source, called an LED, the light emits. Photons are released as a result of the semiconductor's electrons and electron holes recombining. We refer to this phenomenon as electroluminescence. The energy needed for electrons to cross the band gap determines the hue of the light, which corresponds to the energy of the photons.

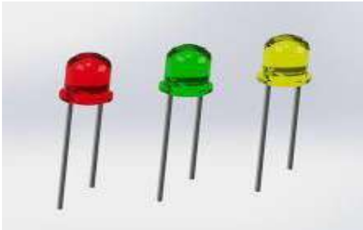

Figure 6: LED

Adjustable Voltage Control: The voltage level is controlled by a voltage regulator. Regardless of variations in input voltage or load conditions, it produces a set output voltage that never varies. It serves as a buffer to prevent damage to electronic components. It makes use of negative loops and a basic feed forward architecture**.**

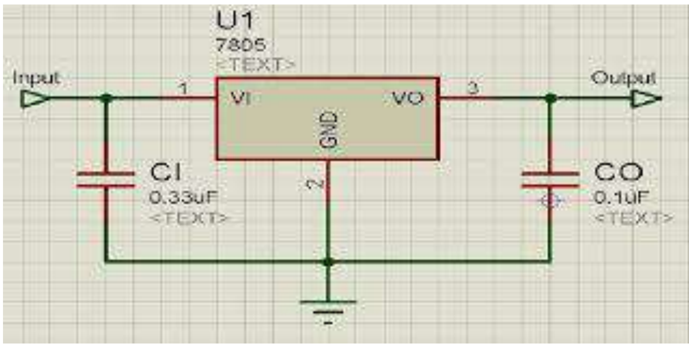

Figure 8: Circuit diagram of voltage regulator

6. Outcomes

a. Avoid wastage of time due to the traffic.
b. To save energy.
c. To save money.
d. Save life of people.
e. To reduce pollution.
f. Fully automatic.

7. Conclusion

This report provides a detailed analysis of the "Smart Traffic Control System." This article provides information about the project's design, operation, and implementation. Our idea is to create and implement a traffic light system that is based on density. As soon as the junction's traffic density is detected, the signal automatically modifies. IR sensors are used to measure the traffic density in a specific road, and we use Arduino to develop programs that meet our needs. The goal of the paper is to develop a dependable, user-friendly system that uses infrared sensors to determine a vehicle's speed and displays that speed on an LCD (liquid crystal display). The document outlines the methods for controlling traffic signals, detecting emergency vehicles, and offering free route to the rescue truck. When in operation, the system has the ability to override the conventional traffic signal pattern, facilitating the safe and effective passage of emergency vehicles through the intersection. When compared to the current traffic control system, the proposed solution operates more effectively in emergency situations and has shorter wait times.

8. Future Scope

The extended IR sensor module has an automatic shut-off feature that helps save electricity when no cars are operating on any side of the road.

References

[1] D. Aswani, "Smart Traffic Control System for Emergency Vehicle Clearance," International Journal & Magazine of Engineering, Technology, Management and Research, vol. 3, 2016.

[2] Indonesian Journal of Electrical Engineering and Computer Science Vol. 13, No. 3, March 2019, pp. 1243~1251 ISSN: 2502-4752, DOI: 10.11591/ijeecs.v13.i3.pp1243-1251 .

[3] S. P. Mohanty, "Smart Technologies: The Key for Sustainable Smart Cities," IEEE Consumer Electronics Magazine, vol. 7, no. march, pp.3–4, 2018.

[4] Shruti Mishra, Vijay Birchha, "A Literature Survey on an Improved Smart Traffic Signal Using Computer Vision and Artificial Intelligence", International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology, Vol. 8, Issue 6, June 2019.

[5] Hamara Chaudhuri, Nishanth P Raikar, "Traffic Control Management with help of State of Control Algorithm using¬ Ultrasonic Sensors & GSM Technology", International Research Journal of Engineering and Technology (IRJET), Volume: 05 Issue: 04 | Apr-2018 .

[6] Vaishali Mahavar, Prof. Jayesh Juremalani, "Literature Review on Traffic Control Systems Used Worldwide", Journal of¬ Emerging Technologies and Innovative Research, May 2018, Volume 5, Issue 5 .

[7] Er. Faruk Bin Poyen, Amit Kumar Bhakta, B.Durga Manohar, Imran Ali, Arghya Santra, Awanish Pratap Rao,"Density¬ Based Traffic Control" International Journal of Advanced Engineering, Management and Science (IJAEMS) [Vol-2, Issue8, Aug- 2016].

[8] C. Uzondu, S. Jamson, and F. Lai, "Exploratory study involving observation of traffic behaviour and conflicts in Nigeria using the Traffic Conflict Technique," Safety Science, vol. 110, pp. 273-284, 2018/12/01/ 2018.

[9] M. Pau, E. Patti, L. Barbierato, A. Estebsari, E. Pons, F. Ponci, et al., "A cloud-based smart metering infrastructure for distribution grid services and automation," Sustainable Energy, Grids and Networks.

[10] S. Uzairue, J. Ighalo, V. O. Matthews, F. Nwukor, and S. I. Popoola, "IoT-Enabled Alcohol Detection System for Road Transportation Safety in Smart City," in International Conference on Computational Science and Its Applications, 2018, pp. 695-704.

[11] F. E. Idachaba, J. O. Olowoleni, A. E. Ibhaze, and O. O. Oni, "IoT Enabled Real-Time Fishpond Management System," 2017.

[12] O. U. Chinyere, O. O. Francisca, and O. E. Amano, "Design and simulation of an intelligent traffic control system," International journal of advances in engineering & technology, vol. 1, p. 47, 2011.

[13] R. Ganiyu, O. Arulogun, and O. Okediran, "Development of A Microcontroller-Based Traffic Light System for Road Intersection Control," International journal of scientific & technology research, vol. 3, pp. 209-212, 2014.

[14] G. Balan and S. Luke, "History-based traffic control," in Proceedings of the fifth international joint conference on Autonomous agents and multiagent systems, 2006, pp. 616-621.

[15] N. B. Soni and J. Saraswat, "A review of IoT devices for traffic management system," in 2017 International Conference on Intelligent Sustainable Systems (ICISS), 2017, pp. 1052-1055.

[16] L. Day and I. McNeil, Biographical dictionary of the history of technology: Routledge, 2002.

[17] R. L. Gordon, W. Tighe, and I. Siemens, "Traffic control systems handbook," United States. Federal Highway Administration. Office of Transportation Management2005.

Smart Helmet

Gopal Gupta
Department of Electrical and Electronics Engineering, Kanpur Institute of Technology, Kanpur, U.P.

Rohit Saxena
Department of Electrical and Electronics Engineering, Kanpur Institute of Technology, Kanpur, U.P.

Rishbh Mishra
Department of Electrical and Electronics Engineering, Kanpur Institute of Technology, Kanpur, U.P.

Vaibhav Mishra
Department of Electrical and Electronics Engineering, Kanpur Institute of Technology, Kanpur, U.P.

Mrs. Ankita Tiwari*
Assistant Professor
Department of Electrical and Electronics Engineering, Kanpur Institute of Technology, Kanpur, India.

***Corresponding Author**
Mrs. Ankita Tiwari
Email Id: ankita.tiwari@kit.ac.in

ABSTRACT

When a motorcyclist gets into an accident without wearing a helmet, it can be dangerous and result in casualties. This essay will be a planning helmet using some fresh, creative ideas. For example, alcohol detection, ignition concept, and accident cause. These helmet specifications are reliable for completing any helmet. The clever concept of the smart helmet increases the safety of cruiser driving compared to the past. Every helmet is built with a circuit that prevents the bike from starting unless the rider removes the helmet. Some authors have discussed alcohol identification and vehicle speed. The drunk rider will be identified when they wear a helmet. Nevertheless, alcohol isn't the main cause of the accident; there are a number of other ailments that we will also be attempting to address. The security and smart helmet will be a compilation of the many features that the other inventor has looked over and implemented, and there will be a growing number of other features that we are now working on.

Keywords: smart helmets, motorcyclists, messages, alcohol, GSM, GPS, and sensors; also, accidents are prevented.

1. Introduction

Preventing the discovery and notification of traffic accidents is the main goal of this initiative. There are a lot of traffic accidents happening. because violating the traffic rules and regulations, driving while intoxicated, acting rashly, and using a phone while operating a vehicle. Many people pass away as a result ofTriple riding makes it difficult for bystanders to follow accident reports at the scene. Therefore, the precise latitude and longitude coordinates of the accident can be determined by utilizing the GPS and GSM. Because the information regarding the bike rider's accident history, alcohol consumption, and helmet condition is recorded in the cloud, police officers can use IOT to make quick detections. In India according to the Motor Vehicles act 1988, the sections 129 the wearing of helmet is compulsory. So this smart helmet is to decrease the road accidents and if government can place this helmet is must and should the use of smart helmet is increases and the accidents can reduce day by day. According to the World Health Organization (WHO), there are fewer deaths and injuries. Because of wearing of helmet. The main goal of this project the two wheeler riders can wear helmet compulsory for their safety.

2. Literature Review

Due to their similarities to other vehicles, two-wheelers are less important in terms of improving safety. In contrast to other forms of transportation, motorcyclists face an extremely high risk. Even the mining industry uses smart helmets for its high-risk jobs. To identify the precise location and obtain information about the rider, GPS and GSM are utilized. If the user falls and the helmet hits them, there will be an impact and the user will suffer consequences. Messages are delivered to contact members in the event that there is urgent high harm to the individual. For wireless communications, such as radio frequency and Zig-Bee, to convey information are employed. Different kinds of wireless communication technologies are utilized in the middle of the bike and helmet. They are protected by a number of characteristics, including vibration, force-sensing, accelerometer, temperature, ultrasonic, and vibration sensors, as well as push buttons. Different kinds of microcontrollers, such as Arduino and Raspberry Pi, are utilized depending on their uses and cost. Regarding the 2016 research study "Smart Helmet," the author's goal is to demonstrate that wearing a helmet is essential for bike riders' safety.

According to a poll, a lack of helmet wear is the primary cause of many deaths and accidents in this violent environment. It is impossible for traffic police to cover distant locations, such as cities. Where there are people are heavy. It is very difficult to them to check each and every motor cycle rider. So ‘Smart Helmet’ is very useful for many conditions for traffic police to see the activities of motor cycle riders.

3. Method

We are introducing a system that consists of two modules: one in the helmet and the other in the vehicle. The helmet unit has an alcohol and crush sensor, which prevents riders from using the bike and detects accidents. We also use an eye blink sensor, which detects when a driver is falling asleep and activates a siren, which, in cases of negligence, will cause the bike to stop. The GPS, GSM, and motor driver unit are the components of a two-wheeler. The GSM is used for communication, the motor driver unit tracks location, and the GPS monitors the engine. Through an RF transmitter and receiver, the two components are connected.

The suggested method seeks to identify the head gesture and mental states of the user in order to calculate the accident risk level in an industrial facility. To accomplish this, it is crucial to distinguish between dangerous head movements and mental states and to recognize when a worker needs emergency assistance. The experiment hypothesis, the head gesture measuring technique, and the danger level rationale are all covered in this section.

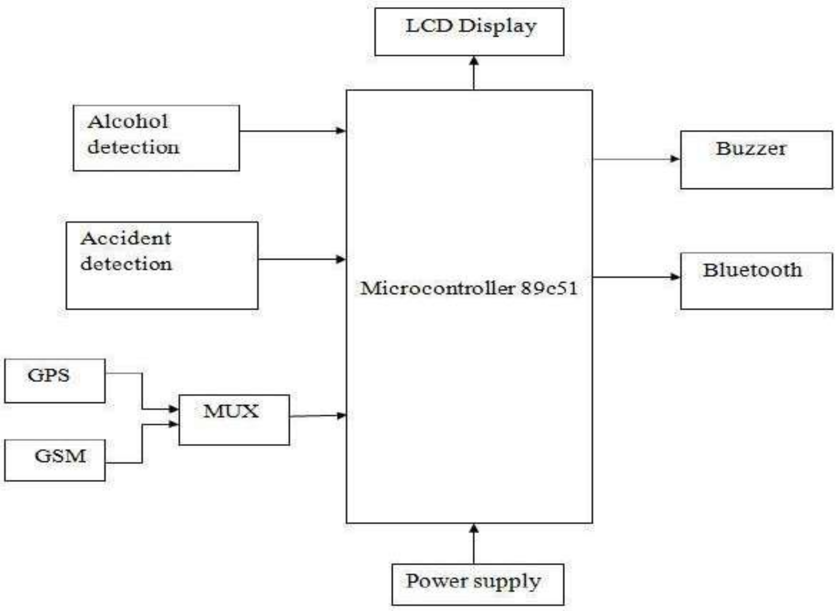

4. Future Scope

In the future work various bio-electric sensors can be implemented on the helmet that Measures different activities that the statistics can be viewed by the bike rider. In the further enhancements we can also use the basic The user can keep their helmet at the bike parking area without using any security measures by using voice commands to operate the bike's functionalities. In the future, artificial intelligence will be used to produce self-driving motorcycles, ensuring the safety of bike riders and a reduction in the number of accidents. Decrease and no accidents occurs in the future enhancements.

5. Conclusion

In this essay, we've talked about creating a "Smart Helmet" by adding functions to traditional helmets, such Bluetooth headsets. The smart helmet is made specifically to give the rider comfort, security, and safety.

The smart helmet's design has proven effective and yielded satisfying results. By having redial functionality, an emergency and accident alert system effectively combats the worst-case scenarios. To improve the rider's safety and security in the future, the helmet can be upgraded with additional features like an alcohol detecting detection system. We also intend to integrate an indicator system into our smart helmet, which will be operated by a kit that we will need to install on our bike. Indicators will activate when a user presses the indicator button that we have implemented on the handle, which transmits a signal to our "Smart Helmet."

These principles will improve the number of people wearing helmets and assist lower the number of accidents in the future.

References

[1] Sharvari Santosh Jadhav Research student, Department of Information Technology, B.K. Birla College of Arts, Science and Commerce (Autonomous), Kalyan, Maharashtra, India.
[2] Swetha Bergonda (Student)E&C dept. GNDEC, Bidar, Karnataka, India.
[3] Guntupalli Siresha Computer Science dept. Cambridge institute of technology, Bengaluru, India.
[4] Rashmi Vashisth, Sanchit Gupta, Aditya Jain, Sarthak Gupta, Sahil, Prashant Rana, Department of Electronics and communication, Amity School of Engineering & Technology New Delhi, India.
[5] Neelam Yadav1 , Sunil K. Singh2 1DAVCET, Kanina, Haryana, India 2CCET (Degree Wing), Chandigarh, India neeluyadav2008@gmail.com1.
[6] Manoj Kumar.S, 2 S.Sriram 1Assistant Professor , 2,Professor, 1,2Department of Information Technology , Karpagam College of Engineering , Coimbatore 641032,Tamil Nadu,India 3Department of Biomedical Engineering, PSNA College of Engineering and Technology, Dindigul – 624622,Tamil Nadu,India
[7] Amgoth Kishore1 , Dr. D Subba Rao2 1PG Scholar, Dept. of VLSI & Embedded System, SIET, Hyderabad. 2Professor and HoD, Dept. of ECE, SIET, Hyderabad.
[8] Anandhi G Sushma R, Prakruthi S, Supreetha G C, Vidyashree C V Assistant Professor, Students, Department of CSE, Department of CSE, GSSSIETW, Metagalli, Mysuru570016. GSSSIETW, Metagalli, Mysuru-570016.
[9] Durga K Prasad Gudavalli1, Assistant professor, EEE Department, S.R.K.R.Engineering College, Bhimavaram, India Prasad.gudavallieee@gmail.com.
[10] Tejashwini R UG Student Nagarjuna College of Engineering and Technology a. Bangalore, India.

Soldier Health Monitoring and Positioning System

Adarsh Pandey
Department of Electrical and Electronics Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Harsh Agnihotri
Department of Electrical and Electronics Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Akash Gupta
Department of Electrical and Electronics Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Amaan Hassan
Department of Electrical and Electronics Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Khushi Sharma
Department of Electrical and Electronics Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Dr. Rahul Umrao*
Department of Electrical and Electronics Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

***Corresponding Author**
Dr. Rahul Umrao
Email Id: rahulumrao@kit.ac.in

ABSTRACT

The armed forces are primarily responsible for the safe future of our nation, and every soldier plays a crucial role in this. When they defend us in combat, soldiers frequently face death. His duty is never diminished by him. In the most challenging topography—hills, mountains, plains, and forests—as well as in the most trying circumstances, he protects us and guards our country. Their main responsibility is to protect our country. The protection of civilians is the fundamental responsibility of a soldier. Most of the time, they died in defense of our country. It is our collective duty as a global community to support and aid our military personnel. Many times many models are being proposed by researchers for the given challenge. The soldier who is fighting for us on the battlefield to save our lives will find our suggested strategy helpful. This approach will facilitate communication between the person in the base unit and the soldier on the front lines of battle. This review study compares many models and suggests the most effective approach for protecting soldiers.

Keywords: GPS, Arduino, Microprocessor, GSM, Sensors, Health Monitoring.

1. Introduction

One of the biggest armies in the world is the Indian Army. Its military is constantly rated in the top five in the world. The military is vital to the preservation and security of the country. We must make sure that every soldier is secure and protected among the unpredictability of the battlefield. This often does not happen since there is no such mechanism. It has been established that a large number of the deaths were caused by delayed medical attention as opposed to direct enemy attack. Finding a way to follow these soldiers becomes crucial as a result. The very least that has to be watched to make sure the soldier is safe are their location and vital life signs.

2. Literature Review

Numerous writers produce a wide range of articles about troop safety. Which are used in this paper in part. A paper was proposed by Hock Beng Lim1 et al. [1]. The precise latitude and longitude—that is, the patients' location in relation to the base station room—was the main emphasis of their proposed study.

A paper was proposed by Jitesh Pabla (2018) [2]. The study fully concentrates on established Physical status observing and continuous following system for our armed forces.

Kahtan Aziz et.al (2016) [3] proposed a study entitled “Smart Real-time Healthcare Monitoring using GSM/GPS Technologies". Recent advancements in physical status monitoring techniques have led to the suggestion of a novel and inventive system to identify the patient's present physical status in their suggested and implemented approach.

A article was proposed by M. Jassas (2015) [4]. This paper, wherever it is required, is used to monitor the armed person's physical well-being.

A paper titled "Health Monitoring and Tracking System For Soldiers Using Internet of Things (IoT)" was proposed by Niket Patil et al. (2018) [5]. They recommend a method created especially to satisfy the requirements for military personnel's safety on the front lines. A article titled "Prognosis: A Wearable Health Monitoring System for People at Risk: Methodology and Modeling" was proposed by A. Pantelopoulos et al. (2010) [6]. They prioritized pinpointing the soldier's location and the armed person's physical condition in their suggested approach.

A article titled “Health Monitoring via LoRaWAN" was proposed by A. Mdhaffar et al. (2018) [7]. They have devised a mechanism that allows soldiers to interact routinely in all places. Their method is far more straightforward.

A work was proposed by Deepa J et al. (2018) [8]. This approach, which combines wireless automation and embedded technology advancements, is a highly protective and safe solution. A work named "Soldier Health Status Detection and Location Tracking System using Internet of Things" was proposed by Chaithra R L et al. (2019) [9]. They developed a technology that uses a wireless body area sensor network (IOT) with temperature and heartbeat sensors to monitor an armed person's physical well-being wherever it is required.

In 2017, Shubhangi Gupta et al. [10] proposed a study titled "Soldier Health Monitoring and Tracking System: An Integrated Approach." It is a highly safe and comfortable system created by fusing innovative and far-reaching principles. The capacity of this approach is steady.

The study titled "Body Area Sensor Networks: Challenges and Opportunities" was proposed by M. A. Hanson et al. (2009) [11]. This suggested idea integrates the latest developments in wireless and embedded technologies to create an efficient security and safety system.

A article titled "Sensor Networks for Emergency Response: Challenges and Opportunities" was proposed by K. Lorincz et al. (2004) [12]. Thus, the deployment of a tracking and navigation system is highly advantageous for soldiers in combat situations.

3. Methodology

In Figure 1, the process is displayed. The phases of our system's overall design are as follows:

a. Configure the following parts: communication module, accelerometer, GPS, pulse sensor, and temperature sensor.
b. Coding the aforementioned elements.
c. Utilizing temperature and pulse sensors to determine health status.
d. Interaction between the Medical Authority Communication Module and the Soldier.
e. Using a GPS module to pinpoint a soldier's exact location in order to provide immediate assistance.

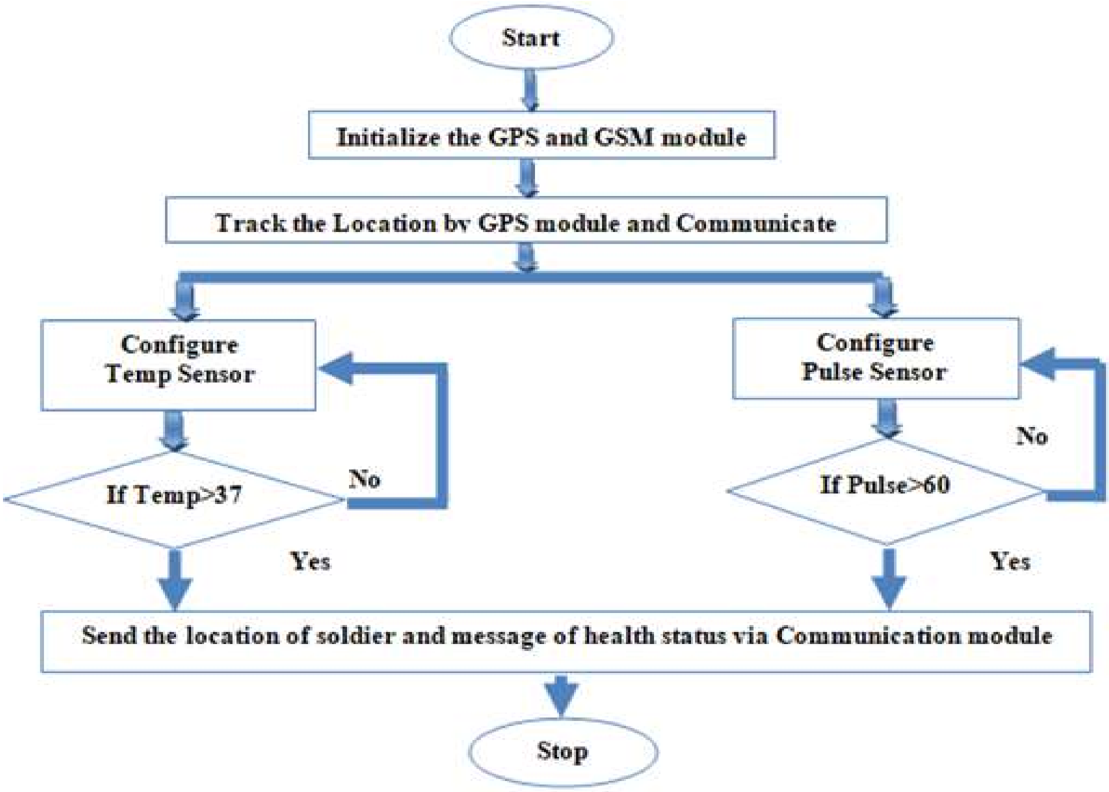

Figure 1: Flow chart

4. Experimental Setup Design

For protection of our solider proposed protection module will have following components:

Arduino: Our project's brain is Arduino. In our project, it serves as the primary microcontroller for value processing, calculation, and communication. The processing is done by the Atmega328p microcontroller.

Figure 2: Arduino UNO R3

Heartbeat Sensor/Pulse Sensor: One of our project's main sensors for health monitoring. The pulse sensor has three main pins, as Fig. 3 illustrates. The output pin, ground, and VCC. The four pins in the simulation version are the test pin in addition to the three previously listed. We utilize the test pin since we are unable to physically verify whether the pulse is present.

Figure 3: Heartbeat Sensor/Pulse Sensor

LM35 Temperature Sensor: LM35, as shown in fig. 4, is a standard 3 pin precision centigrade temperature sensor. As the name suggests, it is used to measure the temperature of our soldier on the battlefield. It has standard3 pins. VCC, Ground and Output.

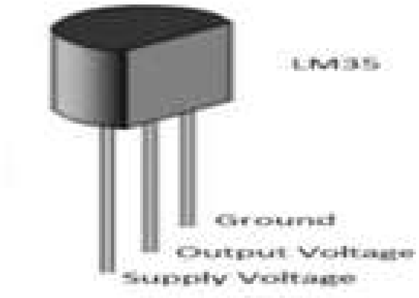

Figure 4: LM35 Temperature Sensor

GPS Positioning Tracker: Another important sensor that we will be used is the GPS Position Tracking Module, as shown in fig. 5, for Arduino. It has four pins. The VCC, Ground and two data communication Tx and Rx pins

Figure 5: GPS Positioning Tracker

Using this system, casualties will condense in battle. It assists to give critical information's and cautions to soldiers so that they can survive for long and aim of war or secret operation can be obtained. This system gives strength to the defense system of country. These types of strategies are very supportive for certifying security of the soldiers.

5. Conclusion

The topic of troop safety was the focus of several researchers. Based on their investigation, two criteria that can provide adequate protection have been determined. The temperature and pulse rate are these two variables. In this, a health system evaluates vital health data to guarantee soldiers' security and safety as GPS tracks soldiers anywhere in the world. When it's done, this device will use body temperature and heart rate information to help determine a soldier's health status.

Additionally, in future this system can be created for industrial workers and those who are working to clean the sewage pipeline.

References

[1] Hock Beng Lim, Di Ma, Bang Wang, Zbigniew Kalbarczyk , Ravishankar K. Iyer and Kenneth L. Watkin ,"A Soldier Health Monitoring System for Military Applications", International Conference on Body Sensor Networks, IEEE pp:246- 249,2010.

[2] Kahtan Aziz, Saed Tarapiah, Salah Haj Ismail and Shadi Atalla, "Smart Real-time Healthcare Monitoring and Tracking System using GSM/GPS Technologies", International Conference on Big Data and Smart City, IEEE, 2016.

[3] M.Jassas, A . Abdullah and H. Mahmoud, "A Smart System Connecting e-Health Sensors and the Cloud", IEEE 28thCanadian Conference on Electrical and Computer Engineering Halifax, Canada, pp: 712-716, May- 2015.

[4] Niket Patil and Brijesh Iyer, "Health Monitoring and Tracking System For Soldiers Using Internet of Things(IoT)", International Conference on Computing, Communication & Automation (ICCCA), Greater Noida, pp. 1347-1352, 5-6 may 2017.

[5] A. Pantelopoulos and N. G. Bourbakis, "Prognosis: A Wearable Health Monitoring System for People at Risk: Methodology and Modeling," in IEEE Transactions on Information Technology in Biomedicine, vol. 14, no. 3, pp. 613-621, May 2010.

[6] M. Jassas, A. Abdullah and H. Mahmoud, "A Smart System Connecting e-Health Sensors and the Cloud" IEEE 28thCanadian Conference on Electrical and Computer Engineering Halifax, Canada, May 2015.

[7] Afef Mdhaffar, Tarak Chaari, Kaouthar Larbi, Mohamed Jamaiel and Bernd Freisleben,"IoT Based Health Monitoring via LoRaWAN", International Conference of IEEE EUROCON, vol. 115, no. 89, pp.2567-2953,2018.

[8] Deepa J , Ranjini , Sharanya Raj-"Soldier Health and Position Tracking System using GPS and GSM Modem."-International Journal of Engineering Research & Technology(IJERT)2018.

[9] Chaithra R L, Mamatha V-"Soldier Health Status Detection and Location Tracking System using Internet of Things"-International Journal of Advanced Computer Science and Technology. ISSN 2249-3123 Volume 9, Number 1 (2019), pp. 1-8.

[10] Shubhangi Gupta, Shivani Kulshrestha, Divya Singh, Ashish Kumar, Er.Hitendra Singh "GPS and GSM based soldier health monitoring and tracking system" issue 3 volume 6, March 2017.

[11] M. A. Hanson, Harry C. Powell Jr., A. T. Barth, K. Ringgenberg, B. H. Calhoun, J. H. Aylor, and J. Larch, "Body Area Sensor Networks: Challenges and Opportunities," IEEE Computer, pp. 58-65, Jan. 2009.

[12] K. Lorincz, D. J. Malan, T. R. Fulford-Jones, A. Nawoj, A. Clavel, V. Shnayder, G. Mainland, and M. Welsh, "Sensor Networks for Emergency Response: Challenges and Opportunities," IEEE Pervasive Computing, vol. 3, no. 4, pp. 16-23, 2004.

Evolution of Cloud Computing: Services and Benefits on Cloud Technology

Ritika Gera*
Department of Computer Application
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Rajat Singh Chauhan
Department of Computer Application
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Dolly Dhimam
Department of Computer Application
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Ritika Gera
Email Id: 223029@kit.ac.in

ABSTRACT

In today's modern year of cloud computing in information technology, Cloudtechnology is an Internet technology that is fast-growing and powerful due to its developments. It computes compiled and network hardware, software, and internet-based infrastructure. It has diverse profits from grid computing and other computing. Later, cloud computing, Amazon launched the first cloud service in March 2006. As an exploration essence, currently cloud computing smoothly summits any scheme of content in computer science whereas of its extensive ideas in various sectors in cloud computing, particularly large amount of data that is scattered in various regions and makes it challenging to discover its location. To make sure that data is secure from any offense, the top exposure should be examined. Accordingly, security tests must be executed to protect data against malicious customer pursuit, which includes cross-site scripting and access control methods. The existence of the vision of computing as a convenience has the potential to transform an enormous component of the information technology industry by creating software appealing as a service and creating the process by which Information technology hardware is produced and acquired.

Keywords: cloud computing, Security, Control methods, IaaS.

1. Introduction

Acknowledge distributed computing ranging is modifying into consistently convince for assistance endeavor to drive their business along around the ongoing years. In 1999, the Sales Force Company introduced organize the demand to the customers across appropriate website [2]. Later, In 2002 Amazon Web Services (AWS) were introduced by Amazon and they are contributing the resources of storage and computation. In 2009 companies like Microsoft, HP, Google, Oracle launched to provide cloud computing services [3]. Currently, everyone utilizes the resources of cloud computing in their day-to-day life. For Example:-Google Drive, Google Photos etc. Later, cloud computing is the essential need of Information technology.

The three services provided by cloud computing are Software as a Service, Platform as a Service and Infrastructure as a Service [1]. Examples that are used by common people in day-to-day life are Gmail, Facebook, and YouTube etc. It extends flexibility; scalability, Simplicity, and agility that is why it is use quickly enhancing in the endeavor.

2. Software as a Service

Software as a Service (SaaS) security refers to the estimate and technique executed to safeguard the data and applications hosted by a SaaS provider. This generally involves evaluation such as authentication, Encryption, access control, security, backup and recovery. On behalf of build-in the software on a computer, user can merely accessed it through Internet. It makes the user free from operating the tangled software and hardware. The SaaS users don't need to acquire Hard wareor Software, maintain, and update. Their primarily thing is user have internet connection and accessed the application is simple. For Example: -MS Office 365, Google Apps etc.

Software as a Service (SaaS) has become progressively popular in latest years due to its flexibility, cost-effectiveness, and scalability. Though, this favor also means that SaaS providers and their customers face critical security challenge.

SaaS Security is Important Because

a. Sensitive data must be safeguarded and not threatened by hacker, insider threat and other cyber threats.
b. It helps in preventing rigorous outcomes like legal debt, offence to repute or lack of customers.
c. It helps in increasing the protection of the SaaS provider to the customers.
d. It helps in compliancy with security standards and regulations.
e. Ensures the security and protection of applications and data hosted from cyber threats, decreasing the chances of data violation and other security incidents.

Advantages of SaaS

a. **End-to-End Data Encryption:** It means all the variety of relation among server and user occur during SSL connection and are ciphered. Though, End-to-End Data Encryption must be alive for information processing. By default, variousprovider must have the possibility to encipher the data, while several clients require to specific describe this. Clients must have the choice to encipher specialized fields as economic details by utilizing Multi-domain SSL certificates.
b. **Vulnerability Testing:** Make an estimate of Software as a service provider to produce maximum claims with regard to Software as a service security. However, guilt to validate the claims can finish up among clients. In such a way, the SaaS provider owns tools or scan, they must be responsible and encountere very levels. Separately, you must insure that intense inspect are endedon Saa Ssystem.

c. **Policies for Data Deletion:** Data Deletion policies play an significant part in customer data secure. Software as a service provider must be see-through in professed their Data Deletion policies to their clients. This method is specified in the utility consent and must involve what might over take after wards the customers data recognition outline finishes. When appropriate, client data must be technologically censored through the server and different logs must be produced.
d. **Data Security:** There are multiple levels of SaaS security can restrict the harm from Cyber-attack. In user level, security practices as authorization and explosion, and required dispersal of tasks, protect the system from assault that sustain inner security Voids.
e. **Virtual Private Network (VPN):** It provides a secure conditions for customer for their performance and information processing. There are better choices and more safe than cross-functional system. They also authorize customer to log in and utilize Software as a service claims throughout by protecting end point and safeguard the infrastructure.
f. **Virtual Machine Management (VMM):** Virtual Machine must be altered constantly to maintain a safe infrastructure. Prevail with the recent threats and smudge on the request and install them prompt to safeguard Virtual Machine.

3. Conclusion

In this review paper, evolution of cloud technology and diverse approach of cloud technology and several advantages. The implementation area of cloud technology would constantly increases. Presently, around each of small and big industries utilize cloud technology to operate traffic, storage, hardware essential. Accordingly, the thing is see-through that there is huge impact of cloud technology on the people and businesses.

The following reasons why a business must integrate Software as a service, despite the fact, Software as a service security engaged can take back a tall times. The unease proceeds through the lack of right understanding of Software as a service security protocol and control. The beyond points provide a proposal on what to await from a Software as a service provider and software as a service security evaluation. We have Software as a service security analysis that relates the use of self-regulating and interactive to recognize security risk. It will provide a comprehensive detail of entire detection and solutions together with bit-by-bitidea for the programmers.

References

[1] Garrison, G., Kim, S., Wakefield, R.L.: Success Factors for Deploying Cloud Computing. Commun. ACM. 55, 62 -68 (2012).
[2] Venters,W.,Whitley, E.A.: A Critical Review of Cloud Computing: Researching Desires and Realities. J. Inf. Technol. 27, 179–197 (2012).
[3] Yang, H., Tate, M.: A Descriptive Literature Review and Classification of Cloud Computing Research. Commun. Assoc. Inf. Syst. 31 (2012).
[4] Marston, S., Li, Z., Bandyopadhyay, S., Zhang, J., Ghalsasi, A.: Cloud computing — The Business Perspective. Decis. Support Syst. 51, 176–189 (2011).

A Research on Self-Cleaned Dust Sensor

Sachin Kumar*
Department of Computer Application
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Ankit Kushwaha
Department of Computer Application
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Nikhil Singh Rawat
Department of Computer Application
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Sachin Kumar
Email Id: 221892@kit.ac.in

ABSTRACT

Air quality monitoring is crucial for ensuring a healthy living environment. Dust sensors play a pivotal role in detecting particulate matter in the air, providing valuable insights into pollution levels. However, the effectiveness of these sensors is often compromised by the accumulation of dust on their surfaces, leading to inaccurate readings and reduced operational efficiency. This research paper introduces a novel self-cleaning dust sensor that automatically maintains its functionality without requiring external human intervention. The proposed system utilizes advanced technologies to achieve efficient and automatic cleaning, enhancing the reliability and longevity of the sensor. In simple words it will be human help free approach.

1. Introduction

Background on the importance of accurate air quality monitoring Air quality is a critical aspect of environmental health, impacting both human well-being and ecosystem stability. Monitoring airborne particulate matter is essential for assessing pollution levels and potential health risks. Traditional dust sensors, while effective, face challenges associated with the accumulation of dust on their surfaces, leading to decreased accuracy over time. Mainly purpose to determine dust quantity in air.

2. Challenges

Our research focuses on the development of a self-cleaning mechanism integrated into a dust sensor. The motivation behind this innovation stems from the need for continuous, reliable data collection in air quality monitoring systems. Dust accumulation on sensors not only hampers their performance but also necessitates frequent maintenance, limiting their operational lifespan. Dust sensor mainly problem in calibration time not exact value given.

3. Objectives of Incorporating Self-Cleaning Technology

The main objective in research paper dust sensor given accurate value every time and auto cleaning without human help.The objectives of our study are twofold: first, to design an efficient self-cleaning mechanism capable of addressing dust accumulation on the sensor surface, and second, to integrate this mechanism seamlessly with existing dust sensor technologies. By achieving these goals, we aim to enhance the accuracy and longevity of air quality monitoring systems, contributing to more effective environmental management and public health initiatives.

4. Literature Review

Overview of existing dust sensors and their limitations: -
Traditional dust sensors have played a crucial role in monitoring particulate matter in the air. Optical sensors, such as those based on light scattering or absorption principles, and electrostatic sensors have been widely employed. These sensors provide valuable data, but their accuracy diminishes over time due to the accumulation of dust on their surfaces. Several studies have highlighted the limitations of these conventional sensors, emphasizing the need for advancements to ensure reliable, long-term performance.

Previous Attempts to Address Dust Accumulation in Sensor Systems

Researchers have explored various approaches to mitigate the impact of dust accumulation on sensor accuracy. Some have focused on innovative sensor coatings designed to repel or minimize dust adhesion. While these coatings show promise, their effectiveness tends to degrade over time, necessitating periodic maintenance. Other studies have investigated manual cleaning methods, where external interventions are required to remove accumulated dust. However, these approaches are impractical for continuous monitoring systems, especially in remote or inaccessible locations. Importance of continuous monitoring for various applications.

The significance of continuous air quality monitoring is underscored by its applications in diverse fields, including environmental research, industrial processes, and public health. Abrupt disruptions in monitoring due to sensor malfunctions or inaccuracies compromise the reliability of data-driven decision-making. Hence, there is a growing consensus in the literature regarding the critical need for sensor technologies that can operate continuously with minimal intervention. As we delve into the development of a self-cleaning dust sensor, these previous studies provide valuable insights into the challenges faced by existing technologies and the gaps that our research aims to address. By building upon these foundations, our innovative approach seeks to contribute to the evolution of air quality monitoring systems, ensuring sustained accuracy and functionality in the face of environmental challenge.

5. Methodology

Design and Development of the Self-Cleaning Mechanism

Our self-cleaning dust sensor incorporates a carefully engineered mechanism to address dust accumulation. The design involves the integration of a low-power brush system, utilizing microbristles strategically positioned across the sensor surface. The brush system is actuated periodically based on predetermined intervals or triggered by real-time monitoring of dust levels.

Integration with the Dust Sensor

The self-cleaning mechanism is seamlessly integrated with a commercially available dust sensor, ensuring compatibility and minimal interference with the sensor's original functionality. The integration involves modifications to the sensor housing to accommodate the cleaning mechanism without compromising its structural integrity. Special attention is given to the alignment and calibration of the cleaning system to optimize its efficacy in removing accumulated dust.

Testing Protocols

To evaluate the performance of the self-cleaning dust sensor, comprehensive testing protocols are implemented. The testing involves exposure to varying concentrations of airborne particulate matter in controlled environments. Data is collected over extended periods to assess the sensor's accuracy and reliability under different conditions. Comparative studies are conducted between the self-cleaning sensor and traditional sensors without such features.

Performance Evaluation

Performance metrics include the sensor's response time, sensitivity, and precision before and after the activation of the self-cleaning mechanism. The effectiveness of dust removal is quantified through image analysis and measurements of residual dust levels on the sensor surface. Additionally, power consumption during self-cleaning cycles is monitored to ensure minimal impact on overall energy efficiency.

Long-Term Reliability and Maintenance Considerations

To assess the long-term reliability of the self-cleaning dust sensor, extended field trials are conducted in real-world environments. These trials involve continuous operation over months, simulating the challenges posed by diverse atmospheric conditions. Maintenance requirements, such as brush replacement intervals and sensor recalibration, are systematically documented to provide insights into the sensor's practicality for deployment in various settings. This detailed methodology outlines the systematic approach employed in the development and evaluation of our self-cleaning dust sensor, ensuring a comprehensive understanding of its capabilities and limitations in real-world applications

Self-cleaning mechanism

The self-cleaning mechanism in our dust sensor is designed to efficiently address the issue of dust accumulation, ensuring sustained accuracy and functionality. The mechanism comprises the following key components and features:

Air pressure: Dust sensor after one cycle completed the after the air pressure flow in sensor surface and cleaning the sensor surface after the clean then next cycle is run.

Micro-Brush System: A central element of the self-cleaning mechanism is a micro-brush system integrated into the sensor housing. This system consists of miniature bristles strategically positioned across the sensor surface. These micro-bristles are engineered to be both flexible and durable, capable of effectively removing adhered dust without causing damage to the sensor's sensitive components.

Actuation Mechanism: The activation of the self-cleaning process is governed by an actuation mechanism, which can be either time-based or triggered by real-time monitoring of dust levels. The actuation mechanism ensures that the cleaning process occurs at optimal intervals to prevent excessive dust accumulation without unnecessary activation that might impact power consumption.

Housing Design: The sensor housing is specially designed to accommodate the self-cleaning mechanism without compromising the structural integrity of the sensor. The housing is constructed from materials that resist dust adhesion and environmental wear, providing a protective barrier for the sensor components.

Sensor Surface Interaction: During the cleaning process, the micro-brushes traverse the sensor surface in a predetermined pattern. This interaction effectively dislodges and sweeps away accumulated dust particles. Careful consideration is given to the pressure exerted by the brushes to ensure efficient cleaning without causing damage or calibration shifts in the sensor

Integration with the Dust Sensor

Compatibility Assessment: Before integration, a thorough assessment is conducted to ensure compatibility between the self-cleaning mechanism and the selected dust sensor. This involves evaluating the dimensions, power requirements, and communication protocols of the dust sensor to seamlessly incorporate the self-cleaning technology without compromising the original sensor's functionality.

Housing Modification: To accommodate the self-cleaning mechanism, modifications are made to the sensor housing. The housing is designed to securely house the micro-brush system while maintaining the sensor's structural integrity. Precision engineering is employed to create a seamless integration that allows efficient operation of the cleaning mechanism without interfering with the dust sensor's internal components.

Sensor Surface Protection: Special attention is given to protecting the sensor surface during the integration process. A protective layer, such as a dust-resistant coating or transparent shield, may be applied to prevent potential damage or interference with the sensor's optical components while ensuring optimal sensitivity to particulate matter.

Alignment and Calibration: Alignment of the self-cleaning mechanism with the dust sensor is a critical step to guarantee effective cleaning. Calibration procedures are implemented to synchronize the cleaning process with the sensor's operational cycles. This ensures that the micro-brushes effectively target areas prone to dust accumulation without causing misalignment issues that could compromise sensor accuracy.

Sensor Data Fusion: Integration extends beyond the physical components to incorporate data fusion from both the dust sensor and the self-cleaning mechanism. A unified control system collects and processes data from both sources, allowing for intelligent decision-making regarding when to activate the cleaning process based on real-time environmental conditions and dust levels detected by the sensor.

Quality Assurance: Throughout the integration process, rigorous quality assurance checks are implemented. These checks include functionality tests to ensure that the dust sensor continues to provide accurate readings after the incorporation of the self-cleaning mechanism. Calibration verification is conducted to confirm that the cleaning process does not introduce calibration drift or sensor inaccuracies.

6. Testing and Results

Controlled Environment Experiments: Comprehensive testing protocols are implemented to assess the performance of the self-cleaning dust sensor in controlled environments with varying concentrations of airborne particulate matter. Controlled experiments allow for the systematic evaluation of the sensor's response to different levels of dust, providing a baseline for comparison.

Comparative Studies: The self-cleaning dust sensor undergoes comparative studies with traditional sensors lacking the self-cleaning feature. This involves side-by-side testing under identical conditions to quantify the improvement in accuracy and reliability achieved through the integration of the self-cleaning mechanism.

Performance Metrics: Performance metrics include response time, sensitivity, and precision before and after the activation of the self-cleaning mechanism. The sensor's response to different particle sizes and concentrations is analysed to understand its capabilities in diverse environmental scenarios. Data is collected at regular intervals to observe any variations over time.

Dust Testing Chamber: The self-cleaning dust sensor undergoes comparative studies with traditional sensors lacking the self-cleaning feature. It help to accurate value given ant Calibration problem solve. After one cycle completed then automatically clean it and given accurate an given.

Maintenance Requirements: Documentation of maintenance requirements, such as brush replacement intervals and sensor recalibration, is systematically recorded. This information provides insights into the practicality of deploying the self-cleaning dust sensor in various settings and informs users about the system's long-term sustainability.

Statistical Analysis: Statistical analyses, including t-tests and regression analyses, are performed on the collected data to determine the significance of improvements achieved with the self-cleaning mechanism. These analyses provide a robust foundation for drawing conclusions about the effectiveness and reliability of the self-cleaning dust sensor.

7. Discussion

Interpretation of Results: The obtained results from controlled experiments and real-world field trials are analyzed to interpret the impact of the self-cleaning mechanism on the performance of the dust sensor. Comparisons with traditional sensors reveal insights into the effectiveness of the self-cleaning feature in maintaining accuracy and reliability over time.

Implications for Air Quality Monitoring: The discussion explores the broader implications of the self-cleaning dust sensor for air quality monitoring. Enhanced accuracy and prolonged functionality contribute to more reliable data, crucial for informed decision-making in environmental management, public health, and various industries.

Limitations of the Self-Cleaning Mechanism: Potential limitations, such as the need for periodic maintenance, power consumption during cleaning cycles, and the effectiveness of the self-cleaning mechanism under extreme conditions, are discussed. Identifying and acknowledging these limitations provide a balanced perspective on the practicality of the technology.

Future Directions for Research: The discussion explores potential avenues for further research and improvement. Suggestions may include refining the self-cleaning mechanism, exploring new materials, or integrating advanced sensor technologies to enhance the overall capabilities of air quality monitoring systems.

8. Conclusion

In conclusion, the development and integration of a self-cleaning mechanism into a dust sensor represent a significant advancement in air quality monitoring technology. The research undertaken has provided valuable insights into the practicality and effectiveness of this innovation.

Key Findings: The self-cleaning dust sensor demonstrated improved accuracy and reliability compared to traditional sensors in the face of dust accumulation. Controlled experiments, comparative studies, and long-term field trials consistently highlighted the positive impact of the self-cleaning mechanism on the sensor's performance.

References

[1] Bhushan B., Jung Y. C., Koch K., "Self-cleaning efficiency of artificial super hydrophobic surfaces" , Langmuir (ACS Publicaion), Vol. 5 (5), 3240–3248, (2009).
[2] K. B. Shaban, A. Kadri and E. Rezk, "Urban air pollution monitoring system with forecasting models", IEEE Sensors J., vol. 16, pp. 2598-2606, Apr. 2016.
[3] M. V. Ramesh, "Real-time wireless sensor network for landslide detection. In Sensor Technologies and Applications 2009", SENSORCOMM'09. Third International Conference on, pp. 405-409, 2009, June.

Comprehensive Evaluation of Cloud Computing in Modern Era: A Survey

Palak Tiwari
Department of Computer Application
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Ekansh Gupta
Department of Computer Application
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Deep Kumar Srivastava*
Department of Computer Application
Naraina Vidhyapeeth Engineering & Management Institute Kanpur.

***Corresponding Author**
Deep Kumar Srivastava
Email Id: srivastava.deep@gmail.com

ABSTRACT

In the world of information technology, cloud computing has become a revolutionary paradigm. It describes the online provision of computing resources, such as storage, processing power, and applications, on demand. In-depth analysis of the advantages, difficulties, and potential future applications of cloud computing are provided in this article. The study begins by discussing the fundamental concepts of cloud computing, including its definition, characteristics, and essential components. The many cloud computing models, including Infrastructure as a Service (IaaS), Platform as a Service (PaaS), and Software as a Service (SaaS), are then examined. We go into great detail on each model's benefits and drawbacks. Furthermore, this research article examines the security and privacy concerns associated with cloud computing. It discusses the potential risks and vulnerabilities that organizations may face when adopting cloud technology and explores the strategies and technologies employed to mitigate these risks. The article also highlights the importance of data protection, access control, and encryption mechanisms to safeguard sensitive information in the cloud environment. Finally, this research article concludes by summarizing the key findings and offering insights into the future of cloud computing. Overall, this comprehensive review provides valuable insights into the world of cloud computing, offering a foundation for further exploration and innovation in this dynamic field.

Keywords: *SaaS, PaaS, IaaS, Cloud Computing*

1. Introduction

Cloud Computing: Cloud Computing refers to the storing and accessing the data and programs on remote servers that are hosted on the internet instead of the computer’s hard drive or local servers. A virtualized computer resources is a pool of cloud. It can host different workloads, including batch style back-end jobs and interactive, user-facing applications, allow workloads to be positioned and scaled-out fastly through the quick provisioning of virtual machines or physical machines.

Cloud Computing was first introduced by Lickliter J.C. who was an American computer scientist and psychologist, for connecting information, data and people together globally. As the years passes, the assessment of cloud computing started. Amazon introduced "Amazon Web Services (AWS)" around 2006 as a cloud computing platform for users. Google introduced the "Beta" version of search engine in year 2008. Oracle rolled out "Oracle Clod Computing" in year 2012.

Why Cloud Computing?

Cloud computing helps in distributing many services like servers, software, databases, intelligence, analytics, and storage, over the internet, or the "cloud". Rather than storing files on any local storage device, cloud storage provides a way to save them to a remote database. Any electronic device that can access the internet can then access the data as well as the software programs needed to run it.

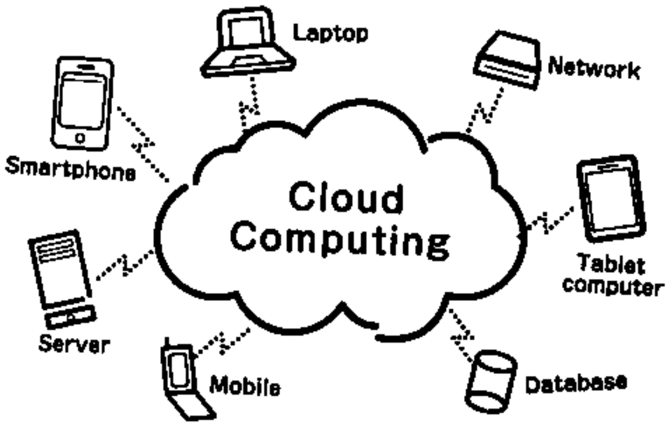

Figure 1: Different Platforms of Cloud Computing

Key Characteristics

Cost: Costs are drastically cut, and capital expenses are changed to operating expenses. Because third party usually offer infrastructure and it does not need to be obtained for one-time or infrequently heavy computer operations, this lowers barriers to entry. Utility computing pricing is fine-grained with usage-based alternatives, and deployment requires little to no IT expertise.

Independence of Device and Location: Anyone may access systems using a web browser independent of their location or the device they are using, such as a PC or mobile, thanks to device and location independence. Users may join from anywhere since the infrastructure is off-site and accessible over the Internet, usually provided by a third party.

Dependability: Using numerous redundant locations enhances reliability and is appropriate for disaster recovery and business continuity. However, the majority of significant cloud computing services have experienced disruptions, and when they do, IT and business managers are mostly unable to address the issue.

The Ability to Scale: Scalability through fine-grained, self-service, dynamic ("on-demand") resource provisioning that occurs almost instantly, saving users from having to plan for peak loads. Web services are used as the system interface, and architectures that are consistent and loosely connected are built. Performance is tracked.

Safety: Data centralization, more resources devoted to security, and other factors usually result in improved security, but they also give rise to worries about losing control over some sensitive data because suppliers are able to, in part, offer security that is frequently on par with or better than traditional systems.

2. Cloud Computing Architecture

Cloud Computing architecture refers to the components and sub-components required for cloud computing. These components typically refer to:

Frontend: In the architecture of cloud computing, frontend is referred to as the client side. As a result, it comes with all of the client-side software and user interfaces required to access cloud computing services and resources. One example would be to access the cloud platform using a web browser.

Backend Platform: The service provider refers to the cloud as "Backend." It holds several resources, including deployment techniques, virtual computers, massive storage, virtual apps, traffic management systems, etc., in addition to managing the resources and providing security measures.

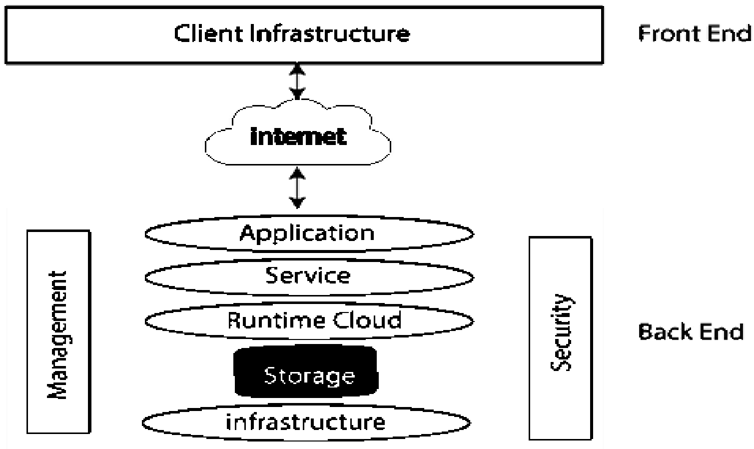

Figure 2: Architecture of Cloud Computing

3. Service Models

Software as a Service (SaaS), Platform as a Service (PaaS), and Infrastructure as a Service (IaaS) are the three primary service models.

(SaaS) Software as a Service: Providing apps and services with the help of Internet is known as "Software as a Service". Rather than installing and maintaining software, we can simply use the Internet to access it, which help the users to getting out from the complexities of software and hardware management. It removes the need for users to install and run apps on their personal computers or in data centres, to save money on both software and hardware. SaaS offers entire software solution that we can pay to cloud service provider on the basis of pay-per-use. Most of SaaS programs doesn't need to be downloaded or installed you can operate it directly from a web browser. SaaS applications are also referred to as hosted, on-demand, or web-based software at times. The only downside of SaaS is that the data on of the users on the cloud provider's server is unsafe, as a result it can be accessed by anyone. Some applications offered by SaaS are: - Google Docs and Office Online.

Advantages

- **Economical:** Only pay for the services rendered.
- **Time Savings:** Most of the SaaS programs are used directly from the web browser with the help of internet connection, so the user had no need to download and install any additional software.
- **Accessibility:** We have global access to app data.
- **Automatic Updates:** Clients depend on a SaaS provider to carry out the upgrades automatically instead of purchasing new software.
- **Scalability:** It allows users to use features and services whenever they need them.

Limitations

- **Limited Customization:** SaaS solutions are usually less customizable than software that is hosted on-premises. As a result, customers are not able to modify the program according to their requirements.
- **Dependency on Internet Connectivity:** Since SaaS solutions are usually cloud-based, a steady internet connection is necessary for them to operate as intended. Users who need to access the program offline or in places with spotty connectivity may find this troublesome.
- **Security Issues:** Although SaaS providers are in charge of ensuring the security of the information kept on their servers, security incidents and data breaches are still a possibility.

(PaaS) Platform as a Service: In the Platform as a Service models, service providers provide a computer platform that consists of an OS, database, and web server. Both software and hardware are hosted on the infrastructure of PaaS provider. As a result, it removes the need for users to install on-premises hardware and software in order to build or execute a new application.

Advantages

- **Easy to Use and Handy for Users:** It provides a lot of the IT services & infrastructure, which can be accessed by the users using web browser from anywhere.
- **Low Cost:** By charging just for the services used, it removes the need for potential on-premises infrastructure and software cost.
- **Efficiency:** It allows simple, high-level programming, which makes the application's overall development more efficient.

Limitations

- **Less Control over the Infrastructure:** Although PaaS providers normally handle upkeep, upgrades, and management of the underlying infrastructure, this might also imply that the users have less control over the infrastructure and they not be able to make required adjustments according to their need.
- **Dependency on the Service Provider:** Customers are rely on the service provider to maintain the platform scalability, dependability and availability.

(IaaS) Infrastructure as a Service: IaaS refers to the provision of networking hardware, devices, databases, and web servers to businesses through outsourcing. Users of IaaS can pay for the service according to the number of users, according to hour, week, or month. Users are also charged by the number of virtual machines they utilize.

Advantages

- **Cost-Effective:** IaaS clients pay on an hourly, weekly or monthly basis, eliminating capital expenditure and lowering recurring costs.
- **Hosting for Websites:** Compared to traditional web hosting, it is less expensive to host a website using IaaS.
- **Security:** Compared to your current software, the IaaS Cloud Provider could offer more security.
- **Maintenance:** Neither the introduction of new development or underlying software updates nor the management of the underlying data center are required. The IaaS Cloud Provider takes care of everything.

Limitations

- **Security Concerns:** In IaaS user data is less secure so the user should responsible for their data in the server.
- **Limited Access:** Due to legal policies cloud computing is not available in certain regions.

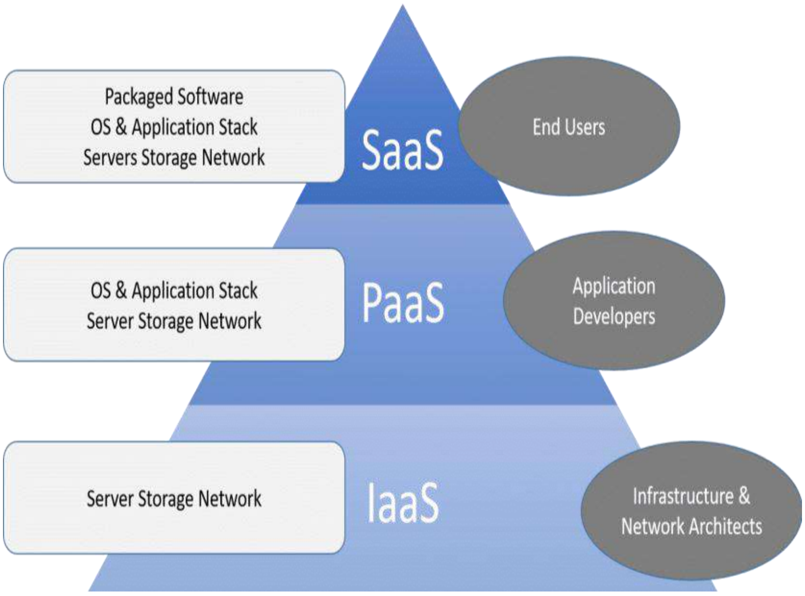

Figure 3: Cloud Computing Models

4. Deployment Models

Public Cloud: When cloud services are provided via the public Internet, they are referred to as "public" services. They can be provided for free or as part of a subscription that costs money. Public and private cloud services are similar architecturally, but when services are shared by several users, security problems escalate significantly. Public cloud providers provide direct connection services which enables client safety connections. The choice made by companies and organizations to pick between on-premises and public cloud solutions is influenced by several considerations, including cost, organizational and integration elements, safety and security, and functionality of the solutions.

Limitations

- **Security and Privacy Issues:** Data leaks, cyberattacks, and other security hazards can affect public clouds. Since information is kept on servers that are held by other providers, there is always a chance that private or sensitive information might be hacked or leaked.
- **Restricted Control:** ware that their apps are running on. Because of this, it might be challenging to alter the environment to satisfy certain needs.
- **Dependency on Internet Connectivity:** In order to access the resources and apps stored in the cloud, users of public cloud services need a dependable and steady internet connection. Services may not function as well or be available at all if the internet connection is erratic or sluggish.
- **Cost Overruns:** Because public cloud services are normally paid for on a pay-per-use basis, consumption that surpasses projections may lead to unanticipated cost overruns. Furthermore, if providers modify their pricing structures or provide new features and services, the price of utilizing public cloud services may go up over time.

Private Cloud: A private cloud is an instance of cloud infrastructure that is controlled and hosted either internally or externally, and is only utilized by one business. Implementing a private cloud project necessitates a large amount of virtualization of the business environment and a reevaluation of the organization's resource allocation decisions. Although every stage of the project brings up security concerns that need to be resolved to avoid major vulnerabilities, it can boost profitability. In general, self-managed data centers require a lot of cash. Their substantial physical footprint necessitates the allocation of hardware, space, and environmental controls. Periodically replacing these assets will need extra capital expenditures.

Limitations

- **Increased Cost:** Dedicated hardware, software, and networking infrastructure is needed for private clouds, and they can be costly to purchase and operate. This might make implementing a private cloud difficult for smaller companies or groups with tighter finances.
- **Limited Scalability:** Compared to public cloud services, private clouds may not be as scalable since they are tailored to meet the needs of a particular enterprise. Because of this, it might be challenging to swiftly add or withdraw resources in reaction to shifts in demand.
- **Security Risks:** Because private clouds are hosted on an organization's own infrastructure, they are generally thought to be more secure than public clouds. They may still be exposed, nonetheless, to security threats like cyberattacks and data breaches.
- **Maintenance and Upgrades:** It might take a lot of time and resources to maintain and upgrade a private cloud infrastructure. For businesses that must prioritize other important tasks, this might be difficult.

Hybrid Cloud: A hybrid cloud combines the advantages of several deployment models by combining a public cloud with a private environment, that are separate yet connected. According to Gartner, a hybrid cloud service is a cloud computing offering made up of a mix of community, private, and public cloud services from several service providers. A hybrid cloud service transcends provider and isolation barriers, making it impossible to classify it as a private, public, or community cloud service.

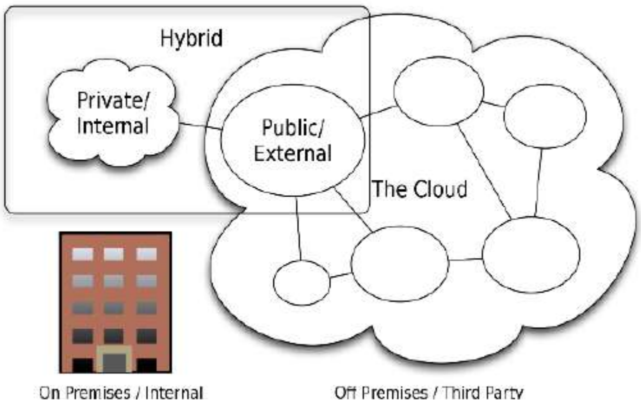

Figure 4: Cloud Computing Types

5. Conclusion

The issue of cloud computing is vast. Among the many benefits of cloud computing is its capacity to shorten the time to market for applications that need dynamic scaling. Cloud computing has several benefits, such as lower costs, better agility, scalability, resilience, and much more. Owing to these benefits, a lot of companies are utilizing cloud services to create incredibly robust and scalable systems. The future is bright and full of possibilities with cloud services. Whether the business survives these changes will depend on its capacity to adapt. Take advantage of cloud computing by starting your Knowledge Hut Cloud Computing course now.

References

[1] https://en.wikipedia.org/wiki/Cloud_computing
[2] https://www.researchgate.net/publication/277860117_Cloud_Computing
[3] https://www.geeksforgeeks.org/cloud-computing/?ref=lbp
[4] https://ieeexplore.ieee.org/document/8114187
[5] https://www.uniprint.net/en/7-types-cloud-computing-structures/
[6] https://www.javatpoint.com/cloud-computing-architecture
[7] https://www.slideshare.net/wrecks/oracle-cloud-computing-strategy
[8] F. Durao, J. Fernando, S. Carvalho, A. Fonseka and V. C. Garcia, "A systematic review on cloud computing", *J. Supercomput.*, vol. 68, no. 3, pp. 1321-1346, 2014
[9] G. Allen, Potential and Challenges of Grid Computing, Jul. 2017, [online] Available: https://www.cct.lsu.edu/~gallen/Presentations/MardiGras_GEA_Jan2008.pdf.

To Study Advancement in Wind Turbine-A Review

Tanish Katiyar
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology.

Ayush Singh
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology.

Vivek Srivastava
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology.

Manoj Kumar Yadav*
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology.

***Corresponding Author**
Manoj Kumar Yadav
Email Id: 210641@kit.ac.in

ABSTRACT

This research paper explores the technological advancement and environmental implications of wind turbines in the context of renewable energy. The study deals in design and operational aspects of modern wind turbines a focusing on their efficiency in blade design, material and control system aiming to enhance the performance and improve the energy output. Moreover, the environmental aspect as well as assessment also considered with related to land use, wild life and noise pollution during installation in wind turbine. Additionally, investigated the life cycle of wind turbines and considering their manufacturing aspect to evaluate their overall sustainability. Furthermore, the research paper discusses the economic feasibility and policy implication of wind energy adoption, highlighting the growing role of wind power in the global energy trends. The findings contribute to the ongoing discourse on renewable energy sources and provide inside for policy maker, engineers and environmentalist seeking sustainable solutions to meet the world's escalating energy demands while mitigating the effects of climate change. This research paper is an attempt to find the various parameters affecting wind turbine optimization.

Keywords: [1]

- Renewable Energy
- Blade Designe
- Generator Technology
- Wind Farm Layout
- Power Output
- Environmental Impact

- Wind Resource Assesment
- Cost Analysis

1. Introduction

Wind turbines are generally devices which kinetic energy of the wind to mechanical energy and finally to electrical energy. These are generally renewable energy technology sources used to produce electricity.

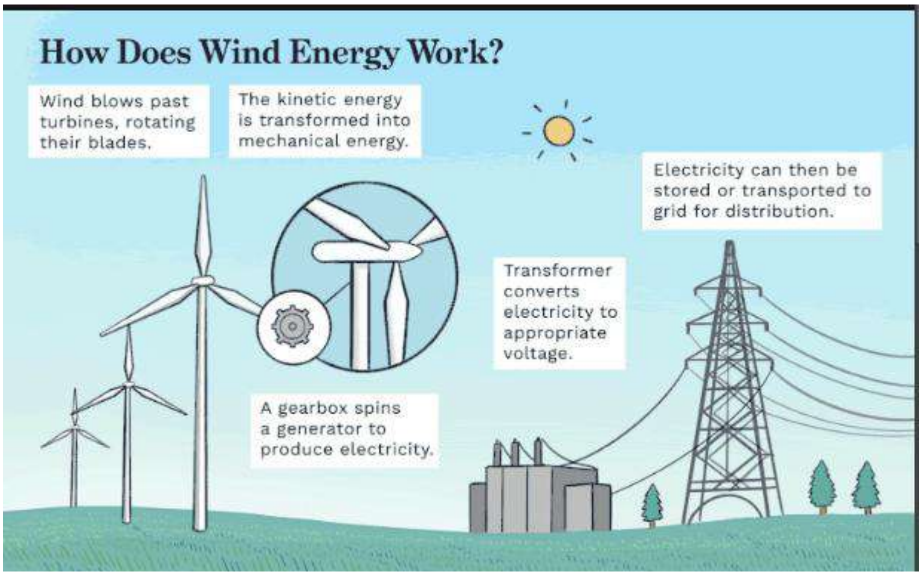

Problem Statement

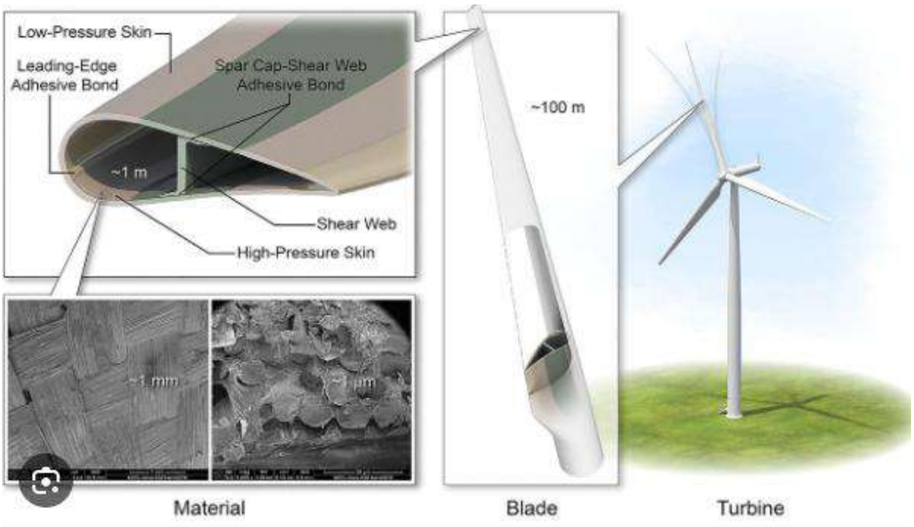

Figure 1: Wind Turbines

The problem statement for a wind turbine-related research project typically outlines the specific challenges or issues that the study aims to address. Below is an example problem statement for a wind turbine research project:

As the global demand for clean and sustainable energy sources continues to rise, wind turbines play a pivotal role in harnessing wind power for electricity generation. However, several challenges persist in the design, operation, and integration of wind turbines into the existing energy infrastructure [2]. These challenges include:

a. **Variable Wind Conditions:** Wind turbine performance is heavily influenced by the variability and intermittency of wind speeds. Adapting to dynamic wind conditions to maximize energy capture remains a significant challenge.
b. **Blade Fatigue and Structural Integrity:** The continuous operation of wind turbine blades under varying wind loads leads to fatigue and wear, impacting the structural integrity and lifespan of the turbine. Developing durable materials and efficient maintenance strategies is crucial.
c. **Noise and Aesthetic Concerns:** The audible noise generated by wind turbines and their visual impact on landscapes have raised concerns among local communities. Balancing energy production with minimal environmental and social impact poses a challenge.
d. **Grid Integration and Power Fluctuations:** Integrating wind energy into the electrical grid requires overcoming issues related to power fluctuations, grid stability, and effective energy storage solutions to ensure a reliable and consistent power supply.
e. **Optimal Site Selection:** Selecting suitable sites for wind farms is essential for maximizing energy production. Challenges arise in accurately assessing wind resources, environmental impact assessments, and navigating regulatory frameworks.
f. **Cost Competitiveness:** While advancements have been made, the cost of manufacturing, installing, and maintaining wind turbines remains a barrier to widespread adoption. Identifying cost-effective technologies and financing models is essential for the economic viability of wind energy projects.
g. This problem statement sets the stage for a research project by clearly defining the issues that the study seeks to investigate and improve upon. Researchers can use this as a foundation to delve into specific research questions, methodologies, and potential solutions in the subsequent sections of their work.

Objective: The objectives of a research paper on wind turbines generally revolve around addressing specific issues, advancing knowledge, or proposing innovative solutions within the field [3]

2. Various Objectives

a. Evaluate Wind Turbine Performance under Variable Wind Conditions[4]

- Investigate the impact of variable wind speeds and directions on the performance of wind turbines.
- Develop models and algorithms to optimize energy capture in dynamic wind environments.

b. Enhance Blade Durability and Structural Integrity

- Examine the fatigue mechanisms affecting wind turbine blades over their operational lifespan.
- Propose design modifications and material enhancements to improve blade durability and structural integrity.

c. Address Noise and Aesthetic Concerns

- Analyze the factors contributing to audible noise generated by wind turbines and its potential environmental and social [5] impacts.
- Develop mitigation strategies and design improvements to minimize noise levels and address aesthetic concerns.

d. Improve Grid Integration and Power Management

- Investigate challenges related to the integration of wind energy into the electrical grid.
- Propose solutions for managing power fluctuations, enhancing grid stability, and exploring effective energy storage options.

e. Optimize Site Selection for Wind Farms

- Develop methodologies for accurate wind resource assessment to aid in optimal site selection for wind farms.
- Conduct environmental impact assessments and propose guidelines for responsible wind farm development.

The methodology section of a research paper on wind turbines outlines the procedures and techniques employed to achieve the study's objectives. Below is an example of the methodology section for a research paper on wind turbines

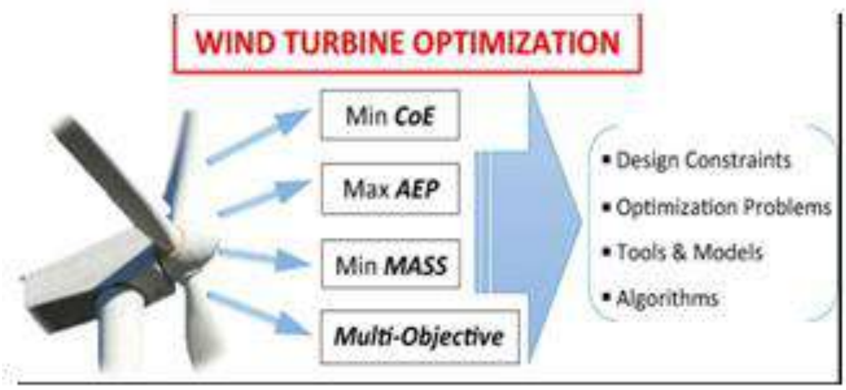

Figure 2: Wind Farms

a. Data Collection and Wind Resource Assessment

- Utilize meteorological data from various sources, including ground-based measurements and satellite data, to assess wind resources at potential wind farm sites.
- Apply statistical methods and modeling techniques to analyze wind speed, direction, and variability over time.

b. Performance Evaluation under Variable Wind Conditions

- Conduct field measurements on operational wind turbines to gather data on power output, rotational speed, and other relevant parameters under different wind conditions.
- Employ computer simulations using software such as Computational Fluid Dynamics (CFD) to model and predict turbine performance in variable wind environments.[6]

c. Blade Durability and Structural Analysis

- Perform material testing to assess the fatigue characteristics of turbine blades under varying loads.
- Employ Finite Element Analysis (FEA) to simulate and evaluate the structural behavior of wind turbine blades over their operational lifespan.

d. Noise Measurement and Mitigation

- Use specialized equipment for on-site noise measurements at operational wind farms.
- Investigate noise reduction technologies and evaluate their effectiveness through controlled experiments and simulations.

e. Grid Integration and Power Management

- Analyze grid data and conduct simulations to assess the impact of integrating wind energy into the electrical grid.
- Develop and test control strategies for managing power fluctuations and enhancing grid stability. [6]

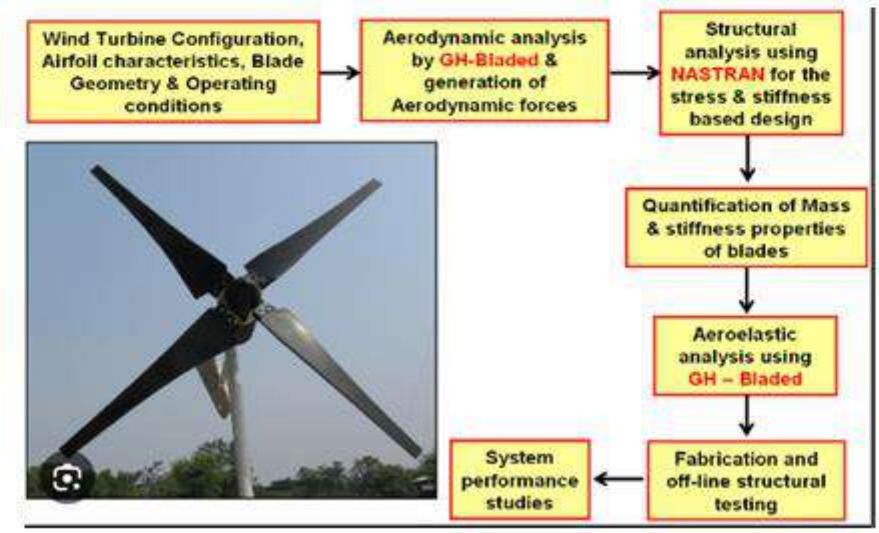

Figure 3: Power Management

3. Limitations

a. Data Availability and Quality

- The study relies on available meteorological data for wind resource assessments, and variations in data quality and availability may impact the accuracy of the results.
- Limited historical data for some study sites may restrict the depth of the analysis, particularly in regions with sparse meteorological monitoring.

b. Modeling Assumptions and Simplifications

- Computational simulations, such as those using Computational Fluid Dynamics (CFD), involve certain assumptions and simplifications. These may include idealized representations of turbine components and atmospheric conditions.
- The accuracy of simulations is contingent on the fidelity of the models and the assumptions made during the modeling process.[7]

c. Field Measurement Constraints

- Field measurements on operational wind turbines are subject to logistical constraints and access limitations. The scope of measurements may be restricted by safety considerations and turbine operator policies.
- Variability in turbine models and age may introduce additional complexities when generalizing findings to the broader wind turbine population.

d. Noise Measurement Challenges

- Noise measurements may be influenced by ambient environmental noise and other sources unrelated to wind turbines. Efforts to isolate and accurately measure turbine-related noise are challenging in real-world conditions.
- The study may not capture the full range of noise profiles for different wind turbine designs and operational conditions.

e. Economic Model Sensitivity

- The economic feasibility analysis involves assumptions about interest rates, inflation, and other economic factors. Sensitivity to changes in these parameters may impact the robustness of the economic model.
- The study does not account for potential unforeseen market fluctuations that could affect the cost competitiveness of wind energy technologies.

f. Performance Optimization under Variable Wind Conditions

- The research focuses on evaluating and optimizing the performance of wind turbines in response to variable wind speeds and directions. This includes a comprehensive analysis of the impact of dynamic wind conditions on energy capture and turbine efficiency.[8]

g. Blade Design and Structural Integrity

- The study delves into the design aspects of wind turbine blades, with a specific emphasis on enhancing durability and structural integrity. It includes both experimental and computational approaches to assess fatigue characteristics and propose improvements.

h. Noise Reduction Strategies

- A key area of investigation is the noise generated by wind turbines and its environmental impact. The research aims to identify noise reduction strategies, assess their effectiveness, and propose design modifications to minimize the audible impact of wind farms.

i. Grid Integration and Power Management

- The scope includes an examination of challenges related to the integration of wind energy into the electrical grid. This involves analyzing power fluctuations, grid stability issues, and exploring advanced control strategies for efficient power management.

j. Site Selection Criteria and Environmental Impact Assessment

- The study contributes to the development of criteria for optimal wind farm site selection, considering factors such as wind resources, ecological sensitivity, and community considerations. It includes an environmental impact assessment to guide responsible wind farm development.

k. Performance Optimization in Variable Wind Conditions

- The analysis of wind turbine performance under variable wind conditions has highlighted the importance of adaptive control strategies. Optimizing turbine operation based on real-time wind data can significantly enhance energy capture efficiency.

l. Blade Design and Structural Enhancements

- Findings related to blade durability and structural integrity underscore the significance of advancements in materials and design. Proposals for improved blade designs and materials aim to extend the operational lifespan of wind turbines and reduce maintenance costs.[9]

m. Noise Reduction Strategies and Aesthetic Considerations

- The investigation into noise reduction strategies has identified promising approaches to minimize the audible impact of wind turbines on surrounding communities. Balancing aesthetic considerations in wind farm design is essential for fostering social acceptance.

n. Grid Integration and Power Management

- Challenges associated with grid integration have been addressed through the exploration of advanced control strategies. Effective power management solutions are crucial for ensuring the stability of the electrical grid as wind energy continues to contribute a growing share of electricity.

o. Site Selection Criteria and Environmental Impact Assessment:

- The development of criteria for optimal site selection and the environmental impact assessment framework contribute to responsible wind farm development. These guidelines aim to balance the need for renewable energy with ecological and community considerations.[10]

References

[1] [S V R Wilson, P D Clausen & D H wood, "Gyroscopic moments on small wind turbine blades at high yaw rates", Australian journal of mechanical engineering,
[2] Peter j. Schubel and Richard j. Crossley, "wind turbine blade design" faculty of engineering, division of materials, mechanics and structures, university of Nottingham,
[3] Bahramiasl, s., Abbas pour, m., &karimirad, m. "Experimental study on gyroscopic effect of rotating rotor and wind heading angle on floating wind turbine responses". international journal of environmental science and technology.
[4] Hiromichi Akimoto, kenji Tanaka and Vutaka hara, "Gyroscopic effects on the dynamics of floating axis wind turbine" division of ocean systems engineering
[5] Abhijit Mane, Manoj Kharade, Pravin Sonkambale, Shubham Tapase, Sachin S
[6] Pratik kumar shah, Vishal Kumar Jain, Seshadri Subramanian, Sumit Mhaddolkar, Siddique Ahmed, "Cae design and analysis of bladeless wind turbine"
[7] A. Dolezal, A. M. Majano, A. Ochs, and P. y Ramón,
[8] N. Apergis and J. E. Payne, "The renewable energy consumption–growth
[9] F. J. Domínguez, B. Bajo, M. Molina Ibáñez
[10] M. G. M. Briones-salas, "Review on wind turbine"

Review Paper on Designing and Fabrication of Plant Irrigation Water Sprinkler Robot

Harsh Kumar
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Shailendra Singh*
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Vivek Srivastava
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Sanjay Singh
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India

***Corresponding Author**
Shailendra Singh
Email Id: shailendra.singh@kit.ac.in.

ABSTRACT

In dry areas and during dry seasons, irrigation is a helpful solution to the issue of insufficient water for plantations and plants. This study evaluates the effectiveness of a novel adaptive sprinkler irrigation robot and presents the architectural design. Effectively monitoring the condition of lawns or plants, the irrigation system autonomously directs water precisely when and where needed to sustain plant and lawn health, leading to substantial reductions in water consumption, seepage, and runoff. A single-sprinkler robot with a moveable water tank is used in the Plant Irrigation Water Sprinkler Robot System to irrigate the entire field with water. Resembling a moving water tank, this automated system covers the entire field, eliminating the need for manual intervention. To guarantee full field coverage, geo-fencing sensors can also be added to the robot. Water sprinkler robots, water tanks, sprinkler systems, fertilizers, and plant irrigation are some of the key terms.

Keywords: Plant irrigation, robot, tank, Sprinkler system.

1. Introduction

The global agricultural sector consumes 85% of the freshwater resources that are available, and this trend is expected to persist due to rising food and population demands. Facing the challenge of limited water resources and the global scarcity of water,our response has been to advance technology and develop various techniques to ensure the sustainable use of water in agriculture. In response to constraints on water availability and the growing global population, governments and states worldwide have embraced technological advancements to enhance agricultural productivity per unit area while optimizing soil and water resources. These days, irrigation systems can be broadly divided into two categories: pressure and gravity. Sprinkler and drip irrigation fall under the pressure category, while furrow irrigation is usually part of the gravitational system. The selection of each system is crucial for maximizing water productivity and minimizing the overall costs associated with farm maintenance. A worker's constant presence is not cost-effective for controlling irrigation automation instruments, even if a water sprinkler system may meet needs with presence and monitoring during the growth season. With the evolution of technology and the emergence of processors and controllers, the imperative to enhance the farmer's role as an off-field observerbecomes even more significant, especially in the context of novel irrigation systems. The utilization of an electromagnetic sensor for measuring soil moisture served as the foundation for the development of an irrigation system, resulting in a 53% water savings compared to sprinkler irrigation across a 1000 m2 pasture. Achieving a reduction in water consumption is also feasible through scheduled systems, employing soil sensors and an evaporimeter, allowing irrigation to be adjusted in response to daily variations in the weather or the volumetric moisture content of the substrate.

A system designed for large-scale malting barley cultivations made irrigation optimization possible by integrating decision support software with an infield An irrigation equipment, converted into controlled sprinkler nozzles, is driven by a Wireless Sensor Network (WSN).

2. Objectives

By strategically placing moisture sensors in the soil and using a microprocessor to monitor the moisture content of the soil, the system aims to develop an autonomous watering system. Goals of the system:

- Create a system that waters the plants automatically.
- Arduino, relay module, and moisture sensor are used to control the system.
- Use the moisture sensor signal that Arduino starts to function to check the amount of moisture in the soil.
- A microcontroller will be used to automatically control every system.

3. Literature Review

a. **Automatic Irrigation Management System Based on Sensors:** The objective of this study is to create a device that uses the humidity ratio to help with water regulation. The irrigation procedure will begin when ground sensors placed strategically throughout the land area indicate that water is needed. Concurrently, a mechanical mechanism was established to replenish the water tanker upon its emptying.

b. **Automatic Irrigation Management System with Sensor Based Control:** The objective of this study is to create a device that uses the humidity ratio to help with water regulation. The irrigation procedure will begin when ground sensors placed strategically throughout the land area indicate that water is needed. Concurrently, a mechanical mechanism was established to replenish the water tanker upon its emptying.

c. **Soil Moisture Content Sensing Automatic Irrigation System:** Developing a device that senses moisture and automatically turns the engine on or off is the aim of this research. In this particular context, I encountered difficulties in obtaining sufficient information about the water source, the protocols for managing water withdrawal, and specifics about the power supply used for this investigation.

d. **Arduino-Powered Smart Irrigation System:** This technology focuses on applying pesticides correctly on agricultural land to prevent disease. This equipment has an analytical device and flora that are connected to the sensor. The temperature, humidity, motion, light, vibration, and UV sensors are all included in the multi-sensor. Sensors are classified as analytical instruments since they are made to find particular materials in patterns. Using an Arduino interface, the multi-sensor's recorded pH and moisture values are sent over GSM to the farmer's smartphone.

4. Methodology

a. Project Formulation
b. Literature Survey
c. Overview of Model Design
d. Calculations for Design
e. Examining the Design
f. Model Manufacturing

5. Components and Their Functions

a. **Controller:** The irrigation robot can be controlled by four keys on the remote. The controller is interfaced with this. The keys function as follows:
- Forward, Reverse, Left turnRight turn

b. **Chassis:** First, make a rectangular block the necessary dimensions for the chassis. Next, use the command "extrude cut" to generate the chassis cut by drawing two offset rectangles with an offset of one inch on the two adjacent faces of the block.

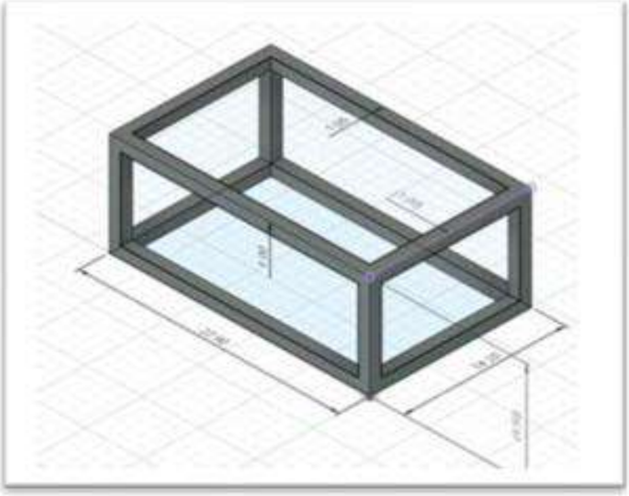

Figure 1: Chassis

c. **Sprinkler:** It an irrigation sprinkler, sometimes known as a water sprinkler or just a sprinkler, is a specialized tool used for watering lawns, landscaping, golf courses, and a variety of other locations. They are also employed for airborne dust management and cooling. Sprinkler irrigation mimics rainfall in nature by applying water in a regulated manner. Water is distributed via a network of pipelines, sprinklers, pumps, and valves to meet the needs of agriculture, industry, and *households. Especially* useful in sand-filled or uneven areas where water is scarce, this technique uses pipes that are perpendicular to the main pipeline and have rotating nozzles attached. The pressurized flow of water through the main a pipe that, with the help of a pump, allows water to be released from revolving nozzles to irrigate crops efficiently. When using overhead or sprinkler irrigation, water is aimed at one central area of the field and distributed using high-pressure sprinklers or guns.

Figure 2: Sprinkler

d. Micro Controller: Pressing the key initiates data transmission from the controller. The Arduino Uno microcontroller board is used in this project, with a focus primarily on the microcontroller and its architecture due to its crucial function as the main element of the project. Nowadays, almost no gadget in technology functions without a microcontroller because they have become essential parts of so many different kinds of electronics. This project uses the ATMEGA 328P microcontroller, which is an integrated circuit (IC) that is essential to the project's smooth operation.

e. Channel Relay: The 4 Channel Relay Module is a multipurpose board that may be used to efficiently regulate loads with high voltage and high current, such as AC loads, motors, solenoid valves, and lighting. It is made to communicate with microcontrollers, including PIC, Arduino, and others. Screw terminals are used to bring out the relays' COM, NO, and NC terminals. Additionally, an LED is included to show the relay's status. The 4 Channel Relay Breakout is an adaptable and practical way to use your Arduino, Raspberry Pi, or other microcontroller to handle high voltages and significant current loads. With the ability to operate on both 3.3V and 5V logic, the board utilizes four digital outputs to control four relays separately.

f. Dot Board: DOT PCB, or perf board, is a material used in electronic circuit prototyping. This thin, stiff sheet has square grid of predrilled holes spaced at regular intervals, usually 0.1 inch (2.54 mm). Copper pads, which might be square or round, encircle the holes; certain boards are available without the copper layer. Higher-quality perfboards may have pads on both sides (plate-through holes), whereas less priced ones might only have pads on one. Once every pad has been electrically separated, builders can make connections by using small point-to-point wiring or wire wrap techniques. Soldered onto the prototype board are discrete components such as integrated circuits, resistors, and capacitors. Usually, paper bonded with phenolic resin (FR-2) or a fiber glass-reinforced material serves as the substrate.

g. Water Pump: A submersible pump, sometimes referred to as an electric submersible pump, has a hermetically sealed motor that is tightly connected to the pump body and is intended to function completely submerged in water. By converting rotary energy into kinetic energy and then pressure energy, this kind of pump successfully raises water to the surface.

Figure 3: Water Pump

h. Battery: This block is very important because the system's components all require a power source to function. The relay and DC motors require +12V, but the microcontroller only needs +5V. A voltage regulator and a 9V battery are used in the transmitter to provide the 5V power supply required for the microprocessor. In the meantime, a voltage regulator is used once more to create a 5V DC supply, and a 12V battery powers the relay and DC motors in the receiver.

The oxidation and reduction processes that take place between an electrolyte and metals are the fundamental processes that drive a battery's activity. When two Different metallic materials, referred to as electrodes, are submerged in a diluted electrolyte, and depending on the metal's electron affinity, oxidation and reduction reactions occur in the corresponding electrodes.

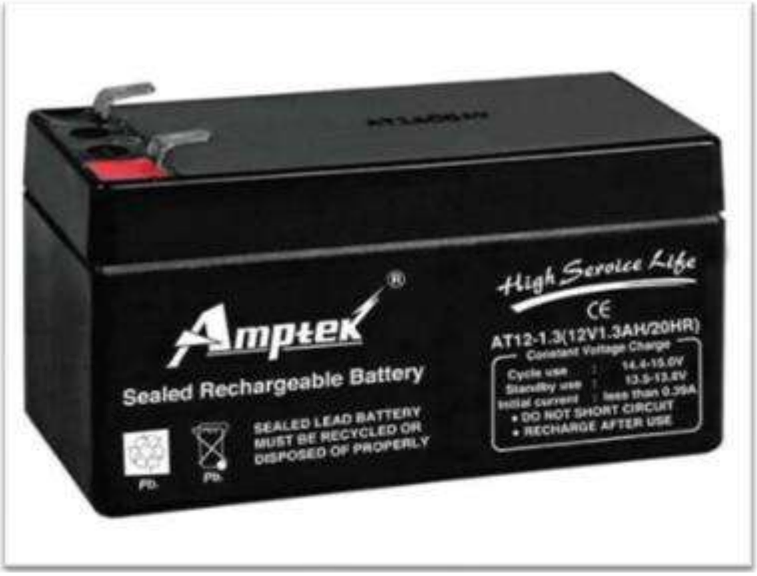

Figure 4: Battery

i. **Wheels:** Land transporter on wheels, Every robot on Earth has their name inscribed on the Wheel of Robots, which is located in Robot Hell. The Robot Devil uses the device to select which robot will give up their hands for frying by using it as a deciding factor. Interestingly, Bender's name appears on the list right next to the Robot Devil's. Conversely, wheeled robots use powered wheels to propel themselves across the ground.

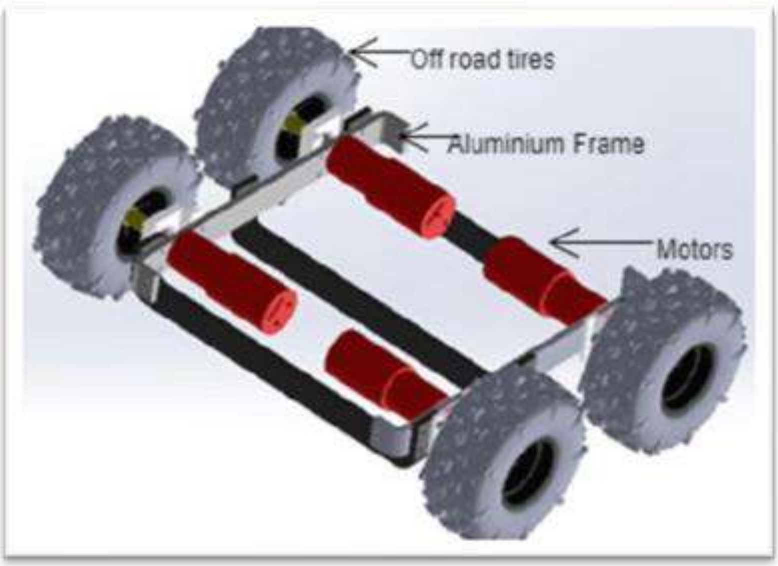

Figure 5: Wheels

j. **RF Transmitter:** The transmitter and receiver (Agrobot) modules make up the two sections of the project. The remote control, or transmitter, is outfitted with a keyboard and radio frequency transmitter that are interfaced with an Atmega3268P microprocessor.

k. **A RF Receiver:** The RF receiver is in charge of demodulating the received signal, as shown in the block diagram. The real data signal, or the original signal that is broadcast from the transmitter, will be the demodulated output. There are three pins on the RF receiver. The output, which is attached to the micro controller, comes in second, followed by ground, and Vcc comes in third.

Figure 6: Rf transmitter and receiver

l. **DC Motor:** A magnet that lasts A DC motor is responsive to both current and voltage. The torque of the motor depends on the current passing through its armature windings, whereas the steady-state voltage across it controls its running speed. The motor starts moving in one direction when electricity is applied, and it reverses direction when the polarity is switched.

Figure 7: Motor

6. Working of Robot

In this autonomous plant watering robot system, the operational framework centres on sustainable and efficient plant care across extensive areas. The entire system relies on a rechargeable li-ion battery pack, providing autonomy to the robot. The setup process is user-friendly, requiring a one-time configuration. Users mark tree locations using a GPS device, feeding the geographical coordinates into the microcontroller. The robot navigates along the shortest path to the target location using four motors. Obstacle detection is facilitated by ultrasonic sensors, sending measured distances to the control unit. In the face of obstacles, therobot executes precise 90-degree left and right turns, continuously assessing and adapting to its environment. Upon reaching a target location, the robot activates a sprinkler system for plantwatering before seamlessly moving to the next designated area. The system incorporates sensors to monitor water levels in the tank and calculate the remaining battery life. Notably, when the required battery exceeds the necessary power by 5% for reaching the recharge point,the robot autonomously heads towards the starting point for recharging and refilling.

This review paper underscores the comprehensive functionality of the autonomous plant watering robot, emphasizing its user-friendly setup, obstacle-avoidance mechanisms, water andenergy management, and real-time monitoring capabilities, all contributing to an effective andsustainable solution for large-scale plant irrigation.

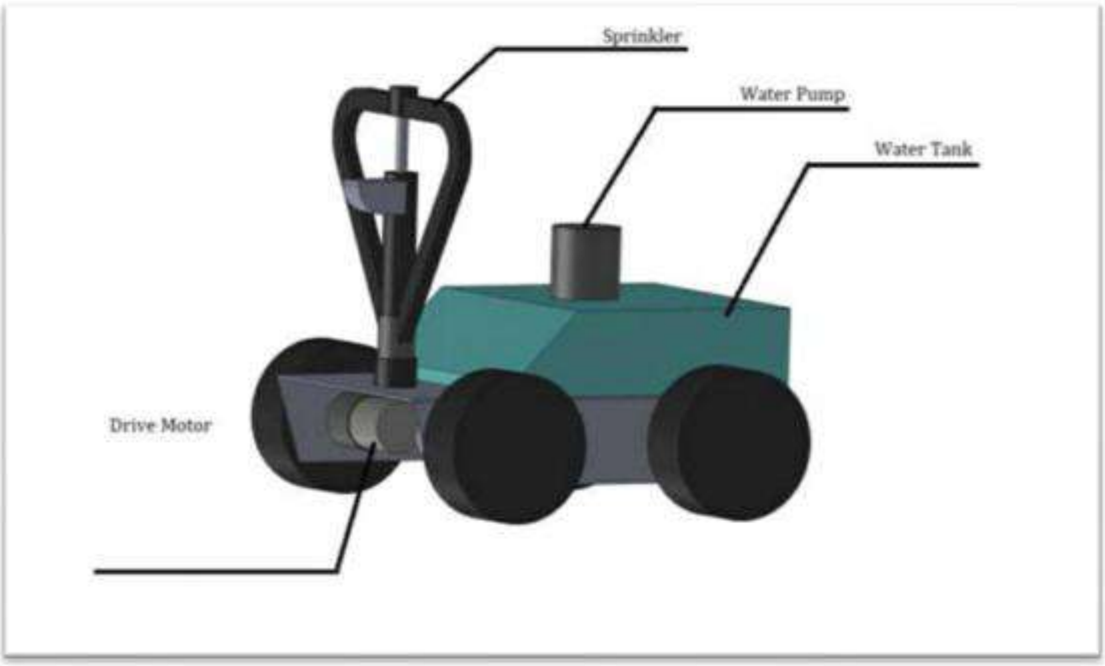

Figure 8: Proposed model reference image

7. Conclusions

The implementation of the proposed system offers significant advantages to both the government and farmers. It presents a viable solution to the energy crisis, providing a means for optimizing water usagethrough the automatic irrigation system, thereby reducing wastage and minimizing human intervention in farming practices. Additionally, the surplus energy generated by the solar panels can be directed to the grid with minor adjustments to the system circuit, potentially serving as a source of revenue for farmers. This not only promotes agriculture in India but also contributes to resolving the energy crisis. The system has been effectively built to use a robot to continuously monitor the crop's state while it moves throughout the field; we can view the crop's condition on our PC. The automated watering method that was developed shows promise for cutting water use without compromising fresh biomass production. The usage of these kinds of irrigation systems is justified by the need to protect this natural resource, even in addition to the financial savings from reduced water use. The automated irrigation system's design shows that, for a given quantity of fresh biomass production, water usage may be decreased. The use of these irrigation techniques is justified by the value of protecting this natural resource, in addition to the financial advantages of water conservation. Many Problems surfaced, like the fact that the project's foundation tables were bigger than what was needed for the prototype. Moreover, locating the materials required for this job has proven to be difficult. There is significant difficulty in choosing the right plant plate and securing it in the foam and artificial grass. Furthermore, it was challenging to make wire connections because the Arduino was connected to so many devices. Moreover, it is challenging to ascertain the system's sequence of events because the project's batteries run out quickly while it is operating. It was difficult to design the microcontroller's controllers since even a small mistake may cause any electrical component to malfunction. Developing the Smart Irrigation System's software and uploading it to the microcontroller to operate the water pump, control valves, and eighteen sensors was a challenging undertaking. However, the microcontroller library enabled the program to be finished successfully and with outstanding results.

Figure 9: Final model Plant Irrigation Water Sprinkler Robot

References

[1] Pratibha S R, Anupama Hongal , Jyothi M P," IOT Based Monitoring System In Smart Agriculture", 2017 International Conference on Recent Advances in Electronics and Communication Technology.

[2] Saurabh Umarkar and Anil Karwankar," Automated Seed Sowing Agribot using Arduino", International Conference on Communication and Signal Processing, April 6-8, 2016, India.

[3] Varun Dhawan, Anindu Bose, Vishal Danve, "Solar Powered Gardener", International Journal on Recent and Innovation Trends in Computing and Communication, 2016, ISSN: 2321-8169 Volume: 4 Issue: 3 454 – 457

[4] Chetan Dwarkani. M, Ganesh Ram. R, S. Jagannathan, R. Priyadarshini, "Smart Farming System Using Sensors for Agricultural Task Automation", IEEE International Conference on Technological Innovations in ICT for Agriculture and Rural Development (TIAR 2015).

[5] Anurag D, Siuli Roy and SomprakashBandyopadhyay, "Agro-Sense: Precision Agriculture using Sensor-based Wireless Mesh Networks", ITU-T "Innovation in NGN", Kaleidoscope Conference, Geneva 12-13 May 2008.

[6] C. Arun, K. Lakshmi Sudha "Agricultural Management using Wireless Sensor Networks –A Survey"2nd International Conference on Environment Science and Biotechnology IPCBEE vol.48 (2012) © (2012) IACSIT Press, Singapore 2012.

[7] M. Priyadarshini, Mrs. L. Sheela, "Command based self-guided digging and seed sowing rover", International Conference on Engineering Trends and Science & Humanities, ISSN: 2348 – 8379, ICETSH-2015.

[8] Akhila Gollakota, M. B. Shriniva, "Agribot - a multipurpose agricultural robot," India conference (INDICON) 2011 Annual IEEE 978-1-4577-1110- 7, 1-4, IEEE 2011.
[9] Izzatdin Abdul Aziz, MohdHilmiHasan, Mohd Jimmy Ismail, MazlinaMehat, NazleeniSamihaHaron, "Remote Monitoring in Agricultural Greenhouse Using Wireless Sensor and Short Message Service (SMS)", 2008.
[10] Jeonghwan Hwang, Changsun Shin, and Hyun Yoe "Study on an Agricultural Environment Monitoring Server System using Wireless Sensor Networks", 2010.

Review on Designing and Fabrication of Foot Operated Hammer

Aniket Gupta
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology, Kanpur.

Rohit Kumar*
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology, Kanpur.

Prateek Gangwar
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology, Kanpur.

***Corresponding Author**
Rohit Kumar
Email Id: 211683@kit.ac.in

ABSTRACT

The abstract presents an innovative hammer design, revolutionizing traditional blacksmithing tools with the integration of a foot-operated and sophisticated four-bar chain mechanism. This mechanism not only multiplies force but also facilitates a more controlled delivery of kinetic energy. The device addresses common challenges associated with hand hammers, such as the need for increased effort, potential deviation from the target, and the risk of operator injury. By allowing the hammer to be operated with a foot, it frees up the operator's hands, enabling a more secure grip on the job at hand. The four-bar chain mechanism ensures precise impact on the workpiece, promoting accuracy and reducing the likelihood of injuries or mishaps. The safety aspect is further emphasized by the prevention of tools or hot workpieces from falling onto the operator's leg. The eco-friendly touch suggests a thoughtful approach to sustainable practices, contributing to a greener working environment. This innovative hammer proves advantageous for tasks requiring a single powerful blow, particularly beneficial for light swaging. Its efficiency is underscored by the reduced time required to complete jobs compared to traditional hand hammers, ultimately enhancing overall productivity and workflow efficiency. In summary, this device represents a significant advancement in blacksmithing tools, offering improved safety, precision, and environmental consciousness.

Keywords: Hammer Design, Hand Hammers, Operated with A Foot, and Innovative.

1. Introduction

a. **Foot Operated Hammer:** Our Foot Operated Hammer functions as a treadle hammer, providing blacksmiths with a tool to shape heated metal. The treadle, a lever activated by stepping, harnesses the user's kinetic energy, converting it into mechanical energy to drive a pound hammer onto the anvil. This manual operation allows users to control the machine's speed through foot motion. These machines, devoid of electricity, prove beneficial in developing nations or for those environmentally conscious, as they eschew fossil fuels. Addressing safety, accuracy, and efficiency concerns encountered during manual hammering in college workshops and roadside blacksmithing, we designed this machine to operate without electricity, enabling precise, single-operator-controlled blows.

b. **Blacksmithing:** Blacksmithing is the process of utilizing a variety of tools to shape iron and steel into attractive or practical forms after heating them to a pliable temperature. Anyone practicing this craft is known as a blacksmith. The black fire scale, an oxide layer that forms on heated metal, is where the word "black" in "blacksmith" comes from. The origin of the word "Smith" is unclear, however it may have come from the Old English verb "smythe," which means "to strike," or the Proto-German word "Smithaz," which meant "skilled worker." A vast array of objects are wrought by blacksmiths, such as gates, railings, light fixtures, sculptures, tools, agricultural implements, cooking utensils, and weaponry. Blacksmiths, in contrast to other metalworkers like farriers or wheelwrights, have a wide range of skills and may create anything from complex weapons to straightforward nails or chains.

2. Mechanism Used

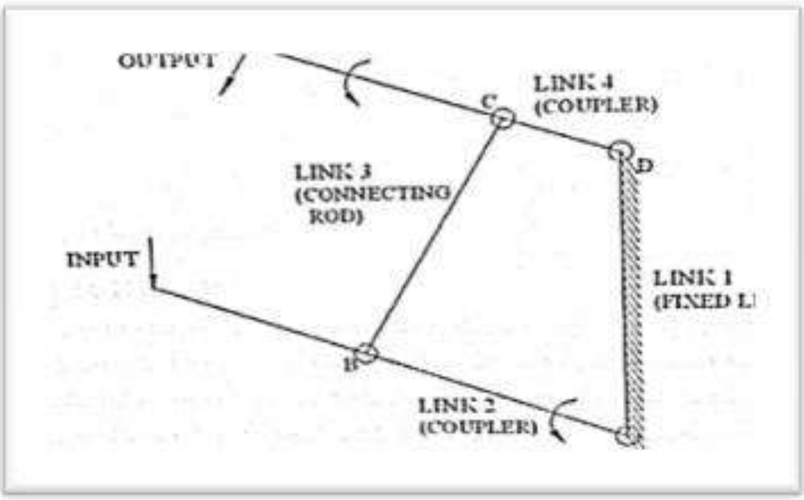

Figure 1:

The Foot Pedal Hammer operates based on the Four Bar Chain mechanism. In this setup, illustrated in the figure, the mechanism comprises four links, each forming turning pairs at points A, B, C, and D. Link AD remains fixed, and when input is applied to link 2, it undergoes oscillations around point A. This oscillating motion is then transferred to link 4 through the connecting rod (link 3).

Input= Link 2
Output= Link 4

3. Literature Review

The origins of hammers trace back to around 2.6 million BC when people utilized variously shaped stones to shatter and shape materials like stone, bone, and wood for tool creation. These primitive stone tools lacked handles, being essentially heavy rocks, but users found appropriately shaped stones for gripping and striking. Harder stones may shatter weaker ones, thus tools could be made specifically for things like cracking nuts or drawing marrow from bones.

Around 2 million years later, a significant upgrade—referred to as "hammer 2.0"—emerged. The wooden or bone handles were fastened to the stone heads using strips of leather and sine. By 30,000 BC, this innovation was widely adopted. Apart from safeguarding the operator's hand and averting the infamous purple thumb, the handle represented a significant breakthrough, permitting a notable augmentation in force and velocity at the head.Users accustomed to sledge hammers and modern farming understand the powerful multiplier effect produced by longer handles, which apply more force at the moment of impact.

Notwithstanding these benefits, there were drawbacks to the new handles, including the propensity for the bindings to break or become loosened, which might result in heads "flying off the handle." Users were also able to direct force into the stone head with greater force, shattering the hammer stone itself. When employing hand tools to hammer hot metal, both hands are typically occupied – one for holding the work piece and the other for striking it with a hammer. Unfortunately, these hammers are notorious for causing thumb and finger injuries and often deviate from the intended target. The weight of these hammers can pose a challenge for the operator, potentially leading to the dropping of the hot job or the hammer onto the leg.
Using hand hammers requires blacksmiths to exert more effort over a longer distance, leading to a loss of stability and balance. Additionally, the operator may need to hammer in uncomfortable positions to generate the necessary force, resulting in issues like backaches and wrist pains.

4. List of Components

The following are this device's primary parts.
Hammerhead

- Anvil block
- Spring
- Foot pedal
- Lever
- Bearing
- Connecting rod

5. Material Selection

For a foot-operated hammer, consider materials like steel for durability, aluminum for lighter weight, and rubber for the foot pedal to provide comfort and reduce impact. Ensure the components are well-engineered for strength andlongevity. When selecting materials for a foot-operated hammer, prioritize durability and functionality. Steel is commonly used for the hammerhead due to its strength, while aluminum can be suitable for the frame to keep the tool lightweight. The foot pedal, ideally made of rubber or a comfortable non-slip material, enhances user comfort and control. It's crucial to balance strength and weight to ensure efficient operation without causing fatigue during prolonged use. Regular maintenance is also essential to prolong the tool's lifespan.

6. Design

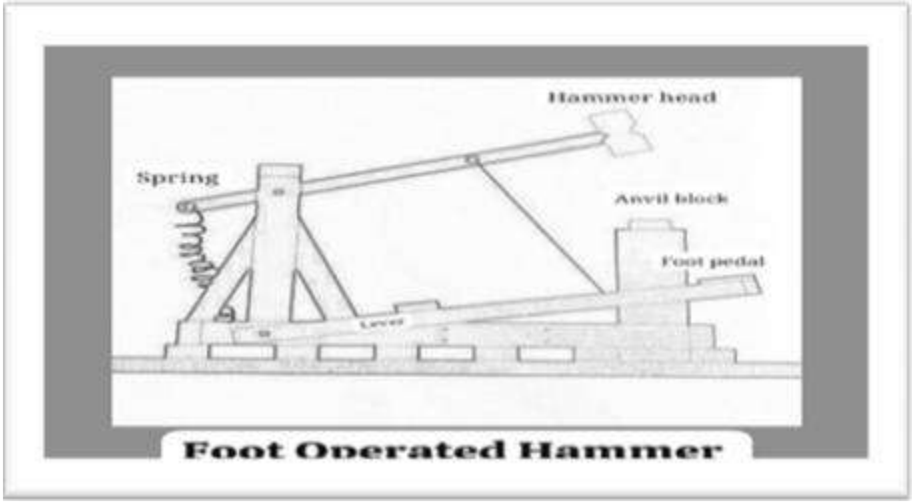

Figure 2: Foot Operated Hammer

7. Advantages

- Fast hammering process
- Easy maintenance
- Low initial cost
- Accurate repetition and impact
- User friendly

8. Limitation

- This mechanism is only suitable for few operations.
- Having little wear
- Due to heavy weight its lack in portability

9. Conclusion

The treadle-operated hammer proves to be a versatile and efficient tool, combining manual control with mechanical power. Its ability to shape metal with precision makes it a valuable asset in various industries, showcasing a blend of traditional craftsmanship and modern engineering for enhanced productivity. he treadle-operated hammer's ergonomic design promotes user comfort and reduces fatigue during prolonged use. As a sustainable and cost-effective alternative, this tool bridges the gap between traditional blacksmithing techniques and contemporary production methods, contributing to a well-rounded approach in metalworking practice.

Reference

[1] R.R Utturkar and R.S Deshmukh, "Theory of Machine"- 2nd edition: Dec 2014,(P.P 1.1-2.50)
[2] "Design Data Book"- Faculty of Mechanical Engineering, PSG College of Technology, Coimbatore-641004. Revised edition- May 2012.
[3] Edward.G.Nisbett, "Steel Forgings: Design, Production, Selection, Testing and Application"- ASTM International, West Conshohocken, USA- Sept 2005.[4] V.T. Patil, "Design of Machine Element" 3rd Edition.
[4] J.J. Gupta Et Al, United States Patent office journals, Application –December 2, 1955, Serial no. 550718, Patented Oct. 23, 1957, Published no. US2789540
[5] Howard Terhune, Cleveland, Ohio, United States Patent office journals, Application –September 27, 1944, Serial no. 555977, Patented Oct. 28, 1947, Published no. US2429780
[6] Harold S. Sheldon, Tekoa, Washington DC, United States Patent office journals, Application –October 15, 1947, Serial no. 779931, Patented –March 21, 1950, Published no. US2501542
[7] James Kepnar, Lawrenceville, GA (US), United States Patent office journals, Application filled –March 23, 2001, Serial no. 09/815,677, Patented September. 26, 2002, Published no. US 2002/0133997 A1.

A Review Paper on Phase Change Material for Developing a Thermal Battery

Deepak Kumar Yadav*
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur Uttar Pradesh India.

Arun Kumar Dwivedi
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur Uttar Pradesh India.

Manoj Kumar Yadav
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur Uttar Pradesh India.

***Corresponding Author**
Deepak Kumar Yadav
Email Id: deepak.yadav@kit.ac.in

ABSTRACT

An ancient TES with PCM was controlled through the issues of high inflexibility of phase change material, leakage and very low conductivity in thermal energy. Thermal energy storage using PCMs was a developing research area in recent years. An involvement in this topic could be illustrated the current reports in the area of the phase change materials and its applications in TES. An important attention was given to the current publications giving on phase change materials (PCMs) application in thermal energy storage (TES). This review paper can be useful lead for the researchers who had great interest regarding phase change material technology and science.

Keywords: PCM, TES, Li-ion, graphite, composite, BTM

1. Introduction

A 3D printing was an industrialized process that can produce multiple functional and multiple scales porous frames works along with perfect functional reliability and geometrical concepts [1]. The temperature influences the structure of both microscopic and macroscopic. Hence the cold layer plays a main role in managing the quality and reliability process. To increase its thermal efficiency and stability both spatially and temporally, examined a novel cold material depends upon the phase change materials. Aqueous ammonium chloride and sodium chloride with various volumes and concentration was studied experimentally to prove the impact of phase change material that serves as the cold material for the process of printing. A strategy of thermal consumption was applied to increase the stability and duration of thermal energy. The effectiveness and feasibility was validated through the experimental analysis of hardware in loop. An output exhibits that examined cold material model may guide to more stable and reliable printing process. It also promotes the industrial application in different fields [2].

It examined a structure by PCM panel along with aluminium casing was establishing for the control of cubeSats[3]. Direct metal laser sintering (DMLS) was used as the chemical manufacturing process, ability of creating the parts of aluminium along with integral structure which acts as a thermal conductivity and load bearing enhancement layer. Computer design was developed for model and explores of the panel depend upon the requirements of energy storage and temperature. The computer designs added a thermal process design in the desktop of thermal for judging the response of temporary panels while running a 1U cube Satsapplication. A vacuum chamber tests was conducted to analyze the thermal design [4]. Phase change materials for thermal process are examined the use of various materials of phase change materials like water and paraffin waxes. Most of this process was investigated for paraffin phase change material panels for an equipment of optical communication in the optical communication module (OCM) [5].

It denoted that the examined phase change material models were too large and heavy for micro-satellites. Important challenges in modelling a phase change material and thermal storage gadget for satellites were the requirement to compensate for the less thermal conductivity of the phase change materials and require modelling a container which was strong to endure the density experienced through the components at the time of phase alternation. It established a state of art phase change panel for a micro satellite which uses paraffin wax as the structure for aluminium honeycomb, carbon fibre reinforced fibre (CFRP) and PCM. An important consideration of these panels was the thickness and volume of phase change material used on the outside layer. The phase change material was considered by the preferred thermal quantity of the method. The density of the outside layer was considered through the maximum panel deflection. It exposed to the inside pressure of the phase change material and the outside vacuum, also through a bending beam design. This method generates panels with various layers that include to the mass process with no important contribution to the capacity of thermal devices [6].

The use of paraffin phase change material panels for cubeSats was analyzed by finite aluminium honeycomb cores that fixed with carbon fibres for improving aluminium sheets and thermal conductivity [7]. These panels were used to give thermal stability of +1^{o}C at 30^{o}C at instrument in the ice cubes. CubeSats was planned to launch from ISS in March 2017, the ice cube was located on an orbit with 47minutes long eclipses [8].Important instrument was closed to preserve electric power a thermal measurement denoted that phase change material panels with 40 grams of phase change material, give the needed thermal stability to the instrument of cubeSats, 75-85% of the ice cubes phase change material panel was estimated to be in the aluminium honeycomb and fibre structure. This construction was costly to produce a dry mass which must be tolerated through different application [9].

This paper reviews the phase change materials states that an extra supporting equipment and matrix was required to seal containers. The occurrence of three dimensional printing methods was advanced dramatically the growth of components and verified manufacturing processes. This paper highlights the strategy to design TES crystalline materials along with 3D architecture from the water with no helping components by light polymerization three dimensional printing test and the characters of TES crystalline gel P(SA-DMAA) with various molar proportions were micrometer and millimetre scales for the P(SA-DMAA) gels. This gel was made by two methods; they are ultra violet curing by conventional mold and post-ultra curing method after three dimensional printing. The three dimension printed gel

revealed high crystalline post ultraviolet method which was more benefit for curing of three dimension printing components along with TES and thermo regulating process[10].
TMS were divided into two major types. The first was active cooling. In this process, it involves the process of removing heat with the heat liquid or air in the lithium ion tank. Air cooling was the easiest process for heat dissipation due to its availability, followed by liquid cooling in electronic devices. It was pumped out to exchange heat. Therefore,its article shows that air is heat. It is not effective in water environments due to low capacity and thermal conductivity It also has many advantages in the active cooling process. These procedures make the whole study expensive, difficult and massive. The water process also came with a safety hazard that must be sealed to prevent leakage during processing. [11], [12].

2. Literature Survey

a. **Phase Change Material:** Elements that consume LHS are called as phase change materials. Phase change materials are a group of elements that converts thermal energy as heat inside a temperature range which involves in the transformation of phase change materials can exchange sensible heat form the external temperature [13],[14].A general phase changes arising are solid to solid, solid to liquid, liquid to gas or solid to gas phase changing application was controlled because of the heavy volume change material [15]. In last generation phase change materials was studied widely for thermal energy storage because of the requirement of application and processes of improved energy efficiency. On September 2018, a Scopus search on PCM and TES was limited. It returns 1453 hits only for 2019. Figure 1 Cleary explains about the yearly distribution of early 70’s [16].

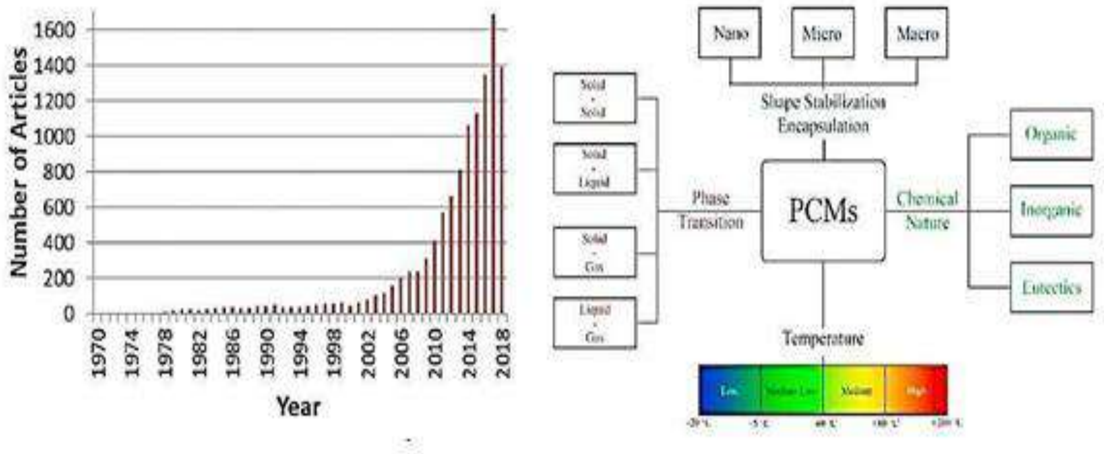

Figure 1: (a) The number of article dedicated to PCMs and TES for the period 1971-2018. Source (b) Classification of PCMs may applied efficiently on thermal parameter thermal energy storage [17]

Phase change material and thermal energy storage for thermal parameter have a great energy in space AC and building alleviating large temperature fluctuation [18]. Phase change material with a running window in the room temperature zone (10 to 30^{o}C) was support the energy persevered which changes the room temperature. Other technology was benefits of regulating temperature of PCM and TES are photovoltaic, batteries and aerospace. PCM are used mainly as waste heat saving tank for agriculture process, building application and industrial methods. Phase change material was divided according to chemical material as eutectics , organic and inorganic or the transition phase it undergo as liquid to gas PCMs , solid to liquid PCMs , solid to gas PCMs and solid to solid PCMs. According to chemical mixed phase change materials as inorganic to organic, organic to organic and inorganic to inorganic, organic containing non-paraffin and paraffin like polymers, esters, alcohols, glycols and fatty acids [19].

Phase change materials are analyzed according to its running range of temperature that is- 25^{o}C to +250^{o}C which was shown in figure 1(b). There are four various range of temperature. They are range of high temperature (+90^{o}C to +250^{o}C or above) for observing the production of electricity, recovery of waste heat and cooling, medium range of low temperature (+6^{o}C to +45^{o}C) where the phase change materials are applied typically for cooling and heating application in electronics process, hot water and solar depend heating (+30^{o}C to +90^{o}C) and finally range of low temperature (-25^{o}C to +6^{o}C) where the phase change materials are used typically for commercial and domestic refrigeration[20].

b. Three Dimensional (3D) Printing: A 3D printing also called additive manufacturing was presented in manufacturing, biomedical gadgets, architecture, art and tissue engineering like sudden tooling by printing technology and rapidly making pattern[21]. A three dimensional printing technology gives a correct process to generate objects with unique, precise and difficult physical property for the process of optimization. A three dimensional printing can increase the structure and initial property by creative design [1], [22]. Stereo lithography, combined decomposition, selective laser sintering, bio printing and direct writing are the basic three dimensional printing processes. The most interesting one was mask projection stereo lithography that was quick and easy three dimension printing process using water UV curable polymer and ultra violet laser to construct strong material by thin layer printing on the top [23].Depend upon the theoretical studies, the entire height was 250mm and diameter of flask was 117mm. The procedure adopted for generating the flask was three dimensional printing and the components used for the flask was poly lactic acid and at last it was carried out to consider how a material could be conserved at a low temperature in this flask and the phase change material was freeze for 46 hours and placed in the flask[24].

This paper focuses to develop novel three dimensional printable thermoplastic polyurethane(TPU) mixed with the capabilities of TS. The objective was energy process for sport instrument especially in winter time. Various amount of paraffin wax are included to a thermoplastic polyurethane matrix and the final bends was used to generate the three dimensional printed samples. An observation of FESEM was evidenced a homogenous deployment of the capsules in the matrix and a good connection in the layer in the printed area of three dimension. A test of DSC was denoted release energy and store energy that was existed in the three dimensional parts [25].

The need of pulse load can be average value for many times. A short term capability was required to preserve the temperature. The capability of power modules was hardly a some seconds that was constrained mainly by the meeting temperature. This research modifies a module power with increased short term capability by PCM [26].The power module may help pulse load for three times with appropriate phase change material. To reject the enhanced thermal power, a metal structure was utilized. Two different structures of metals are compared and presented. A losses of gadget power in a grid related inverter was measured and corresponding through the thermal design for this review. Simulation was organized to reveal the impact of phase change material ratio and density concerning the time of phase change, fixed state of thermal power and dynamic response in thermal resistance corresponded by the optimization of model by FEA[27] [28]. There are no phase change materials to meet fully all economical, chemical and physical needs to date. Organic phase change materials are thermally and chemically constant, non-eroding to metals and reusable. In the view of negative aspect, it was sub-cooling, flammability, element problems, changing enthalpy low than phase change material and low conductivity arising by its polymer containers, encapsulation way and compatibility. Phase change materials are high enthalpy, good thermal conductivity and very low expense [29].

An enhancement process for LHs and thermal energy storage with phase change materials was divided into three types. They are

- Extending the transfer of heat of encapsulated phase change materials, exchanger of heat models and transfer heat by finned tubes.
- Increasing transfer of heat using different phase change materials and an analysis thermodynamic optimization.
- Consuming thermal resistance by porous and small additives media. Therefore, an encapsulation technology includes composites, small encapsulations, additives, micro, macro and the structure of phase change materials influencing both transfer of heat and thermal conductivity [30].

Different heat exchangers, finned tubes, heat pipe was analyzed in the principle of LHS till 1st approach of Srinivasan and Shamsundar four generationago. This hard work mainly highlighted the extending transfer of heat surface and the transfer of heat at the time of release or storage of thermal resistance in phase change material. Both of them also analyzed the impact of including find in the LHS method through experiment [31].

Phase change material was encased mainly in flasks where the transfer of heat flows around the flask in the encapsulated process. Such flasks may in small scale, macro or micro scale for constructing envelope components and shape constant phase change materials. A metal container was used as s flask for the process of phase change material in the case of compact LHS method. The polymer tanks begin to suppress the mark as fabricated module unit of very low losses in thermal power, low expense for manufacturing and light weight. This one was recyclable and reveals corrosion system against salt hydrate phase change material. This paper will highlight only on critical issues and studies of encapsulation related to componentising contact with phase change material which was found [33].

c. **Thermal Battery:** A lithium ion battery can cause various, for example, serious thermal events such as explosions, degenerative processes and fading, and risks during charging. Therefore, the high temperature between the cells of the battery must be kept within 5^{o}C, and high cell temperature gradients were ignored during the process. The root cause of the degradation process and capacity reduction was attributed to the temperature experiences of the lithium ions during discharging and charging cycles. For example, it has been found that higher temperatures cause the electrode and cathode to break down and ultimately lead to a decrease in the capacity of lithium batteries. Also learned the effect of fading ability at different temperatures (35-65^{o}C). It also detected low temperature up to 80% after 600 cycles at 35^{o}C, but at 70^{o}C the cycle was about 987cylces. Irregular temperature inside the battery cell can have a hostile effect on the whole battery process [34]. Paraffin was the main phase change material within the battery control range and benefited from no phase separation, alternative temperature transfer with C_nH_{2n+3} materials and porous components. The phase change material provides an expectation and a new way for the thermoregulation strategy, which has been applied in the battery management process [35].

Simple and creative prototype of battery thermal management and intervention idea suitable for flexible phase change material composite and battery. FCPCM was studied for the first time. The crystalline, mixed processes and mechanical system properties of FCPCM are discussed in detail to reveal the process mechanism and viability of this model [36]. The cylindrical battery was sealed in the compound and does not have a grease-coated battery or a flexible phase change compound surface. This technology was technically easy to process from the individual battery to the segment level and to the flexibility to the flexible phase change material composite. The heat transfer between the FCPCM and the battery was a semiconductor device. The thermal process of the thermal management of the designed battery was observed with different discharges, charge cycles, discharge rates and dynamic test rules[37].

d. **PMC on Ground Source Heat Exchanger:** Phase change material as the ground source exchanger of heat process become popular for cooling and heating application till the energy competence of ground source exchanger. It was higher than conventional process. The horizontal and vertical loop process is used widely. The vertical CLS was downloaded in a profound bore hole while the horizontal CLS was located at a ground; the geothermal process was used by the CLS for cooling and heating applications in Korea. It was noted that the amount of CLS in Korea was 80% in 2010.Many experts was carried out experiments for the process improvement of CLS by different ways like the property of design, grout optimization [38].

A large division for phase change material was used fig 2 reveals a type of explicit variation. Phase change material can be divided roughly into liquid to gas (LGPCMs), solid to solid PCMs (SSPCMs), solid to liquid PCMs (SLPCMs), and solid to gas PCMs (SGPCMs) [39].

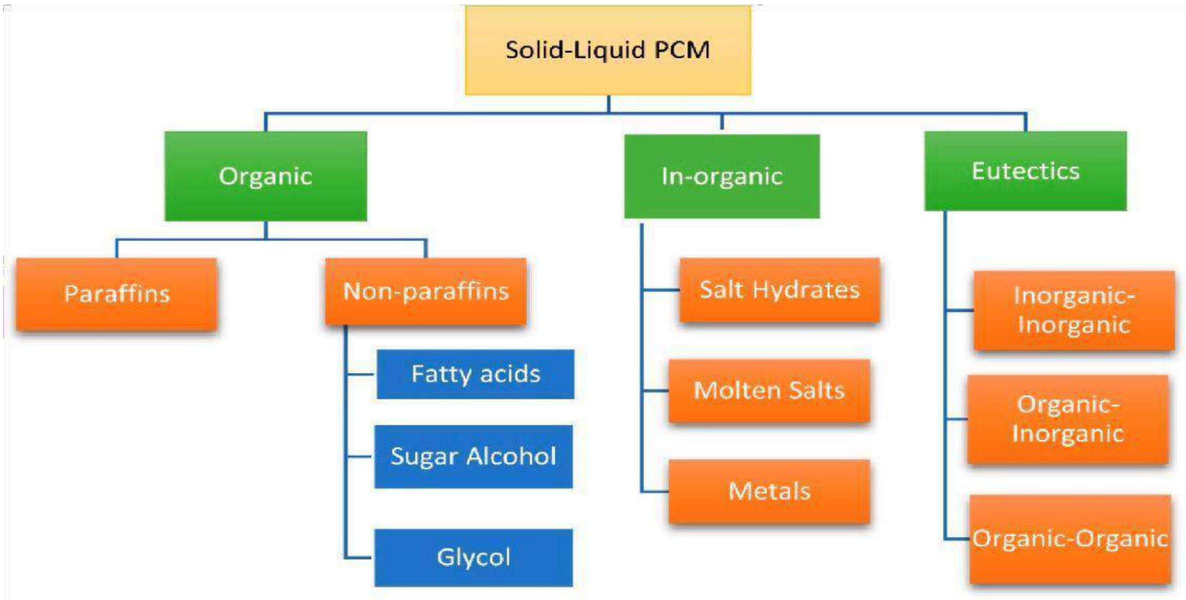

Figure 2: Generalized categories of phase change materials (PCMs)

Organic phase change materials refer mainly to non-paraffin and paraffin elements. Here non-paraffin elements include long chain alkanes, stearic acid and polyols. Organic phase change materials have the benefits of super cooling, corrosion resistance, durability of good chemical and safety non-toxicity .These ate the important components of phase change materials. This one also has some disadvantage like leakage and poor thermal resistance at the time of working. Inorganic phase change materials include metal, water, melted and hydrated salts. Here metal and hydrated salts are used widely. This has the feature of non-leakage, low expense, heat capacity and non –flammability .Magnesium chloride was one of the common chemical used in hydrated salts. In this paper, it was used mainly in relation with EG to reimburse for the benefits and hydrated salts [40].

e. **Recent Study on Material Aspect of Phase Change Material on 3D Printing:** The application of phase change materials was analyzed as a result to decrease the consumption of building. The uses of phase change material macro encapsulation in construction were an approach but still there were problems for large scale method in the building industry. The fundamental problem was that a phase change material has constant optimum freezing temperature while the building requires different energy in winter and summer. Phase change material macro encapsulation was considered as essential when PCM can be utilized for all time [41].

Eight phase change materials with various freezing points were examined under the content towards building energy. This investigation was carried out by a dynamic energy process of a building placed in the North Portugal. It was identified that the components analyzed lead to a reduction in energy needs for cooling and heating process. An impact of cost was analyzed in this paper. It was proved that the increased investment was not offset through the decrease in the cost of production. The entire economic viability and technical skills was analyzed under the same ideology [42]. An energy storage for building by phase change material and thermal energy storage joined with geothermal technology and solar was prepared currently in Austria, Cyprus and Spain. It also created a composite of perlite and PCM which was used as interior and exterior components for passive utilization of solar energy. EHS contain as disodium hydrogen phosphate decahydrate and sodium carbonate with a proportion of 6:6 was created as the phase change materials with a temperature of 29^{o}C and 98^{o}C and with three various types of perlites as supporting components. Another one was the impact of environment phase change material in building application [43]. An isolating phase change material from shells provides PCM macro-encapsultion benefit in the form of reusing, recyclic the phase change material that applied in the envelopes of building and gives in both economic and environment benefits. It is significant to comprehend and examine the entrie process of phase change material process for a life time of 26 years and at last, an experts have to take the degradation process with freezing process. In 2018, two reviews for envelope building process of phase change material was published and giving a detail overview of this topic. It was tested and analyzed a resin glycol and expoxy, aluminium nano powder composite phase change material in a PP small capsules without references to conductivity, Lazoro organized an experimental analysis one different inorganic and organic. Phase change material in low temperature connection with components like LDPE, HDPE, PP, LSPE, PET polymers recommended for cold TES[44].

It has contact with fatty acid for 725days at 55^{o}C revealing border corrosion. Currently HDPE spheres compressing organic phase change material revealed failure after cooling and heating process. It was used in hot tank process in domestic areas. Much degradation joined by PCM leakage was identified .Many experts recommended cooling and heating and cooling process to reach a constant state of the HDPE spheres to protect from leakage.

Some groups reported about a study of three dimension printed PLA property. It has contact with organic phase change material to investigate the tank components and thermal energy storage encapsulation. The period of contact was 46 days in the medium temperature. A mass which is unimportant was taken up to 0.034% for A44 and for A58 it was 0.05%.This was recorded.PLA crystalline gel was identified to increase the contact time which was measured using various scanning meter. The condensation of phase change material into nano and micro capsules was engaged with latest components of chemistry methods guides to shells with smart apparatus and multiple process method. A capsules of phase change material may give one more characteristic of managed release of thermal power, preserving against degradation at the tjme of release or uptake cycles, improved phase change material layer , probability to uses the tables in paste or powder form and protecting of component exchange with nature[46].

A study of green phase change material was analyzed in this paper. GPC nano fibre material with the frame work of shell material depend upon the PA was emulsion and PVA.These two was existed by the approach of co-axial electro spinning .After 560 cooling and heating process a gradual reduction on the enthalpy and have good thermal energy storage was analyzed.Sahan used silicon oxide as shell component to small condensation of two organic phase change materials, a stearic acid and PA [47].

3. Conclusion

An ancient BTM with PCM was controlled through the issue of high inflexibility of phase change material, leakage problems and very low conductivity in thermal energy. Thermal energy storage using PCMs was a developing research area in recent years. An involvement in this topic could be illustrated through the high number of published research paper in the recent times. This research paper discuss about the current reports in the area of the phase change materials and its application in TES. An important review article on the application and properties of phase change materials are presented. A main attention was given to the current publication giving data on phase change materials macro, nano and micro encapsulation and also the critical aspects for phase change materials in thermal energy storage (TES). This review paper can be useful lead for the researchers who had great interest regarding phase change material technology andscience; PCMs are used for controlling the thermal space craft elements from the time when the space program start. Phase change materials for thermal process was examined the use of various materials of phase change materials like water and paraffin waxes. Most of these process are investigated for many application like paraffin phase change panels of an equipment of optical communication in the OCM. It denoted that the examined phase change material models are too large and heavy for micro satellites. Important challenges in modelling a phase change material and thermal energy storage gadget for satellite were the requirement to compensate for the less thermal conductivity of the phase change materials and require modelling a container which was strong to endure the time experienced through the components at the time of phase alternation. It established a state of art phase change material panel for a micro satellite which uses paraffin wax as the structure for aluminium honeycomb, carbon fibre reinforced polymer (CFRP).

References

[1] Ngo, Tuan, Alireza Kashani, Gabriele Imbalzano, Thuy Nguyen, and David Hui. "Additive manufacturing (3D printing): A review of materials, methods, applications and challenges." Composites Part B: Engineering 143 (2018): 172-196.

[2] Yang, Feng, Guanglei Zhao, Chi Zhou, and Dong Lin. "Phase change materials (PCM) based cold source for selective freezing 3D printing of porous materials." The International Journal of Advanced Manufacturing Technology 95, no. 5 (2018): 2145-2155.

[3] Kośny, Jan. PCM-enhanced building components: an application of phase change materials in building envelopes and internal structures. Springer, 2015.

[4] Isaacs, Steven, Diego Arias, and Greg Shoukas. "Development of a Lightweight and Low-Cost 3D-Printed Aluminum PCM Panel for Thermal Management of CubeSat Applications." 47th International Conference on Environmental Systems, 2017.

[5] Farid, Mohammed M., and Amar M. Khudhair. "Phase change materials: fundamentals and applications." In Proceeding of PCM 2003 Workshop. First Australasian workshop on phase change materials for thermal storage in buildings and other applications, pp. 1-16. 2004.

[6] Yamada, Kouhei, Hosei Nagano, Yoshinari Kobayashi, and Tsuyoshi Totani. "Heat storage panel using a phase-change material encapsulated in high-thermal conductivity CFRP for micro satellites." 44th International Conference on Environmental Systems, 2014.

[7] Dong, Kaixin, Nan Sheng, Deqiu Zou, Cheng Wang, Xuemei Yi, and Takahiro Nomura. "High Anisotropic Thermal Conductivity, Long Durability Form-Stable Phase Change Composite Enhanced by a Carbon Fiber Network Structure." *Crystals* 11, no. 3 (2021): 230.

[8] Naik, Kartik. "A Thermal Investigation and Comparative Study of the Foresail Missions." (2019).

[9] Fennell Jr, Todd Wayne. "Thermal management design of a 6U CubeSat with a high-power additive manufacturing payload using analytical modeling with experimental validation." PhD diss., 2020.

[10] Mao, Yuchen, Takuya Miyazaki, Kohei Sakai, Jin Gong, Meifang Zhu, and Hiroshi Ito. "A 3D printable thermal energy storage crystalline gel using mask-projection stereolithography." *Polymers* 10, no. 10 (2018): 1117.
[11] Liu, Huaqiang, Zhongbao Wei, Weidong He, and Jiyun Zhao. "Thermal issues about Li-ion batteries and recent progress in battery thermal management systems: A review." *Energy conversion and management* 150 (2017): 304-330.
[12] Kim, Jaewan, Jinwoo Oh, and Hoseong Lee. "Review on battery thermal management system for electric vehicles." *Applied thermal engineering* 149 (2019): 192-212.
[13] Vakhshouri, Amir Reza. "Paraffin as phase change material." *Paraffin Overview* (2020): 1-23.
[14] Demirbas, M. Fatih. "Thermal energy storage and phase change materials: an overview." *Energy Sources, Part B: Economics, Planning, and Policy* 1, no. 1 (2006): 85-95.
[15] Fallahi, Ali, Gert Guldentops, Mingjiang Tao, Sergio Granados-Focil, and Steven Van Dessel. "Review on solid-solid phase change materials for thermal energy storage: Molecular structure and thermal properties." *Applied Thermal Engineering* 127 (2017): 1427-1441.
[16] Sharma, Atul, V. Veer Tyagi, Carl R. Chen, and Dharam Buddhi. "Review on thermal energy storage with phase change materials and applications." *Renewable and Sustainable energy reviews* 13, no. 2 (2009): 318-345.
[17] Elias, Charalambos N., and Vassilis N. Stathopoulos. "A comprehensive review of recent advances in materials aspects of phase change materials in thermal energy storage." *Energy Procedia* 161 (2019): 385-394.
[18] Kuta, Marta, Dominika Matuszewska, and Tadeusz M. Wójcik. "Reasonableness of phase change materials use for air conditioning–a short review." In *E3S Web of Conferences*, vol. 14, p. 01033. EDP Sciences, 2017.
[19] Mofijur, Mahlia, TeukuMeurah Indra Mahlia, Arridina Susan Silitonga, HwaiChyuan Ong, MahyarSilakhori, Muhammad Heikal Hasan, Nandy Putra, and SM Ashrafur Rahman. "Phase change materials (PCM) for solar energy usages and storage: An overview." *Energies* 12, no. 16 (2019): 3167.
[20] Du, Kun, John Calautit, Zhonghua Wang, Yupeng Wu, and Hao Liu. "A review of the applications of phase change materials in cooling, heating and power generation in different temperature ranges." *Applied energy* 220 (2018): 242-273.
[21] Pavan Kalyan, B. G., and Lalit Kumar. "3D Printing: Applications in Tissue Engineering, Medical Devices, and Drug Delivery." *AAPS PharmSciTech* 23, no. 4 (2022): 1-20.
[22] Bhushan, Bharat, and Matt Caspers. "An overview of additive manufacturing (3D printing) for microfabrication." *Microsystem Technologies* 23, no. 4 (2017): 1117-1124.
[23] Rahmati, S. "Advances in additive manufacturing and tooling." *Compr. Mater. Process* 10 (2014): 303-344.
[24] Zhang, Haifeng, Xiyuan Mao, Zijing Du, Wenbo Jiang, Xiuguo Han, Danyang Zhao, Dong Han, and Qingfeng Li. "Three dimensional printed macroporous polylactic acid/hydroxyapatite composite scaffolds for promoting bone formation in a critical-size rat calvarial defect model." *Science and technology of advanced materials* 17, no. 1 (2016): 136-148.
[25] Dorigato, Andrea, Daniele Rigotti, and Alessandro Pegoretti. "Thermoplastic polyurethane blends with thermal energy storage/release capability." *Frontiers in Materials* 5 (2018): 58.
[26] Shao, Weihua, Li Ran, Huaping Jiang, DebaprasadKastha, Prabodh Bajpai, Ruizu Wu, Philip A. Mawby, and Zheng Zeng. "Power module with large short-term current capability by using phase change material." *The Journal of Engineering* 2019, no. 16 (2019): 3225-3229.
[27] Stupar, Andrija, Uwe Drofenik, and Johann W. Kolar. "Optimization of phase change material heat sinks for low duty cycle high peak load power supplies." *IEEE Transactions on Components, Packaging and Manufacturing Technology* 2, no. 1 (2011): 102-115.
[28] Tan, Kang Miao, Thanikanti Sudhakar Babu, Vigna K. Ramachandaramurthy, PadmanathanKasinathan, Sunil G. Solanki, and Shangari K. Raveendran. "Empowering smart grid: A comprehensive review of energy storage technology and application with renewable energy integration." *Journal of Energy Storage* 39 (2021): 102591.
[29] Rathod, Manish K., and Jyotirmay Banerjee. "Thermal stability of phase change materials used in latent heat energy storage systems: A review." *Renewable and sustainable energy reviews* 18 (2013): 246-258.
[30] Pielichowska, Kinga, and Krzysztof Pielichowski. "Phase change materials for thermal energy storage." *Progress in materials science* 65 (2014): 67-123.

[31] Prieto, Cristina, Patrick Cooper, A. Inés Fernández, and Luisa F. Cabeza. "Review of technology: Thermochemical energy storage for concentrated solar power plants." *Renewable and Sustainable Energy Reviews* 60 (2016): 909-929.
[32] N. Shamsundar, R. Srinivasan, Analysis of energy storage by phase change with an array of cylindrical tubes, in: ASME Winter Annual Meeting San Francisco, USA, 1978, pp. 35-40.
[33] Liu, Zhongliang, Zengyi Wang, and Chongfang Ma. "An experimental study on heat transfer characteristics of heat pipe heat exchanger with latent heat storage. Part I: Charging only and discharging only modes." *Energy Conversion and Management* 47, no. 7-8 (2006): 944-966.
[34] Bhatia, PadampatChander. "Thermal analysis of lithium-ion battery packs and thermal management solutions." PhD diss., The Ohio State University, 2013.
[35] Sharma, SomeshowerDutt, Hiroaki Kitano, and KazunobuSagara. "Phase change materials for low temperature solar thermal applications." *Res. Rep. Fac. Eng. Mie Univ* 29, no. 1 (2004): 31-64.
[36] Liu, Xianqing, Changhong Wang, Tingting Wu, Zhuoming Li, and Chili Wu. "A novel stable and flexible composite phase change materials for battery thermal management." *Applied Thermal Engineering* 212 (2022): 118510.
[37] Wu, Weixiong, Jizhen Liu, Min Liu, Zhonghao Rao, Hui Deng, Qian Wang, Xiao Qi, and Shuangfeng Wang. "An innovative battery thermal management with thermally induced flexible phase change material." *Energy Conversion and Management* 221 (2020): 113145.
[38] Bottarelli, Michele, Aleksandar Georgiev, Ahmet Alper Aydin, YuehongSu, and Charles Yousif. "Ground-source heat pumps using phase change materials." EGC, 2013.
[39] Dixit, Ritvij. "A Study on Latent Thermal Energy Storage (LTES) using Phase Change Materials (PCMs) 2020." (2020).
[40] Kahwaji, Samer, and Mary Anne White. "Organic phase change materials for thermal energy storage: Influence of molecular structure on properties." *Molecules* 26, no. 21 (2021): 6635.
[41] Al-Yasiri, Qudama, and MártaSzabó. "Incorporation of phase change materials into building envelope for thermal comfort and energy saving: A comprehensive analysis." *Journal of Building engineering* 36 (2021): 102122.
[42] Faraj, Khaireldin, Mahmoud Khaled, Jalal Faraj, Farouk Hachem, and Cathy Castelain. "Phase change material thermal energy storage systems for cooling applications in buildings: A review." *Renewable and Sustainable Energy Reviews* 119 (2020): 109579.
[43] Elias, Charalambos N., and Vassilis N. Stathopoulos. "A comprehensive review of recent advances in materials aspects of phase change materials in thermal energy storage." *Energy Procedia* 161 (2019): 385-394.
[44] Pasupathy, A_, R. Velraj, and R. V. Seeniraj. "Phase change material-based building architecture for thermal management in residential and commercial establishments." *Renewable and Sustainable Energy Reviews* 12, no. 1 (2008): 39-64.
[45] Yang, Lizhong, Uver Villalobos, BakytzhanAkhmetov, Antoni Gil, Jun Onn Khor, Anabel Palacios, Yongliang Li et al. "A comprehensive review on sub-zero temperature cold thermal energy storage materials, technologies, and applications: State of the art and recent developments." *Applied Energy* 288 (2021): 116555.
[46] Pandis, Pavlos K., StamatoulaPapaioannou, Maria K. Koukou, Michalis Gr Vrachopoulos, and Vassilis N. Stathopoulos. "Differential scanning calorimetry based evaluation of 3D printed PLA for phase change materials encapsulation or as container material of heat storage tanks." *Energy Procedia* 161 (2019): 429-437.
[47] Şahan, Nurten, and HalimePaksoy. "Determining influences of SiO2 encapsulation on thermal energy storage properties of different phase change materials." *Solar Energy Materials and Solar Cells* 159 (2017): 1-7.

A Review on Development and Analysis of Maglev Train

Vishwas Singh*
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh.

Deva Nand Tiwari
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh.

Mohd. Ubaid Ali
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh.

Rajveer Singh
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh.

Dr. Vivek Srivastava
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh.

Dr. Sanjay Singh
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh.

***Corresponding Author**
Vishwas Singh
Email Id: 201696@kit.ac.in

ABSTRACT

When a vehicle is propelled by magnets as opposed to wheels, axles, and bearings, it is said to be in the "Levitation" class of technologies. Vehicles powered by magnetic levitation are propelled by the Maglev technology. In the realm of railroad infrastructure, maglev technology is currently expanding at the quickest rate. High-speed modes of transportation including air travel have been compared to maglev trains, which operate on the maglev concept. Rapidly expanding usage of high-speed maglev trains is expected to significantly improve human transportation. Compared to wheeled mass transit systems, maglev trains travel more silently and smoothly. This study reviews the current state of the art and looks briefly at various commercial applications of magnetic levitation and rare earth magnets.
Keywords: *Levitation, Maglev train, Magnet, Guide-way*

1. Introduction

The magnetic levitation train, commonly known as Maglev, is a high- speed train that utilizes magnetic fields for both propulsion and suspension, eliminating the need for traditional wheels and tracks. Maglev technology operates on the principle of magnetic repulsion and attraction to lift and propel the train above a guide way.

The concept of magnetic levitation dates back to the early 20th century, but practical implementation began inthe1960s.The first operational Maglev train was introduced in the 1980sinBirmingham,England,usinganelectromagneticsuspension(EMS)system.However, the most notablead van cements occurred in Japan and Germany.

Japan'sCentralJapanRailwayCompany(JRCentral)developedthefirstcommercialMaglev train, known as the "Maglev MLX01." It set a world speed recordof581km/h(361mph) in 2003during a testrun. Mean while Germany's Trans Rapid Maglev system attracted notice for its effective test tracks, such as the Shanghai Maglev Train, which in 2004 became the first commercially run Maglev line in history.

In order to levitate and move above the guide way, a Maglev train uses magnetic forces. Electro-dynamic suspension (EDS) and electro-magnetic suspension (EMS) are the two primary categories of Maglev systems.

Strong electromagnets aboard the train combine with coils along the guide way in EMS systems to produce lift and propulsion. Superconducting magnets on the train and coils on the guide way are used in EDS systems to produce comparable effects. Maglev trains offer several advantages, including high speeds, a smooth and quiet ride, reduced maintenance, and improved energy efficiency.

However, challenges such as high construction costs and then need for dedicated infrastructure have limited wide spread adoption. Despite these challenges, Maglev technology represents a promising future for high-speed rail transportation, with ongoing research and development efforts aiming to overcome existing limitations and make Maglev systems more feasible for widespread implementation.

2. Maglev High Speed Train

Magnetic levitation, or maglev for short, is a high-speed train system that depends on magnetic fields for both levitation and propulsion. Maglev trains float above the guideway, minimizing friction and enabling smoother, faster movement than conventional trains with wheels and tracks. The EDS and EMS are the two primary categories of Maglev systems. Strong electromagnets aboard the train in an EMS system interact with coils along the guideway to produce lift and forward propulsion. In contrast, EDS systems accomplish levitation and propulsion through the use of coils on the guideway and superconducting magnets on the train.

Figure 1: Systematic view of maglev train

3. Maglev Trains Offer Several Advantages, Including

a. **High Speeds:** Maglev trains can achieve speeds well beyond those of traditional trains, often exceeding 400 km/h (250 mph).

b. **Smooth and Quiet Ride:** The absence of physical contact between the train and the tracks results in as moother and quieter travel experience compared to conventional trains.

c. **Reduced Maintenance:** Without wheels and tracks, there is less wear and tear, leading to lower maintenance costs.

d. **Efficiency:** Maglev systems can be more energy-efficient, especially at high speeds, due to the lack of friction.

While Maglev technology has demonstrated its capabilities in various test projects and commercial lines, widespread adoption has been hindered by the high costs of infrastructure construction and the need for dedicated tracks. None the less, ongoing research and development aim to address these challenges and make Maglev a more viable option for high-speed rail transportation in the future.

4. Principle of Maglev Train

The principle of maglev (magnetic levitation) trains involves the use of magnetic fields to suspend, guide, and propel the train without the need for traditional wheels on tracks. Both EMS and EDS are the two primary categories of maglev systems. I'll give a quick rundown of both propulsion and levitation.

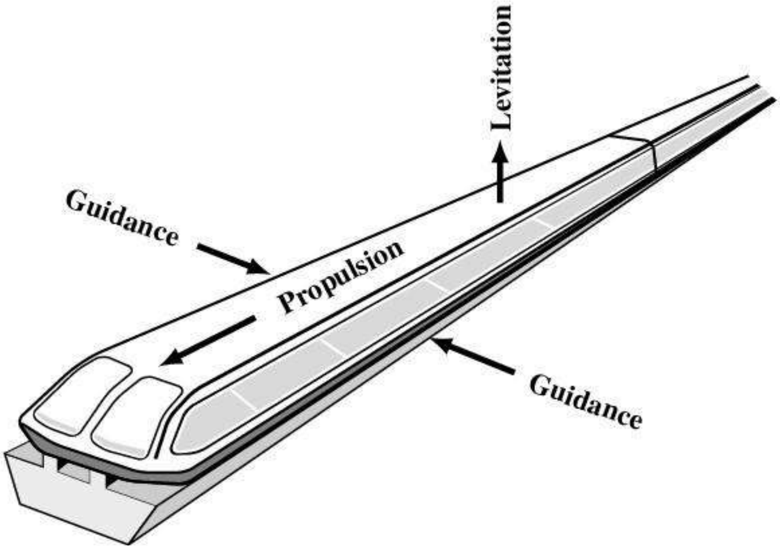

Figure 2: Working Principle of Maglev train

4.1 Electro-magnetic Suspension (EMS)

In EMS maglev systems, electro magnets are used for levitation and propulsion. The train has magnets on the bottom that are attracted to the track, which is also lined with magnets. These magnets can be electro magnets or permanent magnets.

The electromagnets on the train and the track are controlled by a computer system to maintain a stable levitation height. To propel the train forward, the magnetic fields are adjusted sequentially along the track, creating a forward-moving magnetic wave that pushes the train forward.

4.2 Electro-dynamic Suspension (EDS)

In EDS maglev systems use the principle of electromagnetic induction for levitation and propulsion. The track contains coils of wire that are electrified to create magnetic field. The train has super conducting magnets on the bottom that, when moving over the electrified coils, induce currents in the coils. These induced currents create their own magnetic fields, which repel the train and keep it levitated. The interaction between the induced magnetic fields and the super conducting magnets provides stability. To propel the train, the magnetic fields in the coils are adjusted, causing the train to move forward. Both EMS and EDS maglev systems offer benefits such as high-speed capabilities, smooth rides, reduced maintenance (due to the absence of physical contact between the train and tracks), and lower noise levels compared to traditional train systems. Japan and China have been at the fore front of developing and implementing maglev train technology.

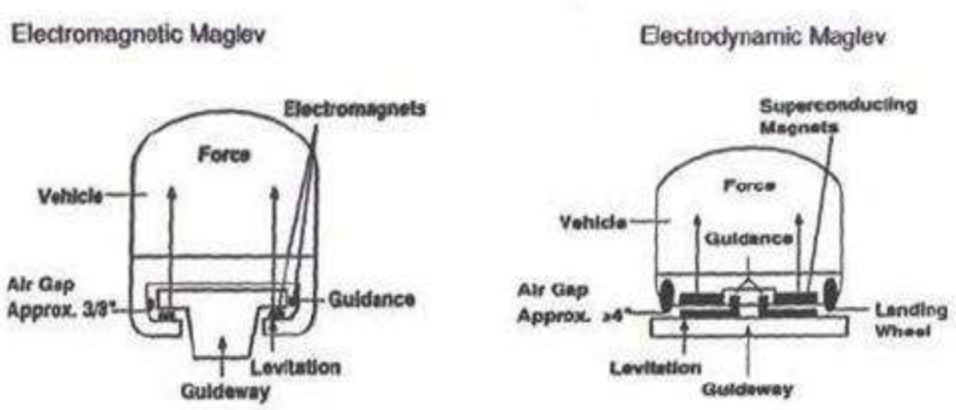

Figure 3: Symatic arrangement of magnet and wheel with guid way

5. Maglev Train Track

Maglev train tracks are a key component of magnetic levitation transportation systems. Unlike traditional rail systems with wheels, maglev technology relies on electromagnetic principles forthetrain's levitation, guidance, and propulsion. The tracks themselves in corporate magnets or electromagnetically charged coils that interact with corresponding components on the train.
The fundamental idea is to create a magnetic field that enables the train to hover above the tracks without any physical contact. This eliminates friction between the train and the track, allowing for smoother rides and potentially higher speeds compared to conventional rail systems.

There are two main types of maglev technologies: EMS and EDS. In EMS, the train's magnets interact with the track's magnets to achieve levitation and stability. In EDS, the train induces currents in the track, creating are pulsive magnetic field that lifts and supports the train. The tracks also play a crucial role in propelling the maglev train. Magnetic forces between the train and the track are manipulated to create forward thrust, allowing for acceleration and deceleration. The entire system is controlled by sophisticated systems that continuously monitor the train's position and adjust the magnetic fields accordingly.

Maglev tracks are often elevated to reduce land usage and avoid interference with existing transportationinfrastructure.Theguidewaymayincludeelementsforpowersupplytoenergize the electromagnetic systems. Safety features, such as automatic emergency braking systems and redundant control mechanisms, are integrated to ensure passenger safety.

While maglev technology offers advantages like high-speed travel, reduced maintenance, and smoother rides, its wide spread adoption has been limited due to high erinitial costs and then ecessity for dedicated infrastructure. Nonetheless, ongoing developments in maglev technology continue to explore its potential for efficient and sustainable transportation.

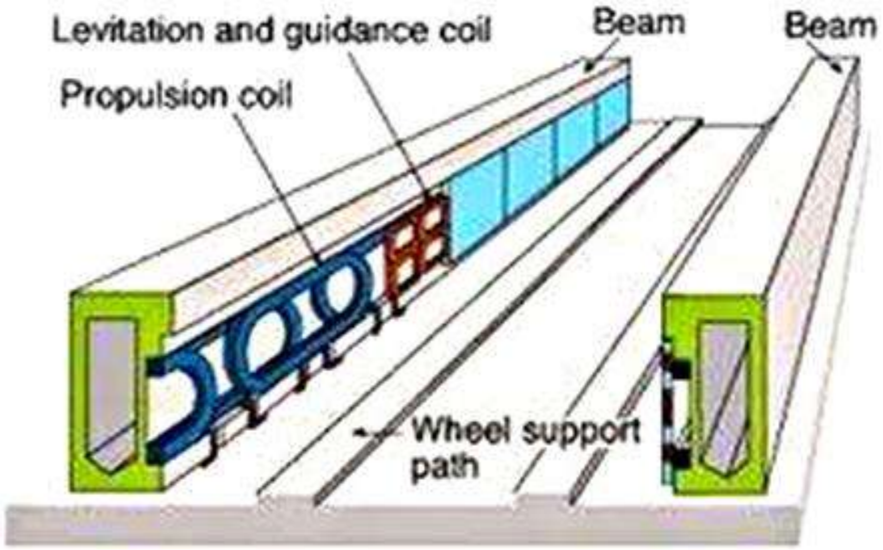

Figure 4: Maglev track

6. Conclusion

Maglev trains represent a cutting-edge and efficient mode of transportation that relies on magnetic levitation to eliminate friction and allow for high-speed travel. With their remarkable speed, energy efficiency, and minimal environmental impact, Maglev trains have the potential to revolutionize the future of rail transportation. While challenges such as in frastructure costs and globalad option remain, ongoing research and development indicate a promising trajectory for Maglev technology, offering a glimpse in to a faster, more sustainable transportation future, these are employing magnetic levitation, epitomize a high-speed, energy-efficient transportation solution with the potential to transform rail travel. Despite challenges, ongoing advancements suggest a promising future for Maglev technology, show casing its viability for a faster and more sustainable transportationl and scape. Show case acompelling future for rapid, energy-efficient transportation, leveraging magnetic levitation. Ongoing advancements underscore their trans formative potential inre shaping the landscape of high-speed rail travel. As research and development persist, the trajectory indicates Maglev's potential to revolutionize high-speed rail travel, paving the way for a transformative and sustainable future in transportation. Revolutionary leap in transportation, harnessing magnetic levitation for unprecedentedspeedandenvironmentalbenefits.Continuedadvancements position Maglevas affront runner inre shaping the landscape of high-speed railtravel, promising adynamic and sustainable future for the global transportation network. Ongoing technological refinements underscore the potential for Maglev systems to redefine the standards of high-speed rail, presenting a technically advanced and sustainable solution for future transportation infrastructure.

References

[1] Jia, Limin, etal."Maglev Train: Technologies, Economics and Prospects." Transportation Research Part A: Policy and Practice, vol.42,no.7,2008,pp.991-1001.
[2] Shao, Shuai, eta1. "A Review on Maglev Train Technologies. "IEEE Access, vol.9, 2021, pp. 28494-28516.
[3] International Maglev Board. "Maglev Basics." [Online] Available: http://www.mag1evboard.net/en/mag1ev-basics.
[4] Zhang, Chong. "Magnetic levitation transportation technology: A comprehensive review."Transportation Research Part C: Emerging Technologies, vol.43,2014, pp. 21-41.
[5] Teng ,Jing,eta1."Recent Advances in Maglev Systems: A Comprehensive Review." IEEE Transactions on Magnetics, vo1. 56,no.7,2020,pp.1-13.
[6] Maglev Systems Development in the World: Overview and Prospects "by M.I.Stiber,
[7] D. I. Teitelbaum, and A.A. Stepanov.TransportationResearchProcedia,Volume14, 2016, Pages 1690-1698.
[8] "Electromagnetic Suspension (EMS) and its Challenges for Maglev Transportation Systems" by S.Nozaki, Y. Maeno, and Y.Yanagi. IEEE Transactions on Magnetics, Volume 53, Issue 6, 2017.
[9] "SuperconductingMaglevSystems"byY.IwasaandT.Ishiguro.IEEETransactionson Applied Super conductivity, Volume 25, Issue 3,2015.
[10] "Maglev Transportation in Japan: A Current Status" by S.Yabe, T. Shiohara, andM. Hasegawa. IEEE Transactions on Applied Super conductivity, Volume 22, Issue 3,2012.
[11] "The EDS Maglev System: Nonlinear Analysis and Control Design" by Z.Zheng, Z. Zuo,and S.Ding. IEEE Transactionson Control Systems Technology, Volume23,Issue 4, 2015.

To Study the Effect of Parameters for Operating the Foot Operated Power Hammer: A Review

Shikhar Saini*
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Vivek Srivastava
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Sanjay Singh
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Manoj Kumar Yadav
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

***Corresponding Author**
Shikhar Saini
Email Id: 222550@kit.ac.in

ABSTRACT

Foot operated power hammer is a mechanical tool, designed to deliver powerful and precise blows to the metal surface with just a simple foot pedal. This tool has changed the way metalworkers work, making their job easier and quicker. When it comes to foot-operated power hammers, choosing the right materials is crucial for optimal performance and durability. First and foremost, durability is paramount. These hammers withstand tremendous force and repetitive use, so they must be made from materials that can withstand the test of time. To unlock the power of this hammer, it is essential to have a solid understanding of their mechanics. At thecore of foot operated power hammer is a complex system of linkages and pivots that convert the motion of foot into a controlled and forceful blow. Typically foot pedal is connected to a series of lever and mechanism that amplify the force applied, allowing the user to control the intensity and speed of hammer strike. This paper is an attemptto explore the various parameters affecting the performance of a foot operated power hammer. It is investigated the parameter affecting performance of foot operated power hammer are materials, its durability and efficiency.

Keywords: *Foot-operated, metalworkers, durability, efficiency.*

1. Introduction

Foot operated power hammers have revolutionized the metalworking industry, providing craftsmen with a versatile and efficient tool for shaping and forming metal. These machines, also known as treadle hammers, are powered by the operator's foot, allowing for precise control and consistent force application. In this comprehensive review, we will delve into the various operating parameters that impact the performance and functionality of foot operated power hammers. Understanding these parameters is crucial for optimizing the use of these machines and desired outcomes in metalworking projects. Foot operated power hammers are typically equipped with an anvil and a hammer head, connected to a linkage mechanism that translates the force generated by the operator's foot into powerful blows. The operator controls the speed and force of the hammer by adjusting the treadle, allowing for precise manipulation of the metal being worked on. On the performance of foot operated power hammers. Whether you are a seasoned blacksmith or a novice metalworker, this comprehensive review will equip you with the knowledge and understanding needed to harness the full potential of these remarkable machines.

Figure 1: A small model of foot operated power hammer

2. Importance of Analyzing Operating Parameters

By conducting a thorough analysis of the operating parameters, manufacturers and users can gain valuable insights into how each parameter affects the overall performance of the power hammer. This knowledge can help in optimizing the machine's capabilities and achieving desired results. One key parameter to consider is the striking force or impact intensity .Another vital operating parameter is the stroke length, which refers to the distance the hammer head travels during each stroke. By analyzing the impact of stroke length on work-piece deformation and energy transfer, users can determine the optimal stroke length for specific tasks, resulting in improved precision and efficiency. Furthermore, the operating speed or frequency of the power hammer plays a significant role in its performance. Other operating parameters, such as die clearance, material thickness, and anvil type, also warrant careful analysis to fully comprehend their impact on the power hammer's performance and the quality of the finished product.

3. Impact of Hammer Head Weight on Performance

When it comes to foot-operated power hammers, one crucial factor that significantly affects their performance is the weight of the hammer itself. The weight of the hammer plays a vital role in determining the force and impact it delivers on the material being worked on. A heavier hammer can generate more force, allowing for greater impact and penetration into the material. However, it's important to strike a balance with the weight of the hammer. If the hammer is excessively heavy, it can lead to fatigue and strain on the operator, reducing their ability to work efficiently and accurately. A lighter hammer allows for quicker and more agile movements, facilitating better precision and control. .Finding the right balance between weight, force, and maneuverability is a crucial consideration for maximizing the performance of foot-operated power hammers. It requires careful analysis and experimentation to determine the ideal weight that suits the specific requirements of the material and the operator's capabilities.

Figure 2: Hammer Head

4. Analyzing the Effects of Foot Pedal Speed

Analyzing the effects of foot pedal speed is crucial when examining the impact of operating parameters on foot operated power hammers. The speed at which the foot pedal is pressed can have a significant influence on the overall performance of the power hammer and the quality of the work produced. A faster foot pedal speed can generate more force and impact energy, resulting in a higher degree of deformation and shaping of the metal. This can be advantageous when working with tougher materials or when aiming for more dramatic shaping outcomes. On the other hand, a slower foot pedal speed can allow for more control and precision in delicate forging tasks. This is particularly important when working with intricate designs or when requiring finer details in the final product. The slower speed allows the operator to have better command over the power hammer, ensuring that each strike is accurate and controlled.

5. Examining the Impact of Different Die Shapes and Sizes

Die shapes and sizes play a crucial role in determining the performance and versatility of foot-operated power hammers. These hammering tools are widely used in various industries, including metalworking, blacksmith, and jewelry making. The die, which is mounted on the hammer, directly affects the shape and quality of the work-piece being formed or manipulated. When it comes to die shapes, there are several options to consider. The size of the die also plays a significant role in the operation of foot-operated power hammers. Smaller dies are suitable for detailed and intricate work, allowing for precise shaping and forming. Conversely, larger dies are better suited for heavy-duty applications where more force and surface area coverage are required. These parameters also influence factors such as material thickness, hardness, and overall durability.

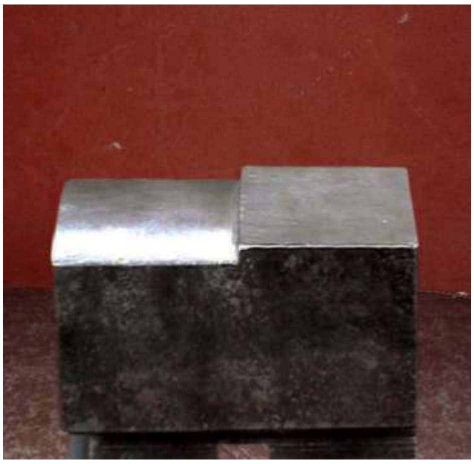

Figure 3: Flat-Die

6. Understanding the Relationship Between Ram Force and Material Deformation

In the realm of foot-operated power hammers, understanding the intricate relationship between ram force and material deformation is crucial. The force exerted by the ram directly affects the degree of deformation that can be achieved in the material being worked upon. When the ram of a power hammer strikes the material, it imparts a substantial amount of force onto it. This force causes the material to deform, either by stretching, bending, or compressing, depending on its physical properties. By analyzing the impact of different operating parameters, such as ram force, material type, and work-piece dimensions, researchers can establish empirical models and guidelines for optimal performance.

7. Evaluating the Influence of Anvil Height on Work-Piece Accuracy-

The height at which the anvil is set plays a vital role in determining the precision and quality of the final product. The anvil height refers to the distance between the striking surface of the hammer and the work-piece. A lower anvil height can result in a more forceful impact,which may lead to increased deformation and shaping of the work-piece. This can be beneficial for certain applications that require significant shaping or forming. However, it is important to note that lower anvil heights also tend to reduce the overall control and precision over the shaping process. Conversely, a higher anvil height allows for greater control over the work-piece and can contribute to higher accuracy. By carefully evaluating and adjusting this parameter, manufacturers and craftsmen can achieve the desired level of accuracy and control in their forgingprocesses, ultimately leading to the production of high-quality, precise work-pieces.

8. Factors Affecting Energy Consumption and Power Efficiency

By analyzing energy consumption and power efficiency, manufacturers, engineers, and users can optimize the performance of these machines and achieve better results. Furthermore, the design and condition of the power hammer itself can impact energy consumption and power efficiency. Factors such as mechanical efficiency, lubrication, and alignment can all influence how effectively the machine converts input energy into output force. By carefully analyzing and considering these factors, manufacturers and users of foot operated power hammers can make informed decisions to improve energy consumption and power efficiency. This comprehensive understanding will not only lead to cost savings but also enhance the overall performance and productivity of these machines.

9. Conclusion

Our comprehensive review has shed light on the significant impact of operating parameters on foot-operated power hammers. From analyzing various factors such as foot pedal, ram weight, and blow frequency, die shape and size, we have discovered the intricate relationship between these parameters and the overall performance of the power hammer. By understanding these influences, manufacturers and operators can make informed decisions to optimize their power hammer operations and achieve superior results. This review serves as a valuable resource for those seeking to delve deeper into the world of foot-operated power hammers and their operational nuances.

References

[1] J.Agirre, “Monitoring of a Hammer Forging Testing Machine for High Speed Material Characterization,” Procedia Manufacturing, 2020.
[2] R. Mannens, ”Influence of Impact Force, Impact Angle, and Stroke Length inMachine Hammer Peening on the Surface Integrity of Stainless Steel X3CrNiMo13- 4,”2018.
[3] Lorelei Sims, “The Backyard Blacksmith,” Crestline Books, 2009.
[4] R.L Norton,” Kinematics and Dynamics of Machinery,” McGraw Hill, 2009.
[5] http://www.blacksmithsforum.com.
[6] https://en.m.Wikipedia.org/wiki/blacksmith.com

The Influence of AI on the Management of Solar Energy

Shyam Chakraborty*
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur Nagar, India.

Dr. Brajesh Varsney
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur Nagar, India.

***Corresponding Author**
Shyam Chakraborty
Email Id: 230027@kit.ac.in

ABSTRACT

This review paper explores the influence of artificial intelligence (AI) on the management of solar energy. As AI technologies continue to advance, their application in the field of solar energy has the potential to enhance efficiency, optimize resource utilization, and contribute to the sustainable development of renewable energy sources. This paper provides an overview of existing AI applications in solar energy management, discusses key advancements, and highlights challenges and opportunities in this evolving field.

Keywords: *AI, Solar Energy, Management, Renewable Energy, Review Paper.*

1. Introduction

The rapid advancements in artificial intelligence (AI) have sparked a transformative wave across various industries, and one significant area witnessing the impact is the management of solar energy. This review paper explores the intricate relationship between AI and solar energy, delving into how AI technologies are reshaping the landscape of renewable energy utilization. As the global demand for sustainable energy sources intensifies, the integration of AI in solar energy management emerges as a key driver for enhancing efficiency, reliability, and sustainability.

The introduction begins by emphasizing the crucial role of solar energy in the broader context of renewable energy solutions. Solar energy, abundant and environmentally friendly, has long been a focal point for researchers and practitioners seeking cleaner alternatives to conventional energy sources. However, the intermittent nature of solar power generation poses challenges in effective harnessing and utilization. Enter artificial intelligence—a technological powerhouse that has proven adept at addressing complex problems through data-driven insights, predictive modeling, and real-time optimization.

The paper navigates through various facets of AI applications in solar energy management, starting with predictive analytics. By leveraging historical and real-time data, predictive analytics powered by AI enhances the accuracy of solar energy forecasting, facilitating better decision-making in resource allocation and grid management. Optimization algorithms constitute another pivotal aspect, driving advancements in maximizing energy output, minimizing operational costs, and improving overall system efficiency. These algorithms play a crucial role in the dynamic adaptation of solar energy systems to varying environmental conditions.

Amidst the promising advancements lie challenges and opportunities that shape the future trajectory of AI in solar energy. This paper aims to provide a comprehensive overview of existing applications, recent innovations, and potential avenues for future research, offering insights into how the synergy between AI and solar energy management can contribute to a sustainable and resilient energy future. As the exploration of this interdisciplinary field unfolds, the influence of AI on the management of solar energy is poised to redefine the b Discuss various AI applications, such as predictive analytics, optimization algorithms, and control systems, and their impact on solar energy management.

2. Predictive Analytics

Predictive analytics powered by artificial intelligence (AI) emerges as a game-changing tool in revolutionizing solar energy production. By harnessing the capabilities of machine learning algorithms, predictive analytics enables a profound understanding of complex patterns within historical and real-time data, offering unparalleled insights into solar energy generation dynamics. This transformative approach empowers energy stakeholders, including grid operators and solar plant managers, to anticipate variations in solar output with remarkable accuracy. AI algorithms, trained on vast datasets, can discern patterns related to weather conditions, seasonal changes, and even minute fluctuations in sunlight. By leveraging this predictive prowess, solar energy production can be optimized to align with forecasted patterns, allowing for proactive decision-making. This ensures that energy grids can dynamically adjust to anticipated fluctuations, mitigating the challenges posed by the intermittent nature of solar resources. Ultimately, the integration of predictive analytics through AI not only enhances the reliability and stability of solar energy production but also facilitates a more efficient and responsive energy ecosystem that aligns with the evolving demands of a sustainable future.

3. Optimization Algorithms

The utilization of optimization algorithms stands as a cornerstone in maximizing solar energy output and concurrently reducing operational costs. In the realm of solar energy management, where efficiency is paramount, optimization algorithms play a pivotal role in fine-tuning various parameters to extract the utmost energy from photovoltaic systems. These algorithms leverage sophisticated mathematical models, taking into account factors such as solar irradiance, panel orientation, and temperature variations, to determine the optimal configuration for solar installations. By dynamically adjusting these parameters in real-time based on environmental conditions, optimization algorithms ensure that solar panels operate at their peak efficiency levels. This not only translates to an increase in the overall energy yield but also contributes to minimizing operational costs by enhancing the cost-effectiveness of solar power generation. Through continuous refinement and adaptation, optimization algorithms enable solar energy systems to respond intelligently to changing conditions, maximizing energy production while simultaneously lowering operational expenditures, thus bolstering the economic viability of solar energy as a sustainable power source.

4. Advancements and Innovations

In recent years, the integration of artificial intelligence (AI) with solar energy management has witnessed a surge in advancements and innovations, marking a transformative era for the renewable energy sector. This summary explores key developments in this dynamic intersection, highlighting breakthroughs that are reshaping the landscape of solar energy utilization.

One significant advancement lies in the domain of predictive analytics, where AI-driven models are revolutionizing the accuracy and reliability of solar energy forecasting. Machine learning algorithms, trained on vast datasets encompassing historical weather patterns, solar irradiance, and energy production data, can now provide remarkably precise predictions of solar output. This empowers energy grid operators and solar plant managers to anticipate variations in energy generation, enabling more informed decision-making in resource allocation and grid management. The result is a more resilient and adaptive energy infrastructure that can effectively harness the intermittent nature of solar resources.

Optimization algorithms represent another critical frontier in AI applications for solar energy management. These algorithms dynamically adjust system parameters, such as the tilt and orientation of solar panels, to maximize energy capture based on real-time data and environmental conditions. By fine-tuning these parameters, optimization algorithms ensure that solar installations operate at peak performance levels, leading to a significant increase in energy yield. This not only enhances the overall efficiency of solar energy systems but also contributes to the reduction of operational costs, making solar power more economically viable.

Innovations in fault detection and maintenance have also emerged as a focal point in AI integration with solar energy management. Machine learning algorithms analyze data from sensors embedded in solar panels to identify anomalies or performance issues early on. This proactive approach allows for timely intervention and maintenance, minimizing downtime and ensuring the longevity of solar infrastructure. The result is improved reliability and reduced maintenance costs, further bolstering the sustainability and economic feasibility of solar energy systems.

Energy storage optimization has become a key area of exploration, with AI contributing to more efficient and dynamic energy storage solutions. Machine learning algorithms analyze patterns in energy consumption, weather forecasts, and grid conditions to optimize the charging and discharging cycles of energy storage devices. This intelligent energy storage management ensures that stored energy is deployed judiciously during periods of low solar generation or high energy demand, enhancing grid stability and overall system resilience.

The concept of intelligent grid management and demand response has gained prominence with AI technologies. AI facilitates the prediction of energy demand patterns and the optimization of solar power integration into the grid. Furthermore, demand response mechanisms empowered by AI enable consumers to adjust their energy consumption based on real-time pricing and grid conditions. This not only fosters a more responsive and adaptive energy ecosystem but also contributes to the efficient utilization of solar energy, reducing reliance on traditional power sources during peak demand periods.

Looking ahead, advancements in decentralized energy systems, edge computing applications, and the potential for AI to drive innovations in energy storage technologies are on the horizon. These developments signify a paradigm shift in the way we harness and manage solar energy, paving the way for a more sustainable, efficient, and economically viable energy future. As the synergy between AI and solar energy management continues to evolve, the trajectory towards a cleaner and more resilient global energy landscape becomes increasingly promising.

5. Challenges and Opportunities

The integration of artificial intelligence (AI) into solar energy management holds immense promise for revolutionizing renewable energy systems, but it is not without its share of challenges. One of the primary hurdles lies in the variability and intermittency of solar power generation. AI algorithms heavily rely on accurate and real-time data to make informed decisions, but the unpredictable nature of cloud cover, weather patterns, and seasonal changes poses challenges for reliable predictions. Ensuring the robustness of AI models in the face of such variability becomes a critical research area, demanding the development of adaptive algorithms capable of dynamically adjusting to changing conditions.

Data reliability and quality constitute another significant challenge. AI models are only as good as the data they are trained on, and inconsistencies or inaccuracies in the data can lead to suboptimal performance. Establishing standardized data collection processes, ensuring data integrity, and addressing issues related to data privacy are essential aspects that require attention. Additionally, the lack of universally accepted standards for data exchange in the solar energy domain poses challenges for interoperability between different AI systems, hindering seamless integration and collaboration.

Interpreting and understanding the decisions made by AI models present another layer of complexity. Explainability and interpretability are crucial in building trust and acceptance of AI technologies, especially in critical domains like energy management. Developing AI models that not only make accurate predictions but also provide transparent insights into their decision-making processes is an ongoing research area. This involves striking a balance between model complexity and interpretability, ensuring that stakeholders, including policymakers and end-users, can comprehend and trust the recommendations made by AI systems.

Cybersecurity emerges as a paramount concern in the realm of AI-enabled solar energy management. As these systems become more interconnected and reliant on digital infrastructure, they become susceptible to cyber threats. Safeguarding against potential cyberattacks, ensuring the resilience of AI algorithms, and implementing robust cybersecurity measures are vital considerations for the widespread adoption of AI in solar energy management.

Scalability is a challenge that arises as AI technologies move from pilot projects to large-scale implementation. The successful deployment of AI in solar energy management requires systems that can scale efficiently with the increasing volume of data and the growing complexity of energy grids. Research in this area focuses on developing scalable AI architectures, optimizing computational efficiency, and addressing the resource requirements associated with large-scale deployments.

Furthermore, the high upfront costs of AI implementation in solar energy management can be a barrier for widespread adoption, especially in smaller-scale projects or in regions with limited financial resources. Research and development efforts aim to explore cost-effective solutions, innovative funding models, and incentive structures that make AI technologies economically accessible for a diverse range of stakeholders.

Despite these challenges, the potential for future research and development in the integration of AI with solar energy management is vast. One avenue of exploration involves enhancing the adaptability of AI algorithms through advanced machine learning techniques, including reinforcement learning and ensemble methods. These approaches aim to create more resilient models capable of adapting to dynamic environmental conditions and improving the accuracy of solar energy predictions.

Improving data quality and reliability involves developing advanced data analytics techniques, exploring the use of IoT devices for real-time data collection, and establishing standardized protocols for data exchange in the solar energy domain. Collaborative efforts between researchers, industry stakeholders, and policymakers can contribute to the establishment of data standards that promote interoperability and facilitate the seamless integration of AI systems across diverse solar energy ecosystems.

Addressing the interpretability challenge requires ongoing research in explainable AI (XAI). By developing techniques that provide transparent insights into AI decision-making processes, researchers can enhance the trustworthiness and acceptance of AI technologies among end-users, regulators, and the broader public. Interdisciplinary collaborations involving experts in AI, ethics, and human-computer interaction play a pivotal role in advancing research in this direction.

The cybersecurity aspect necessitates continuous innovation in securing AI-enabled systems. Research and development efforts focus on developing robust cybersecurity frameworks, implementing encryption techniques, and leveraging AI itself for threat detection and prevention. Cross-disciplinary collaborations involving experts in cybersecurity, AI, and energy systems are essential to stay ahead of evolving cyber threats.

Scalability challenges call for research in distributed computing, edge computing, and cloud technologies. By developing scalable AI architectures, researchers can ensure that AI solutions are capable of handling the increasing volumes of data generated by solar energy systems. Additionally, research in resource-efficient AI algorithms and edge computing solutions can contribute to making AI technologies more accessible in resource-constrained environments.

To address the economic barriers, future research should focus on developing innovative financing models, exploring public-private partnerships, and identifying potential regulatory frameworks that incentivize the adoption of AI in solar energy management. Collaborative initiatives involving research institutions, industry players, and policymakers are essential to formulate and implement strategies that make AI technologies economically viable and accessible on a global scale.

In conclusion, while challenges exist, the integration of AI with solar energy management presents a compelling frontier for research and development. Addressing these challenges requires collaborative efforts across various disciplines, involving experts in AI, data science, cybersecurity, ethics, and energy systems. As researchers and industry professionals work together to overcome these hurdles, the potential benefits of AI in optimizing and advancing solar energy management become increasingly achievable. The ongoing exploration of these challenges and the pursuit of innovative solutions will play a pivotal role in shaping the future of sustainable and efficient solar energy systems.

6. Conclusion

In conclusion, the integration of Artificial Intelligence (AI) in solar energy management has proven to be a game-changer. AI-driven technologies enhance solar efficiency, streamline operations, and optimize energy production. The synergy between AI and solar energy not only contributes to sustainable practices but also positions us on a trajectory towards a smarter and more adaptive energy infrastructure. Ongoing research and implementation of AI in solar management are crucial for maximizing renewable energy potential and addressing global energy challenges in the pursuit of a cleaner and more efficient future.

Acknowledgment

We extend our profound gratitude to the esteemed KIT management, our distinguished Director, Prof. Brajesh Varshney, and our guiding mentor, Dr. Priyanka Gupta, for their invaluable and gracious support.

Reference

[1] Liu, Yan, Liu, Yang, Liu, D., Cao, T., Han, S., Xu, G., 2001. Design of CO2 hydrogenation catalyst by an artificial neural network. Comput. Chem. Eng. 25, 1711–1714
[2] Luna-Rubio, R., Trejo-Perea, M., Vargas-V´azquez, D., R´ıos-Moreno, G.J., 2012. Optimal sizing of renewable hybrids energy systems: A review of methodologies. Sol. Energy 86, 1077–1088. https://doi.org/10.1016/j.solener.2011.10.016
[3] Ma, J., Bi, Z., Ting, T.O., Hao, S., Hao, W., 2016. Comparative performance on photovoltaic model parameter identification via bio-inspired algorithms. Sol. Energy 132, 606–616.
[4] Ma, K., Liu, X., Li, G., Hu, S., Yang, J., Guan, X., 2019. Resource allocation for smart gridcommunication based on a multiswarm artificial bee colony algorithm with cooperative learning. Eng. Appl. Artif. Intell. 81, 29–36.
[5] Maleki, A., Askarzadeh, A., 2014. Artificial bee swarm optimization for optimum sizing of a stand- alone PV/WT/FC hybrid system considering LPSP concept. Sol. Energy 107, 227–235.

[6] Marzband, M., Azarinejadian, F., Savaghebi, M., Pouresmaeil, E., Guerrero, J.M., Lightbody, G., 2018. Smart transactive energy framework in grid-connected multiple home microgrids under independent and coalition operations. Renew. Energy 126, 95–106.

[7] Adeh, Elnaz H., Stephen P. Good, Marc Calaf, and Chad W. Higgins. 2019. "Solar PV Power Potential is Greatest Over Croplands." Scientific Reports 9 (1): 11442.

[8] Aghelinejad, MohammadMohsen, Yassine Ouazene, and Alice Yalaoui. 2018. "Production Schedul- ing Optimisation with Machine State and Time-dependent Energy Costs." International Journal of Production Research 56.

[9] Akhter, Muhammad Naveed, Saad Mekhilef, Hazlie Mokhlis, and Noraisyah Mohamed Shah. 2019. "Review on Forecasting of Photovoltaic Power Generation Based on Machine Learning and Meta-heuristic Techniques." IET Renewable Power Generation 13.

[10] Alam, Md. Morshed, Md. Habibur Rahman, Md. Faisal Ahmed, Mostafa Zaman Chowdhury, and Yeong Min Jang. 2022. "Deep Learning Based Optimal Energy Management for Photovoltaic and Battery Energy Storage Integrated Home Micro-grid System." Scientific Reports

[11] Alsadi, Samer, and Tamer Khatib. 2018. "Photovoltaic Power Systems Optimization Research Sta- tus: A Review of Criteria, Constrains, Models, Techniques, and Software Tools." Applied Sciences

[12] A.H.T.C. Pedro et al. Assessment of forecasting techniques for solar power production with no exogenous inputs Sol Energy (2012)

[13] M. Rana et al. 2D-interval forecasts for solar power production Sol Energy (2015)

[14] Rob J. Hyndman et al. Another look at measures of forecast accuracy Int J Forecast (2006)

[15] Jiani Heng et al. Research and application of a combined model based on frequent pattern growth algorithm and multi-objective optimization for solar radiation forecasting Appl Energy (2017)

[16] Brahim Belmahdi et al. Onemonth-ahead forecasting of mean daily global solar radiation using time series models Optik (2020)

[17] G.M. Yagli et al. Automatic hourly solar forecasting using machine learning models. Renew Sustain Energy Rev (2019)

[18] Nazrul Islam et al. Numerical and experimental study on the performance of a Photovoltaic Trombe wall system with Venetian blinds Energy (2021)

[19] S. Moreno-Tejera et al. Solar resource assessment in seville, spain. Statistical characterisation of solar radiation at different time resolutions Sol Energy (2016)

[20] B.o. Jie et al. Impact of renewable energy balancing power in tertiary balancing market on Japanese power system based on automatic generation control standard model J Eng (2019)

[21] Abdelaziz, A.Y., Ali, E.S., 2016. Load frequency controller design via artificial cuckoo search algorithm. Electr. Power Components Syst. 44, 90–98.

[22] AbdulHadi, M., Al-Ibrahim, A.M., Virk, G.S., 2004. Neuro-fuzzy-based solar cell model. IEEE Trans. Energy Convers. 19, 619–624.

[23] Aguiar, L.M., Pereira, B., Lauret, P., D´ıaz, F., David, M., 2016. Combining solar irradiance measurements, satellite-derived data and a numerical weather prediction model to improve intra- day solar forecasting. Renew. Energy 97, 599–610.

[24] Ahmad, T., Chen, H., Guo, Y., Wang, J., 2018. A comprehensive overview on the data driven and large scale based approaches for forecasting of building energy demand: A review. Energy Build. 165

[25] Ahmad, Tanveer, Chen, H., Wang, J., Guo, Y., 2018. Review of various modeling techniques for the detection of electricity theft in smart grid environment. Renew. Sustain. Energy Rev.

[26] Ahmad, T., Huanxin, C., Zhang, D., Zhang, H., 2020. Smart energy forecasting strategy with four machine learning models for climate-sensitive and non-climate sensitive conditions. Energy 198, 117283. https://doi.org/10.1016/

Online Assessment of Evaluation Process: The Modern Way of Central Assessment Program (CAP) Process

Prof. Maheshwari Divate
Department of Information Technology
Dr. D. Y. Patil Institute of Technology
Pimpri, Pune, India.

Amartya Katge
Department of Information Technology
Dr. D. Y. Patil Institute of Technology
Pimpri, Pune, India.

Pranav Gaikwad
Department of Information Technology
Dr. D. Y. Patil Institute of Technology
Pimpri, Pune, India.

Aishwarya Tike*
Department of Information Technology
Dr. D. Y. Patil Institute of Technology
Pimpri, Pune, India.

***Corresponding Author**
Aishwarya Tike
Email Id: aishwarytk@gmail.com

ABSTRACT

The Central Assessment Program (CAP) represents a transformative assessment and evaluation tool dedicated to bettering assessment and evaluation practices in educational institutions regarding the assessment of the exam paper-checking process. In today's educational system, transparency and precision have never been more critical. CAP emerges with a simple solution designed to streamline the assessment workflow for colleges, examiners, moderators, and administrators of the CAP system. CAP's user-centric interface simplifies the registration process and provides quick verification. The platform's effective paper assignment functionality significantly reduces the administrative burden by facilitating the seamless allocation of exam papers to qualified educators based on subject and departmental divisions. This not only increases the efficiency of the assessment process but also reduces the other resources that would be otherwise tied up in a large workforce. CAP's moderation system enables educators to ensure quality control and standardization of assessments. This framework ensures that the evaluation process is seamless and sticks to a particular standard for all institutes that are registered. Real-time updates help to gain knowledge of all the analytical data and introduce a greater dimension of transparency and accountability, allowing examiners to provide immediate status reports on assessed and pending papers, and granting stakeholders an updated view of the evaluation process. Additionally, CAP integrates a secure payment gateway, streamlining the payment process for examiners and moderators. Furthermore, CAP initiates the transition to digital evaluation, obviating manual paper handling and dramatically reducing the time commitment associated with assessments.

Keywords: Web Development, UX Design, MERN stack, Rest APIs, Encryption.

1. Introduction

In the fast-growing sector of education, the way in which we assess and evaluate student learning has taken on a new level of importance. The Central Assessment Program (CAP) emerges as an innovative and transformative solution and rises above the traditional assessment practices within educational institutions. This project shows how dedicated all authors are for making the whole assessment process better than before. It shows how important it is to be fast, accurate, and precise in today's education system. CAP represents a new educational assessment process that is far more than fully functional software. It represents a need for easier, simpler, safer, and more user-friendly assessments. The project carefully explains all about CAP, talking about how easy it is to use, how well it handles paper assignments, how strong its moderation system is, and how safe its payment system is. These overall features provide this new way of assessment with safety, precision, and trust in the educational assessment sector. This project endeavors to provide an in-depth exploration of CAP. It provides various services like real-time tracking, reduces paperwork, better data security and it grows as per user's need.

2. Methodology

The overall methodology is proposed for the new way to suggest making the overall CAP process is to be detailed with the main approach of building a more advanced, secure, and faster assessment system. The main aim or goal of the CAP process is to make a revolution in the way the assessment process is carried out with more efficiency, transparency, and with more security. It uses some very basic web developing tools like MERN stack, and REST APIs for smooth working and communication between user and system. Although there are various changes in the process but this model gives the full guarantee of carefulness and planned process that matches the goal and aim of the traditional CAP process, which makes the overall CAP process smooth, safe and faster than before.

2.1 System Architecture Design

Starting with the overall requirements of new way of process to study how CAP will work, and then finding and studying how different components will interact with each other and will form a better system together.

2.2 Data Modeling

Create a plan for understanding how a database like MongoDB will work efficiently with this model. MongoDB is a different kind of NoSQL database that can store different kinds of data in a single shot.

2.3 User Registration and Authentication

Make an easy way to sign up / log in for teachers and administrators so that they can create their accounts with less effort and in a user-friendly manner. Make strong ways to authenticate the user so that no false person will enter the system and no falsification of data will happen in the overall system. Use JWT (JSON web tokens).

2.4 Paper Assignment System

Create a plan and build a test for teachers on what and how they teach. Make a simple way to admin for handling these tests and assignments. Set up front-end and back-end in such a way that they can talk to each other flawlessly.

2.5 Real-Time Updates

Make a way to examine and track how many papers get checked and how many of them need to be checked in real-time. The paper checking updates should be in real-time so that all the actors like the user, admin, and director is able to see the overall progress of CAP process.

2.6 Secure Payment Gateway

Make a safe connection for cashless payment options for teachers so that they can get their money faster and directly into their bank accounts.

2.7 Scalability

Plan for the system to be able to grow as the educational institution gets bigger. This means making the database work better and picking servers that can also grow. Think about where things might slow down and make ways to add more power to handle more users.

2.8 Documentation

Create documentation that includes everything necessary for developers, administrators, and users. This should include API documentation detailing how external systems can interact with CAP, as well as user guides to make a smooth and effective system use. Documentation should be kept up to date to reflect any changes or updates made to the system.

3. Definitions/ Basic Concepts

3.1 MongoDB

MongoDB is a NoSQL database, that serves as the foundational data repository. It employs a flexible BSON format, similar to JSON, which coordinates together data storage and application data structures.

3.2 Express.js

Express.js is a backend framework usually used with Node js to build scalable and efficient REST APIs. It offers a streamlined toolkit well stocked with routing capabilities, middleware support, and a clear HTTP request and response handling interface.

3.3 React

React is a JavaScript framework built by Facebook and is used to create frontend web applications. It supports the creation of interactive and dynamic user interfaces. React uses a component-based architecture, encapsulating the UI into reusable components.

3.4 Node.js

Node.js serves as the runtime environment for server-side execution of JavaScript code. It is engineered for non-blocking, event-driven operations, rendering it ideal for handling concurrent connections and real-time applications.

4. System Architecture

The project is all about creating a safe and secure system, so people can use it easily. For this, we need to know what type of people are going to use this system, what they expect from the system and what they want from the system, and how the system is going to fulfill the needs of the user. This information will help us to know the actual requirements for designing the system.

System Architecture Overview

The system architecture consists of three layers, frontend, backend and database. Frontend layer is the top most layer which is what users see in the system. Backend layer is the middle layer which enables users to interact with the data or the actual logic. The third layer is the database, it is a container where all the information is stored safely and separately.

4.1 Private APIs

The private APIs are like the security guards of the system. Different types of users can only access the parts of the application that they are supposed to. Before giving you access to any information, these APIs check who you are and what you are supposed to do.

4.2 Web Server

The web server acts as the central control of the system Web servers manages all the data and requests that are coming from the users and the private APIs

4.3 Database Architecture

The database architecture is used to fulfill the different needs of various users.

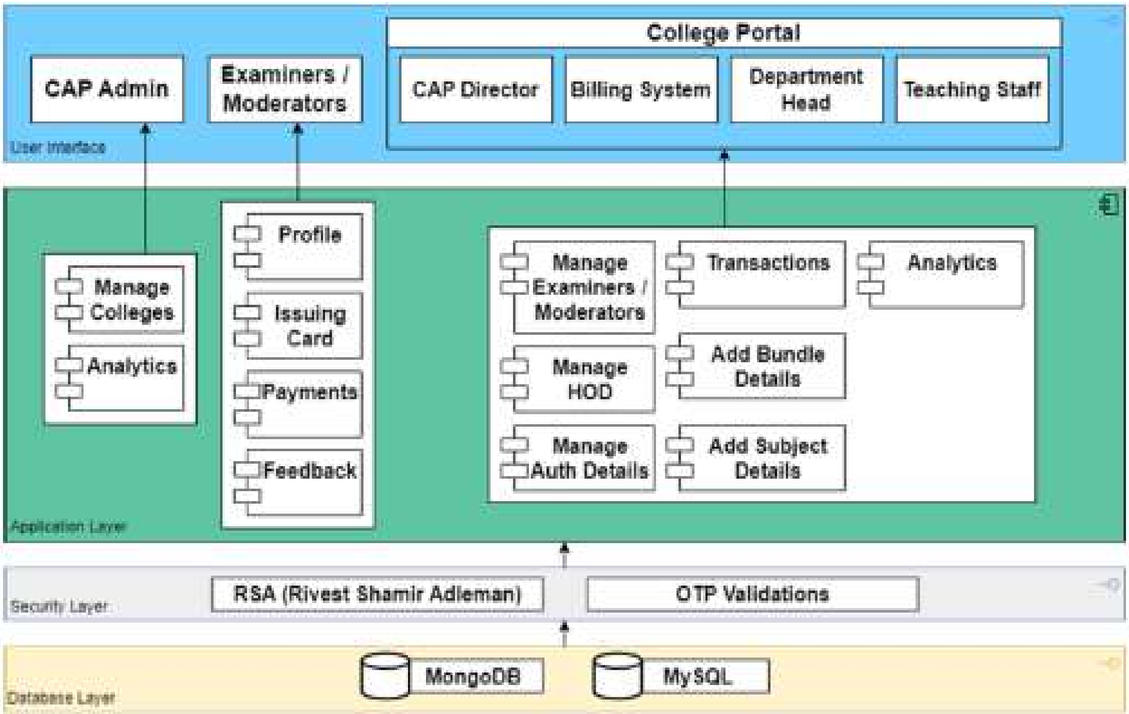

Figure 1: System Architecture of digital and modern way of Central Assessment Program (CAP) process

5. Conclusion

In this project, we created the Central Assessment Program (CAP), which aims to improve the current manual process of the Central Assessment Program (CAP). We used various development technologies, such as MERN stack and REST APIs, along with encryption to create an advanced and user-friendly platform.

CAP has some unique attributes, such as an easy registration process, a better system for assigning paper bundles, a strong moderation system, real-time updates, and a secure payment gateway. All these features come together to make a better system for assessment. This makes things more accurate, faster, and efficient, and keeps data safe, all while making sure it’s user-friendliness.

References

[1] Hoque, S. (2020). Full-Stack React Projects: Learn MERN stack development by building modern web apps using MongoDB, Express, React, and Node. js. Packt Publishing Ltd.
[2] Lazar, J. (2001). User-centered Web development. Jones & Bartlett Learning.
[3] McWherter, J., & Gowell, S. (2012). Professional mobile application development. John Wiley & Sons.
[4] Holla, S., & Katti, M. M. (2012). Android based mobile application development and its security. International Journal of Computer Trends and Technology, 3(3), 486-490.
[5] Dipina Damodaran, B., Salim, S., & Vargese, S. M. (2016). Performance evaluation of MySQL and MongoDB databases. Int. J. Cybern. Inform.(IJCI), 5.
[6] Hill, S., & Chalaux, T. (2011). Improving access and quality in the Indian education system.
[7] Jhurree, V. (2005). Technology integration in education in developing countries: Guidelines to policy makers. International Education Journal, 6(4), 467-483.

Platinum and Palladium Complexes as Favourable Sources for Antitumor Treatments

Dr. Anshu Srivastava
Department of Applied Science and Humanities
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.
Email Id: as@kit.ac.in

ABSTRACT

To treat cancer, new, safer, and more potent medications are required. Scientists are showing increasing interest in cytostatics based on transition metals. Chemotherapeutics, including cisplatin, are being used in combination therapy by researchers in an effort to increase their efficacy. Additionally, research is being done to alter molecules in order to improve pharmacokinetic parameters and boost the selectivity of these medications. These modifications include developing molecules into multinuclear structures, attaching various substances to widely used medications, and encasing molecules in nanoparticles. Thus, we tried to classify new drug discoveries that have platinum and palladium atoms in their structures.

Keywords: Platinum complexes, palladium complexes, antitumor treatments

1. Introduction

A significant turning point in the development of inorganic medicinal chemistry was reached with recognition and characterization of the very dynamic anti-tumor drug cisplatin and its derivatives [1,2]. However, the disadvantages of the existing platinum anti-cancer medications are non-specific toxicity and drug resistance from prolonged treatment [3,4]. In recent years, It has prompted the evolution of as a substitute anti-tumor treatment medicines based on transition metals. While titanocene dichloride (complex 4) (Fig. 1), an anti-proliferative drug, was analyzed in Phase I/II trials [8], NKP-1339 (complex 3), a sodium counterpart of KP1019, is scheduled to enter clinical trials [7]. Amanofin, a gold(I) complex that inhibits DNA, RNA, and protein synthesis, cause cell apoptosis [13] are other transition metal-based complexes with anti-tumor activities. The appealing characteristics of transition metal complexes make them viable substitutes for organic molecules in anti-tumor medicines. First off, pure organic molecules can only have tetrahedral, planar, or linear geometries whereas transition metals can take a variety of geometries depending on how many coordination bonds they have, including octahedral, square-planar, square-pyramidal, andgeometries.[16]There is now an abundance of biological evidence demonstrating the utilit y of palladium complexes as a component for anti-tumor actions.[35]

2. Synthesis

Two general processes that describe the synthesis of the classical synthetic pathway to uracil from Formalaceticacid (produced in situ from malic acid) and urea in sulphuric acid are the main findings of the literature survey[17]. Malic acid, urea, and PPA(2) or maleic/fugaric acid, urea, and polyphosphonic acid (PPA) (2) are used in certain alternative syntheses. It is convenient to synthesize 2-thio uracil by reacting formyl acetate with thiourea. Ureas react with acid anhydride or β-keto esters diketene in another important synthesis [18]. When hydrogen chloride present orotic acids are produced by ring-transforming hydantoin into the ring of uracil from oxaloacetate and ureas. handling of the simplest. Reachable 2-thio uracil using chloroacetic acid, either in conjunction with acid hydrolysis /oxidation with dimethyl sulfoxide (DMSO). Sulfuric acid[19] is another route. Urea and 1,3-dimethyl uracil combine in ethanolic sodium ethoxide to create uracil. They are the starting ingredients in several more modern uracil synthesis. [20]Heterocyclic β-enamino esters and isocynates provide a wide range of readily and generally accessible hetrocondensed uracils.[25].Using 5% aqueous NaOH, the mixed urea intermediate is smoothly cyclized. The entire process can be completed in a single step, with pyridine acting as both a base catalyst and solvent for the ring shutting down.[21] Utilizing retro Diels, the urea condensed with β-keto esters yields 6- or (di)substituted uracils [26]. A good yield of uracils is obtained following heating through Malononitrile, isocyanates, and imido esters can all be used to make substituted uracils. In an alkaline medium, N-substituted N-cyanoacetyl ureas also undergo cyclization. Particularly from heterocyclic β-enamino esters, acyl lactones, lactums, and thio lactones[28] provide easy access to heterocondensed uracils.The latter provides a wide variety of unique condensed system types.

Preparation of [Pd (5 – methyl Uracil)$_2$ Cl$_2$]

500 mg of PdCl2 and 1 g of the ligand 5-Methyl Uracil were combined with 50 ml of methanol and water, and the combination was refluxed at 800C for 6-7 hours to produce a clear, dirty yellowish-colored solution. The quantity were diluted to 5 milliliters, given a methyl alcohol treatment. The resulting grayish-white crystals were gathered, thoroughly cleaned using acetone and ethanol. Table I contains the analytical data.

The reaction for the formation of palladium coordination compound is as follows:

$$[Pd(Cl)_2] + 2L \xrightarrow{CH_3OH} [Pd(L_2)(Cl)_2]H_2O$$

Where L = ligands

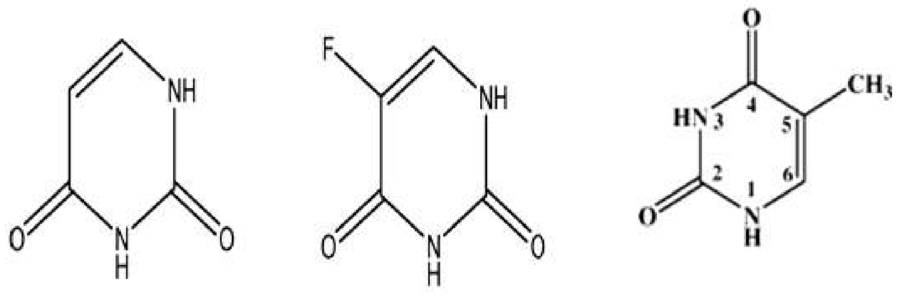

Uracil 5-Fluorouracil 5-methyluracil

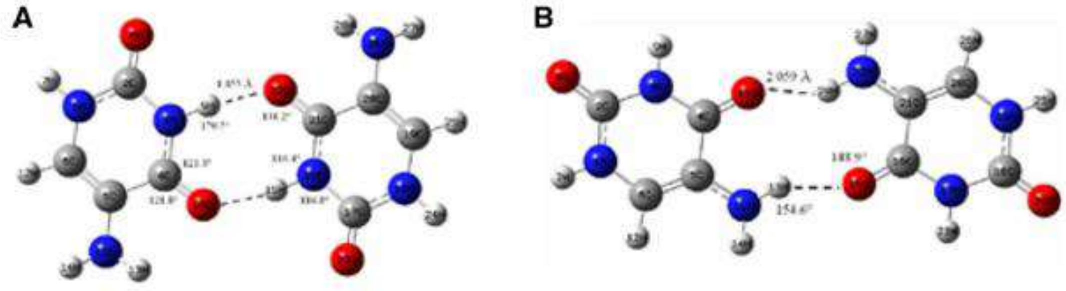

Predicted dimer forms of 5-aminouracil at the theoretical level **a.** Uracil dimer. **B.**5-Methyl uracil dimer.

3. Spectroscopic Analysis

The amounts of carbon, hydrogen, nitrogen, and oxygen found in the compound under investigation were measured micro analytically. The synthesized chemical solution was combined with 5 milliliters of 4% EDTA solution and 10 milliliters of 2M acetic acid-sodium acetate buffer in order to estimate palladium as Palladium 1, 2, and 3 benzotriazole.[29]Then, while shaking, 3% ethanoic acid was added. The solution should be digested for 20 minutes at 600–900 degrees. The resultant precipitate was filter out (G 3), repeatedly cleaned with extremely diluted HCl (10:1000), and then dried at 1100C to a consistent weight.[31]The manufactured complex's molecular weight was determined using Rast's technique.The Gouy method was used to test magnetic susceptibility at room temperature. [38]

An 8500 gauss magnetic field strength was used. Using cobalt mercury thiocyanate Hg [Co(NCS)4], the device was calibrated. Pascal's constant was utilized in the computation of the diamagnetic adjustments. The equation below has been used to calculate effective magnetic moments [30].

Magnetic moments effective (μeff) = 2.83 (x

corr.T)5/10

where x and T are the absolute temperature tested in analytical grade methanol with a Philips Conductivity Bridge and a dip type cell.The Perkin Elmer Spectrum (RXI) spectrometer was used to record the infrared spectrum (4005-599cm-1) of the manufactured complex and the uncoordinated ligands in nujol mulls supported between NaCl palates (rock salt region).

Using TMS as an internal standard, the synthesized compound's 1H NMR spectra will be captured using an AC 300F spectrometer operating at 300MHz.

The complex's electron spin resonance spectrum was captured at room temperature utilizing a powdered sample and a VariumE-3 spectrometer operating at 9.53GHz microware frequency. The provided equation was used to calculate the "g" values.

G~= 714.44 X √(GHz) H(G), where H(G) is the sample's field in Gauss and √(GHz) is the microwave frequency in GHz at which the sample estimated.

Table I provides the ligand and its metal complex's analytical and physical data. At room temperature, the complexes are stable and non-hygroscopic. Complex solubility is provided. The complexses were not soluble in other organic solvents, sometimes soluble in acetonitrile, and soluble in DMF and DMSO.

The chemistry of palladium complexes and its derivatives, including both their strong biological activity and synthesis methods, is discussed here. It is very essential to note that there has been a lot of attention in this class of heterocycles.

The room temperature magnetic values of the synthesized compound. Every complex has a magnetic moment value of zero. They are diamagnetic as a result. Their diamagnetic nature reveals the complex's square planar geometry.

Table 1 provides analytical and physical information on the ligand and its coordination compound.

Table1: Analytical Data of the Complexes

Compound	% Pd Found (Calc.)	% C Found (Calc.)	% H Found (Calc.)	% N Found (Calc.)	% Cl Found (Calc.)	% F Found (Calc.)
[Pd(5-fluoroUracil)$_2$Cl$_2$]	24.79 (24.63)	27.93 (27.80)	2.79 (2.64)	13.03 (13.13)	16.53 (16.56)	-
[Pd(5-Methyl Uracil)$_2$Cl$_2$]	24.34 (24.56)	21.94 (21.46)	1.37 (1.36)	12.80 (12.81)	16.23 (16.26)	8.68 (8.60)

The molar conductance values fall between 0.052 and 0.057 **Ω**-1 cm-1 mol-1, indicating that the produced complex is not electrolyte.

The synthetic complex containing coordinated 5-methyl uracil has three potential donor sites in its infrared spectral bands: (i) two cyclic nitrogen and (ii) oxygen of the ketonic group in the IR frequency of the ring's cyclic nitrogen has changed, suggesting that the cyclic nitrogen has participated in the coordination.[38].The bands at 640 cm-1 in the infrared spectra of both coordination complexes with 5-methyl uracil underwent a lower shift of 640 cm-1, suggesting that the produced molecule included metal nitrogen coordination. Metal nitrogen coordination in the combination of various metals was proven by Hambright et al. Recently, Pennell and associates have verified the nitrogen and metal coordination in the complexes using experimental means.

The complexes' electronic spectrum bands (table II) were assigned in accordance with the literature.

Table 2: Important IR spectral bands and their assignments(Reported Compounds)

Sl. No.	Compound	ν M-C(cm^{-1})	δ Me(sym) (cm^{-1})
1	$[(PEt_3)_2Pd(CH_3)X]$X=Br		
	SCNCN	510 526 502	1162 1180 1161
2	$[(PEt_3)_2Pd(CH_3)_2]$	491, 457	1164
3	$[(AsEt_3)_2Pd(CH_3)_2]$	498, 479	1152,1124
4	$[(PPh_3)_2Pd(CH_3)_2]$	529, 482	1129
5	$[(bipyr)Pd(CH_3)_2]$	534, 522	
6	$[MeS(CH_2)_2(SMe)Pd(CH_3)_2]$	524 ,511	1166

The square-planar complexes of the d8 elements' structure was explained via the molecular orbital method. In square planer complexes, the σ bonding involves the metal orbitals ndz2, ndx2-y2, (n+1)Px, and (n+1)Py. However, based on the overlap integrals' values, the majority of the σ-bonds are accounted for by ndx2-y2 (n+1)s, (n+1)Px, and (n+1)Py, whereas ndz2 only contributes a little amount of the ligands' π-orbitals.

We made the following assumptions based on the bands seen in the electronic spectra of the complexes under study correlated with those of [M (CN)4]2- [M= PdII] (Table II).

Scope of Palladium and Platinum Complexes in Treatment of Tumours

The distinctive properties of metals, such as their redox character varied coordination channels and response towards substrates organic in nature have drawn a lot of attention to the ameliorative strength of metal complexes in cancer treatment. These characteristics make them a desirable probe for the creation of metal complexes that bind to the biomolecular target selectively and change the cellular mechanism of proliferation as a consequence. A overview of the in vitro cytotoxic effects of several metal-based compounds during a six-year period is given in Table 1, together with specifics regarding their target and suggested mechanism of action. Numerous metal-based compounds with promising anticancer qualities have been created; some are now undergoing clinical studies, while others are already being used in clinical practice for diagnosis and therapy. Recently synthesized metal-based compounds have a distinct range of cytotoxicity and are the result of drug design aimed at accomplishing particular goals that the original chemical was unable to accomplish. The following compounds are included in this group.

4. Result and Discussion

The mainstay of metal-based compounds used in cancer treatment is the palladium compound family. Palladium complexes are used clinically as an supportive in cancer therapy, depending on the proposed drug's range of activity and the goal of killing tumor cells. Malignancies is the main indication for these complexes. They also exhibit anticancer properties against neuroblastoma, sarcoma, melanoma and neuroblastoma. The fundamental premise spurred the quest for substitute metallic compounds with better anticancer and pharmacokinetic qualities, even though resistance did eventually develop. Alternative Palladium compounds were created based on this. All of these are the results of in-depth investigation on palladium compounds.Due to the complex's diamagnetic nature, square planner geometry is suggested. Does not break down at temperatures beyond 2600C.The compound is configured in a d8 way. There is antitumor activity in the complex.

References

[1] Wamhoff H, Dzenis J, Hirota K (1992) Uracils: versatile starting materials in heterocyclic synthesis. Adv Heterocycl Chem 55:129–259. doi:10.1016/S0065-2725(08)60222-6

[2] Putz MV, Duda¸s NA (2013) Variational principles for mechanistic quantitative structure–activity relationship (QSAR) studies: application on uracil derivatives‟ anti-HIV action. Struct Chem 24:1873–1893. doi:10.1007/s11224-013-0249-6

[3] Morten, HH. N. 2010. A mutant Pfu DNA polymerase designed for advanced uracil-excision DNA engineering. BMD Biotechnology, 10(21):1-7.

[4] Miquel B.-O.; Carolina, E.; Angel, T.;Angel, G.-R., and Antonio F.

[5] 2011.RNAs, uracil quaret model with a non-essential metal ion. Chem. Comm. (Camb), 47(16): 4646- 4648 .

[6] Heidelberger C (1984) In: Holand JF, Frei E (eds) Pyrimidine and pyrimidine antimetabolites in cancer medicine. Lea and Febiger, Philadelphia, pp 801–824

[7] Igor, P.P.; Levan, M.; Barbara, J.M. and Jill, S.J. 1997. Presence and consequence of uracil in preneoplastic DNA from folate/methyl-deficient rats. Carcinogenesis, 18(11):2071-2076.

[8] Kulikowski T (1994) Structure-activity relationships and conformational features of antiherpetic pyrimidine and purine nucleoside analogues. Pharm World Sci 16:127–138. doi:10.1007/BF01880663

[9] IsobeY,Tobe M, InoueY, Isobe M, Tsuchiya M, HayashiH(2003) Structure and activity relationships of novel uracil derivatives as topical anti-inflammatory agents. Bioorg Med Chem 11:4933– 4940. doi:10.1016/j.bmc.2003.09.012

[10] Baraldi PG, Romagnoli R, Guadix AE, Pineda de las Infantas MJP, Gallo MA, Espinosa A, Martinez A, Bingham JP, Hartley JA (2002) Design, synthesis, and biological activity of hybrid compounds between uramustine and DNA minor groove binder distamycin A. J Med Chem 45:3630–3638. doi:10.1021/ jm011113b 10.Prashansa, A. 2016. Non-coding ribonucleic acid: a new anticancer drug target. J Pharmacovigil,4(3):1-2.

[11] Rastogia, V. K. and Alcolea, P. M. 2011. Vibrational spectra, tautomerism and thermodynamics of anticarcinogenic drug:5-Fluorouracil. Spectrochim. Acta A Mol Biomol Spectrosc.,79(5):970- 977.

Industry 4.0-Emerging Trends of Technology Adaptation- The Case of Footwear Industry

Sharad Srivastava
Senior Consultant
Footwear Design and Development Institute
Email Id:sharadsri2212@gmail.com

ABSTRACT

Footwear been seen as traditional product and perceive to be made using manual or mechanized system. Increased manufacturing capacity across the globe and increased consumption has created intense competition. The industry has gradually evolved itself towards with the new generation products. The technology which holds potential for the future of footwear product and technology are biomechanics, IoT based intelligent insoles, development of the materials using nano particle technology for i improving product performance apart from using additive technology for making complex product. The designing in footwear has changed drastically using virtual design application thereby reducing lead time for design. The application of additive manufacturing is expected to create products having specific application. Whereas, application of robotics, automation including CIMS has arrived in the manufacturing of the footwear particularly in stitching and assembly system. There is paradigm shift in the entire process of product conceptualization to the product delivery. The footwear manufacturing will no longer be a traditional sector.

Index Terms: Emerging technology, Industry 4.0, Footwear, Smart footwear.

1. Introduction

Footwear manufacturing has been viewed as traditional manufacturing process having age old traditional skill to manufacture. The product is also viewed as fashion product rather than performance product as in the case of engineering products.

The footwear demand follows normal distribution curve in terms of size with regional correction based upon foot anthropometry data. Thereby, the dimension of the product will always be variable (sizes) coupled with fashion, color and styling issues like parameters. Therefore, footwear offers unique challenge in the manufacturing unlike other engineering products.

Recent development and emergence of the technology oriented performance product is now the reality. It has taken place at speed which has disrupted the way the products are been designed, manufactured and thereby creating supply chain efficiency.

With the emergence of the non-leather footwear sector over leather sector, global footwear manufacturing companies such as Adidas, ASICS, Puma and many others have global manufacturing and supply chain systems. Intense rivalry is already creating adaptation of technology.

Application of robotics in manufacturing process, Artificial Intelligence, predictive testing systems, 3D printing technology, smart footwear has become reality in the footwear industry. This is coupled with the advancement in the gait analysis and foot anthropometry data collection system for creating better products. Contrary to the perception the footwear industry has already started moving towards industry 4.0.

Current Methodology of Footwear Design and Manufacturing

Historically footwears were made using rough measurement of the footwear by the cobblers in the village and, creating a product by experience and the measurement using wooden last. In addition to this the traditional or local footwear were also available to the market. These shoes were manual manufacturing. The complex designs were developed by the Europeans using precious materials and textiles apart from the leather and in cases woods. By 19th century, the emergence of industrial manufacturing started taking place primarily due to the requirement in the war and development of the standard sizing system.

Figure 1: The bottoming room of the B. F. Spinney & Co. factory in Lynn, Massachusetts, 1872[1].

By 20th Century, the footwear manufacturing capacity started multiplying across the world due to low capital requirement for establishment of manufacturing capacity as well very low technology barrier. The manufacturing system adopted to the conveyor systems and application of clicking presses similar to one used in engineering but of relatively low pressure and stitching machines with the mechanized assembly process.

The designing process also got revolutionized as the standardization of the footwear last (replica of the human foot) and measurement of the foot on nation / region basis. The designing of the footwear moved from the customized to the designing for the masses. This also led to the application of the modern practices of the management notably, work study and assembly based manufacturing.

The manufacturing process today, comprises of the clicking, stitching and lasting department wherein various process for the footwear manufacturing is been carried out. However, it is based upon the type of construction been used by the company as there are many processes of the footwear manufacturing based upon the construction been used by the company as there are many processes of the footwear manufacturing based upon the construction.

It is also important to note that not only the direct manufacturing processes played role in the manufacturing but at the same time the logistics functions remained critical for the competitive advantage of the firms. The key logistic functions such as design played a key role in creating demand but at the same time inventory management was critical to profitability of the firms [3].

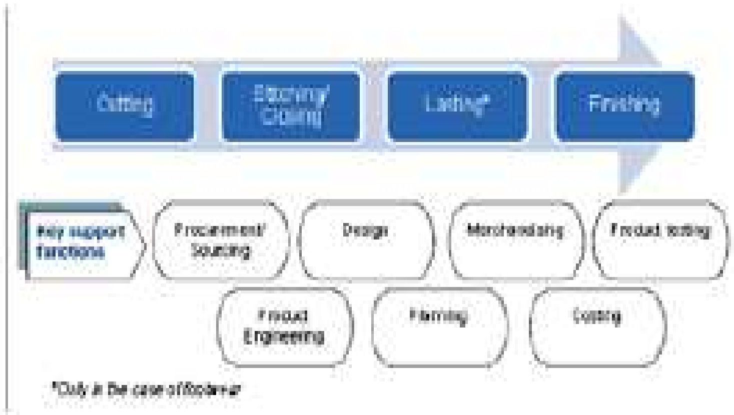

Figure 2: The mechanized footwear manufacturing system[2]

The conversion of footwear from the fashion to the utility product has led to the focus on the compliance of the product, use of the materials with increased concern on the safety of humans due to possible dangers posed by the chemicals such as Chrome VI or Azo Dyes been carcinogenic in nature.

The REACH norms of the EU is an indicator to the concern as these are now applicable for footwear industry also and creates restriction on the material selection and safety standards to be followed in the designing of the footwear and manufacturing. [4]. The Beuro of Indian Standard (BIS) is already evaluating system to bring footwear certification in the domestic market in consultation with the manufacturing organization. The Quality Control Orders (QCO) for footwear products may become effective any time soon.

Therefore, from the cobbler based manufacturing system the footwear industry transformed itself to the mechanization much like other sectors.

2. Technology Forecast and Trends

The technology in the footwear sector has been moving quite fast and rather on higher trajectory. There has been two noticeable development, primarily- first, the development of application software in hand held devices e.g. scanning devices and micro devices secondly, advancement in the manufacturing and design technology.

a. **Design Technology:** The design technology has transformed today from the days of manual designing and the manual pattern making, grading and trials. This has considerable time consuming activity therefore the design cycle has been one of the key factor for the competition. With the arrival of the CAD based system the designing has changed with more accuracy and the shorter time to finalize the patterns. Five key developments have been noticed:

- **Foot Scanning and Digitization Process:** The development includes 3 –D foot scanning system for accurate foot profile data, with the development of the 3 D scanning process, the foot anthropometry data collection has become more efficient and accurate with very less time for measurement. This has virtually reduced the time to collect the data with reduction of time by 90%. Also the foot profile with all the measurement is possible to capture. In prosthetics application, foot data collection using hand held device has been beneficial in collecting data for the prosthetics and application orthotics product development application. The data collected through the hand held device also allows the data to be collected for deformed foot measurement application. By using Geomagic and reverse engineering software or similar software, the component for the foot or body part can be designed with more accuracy.

  The data then can be sent to the 3 D printer for printing of the product. The entire process helps in creating a better product with accuracy with least time to produce. The material used for the application is generally Polyamide PA21, PA22 with medical grade –non reactive. However, selection of material depends upon the type of application. For non specific application the foot anthropometry data helped in design of the Last modelling. The software such as ICAD, Shoe master, Crisbin software which are especially designed for the footwear design are now been used by the industry for the application. Whereas, these software permits virtual design on the digital 3 D image of the last but at the same time using material scanners and virtual library it is possible to see the combinations of the designs and or textures.

  This has tremendously helped the rapid prototype design in terms of tools and software both. Whereas Rapid proto type focused upon reducing lead time of the product right from the design to the finished stage of the sample. Digitization offered virtual product creation without even making it and finalizing the best design. This technology has helped to collect foot anthropometry data very accurately. However, the limitation is high maintenance cost and knowledge work force as well as capital investment.

Figure 3: Developing Variable density midsole using 3 D design software on 3 axis CNC machines

Another advancement is use of design and simulating load bearing condition related research. This has helped in designing in case, the footwear is having performance aspect such as sports specific footwear and persons having foot deformity and planter pressure variation in the foot. Contrary to the traditional approach of the design the performance footwear are increasingly getting designed using motion capture system with force plate for analysis of the gait and impact of force under sports specific dynamic conditions. This has helped the footwear performance and created whole new range of the product category e.g. the designing of the sole using lattice design .structure helped to identify most suitable structure for the application to ADIDAS. The design development process is been carried out using pressure point distribution analysis of the human foot and by analysing Diamond, X, Cubic, Vintiles structure under dynamic load bearing condition. The entire development is carried out using design analysis as structure and thereafter choosing the design suitable for the application. This is great leap from design point of veiw for the sole designing and selection of the materials[5]. One of the limitation of the technology is high cost of production and low volume output.

One may notice increasing use of the digital and scientific application in footwear designing. The material selection has been based upon the values of the analyses. These technologies had enabled faster design solution and cutting greatly the time required for the prototyping. With the 3D last data storage, it is now possible for the designer to design as many shoes using different materials and creating virtual product without even making first prototype physically and thereby making design development more economic.

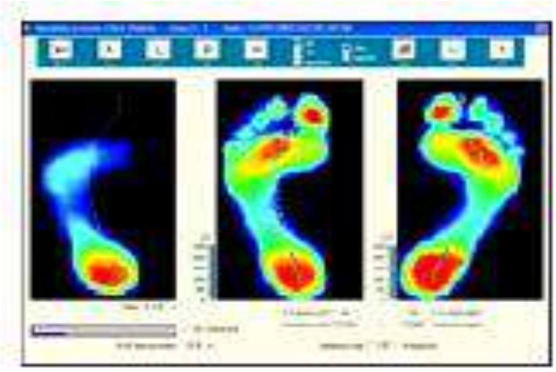

Figure 4: Planter Pressure analisys using pressure plate . The red points indicates high pressure zones of the foot.

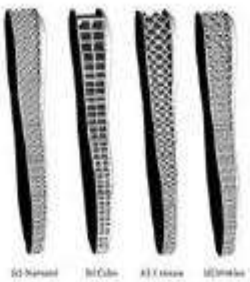

Figure 5: Sole design using Lattice structure[6]

The lattice design has been developed for stability of the forces while in action notably running and sports activities. ADIDAS had developed footwear using lattice structure design and printing the sole using 3 D printing process. More and more footwear manufacturer have started using designing capability through the application of the virtual design with the application of 3 D scanning, virtual modelling by using application specific software's for the product.

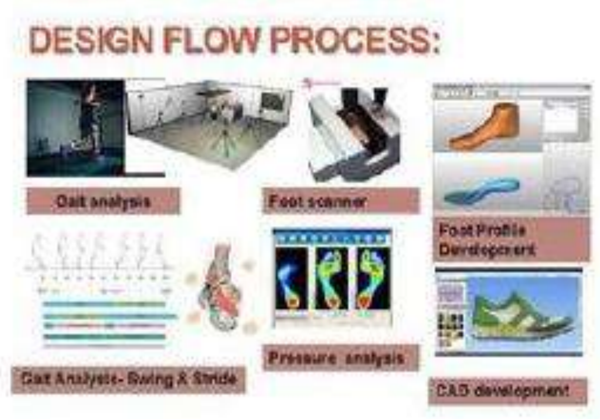

Figure 6: Flow chart for designing of the sports footwear

The adaptation of digital technology for designing of the footwear is case point on how the industry has moved from traditional manual based design system to the digital space with clear gain in lead time and proto typing in real condition.

Manufacturing

Most noticeable development in manufacturing is noted to be in the area of production technology. Unlike having traditional manufacturing process using mechanized , hydraulic and pneumatic systems, the current trend is moving towards robotics application , CIMS and additive manufacturing. This is due to increased focused on the customization, low volume , high design strategy adopted by the companies. Some of the technologies presently having potential are listed as below:

(i) 3 D printing Technology: The 3 D printing became necessitated due to fact that, the human feet are not similar in terms of topography. Therefore, leading to the requirement of the most suitable shoe class development. However, with the use of 3 D scanning of the foot with 3 D printing of the shoe offers infinite possibilities for the professional applications to the ortho needs as well. This has wider application for the sports footwear as the human bodies behaves differently in each environment. One of the biggest advantage of the 3 D printing is elimination of waste generation from the process leading to reduction of environmental concern and efficiency of resource utilization also offers unique solution to each individuals.

3. Additive Manufacturing

The design versatility and complex design feature can be achieved through the use of additive manufacturing systems as quite a number of designer have started using the additive manufacturing for handling complex issues pertaining to the design features.

Figure 7: Nike Vapor Laser Talon- The 'first-ever football cleat built using 3D printing technology'(2016) using SLA [7].

The shoe weights around 158 grams and the cleat design had been developed to provide maximum stance. Even in India companies have started using 3 D printing sampling purpose using FDM technology for the heel design thereby sharply cutting time.

Figure 8: Heels of the ladies shoe using 3 D technology.

Manufacturing: The manufacturing system is already under transformation with the application of die less cutting and the application of the LASER and knit technology. Beside this newer technology platforms are under development The die less cutting has already arrived with the application in the sample and small order cutting .The LASER cutting and ultrasonic knife cutting is already been used by the sports industry increasingly and had been found application for the knitted footwear, Perforation and cutting process. The suitable materials found applicable are leather, non leather materials such as knitted, nylon and polyester etc.

In footwear the materials is quite cost intensive with around 60% of the cost component of the entire cost structure. In order to economize the production cost material plays very important component. The shoe making industries have been focused on saving of the materials through lay planning, skill and knowledge as leather been heterogeneous material and been natural. The recent development has been in auto lay planning and nesting technique. The use of Auto lay planning technique has resulted not only in saving of the material but also in quicker design using NFP (No fit Polygon) algorithm.[8]. Application of the CIMS has came with the embroidery patterns in the cow boys footwear and machine development has integrated stitching operation with both Pfaff and Adler introduced machines for the pattern stitching which takes the data from the CAD and doing complex and repetitive stitching without human intervention thereby reducing rejects and rework and improved productivity. Apart from this NC and CNC application has already been carried out in the Stitching machine operation which is responsible for the 50% operative work force and biggest factor in productivity contributor. The application of CNC based stitching machines have already shown the enhance performance of the productivity [9]. Generally all these option are suitable for the low volume, high design variant.

Where as, in the lasting department two types of application has been noticed using ABB YuMi and RAPID program from ABB Robot design Studio for pick and place of the component [10] and for the critical operation of sole and upper roughing and adhesive application using 3D shape consideration. The sole side of the footwear is non linear and variable x,y,z axis coordinate, therefore the trajectory of tool movement is synchronized with the profile of the last and pullover. To automate the process 3D vision and 3D scanning process is used for defining the travel path of the tool. [11]

Figure 9: DESMA Robotic application for roughing operation

Due to varied design application DESMA robots are claiming to be economical and having varied design use against conventional. However the maintenance and operational cost is one of the impediment.

In the DIP(Direct injection process) DESMA has already introduced DIP system using robotics. The biggest advantage is the uniformity and quality which is always prime issue due to error in roughing causing direct loss of the shoe. DESMA system takes data from the last profile and the mold and does exact assembly process. The entire process becomes contact less. Despite been high capital investment DESMA systems has been beneficial in terms of reduced labor cost and less rejection of complete footwear.

Figure 10: DESMA robotic system for DIP mould based roughing and engraving system.

Clearly, the automation had helped the manufacturing processes immensely in terms of enhanced productivity and quality. The increase in production volume and quality has improved considerably. It has also helped the manufacturers to reduce lead time in the production as well as to make small order batch production system.

Emerging Trends in Products

As emerging already footwear is no longer a traditional product or having manufacturing system based upon the semi mechanized and manual process. Increasingly, the technological advancement in the product is also taking place . The footwear has converted in to technology based product with technical feature and the demand for products has started rising.

Biomechanics research segment is increasingly getting focused due to the interest developed for the study of the body movements and this fields comprehensive application in sports and stress work condition. The bio mechanics helps in designing better shoes with the materials which can enhance the performance of the players.

Smart footwear is emerging product which has the potential in the medical and occupational product cases. The application smart footwear has been found for collecting data using in shoe foot pressure measuring system for collecting data pertains to pressure while in motion for application. One of the application in shoe data collection been the prediction of supination and pronation which affects the load distribution and arches of the human foot.[12] The prediction can help the patient with better designed support for the foot especially the growing children using 3D printed support system for the foot in customized manner. With the development of the pressure measuring technology the foot deformity and various range of motions have become important part of the analysis for determining the physiotherapeutic application. This includes deep learning about foot movements. The analysis is helpful in studies such as load distribution in standing, walking positions , stability factors while walking which is serious issue with elderly population. The system involves piezoelectric sensor with wire or wireless using data logger transmitting data through wifi. [13]

Another application refers to the application of Nano technology for improving material characteristics such as creating better shock absorption characteristics in the footwear materials. Nano technology is increasingly used using silver particle for bad odor absorption, creating membrane for the antibacterial property which actually thrives in case of high humidity. However, for the shock absorption property for rubber black Nano materials. [14] The application of Internet of Things is been used for the wireless smart insole. 3P smart insole' prototypes that monitor the movement and loading distribution of athletes to predict and prevent injury.

Figure 11: Smart insole used developed for the soccer for improvement of field performance

Nike has patented Block chain system. The application of Block Chain for management of the distribution related data. Nike's involvement with Chain Integration Project (CHIP) and their patented blockchain compatible shoes, Cryptokick is expected to address counterfeit issues related to the Nike's product. Therefore, where as the development has not only been in the manufacturing but also on the logistic side as well.

Wearable Technology: The use of app based software has opened a new era for the footwear sector. Increasingly use of the technology in the footwear to major biometric parameters, and other such application can be installed in the footwear and the lots of research is already underway in this area. Particularly in the sports and Personnel Protective equipment cases. This is newly developed area and offers good opportunity for the growth in future. More research are underway for using technical textile for the shoe particularly for performance enhancement of the product.

For the management of the resources the footwear industry has already started using ERP and SAP systems in fact apparel sector is one of the prominent user of the SAP.

4. Conclusion

The trends in emerging technology indicates very clear picture of increased focus on technology by the footwear. Which is departure from the traditional approach directed only to the fashion. The performance footwear based upon emerging technology has started creating a whole new segment. The application of robotics are clear indicator of the future factories wherein shift is expected from massive labor employment to more automated manufacturing process thereby enabling the specific application solutions.

References

[1] "History of Shoemaking in Britain—Napoleonic Wars and the Industrial Revolution". Archived from the original on 2014-02-02.

[2] `Evaluation of human resource requirement for Indian leather garments, leather & non leather footwear, components & leather goods & accessories sectors and conduct techno-economic feasibility study for establishment of FDDI branches (2008)- ICRA Management Consulting Services Limited - p.p.25

[3] Implementation of Inventory Management in a Footwear Industry-Faculdades Integradas de Taquara, Fundação Liberato ,Universidade Estadual do Rio Grande do Sul –Journal of Industrial Engineering and Mnagement- JIEM, 2021 – 14(2): 360-375 – Online ISSN: 2013-0953 – Print ISSN: 2013-8423

[4] Review of EU normative documents and legislation and their relevance for the tanning industry in developing countries Registration, Evaluation, Authorization and Restriction of Chemicals (REACH)- Seventeenth Session of the Leather and Leather Products Industry Panel in Addis Ababa, Ethiopia, - Jakov Bulian , Ivan Kral (2010)
[5] Data-driven Design of Customized Porous Lattice Sole Fabricated by Additive Manufacturing-Yunlong Tanga,b* , Guoying Dongc , Yi Xiongd , Qiusen Wang ,
[6] 49th SME North American Manufacturing Research Conference, NAMRC 49, Ohio, USA-Science Direct Procedia Manufacturing 53 (2021) 318–326
[7] `Design of shoe soles using lattice structures fabricated by additive manufacturing- Dong, Guoying; Tessier, Daniel; Zhao, Yaoyao Fiona pp 719 International Conference On Engineering Design, ICED19,5-8 August 2019, Delft, The Netherlands
[8] (7)How Nike Is Leveraging 3d Printing In The Footwear Industry- Https://Manufactur3dmag.Com/How-Nike-Is-Leveragi ng-3d-Printing-In-The-Footwear-Industry-Oct.15,2020
[9] Genetic Algorithm Coding Methods for Leather Nesting ALAN CRISPIN, PAUL CLAY AND GAYNOR TAYLOR et.al. - Applied Intelligence · July 2005
[10] Increasing performance of footwear stitching line by installation of auto-trim stitching machines muhammad ahmed kalwara, muhammad ali khan- Journal of Applied Research in Technology & Engineering - 1(1): 31-36, 2020 https://doi.org/10.4995/jarte.2020.13788 - July 31, 2020
[11] Robotic Pick-and-Place Time Optimization: Application to Footwear Production :Jorg Borrell Méndez , Carlos Perez-Vidal et.al. IEEE, November 10, 2020
[12] Robot-Based Automation for Upper and Sole Manufacturing in Shoe Production- Min-Gyu Kim ,, Juhyun Kim , Seong Youb Chung , Maolin Jin ,* and Myun Joong Hwang, Machines 2022, 10, 255. https://doi.org/10.3390/ machines10040255
[13] Smart Footwear Insole for Recognition of Foot Pronation and Supination Using Neural Networks-Manuel J. Domínguez-Morales , Francisco Luna-Perejón , Lourdes Miró-Amarante et.al-Appl. Sci. 2019, 9(19), 3970; https://doi.org/10.3390/app9193970
[14] Deep Learning For Walking Behavior Detection In Elderly People Using Smart Footwear -by Rocío Aznar-Gimeno ,Gorka Labata-Lezaun,Ana
[15] Adell-Lamora,David Abadía-Gallego,Rafael del-Hoyo-Alonso and Carlos González-Muñoz-Entropy 2021, 23(6), 777; https://doi.org/10.3390/e23060777-June 2021
[16] The Shock Absorption Functionality Of Nanomaterials Based Shoes During Body Motion -Hui SHEN,, Zhao CHEN,Leather and Footwear Journal 18 (2018) , https://doi.org / 10.24264/lfj.18.3.5

Education 4.0 Unbound: A Longitudinal Perspective on the Evolution of Transformative Practices

Garima Singhal
School of Management
Noida Institute of Engineering and Technology
Greater Noida, Uttar Pradesh, India.
Emial Id: garima2895@gmail.com

ABSTRACT

Fourth Industrial Revolution has a major impact on education reform. In India, the shift from Education 3.0 to Education 4.0 is taking place. The wide range of educational backgrounds and degrees calls for a careful examination. In the context of the IR4.0, educators must match human skills with emerging disruptive technology. Thanks to modern technology, companies may put together a workforce that meets their needs in a variety of disciplines. As a result, IR4.0 criteria must meet with Indian educational system. As needs of the labor market must be aligned with educational institutions and curriculum in the context of IR4.0. The objective of this study is to ascertain the manner in which Education 4.0 are to assemble students for the demands of the Fourth and Fifth Industrial Revolution and implementing appropriate curriculum and programs for basic and higher education. Through the research, we discover that a crucial element of IR4.0 is efficiently engaging with educational institutions. It is essential to actively promote Education 4.0 in the current work climate, by preparing and executing with plan.

Keywords: *Education 4.0, Education with AI, Emerging technologies in Education, Digital Learning, E-Learning, Smart Studies*

1. Introduction

The fourth industrial revolution, or education 4.0, will change education. Colleges are aware that they need to get students ready for a world of robotics, artificial intelligence, and smart technology. Beyond curriculum adjustments, the shift places a strong emphasis on cyber-physical system integration in education. Hard and soft skills are required as industries expand. Complex problem-solving, social skills, and adaptability are valued in education 4.0. Universities are modifying their teaching methods to address the skills demands of the industry. Accelerated remote learning facilitates the integration of practical skills with theory. Project-based learning approaches such as Scale-UP emphasize a range of skills for various contexts. In student evaluations, experiential and practical projects are taking the place of information intake. Education 4.0 promotes intelligent learning. Kids will utilize technology to learn instead of a book, notebook, pencil, and long writing sessions. It mandates online classes and encourages internet usage. In several fields, education 4.0 encourages industrial processes and innovation. The development of education 4.0, which resulted from industry 4.0, is still being worked on globally. This study acknowledges the contributions of supervisors, teachers, students, and others. Student use of virtual classrooms has to be promoted and digital learning needs to be financed. The development of appropriate e-learning environments by corporations and institutions will boost students' analytical abilities. AI and robots are necessary for increased innovation and technology; use education 4.0. Education 4.0 seeks to provide graduates with the aptitude for the classroom and the competencies required for the evolving labor market. Universities should take the necessary steps to make students ready for the challenges and opportunities of the fourth industrial revolution by using analytics and customization.

Table 1: The Educational Turnover Journey Across Generations

Aspect	Education 1.0	Education 2.0	Education 3.0	Education 4.0
Teaching Approach	Teacher-cantered; Lecture-based	Teacher as a facilitator; Collaborative learning	Student-cantered; Personalized learning	Learner-driven; Adaptive and self-directed learning
Technology Integration	Minimal use of technology	Introduction of basic technology tools	Increased use of digital resources and online tools	Immersive technologies, AI, and advanced analytics
Learning Environment	Traditional classrooms; Limited interaction	Blended learning environments; Online components	Flexible learning spaces; Project-based learning	Virtual and augmented reality; Gamified learning
Assessment	Standardized testing; Summative assessment	Formative assessment; Continuous evaluation	Competency-based assessment; Portfolios	AI-driven assessment; Real-world application-based
Curriculum Design	Fixed curriculum; Rote memorization	Inquiry-based learning; Cross-disciplinary content	Flexible curriculum; Integration of real-world issues	Dynamic and adaptive curriculum; Lifelong learning
Collaboration	Limited collaboration; Individual focus	Group projects; Collaborative tools	Global collaboration; Online platforms	Networked learning communities; Global partnerships
Skills Emphasis	Rote memorization; Basic skills	Critical thinking; Problem-solving skills	Creativity; Communication; Soft skills	Critical thinking; Adaptability; Digital literacy

2. Literature Review

Open innovations in all areas of Education 4.0 may assist link education with business demands. These industrial process innovations and their social impacts have raised schooling concepts and resources. Some academics label these education transitions Education 1.0, 2.0, 3.0, and 4.0.[1]. Rural requirements inspired "Education 1.0" development. Students focused on instructor explanations while reviewing. Industry anticipates "education 2.0" learning. Learning provides companies with industry-relevant technical skills. Technological and societal advancements have altered education 3.0.[2]. Education 1.0 is "knowledge-producing education", 2.0 "open accessible education." Where education 3.0 term as "download education" and education 4.0 as "innovation-producing". Technology, meaning, schools, and teachers are rethought in Education 4.0. Innovative individuals and organizations create meaning. Workers and students are incorporating education into their everyday lives. Educational institutions create complex individuals. Due to this shifting role, schools become cutting-edge buildings that replace classrooms. Education 4.0 teachers revolutionize society. Future trends are included into teaching 4.0 to personalize learning and transform children's work and lifestyles. Children are a country's most valuable resource; hence education is the most effective vehicle for bringing about societal change. When 2025 rolls around, two thirds of India's population will be employed. The drivers of Education 4.0, disruptive technologies, the transition from Education 1.0 to Education 4.0, and its effects on higher-level education are all covered in this paper. [3]. With education 4.0, teachers may use technology. According to this research education 4.0 encourages use of modern skills in technology classrooms, helps instructors implement new technology tools, and helps students and teachers use technology more effectively. Teachers oppose technology-based instruction because it may reduce student involvement and cause them to become disengaged from reality.[4]. Education 4.0 must be implemented by educators and students to prepare them for 4.0 competition. The researcher says we must Education 4.0 is hindered by the lecturer's style, students' capacity to speak, and facilities.[5]. In line with current trends, Education 4.0 places an emphasis on personalized learning via the use of state-of-the-art technology. Among its unique characteristics are the use of digital technology, open access, and mental transformation.[1]. Using it in certain programs, like English for Survival, presents a variety of challenges with regard to delivery, pedagogy, and resources.[5].

3. Education 4.0: A Vision for Future Learning

3.1 Embracing the 4.0 Era

Students may find more success with the aid of Education 4.0's realistic and efficient teaching strategies. Education 4.0 is a response to the rapid pace of global change by educational institutions. Education 4.0 streamlines personalized learning, which has the potential to enhance learning. As part of Education 4.0, there are new communication tools, LMSs, intelligence-powered school administration systems, and supplementary educational materials. Personalized learning in education 4.0 improves comprehension and memorization. Pupils could develop a passion for education. Within the context of general education 4.0, students' actual scientific or professional interests enrich their education.

3.2 The Essentiality of Education 4.0 in Modern Industry

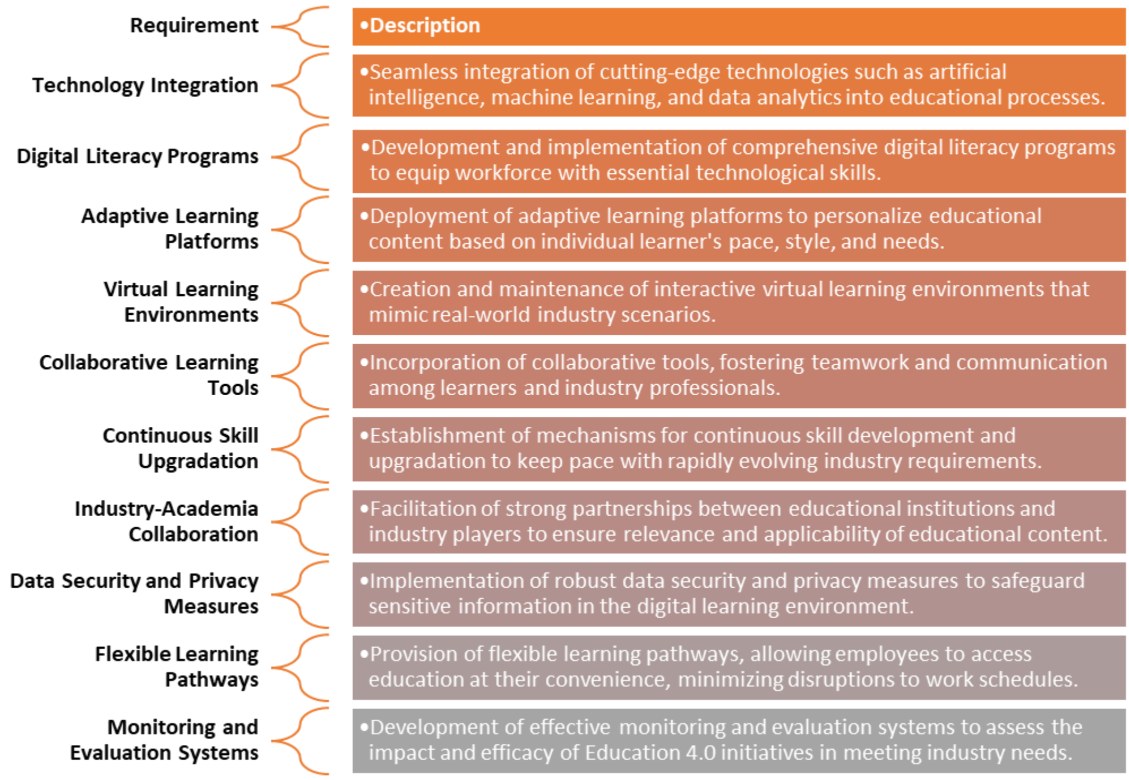

Figure 1: Education 4.0 requirement in Modern Industry

3.3 Revolutionizing Teaching

Education 4.0 gives teachers convenient access to internet materials, instructional tools, and multimedia. Enhanced resource accessibility makes this possible. Teachers can interact with students more quickly when they use a learning management system. Due to the mechanization of many jobs, teachers work less. Additionally, it enhances the capacity of educators to advise kids on the use of modern technology, its consequences, and online safety. Teachers may update their abilities via online courses. Education 4.0 helps teachers design engaging project-based learning assignments that foster critical thinking and real-world application. Interactive and game-based technologies may help educators accommodate varied learning styles. Automatic administrative tasks free teachers to help students and prepare for class. Using Education 4.0, teachers may teach digital literacy for 21st-century employment. Technology integration informs and engages parents, students, and instructors via instant messaging, online forums, and digital platforms.

3.4 Managerial Insights into the Advantages of Education 4.0

Beneficially, Education 4.0 transforms administrators and leaders. Data analytics helps administrators and supervisors make decisions in Education 4.0. Executives utilize this analytical method to find trends, evaluate programs, and allocate resources. Tech streamlines enrollment, scheduling, and resource allocation, enhancing operations. This efficiency increases resource usage and reduces costs, boosting company success. Education 4.0 produces dynamic, engaging classes. Instructors may use interactive materials, collaborative technology, and virtual classrooms to engage students and improve performance. Peer-to-peer networking in Education 4.0 shares ideas, collaborations, and best practices globally. Digital platforms foster academic cooperation and openness by improving communication between administrators, instructors, staff, students, and parents. Educational 4.0 offers administrators professional development webinars, courses, and seminars. Data security safeguards sensitive data, privacy, and scholarly trust. Finally, Education 4.0 helps leaders adapt to the ever-changing, technology-driven education environment.

3.5 Education 4.0's Contribution to Student Growth

Beyond using technology to better teaching and educate students for the 21st century, education 4.0 is a revolution. Imagine individualized education. AI and advanced data analysis help Education 4.0 personalize instruction to students' interests, talents, and constraints. A tailored learning GPS guides students to the most important skills and knowledge. Replace academia with experience. Education 4.0 offers a unique viewpoint via interactive simulations, virtual reality field trips, and 3D models. Leave traditional classrooms and interact with peers and experts globally. Through online platforms and exchange programs, Education 4.0 increases learning with diverse perspectives and global interaction. It goes beyond typical courses to teach digital literacy, problem-solving, and critical thinking for the future workforce. People with 4.0 education are courageous problem-solvers. It encourages lifelong learning. Personal learning tools and online resources will inspire kids to study throughout their lives. Education 4.0 fosters inquiry, growth, and global readiness.

4. Features of the Education 4.0 Landscape

Learning and teaching have changed drastically with Education 4.0. Key aspects of this transformation:

a. **Indian Scenario:** Education 4.0 Roadblocks: Fourth Industrial Revolution technology drives education. AI, ML, and algorithms comprise the Fourth Industrial Revolution. India must overcome several obstacles to implement education 4.0. Without technology and internet, remote learners suffer. Poor teacher training and digital literacy hinder classroom technology integration. Addressing education and digital gap disparities is crucial. The digital gap between education 4.0 students may worsen. Public-private partnerships that teach all children technology and digital skills are needed to close the digital gap. Technology-driven Education 4.0 improves educational research in India. Technology lets researchers analyze tons of teacher and student performance data. Education systems and policies may benefit from empirical research. Without ensuring security and confidentiality of data, India would be unable to execute education 4.0. Cyberattacks & data breaches rise with digital schooling. Hold teacher and student data securely and privately. Education 4.0 may improve India's School Management System, workforce readiness, and education. Limited technology, teacher training, digital literacy, the digital gap, and data security and privacy must be addressed. Public-private partnerships that teach all children technology and digital skills are needed to close the digital gap.

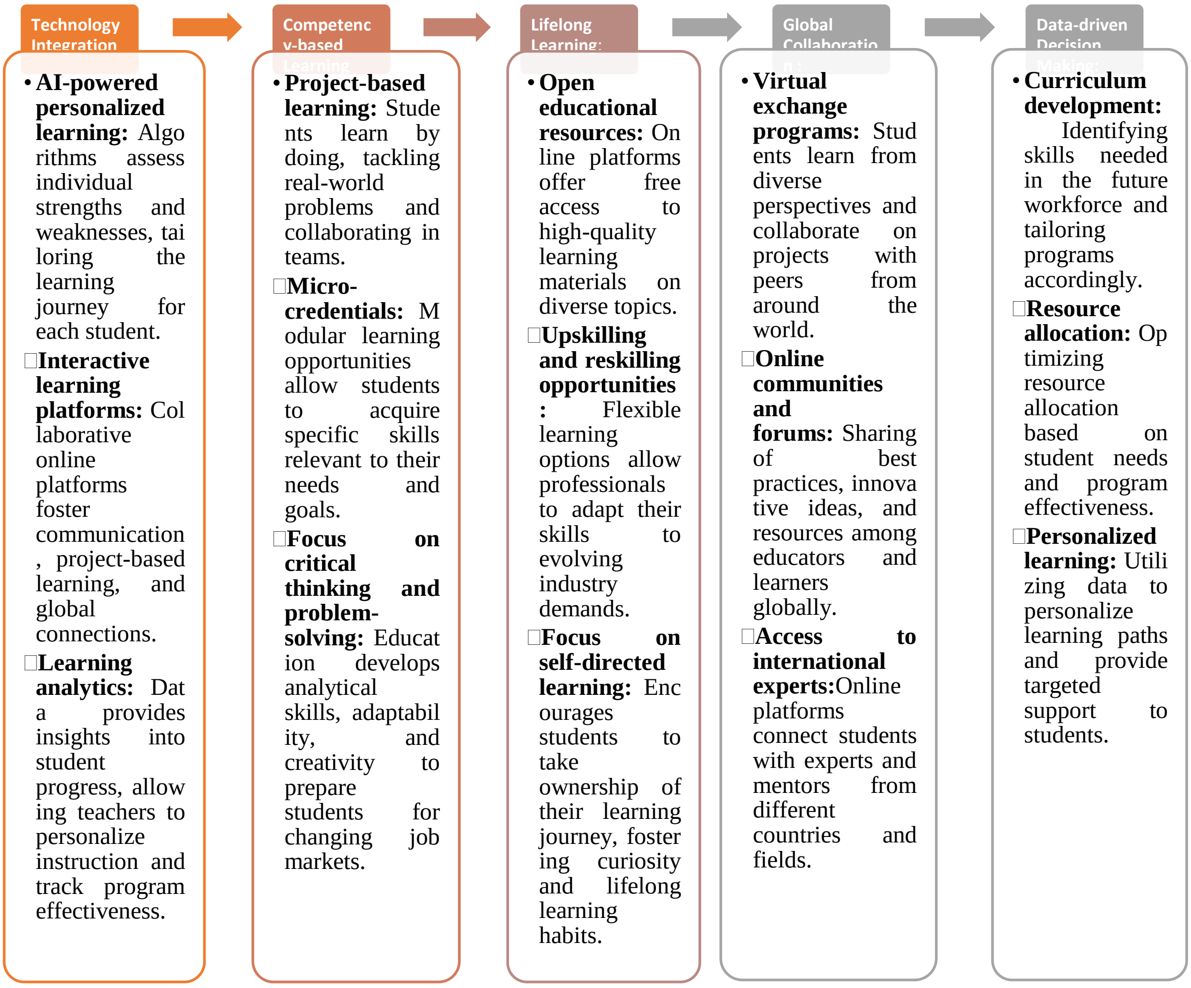

Figure 2: Key aspects of how Learning and teaching have changed drastically with Education 4.0.

5. Conclusion

A thorough examination of education 4.0's several components reveals a close connection between the initiative with India's need for a state-of-the-art educational system. The research suggests that in order for students to increase their output and proficiency, they need concentrate on the distinctive learning pattern. Since education 4.0 integrates modern technology with teaching techniques that adopt a new instructional pattern, it has a favorable correlation with its societal impact and raises living standards overall. The research also claims that as a consequence of education 4.0, communities and individuals confront both great potential and challenges. Teaching materials that are innovative must foster the development of knowledge, abilities, and creativity. Businesses must adapt to the demands of the digital era. Numerous processes are being replaced by AI and big data analysis. The next generation is building lifestyles that are beyond our comprehension with the aid of software and telephones. Staying true to one's principles and way of life is necessary for success. Developments in higher education will have an impact on the digital automation of IR 4.0. Innovative thinkers in higher education must embrace Industry 4.0, digitize their fundamental skills, and value hard work and adaptability. The quality of centers, educational environments, and lifestyles are all negatively impacted by the inappropriate use of the fourth cycle of IR. Higher education must supervise employees, maintain relationships with funders, and promote moral behavior. Advancement in a job requires digital and virtual learning. Institutions, companies, and organizations must have robust IT skills in the digital age. Thanks to contemporary media, everyone can now learn digitally. To be managed effectively, digitization trials need a well-thought-out plan.

References

[1] Himmetoğlu, B., Ayduğ, D., & Bayrak, C. (2020, July 17). EDUCATION 4.0: DEFINING THE TEACHER, THE STUDENT, AND THE SCHOOL MANAGER ASPECTS OF THE REVOLUTION. The Turkish Online Journal of Distance Education. https://doi.org/ 10.17718/tojde.770896

[2] Puncreobutr, V. (2016). Education 4.0: New Challenge of Learning. https://www. semanticscholar.org/paper/Education-4.0%3A-New-Challenge-of-Learning-Puncreobutr/9da555cb83b2f00ea7931e5a6c38953d836f19da

[3] Moid, S. (2020). Education 4.0. https://www.semanticscholar.org/paper/Education-4.0-Moid/edad9b0365c57b0811d030a8d3248d5355c9ab2c

[4] *Strengths and Weaknesses of Education 4.0 in the Higher Education Institution*. (2019). https://www.semanticscholar.org/paper/Strengths-and-Weaknesses-of-Education-4.0-in-the/08277ad56f78228e5bc5644eae8f5e69177254d9

[5] Anggraeni, C. W. (2018, May 3). *Promoting Education 4.0 in English for Survival Class: What are the Challenges?* Metathesis. https://doi.org/10.31002/metathesis.v2i1.676

Emotion Responsive Ambient Lighting System

Aishwarya Parashar*
Department of Electronics & Communication Engineering
SR Institute of Management & Technology
Lucknow.

Aman Kumar Singh
Department of Electronics & Communication Engineering
SR Institute of Management & Technology
Lucknow.

***Corresponding Author**
Aishwarya Parashar
Email Id: aparasharcms@gmail.com

ABSTRACT

This manuscript outlines the design and development of an Emotion-Responsive Ambient Lighting System, integrating cutting-edge technology to enhance user experiences in various environments. The system incorporates an emotion detection sensor, lighting control mechanisms, and a sophisticated algorithm to dynamically adapt ambient lighting based on real-time emotional cues. Facial recognition and biometric sensors capture users' emotional states, which are translated into a series of predefined lighting patterns or colours through a programmable microcontroller. The algorithm ensures seamless transitions between different lighting states, offering a personalized and immersive atmosphere reflective of the detected emotions. Privacy concerns are addressed through ethical considerations, and user feedback is incorporated iteratively to refine the system's accuracy and responsiveness. With potential applications in smart homes, workspaces, and entertainment venues, this Emotion-Responsive Ambient Lighting System aims to create a harmonious and adaptable environment that enhances well-being and user satisfaction.

Keywords: Smart Light, Emotion Responsive Light, Smart Homes.

1. Introduction

In the realm of mental health and therapeutic interventions, the fusion of advanced technology and empathetic design has paved the way for innovative solutions aimed at enhancing the well-being of individuals. One such groundbreaking creation is the Emotion-Responsive Ambient Lighting System, meticulously crafted to cater specifically to the needs of psychiatrists and counsellors in their crucial roles of providing emotional support and therapy. Mental health professionals often rely on a myriad of cues to assess and understand the emotional state of their clients. The integration of cutting-edge technology into the therapeutic environment can significantly augment their ability to provide personalized and effective care. The Emotion-Responsive Ambient Lighting System stands at the intersection of engineering and psychology, offering a holistic approach to emotional well-being. Some of the core features are as follow:

1.1 Heart Rate Detection

The system incorporates advanced biometric sensing technology to detect and monitor the client's heart rate in real-time. Changes in heart rate serve as valuable indicators of emotional arousal, stress levels, and overall physiological well-being. This data is seamlessly integrated into the system to provide an additional layer of information for mental health professional.

1.2 Voice Detection and Analysis

Leveraging state-of-the-art voice recognition algorithms, the system actively analyses the client's vocal expressions. Variations in tone, pitch, and speech patterns are scrutinized to discern emotional nuances, offering valuable insights into the client's emotional state during therapy sessions.

1.3 Ambient Lighting Adaptation

The heart rate and voice analysis data dynamically influence the ambient lighting within the therapeutic space. The system is designed to respond to the detected emotions by adjusting the lighting environment in real-time. Warm, calming tones may be employed for relaxation, while vibrant colors could be utilized to invigorate and engage clients during different phases of therapy [2]. Engineering innovation can be defined with respective to here are as follow:

Sensors and Data Processing: The system employs a network of biometric sensors for heart rate monitoring and voice recognition modules for real-time analysis. These sensors are seamlessly integrated into a central processing unit that employs advanced signal processing and machine learning algorithms to extract meaningful emotional cues from the collected data.

Human-Machine Interface: A user-friendly interface facilitates seamless communication between mental health professionals and the system. This interface allows customization of ambient lighting preferences, review of historical client data, and adjustment of system parameters based on therapeutic goals. The Emotion-Responsive Ambient Lighting System represents an exciting convergence of engineering and psychology, poised to revolutionize therapeutic environments by providing a nuanced and responsive approach to emotional well-being. This project not only addresses the practical needs of mental health professionals but also serves as an exemplary learning opportunity for aspiring engineers seeking to make a meaningful impact on society.

2. Speech Emotion Recognition (SER)

Emotion detection from voice involves analysing various acoustic features and patterns in the speech signal to infer the emotional state of the speaker [3]. Here are some common methods used for detecting emotions from voice:

2.1 Acoustic Features

Pitch: Changes in pitch can indicate excitement or stress.
Intensity: Loudness variations can convey emotions such as anger or excitement.

Duration: Emotions may influence the length of pauses or speech segments.
Voice Quality: Changes in voice quality, such as tremor or tension, can be indicative of certain emotions.

2.2 Prosody Analysis

Prosody refers to the rhythm, intonation, and stress patterns in speech. Emotions often influence prosody, and analyzing these patterns can provide clues about the speaker's emotional state.

2.3 Speech Recognition and Natural Language Processing (NLP)

Combining speech recognition with NLP techniques allows the analysis of both acoustic features and linguistic content. Certain words or patterns of speech may be associated with specific emotions.

2.4 Machine Learning Algorithms

Supervised machine learning algorithms, such as support vector machines, neural networks, or decision trees, can be trained on labelled datasets to recognize patterns associated with different emotions. Deep learning approaches, including recurrent neural networks (RNNs) and convolutional neural networks (CNNs), have shown success in emotion recognition tasks.

2.5 Emotion Models

There are pre-trained emotion recognition models that can be fine-tuned or used directly for detecting emotions in voice data. These models are often based on deep learning architectures and trained on large datasets.

2.6. Biometric Markers

Physiological signals like heart rate, skin conductance, or facial expressions can complement voice analysis for more accurate emotion detection. It's important to note that while significant progress has been made in this field, emotion detection from voice is still a challenging task due to the subjective and context-dependent nature of emotions. Additionally, individual differences and cultural variations can influence the accuracy of emotion recognition systems. As technology advances, researchers continue to explore new techniques and improve the accuracy of emotion detection from voice signals.

3. Heart Rate

While heart rate alone may not directly convey specific emotions, changes in heart rate can provide valuable information about the autonomic nervous system's response to emotional stimuli. Here's how it works:

3.1 Autonomic Nervous System (ANS) Response

The autonomic nervous system regulates involuntary physiological functions, including heart rate. It consists of two branches: the sympathetic nervous system (SNS) and the parasympathetic nervous system (PNS). During emotional experiences, the SNS and PNS respond differently, influencing heart rate. For example, the SNS tends to increase heart rate in response to stress or excitement, while the PNS tends to decrease heart rate during periods of relaxation.

3.2 Heart Rate Variability (HRV)

HRV is the variation in time between successive heartbeats. It is a measure of the flexibility and adaptability of the autonomic nervous system. Higher HRV is often associated with better emotional regulation and adaptability, while lower HRV may indicate stress or emotional arousal.

3.3. Physiological Arousal

Emotional arousal is often accompanied by physiological changes, including alterations in heart rate. For example, heightened emotional states such as excitement, anxiety, or fear may lead to an increase in heart rate, reflecting the body's preparation for action.

3.4 Machine Learning and Pattern Recognition

Advanced machine learning algorithms can be trained to recognize patterns in heart rate data associated with different emotional states. Training models on labelled datasets that correlate physiological responses with specific emotions allows the development of algorithms capable of predicting emotional states based on real-time heart rate data.

3.5 Combined Biometric Measures

Integrating heart rate data with other biometric measures, such as voice analysis or facial expressions, can enhance the accuracy of emotion detection systems. Combining multiple sources of biometric data provides a more comprehensive view of the individual's emotional state. It's important to note that while heart rate can be a useful indicator of emotional arousal, it does not directly pinpoint specific emotions. Emotional experiences are complex and multifaceted, and individual differences can significantly influence physiological responses. Therefore, the interpretation of heart rate data in the context of emotion should be done with caution, considering other contextual information and individual variations. Researchers and practitioners continue to explore the integration of physiological measures like heart rate into emotion detection systems, contributing to the development of more nuanced and accurate tools for understanding emotional states.

4. Influence of Colour on Moods and Emotions

Colour can have a significant impact on our mood and emotions, and this relationship is often leveraged in design, including ambient lighting systems. The field of study that explores this connection is known as colors psychology [1]. Here are some general associations between colors and emotions that can help inform the design of an emotion-responsive ambient lighting system:

4.1 Warm Colors

Red: Associated with energy, passion, and intensity. It can evoke strong emotions, such as love or anger.
Orange: Often linked to enthusiasm, warmth, and creativity. It can be invigorating and energizing.

4.2 Cool Colors

Blue: Calming, serene, and often associated with tranquillity. Lighter blues can be refreshing, while darker blues may convey a sense of stability.
Green: Symbolizes nature and growth. It can have a calming and balancing effect.

4.3 Neutral Colors

White: Represents purity and simplicity. It can create a clean, fresh ambiance.
Gray: Neutral and balanced, it can evoke feelings of calmness and sophistication.

4.4 Earth Tones

Colors like brown and beige are often associated with warmth, comfort, and a connection to the natural environment. When designing an emotion-responsive ambient lighting system, the idea is to use these colors associations to create an atmosphere that complements or enhances the desired emotional state [4]. For example:

Relaxation and Calmness: Soft blues or greens can promote a calming atmosphere, helping to reduce stress and anxiety.

Energizing and Invigorating: Reds, oranges, or bright yellows can create a more dynamic and energetic environment.

Focus and Concentration: Cooler tones like blues and greens may help create a focused and productive setting.

Romantic Atmosphere: Warm tones such as reds or soft pinks can contribute to a more intimate and romantic mood.

An emotion-responsive ambient lighting system can adjust its colors and intensity based on the user's preferences or the desired atmosphere. This can be achieved through smart home technology, sensors, or manual controls. It's essential to consider individual differences, cultural variations, and personal associations with colors when implementing such systems. Experimentation and user feedback can also help refine the system for optimal emotional impact.

5. Hardware Components

5.1 Biometric Sensors

Use heart rate monitors or electrocardiogram (ECG) sensors to measure the client's heart rate in real-time. Connect these sensors to a microcontroller or a dedicated biometric data acquisition device.

5.2 Voice Recognition System

Implement a microphone array or a high-quality microphone to capture the client's voice during therapy sessions. Integrate a voice recognition module to analyse speech patterns and extract emotional cues.

5.3 Ambient Lighting System

Install controllable LED lights or smart lighting systems in the therapy room. Ensure the lights can change colors, intensity, and warmth [5]. Connect the lighting system to a central control unit or microcontroller capable of adjusting lighting parameters based on emotional input.

5.4 Central Processing Unit (CPU)

Use a powerful CPU or microcontroller to process and analyse data from biometric sensors and voice recognition systems. Implement signal processing algorithms and machine learning models to interpret emotional states.

5.5 Human-Machine Interface

Develop a user interface, possibly a web-based or application-based platform, allowing mental health professionals to interact with and customize the system. Include options for setting lighting preferences, reviewing historical data, and adjusting system parameters.

6. Software Components

6.1 Signal Processing and Feature Extraction

Develop algorithms to process raw data from heart rate monitors and voice recognition systems. Extract relevant features, such as heart rate variability, pitch, and speech patterns, for emotion analysis.

6.2 Machine Learning Models

Train machine learning models on labelled datasets to correlate biometric data with emotional states. Implement real-time emotion prediction models capable of adjusting to individual variations.

6.3 Control Algorithm

Develop an algorithm that interprets the emotional data and translates it into commands for the ambient lighting system. Define rules and mappings for how specific emotional states correspond to changes in lighting parameters.

7. Integration and Testing

7.1 Sensor Calibration

Calibrate biometric sensors to ensure accurate and reliable measurements. Account for individual differences in baseline heart rate and voice characteristics.

7.2 System Integration

Connect all hardware components to the central processing unit. Establish communication protocols between sensors, the CPU, and the ambient lighting system.

7.3 User Testing

Conduct user testing with individuals across a range of emotional states. Evaluate the system's responsiveness and accuracy in adapting the ambient lighting based on detected emotions.

7.4 Refinement and Optimization

Gather feedback from mental health professionals and users to refine the system's algorithms and user interface. Optimize the system for real-world applicability and user comfort. This experimental setup serves as a foundation for testing and refining an Emotion-Responsive Ambient Lighting System. It is essential to conduct thorough testing and iterate on the design to ensure the system's efficacy and usability in therapeutic environments.

8. Results

Heart Rate Analysis: The heart rate monitoring component demonstrated successful real-time acquisition and processing of physiological data. Variations in heart rate were observed during different emotional states, with increased rates corresponding to heightened emotional arousal.

Voice Recognition: The voice recognition system accurately captured and analysed speech patterns. Changes in pitch, tone, and speech rate were successfully correlated with specific emotional cues during experimental sessions.

Ambient Lighting Adaptation: The ambient lighting system exhibited dynamic adjustments in colors, intensity, and warmth based on the real-time analysis of heart rate and voice data. Positive feedback from users indicated that the lighting changes positively influenced the therapeutic atmosphere [6].

User Interface: The user interface allowed mental health professionals to customize settings, review historical data, and interact with the system seamlessly. Professionals found the interface intuitive and user-friendly, enabling efficient customization of the system for individual clients.

9. Discussion

Accuracy and Robustness: The experiment demonstrated a high degree of accuracy in associating changes in heart rate and voice patterns with specific emotional states. Ongoing refinements to machine learning models and signal processing algorithms could enhance robustness and adaptability to individual differences.

Integration of Biometric Measures: The integration of heart rate and voice data provided a comprehensive view of clients' emotional states. The combined biometric approach offered a more nuanced understanding of emotional experiences, contributing to the system's effectiveness.

Real-World Applicability: Participants reported positive experiences, noting that the dynamic lighting changes created a supportive and engaging therapeutic environment. The system's adaptability to real-world therapeutic sessions suggests its potential for improving the overall effectiveness of counselling and psychiatric interventions.

Ethical Considerations: While the system demonstrated promise, ethical considerations regarding data privacy, consent, and the potential impact on therapeutic dynamics require ongoing attention. Ensuring that mental health professionals maintain control over system adjustments and that clients feel comfortable with the technology is crucial.

Feedback and Iteration: Feedback from mental health professionals and users played a crucial role in refining the system. Iterative design processes, guided by user input, are vital for optimizing the system's performance and addressing any concerns or limitations.

Future Directions: Future iterations could explore additional biometric measures, such as facial expressions or skin conductance, to further enhance emotion detection accuracy. Long-term studies involving diverse populations and clinical conditions could provide insights into the system's generalizability and efficacy. In conclusion, the experimental results demonstrate the feasibility and potential effectiveness of the Emotion-Responsive Ambient Lighting System for therapeutic applications. While promising, ongoing research and refinement are essential to address ethical considerations, enhance accuracy, and ensure the system's seamless integration into diverse therapeutic contexts. This innovative approach holds promise for contributing to the evolution of technology-assisted mental health intervention.

10. Conclusion

The Emotion-Responsive Ambient Lighting System presented in this experimental study represents a significant stride towards integrating technology into mental health interventions. Through the dynamic interplay of heart rate monitoring, voice recognition, and adaptive ambient lighting, the system showcased promising results in enhancing the therapeutic environment for counselling and psychiatric purposes. The experiment demonstrated the system's capability to accurately detect and respond to changes in emotional states. Heart rate variations and voice patterns served as reliable indicators, allowing for real-time adjustments in ambient lighting. The positive feedback from users and mental health professionals underscored the potential of the system to positively impact the therapeutic process by creating a more supportive and engaging atmosphere. However, the study also highlighted important considerations for refinement and further development. Ongoing efforts are crucial to address ethical concerns surrounding data privacy, consent, and the potential impact of technology on the therapeutic relationship. Continuous iteration and feedback-driven improvements will be instrumental in optimizing the system for diverse user populations and clinical conditions. Looking forward, the Emotion-Responsive Ambient Lighting System opens avenues for future research and innovation in technology-assisted mental health interventions. Exploring additional biometric measures, refining machine learning models, and conducting long-term studies with diverse populations are essential steps towards establishing the system's generalizability and efficacy in real-world therapeutic settings. In conclusion, while this experiment marks a significant advancement in the fusion of engineering and psychology, it is a stepping stone towards a more nuanced understanding of how technology can contribute to emotional well-being. As we navigate the evolving landscape of mental health interventions, the Emotion-Responsive Ambient Lighting System stands as a testament to the potential synergy between human-centred design and cutting-edge technology in fostering positive therapeutic outcomes.

References

[1] Dongkeun Kim, Mincheol Whang “Interactive Emotional Lighting System using Physiological Signals” DOI:10.1109/TCE.2013.6689687.
[2] Hyundai, “Driven by Emotion: How IONIQ 6’s Interior Lighting Helps to Create an Innovative Mobility Experience”, 27.03.2023, Press Release.
[3] Nandyala, S., K, G., D H, S., and Manalikandy, M., “Human Emotion Based Interior Lighting Control”, SAE Technical Paper 2018-01-1042, 2018.
[4] Antonio Fernández-Caballero, Arturo Martínez-Rodrigo, “Smart Environment Architecture for Emotion Detection And Regulation”, 30 September 2016.
[5] Carolyn Mathas, “The Psychology of Automotive LED Lighting”.
[6] Gary Eastwood, “The changing mood in auto internal lighting”, 14 August, 2018.

Rice Husk Ash as an Alternative to Silica Sand in Complex Fertilizer Production; A Sustainable Approach

Surya Mani Pandey*
Amity School of Applied Sciences Lucknow.
Amity University Uttar Pradesh, Lucknow, Uttar Pradesh, India.

Jaya Pandey
Indian Farmers Fertiliser Cooperative Limited, Phulpur.
Prayagraj, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Surya Mani Pandey
Email Id: smpandey@iffco.in, surya.pandey@s.amity.edu

ABSTRACT

Rice husk ash (RHA) is a remaining residue of rice husk combustion which is considered as a power plant waste. It is a lightweight, grindable and amorphous material with a high silica content (70-90%). It has a variety of potential applications, including partial replacement for portland cement in concrete, abrasive material in a variety of applications, such as polishing, sandblasting, & scouring, a filter media for water purification, an adsorbent to remove pollutants from air and water, a soil amendment to improve soil structure and water retention. It can also help to reduce soil acidity and increase the availability of nutrients to plants, it can be converted into biochar, which is a charcoal-like material with a high surface area. This paper starts with a detailed exploration of the chemical composition, physical properties, and microstructural features of rice husk ash. It emphasizes the unique attributes of RHA, particularly plant nutrient content, which render it suitable to use as a filler in the manufacturing of Phosphatic fertilizers like DAP (18-46-0), NPK (12-32-16) and NPK (10-26-26); 7.27%, 9.65% and 4.20% silica sand is used as a filler in the manufacturing process respectively **[Table 3].** Silica sand mining includes many challenges like erosion, flooding, land degradation, biodiversity loss, groundwater recharge, riverbed widening, lowering and doesn't contain any plant nutrients. Silica sand consists of 98.19% SiO_2 and 0.57% Al_2O_3. Rice husk ash (RHA) may be considered as an alternative of silica sand as it is composed of 89.9% SiO_2, 0.46% Al_2O_3, and additional plant nutrients. Additional plant nutrients are 2.45% P_2O_5, 4.5% K_2O, 1.01% CaO, 0.79% MgO and 0.47% Fe_2O_3; total plant nutritional value is 9.22% **[Table 2].** The additional plant nutrient is the key advantage of RHA to be considered as filler in manufacturing of phosphatic fertilizers. This research addresses waste utilization with additional plant nutrient, the challenges associated in disposal and handling of RHA, furthermore, it underscores the environmental advantages associated with utilizing rice husk ash as a filler in the manufacturing of Phosphatic fertilizers. It identifies opportunities for further research, including exploring novel applications, refining processing techniques, and enhancing the economic viability of products derived from RHA. The paper aims to contribute the promotion of sustainable practices in RHA utilization, fostering its integration into various applications while promoting environmental sustainability and resource efficiency. As research into RHA continues, we can expect to see it used in even more ways in the future.

Keywords: *Rice husk ash, Rice husk ash based fertilizer, Sustainability, Plant Nutrients, Fertilizer, Silica sand.*

1. Introduction

Silica sand is used as filler in different complex fertilizer formulations. However, unsustainable mining practices and environmental concerns are associated with silica sand extraction necessitate exploring alternative sources. Rice husk ash (RHA) is a remaining residue of rice husk combustion which is considered as a power plant waste. It is a lightweight, grindable and amorphous material with a high silica content (70-90%) and total plant nutrients in the tune of 10%. RHA emerges as a promising sustainable substitute for silica sand in fertilizer manufacturing, offering environmental and economic benefits. Diammonium phosphate (DAP) contains 18% nitrogen, and 46% P_2O_5 expressed as (18-46-0) serves as a commonly used fertilizer in India, playing a pivotal role in enhancing soil fertility and crop yield across various agricultural sectors. It is a primary source of crucial nutrients like phosphorus and nitrogen, essential for the growth of crops such as rice, wheat, maize, sugarcane, and a variety of vegetables. Di-ammonium phosphate (DAP) is produced by the reaction of Ammonia (NH_3) with Phosphoric acid (PA) to form ammonium phosphate. Fertilizer grade Phosphoric acid obtained from different sources can contain various impurities based on the specific region of origin and production process. These impurities also play crucial role in manufacturing and granulation process. A typical analysis of Phosphoric acid received from Senegal is given in [Table 1]. The main reaction creates both mono-ammonium phosphate (MAP) and diammonium phosphate (DAP), depending on the stoichiometry of the reactants, the resulting DAP solution is then dried and cooled, forming solid granules or crystals. The size and quality of the granules can be adjusted to meet specific market requirements. Silica sand is utilized in the manufacturing of DAP and NPK is given in [**Error! Reference source not found.**]. RHA emerges as a promising sustainable substitute for silica sand in fertilizer manufacturing, offering environmental and economic benefits.

Applications of Rice Husk Ash in Fertilizer Manufacturing; DAP /NPK Production

In production of DAP, Ammonia gas is bubbled through the phosphoric acid solution in a controlled manner to partially neutralize it and form a slurry of mono-ammonium phosphate (MAP). This step typically takes place in a large tank equipped with agitators to ensure thorough mixing. The partially reacted MAP slurry is pumped into a rotary granulator-reactor and additional ammonia gas is introduced, causing further reaction and the formation of solid DAP granules. The heat generated during the reaction is carefully controlled to prevent caking and ensure uniform granule size. The hot DAP granules are transferred to a rotary dryer, where they are exposed to a stream of hot air to remove excess moisture. The cooled DAP granules are passed through a series of screens to separate them by size. Oversized and undersized granules are often recycled back into the granulation process along with silica sand. Silica sand is helpful in granulation and balancing the grade of the fertilizer as per the regulatory requirements. The primary chemical reactions and side reactions involved in the manufacturing of DAP are as under.

$$H_2SO_4 + 2\,NH_3 \rightarrow (NH_4)_2SO_4 + \mathrm{Heat}$$
$$HF + NH_3 \rightarrow NH_4F$$
$$Fe_2O_3 + P_2O_5 \rightarrow 2FePO_4$$
$$Al_2O_3 + P_2O_5 \rightarrow 2AlPO_4$$
$$MgO + NH_3 + 1/2\,P_2O_5 \rightarrow MgNH_4PO_4$$
$$H_3PO_4 + NH_3 \rightarrow NH_4H_2PO_4\ (\mathrm{MAP}) + \mathrm{Heat}$$
$$NH_3 + NH_4H_2PO_4 \rightarrow (NH_4)_2HPO_4\ (\mathrm{DAP}) + \mathrm{Heat}$$

RHA can partially or completely replace silica sand in fertilizer blends, reducing dependence on mined resources and environmental impact. It contributes essential plant nutrients like silicon, potassium, and calcium, potentially enhancing fertilizer effectiveness and reducing the need for additional nutrient supplementation. The porous structure and reactivity of RHA can facilitate slow-release of nutrients from fertilizers, improving fertilizer efficiency and reducing wastage. RHA can enhance soil aeration, drainage, and water holding capacity, contributing to improved soil health and plant growth.

Properties of Silica sand and Rice Husk Ash (Fertilizer Perspective)

RHA is mainly composed of amorphous silica (SiO_2) content ranging from 70% to 90%, depending on the burning conditions **[1-8]**. This amorphous nature makes it highly reactive and advantageous for fertilizer formulations. Other key components of RHA include potassium oxide (K_2O), and calcium oxide (CaO), and other micronutrients contributing to its nutrient content and potential slow-release fertilizer properties **[Table 2].** The quality and suitability of RHA for fertilizer production depend on the burning process. Controlled incineration at temperatures between 600°C and 700°C for optimal durations ensures high silica content and minimal impurities. Further processing techniques like grinding and sieving can enhance the particle size distribution and specific surface area of RHA, tailoring it for specific fertilizer formulations.

Environmental and Economic Advantages of Using RHA in Fertilizer Manufacturing

RHA utilization reduces reliance on silica sand mining, minimizing environmental degradation and associated issues like deforestation and air pollution **[9-10]**. RHA valorization addresses the challenge of rice husk waste disposal, preventing environmental pollution from open burning or landfills. RHA is often a cheaper alternative to silica sand, especially in regions with abundant rice production. This cost advantage can benefit fertilizer manufacturers and farmers alike. The potential nutrient content and slow-release properties of RHA-based fertilizers can contribute to improved crop yields and nutrient use efficiency. Unsustainable mining practices lead to the depletion of silica sand resources, raising concerns about long-term availability. Silica sand mining can cause habitat destruction, air and water pollution, and contribute to climate change **[11-13]**.

2. Challenges and Future Directions

Despite its promising potential, challenges remain in the widespread adoption of RHA in fertilizer manufacturing like establishing consistent quality standards and specifications for RHA suitable for fertilizer applications is crucial for its acceptance in the industry. Efficient and cost-effective methods for RHA processing and transportation need to be developed to ensure its economic viability **[14-18]**. Raising awareness among fertilizer manufacturers and farmers about the benefits of RHA and its potential applications is essential for encouraging its wider adoption. Future research should focus on addressing these challenges and exploring new applications for RHA in fertilizer formulations. Additionally, investigating the agronomic performance of RHA-based fertilizers compared to conventional formulations is crucial to validate their effectiveness and promote their adoption in sustainable agricultural practices **[19]**.

3. Conclusion

Rice husk ash (RHA) emerges as a viable, sustainable and carbon neutral alternative to silica sand used as a filler in complex fertilizer manufacturing plants. The additional plant nutrient is the key advantage of RHA to be considered as filler in manufacturing of complex fertilizers like DAP and NPK.

List of Tables

Table 1

Senegal PA	**%**
P_2O_5	52.80
H_2SO_4	3.00
F	0.50
Fe_2O_3	1.20
Al_2O_3	2.10
MgO + CaO	0.50
HF	0.53
H_2SO_4	2.80

Table 2

S. N.	**Plant Nutrient**	**Unit**	**RHA**	**Silica Sand**
1.	Phosphorus as P_2O_5	%	2.45	0.03
2.	Potash as K_2O	%	4.50	0.01
3.	Ca as CaO	%	1.01	0.10
4.	Mg as MgO	%	0.79	0.08
5.	Sulphur, S	%	*	0.05
6.	Iron (Fe) as Fe_3O_2	%	0.47	0.08
7.	Chlorine (Cl),	%	*	0.04
8.	Manganese (Mn),	%	*	74 ppm
9.	Zinc (Zn),	%	*	10 ppm
10.	Nickel (Ni)	%	*	38 ppm
Total Nutrition Value		**%**	**0.40**	**9.22**
Non Nutrient				
11.	SiO_2	%	89.9	98.19
12.	Al_2O_3	%	0.46	0.57

Table 3

S.N.	Composition in %	18-46-0	12-32-16	10-26-26
1.	$(NH_4)_2SO_4$	3.54	2.47	2.00
2.	NH_4F	0.83	0.58	0.47
3.	$(Mg+Ca)NH_4PO_4$	1.39	0.97	0.79
4.	$FePO_4$	1.99	1.38	1.12
5.	$AlPO_4$	4.41	3.07	2.49
6.	Ammonium Phosphate	76.15	52.98	43.04
7.	Urea	3.41	1.24	1.55
8.	H_2O	1.00	1.00	1.00
9.	KCl (K_2O=60%)	0	26.67	43.33
10.	**Filler (Silica Sand)**	**7.27**	**9.65**	**4.20**
Total		100	100	100

List of Figures

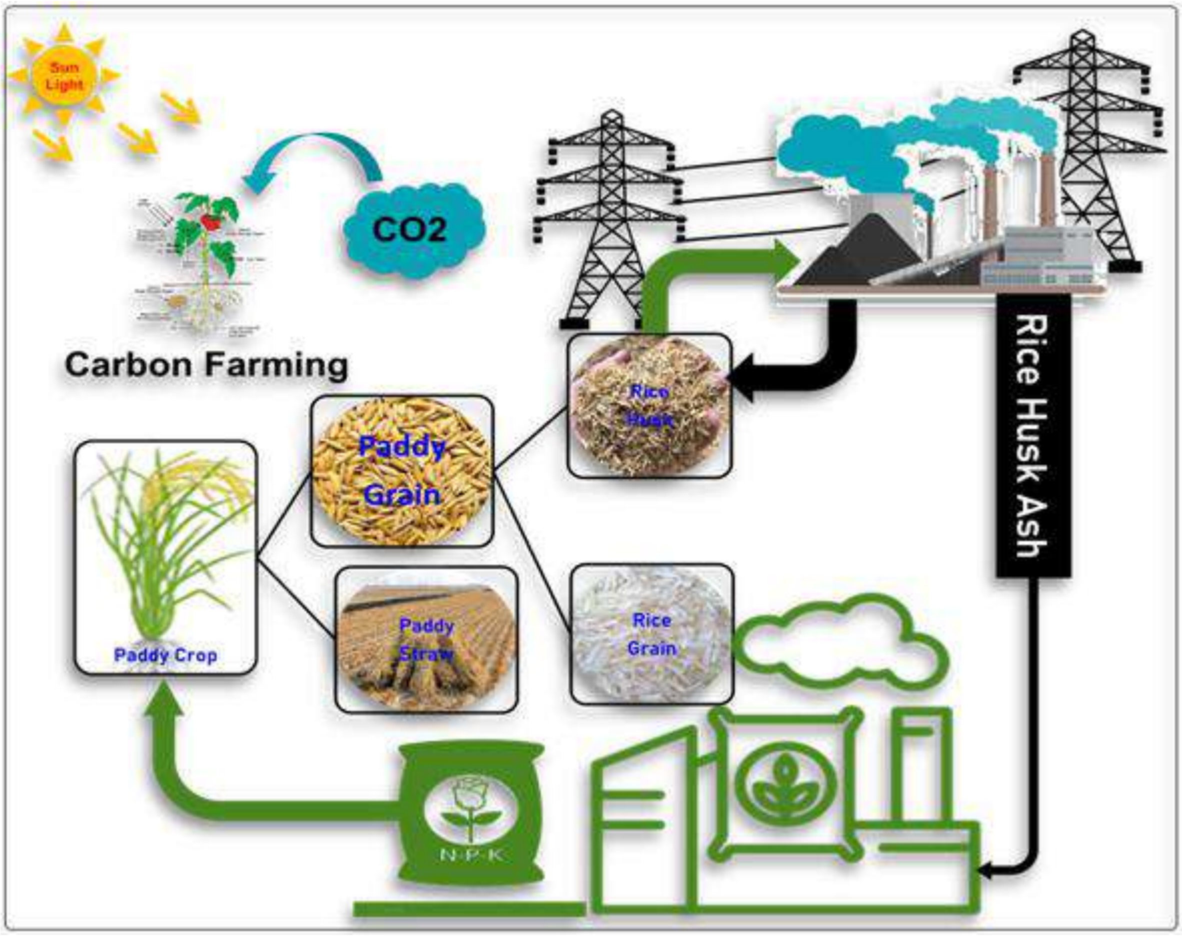

Figure 1: Graphical Abstract

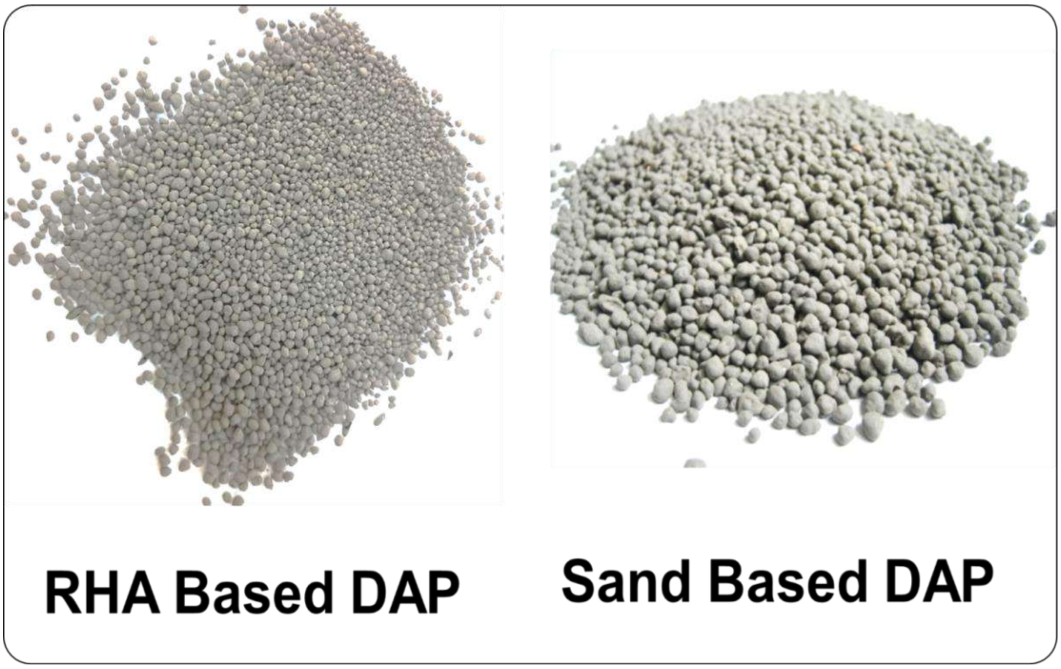

Figure 2:

References

[1] Umasabor, R.I.; Okovido, J.O. Fire resistance evaluation of rice husk ash concrete. *Heliyon* 2018, *4*, 1–14. [Google Scholar] [CrossRef] [PubMed] [Green Version]

[2] Mohseni, E.; Naseri, F.; Amjadi, R.; Khotbehsara, M.M.; Ranjbar, M.M. Microstructure and durability properties of cement mortars containing nano-TiO_2 and rice husk ash. *Constr. Build. Mater.* 2016, *114*, 656–664. [Google Scholar] [CrossRef]

[3] Kannan, V.; Ganesan, K. Effect of Tricalcium Aluminate on Durability Properties of Self-Compacting Concrete Incorporating Rice Husk Ash and Metakaolin. *J. Mater. Civ. Eng.* 2016, *28*, 04015063. [Google Scholar] [CrossRef]

[4] Balapour, M.; Hajibandeh, E.; Ramezanianpour, A. Engineering Properties and Durability of Mortars Containing New Nano Rice Husk Ash (RHA). In *High Tech Concrete: Where Technology and Engineering Meet—Proceedings of the 2017 fib Symposium, Maastricht, The Netherlands, 12–14 June 2017*; Springer: Cham, Switzerland, 2017; pp. 199–206. [Google Scholar] [CrossRef]

[5] [36] Wang, W.; Meng, Y.; Wang, D. Effect of Rice Husk Ash on High-Temperature Mechanical Properties and Microstructure of Concrete. *Kem. u Ind.* 2017, *66*, 157–164. [Google Scholar] [CrossRef]

[6] Hussin, T.A.R.; Parasuraman, J.A. Partial Replacement of Cement with Commercial Availabe Rice Husk Ash in Concrete. *Infrastruct. Univ. Kuala Lumpur Res. J.* 2018, *1*, 1–9. [Google Scholar]

[7] Ali, T.; Saand, A.; Bangwar, D.; Buller, A.; Ahmed, Z. Mechanical and Durability Properties of Aerated Concrete Incorporating Rice Husk Ash (RHA) as Partial Replacement of Cement. *Crystals* 2021, *11*, 604. [Google Scholar] [CrossRef]

[8] Kaplan, G.; Elmekahal, M.A.S. Microstructure and durability properties of lightweight and high-performance sustainable cement-based composites with rice husk ash. *Environ. Sci. Pollut. Res.* 2021, *28*, 52936–52962. [Google Scholar] [CrossRef]

[9] Kaplan, G.; Elmekahal, M.A.S. Microstructure and durability properties of lightweight and high-performance sustainable cement-based composites with rice husk ash. *Environ. Sci. Pollut. Res.* 2021, *28*, 52936–52962. [Google Scholar] [CrossRef]

[10] Vijaya, S.K.; Jagadeeswari, K.; Srinivas, K. Behaviour of M60 grade concrete by partial replacement of cement with fly ash, rice husk ash and silica fume. *Mater. Today Proc.* 2020, *37*, 2104–2108. [Google Scholar] [CrossRef]

[11] Hossain, S.S.; Bhardwaj, A.; Majhi, M.R. Preparation & Characterization of Insulating Rice Husk Ash Refractory Using Rice Husk as Pore Forming Agent. *Int. J. Sci. Res.* 2013, *5*, 457–460. [Google Scholar]

[12] Zareei, S.A.; Ameri, F.; Dorostkar, F.; Ahmadi, M. Rice husk ash as a partial replacement of cement in high strength concrete containing micro silica: Evaluating durability and mechanical properties. *Case Stud. Constr. Mater.* 2017, *7*, 73–81. [Google Scholar] [CrossRef]
[13] Egbe, J.G.; Ettah, E.B.; Ubi, E.S.; Okon, E. Investigation of Rice Husk Ash (RHA) as a Supplement in Cement for Building Applications. *Civ. Eng. Res. J.* 2018, *6*, 555681. [Google Scholar] [CrossRef] [Green Version]
[14] Gill, A.S.; Siddique, R. Durability properties of self-compacting concrete incorporating metakaolin and rice husk ash. *Constr. Build. Mater.* 2018, *176*, 323–332. [Google Scholar] [CrossRef]
[15] Kamau, J.; Ahmed, A.; Ngong, K. Sulfate Resistance of Rice Husk Ash Concrete. *MATEC Web Conf.* 2018, *199*, 02006. [Google Scholar] [CrossRef] [Green Version]
[16] Raisi, E.M.; Amiri, J.V.; Davoodi, M.R. Mechanical performance of self-compacting concrete incorporating rice husk ash. *Constr. Build. Mater.* 2018, *177*, 148–157. [Google Scholar] [CrossRef]
[17] Urtecho, F.A.M.; Gallo, L.J.O.; Barboza, J.U.R.; Cabrera, E.C. Sustainable Concrete with Rice Husk Ash (RHA) for Marine Structures. *MATEC Web Conf.* 2019, *303*, 05002. [Google Scholar] [CrossRef] [Green Version]
[18] Sanou, I.; Sawadogo, M.; Seynou, M.; Zerbo, L.; Ouedraogo, R. Study of the Mechanical Behaviour of Mortars Modified with Rice Husk Ash. *J. Miner. Mater. Charact. Eng.* 2019, *7*, 373–384. [Google Scholar] [CrossRef] [Green Version]
[19] Ahmed, A.; Hyndman, F.; Kamau, J.; Fitriani, H. Rice Husk Ash as a Cement Replacement in High Strength Sustainable Concrete. *Mater. Sci. Forum* 2020, *1007*, 90–98. [Google Scholar] [CrossRef]

National Conference Proceedings on Computing, Communication, Control,
Informatics and Bio-Sciences (NC^{4}IB-2024)
E-ISBN: 978-93-5747-361-3
Abstracts

Dielectric Study in Low Concentration Antimony Based Glassy Alloys

Vikas Kumar Pandey
Department of Applied Science and Humanities
Applied Science and Humanities Department
Kanpur Institute of Technology
Kanpur.

Abhishek Vishnoi
Department of Applied Science and Humanities
Electrical Engineering Department
Kanpur Institute of Technology
Kanpur.

Ram Sagar Tiwari*
Department of Applied Science and Humanities
Applied Science and Humanities Department
Kanpur Institute of Technology
Kanpur.

***Corresponding Author**
Ram Sagar Tiwari
Email Id: ram.tiwari@kit.ac.in

ABSTRACT

In the current case, the dielectric constant (ε') and dielectric loss (ε'') in glassy Se100-xSbx (x = 0, 2, 4, 6 , 8 and 10 atomic %) are explored in relation to frequency and temperature in the range between 1.5 kHz to 10.5 kHz and 280 K to 340 K. Experimental observations show that at normal operating frequency, amorphous Se exhibits null dielectric dispersion. However, as antimony levels in Se (x = 2, 4, 6, 8 and 10) increase in Se100-xSbx , the dielectric dispersion begins to occur between the specified temperature and frequency range with an increase in Sb content, the values of e' and e" at a given temperature and frequency increase. A discontinuity in ε' and ε'' is seen at a specific concentration of 8 atomic percent of Sb concentration curve. This discontinuity is explained by the coordination number and a mechanically stable structure. Upon examination, it is discovered that the observed dielectric loss closely aligns with the dielectric dispersion hypothesis, which is predicated on the hopping of two electrons over a potential barrier.

Keywords: Di-electric relaxation, Chalcogenide glasses, Chalcogen Elements

To Study the Performance of Solar air Cooler for Cooling the Space

Saurabh Singh
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Abhishek Singh
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Dr. Sanjay Singh
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Mr. Manoj Kumar Yadav*
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

***Corresponding Author**
Mr. Manoj Kumar Yadav
Email Id: 222902@kit.ac.in

ABSTRACT

Ventilation is mainly required for human comfort for this purpose solar air cooler main source due to easy availability and low cost. Subsequently, the air cooler run by electricity. The electricity is mostly developed by the coils but it is developed carbon emission which degrades useful gases from the environment as well as green house effect. This paper describes that how solar energy is stored and run the fan of air cooler. The fan is covered with cooling pads, and water is passed through them at a specific rate. This paper describes how a solar panel converts sun rays to electricity through the “photo-voltaic effect”. The electric power is stored in a 12- volt battery, and the battery's dc power is used to run the a pump and a centrifugal fan. A solar air cooler is useful for developed the cool air for commercial and non- commercial building with the sustainability.

Keywords: *solar panel, storage system, air cooler*

Nanotechnology for the Cancer Treatment

Swechchha Mishra*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology, Kanpur.

Shorya Tiwari
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology, Kanpur.

Neeraj Mishra
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology, Kanpur.

Ritu Kumari Singh
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology, Kanpur.

***Corresponding Author**
Swechchha Mishra
Email Id: 222436@kit.ac.in

ABSTRACT

Nanotechnology, a rapidly advancing field in the 21st century, has witnessed diverse applications in the diagnosis and treatment of various diseases. In the context of cancer therapy, nanotechnology has garnered significant attention as a means to address the drawbacks associated with traditional therapeutic approaches. This review explores contemporary nanotechnologies applicable to on cological interventions, such as arrays of nanocantilevers, nanotubes, and nanowires facilitating multiplexing detection, as well as multifunctional injectable nanovectors designed for both diagnostics and therapeutics. The focus is on demonstrating how nanotechnology offers a solution to the longstanding medical challenge of eradicating cancer while minimizing harm to normal body tissues. Specifically, nanotubes, superparamagnetic nanoparticles, and nucleic acid-based nanoparticles (including DNA, RNA interference, and antisense oligonucleotide) are discussed, along with nanotechnological approaches to combination therapeutic strategies. Examples include combining nanotechnologies with multidrug-resistance modulators, ultrasound, hyperthermia, or photodynamic therapy. While nanotechnology holds great promise for enhancing cancer detection and treatment, addressing current limitations in clinical translation requires further research.

Keywords: Nanotechnology, Nanocantilevers, Hyperthermia

Infections Caused by Poor Menstrual Hygiene & Sanitary Pads Impact on the Development of Cancer in Women

Darshana Maheshwari *
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Muskan Sahu
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Abhilasha Gautam
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Darshana Maheshwari
Email Id: 221817@kit.ac.in

ABSTRACT

Poor menstrual hygiene can contribute to the development of various reproductive and urinary tract infections (UTIs). Here are some diseases or conditions that may be associated with unhygienic menstrual practices like Vaginitis, the inflammation of the vagina, such as using dirty menstrual products or not changing them frequently, can contribute to the development. Maintaining good menstrual hygiene is crucial to prevent infections and other reproductive health issues in women. Many individuals rely on sanitary pads and tampons for menstrual hygiene, but there is a growing awareness of the need to investigate whether these products could contribute to cancer. Ongoing studies are exploring the connection between the use of sanitary pads containing absorptive agents like dioxin and super-absorbent polymers and the incidence of genital cancer. The concern arises from the possibility of dioxin, a carcinogenic substance found in bleached sanitary pads, accumulating in the body and affecting reproductive organs, potentially leading to cervical or ovarian cancer. The bleaching process, intended to enhance absorbency, introduces dioxin into the pads. In India, cervical cancer accounts for 16.5% of all cancer cases in women, underscoring the importance of understanding potential links between sanitary pad use and cancer risk.

Keywords: Menstrual hygiene, UTI’s, sanitary pads, Cancer, Women

Assessment of Water Quality of Ganga River at Various location in Kanpur City, Uttar Pradesh

Himanshu Pathak
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, U.P, India.

Abhishek Vaishya*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, U.P, India.

***Corresponding Author**
Abhishek Vaishya
Email Id: 201811@kit.ac.in

ABSTRACT

For the past many years, Kanpur has been well known for its industrial legacies, including pollution as one of the major concerns caused by the wastes excreted by the manufacturing units present mostly near the river Ganges. Finding the proper and efficient solution for this problem has always been challenging, especially when some environmental pressures like change in the climate and rapid growth in the advancement of industries which causes multiple issues have been noticed. This study has been performed to evaluate the water quality in terms of total suspended solids (TSS) and total dissolved solids (TDS) levels of the Ganges River water samples collected from multiple places in the city. The level of the total suspended solids of river water ranges from 2 to 20 while the level of total dissolved solids lies from 280 to 440. The highest TSS level of water 20, is obtained at Parmath Ghat while the lowest 2, is obtained at Dyodhi Ghat and the highest TDS level of river water 440 is observed at Jajmau, where the lowest 280 is assessed at Dyodhi Ghat. The particular assessment in this study will help the authorities in addressing Ganga River water quality issues in more efficient manner. This study also highlights the necessity for ongoing water quality assessment and monitoring in order to assure the well-being of the river and its ecosystem for the longer period of time.

Keywords: Total suspended solids, total dissolved solids, water quality assessment.

Antimicrobial Activity of Tea

Pratisthha Singh*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, U.P., India.

Neeraj Mishra
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, U.P., India.

***Corresponding Author**
Pratisthha Singh
Email Id: 201887@kit.ac.in

ABSTRACT

The antimicrobial activity of tea has been considerably studied due to its implicit use in the development of natural alternative treatments against bacterial and fungal infections. This abstract aims to provide a brief overview of the current research on the antimicrobial properties of tea. Tea samples taken for antimicrobial testing are Normal Tea Leaves, Normal Tea Granules and Green Tea (*Camellia sinensis*). Tea leaves are known to contain various biologically active compounds including polyphenols, catechins and flavonoids, which have been associated with antimicrobial activity.

The tea extracts shows inhibitory effects against fungal species like *Aspergillus terreus*and bacterial species like *Bacillus subtilis*. These two microbial strains are taken for the testing of tea samples. Agar well prolixity method and minimum inhibitory concentration (MIC) are used to detect the antimicrobial exertion of tea samples. The aqueous and alcoholic (ethanol) sample of each tea is used for testing. Additionally, some studies have investigated the beneficial effects of tea extracts in combination with antibiotics, demonstrated its effectiveness against multi-drug resistant bacteria. The zone of inhibition measured in both aqueous and alcoholic sample of each tea determines the range of effect of tea samples against microbial strains.

Overall,the antimicrobial activity of tea samples presents promising eventuality for the development of new antimicrobial agents.

Keywords: *antimicrobial activity, agar well diffusion method, minimum inhibitory concentration (MIC), zone of inhibition*

Antimicrobial Activity of Some Spices

Simran Rawat*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
U.P., India.

Neeraj Mishra
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
U.P., India.

***Corresponding Author**
Simran Rawat
Email Id: 201157@kit.ac.in

ABSTRACT

Today, the major threats that the medical world is facing are antibiotic toxicity and multi drug resistivity. Spices possess a remarkable array of medicinal properties, in particular, antimicrobial activity, extending far beyond their culinary role. This study explores the antimicrobial potential of Mace, Black Cardamom and Bay leaf, aiming to contribute to our understanding of natural compounds that may combat microbial infections. Each spice is analysed for its antimicrobial properties against a spectrum of microorganisms, encompassing bacteria and fungi with clinical relevance. Two microbial strains, *Bacillus subtilis* and *Aspergillus terreus* were selected for this study.

The spice extract were obtained by using absolute ethanol and distilled water to carry out antimicrobial susceptibility assay using Agar Well Diffusion Method. This comprehensive approach enhances the credibility of the findings and underscores the potential applications of spice derived antimicrobial agents in both medical and food preservation contexts.

The implications of this research are far beyond traditional medicine, offering insights into the development of alternative, nature- based antimicrobial interventions. This study contributes to the ongoing discourse on the exploration of natural compounds as valuable resources in the fight against diseases. Theresults showed that these sample spices have antimicrobial activity and can be used asa preservativeand for medicinal purpose.

Keywords: Spices, antimicrobial activity, absolute ethanol, agar well diffusion method

Antimicrobial Activities of Millets

Rimjhim Srivastava*
Department of Biotechnology
KanpurInstitute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Neeraj Mishra
Department of Biotechnology
KanpurInstitute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.
Email Id: 201843@kit.ac.in

***Corresponding Author**
Rimjhim Srivastava
Email Id: 201843@kit.ac.in

ABSTRACT

Millets are highly nutritious and high in fiber content but it is less known about its antimicrobial activity against the selected microorganisms. Antimicrobial potential of millets(*Zea mays, Pennisetum glaucum, Sorghum bicolor*)were investigatedusing ethanol and water as a solvent against various pathogens (Bacteria: *Bacillus subtilis*, Fungi: *Aspergillus terreus*) using agar well diffusion method. Through this experimental analysis, we assess the inhibitory effects of millet extracts on bacterial and fungal strains.Millet ethanolic extracts exhibited dose-dependent antibacterial and antifungal activity against *Bacillus subtilis* and *Aspergillus terreus* and showed maximum Zone of Inhibition (25mm).Sorghum aqueous extract showed minimum Zone of Inhibition (10 mm). Results indicate promising antimicrobial properties, suggesting millets as valuable sources for natural antimicrobial agents. This analysis shows that there is significant variation in zone of inhibition against pathogens. These finding may justify the nutritional and therapeutic properties in developing economics.

Keywords: Millets, antimicrobial activity, agar well diffusion method, zone of inhibition.

Antimicrobial Action of Leaf Extract

Shiprali Dwivedi
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
U.P, India.
Email Id: 201465@kit.ac.in

ABSTRACT

This study aimed to explore the antimicrobial effects of marigold (*Tagetes erecta*), hibiscus (*Hibiscus rosa-sinensis*), and harshringar (*Nyctanthesarbor-tristis*) leaf extracts on common bacterial strains (*Aspergillus terreus, Bacillus subtilis*). Using ethanol and water for maceration and solvent extraction, the extracts were tested through the agar well diffusion method. Results indicated that ethanol extracts of marigold and hibiscus exhibited the strongest antimicrobial activity, followed by harshringar and hibiscus water extracts. Marigold ethanol extract showed the lowest minimum inhibitory concentration and minimum bactericidal concentration, suggesting its potential as a natural antimicrobial agent. Phytochemicals like flavonoids, phenols, and terpenoids were identified as contributors to the extracts' antimicrobial properties. In conclusion, marigold, hibiscus, and harshringar leaf extracts possess significant antimicrobial properties, offering potential as alternative or complementary treatments for bacterial infections.

Keywords: Mariegold, Hibiscus, Harshringar, Antimicrobial properties

Antimicrobial Activity of Fruits Seed

Tehreem Jabeen
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Uttar Pradesh, India.
Email Id: 201658@kit.ac.in

ABSTRACT

The emergence of antibiotic-resistant bacterial strains has become a significant public health concern. This research paper aims to investigate the antimicrobial activity of pomegranate, Mausami and melon seed extracts against *Bacillus subtilis*, a common Gram-positive bacterium and*Aspergillus terreus*. The study utilizes extraction techniques to obtain the active compounds from these seeds and evaluates their effectiveness in inhibiting the growth of Bacillus subtilis through agar well diffusion methods.[1] The results demonstrate the potential of pomegranate, Mausami and melon seed extracts as natural antimicrobial agents, highlighting their potential applications in the development of alternative therapies.[7,1]

Keywords: antimicrobial activity, pomegranate, Mausami, melon seed, *Bacillus subtilis*, natural antimicrobial agents, alternative therapies.

An Artificial Intelligence-Based Environment Quality Monitoring System

Sufyaan Ahmad
Department of Information Technology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Syed Mohd Tahoor*
Department of Information Technology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

***Corresponding Author**
Syed Mohd Tahoor
Email Id: sufyaanahmadx9x@gmail.com

ABSTRACT

As the world continues to urbanize and industrialize, there is a growing concern about the quality of the environment and its effects on human health. To address this issue, we are proposing a cutting-edge AI-based environment quality monitoring system that provides real-time, precise, and comprehensive evaluations of different environmental parameters. The system combines cutting-edge sensor technologies with AI-based algorithms to track air quality, temperatures, humidity, noise, and other important environmental parameters. Sensors collect data continuously and AI algorithms analyze the data to provide actionable insights. Machine learning models predict trends, identify anomalies, and detect potential environmental hazards. A user-friendly interface allows users to access real-time and historical data, as well as automated alert systems to inform relevant authorities and the general public about critical conditions. The system can also be seamlessly incorporated into smart city initiatives to support a data-driven environment management approach. Our goal is to revolutionize environment monitoring, improve decision-making processes and improve the quality of life for communities around the world.A distributed network of sensors is deployed across urban and industrial spaces to provide comprehensive coverage and precise representation of the environment. The sensors use cutting-edge technologies such as laser based particulate matter sensors and gas sensors, as well as advanced weather monitoring devices to capture a wide variety of environmental parameters.

Keywords: Smart environment montering, real-time alerts , helth impact assessment

National Conference Proceedings on Computing, Communication, Control,
Informatics and Bio-Sciences (NC⁴IB-2024)
E-ISBN: 978-93-5747-361-3
Abstracts

Automatic- Mails Classification Using Genetic Algorithm

Dr. Mandeep Singh Chowdhary*
Department of Computer Science/IT/AIML
Kanpur Institute of Technology
A-1, UPSIDC, Rooma, Kanpur.

Rahul Singh
Department of Computer Science/IT/AIML
Kanpur Institute of Technology
A-1, UPSIDC, Rooma, Kanpur.

***Corresponding Author**
Dr. Mandeep Singh Chowdhary
Email Id: mandeep.singh@kit.ac.in

ABSTRACT

The present scenario asks for the mail boxes that are overloaded with spam mails.

The spam mailers have an added advantage that the mails are not malicious in nature and henceforth firewalls and filters are unable to block them.; however, the negative aspect is that these mails are unwanted guests that are received by any a internet user. The Kaspersky, mentions that the total email traffic has risen to 70.3% in the first quarter of 2013. This paper entails a genetic algorithm based method for spam email filtering discussing it's advantages and disadvantages.

The paper presents promising results stating that Genectic Algorithm in conjunction with other spam filtering methods are quite effective providing better results. It is here that the use of data dictionary steps in whereby its effect on Genetic algorithm and its efficiency are judged.

Index Terms: Spam Filtering, Genetic Algorithm, SPAM and HAM. NTRODUCTION

Effects of Social Media on Mental Health and Well-being

Aryan Yadav
Department of Computer Science & Engineering (AIML)
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.
Email Id: 222584@kit.ac.in

ABSTRACT

The impact of social media on mental health is a complex and multifaceted issue. Research suggests both positive and negative effects. While social media facilitates connection and support, it can also contribute to anxiety, depression, and feelings of inadequacy. Factors such as comparison, cyberbullying, and the curated nature of online content play roles. Understanding these dynamics is crucial for fostering a balanced relationship between social media use and mental well-being. The impact of social media on mental health and well-being is a complex and debated topic. While it facilitates connection and information sharing, excessive use can contribute to feelings of loneliness, anxiety, and low self-esteem. Comparisons, cyberbullying, and the pressure to curate a perfect online image can also negatively affect mental health. Research suggests the need for balanced usage and awareness of potential risks for a healthier digital experience.

Keywords: Cyberbullying, loneliness, anxiety, and digital stress.

Efficient and Secure QR Attendance System for Streamlined Academic and Corporate Management

Shashank Singh*
Department of Information Technology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Rahul Singh
Department of Information Technology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Shashank Singh
Email Id: 201673@kit.ac.in

ABSTRACT

Attendance tracking remains a critical aspect of academic and corporate environments. This abstract presents a comprehensive QR Attendance System designed to enhance efficiency, accuracy, and security in managing attendance records. The proposed system leverages Quick Response (QR) code technology, providing a seamless and contactless method for both students and employees to mark their attendance.

The QR Attendance System utilizes a user-friendly mobile application that generates unique QR codes for each participant. Users simply scan the QR code displayed in their designated location using their smartphones, instantly recording their attendance. This streamlined process eliminates the need for manual attendance sheets, reducing administrative burdens and minimizing the risk of errors associated with traditional methods. Attendance data is stored in a centralized and secure database, fostering transparency and accountability.

As institutions and businesses continue to embrace technological advancements, this QR Attendance System emerges as a reliable solution to foster a digitized, efficient, and secure attendance tracking.

Keywords: Attendance, QR code, Data etc**.**

Fairness in AI: Evaluating Bias and Discrimination in Algorithmic Decision-Making

Harsh Jaiswal
Department of Computer Science & Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, U.P., India.
Email Id: 232650@kit.ac.in

ABSTRACT

In today's technologically advanced era, our society relies heavily on AI (Artificial Intelligence) for innumerable applications, such as spam filtering, traffic planning, logistics management, speech or facial recognition, recruitment and hiring, and as well as for disease diagnosis. Although these AIs and ADM (Algorithmic Decision-Making) systems may initially appear or present themselves as rational, neutral, and unbiased, there is always a concerning possibility that they can also lead to unfair and illegal discrimination. Even if the computing process is fair and well-intentioned, this may happen due to the inherent biases in the training data used to develop and train these AI models. This paper aims to clarify the factors contributing to these problems (specifically examining how bias and discrimination occur in algorithmic decision-making) by a thorough analysis of real-world examples and theoretical frameworks, while also identifying promising avenues for future research, encouraging further exploration in this evolving field. This comprehensive study includes a review of current methods for assessing fairness in AI systems, investigating potential solutions, challenges, ethical considerations and emphasizing the responsibilities of developers, policy-makers, and organizations in promoting fair and unbiased AI applications.

Keywords: *Artificial Intelligence, Algorithmic bias, AI ethics*

Integrated Healthcare technologies on IoT

Anjali Sinha
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, U.P, India.

Diya Srivastava
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, U.P, India.

Adarsh Gupta
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, U.P, India.

Anuraag Sahu
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, U.P, India.

ABSTRACT

Integrated Healthcare technologies on I Various restrictions are faced by many people during their treatment due to the limited technology at healthcare centers, where an individual's health is considerd one of the essentianl aspects of life. In recent times, IOT is the most compelling topics that furnish solutions to these shortcomings in various ways. The IOT is applied in numerous healthcare conducts that contain detection ,treatment, and monitoring of diseases. The correct treatment is proposed to be aided for patients by wearable devices, which are a part of IOT. The typical communication networks made for human applications encounter problems like strict delays, limited travel range, and short battery longevity. However, with the onset of 5G ,a new array of technologies has emergrd, providing the crucial infrastructure to link billions of devices for the upcoming IOT .This could fundamentally transform both our professional and personal lives. New healthcare opportunities, including treatment, data analytics, diagnostics, and imaging, have been enabled by the superfast connectivity and intelligent management capabilities of 5G network. The current review extensively details a systematics literature surveys on IOT based alterable devices and explicatesthe role of 5G in IOT for healthcare. .Moreover, we have explained the applications of wearabledevices in detecting the issues in terms of healthcare, such as curing, monitoring, and detection ofdiseases. Neverthless, the employement of IOT architecture and its variable devices, in addition to the upcoming research, is emphasized in this review paper, along with the challenges related to this area.

Keywords: Iot, 5G, Healthcare

Security Analysis and Design Strategies for Android Chat Messengers

Lakshmi Narayan Ray
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, U.P, India.
Email Id: 201253@kit.ac.in

ABSTRACT

This research conducts a meticulous security analysis of Android chat messengers, identifying vulnerabilities and threats. Examining encryption, authentication, and data transmission, we reveal potential risks to user data and privacy. Proposing innovative design strategies, we seek to fortify security while maintaining a seamless user experience. Striking a delicate balance, our findings offer valuable insights for developers, researchers, and users invested in the security landscape of Android chat messengers.

Keywords: Security, Android, encryption, data transmission etc.

Smart Gate Pass Security Management System

Vishal Kumar
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Rooma Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Mohd Hashmi*
Department of Computer Science and Engineering
Kanpur Institute of Technology
Rooma Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Mohd Hashmi
Email Id: 1200110@kit.ac.in

ABSTRACT

Gate pass management system relates to the act of security. This system can be used to speed up the visitorregistration which will notify the presence of visitors in the organisation. This can be used to replace the traditional visitor registration process. This reduces the problem of appointmentsand gathering information about the visitor via web and androidapplication and this information is recorded in the database thatmanages the data.

Keywords*:* *Industrial Security, Smart System, Gate pass Security*

E-ISBN: 978-93-5747-361-3

Analytical Health Monitoring System

Aditya Sharma
Assistant Professor
Kanpur Institute of Technology
Kanpur.

Aman Kumar
Assistant Professor
Kanpur Institute of Technology
Kanpur.

Akanksha Yadav
Assistant Professor
Kanpur Institute of Technology
Kanpur.

Hrishidha
Assistant Professor
Kanpur Institute of Technology
Kanpur.

Gyanendra Kumar Verma*
Assistant Professor
Kanpur Institute of Technology
Kanpur.

***Corresponding Author**
Gyanendra Kumar Verma
Email Id: gyanendrakumarverma@kit.ac.in

ABSTRACT

Health Monitoring Systems (HMSs) play a pivotal role in improving healthcare by capturing physiological data through biosensors, enabling real-time analysis, and facilitating timely interventions. This paper reviews 36 recent studies on HMSs, obtained through a systematic search across five scientific databases from a pool of 2,822 works. The analysis focuses on data analysis methods, application domains, sensors, physiological parameters, features, benefits, limitations, datasets, and results.

Given the impact of SARS-CoV-2, demand for health monitoring solutions, especially for respiratory and pulmonary functions, has risen. This paper addresses this need by surveying approaches using sensor technologies for heart, respiration, and sleep monitoring. Classifying papers into contact and contactless sensors, it discusses sensor types, data analysis techniques, and accuracy.

Keywords: Heart monitoring, Cardiovascular disease, Respiration monitoring, Accuracy, Real-time Data analysis

Design and Implementation of an Advanced Visitor Management System for Enhanced Security and Efficiency

Sumit Verma
Department of Information Technology
Kanpur Institute of Technology
Rooma Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Harsh Tripathi
Department of Information Technology
Kanpur Institute of Technology
Rooma Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Mohd Sufiyan Jamal
Department of Information Technology
Kanpur Institute of Technology
Rooma Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Maqusud Ali*
Department of Information Technology
Kanpur Institute of Technology
Rooma Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Maqusud Ali
Email Id: 201744@kit.ac.in

ABSTRACT

This research paper presents the design, development, and implementation of an advanced Visitor Management System (VMS) aimed at improving security measures and enhancing efficiency in various facilities. The proposed system leverages modern technologies such as bio-metrics, RFID, and cloud computing to create a comprehensive solution for visitor tracking and access control. The system is designed to address the limitations of traditional visitor management methods, providing a more secure and streamlined approach.

Keywords: Visitor Management System (VMS), bio-metrics, RFID, Cloud computing

The Role of Artificial Intelligence in evolving the Work Force

Neha Verma
Master of Computer Application
Kanpur Institute of Technology, Kanpur.

ABSTRACT

Workforce under is gone the transformation because of the highly advanced technologies. This research paper tells the impact and role of the Artificial Intelligence in the Work Force. The Artificial Intelligence is not only a thing which can perform tasks of your desired choice but also creating a way of new job opportunities and categories. This paper describe those industries or sectors which are becoming the witness of the different changes cause by the Artificial Intelligence. There search paper also put light on the privacy concerns. This study presents a future-oriented perspective and relationship between Artificial intelligence and human Employees or workers. This study describes the role of Artificial Intelligence in the workforce, offering insights that inform strategic decision-making at individual and Organizational level. This paper serves as a valuable resource for under standing the complex dynamics of the evolving workforce.

Keywords: Artificial Intelligence, job opportunities, human Employees, decision-making

Future of IOT

Abhishek Thakur
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Richa Awasthi
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Ajeet Singh
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Ankita Kumari *
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

***Corresponding Author**
Ankita Kumari
Email Id: 220061@kit.ac.in

ABSTRACT

The Internet of Things (IOT) is a concept that collects everyday objects and connects them to the Internet, enabling them to send, receive, and analyze system data to recognize and adjust the performance of many things. The main motive of the IOT is to create a smart environment where, without direct human intervention to respond to conditions that change, physical devices can communicate with each other and make data-based decisions. It extends across different domains, like agriculture, smart cities, healthcare, transport, industrial processes, and so on.

It has components that include sensors that convert physical events into a measurable digital signal, connectivity mechanics such as Wi-Fi for transmission of data, cloud computing for data processing and storage, and actuators that allow devices to take particular actions based on received information. The IOT integration can enhance productivity, revolutionize industries, and improve the quality of life.

However, how fast we are adopting, it is also raising challenges like security and privacy. We are all highly dependent on the internet. It also increases unemployment.

In this paper, we focus on the present situation of IOT, possible applications, and challenges that affect its adoption.

Keyword: Internet of things, Applications, Challenges.

To Study the Critical Impact of Vacuum Cleaner in Service of Household Application: a Review

Abhishek Singh*
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Shikhar Saini
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Vivek Srivastava
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Shailendra Singh
Department of Mechanical Engineering
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

***Corresponding Author**
Abhishek Singh
Email Id: 222894@kit.ac.in

ABSTRACT

The vacuum cleaner is an essential tool in household cleaning. It has revolutionize the way to maintain our homes without dust. It is a device that efficiently removes dirt, dust, debris from carpets, floors and upholstery, electronic applications. At first glance it may seem like a simple machine with a nozzle and a bag but its inner workings are far more complex. A vacuum cleaner utilized a suction power to create a low pressure zone, allowing it to suck up dirt and debris into its collection container or bag. Additionally, modern vacuum cleaners often come with advance feature like HEPA (High efficiency particulate air) filters to trap allergens and adjustable setting for difficult floor types. Also. It enhance indoor air quality by trapping allergens and pollutants. This paper is an attempt to explore the importance of a vacuum cleaner. It is investigated that vacuum cleaners are very important in our life with playing a crucial role in maintaining cleanliness and hygiene in our homes.

Keywords: vacuum pressure, allergens, health issue.

E-ISBN: 978-93-5747-361-3

Enhancing Productivity in the Automotive Industry with the Application of Method Study Technique

Rishabh Mishra
Assistant Professor
Mechanical Engineering Department
Kanpur Institute of Technology, Kanpur.
Email Id: rishabh.mishra@kit.ac.in

ABSTRACT

The work being done on productivity enhancement in the automotive sector is crucial to a company's survival and ability to make breakthroughs. The industry is unable to increase productivity because of undesired work processes carried out in the manufacturing department. These processes cost more money, take longer to complete, and cause worker weariness. Therefore, the goal of this work is to suggest areas for industry improvement so that, by examining the related issue, industry can boost productivity. The paint shop department's cycle time for product carrying from the injection moulding machine to a trolley instead of a pallet was reduced by utilizing the principles of method study to tackle the identified problems.

Keywords: *Breakthrough, Firm, Productivity, Fatigue, Method Study*

Bioplastics – Productions, Properties and Environmental Impacts

Manashvi Pal*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of technology
Kanpur. Uttar Pradesh, India.

Sanskriti Tiwari
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of technology
Kanpur. Uttar Pradesh, India.

Abhilasha Gautam
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of technology
Kanpur. Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Manashvi Pal
Email Id: 222308@kit.ac.in

ABSTRACT

Bioplastics derived from renewable biomass sources like vegetables, fats, oils, corn, starch and various bio- wastes are the focus in this review. Specifically we are exploring the synthesis of bio – wastes are the focus in this review. Bioplastics using bio-wastes such as sugarcane bagasse and a mixture of fruit pulp, encompassing jack fruit, banana peel, nutmeg, and durian seeds. The utilization of bioplastics presents considerable advantages not only from an ecological perspective but also economical. Examples of bioplastics include thermoplastic starch. Polylactic acid (PLA) plastics. And poly-3- Hydroxybutarate (PHB). Bioplastics contribute to environmental friendliness by emitting less carbon Dioxide during production, a factor linked to global warming. Various types of bioplastics include starch Based plastics, cellulose based plastics, aliphatic polyesters and protein Contributors to global carbon Emissions, there is a growing focus on designing mode sustainable vehicles to minimize environmental Impact. The cosmetics industry being a major producer of packaging with a short life span, is also turning to bioplastics as a more environmentally friendly option. Furthermore the electronics industry, in Its pursuit of environmental responsibility, has made strides in producing energy efficient devices and Exploring sustainable materials for consumer electronics, complementing efforts in efficient recycling of Electronics wastes.

Keywords: Bioplastics, renewable biomasses, thermoplastic starch

Breast Cancer

Priya Singh
Department of Biotechnology
Kanpur institute of Technology Rooma
Uttar Pradesh, India.
Email Id: priyasingh15052004@gmail.com

ABSTRACT

This is the abstract for the Indian International & science Festival for students on science and technology innovation fest 2023. Breast cancer is the most common global malignancy and the leading cause of cancer related deaths among women these days. Breast cancer is a very heterogenous disease at clinical, histological, and molecular levels. Metastatic breast cancer is cancer that spread in meta sized manner to other organs in the body. It is the 4th stage breast cancer. Breast cancer is manageable if diagnosed early but late diagnosis of metastatic disease has a very low patient survival rate. Breast cancer cases are increasing constantly due to the risk factors including age, menopause, obesity, use of hormone replacement therapy, family history, along with the environment and lifestyle factors. There is also a lot of risk factors during the cancer survival. The increased awareness and newer diagnosis of cancer, thus allowing the best timely treatment, resulting in an increased survival rate. This chapter contains a review of descriptions of the anatomy, hormonal physiology, types of breast cancers, classification, stages, imaging screening techniques, treatment trials. This article is the overview of recent article studies on Breast cancer.

Keywords: Histological, Metastatic, Diagnosis.

Effect of Social Media on Mental Health and Well Being

Aryan Yadav
Department of Computer Science-AIML
Kanpur institute of technology Rooma
Uttar Pradesh, India.
Email Id: 222584@kit.ac.in

ABSTRACT

The impact of social media on mental health is a complex and multifaceted issue. Research suggests both positive and negative effects. While social media facilitates connection and support, it can also contribute to anxiety, depression, and feelings of inadequacy. Factors such as comparison, cyberbullying, and the curated nature of online content play roles. Understanding these dynamics is crucial for fostering a balanced relationship between social media use and mental well-being.

Keywords: Media, Health,

Integrated Health Care Technology on IOT

Anjali Sinha
Department of Computer Science
Kanpur Institute of Technology Rooma
Uttar Pradesh, India.

Diya Srivastava
Department of Computer Science
Kanpur Institute of Technology Rooma
Uttar Pradesh, India.

Adarsh Gupta
Department of Computer Science
Kanpur Institute of Technology Rooma
Uttar Pradesh, India.

Anurag Sahu*
Department of Computer Science
Kanpur Institute of Technology Rooma
Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Anurag Sahu
Email Id: sinharupa@gmail.com

ABSTRACT

Various restrictions are faced by many people during their treatment due to the limited technology at healthcare centers, where an individual's health is considerd one of the essentianl aspects of life. In recent times, IOT is the most compelling topics that furnish solutions to these shortcomings in various ways. The IOT is applied in numerous healthcare conducts that contain detection, treatment, and monitoring of diseases. The correct treatment is proposed to be aided for patients by wearable devices,which are a part of IOT. The typical communication networks made for human applications encounter problems like strict delays, limited travel range, and short battery longevity. However, with the onset of 5G , a new array of technologies has emergrd, providing the crucial infrastructure to link billions of devices for the upcoming IOT .This could fundamentally transform both our professional and personal lives. New healthcare opportunities, including treatment ,data analytics, diagnostics, and imaging, have been enabled by the superfast connectivity and intelligent management capabilities of 5G network. The current review extensively details a systematics literature surveys on IOT based alterable devices and explicates the role of 5G in IOT for healthcare. Moreover, we have explained the applications of wearable devices in detecting the issues in terms of healthcare, such as curing, monitoring, and detection of diseases. Neverthless, the employement of IOT architecture and its variable devices, in addition to the upcoming research ,is emphasized in this review paper ,along with the challenges related to this area.

Keywords: IOT,5G,

E-ISBN: 978-93-5747-361-3

Metaverse in Modern World

Akash Shakya
Department of Computer Science-AIML
Kanpur institute of TECHNOLOGY ROOMA
Uttar Pradesh, India.

Krishna Pathak*
Department of Computer Science-AIML
Kanpur institute of TECHNOLOGY ROOMA
Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Krishna Pathak
Email Id: 222797@kit.ac.in

ABSTRACT

The Metaverse is a multiuser, eternal, post-reality environment that combines digital virtuality and physical reality. Its foundation is the confluence of technologies like virtual reality (VR) and augmented reality (AR), which allow for multimodal interactions with digital objects, people, and virtual surroundings. As a result, the Metaverse can be defined as a persistent multiuser platform that is connected to other networks of socially engaging settings. It makes it possible for dynamic interactions with digital objects and smooth embodied user communication in real-time. Avatars may teleport between a network of virtual worlds in its initial incarnation. The modern Metaverse includes social, immersive VR systems that work with open game worlds, AR collaboration spaces, and massively multiplayer online video games.

Keywords: Enhanced reality, virtual reality, mixed reality, and metaverse.

Unleashing the Power of Quantum Computing

Harshit Mishra*
Department of Computer Science-AIML
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Karan Singh
Department of Computer Science-AIML
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Arpit Singh
Department of Computer Science-AIML
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Saksham Singh
Department of Computer Science-AIML
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Harshit Mishra
Email Id: harshitmishra0208@gmail.com

ABSTRACT

Quantum computing, a groundbreaking approach inspired by the laws of quantum mechanics, offers the potential to completely transform how we perform computations. This paper explores the fundamental concepts of quantum mechanics, various quantum computing models, state-of-the-art quantum algorithms, current advancements in quantum hardware, and the challenges and opportunities that lie ahead. Additionally, we delve into the ethical and societal implications of this transformative technology.

Keywords: Quantum, Machines.

E-ISBN: 978-93-5747-361-3

Impact of Social Media on Students′ Academic Performance

Anuj
Department of Computer Science-AIML
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Nancy Gautam
Department of Computer Science-AIML
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Alka Devi*
Department of Computer Science-AIML
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Alka Devi
Email Id: 221330@kit.ac.in

ABSTRACT

India is the third biggest country in terms of internet users in the world, with a high social and mobile audience. Social networking sites like Facebook, Twitter, Instagram, etc diverting students from studies. Students spend more time on social media than they do using personal email. Social media provides opportunities for connecting with Friends, Family, classmates and other people with shared interest. Today, the main aim of the student should be education and their future career. However, many students rely on the accessibility of information on social media. That means reduced focus on learning and retaining information. The study also points out the popularity of social networking sites among student community. However, students can exploit this and use it for better life, a better tomorrow. It should be used to connect, stay in touch, share views but not waste time on. A questionnaire is designed to determine the various factors of social media that have impact on student education. Variables identified are gender education, social influence, and academic performance.

Keywords: Social networking sites (SNS), Education Performance, social media, Academic Performance etc.

E-ISBN: 978-93-5747-361-3

The Influence of Social Media in Modern Communication

Sanya Singh
Department of Computer Science-AIML
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.
Email Id: 231870@kit.ac.in

ABSTRACT

This presentation aims to explore the pervasive impact of social media on contemporary communication. As we navigate an increasingly interconnected world, social media platforms have become integral to how individuals, businesses, and societies exchange information. The presentation will delve into the evolution of social media, examining its role in shaping communication patterns, fostering global connectivity, and influencing cultural dynamics. Key points of discussion include the democratization of information dissemination, the rise of user-generated content, and the challenges posed by misinformation and digital echo chambers.

We will explore how social media has transformed traditional communication models, examining both the positive aspects, such as enhanced connectivity and community building, and the negative aspects, such as privacy concerns and the potential for online harassment. Furthermore, the presentation will address the influence of social media on public discourse, political participation, and the formation of opinions. The dynamic nature of social media platforms presents both opportunities and challenges for effective communication, requiring a nuanced understanding of the digital landscape.

Keywords: Social media, Communication,

Artificial Intelligence and Fraud Detection

Dev Dubey
Bachelor of Technology (AIML)
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Vidhi Kaushik*
Bachelor of Technology (AIML)
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Vidhi Kaushik
Email Id: 223227@kit.ac.in

ABSTRACT

AI has made significant advancements in detecting and preventing fraud in various industries. It uses machine learning algorithms to analyze patterns, detect anomalies, and identify potential fraudulent activities. Al itself isn’t capable of intentionally committing fraud, there have been cases where Al systems have been manipulated or exploited to carry out fraudulent activities.

Al itself isn’t inherently fraudulent, there have been instances where people have manipulated Al systems for fraudulent purposes. One example is the use of Al-generated deep fake videos. Deep fakes are manipulated or images that use Al algorithms to replace someone’s face with another person’s face. This can lead to misinformation, identity theft, or even blackmail. It’s a concerning example of Al technology can be exploited for fraudulent activities. We’ll go ahead for brief explanation through our research paper poster.

Keywords: Anomaly Detection, Fraudulent activities, Identity theft , Deep fakes .

National Conference Proceedings on Computing, Communication, Control,
Informatics and Bio-Sciences (NC[4]IB-2024)
E-ISBN: 978-93-5747-361-3
Abstracts

Green Computing in Edge Computing Environments: Challenges Innovation

Shreyashi Gupta
Department of Information Technology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India
Email Id: shreyashig465@gmail.com

ABSTRACT

In the era where technology is harming our nature it's important to adopt sustainable methods like GREEN COMPUTING in which we utilize computing resources in an eco-friendly manner, ensuring optimal performance, and responsibly disposing of them to minimize environmental impact. Edge computing is like having smaller, smart computers closer to where you are, making things faster. Unlike big far-away data centers in cloud computing, edge computing brings the brainpower right to your devices, reducing delays and working more efficiently. While edge computing has the potential to be more energy-efficient and environmentally friendly, its actual impact depends on various factors, including design, scale, energy sources, and lifecycle considerations. Proper planning, sustainable practices, and ongoing efforts to optimize energy efficiency are essential for minimizing the environmental impact of edge computing.

To promote green computing in edge computing, use energy-efficient hardware, integrate renewable energy sources, and implement smart algorithms for resource management. Optimize device lifecycle, explore innovative cooling solutions, and encourage community-based initiatives.

Keywords: edge computing, cloud computing.

Impact of Social Media on Students Academic Performance

Anuj
Department of Computer Science-AIML
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.
Email Id: 221330@kit.ac.in

ABSTRACT

India is the third biggest country in terms of internet users in the world, with a high social and mobile audience. Social networking sites like Facebook, Twitter, Instagram, etc diverting students from studies. Students spend more time on social media than they do using personal email. Social media provides opportunities for connecting with Friends, Family, classmates and other people with shared interest. Today, the main aim of the student should be education and their future career. However, many students rely on the accessibility of information on social media. That means reduced focus on learning and retaining information. The study also points out the popularity of social networking sites among student community. However, students can exploit this and use it for better life, a better tomorrow. It should be used to connect, stay in touch, share views but not waste time on. A questionnaire is designed to determine the various factors of social media that have impact on student education. Variables identified are gender education, social influence, and academic performance.

Keywords: India, Social, Media.

Subtractor

Toshi Mishra
Department of Computer Science-AIML
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.
Email Id: 223213@kit.ac.in

ABSTRACT

Reversible arithmetic units such as adders, subtractors and comparators form the essential components of any hardware implementation of quantum algorithms such as Shor's factoring algorithm. Further, the synthesis methods proposed in the existing literature for reversible circuits target combinational and sequential circuits in general and are not suitable for synthesis of reversible arithmetic units.

In this paper, we present several design methodologies for reversible subtractor and reversible adder-subtractor circuits, and a framework for synthesizing reversible arithmetic circuits. Three different design methodologies are proposed for the design of reversible ripple borrow subtractor that varying terms of optimization of metrics such as ancilla inputs, garbage out-puts, quantum cost and delay. The first approach follows the traditional ripple carry approach while the other two use the properties that the sub-traction operation can be defined as a−b= -a+b and a−b=a+-b+1, respectively. Next, we derive methodologies adapting the subtractor to also perform addition as selected with a control signal. Finally, a new synthesis framework for automatic generation of reversible arithmetic circuits optimizing the metrics of ancilla inputs, garbage outputs, quantum cost and the delay is presented that integrates the various methodologies described in our work.

Keywords: Shor's factoring algorithm, Arithmetic circuits, Quantum cost, Ancilla Inputs, Garbage Outputs.

E-ISBN: 978-93-5747-361-3

Future of IOT

Abhishek Thakur
Master of Computer Application
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Richa Awasthi
Master of Computer Application
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Ajeet Singh
Master of Computer Application
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

Ankita Kumari *
Master of Computer Application
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, India.

***Corresponding Author**
Ankita Kumari
Email Id: 220061@kit.ac.in

ABSTRACT

The Internet of Things (IoT) is a concept that collects everyday objects and connects them to the internet, enabling them to send, receive, and analyze system data to recognize and adjust the performance of many things. The main motive of the IoT is to create a smart environment where, without direct human intervention respond to conditions that changes, physical devices can communicate with each other and make data-based decisions. It extends across different domains, like agriculture, smart cities, healthcare, transport, industrial processes and so on.

It has components that include sensors that convert physical events into a measurable digital signal, connectivity mechanics such as Wi-Fi for transmission of data, cloud computing for data processing and storage, and actuators that allow devices to take particular actions on the basis of received information. The IoT integration has the capacity to enhance productivity, revolutionize industries and improve the quality of life.

However, how fast we are adopting it, it is also raising challenges like security and privacy. We are all highly dependent on the internet. It also increases the unemployment. In this paper, we focus on the present situation of IoT, possible applications and challenges that affect it's adoption.

Keywords: IoT

Harnessing the Power of Gene & Cell Therapies: A Comprehensive Review on Gene and Cell Therapies

Abhishek Kumar*
Department of Biotechnology
Kanpur institute of Technology Rooma
Uttar Pradesh, India.

Harshit Patel
Department of Biotechnology
Kanpur institute of Technology Rooma
Uttar Pradesh, India.

Abhilasha Gautam
Department of Biotechnology
Kanpur institute of Technology Rooma
Uttar Pradesh, India.

Neeraj Mishra
Department of Biotechnology
Kanpur institute of Technology Rooma
Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Abhishek Kumar
Email Id: 220471@kit.ac.in

ABSTRACT

In the rapidly evolving landscape of medical science, the convergence of gene and cell therapies has emerged as a transformative force, promising revolutionary treatments for a myriad of diseases. Gene Therapy is like a revolution (superhero treatment) for genetic disorders like cystic fibrosis, sickle cell disease and certain type of cancer, these all genetic disorders can be well treated with the help of gene therapy. It involves introducing healthy genes into a person’s body to replace or fix the faulty ones. It’s like giving our genes a power up to fight against diseases and restore normal functioning. Gene therapy is long-lasting or even permanent relief for genetic diseases. However on another hand, Cell therapy is a medical treatment that involves the use of living cells to treat or prevent various diseases and medical conditions. Cell therapy can be considered as a strategy aimed at replacing, repairing, or enhancing the biological function of a damaged tissue or system by replace dysfunctional cells within a patient's body with healthy, functional ones. Such diseases can be well treated with the help of cell therapy like stroke, burn cancer, heart disease, autoimmune disorders and neurological disorders. This approach harnesses the regenerative and reparative capabilities of cells to restore normal physiological functions. Cell therapy includes stem cell-and non–stem cell-based, unicellular and multicellular therapies, with different immunophenotypic profiles, isolation techniques, mechanisms of action, and regulatory levels. Superhero treatment continue to provide patients with promising therapeutic benefits in different disease areas.

Keywords: Superhero treatment, Gene therapy, Cell therapy, Genetics Disorder, Cellular diseases.

Artificial Intelligence (Ai) Significantly Transforms the Health Care Landscape

Priyanka Singh*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Higher Education
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Anivesh Pathak
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Higher Education
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Abhilasha Gautam
Department of Computer Science
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Priyanka Singh
Email Id: 211925@kit.ac.in

ABSTRACT

In an exceptional era within the history of medicine, computers are playing an unparalleled role in supporting human input, decision-making, and data provision. In today's healthcare sector and medical field, AI, algorithms, robotics, and big data are harnessed to draw conclusions, monitoring extensive medical trends, and assessing individual risks and probabilities through data-driven assessments. The healthcare profession, being knowledge-intensive, relies heavily on data and analytics to enhance therapies and practices. The volume of collected medical information has witnessed remarkable growth in recent years, spanning clinical, genomics, proteomics, behavioral, and environmental data. Various AI tools, such as machine learning (ML), robotic process automation (RPA), and natural language processing (NLP), are employed in healthcare. Each day, healthcare professionals, biomedical researchers, and patients generate substantial data from diverse devices, including electronic health records (EHRs). Here are several key ways like diagnostic accuracy, personalized medicine, treatment optimization, drug discovery and development in which AI is making a substantial impact on healthcare. As AI continues to evolve, its integration into healthcare promises ongoing advancements that can lead to improved patient care, more efficient healthcare delivery, and transformative changes in how we approach and manage health and wellness.

Keywords: Artificial Intelligence (AI), Machine learning (ML), Robotic process automation (RPA) and Healthcare.

National Conference Proceedings on Computing, Communication, Control,
Informatics and Bio-Sciences (NC⁴IB-2024)
E-ISBN: 978-93-5747-361-3
Abstracts

Comprehensive Review on Probiotics and Prebiotics

Abhishek Pandey*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Shekhar Kumar
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Saumya Vishnoi
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Abhilasha
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Neeraj Mishra
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Abhishek Pandey
Email Id: 222950@kit.ac.in

ABSTRACT

Food biotechnology utilizes the principles of biology and technology to manipulate and improve food production, processing, and preservation. It encompasses a diverse range of techniques, from genetically modified crops (GMOs) with enhanced nutrition and pest resistance to the use of microbes for fermentation and food additives. This abstract will delve into the key applications of food biotechnology, highlighting its potential for Boosting food security: Engineering crops for higher yields, improved stress tolerance, and increased nutritional value can address global food shortages and malnutrition. Enhancing food quality and safety: Biotechnological tools can optimize food texture, flavor, and shelf life, while reducing spoilage and foodborne illness through biocontrol methods. Developing sustainable food systems: Genetically modified crops can decrease reliance on chemical fertilizers and pesticides, promoting environmental sustainability. Creating novel food products: From plant-based meats and dairy alternatives to bio-fortified food with enhanced micronutrient content, food biotechnology offers innovative solutions for evolving dietary needs. However, concerns surrounding ethical implications, environmental risks, and societal acceptance of genetically modified organisms necessitate careful consideration. Open dialogue and

E-ISBN: 978-93-5747-361-3

responsible science are crucial to ensure the safe and ethical development and application of food biotechnology for the benefit of society.

Keywords: Preservation Technique, fermentation, GMOs, Food Biotechnology, Ethical development.

Unearthing Nature's Treasure: Role of Taxol from Fungus Associated with Medicinal Plants for Cancer Treatment

Aayushi*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Rooma Uttar Pradesh, India.

Vanshika Srivastava
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Rooma Uttar Pradesh, India.

Abhilasha
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Rooma Uttar Pradesh, India.

Neeraj Mishra
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Rooma Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Aayushi
Email Id: 221816@kit.ac.in

ABSTRACT

Taxol, also known by its generic name paclitaxel, is a chemotherapy medication used in the treatment of various types of cancer including ovarian cancer, Breast cancer, Non-small cell lung cancer, pancreatic cancer and Kaposi's sarcoma. Its mechanism of action involves interference with the normal function of microtubules in cells which are crucial structures in cell division. Taxol binds to beta-tubulin subunits of microtubules, promoting the assembly and stabilization of microtubules. Cells with abnormal microtubule dynamics undergo programmed cell death (apoptosis) as a result of the disruption caused by Taxol. axol primarily targets rapidly dividing cells, which is why it is effective against various types of cancers characterized by high mitotic activity. Taxol is primarily derived from the bark of the Pacific yew tree (Taxus brevifolia). Due to concerns about the environmental impact of harvesting yew trees and the limited availability of these trees, one avenue of exploration involves the isolation of paclitaxel-producing endophytic fungi associated with medicinal plants. Endophytic fungi reside within plant tissues without causing apparent harm to the host plant. It is often used in combination with other chemotherapy agents to maximize its therapeutic effects. The dosage and treatment schedule of Taxol depend on the specific type of cancer being treated and the overall treatment plan. It may be given as a single agent or in combination with other chemotherapy drugs. Common side effects of Taxol include hair loss, nausea, vomiting, low blood cell counts (neutropenia, anemia, and thrombocytopenia), fatigue, and peripheral neuropathy. It is often used in combination with other chemotherapy agents to maximize its therapeutic effects. Major area of research to explore alternative sources for paclitaxel production to address sustainability concerns as the current approach involves complex processes.

Keywords: Taxol, Cancer, treatment

Gynaecologist's Explore IVF and the Magic of Embryo Transfer

Hritik Singh*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Prades, India.

Abhilasha Gautam
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Prades, India.

Neeraj Mishra
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Prades, India.

***Corresponding Author**
Hritik Singh
Email Id: 222651@kit.ac.in

ABSTRACT

The field of gynaecology and women's health care is playing crucial role in the unique healthcare needs of women throughout the various life stages. In 1940, maternal mortality in the United States was 363.9 maternal deaths per 100,000 live births. This is one of the most dramatic advances in health care in the second half of the 20th century. The gynaecologists specialize in a spectrum of reproductive and gynecologically concerns such as family planning, infertility and prenatal services. The diagnostic techniques, gynaecologists employ to identify and manage conditions such as polycystic ovary syndrome (PCOS), endometriosis, and uterine fibroids. Tailoring treatment catering to individual patient needs, the field of assisted reproductive technology (ART) has witnessed significant progress since the birth of Louise Brown, the first "test-tube baby," through IVF in 1978. This technology has proliferated globally, with clinics and researchers refining the process. Advancements include the development of sophisticated culture media enhancing embryo development, the introduction of Intracytoplasmic Sperm Injection (ICSI) revolutionizing male infertility treatment, and Preimplantation Genetic Testing (PGT) for screening chromosomal abnormalities and genetic disorders before embryo transfer. The shift towards Single Embryo Transfer (SET) aims to reduce the risk of multiple pregnancies and enhance overall success rates. Ongoing research explores Mitochondrial Replacement Therapy (MRT) for addressing mitochondrial disorders in embryos. The dynamic nature of the field is underscored by continuous research and developments that shape the future of assisted reproductive technologies. It is crucial to acknowledge the evolving landscape of ethical considerations, legal regulations, and societal perspectives alongside technological advancements in IVF.

Keywords: IVF, ART, MRT, Embryo Transfer, gynaecological issues.

E-ISBN: 978-93-5747-361-3

Waste to energy: Conversion of Agricultural Residues into Biofuels

Dev Pramanick*
Department of Biotechnology,
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh.

Aditya Singh
Department of Biotechnology,
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh.

Neeraj Mishra
Department of Biotechnology,
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh.

Aman Pratap Singh
Department of Biotechnology,
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh.

***Corresponding Author**
Dev Pramanick
Email Id: 210590@kit.ac.in

ABSTRACT

With fossil fuel depletion and escalating carbon emissions, the need for sustainable energy sources is essential. Alternative fuels such as biofuel, renewable fuels produced from organic matter, hold the potential for reducing our reliance on fossil fuels. Lignocellulose, a complex matrix of cellulose, hemicellulose, and lignin, represents a promising feedstock for biofuel production due to its abundance in agricultural residues such as crop residues, straw, and stalks. Apart from being a viable alternative to fossil fuels for energy production, this approach helps in waste management challenges widespread in agriculture. Agriculture sector in India, being one of the largest economic sector, produce 620 million tons of agricultural waste per year which can be used for energy generation. This poster discusses various processes for treatment of lignocellulosic biomass into simpler components, such as cellulose, hemicellulose, and lignin, through physical, chemical, or biological methods. The poster emphasizes the need to integrate agricultural waste-to-biofuel strategies into waste management policies for sustainable energy production and environmental conservation.

Keywords: Biofuel, Agricultural Waste Management, Lignocellulosic material treatment, renewable energy

Comprehensive Review on Agriculture Biotechnology

Rishabh Bhadauriya*
Department of Biotechnology
Kanpur institute of Technology Rooma
Uttar Pradesh, India.

Shakti Singh Yadav
Department of Biotechnology
Kanpur institute of Technology Rooma
Uttar Pradesh, India.

Abhilasha
Department of Biotechnology
Kanpur institute of Technology Rooma
Uttar Pradesh, India.

Neeraj Mishra
Department of Biotechnology
Kanpur institute of Technology Rooma
Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Rishabh Bhadauriya
Email Id: 222774@kit.ac.in

ABSTRACT

Agricultural biotechnology is a fascinating field that combines biology and technology to enhance agricultural practices. State-of-the-art biotechnological approaches play a key role in overcoming agricultural challenges and enlarging crop protection and yields. Genetic modification (GM) and genetic engineering offer avenues for creating genetically modified crops (GMO) able with advantageous traits like resistance to pests, diseases, or herbicides, increased yield, and enhanced nutritional composition. This innovation empowers farmers to cultivate crops more efficiently and sustainably, curbing the need for pesticides and elevating food quality. Agricultural biotechnology also contributes to the development and application of biological agents, including predatory insects, parasitoids, or microbial pesticides, for pest control with minimal environmental impact. This progressive methodology holds immense promise in addressing the hurdles faced by the agricultural industry. The technology has facilitated the creation of GMOs with specific traits geared toward enhanced resistance to pests, diseases, environmental stress, or improved nutritional characteristics. Notable Examples include BT Cotton, BT Corn, Golden Rice, Flavr savr Tomato, and Brinjal. Leading thorough risk assessments and transparently communicating the benefits and Potential risks associated with GMOs is crucial. Equitable distribution of biotechnological advancements must be ensured. Rigorous evaluation of the potential impacts of genetically modified crops on ecosystems, pollinators, and non-target organisms is essential. Despite

E-ISBN: 978-93-5747-361-3

these challenges, agricultural biotechnology holds substantial potential in addressing global food security, fostering sustainable agriculture, and fortifying crop resilience.

Keywords: Agriculture Biotechnology, GMOs, Genetic engineering and Environmental impact.

Artificial Intelligence and Fraud Detection

Vidhi Kaushik
Department of Computer Science-AIML
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.
Email Id: 222224@kit.ac.in

ABSTRACT

AI has made significant advancements in detecting and preventing fraud in various industries. It uses machine learning algorithms to analyze patterns, detect anomalies, and identify potential fraudulent activities. Al itself isn't capable of intentionally committing fraud, there have been cases where Al systems have been manipulated or exploited to carry out fraudulent activities. Al itself isn't inherently fraudulent, there have been instances where people have manipulated Al systems for fraudulent purposes. One example is the use of Al-generated deep fake videos. Deep fakes are manipulated or images that use Al algorithms to replace someone's face with another person's face. This can lead to misinformation, identity theft, or even blackmail. It's a concerning example of Al technology can be exploited for fraudulent activities.

Keywords: Anomaly Detection, Fraudulent activities, Identity theft, Deep fakes.

Chemotherapy: Transforming Cancer Treatment Strategies

Adeeba Raza
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

Ankita Parihar*
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh, India.

***Corresponding Author**
Ankita Parihar
Email Id: 212056@kit.ac.in

ABSTRACT

Chemotherapeutic medicines are used to inhibit the growth of extensively spreading nasty cells with anti-cancer agents. The choice of chemotherapy authority depends on the type and stage of cancer, as well as the overall health of the case. Cancer is an abnormal state of cells where they suffer unrestricted proliferation, leading to dangerous malice that beget millions of deaths annually. These agents target critical processes for cell division in fleetly growing cancer cells. There are multitudinous treatment strategies available to combat cancer, depending on the type of cancer and the affected part of the body. utmost cancer medicines are deduced from synthetic or semi-synthetic. After the selection of certain cycle session, treatment is stopped for particular fixed period to allow the case to rest and their body to habitual from the effect of anti- cancer drug. Traditional or standard chemotherapy uses drugs that are cytotoxic in nature means they can kill excrescence cells.

Keywords: Chemotherapy, Drugs, Malignant cells, cytotoxic cell division, excrescence cells.

Revolutionizing Cancer Research: The Role of Artificial Intelligence in Cancer Biology

Pari Trivedi
Department of Biotechnology
Kanpur institute of Technology
Kanpur (UP), India.

Tabia Khan
Department of Biotechnology
Kanpur institute of Technology
Kanpur (UP), India.

Abhilasha Gautam
Department of Biotechnology
Kanpur institute of Technology
Kanpur (UP), India.

ABSTRACT

In its 2022 report, the World Health Organization (WHO) highlighted cancer as a prominent contributor to global mortality, constituting approximately 16% of all deaths worldwide. The Cancer Moon-shot Community endeavors to halve the fatality rate associated with cancer over the next 25 years, striving to enhance the well-being of individuals affected by cancer. The incorporation of Artificial Intelligence (Al) into cancer research represents a pivotal approach in addressing challenges that avoid conventional medical expertise, yielding promising results. Al automates the analysis of large- scale datasets, enabling researchers to process and analyse vast amounts of information quickly. This accelerates the pace of research and discovery in cancer biology. Al can analyse real-time data from wearable devices and other monitoring tools to track changes in a patient's health. This continuous monitoring is especially valuable for cancer patients undergoing treatment. Al contributes to cancer research through three main applications: facilitating early and precise cancer diagnoses (via Computer-Aided Screening and Sensor-Based Detection), predicting the occurrence of cancer. and optimizing cancer treatment. Al is revolutionizing cancer biology by enhancing early detection, enabling precision medicine, facilitating drug discovery, and providing valuable decision support to healthcare professionals. The integration of Al technologies holds great promise for advancing our understanding of cancer and improving patient outcome.

Keywords: Cancer, Detection, AI.

E-ISBN: 978-93-5747-361-3

Biodegradable Biofoam: A Systematic Review

Mohd Subur Siddiqui
Department of Biotechnology
Kanpur Institute of Technology
Kanpur, Uttar Pradesh.
Email Id: 220306@kit.ac.in

ABSTRACT

Biodegradable biofoam, stemming from renewable resources, presents a compelling remedy with its capacity to decompose into innocuous elements over a specified period. Foam materials, extensively employed across industries from packaging to construction, have historically posed environmental dilemmas. The advent of biofoam, derived from renewable biomass sources, heralds a promising departure from conventional petroleum-derived foams. Heightened cognizance of environmental degradation and the inherent non-renewability of conventional plastics has catalyzed a notable upsurge in the pursuit of biodegradable substitutes.

Keywords: Biofoam, biodegradable alternatives, traditional plastic.

ABOUT EDITORS

Dr. Brajesh Varshney completed his B.Sc. (Engineering) Mechanical in 1997 and M. Tech. (Engineering Systems: Mechanical) in 2002 from Faculty of Engineering, Dayalbagh Educational Institute (Deemed University), Dayalbagh, Agra. Dr. Varshney also completed a Ph.D. in 2013 from ABV-Indian Institute of Information Technology & Management (Deemed University), Gwalior. Dr. Varshney has served in many prestigious organizations in various portfolios like Warden, Boys' Hostel, I/C Placement Cell, I/C Examination, I/C Government inspections, etc. Dr. Varshney was appointed as Director of the institute on 22nd April 2015. During the stay at Kanpur institute of Technology, he worked as Head of Department (Mechanical Engineering), Assistant Dean Academics and Dean Academics. Dr. Varshney was a member of the Academic Council & Examination Committee of Dr. A.P.J. Abdul Kalam Technical University (Formerly, UPTU Lucknow) from 2016 to 2022. He is coordinator of the Board of Studies Mechanical Engineering and Member of the Board of Vocational Studies Studies. He is a member of IEEE. During his academic career of 27 years, Dr. Varshney has taught various subjects of Mechanical Engineering at UG/PG levels. He has published 10 papers in National/International journals/proceedings of International / National conferences and guided various M. Tech. & B. Tech. Projects. Dr. Varshney attended a large number of FDPs/workshops/short-term courses/conferences. Under his able leadership, Kanpur Institute of Technology was awarded Grade 'A' by NAAC.

Dr. Neeraj Mishra is M.Tech and Ph.D in Biotechnology .He is working as Dean Academics and Head, Department of Biotechnology at Kanpur Institute of Technology, Kanpur. He is actively involved in teaching and research from several years. He has to his credit a large number of published research papers and book chapters'. He has chaired/organised many conferences. He is member of many academic Societies.

Dr. Rahul Umrao completed his M. Tech. & Ph.D. from Dayalbagh Educational Institute, Agra in 2010 & 2015. He has more than 15 years of teaching experience. He has served in various institutes in different positions, like Dean of Research & Development, Head of Department, Convenor of industry and Academia and many more. Dr. Rahul Umrao has published more than 20 research papers in different National-International journals and conferences. His areas of interest are Power Systems & Soft Computing. Students under his guidance were selected two times in the students' research grant scheme by the Council of Science and Technology, UP. He has organized workshops, FDPs, & Seminars for academia and industry many times.

Dr. Vivek Srivastava is a Professor and Head of the Mechanical Engineering Department. He obtained his Ph.D Degree in the field of Mechanical Engineering Design from Kalinga University, Naya Raipur, Chhattisgarh. He completed Master of Technology in of Mechanical Engineering Design from (HBTI) AKTU University, Lucknow, Uttar Pradesh and Bachelor's Degree in Production Engineering from Dr. Baba Saheeb Bheem Rao Ambedkar University, Aurangabad, Maharastra. He has total of 24 years experience in teaching. He has published more than 15 papers in reputed International & National National journals and presented a paper in National and International conferences. He attended many Workshop, Faculty Development Program & Seminars. He delivered a number of guest lectures in outside the college premises. His areas of interest in Mechanical Engineering Design. He has Organize the UPSEE Entrance Examination. He is a Co-Convener in IEEE "International Conference. He has received a grant of 18.5 Lakhs under "MODROB" Project by AICTE scheme. He has Evaluated Ph.d Thesis & also he is appointed as External Examiner for PhD Dissertation.

E-ISBN: 978-93-5747-361-3

9 789357 473613

MRP Rs. 580/-

Selfypage Developers Pvt Ltd